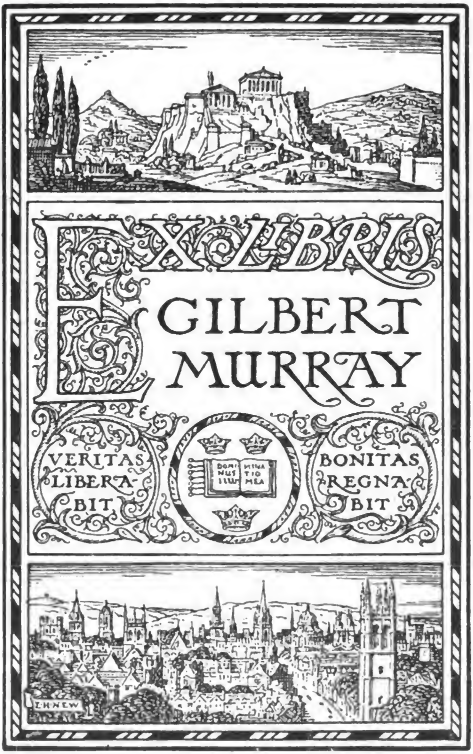
CONFINED
15²
A d. 3



Gilbert Murray

303537297$

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ
ΑΝΘΟΛΟΓΙΟΝ

IOANNIS STOBAEI
FLORILEGIUM

RECOGNOVIT

AUGUSTUS MEINEKE

VOL. I.

LIPSIAE
SUMPTIBUS ET TYPIS B. G. TEUBNERI
MDCCCLV.

LIBRARY OF CLASSICAL LITERATURE

Digitized by Google

DISCREPANTIA LECTIONIS A TEXTU GAISFORDI.

P. 1, 11. *Τημενιδῶν*] *Τημενίδων*

P. 2, 6. *ἀσφαλείας*] *εὐγενείας* ex Orione 8. *λειουμένη*] *τελουμένη* ex Orione, Christianus Wordsworth ad Theocritum p. 36 *μειουμένη*. vera scriptura adhuc latet 10. *καλόν*] malim *καλῶν* 11. *Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ*] *Εὐριπίδου Ἡρακλείδαις* cod. A. excidit fortasse Heraclidarum vs. 625. *ἃ δ' ἀρετὰ βαίνει διὰ μόχθων* 12. *τὰς δὲ χρή σ' ἀσκεῖν*] *τὰς χρή σ' ἀσκεῖν* cod. A. correxit G. Dindorfius 16—18. Gesnerus addidit ex Tit. CVIII, 25 20—29. haec Gesnerum e Gnomologio addidisse intellexit Gaisfordus; corruptos hic illic versus, facile emendandos, intactos reliqui

P. 3, 1. *Ἀνανέωσις*] *Ἀνανεούσῃ* posui, quo ducit m. Gesneri *in Ananeusa*, Schowius *ἐν Ἀνανεούσᾳ*, cod. Ven. a Kirchhoffio inspectus *Ἀνανεούσης*. verum videri *Ἀνανέωσις*, quod Gaisfordus edidit, monstrare conatus sum Hist. crit. com. p. 472 2. *ὅταν*] *ὅταν δ'* 8. *δὲ ἐθίζεο*] imo *δ' εἰθίζεο* 13. *μήτ' ἀλογίστως*] malim *μηδ' ἀλογίστως* 16—32. e Gnomologio addidit Gesnerus, Aristotelis hymnum e Diogene Laertio

P. 4, 18. *φρόνησις*] *ἡ φρόνησις* e Barocc. 19. *ἀνδρεία*] cod. A *ἀνδρία*, quam formam a codd. oblatam ubique revocavi 21. *ἡ* accessit e Barocc.

P. 5, 2. *φόβων*] excidisse videtur *καὶ μάλιστα* 7. *τὰς ἐπιθυμίας ὁρμώσας*] *τὴν ἐπιθυμίαν ὁρμῶσαν* ex A et Barocc. 9. *ψυχῆς,*] dele comma 11. *τῆς ψυχῆς*] *ψυχῆς* ex Barocc. 14. *ἢ δυστυχίαν*] *καὶ δυστυχίαν* e Barocc. 20. *δειλία δὲ*] adde *ἐστι* ex Barocc. 21. *καὶ μάλιστα* accessit e Barocc. 26. *μὴ κωλύοντος τοῦ λόγου*] *κωλύοντος τοῦ λογισμοῦ* e Barocc.

P. 6, 4. *τὸ κρῖναι*] *τὸ εὖ κρῖναι* Halmius 15. *δύνασθαι* acc. e Barocc. 16. *μετρίας* seclusi 21. *τῶν πρὸς τὸν θάνατον*] *τῶν περὶ θάνατον* e Barocc. 21. 22. *ἐν τοῖς δεινοῖς* acc. ex A et Barocc. 23. *διασωθῆναι*] *σωθῆναι* ex A et Barocc. 25. *αἱρεῖσθαι*] *προαιρεῖσθαι* e Barocc. 26. *καὶ δύνασθαι* acc. ex A et Barocc. 27. *ἔτι τε*] *ἔτι δὲ* ex Barocc. 28. *ἡ μεγαλοψυχία*] *ἥ τε φιλοπονία* ex Barocc. aliisque libris 32. *ἀταξίαν*] *ἀδοξίαν* e Barocc. *παρὰ*] *περὶ* ex A

P. 7, 1. *τε* add. ex Barocc. 4. 5. *φαύλας ἀπολαύσεις ἡδονῶν*] *φαύλας ἡδονὰς καὶ ἀπολαύσεις* ex Barocc. *ὑπομονητικὸν*] *ὑπομενετικὸν* ex Barocc. *ἐπὶ τῷ*] *ἐπὶ τὸ* Halmius 22. *καθάριος*] *καθάρειος* 25. *ἥδιόν τι*] *ἴδιόν τι* ex A et Barocc.

P. 8, 14. *δὲ* add. Halmius 20. *ἐπὶ μικροῖς* acc. ex A et Barocc. 32. *φιλόσκωπτον*] *φιλοσκώπτην* ex Barocc.

P. 9, 6. *αἱρεῖσθαι* et *τὸ* acc. ex Barocc.

P. 10, 12. *ὑπεξαίρεσθαι*] *ἐξαίρεσθαι* e Barocc. 21. *εὐθείαις*] *ἠρεμαίαις* ex AB 23. *τὰ* acc. e codd. 28. *εὐγνωμονικόν*] *συγγνωμονικόν* e Barocc. 29. 30. *μνήμη ἀγαθὴ* acc. ex A Bar. et B 31. *φιλοξένιον*] *φιλόξενον*

P. 11, 3. *εἰρημένων*] *ψεγομένων* ex AB 9. *παραμένοντας*] *παραμενοῦντας* 11. *ἰσχὺν*] *ἰσχύειν* e codd. Gesneri et Schowii

P. 12, 28. *καταβλέπεται*] *καλὰ βλέπεται* e marg. Gesneri. cod. A *βλέπεται*, quod fortasse tenendum

P. 13, 2. *ἀνθρώποις*] *ἀνθρώποισι* 3. *ποιεῖσθαι*] *ποιέεσθαι* 4. *μοχθηρίαν*] *μοχθηρίην* 5. *ἀμείνω*] malim *ἀμείνονα* 9. *φιλεῖ*] *φιλέει* 11. *κινούμεναι*] *κινεόμεναι* *εἰσίν*] *εἰσί* 12. *τοῖς δυνατοῖς οὖν*] *τοῖσι δυνατοῖσι ὦν* 13. *τοῖς παρεοῦσιν*] *τοῖσι παρεοῦσι* 14. *θαυμαζομένων*] *θωυμαζομένων* 15. *διανοίᾳ*] *διανοίῃ* 16. *ἐννοούμενον*] *ἐννοεύμενον* 19. *θαυμάζων*] *θωυμάζων* 22. *ἐπικαινουργεῖν*] *ἐπικαινουργέειν* 23. *ὃ*] *ὧν* ex A 24. *δίζεσθαι*] *δίζησθαι* 25. *τοῖς*] *τοῖσι* *ἑαυτοῦ*] *ἑωυτοῦ* ex A 27. *καὶ* add. Halmius 28. *πρήσσῃ καὶ διάγῃ*] *πρήσσει καὶ διάγει* Halmius

P. 14. in margine posita addidisse Gesnerum monuit Gaisfordus

P. 16, 23. *σύμπαντας*] *πάντας* ex A 26. *συναπολειφθήσεται*] *συνυπολειφθήσεται* Gesnerus

P. 17, 6. *Σωκράτην*] scribendum erat *Σώπατρον*. Iamblichi ad Sopatrum epistolam commemorat ipse Stobaeus XI, 14. XXXI, 9. LXXXI, 18 et Append. Flor. p. 49. Gaisf. ex eadem epistola ad Iamblichum derivata sunt quae leguntur I, 60. XXXVII, 33. CI, 23 14. *Περικτυόνης*] *Περικτιόνης* 15. *συνέστα*] *συνέστακεν?* 20. *ἀριθμητικὰ*] aliis locis *ἀριθματικὰ* 21. *ἐπιστῆμαι καὶ*] *ἐπισταμονικὰ* e cod. Schowii 22. *γένη*] aliis locis *γένεα* 24. *ἀκοὴ*] *ἀκοὰ* 25. *συμβεβηκότα*] *συμβεβακότα* 26—30. a Gesnero addita esse monuit Gaisfordus

P. 18, 7. *γιγνομένων*] scribendum ubique *γινομένων* 10. *οἷός ἐστι*] *οἷός τ' ἐντὶ* 11. *ἀριθμάσασθαι*] cod. Schowii *εὐρυθμίσασθαι*; hinc scripsi *συναρθμήσασθαι* 12. *εἶναι*] *ἦμεν* vel *εἶμεν* 14. *ἐσσεῖται*] *ἐσεῖται* per errorem illatum *κατόψεσθαι*] *κατοψεῖσθαι* Iacobsius *πάντα τε τὰ*] ex A 15. *ἐκείνου*] *ἐκείνω* 21. *οἰκείας*] rectius *οἰκήας* *τᾶς ἀρετᾶς φύσιν*] *τᾶς φύσιος ἀρετὰν* Alb. Frischingius 27. *καὶ* seclusi *δὲ ἀρετὰ*] *δὲ ἀκρότας* Gesnerus 28. *φύσεως*] *φύσιος* *ἀνάγκη*] *ἀνάγκα*

P. 19, 3. *τὸ δὲ στέργεν* — 5. *τᾶς ψυχᾶς* addidi e Brux. 6. *ἃ μὲν ὧν*] recte Hirschigius *ὧν ἃ μὲν* 7. *τᾷ ψυχᾷ*] *τᾶς ψυχᾶς* Hirschigius *πλῆθος*] malim *πλᾶθος* *πρῶτα*] malim *πρᾶτα* 16. *ὅτι* add. Hirschigius 17. *ἐγκρατῆ*] *ἐπικρατῆ* Hirschigius 18. *μέρος, ψυχᾶς ἀκρασία*] *μέρος τᾶς ψυχᾶς τῶ λογιστικῶ, ἀκρασία* Hirschigius. 24. *ἀκρατία*] *ἀκρασία* ex A 26. *ἀποβαλὲν*] *ἀποβάλλεν* 27. *καὶ κακὰ* addidi 31. *ἀθρησάτω*] *ἀθρῆσαι*

P. 20, 2. *τῶ δὲ ἀλόγω* — *ἐπιθυματικὸν*] haec legebantur p. 19, 32 post *ἄλογον*: transposuit Halmius 3. *τούτου*] imo *τούτω* *πλασίον*] malim *πλατίον* 11. *ἀνδρία*] *ἁ ἀνδρία* 13 et 32. *ἐπιθυμητικῶ*] aliis locis *ἐπιθυματικὸν* 14. *τις*] *ποθ'* Hirschig. 16. *ἀκρατίαν* — *θηριότητα*] *ἀκρασίαν* — *θηριότατα* 18. *οὖν*] *ὦν* *προσέοικε*] *ποτέοικε* 24. *ἀκρατία*] *ἀκρασία* 26. *ὀνομάζεται*] *ὀνυμάζεται*, quae forma etiam ceteris locis restituenda videtur 27. *τῶν*] *τᾶν* *διαθέσεων*] imo *διαθεσίων* 30. *τοῦ*] *τῶ* 31. *γεννᾷ*] *γεννῇ* 32. *θηριότητα*] rectius *θηριό-*

τατα 8. *τῶν ἀρετῶν*] *τᾶν ἀρετᾶν* 10. *φρόνησις*] *φρόνασις* *ἀνδρεία*] *ἀνδρία* 11. *δικαιότης*] *δικαιότας* 16. *συναρμόζομεν*] *συναρμόζοντες* Gesnerus 17. *τὸ λόγον ἔχον*] *τὰ λόγον ἔχοντα* *ταύτας*] *τᾶς* ex A 29. *τοῦ*] *τῶ*

P. 22, 1. *κτασάμενον* malim *αὐτοῦ*] *αὐτῶ* 6. *οὖν*] *ὧν* 7. *λόγου καὶ προαιρέσεως καὶ δυνάμεως*] repone formas doricas *λόγω καὶ προαιρέσιος καὶ δυνάμιος* 9. *οὖν*] *ὧν* 11. *ὀνυμαίνονται*] ante Canterum *οὐ μαίνονται* 15. *ἀναιρεῖν*] *ἀνευρέν* Halmius *ἀδικεῖν*] *ἀδικέν* 18. *κερδαίνειν*] *κερδαίνεν* 19. *καθυπερέχειν*] *καθυπερέχεν* 20. *τοιγαροῦν*] *τοιγαρῶν* *γνωρίζειν*] *γνωρίζεν* *ἀντιθέμενοι*] *ἀντιθέμεν* Hirschigius 24. *διδάσκειν*] *διδάσκεν* *τοὺς νέους*] *τὼς νέως* 27. *ὃς* addidit Halmius 28. *ὀρθοπλοιεῖ*] *ὀρθοπλοεῖ* 29. *Θεαγοῦς*] rectius *Θεάγους*

P. 23, 2. *θεωροῦμεν καὶ λέγομεν*] rectius *θεωρεῦμες καὶ λέγομες* 3. *τοῦ*] *τῶ* 7. *θύμωσις*] *θυμὸς* Halmius et Hirschigius 8. *οὖν*] delendum cum A, commate posito post *ἐπιθυμία* 9. *ἣ*] *ἅ* 10. *κρατοῦσα*] repone *κρατέουσα* vel *κρατοῖσα* *τοῦ ἐπιθυματικοῦ*] *τῶ ἐπιθυματικῶ* *ἀδεῶς*] *εἴδεος*? an cum Hirschigio *μέρεος*? *οὖν*] *ὧν* 13. *ἀπέσπασται*] *ἀπόσπασται* A, *ἀπόσπαστα ᾖ* Halmius 14 et 25. *τόκκα*] *τόκα* 16. *μερῶν*] *μερέων* 17. *τῇ κατοχῇ*] *τᾷ κατοχᾷ* 21. *φεύγειν*] *φεύγεν* *ἀκρατία*] *ἀκρασία* 22. *κρεῖσσον*] *κρέσσον* 23. *χέρηον*] cod. A *χαίρειν*. malim *χερῇον* 24. *συνευδοκῆται*] malim *συνευδοκῇ τε* 28. *ἀνδρειότης*] *ἀνδρειότας* 30. *τῆς ψυχῆς*] *τᾶς ψυχᾶς*

P. 24, 4. *ἀρετὰ*] *ἁρετὰ* 6. *γε οὖν*] rectius *γῶν* *φημίζεται*] *φατίζεται* e codd. 9. *τοῦ*] *τῶ* *ὑπάρχειν*] *ὑπάρχεν* 10. *αὐτῶν*] *ὀνυμάτων* Hirschigius 12. *ἣ*] *ἅ* 17. 18. *μεῖζον*] *μέζον* 17. *μεῖον*] *μῇον* 18. *μισαδονία*] *φιλαδονία* Halmius 19. *ἃ μὴ*] ita Gaisfordus pro *ἃ μέν*, scripsi *ἃ μὲν οὐ* e Brux. 23. *θεωρεῖν καὶ κρίνειν*] *θεωρὲν καὶ κρίνεν* 24. *γένηται, ἃ ἀρετὰ καλέεται*] *γένηται, καλέεται* e cod. A 25. om. lac. Canterus supplet *τὰ δεινά, ἀνδρεία· ὅκα δ' ἐν τῷ κατέχεν* *σαοφροσύνη*] *σαοφροσύνα* 30. *οὐκ*] *οὔτ'*

P. 25, 2. 3 et 4. *τοῦ*] *τῶ* 7. *ἐκτὸς*] *ἐντὸς* Canterus 16. *ἐοῖσα*] *ἔασα* (*ἔσσα*?) ex A 17. *δυνάμεων*] imo *δυναμίων* 23. *γὰρ* abest 25. *τοῦ θερμοῦ καὶ τοῦ ψυχροῦ καὶ*

τοῦ ὑγροῦ καὶ τοῦ ξηροῦ] posui dor. genetivos 26. *γίνεται*] recte Hirschigius *ἐγγίνεται* 27. *τοῦ θυμοῦ καὶ τῆς*] *τῶ θυμῶ καὶ τᾶς* 30. *ἐγγίγνονται*] *ἐγγίνονται* 31. *καὶ δυνάμει*] delet Hirschigius *δύναται*] *δυνατὸν* Canterus

P. 26, 2. *τοῦ*] *τῶ* 3. *θυμοῦ*] *θυμῶ* 4. *ἐμποιεῖ*] malim *ἐμποιέει* 5. *τῶν ἀλόγων*] *τῶ ἀλόγω* 9. *νοσεῖ*] malim *νοσέει* 10. *τοῦ*] *τῶ* 15. *ἐπικρατεῖ*] malim *ἐπικρατέει* 16. *ἀκρατίαν*] *ἀκρασίαν* 17. *λύπης*] *λύπας* 18. *ἀμπλακίσκοντι*] *ἀμβλακίσκοντι* 21. *πράσσειν*] *πράσσεν* 22. *ἡδονᾶς*] *ἁδονᾶς* 24. *ἐμπέσοι καὶ παρείτω*] *ἐμπεδοῖ καὶ παρίητι* Badham 25. *τοῦ*] *τῶ* 27. *ἀντέχειν*] *ἀντέχεν* *ἐπικρατεῖν*] *ἐπικρατὲν* 32. *τοῦ*] *τῶ*

P. 27, 2. *τὸ* abest 8. *ἀληθινὴ*] *ἀλαθινὰ* 11. *τοῦ*] *τῶ* 17. *τὸ* abest 23. *μείων*] *μήων*? 25. *καί τε νόσοι τε*] *καὶ ταὶ νόσοι δὲ* Canterus 29. *τὰ περὶ*] *ἃ περὶ* Halmius *τὰν διάθεσιν καὶ*] *διάθεσις* ex A 31. *τοῦ*] *τῶ*

P. 28, 2. *δαπάνῃ*] *δαπάνᾳ* 5. *τῶν ἄλλων διαθέσεων τῶν*] *τᾶν ἄλλων* (imo *ἀλλᾶν*) *διαθεσίων τᾶν* 12. *τὰν γραμμὰν*] *τὸ λαμπρὸν* Gaisfordus; sufficiebat *τὰ λαμπρά*. Hirschigius *τὰν χροιὰν* 13. *ἁπαλὸν*] Valckenarius *ἀπαταλὸν* 14. *σὺν τῇ χρηστότητι*] *σὺν τᾷ χρηστότατι*. haec cum sequ. *τῶν χρωμάτων* Hirschigius delet 18. *γενναθεῖσα*] *γεναθεῖσα* Halmius 19. *ἡρμοσμένον*] *ἁρμοσμένον* 21. *ἀφελεῖν*] *ἀφελὲν* 22. *οὔτε*] *οὐδὲ* 30. *κακῶς τε γὰρ*] *κακῶς γὰρ*? 31. *τὸν τυφλόν*] addendum videtur *αἰεὶ ἀνάγκα εἶμεν τυφλόν*

P. 29, 1. *λαμπρότητα*] *λαμπρότατα* 3. *κτῆσις*] *κτᾶσις* *ἀλλὰ χρᾶσις*] *ἀλλ' ἁ χρᾶσις* 6. *ἂν*] *τὰν* 8. *δήλεσθαι*] *δηλῆσθαι* et *δηλήσασθαι* libri, corr. Iacobsius 14. *τολμῶντι*] *τολμώντων* Canterus 15. *εἰπεῖν*] *εἰπέν* *θρασυνεέσθωσαν*] fort. *θρασυνεέσθων* vel *θρασυνέσθων*, propter *τολμώντων*, si recte coniecit Canterus 19. *ὁρίδδων*] *ὀριάδων* libri, corr. Schowius 21. *διαφόροις*] *ἀδιαφόροις* Canterus 23. *ἴεμεν*] *ἱέμεν* 24. *εἰς ἶσον*] rectius *ἐς ἶσον* 28. *γινώσκειν*] *γινώσκεν*

P. 30, 3. *παρὰ ταύτης*] *παρ' ἀρετᾶς* Halmius 6. *ἐστὶν ὅκ'*] rectius *ἔντι ὅκ'* (pro *ὅκ'* cod. A *ὅτε καὶ*) 16. *σεμνό-*

τητα] σεμνότατα 17. *τῆς φύσεως] τᾶς φύσιος* 18. *μείονα] μῄονα* *ἔστι δ' ὅκκα] ἔντι δ' ὅκα?* 21. *γενναθῆμεν] γεναθῆμεν* Halmius 25. *κε] κα*

P. 31, 2. *τοὺς] τὼς* (typothetae error *τὼ*) *συναγωνισαμένους] συναγωνισαμένως* (typ. error *συναγωνισαμένω*) 5. *ἕτερον — ἕτερον] ἅτερον — ἅτερον* 6. *ὧν] ἂν* *ἅτερον*] fort. delendum 8. *οὖν] ὦν* 9. *διὰ ἕτερον*] malim *δι' ἅτερον* 10. *ἢ] ἃ* 14. *προαιρετικὰ] προτρεπτικὰ* Halmius, *ποιητικὰ* Canterus 15. *αἱρετῶν] ἁτέρων* Halmius ex A, qui *ἑταίρων* 22. *δι' αὐτὸ] δι' αὔταυτο?* 23. *αὐτῷ] αὐτῶν* libri, corr. Gesnerus 30. *ἦμεν] τιμὲν* ante Canterum

P. 32, 10. *χρᾶται]* fort. *χρέεται* ut aliis locis 13. *ὦν ὅτι] ὅτι* 14. *ἀλλὰ] ἀλλ' ἢ* ex A et Brux. 17. *ζῶον]* scrib. ubique *ζῷον* 26. *φύσει] τοῖς φύσει* Hirschigius 27. *δορυφορεῖται] δορυφορεῖ δὲ* Halmius 30. *ἃ]* del. videtur.

P. 33, 1. *ἐστι]* imo *ἐντι* 2. *δεῖ] ἀεὶ* ante Canterum 4. *κυβερνάτης] κυβερνάτας* *ψυχᾶς δὲ] δὲ ψυχᾶς* *σωματούμενα] σωματουμένα* 13. *δαιμόνων] δαιμονίων* Canterus 30. *ὅτι] ὅθεν* Canterus

P. 34, 16. *πλείονες] πλῄονες* malim 19. *αἱρέοντι] ἀεὶ ῥέοντι* ante Valckenarium; *ἀγρέοντι* Canterus 20. 21. *τὸ ποτιποιούμενον] τὸ τῶν ποτιποιουμένων* Hirschig. 26. *ἀληθινὰς] ἀλαθινὰς* 28. *ἁβατικᾶς — γεροντικᾶς] ἁβατικὰς — γεροντικὰς* Halmius 29. *παμπληθέας] παμπλαθέας?* 31. *ἀληθινᾶς]* imo *ἀλαθινᾶς*

P. 35, 1. *μεταπιπτούσας] μεταπιπτοίσας?* 4. *ἀποστεροῦμες] ἀποστερέομες?* 7. *εἰς]* videtur ubique *ἐς* reponendum 10. *ἀλαθινὰν κρίσιν] ἀλάθειαν κριτέον* Hirschig. 14. *ἐμποιεῖν] ἐμποιέν?* 18. *τε καὶ] ἔτι* ex A 24. *μένοντες] μὲν ὄντες* Schowius, *βαίνοντες* Iacobsius 11. *οὖν] ὦν*

P. 37, 6. *τὸν] τὴν* recte Peerlkamp 14. *τῆς σκέπης]* scrib. *τὴν σκέπην* ex A 15. *αὐτῆς] αὐτὸ* recte Iacobsius

P. 38, 12. *θάλπους]* ita recte A, vulgo *θάλπος* 21. *λίθων]* seclusi 23. *ὦν τε]* excidit *τε* per errorem typothetae

P. 39, 9. *τοῦ τι ἂν δρᾶσαι] τοῦ τι ἀντιδρᾶσαι* probabiliter Iacobsius 11. *καὶ ἐπιθυμέοιμι]* seclusit Cobetus 16. *δεδομένοις] διδομένοις* ex A 24. *μέχρι] ἄχρι* ex A 25. *τὰ μέτρια] μετὰ μέτρια* A, unde *τὰ μὲν μέτρια* Iacobsius

recte 31. ἐχοίην] σχοίην μούνων δὲ τῶν] μούνων θ' αὐτῶν vulgo, μούνων θ' ἃ τῶν A, corr. Valckenarius

P. 40, 1. 2. ἃ δεῖ ἔσεσθαι] ἀεὶ ἐφίεσθαι Iacobsius 19. ἀκεσίμῳ] ἐναισίμῳ Cobetus 23. τὸν] τὸ Halmius 26. ποτε] κοτε 27. μέλοιμι] μέλοι μοι Hirschigius 32. ἀποστυγοίην] ita Gaisf. pro vulgato ἀποστυγείην. cod. A ἀποστυγέοιν i. e. ἀποστυγέοιμι

P. 42, 30. uncis inclusa ex Holsteniana addidit Gaisfordus

P. 43, 27. καθαρθείσῃ] καθαρθείσης ante Gaisfordum

P. 55, 1. μώεο] μῶσο

P. 61, 17. ἅπαντα] ἀπαντᾷ ante Valckenarium ἀνὴρ δικαίως τὸν τόκον] ita Gaisfordus; vulgo ἀνὴρ δικαίως αὐτῶν τὸν τόκον, liber Venetus ἀνὴρ δικαίως ἀντὶ τῶν τόκων, itaque locus ita scribendus ὅταν δανείζῃ τις πονηρῷ χρήματα, δίκαιος ἀντὶ τῶν τόκων λύπας ἔχειν. atque ita voluit etiam Iacobsius 21. praepone Ἀντιφάνους e libro Ven. a Kirchhoffio inspecto

P. 62, 7. κερδανεῖς] κερδανεῖ Nauckius 23. Ζηνοδότου] Ζήνωνος? cf. Praef. Com. fr. vol. I p. X 24. μὲν ἠρετὴ] ἀεὶ vulgo, corr. Valckenarius

P. 63, 5. εὐτυχίην] εὐτυχίαν δ'] τ' e marg. Gesneri 10. κακότητας ἐμοὶ] κακότητ' ἄσημον Reisigius; fort. κακότητας. ἐμοὶ [μὲν] . . . . ut locus mutilus sit

P. 64, 1. βλαβερώτερον] βλαβερώτατον Nauckius 20. separavi haec a praecedenti fragmento 21. ἄνθρωπον add. Gesnerus ἀλλὰ] ἀλλ' ἢ 28. λαγοί] λαγωοί A, hinc posui λαγῴ

P. 65, 2. συναγάγοι] συναγάγῃ 3. ἁπαξάπασιν] ἁπαξαπασῶν. Cf. Com. gr. IV p. 33 5. καθενός, τοσούτους] καθ' ἕνα τοσούτους? 19. ληίζεσθαι] imo λήζεσθαι 20. προαιρεῖται] imo προήρηται ex A μᾶλλον] recte lacunam indicavit Meierus; v. Sauppium Orat. Att. II p. 272

P. 66, 8. ἐκ τῆς ἐπιστολῆς] nimirum Plutarchi 10. φιλοσώματον] Peerlkamp φιλόσκωμμον, sufficiebat φιλοσκώμματον 15. κακομηχανώτατον] κακομήχανον Duebnerus 20. ῥᾴδιον] ῥηίδιον ἐπαινεῖν] ἐπαινέειν 21. ἤθους] cod. A ἦθος i. e. ἤθεος 25. Δίωνος ἐν τῷ π. δουλείας] v. Dio Chrys. vol. I p. 265—288 Emp. ex quo non dubium videtur quin quae Stobaeus habet

adumbrata sint 27. *πολλῶν ἐπιθυμιῶν*] haec delenda videntur, quamvis legantur etiam Tit. LXII, 42

P. 67, 3. *Σωκρατικοῦ*] probabiliter Gaisfordus *Κράτητος* et 4. *Κράτης*

P. 69, 3. *ἐλπίδας*] *ἐλπίδα* A 23. deest lemma 27. *γὰρ πρᾶγμ᾽, ἔφυ*] *πρᾶγμ᾽ ἐστὶ γάρ*. V. Com. graec. IV p. 248

P. 70, 11. *Θεοφορουμένῳ*] *Θεοφορουμένη* 15. *παντα-πλείστων*] *πᾶσι πλείστων* ex Orione 22. *λογισμοῦ· τῷ δ. πράγματα ἕκαστός ἐστι καὶ*] *λογισμοῦ τῷ δ. πράγματα. Ἕκαστός ἐστι τῷ* 25. *σύμβουλος*] *βουλῆς* Bentleius; rectius, ut videtur, Porsonus *σύμβουλος· ὁ λογισμῷ διαφέρων*

P. 71, 3. *καὶ γὰρ εἰ*] *εἰ γὰρ εὖ* ex A *φρονεῖν*] *φρενῶν* recte Valckenarius 5. *ὁ νοῦς ἐν τῇ ψυχῇ*] *νοῦς ἐν ψυχῇ* e Trinc. Aristotelis verba sunt in Top. I, 14 p. 288 Sylb. 6. 7. Haec ad unum fragmentum coniunxi. 8. *ἡ ἀγαθὴ*] *ἀγαθὴ* 12. *τὸ φρονεῖν*] Hermannus *τό γε φρονεῖν*, quod non sufficit 17. *κἀποσώσαις*] *κἀποσώσαι᾽* Porsonus 18. *ἂν*] *ἦν* 23. *ἀδίκως*] *κακῶς* ex XCIV, 4

P. 72, 2. *ἀνανδρία τε*] *κἂν ᾖ σοφός τις* ex XCI, 22. 5. *κλεῖθρον*] *κλῆθρον* 11. *ἂν*] *ἦν* 12. *αὐξάνειν*] *αὔξαν᾽ ἐν* Bothius 29. *γένηται*] *λέγηται*

P. 73, 15. *ὄρνισι μὲν*] *ὄρνισιν* *πολλὴν*] *πώλοις* Sylburgius, *λαγωοῖς* Trinc. et Voss. 16. *αὐτοχύτοις κεράεσσιν*] *αὐτοχύτως κέρατα καὶ* e codd. quibusdam affert Bergkius p. 368 qui conicit *ταῦροι δ᾽ αὐχαλέοι κεράεσσιν*. fort. *ταύροις δ᾽ αὐχαλέοισι* (?) *κεράατα*

P. 74, 6. abest lemma 27. *οὖσα*] *ἐοῦσα*

P. 75, 3. *Σωτάδου*] vid. Anal. Alex. p. 246. 8. *οὗ*] *ὅπου* ante Brunckium 11. *μηδὲν ἀτακτεῖν*] Hermannus *τὸ σὲ μηδὲν ἀτακτεῖν*, Gaisfordus *μηδέν ποτ᾽ ἀτακτεῖν* *εἰς*] *πρὸς*? 17. *τύχης*] ante Gesnerum *ψυχῆς*

P. 76, 10. *σοφοὶ*] delet Hirschigius 12. *ἐπεμελοῦντο*] *ἐπιμελοῦνται*?

P. 77, 10. *ἐν μίνῳ*] ex margine illatum et ex *ἐν Μένωνι* corruptum esse intellexit Gesnerus

P. 78, 14. *προμαντικῆς*] *μαντικῆς* Nauckius 27. *οὐδὲ τὸ σῶμα αὐτὸ τὸ*] *τὸ σῶμα οὐ τὸ* cod. A, quod revocandum 28. *τις εἶναι*] *τις εὖ εἶναι* A, *τίς ἂν εἶναι* scrib. e Damasc. *τὴν ὑγείαν*] malim sine articulo *ὑγείαν* (*ὑγίειαν*)

P. 79, 3. οὔτε] οὐδὲ 4. φαῦλος] αὐτὸς φαῦλος ut 2? 20. Ἀσφάλιον] rectius Ἀσφάλειον

P. 80, 17. τέρψεις] τέρψιες

P. 83, 9. εἴη] μηδὲ, et ita Halmius καὶ] ἐπὶ, Halmius κατὰ, qui mox ἐφικόμενος 15. ἀναγκαιότερα] ἀναγκαιότατα 25. ὕστερον] δεύτερον ex B ὁρίζειν] ὁρίζεν 28. εὐτυχίης] εὐτυχίας 30. ὑφ' ᾧ] ὑφ' ὧ 31. περασθήσεται] περανθήσεται

P. 84, 1. ἀπείρου] ἀπείρῳ 9. ταύταν] ταυτᾶν vel τουτᾶν? 11. 12. τῶν ὅλων] τῶ ὅλω Nauckius 14. οὐκ] οὔ κα? Halmius οὔ κεν 19. ἐούσας] ἐοίσας 22. ἄρχειν] ἄρχεν 23. ῥᾷον] ἔργον Halmius 25. ἐφ' ὅλω] ἐπὶ τῶ ὅλω Hirschigius οἴκω] βίω Hirschigius τε καὶ] τε γὰρ καὶ Hirschigius 26. σπωδᾶς] ἐπωδὰς vulgo, σπουδὰς Valckenarius, σπωδᾶς Hirschigius παιδείας] παιδιᾶς Hirschigius 27. ἁδονὰς] ἁδονᾶς Hirschigius 28. τυγχάνειν] τυγχάνεν 30. εὐτυχίας δὲ καὶ] δὲ om. A

P. 85, 5 et 6. ὅκκα] ὅκα, rectius ὁκὰ 10. αὔτ' ἂν] αὔτα Gaisfordus 20. ἂν] κα? 20. 21. φύσιος] εἰ φύσιος, Halmius φύσιος ὃς 23. νέων] recte νέω Hirschigius 26. λάβῃ] λάβοι e codd. Schowii 28. λαβεῖν] λαβέν 29. ἐπελθόντα μὲν] ἐπελθόντα, τὰ μὲν ex Ars.

P. 86, 22. πολυήκοον] φιλόλαλον scribendum ex A σῶμα ἔχειν] σῶμ' ἀσκεῖν? 23. πολυμαθῆ] ὀψιμαθῆ cll. XXIX, 68. ex quo κρεῖττον supplendum videtur πολὺ [κρεῖττον ὀψι]μαθῆ 24. καὶ κακίας ἀλλότριον] om. A 28. ἐχθρὸν πολέμιον] πολέμιον ἐχθρὸν Nauckius 29. ἄγαν φρονεῖν] ἄγαν ἀγανοφρονεῖν Valckenarius, ἄγαν φιλοφρονεῖσθαι margo Gesneri 30. χέρηον] ἄνοια A, ἄνοιαν B a m. s. et m. Gesneri

P. 87, 1. μεθύοντας] ex παροίνους i. e. παρ' οἴνους corruptum 2. καὶ αὐτὸς] dele μεθύειν] παροινεῖν e codd. 4. ἐπιμαίνεσθαι] ἐπιγέλα e codd. ἐπισημαίνεσθαι Cobetus 10. φεῦγε· αὕτη γὰρ] φεῦγε ἥτις e codd. 19. 20. χρῶ — αἰδοῦ] χρῶ τοῖς θεοῖς ὡς φίλοις· γονεῖς αἰδοῦ Valckenarius 20. γονεῖς — ποιοῦ om. A ποιοῦ. Ὃ δ' ἂν] imo ποιοῦ, ὃ δ' ἂν 21. ἴδῃς] εἰδῇς Halmius.

P. 88, 1. τὸ μὲν — ἀεὶ acc. e Brux. cf. V, 31 3. τραχὺς ὢν] τραχέσιν Nauckius 8. ζημίᾳ χρῶ acc. e Brux.

recte fortasse vulgo omittuntur 9. ὑβριζόμενος δὲ] δὲ om. A. cf. V, 26 16. ἐνενέγκῃς — τούτοις] εἰσενέγκῃς — τοιούτοις Hirschigius 19. κακὸν] βλαβερὸν ex A 21. 22. τὴν ἀτυχίαν] κακὰ ἐν οἴκῳ ex codd. 22. κρύπτε φθόνου χάριν coniungit Hirschigius, sed ut φθόνου χάριν explicationis causa addita et delenda putet 27. ἀπραγοῦντα] κακοπραγοῦντα vel δυσπραγοῦντα Gesnerus

P. 89, 5. καλοκαγαθίαν] ἴδια A, ἀίδια Nauckius 5. ζήτει. Φίλει τὴν] pro his εὐσέβειαν enotatur ex A. fort. Θεράπευε εὐσέβειαν, παιδείαν 8. εὐσέβειαν fort. delendum; vide ad 5. 9. Τευταμίδης] Τευταμίδου A, Trinc. et Gesn. m. 17. πάντοτε] περὶ θεῶν ex A

P. 90, 12. εὐφρανῇς] εὐφράνῃς 27. πείνων ἅρμοζε] πᾶσιν ἁρμόζου scripsi fortasse iusto audacius, sed confirmat plane cod. Brux. pro πείνων cod. A πεινῶν, unus Schowii πένης ὤν, Wyttenbachius γάμον ἅρμοζε 23. εὐγένειαν] εὐσέβειαν?

P. 91, 13. καταθάρρει] καταρῶ ex codd. 16. χρήσιμα] χρόνῳ ex B 30. ἐπαγγέλλου] ἐπεγγέλα Hirschigius

P. 92, 2—7. accesserunt e Brux. 9. ἀφικνεῖται] ἀφικνέεται 16. σωφρονεῖν] imo σωφρονέειν 17. κατὰ] καλὰ Valckenarius 25. αὔξων] αὔξειν Nauckius 26. χρὴ] χρῆν?

P. 93, 24. προμελεῖσθαι] ἐπιμελεῖσθαι ex Trinc.

P. 95, 18. ἢ ἂν] κἂν e Dione

P. 96, 7. δυσπέλαστον] δυσπάλαιστόν ἐστιν Nauckius 11. πόσον] ὅσον? 15. πεπραγότες] πεπραχότες ex Ven. 18. κἀπικρύπτεσθαι] κἀποκρύπτεσθαι ex A. 19. Τημενίσιν] Τημενίδαις 25. κεῖσ᾽] κείσεαι ex libris 26. οὐδέποκ᾽ εἰς] οὐδέποκα ex libris πεδέχεις] ante Salmasium μετέχεις 27. κὴν] recte libri κείν 28. πέδ᾽] παῖδ᾽ ante Salmasium

P. 97, 6. φρονεῖν εὖ] εὖ Gesneri et Schowii codd. omittunt; versus non integer 7. no. 16 separavi a praecedentibus et praeposui Aeschyli nomen, quod male in libris sequenti fragmento adscriptum est; v. Hermannum Opusc. III p. 140 et ad Aeschyli fr. p. 381 16. τοῦ αὐτοῦ] Aeschyli esse probabiliter statuit Hermannus 18. εἰς συμφορὰν ἵστησι] Trinc. et codd. Schowii εἰ συμφορὰν καθίστησι, unus εἰς ἡδονὰς καθῆκε. hinc εἰς πημονὰς ἔστησε correxi in

Annal. Marburg. 1846 p. 1097. atque ita nunc etiam Hermannus Aesch. fr. l. l. πολλὴν] πολλὰ e cod. Schowii

P. 98, 1—10. a Gesnero addita esse suspicatur Gaisfordus 12. ἔμμεναι] ἴδμεναι e codd. Schowii 19. δηλουμένη] Φιλουμένη Bentleius 24. dele comma post πιμπλάναι 27. κεἴ σ'] κἂν εἴ σ' ante Valckenarium 28. ἀμουσίαν] ἀμουσίας e marg. Gesneri

P. 99, 3. ἥκεις] εἴκεις recte Gesnerus 5. πολλὰ καὶ] τἀμὰ καὶ Berglerus, τἀμὰ δὲ Porsonus 6. ῥήματ'] ante Berglerum χρήματ' 7. μαθόντες] παθόντες Valckenarius 9. ἐπιτιθῆται] ἐπιθῆται ante Iacobsium 11. πιθέσθε Valckenarius 12. φθονῆθ' ante Dobraeum ἡμῶν] ante Valck. ὑμῶν 17. ἀφραδέῃ] ἀφραδέι Brunckius; v. Anal. Alex. p. 201 22. κατηφίῃ] κατηφείῃ 23. εὐόχθησι] εὐοχθῆσι ὀπάζει] ὀπάζῃ 26. ὑπεροπλίῃ τε καὶ] delevit τε Brunckius 27. ὑπὲρ αὐχένας ἴσχει] scripsi ὑπὲρ αὐχέν' ἀνίσχει, sed rectius Anal. Alex. l. l. posui ὑπέραυχον ἀνίσχει 28. μνᾶται δ' εὔπηχυν Ἀθήνην] ad Cotyn haec spectare cum Stephano existimavi Anal. l. l. sed fortasse de Oto cogitavit poeta ut in seqq. de Tantalo. cf. Apollodorus Bibl. I, 7, 4

P. 100, 2. αὖτε] malim αὖτις ut in fine versus 11. Ἀλεάδαις e Schowii codd. acc. 15. ἂν] ἦν 19. ἀλόγιστος] ἄλογος libri, ἄλογός τις Gaisford. οὗτοι] libri οὐ, quod οὐχὶ scripsi 20. Θετταλὴ] Θεττάλη 25. Ἐπιχάρμου] hoc lemma Grotius e coniectura posuisse videtur; libri Κερκίδου vel Κερκίδας, atque ita etiam Ven. a Kirchhoffio inspectus. iidem Κερκίδου sequenti loco adscriptum omittunt. nil impedit quo minus Cercidas notissimis Epicharmi verbis usus esse putetur. coniungenda igitur 42 et 43 ad unum Cercidae fragmentum. cf. Anal. Alex. p. 302 28. πῶς ἐνίδοιεν] πῶς κεν ἴδοιεν scripsi l. l.

P. 101, 2. παλῶ — δυσεκνίπτω τρυγός] ante Bentleium παλῷ — δυσεκνίπτῳ τρυγί 7. παῦρον] μέτρον edd. Theognidis 15. κοίτη] καὐτὴ Tyrwhittus 16. ὅπερ — κακῶν seclusit Cobetus.

P. 103, 3. μὴ 'πίστηται] male impressum μὴ ἐπίστηται ποδηγεῖν] ποδηγετεῖν Ecl. ph. II, 8, 2 ὀχέειν] ὀχεῖν 25. οὐδ' οἱ] οὐθ' οἱ 28. μετεκδύματα] ἐπενδύματα Valckenarius

P. 104, 6. *τὸν νόμον*] *νόμον* 21. *αἰσθητικὰ καὶ κόσμῳ*] *ἐσθῆτι καὶ κόσμῳ* 24 et 25. *τοῖς*] *τοῖσι* 24. *τύχης*] *ψυχῆς* ante Grotium

P. 105, 2. *δὲ*] fort. del. 5. *καὶ*] *τῶν*? an *καὶ τῶν*? 7. *Ἄνθρωποι*] *Ἀνοήτοι*? an *Ἀνόημονες*? 8. *ζωῆς — δεδοικότες*] haec ex A addita alii extricabunt; videtur nova sententia esse. intellegerem *ἀνοήμονες ὀρέγονται γήραος θάνατον δεδοικότες*, ut sit variatio eorum quae no. 81 leguntur 9. *ἀνδάνουσιν*] *μανθάνουσιν* Valckenarius; possis etiam *κατάνουσι* vel *ἀνύουσι* 30. *ἐμπόδιον*] *ἐγκοπὴ* ex Diog. Laert. IV, 50 Nauckius

P. 106, 2. *ἰσχυρότερον*] *ψυχρότερον* 9. *πῇ δὲ ἐλεεινούς, πῇ δὲ μισητοὺς*] transposui 12. *δὲ οὐδέποτε*] codd. *δέ ποτε*, unde Nauckius *δ' οὔποτε* 24. *ἔχω*] om. codd. unde Nauckius *ἐγὼ οὐλότριχος* vel *ἐγὼ οὖλος τὰς τρίχας*

P. 107, 1. *τὰς* addidi 8. *τι*] abundat

P. 108, 13. *ταῖς συζητήσεσι*] *ταῖς σιζητήσεσι* Trinc. corr. Hirschigius 14. *τοῖσι ἀλόγοισι* et *ζωίων*? 23. *ὁκότε*? 23 et 24. *οὐκ αἰδέονται* Iacobsius, *οὔτε δέονται* vulgo 30. *σπουδαιότατα*] *σπουδαιέστατα*? ut 24

P. 109, 11. *ἀδικηθεὶς*] Iacobsius *δηχθείς*. aut hoc aut infra *ἀνταδικεῖ* scrib. videtur 22. *μὲν ἀφρόνων*] *μὲν* codd. om. 23. *ἱεροσύλων*] *ἱεροσύλοις* e Porphyrio

P. 112, 2. *ἐξαίρουσι*] *ἐξαιροῦσι* 14. *ἐγγινομένης*] *ἐγγενομένης* 17. *ἐλαίης*] *ἐλαίαις* e Plutarcho *κάρδαμον*] *καρδαμίδι* e Plutarcho 29. *ψυχῆς*] *τύχης*

P. 113, 11. *φόβος δὲ*] *φόβος* 23. *ἐστὶν ἀρετῆς*] *ἀρετῆς ἐστι* ex marg. Gesneri *σωφροσύνη*] *σώφρων γυνή*. cf. Com. Gr. vol. IV p. 371 24. *ἦ χάριεν*] v. Com. Gr. vol. IV p. 372

P. 115, 4. *ἀνιστῶσαι*] *αἰστῶσαι* Grotius 7. *ὄντως δικαίως*] *ἀπ' ἀτρεκέως* Valckenarius; fort. *ἀπηλεγέως* 8. *εἶκεν*] *εἴπερ* *μισέεις*] *μισεῖς* Grotius *αὐτῶν*] *ἀτῶν*? 15. *τοῖς — ποιοῖτο*] *τοῖσι — ποιέοιτο* 26. *Θεοβούλου*] vid. p. 88, 8

P. 116, 1. *Χίλωνος*] cf. p. 88, 1 7. *ἑστήκει*] hoc revocandum, *ἕστηκεν* Hermannus 8. *ἐὰν*] *ἂν* 9. *εἰς — εἰς*] *ἐς — ἐς* 10. *θέλεις σχεῖν*] *θέλων ἔχειν* Brunckius *πλέον ἔχειν*] *πλέον σχεῖν* Brunckius 26. *ὑπὸ*] delet Nauckius

P. 117, 23. πατρὸς] male impressum πατέρος τέκνοις] τέκνοισι

P. 118, 1. 2. ἐπείσθη ἐκεῖνος. τὰ] πεισθεὶς ἐκεῖνος τὰ m. Gesn. 18. φαύλης καὶ ὀξίνην] post φαύλης ind. lacunam 24. ἐπιμείζονα ποιεῖ] ἐπιμέζονα ποιέει

P. 119, 7. διότι — ἀλλήλοις ποιοῦσιν, ἑαυτοὺς μακαρίζουσιν] διὰ τὸ — ἀλλήλους μακαρίζουσιν ex A 13. ὅτου] ὅπου Sauppius

P. 120, 9. 10. τοῖς ἄλλοις] τοὺς ἄλλους 20—32. seclusit Gaisfordus utpote a Gesnero adiecta

P. 121, 6. σωφροσύναν] σωφροσύνην e Damasc. 8. δὴ] δὲ 17. πᾶν] recte Damasc. μὲν 26. συναγωνιζομένης] συναγωνιζόμενος? an μετὰ delendum? 29. ἀφίησιν] imo ἐφίησιν

P. 122, 5. εἶδος] ἔδος Nauckius 6. ἀγαθὸν] abundat

P. 123, 6. ὑστερολόγου] δευτερολόγου 10. καὶ] delet Nauckius 15. φασὶ] φησὶ 16. ὠφελείας] rectius ὠφελίας 23. οὐ πᾶν τὸ] οὐκ ἂν τὸ ante Dobraeum 28. εἴης] εἷς Halmius 31. φύρδην] φύστην Toupius, φύρτην codd.

P. 124, 10. λέγει] λέγοι Halmius ἂν vulgo om. 13. ἀπατήσαντα] ἀπαντήσαντα e codd. 16. παράφρονοι] παράφοροι 23. ὥσπερ ὁ Σωκράτης] delet Nauckius 27. πῶς ἔχοντα] i. e. ὅπως οὖν ἔχοντα, non debebat tentari

P. 125, 1. μεθείλαντο] καθείλοντο Nauckius 4. ὃς abest vulgo; nisi forte lin. 7. post τάδε aliquid excidit 6. τὴν] τὸν e Brux. 7. πρὸς τάδε] προστὰς Brux. πρὸς τάδε cum dicit ostendit locum acclivem 9. καὶ fort. del. sensus est εἰ μὲν εὐδία ἦν, διεστείλω, εἰ δὲ ψῦχος, συνεστείλω 10—11. πρὸς τὰ — σύστειλον] πρὸς τὰ ὑπάρχοντα διάστειλαι καὶ σύστειλαι? 13. ἐργάζεσθαι . . . αι κρίνωμεν] ἐργάζεσθαι [ζημί]αν κρίνωμεν, vel ἐργάζεσθαι [ζημιοῦσθ]αι κρίνωμεν, Iacobsius ἐργάζεσθαι [ταλαιπωρεῖσθ]αι κρίνωμεν 14. τι] abundat 18. ὅτι ἐὰν] ὅτι ἂν 18. 19. διὸ ἅπερ] δι' ἅπερ Nauckius 23. ἐν εὐκολίᾳ] ἐν τῇ πάσῃ εὐκολίᾳ? 27. οὐ τὸ γῆρας, οὐ τὴν πενίαν] οὐ τὴν πενίαν, οὐ τὸ γῆρας? 28. καὶ τὴν] οὐ τὴν

P. 126, 10. ὧδε] τῷδε 11. τις] om. A, recte ut videtur 17. ἐνέγκαντα] ἐνεγκόντα ut infra? καὶ ἔτι] καὶ τί ex m. Gesneri 24. τί δεῖ] τίνα δεῖ? 27. ἢ] καὶ Nauckius

ποῖον ἢ] *ποῖόν τι* 29. *τοῦτο*] *τούτοις* Nauckius 31. *ἐκεῖνο*] *ἐκείνοις* Nauckius *πενία*] *τῇ πενίᾳ*?

P. 127, 11. *ἔρυμα*] Iacobsius *ἔμβα* 16. *οὐδὲ φιλοψυχῶ*] ante haec verba fort. excidit aliquid in hanc sententiam: *οὕτω καὶ τὸν βίον ἄχρηστον γενόμενον ἀποτίθεμαι* *ἀλλὰ καὶ*] *ἀλλὰ μὴ* Nauckius 19. *ἐξελθεῖν*] fort. add. *ἀλλ' οὐκ ἐξῆλθε* 23. *ἐστὶ*] *ἔτι* 24. *τῇ πρώτῃ . . . σίν*] supplevit Iacobsius 27. *ἀποκοτταβίσας*] miro errore quae de Theramene narrantur Critiae poculum propinante ad Socratem transtulit 28—30. *ὅρα* — *πεφρίκαμεν* et 31. 32. *ταχύ* — *κοιμηθείη* secludenda esse intellexit etiam Cobetus V. L. p. 371

P. 128, 9. *ἀποθέσθαι*] *ἐπιθέσθαι* 17. *ἐπιστᾶσα*] imo *ἐπιπτᾶσα* 23. *ὅρα παιδείαν*] haec uncis secludenda; spuria esse vidit etiam Cobetus l. l. 31. *ὅν κ'*] *ὅν κα*?

129, 1. *πρᾶτον*] *παρὰ τοῦ* ante Gaisfordum 2. *πολυπραγμονῇ*] malim *πολυπραγμονοῖ* (— *νοίη*) propter *ὁρμῴη* etc. at insolenter *αἴκα* cum optativo coniunctum est 3. *αὐτός τε μὴ προσκαλεόμενος*] *αὐτόν τε μὴ προκαλεόμενος* Iacobsius 4. *προεκαλέσσατο*] *προεκαλέσατο*. sequentia alii expedient; non expedivit Iacobsius p. 48 12. *καλωκἀγάθω*] *καλοκαγάθω* 18. *ὑπάρχει*] *ὑπάρχειν* 21. *οἷον τοῖς*] *οἷον ἐπὶ τοῖς*?

P. 130, 18. *τροφὴν δ'*] *τροφήν τ'* 24. *ὀνομάζειν*] *νομίζειν* ex A 27. *ἄλλων*] *Ἑλλήνων* ex B

P. 131, 8. *ὅτι τούτων*] *ὅτε τούτοις*? *ὅτε πόντον* Iacobsius 27 et 28. *κανονιστέον, ἢ τὰ*] *κανονιστέον ᾗ τὰ* 29. *ἐστιν*] nescio an delendum sit *ἐπωδυνώτερον*] *ἐπιπονώτερον*

P. 132, 1. *αἱρεῖσθαι*] *αἱρέεσθαι* 5. *Λαμπρόκλειαν*] *Λαμπροκλέα* Vind. quod probandum 23. *ἂν*] *ἦν* *Πλάτων*] A in marg. *Διογένης*

P. 133, 5. *ἐπίκαιρον*] *ἐπὶ καίρου* A, fort. *ἐπικαίρου* 16. *τὴν κτῆσιν*] excidit *τὴν* 24. *ὁ λόγος*] fort. delendum 26. *Πέρσαις μὲν*] *μὲν* om. A *οὐκ*] *οὐκ ἂν* 31. *καλινδούμενον*] *κυλινδόμενον* ex A

P. 134, 5. *τὸν λογισμὸν*] *λογισμὸν* 15. *καὶ εὐτελείας*] haec seclusi cum Hirschigio; nisi praestat 16. post *ἀκοσμίας* addere *πολυτελείας* 20. *πότου*] *ποτοῦ* 25. *ἀνειμένας*] *πολυτελεῖς* ex A 26. *λαμπρὰς*] *ἱλαρὰς*? 28. 29. *ἔπειτα*] *ἐπεί τοι* Iacobsius 29. *βλάπτωνται*] *βλάπτονται* ex A et Trinc. 31. *μόνον* acc. ex AB

P. 135, 1. ἐπαινῇ] ἐπαίρῃ duo codd. Schowii, quod recte praefert Hirschigius deletis infra verbis ὁ ἔπαινος εὐφρασία] corr. errorem εὐκρασία 5. εὐθὺς] εὐθέως A 8. ἐπεὶ ἡ addidi πηδήσασα] ἐμπηδήσασα Halmius, ἐπιπηδήσασα εἰς Iacobsius, cod. A πηδήσασα 12. εὐφρανῇς] εὐφράνῃς 20. κυβερνᾷς τοῖς θεραπεύουσι] κοινωνεῖς τοῖς θεράπουσι Gesnerus; θεράπουσι etiam B 26. οὐδ'] οὐθ'

P. 136, 5. ἐν] ἐπ' Halmius 6. ἡνίκα] ἡνίκ' ἂν Iacobsius 8. τοῖς συνεδρίοις] ταῖς ἀνυδρίαις ex A, revocanda vulgata 13. ἀπειθεῖν] probabiliter ἀναπείθειν Iacobsius 24. βέλτιον] ἄριστον ex A 27. δουλεύεσθαι] δουλοῦσθαι recte Hirschigius 29. ἔοικας] κακίας recte addit Hirschigius

P. 137, 2. οὔτε] οὐδὲ 3. οὔτε] οὐδ' ὅ, sufficit οὐδὲ ut Halmius voluit 6. ὅστις θέλεις] εἰ βούλει e codd. 10. θεὸς — σωτὴρ] σωτὴρ — θεὸς e corr. AB 12 θέλεις] βούλει σοι ex AB 16. αὐλὴν] fort. add. τῇ οἰκίᾳ 23. ἀλλοῖον] ἀλλοῖον ὂν? 28. τοιγαροῦν] τοίνυν ex A 29. λυμεῶνας εἰσδεχόμενος] transponit A

P. 138, 4. θαυμάζῃς] θαυμάσῃς? πρῶτον] πρὸ τῶν ex AB 5. ἀξιωθήσῃ] καταφρονηθήσῃ ex B, καταφρονήσῃ A, quod reponendum 17. γιγνώσκειν] γινώσκειν

P. 146, 11. πράττειν supplevit Gaisfordus 15. ἀπορρεουσῶν] scil. κρηνῶν, ellipsi aliunde mihi non cognita 20. πόλεων] πολίων

P. 147, 5. ἔδοσαν] ἔδησαν cod. Sch. et m. Gesn., fort. ἐνέδησαν 9. καταδουλευόμενοι] καταδουλούμενοι Damasc. καταδουλεύμενοι recte Hirschigius 13. καταναγκάσαι] καταναγκάσει? 26. ἑτέροις συνέλκεις] ἑτέροισιν ἕλκεις

P. 148, 9. εἰθισμένον] post hunc versum videtur alius excidisse 22. γὰρ διοπετεῖς] διοπετεῖς γὰρ Nauckius 26. Ἀπολλόδωρος] add. ἐν Διαβόλῳ cll. Hist. com. graec. p. 463

P. 149, 13. εἶχον] ἔσχον e Damasc. 15. ἐδείκνυ'] ἐδείκνυ δ' Grotius 20. δ' add. Wakefieldius, et sic Dam. 22. ἔτεμνεν] ἔτεμν' 28. εἰ δέ τ' αἰτοίην] τάλαν αἰτῶ τι cod. A. ταῦτ' ἀλλ' ἂν αἰτῶντι Damasc.

P. 150, 10. τοῦ] τε Damasc. 23. ἀλλ' οὐκ] ante haec fort. excidit ἐν τῇ σκηνῇ 26. δίδοσθαι] δεδόσθαι?

P. 151, 20. φανερῶς] φανερῶς ἂν vulgo et Damasc.

29. ὃ] οὐ Iacobsius 30. καὶ τῶν] καὶ τὰ τῶν ex A, κατὰ τῶν Iacobsius μετὰ] ὧν μετὰ Iacobsius

P. 152, 18. 19. βλέπομεν] βλέπωμεν ex A αἰῶνα] μωρίαν Iacobsius ἔργα] ἀργίαν recte Dübnerus 31. ὑγιεινήν] ὑγιαίνειν Nauckius

P. 153, 1. τοῦ] τῶν

P. 154, 2. ξυνουσία] ξυνουσίη

P. 155, 9. οὐδ' ἂν] οὔτ' ἂν. πλησιάζειν] πλησιάσαι ex A

P. 156, 8. δέ που] δήπου Halmius 14. indicavi lacunam; fort. excidit φανοῦνται 21. indicavi lacunam; excidisse videtur aliquid in hanc sententiam οὔτε γὰρ ἀμπέλῳ μάτην δεδόσθαι φύλλα

P. 157, 16. 17. καλλωπισμοῦ τοῦ τῶν γυναικῶν] τῶν γυναικῶν καλλωπισμοῦ A 20. οὕτως] οὕτως ἄνδρες e Damasc. 23. εὔοπτοι ὦσιν] εὔοπτά τε vulgo, εὔοπτά τοι ὦσι Arsen. εὔοπτα ὦσιν Brux. ex em. 25. καὶ αὐτῷ τῷ] καὶ αὐτὸ τὸ A. fort. καὶ δι' αὐτὸ τὸ 32. ἂν εἶναι] om. ἂν A

P. 160, 19. Εὐκλείδου] ex Erotico; v. Exerc. in Athen. Sp. II p. 27 21. εὔπιστος] εὔπειστος (non εὔσπειστος, ut per errorem impressum est) Lobeck. ad Aiac. p. 140 22. ἐν] ἐν δὲ? 23. ἄπιστος] ἄσπειστος Lobeck. 24. δὲ] δὴ?

P. 161, 21. ἐλευθέρως] ἐλευθέρῳ Nauckius 27. Κρεούσα] Κρεούσῃ

P. 162, 1. Ἡρακλεῖ] excidit fortasse sententia de fortitudine ex Hercule F. 132 3. δ' οὐ δεινὸν] δὲ δειλὸν Porsonus e Plutarcho 6. κέμμανῇ] κάμαθῇ Grotius 8. ἔργον] ἀργὸν Musgravius 20. ἀνδρείᾳ] ἀνδρίᾳ A 31. ἔσθ' ὅτ'] εὖθ' ὅτ' A, corr. Schneidewin

P. 163, 1. σεῦ' ἤδ'] σεύηθ' A, corr. Schneidewin 2. βιαζομένου — βέλεα] βιαζόμενος (e codd. Schowii) — βέλεσιν O. Schneiderus 8. χρυσεόμιτρα] χρυσεομίτρα 9. ἂ ναίεις] ἂν αἴῃς ante Grotium 13. ἔχουσα ante Grotium 29. πέσῃς] πέσοι βέλος ex Homero

P. 165, 19. κρατῶν] κρατέων scribendum erat et 20. ἡδονέων 20. πολέων] πολίων

P. 166, 12. ταύταν ἢ ἐπὶ ταύταν] τὰν ἢ ἐπὶ τὰν ex A. ἐπὶ τᾶς Hirschigius 29. Κνίκου] Κνήμου ex Thucydide

P. 167, 18. ἐτυράννεις] οὐκ ἐτυράννεις Wyttenbachius

P. 169, 2. τί με ἄγεις] τί με αὔεις correxi Annal. phil. Marburg. 1845 p. 1066

P. 171, 4. Χῖος] Κῷος? 17. προστρατοπεδεύσας] προσστρατοπεδεύσας recte Halmius 18. εἰ] ἦν

P. 172, 7. Δαρεῖος — βασιλεὺς] Δᾶτις — σατράπης Plutarchus 17. Παντελέου] Παντελείου ex A 25. ὑπὸ] ἐπὶ?

P. 174, 21. Θυραίαις] Θυρέας 25. διαφέρειν] Hirschigius διανέμειν. sed v. ad Stephanum Byz. p. 61, 6 et 292, 8 26. 27. Λακεδαιμόνιος στρατιώτης] Λακεδαιμονίων στρατηγὸς Barthius

P. 176, 15. ἀπαλλαχθήσεσθαι] ἀπαλλαγήσεσθαι ex codd. 18. εἰς] πρὸς codd. 26. μηδὲν] corr. errorem typothetae

P. 182, 1. χορὸς accessit e Vind. 3. ὑλακτῷ] ἀλυκτῷ Nauckius 17. λογίζεται] ληίζεται ex schol. Il. B, 833 Nauckius, rectius λωτίζεται Conington 22. ἀνέρος] ἀνδρὸς ex A. versus ex pluribus contractus videtur, nisi scribendum cum Nauckio ἀνὴρ δ' ὃς εἶναί φησιν, ἄνδρ' οὐκ ἄξιον

P. 183, 3. Ἀλκμαίωνος, quod vulgo abest, posui ex Vind. in quo est ακμ΄ς. Schowius Ἀλκμήνῃ, quod male secuti sunt editores Euripidis. locus ex Alcmaeonis oratione matris caedem defendente desumptus videtur 6. ἀνθρώπων] ἐνθρώσκων? 8. ἀθῶος] ἀθῷος Vind. τόνδε δεῖ μ' υπεκδραμεῖν] τοῦδε δεῖ μ' ὕπερ δραμεῖν? 10. τιθεμένην] recte Dobraeus κειμένην

P. 184, 4. Ἱεροκλέους] Ἱέρακος Pearsonus recte 11. ἄνθρωποι] ἂν ex A 20. βάλλουσιν] βαλοῦσιν 25. παντὶ] πάντως? an πάνυ τι? 30. φάγοιο] φάγοις

P. 187, 7. Ἀλωάδαι] Ἀλεάδαι 9. Ἰνοῦς add. ex Vind. 10. ἂν ἔχῃς add. Valckenarius ex XCIV, 6 18—29. a Gesnero addita esse monuit Gaisfordus

P. 188, 12. εὐνοίας] ἐννοίας A, ἀγνοίας Pflugkius τινός, οὐ] ita A, τινὸς μὴ vulgo, scripsi τι μὴ πονηρίᾳ] πονηρῶς ante Bentleium, πονηρᾶς A 13. τἄρ'] γάρ ante Gaisfordum 18. τὸ θεῖον] τό θ' ὅσιον? 24. τὰ δίκαια] τἄνδιχ' Musgravius

P. 189, 1. Καρχηδονίων] Καρχηδονίῳ 3. Κιθαρισταῖς] Κιθαριστῇ 10. φιλανθρώπους] fort. καλοὺς ἡμᾶς

e Sexto; cf. ad Menandri fab. inc. XXXIV **11.** *Φιλήμονος ἐν Παλαμήδει*] *Philiscus Palamede* Grotius, e coniectura an e libris incertum; videtur ex Euripidis Palamede esse **12.** *καὶ θεοῖς*] *κἂν θεοῖς?*

P. **192, 11.** *ἐκ τοῦ α΄ πολιτείας* acc. e Vind.

P. **193, 14.** *παρά τινος* add. A **26.** *πρὸς*] *τῆς πρὸς* e Vind. **28.** *Εὐριπίδου Αὔγης*] cf. quae scripsi Annal. Marburg. 1848 p. 1087

P. **194, 7.** *τῇ δικαιοσύνῃ*] *τῆς δικαιοσύνης* ex A

P. **195, 20.** *τῷ δὲ μὴ δικαίως χρωμένῳ*] haec e codd. Schowii addidi **23.** *ἑταίραν*] *μάχαιραν* Halmius

P. **196, 12.** *Ἐκ Πώλου*] *Ἐκ τῶν Πώλου* e Vind. id si in suo codice habuisset Photius Bibl. p. **114, 33** non finxisset, opinor, philosophum *Ἔκπωλος* **15.** *ἄλλαν*] imo *ἀλλᾶν* **16.** *ἀνδρεῖον*] *ἀνδρῆον?* **18.** *δηλοφανέστερον*] expectes aut *δηλότερον* aut *ἐμφανέστερον* **20.** *αὐταὶ*] *αὗται* **21.** *ἕνα*] *ἓν* Orelli **22.** *διαστραταγοῦσα*] *διαστραταγοῖσα?* **23.** *γένους*] *γε νοῦς* codd. Schowii, *καὶ νοῦς* Iacobsius; *καὶ νῶς* scribendum esse docet cod. A *γένως* (o) **24.** *ψαφιξαμένων*] *ψαφιξαμένω* Iacobsius **31.** *γενομένα τε παρ᾽ ἀνθρώποις*] aut corrupta haec sunt aut lacunosa, certe *τε* abundat *εἰ*] *ἢ* ante Galeum

P. **197, 3.** *πασᾶν τε*] fort. add. *ἀρετᾶν* *πάντων*] fort. add. *ἀγαθῶν* *κα*] hoc addidi, *ἂν* Gaisfordus **26.** *ἐπιθυμοῖ*] malim *ἐπιθυμοίη* **31.** *ἀλλ᾽ οὐδὲ*] quae abhinc sequuntur coniunxi cum superioribus, rem ipsam et codd. secutus.

P. **198, 22.** *πᾶσα*] *πᾶσ᾽ ἂν* Halmius (corrige erratum *πᾶσα ἂν*)

P. **199, 11.** *περὶ τὸ*] *περί τι* Halmius **12.** *ἔστι*] *ἔσται* ex A

P. **200, 2.** *αὐτοῦ*] malim *σαυτοῦ* **14. 15.** *οὐχ — προτάσεων*] haec secludenda

P. **233, 16.** *ἐπινικῶν*] *ἐπινικίων*

P. **234, 6.** *εἷς τις*] ante Abreschium *εἴ τις* **14.** *Κολακείᾳ*] *Κόλακι* **24.** *μὴ δίκαια*] cf. ad XCIII, 4

P. **235, 24.** *εὑρεῖν* seclusi praeeunte Hirschigio **28.** *ἐπιγιγνόμενος*] *ἐπιγινόμενος* *ἐς*] *ἐκ* recte Iacobsius *ἐπιθυμίαν*] *ἐπιθυμίην* **30.** *ἀκέσασθαι*] *ἀκέεσθαι* ex A

P. **236, 3.** *ἀνύσειεν*] *ἂν στήσειεν* cll. p. **235, 27.** *ἂν σβέ-*

σειεν Cobetus anim. ad Orat. p. 61 4. *ἐπιγιγνόμενος*] *ἐπιγινόμενος* 6—9. apud Gaisfordum duo sunt fragmenta, quorum alterum desinit in *χρέεσθαι*. coniungenda haec esse intellexit Halmius, ante quem locus ita edebatur *Τὸ οἰκονομέειν — προνόου. τὸ δὲ μηδ' ὅλως ἐθέλειν ἐστὶ τ. δ. χρέεσθαι. Οὐδέποτε τῶν κτηθέντων — κτήσει.* confirmat emendationem Vind. in quo liquido scriptum est *ου δεποτεω των κτηθέντων*. easdem emendationes post Halmium fecit Cobetus l. l.

10. *τοῦ αὐτοῦ* add. Vind. 11. *φειδεύμενοι*] *φιλεύμενοι* ante Valckenarium 26. *Μίδου*] *Μίδεω* 27. *ψυχὴν*] *τύχην* Valckenarius *κεκτῆσθαι*] addendum videtur *λέγω*, nisi cum Valckenario scribere praestat *Ἶρον* ut habent fere codd., ceteris *ἢν — κεκτῆσθαι* deletis

P. 237, 5. *Σιμωνίδης*] malim *Σιμωνίδην* cum Nauckio 23. *Χρυσοῦ*] hoc deleto (potest enim ex praecedente *κρίτου* natum esse) et insertis post *ἔχειν* verbis *οὐκ ἔχοντα δέ*, satis probabilem sententiam restituas, non aptam tamen ad tituli huius argumentum *τί*] imo *τι* 26. *κόρῳ*] *λόγῳ* Iacobsius, *οὔρῳ* probabilius Hirschig.

P. 238, 3. *ἐκείνους μὲν γὰρ*] *καὶ ἐκείνους γὰρ* ex A, quo restituto iam apertum est verba *τούτους δ' ὕδατος*, quae inter *πλείονος* et *ἀμφοτέρους* vulgo leguntur, a codd. autem absunt, ab interpolatore addita esse 9. *τοὺς ἀναγκαίους*] *τὰς ἀνάγκας*? *σκύλων*] *σύλων* ex A 20. *εἰ στασιάσει*] *ἢ στασιάσαι* e codd. 23. *αὐτῷ*] abundat 24. *ὁ Γυγὼν*] *ὁ συνὼν* Leopardus 25. *Κεινέας*] rectius *Κινέας* 27. *τοῦ*] *τ̃* Vind. i. e. *τῶν*

P. 239, 16. *ἐν δ' ἀπομνημονευμάτων* acc. ex Vind.

P. 240, 17. *ἐσχάτου γήρως*] *ἐσχατογήρως* Valckenarius

P. 241, 1. *τέκνοις*] *τέκνοισι* 4. 6. *χρήζει*] *χρηίζει* 7. *κακοηθίη*] *κακοθηγίη* vulgo; illud fere codices: neutrum ferri potest. fort. *κακογηθίη* ex B m. s. 11. *καὶ πολύπονον*] seclusi, om. A 15. *πληρώσεως, ἢ παρουσίας*] *ἢ πληρώσεως καὶ παρουσίας* recte Hirschigius 16. *καὶ τοῦ μὴ αἰσθάνεσθαι*] haec in marg. habet A. secludenda cum Hirschigio 28. *Αἰσωπίῃ*] *Αἰσωπηίῃ* vel *Αἰσωπείῃ* *γιγνομένῃ*] rectius *γινομένῃ*

P. 242, 4. *Ἰταλικοῦ*] *Ἰταλικῶν* 10. *ἐὰν*] *εἰ*? *ψέλλία*] *ψέλια* e Vind. 16. *χρυσίου*] *χρυσοῦ* ex A

P. 243, 10. ανοήτων] ἀνεκτῶν ante Gaisfordum 11. ὑπὲρ — εὐχή] haec seclusi; vidit etiam Iacobsius 26. ὡς Νίκανδρος — γράφουσιν] fort. docti glossatoris annotatio marginalis 30. ἀλλήλους] ἄλλους Iacobsius 31. προαπέθανον] πρῶτον ἀπέθανον ex A

P. 244, 7. ἐφίεται] volui ἐφίηται cum Wakefieldio 14. ὁδοὺς βιαίους] δυσβάτους Nauckius 17. ἐπαχθὴς] ἀπεχθὴς Nauckius 28. Μενάνδρου] Μιμνέρμου

P. 245, 1. Ὀλυμπιάδος] nulla fuit poetria Olympias; cod. A Ὀλυμπια^δ, Trinc. Ὀλύμπιαδου. lemma hoc fort. ad Pindari Olymp. I, 28 (βροτῶν φάτις ὑπὲρ τὸν ἀλαθῆ λόγον κτἑ.) spectat, ut is ipse locus exciderit; tum sequebatur ἀλάθεια θεῶν κτἑ. qui item Pindari locus videtur 2. μόνη — συνδιαιτωμένη] μόνα — συνδιαιτωμένα 5. ἀρχὰς ante Gaisfordum

P. 246, 5. χρῶ] χῶ e Sophocle et codd. Schowii 28. ἐκ τοῦ add. Vind.

P. 247, 14. ἀλήθεια] malim ἀληθεύειν 28. πόλει] rectius πόλι ξυγχωρεέτω μηδενὶ πλὴν] ξυγχωρεέτω, μηδενὸς πλὴν Iacobsius iuvante cod. A qui habet μηδὲν et msc. Schowii qui habent μηδενός. praeterea idem in Lectt. Stob. p. 61 ξυγχωρεέτω μηδενί, μηδενὸς πλὴν recte 30. τε] del. videtur ὠφελείη] ὠφελίη, quo ducit φιλίη in cod. A

P. 248, 1. ἀναγκαίης] recte ἀναγκαίη Koenius ad Greg. p. 393 et Iacobsius 7. ἢ] καὶ ex A 18. νοῆσαι] νοήσεται codd. Schowii Τάτιε] fort. ubique Τάτ scribendum, habetque id h. l. Trinc. 25. τῆς γραφῆς] τῇ γραφῇ e codd. Schowii 28. καὶ ὦτα] haec acc. ex cod. Schowii

P. 249, 3. ἀληθῶς] ἀληθὲς 9. ἐὰν] ἂν ex B 17. ἀκρότατον] ἄκρατον ex B 18. μὴ ὑπὸ] μήτε ὑπὸ 20. ἀγαθὸν] fort. del. 23. μήτε] μηδὲ πῶς] πῶς ἂν 27. 28. ἀληθὴς] ἀληθὲς?

P. 250, 6. 7. ἀληθὲς τί εἶναι. Τὸ μένον Nauckius 31. γίγνεσθαι] φθείρεσθαι Nauckius

P. 251, 18. ἐκ τῶν Ὁμήρου] suspicor Hermippi esse, cuius συναγωγὴν τῶν καλῶς ἀναφωνηθέντων ἐξ Ὁμήρου laudat Stobaeus Flor. V, 59

P. 252, 12. Ἀκρισίῳ add. ex Vind. 13. τοῦ αὐτοῦ

Ἀλεάδαις add. ex Vind. 20. *δ' ἑλέσθαι*] *ἑλέσθαι* codd. *λέγεσθαι* Nauckius 26. *πιθανὸν*] *ψεῦδος* Valckenarius 27. *πιθανώτερον*] *πιθανωτέραν* Salmasius

P. 253, 2. *πού*] *πού τι* Grotius

P. 255, 25. *ἐκ τοῦ σοφιστοῦ* acc. e Vind.

P. 259, 4. *σφάλλῃ*] *σφαλῇ* fere codd. 7. *Ἰνοῦς* acc. e Vind. 11. *Τημενίσιν*] *Τημενίδαις* 15. *τῷ λαλοῦντι*] *τὠγκαλοῦντι* Cobetus 17. *χειροῖν*] *χεροῖν* ex Vind. 18. *εἰς*] *ἐς*

P. 260, 9. *μέχρι δὲ*] *δὲ* om. codd. praeter B qui habet a m. s. 27. *ἐπ' αὐτόν*] *ἐπεὶ αὐτόν* ex A

P. 261, 9. *ὀθνεῖα*] *ὀθνήια?* 28. *ἵνα σώσω* fort. del.

P. 262, 1. *ἐπεδίδου*] *ἐπεὶ ἐδίδου?* *εὐτυχίαν*] *ἐντυχίαν* ex B 21. *ἐπικαλύπτειν*] *καλύπτειν* ex A

P. 263, 5. *Ἀκαδημίᾳ*] *Ἀκαδημείᾳ* 6. *μὴ λόγων*] meliore ordine A *μὴ γένοιτο τοσαύτη λόγων ἀπορία*

P. 264, 6. *κρίνωσιν*] *κρινοῦσιν* e B m. s. 7. *μέλι*] *μὲν* ante Wyttenbachium 18. *τἀληθῆ*] *τἀληθέα* 19. *παντὸς*] *πάντα* recte Iacobsius

P. 265, 3. *πρὸς Ὧρον*] Vind. *πρ̂* om. *Ὧρον*, quod firmat Gaisfordi coniecturam: *ἐκ τῆς Ἴσιδος πρεσβείας* 18. *κλεῖθρον*] *κλῇθρον* 27. *Νικολάου*] de huius ecloga v. Fragm. Com. graec. IV p. 579.

P. 266, 17. *μαθὼν*] corrigunt *παθὼν* 21. *ζηλοῖς*] vulgo *κλοῖς*, Vind. *ηλοῖς*, corr. Valckenarius 25. *ἀνώδυνα*] A et Vind. *ἄνω δία τ'*, unde posui *ἀνοδίᾳ* *μασσωμένους*] *μασωμένους* 27. *ἐν τούτοισι δεῖ*] *εὔτονόν σε δεῖ?*

P. 267, 4. *ὁμιλεῖ*] *ὁμίλει* ex B. versus hic ante 1. transponendus videtur 5. *ταράττεται*] *παρατάττεται* ex A 6. *δείπνῳ*] *δειπνῶν* 19. *ἐκτρέφων*] *τρέφων* Hirschigius

P. 268, 4. *καταλύουσι*] *κατεσθίουσι* ex A et Vind. *κατανύουσι* Iacobsius 8. *συνήθη*] *νόσον* addit Hirschigius 27. *κολακεύουσι*] *κατανεύουσι?*

P. 269, 11. *λαγωοὺς*] Socrates *λαγὼς* dixerat 12. *πολλοὶ*] *κόλακες* Hirschigius

P. 270, 6. *πᾶσιν*] *πάσχειν* 14. *ἔνιοι*] *μὲν ἔνιοι* *σώζειν*] *ζῶσιν* Grotius 16. *Μενάνδρου*] *Φιλήμονος* ex codd.

P. 271, 7. *ζητεῖς*] *αἰτεῖς*, et sic etiam Hirschigius 25. *ή*] *ζ*

P. 272, 3. ἐὰν] ἂν οἷς ἔχωμεν, τοῖς γε] οἷς ἔχομεν τούτοισι scripsi, rectius tamen Porsonus οἷς μὲν ἔχομεν, τοῖσδε 4. ζητοῦμεν] ζητῶμεν Porsonus 11. vulgo praemittitur τοῦ αὐτοῦ i. e. Ἀπολλοδώρου. omittit lemma Vind. quo confirmatur quod Com. fragm. IV p. 456 dixi, non comici poetae haec esse sed scriptoris prosaici ἐγὼ γὰρ] ἔγωγ' ἂν 16. οὔποτ' αὐτὸν] αὐτὸν οὔποτ' e codd. 23. δόμοις — πληρουμένοις] δόμους — πληρουμένους ex A

P. 273, 2. κέρδαινε, αἰσχύνου ante Bentleium 2—4. δέ μοι τὸ μὴ δικαίως εὐτυχεῖν. ἔχει φόβον ὁ τρισκακοδαίμων] v. Com. graec. fr. IV p. 256 7. ἐψῆν] ἔχειν Vind. 21. εἰς ἅπαντα] εἰς πάντα? an cum Trinc. et B ἅπαντα? 23. ἃ δὲ μὴ σεαυτοῦ] εἰ δ' οὐ σεαυτοῦ ex B, sed v. Com. graec. fr. IV p. 107 27. ἐγώ σέ] ἔγωγε Tyrwhittus

P. 274, 7. γνώμῃ] γνώμῃ μὴ ante Valckenarium 11. ἀπεστερέαται] ἀποστερέαται ante Schaeferum, ἀπεστερέεται Vind. 20 et 28. τοῦ αὐτοῦ acc. e Vind. 23. μόνου] μούνου 24. τυχεῖν ἑνὸς] μὴ ἀτυχεῖν ἑνὸς Iacobsius 29. χρηστή, ἐν καιρῷ δὲ] χρηστὴ ἐν καιρῷ, ἐν καιρῷ δὲ Iacobsius

P. 275, 7. ὡς add. Hirschigius, οἷον Iacobsius 22. Θεοκρίτου acc. e Vind. 27. καὶ (τοῦ θησαυρίζειν) αὐτοῦ] seclusa verba delevit Valckenarius τούτου] μόνου add. Vind. 28. προσθείη, χρήματα] προσθέῃ πρήγματα, quorum prius, προσθέῃ, etiam Halmius 29. εἰς] ἐς 30. μήκοτε] μηκέτι? ἀποφήνειε] ἀποφήναιο, Halmius ἀποφήνῃ

P. 276, 15. τοῦ φιλαργύρου] τῶν φιλαργύρων ex A 19. εὐφρανθησόμενον] εὐφραινόμενον ex A

P. 277, 5. ἀπαντήσας δὲ] delevit δὲ Sauppius; nisi fuit δὴ 14. ὅταν] ὅτῳ Sauppius 15. βούληται] βούλεται Sauppius 16. δὲ add. Sauppius 28. δέοντος] δοθέντος Nauckius

P. 278, 1. ὅστις] abhinc novum fragmentum ordiendum 3. Οἰδίποδι] acc. e Vind. 5—9 ad unum fragmentum coniungit Vind. ut suspicatus erat Nauckius Philol. IV p. 557. post primum versum indicavi lacunam 7. ἡ εὐτέλεια] οὖσα ἡ εὐτέλεια ante Grotium 9. Ἐρεχθεῖ add. Vind. 11. διωκάθειν] διωκαθεῖν 18. κτωμένου] χρωμένους ante Valckenarium

P. 279, 1. τῶν — ἐπιστολῶν] rectius fort. B τῆς — ἐπι-
ῆς
στολῆς, quo ducit etiam A qui habet του

P. 280, 3. προεκφερόμενος] παρεκφερόμενος recte Iacobsius

P. 281, 5. χρημάτων] χρήμασιν Gaisfordus in notis 22. Χρύσιππος] ante hoc nomen excidit numerus 29 24. lemma Αἰλιανοῦ — ἱστορίας vulgo n. 29 adscriptum huc rettulit Perizonius 26. ἐκέκραγε] ante Gaisfordum κέκραγε, qui voluit ἐκεκράγει, pro quo A ἐκέκραγε

P. 282, 2. ὑπό τινος add. ex A 30. ὀνείδει ἢ] ὂν εἰδείη e Xenophonte

P. 284, 26 et 30. γιγνόμενα — γίγνοιτο] γινόμενα — γίνοιτο

P. 285, 3. ἡδονῶν] imo ἡδονέων 8. τοῦ ζώειν secludi voluit Gaisfordus 23. ἀνθρώπῳ· τοιαύτην δὲ εἶναι] ἀνθρώπῳ τῆς [μὴ] τοιαύτης. εἶναι δὲ Gaisfordus in notis, partim e codd. qui habent τῆς τοιαύτης εἶναι pro τοιαύτην δὲ εἶναι

P. 286, 13. εἴη] ἔφη Halmius 16. εἴη ἂν] libri εἰς πᾶν et εἶ πᾶν, corr. Gatakerus 17. ψυχὴ] ξηρὴ ψυχὴ ante Wesselingium 30. φάρυγγι] φάρυγι e Vind.

P. 287, 12. δύναμαι καὶ τράγου] ingeniose et vere ut videtur Hirschigius δυναίμαν κα τραγεῖν δέ γε] om. γε A 26. πόμασι] πώμασι

P. 291, 19. κακῶς] λόγους recte Plut. et Clemens 23. πέλας] πολλοὺς ex A et Vind. 27. καὶ] τοι ex Athen. et
δή
Vind. qui habet τιθὴ i. e. τοι

P. 292, 4. πιόντος] πίνοντος ante Bentleium, πίοντος Vind. 6. τί δὴ] δὴ delet Grotius, cf. Com. graec. fr. IV p. 48 10. τοῦ αὐτοῦ] hoc addidi ex Vind. qui confirmat quod conieceram l. l. p. 49. sequens fragm. Nauckius cum hoc ita coniungit

α΄. Πονηρὸς οἶνος οὗτός ἐστι, Νικοφῶν.
β΄. ἅπας πονηρὸς οἶνος ὁ πολύς ἐστ᾽ ἀεί.

P. 293, 10. τοῦ αὐτοῦ acc. e Vind.

P. 294, 2. λέγοντα νῦν] νῦν add. Gesnerus; malui λέγοντα καὶ 3. ὥστε πρός σέ με] ὥστε πρὸς ἐμὲ cod. A, ὡς τὸ πάρος σε Iacobsius, ego Com. gr. IV p. 476 ὡς ἔμπροσθε, Cobetus utroque iuncto ὡς τὸ πρόσθε 7. αὐτὴ]

αὕτη 11. δὲ] τε 17. ἄλλο νεόφρων] ἀλλ' ἐνεόφρων Valckenarius 22. μὲν θήρης] μενθήρης, de quo cf. Anal. Alex. p. 365.

P. 295, 29. ὑγιείην] ὑγιαίνειν ex AB εὐχαῖς] εὐχὴν fere codd. i. e. εὐχῇ 30. ἑαυτοῖς] ἑωυτοῖσι

P. 296, 2. ὑγείης] ὑγιείης 14. πῶς ἂν οἰνόφλυξ] ὑπό τινος οἰνόφλυγος ex A 16. ὑπ' αὐτοῦ] ὑπ' αὐτῶν ex A. fort. ὑπ' ἄλλων μεθυόντων 17. Ἀνάχαρσις ἔφη] ἔφη om. A 18. εἰ φησὶν] εἰ ἔφησεν ex A 21. ὅσοι fort. ἀνόητοι ὅσοι 22. βρώσεσιν ἢ πόσεσιν ἢ ἀφροδισίοις vulgo 23. πᾶσιν — βραχεῖαι vulgo 24. ἐσθίωσιν ἢ πίνωσιν vulgo 25. ἐπιθυμεῖν vulgo 28. ἐστιν — βραχεῖα vulgo 29. αὖθις — δεῖ vulgo

P. 297, 7. φεύξωνται] φεύξονται Halmius 28. ἀσκήσεως] sequuntur vulgo καθόλου μὲν ἴσως τὸ σωφρονεῖν, quae B omittit et Gaisfordus seclusit

P. 298, 9. παραπλεῖον] ἐπιπλεῖον dubitanter Gaisfordus 28. σίτων] σιτίων e codd.

P. 299, 6. θηρώμενοι] θηρώμενος Nauckius

P. 301, 3. οὐ μεμάθηκας] οὐκ ἔμαθες e codd. 22. πρὸς αὐτῆς] ὑπ' αὐτῆς e Voss. in quo est . . π' αὐτῆς

P. 302, 10. μὴ] μᾶλλον ἤ? 13. ἀλυσιτελῶς] fort. add. δ' 15. Ῥούφου ἐκ τῶν add. ex Vind. 17. ὑμῶν] ἡμῶν ex Vind. et Trinc.

P. 303, 6. αὐτῷ ἵνα, ἐν] αὐτῷ καλῶς ἐπ' ex Epicteto 16. ἔχουσιν] πάσχουσιν Hirschigius

P. 304, 6. προσέλθοι] προέλθοι? 24. γε] σὲ codd. παλαιοὺς] πολλοὺς, quod etiam Hirschigius voluit 30. ἀντιδήξηται] ἀντιδήξεται ex A 31. ἀντιποιήσῃ] ἀντιποιήσει

P. 306, 22. οὐδὲ εἷς φύεται] οὐδεὶς φαίνεται ex emend. Grotii, quem imprudens secutus sum; cf. Fragm. com. gr. IV p. 252. fortasse scribendum ὀργῇ πάρα λογισμός ποτ' οὐδεὶς φύεται 24. τι] 27. τὴν ὀργὴν] τῆς ὀργῆς libri omnes, cf. Vind. Strab. p. 211

P. 307, 3. Μενάνδρου accessit e Vind. 12. νόμον] νόον Ahrens 20 et 21. separavi haec a praecedenti versu

P. 308, 8. ἡβάτω, γέρον] ἡβάτω γέρων? 9. νυνὶ δεῖ] νῦν ἡδὺ optime Nauckius, sed de hiatu comicis fortasse con cesso (Com. fr. III p. 81) in Sosiphane dubito; an igitur νῦν

ἡδύ γ'? Grotius νῦν δεῖ γὰρ 26. ἔντι γε] ἔστι δὲ omnes praeter B a m. s.

P. 309, 1. Ἀρχελάῳ acc. ex Vind. 3. εἰς αὐτὸν] εἰς ταυτὸν 12. ἐνδόκοισιν] e coniectura Valckenarii; ἐν δοκοῖσι codd. 13. μηδὲ] μήτε 25. αἵ δὲ ἀνούστερ' ἔτι] Gaisfordus αἵ δ' ἀνούστεραι πολὺ, rectius Cobetus αἵ δ' ἀνουστέρως ἔτι 26. καρτερόν] κατὰ τὸ καρτερόν Porsonus, rectius Bamberger et postea Cobetus πρὸς τὸ καρτερόν 27. ὅστις] coniunxi cum superioribus, ut est in codicibus.

P. 310, 3. ἢ 'ξαμαρτεῖν] ἐξαμαρτεῖν Porsonus 39. τοῦ αὐτοῦ acc. e Vind.

P. 312, 16. ἡ φυλακὴ] ἡ om. codd. 17. μείζω] μεῖζον e Plutarcho

P. 313, 2. ἄπονον] ἄτοπον e Brux. ut coniecerat Gaisfordus ἀφίησι] malim ἐφίησι προσλαβεῖν] προλαβεῖν, quod confirmat Brux. 18. τοῦ] τῶν e Trinc. 30. δυσμενοῦς] imo δυσμενέος

P. 314, 23. νόον] νοῦν 26. δὲ μή, οὐ] δὲ οὔ, οὐ Iacobsius, δι' ἃ vulgo, δ' οὐ Vind. 29. τοῖς] τοὺς

P. 315, 11. νόμιζε] ἐνόμιζε ex A 17. οἵ acc. ex A 23. διορθούμενον] διωθούμενον Wyttenbachius 25. τὰ προσφερόμενα] τὰ om. A

P. 316, 8. προαποπλούντων] προαποτελούντων Halmius, posui προαπλούντων ex Vind. 16. Κοτταβιζούσαις] Κωνειαζομένων, de quo cf. Com. gr. fr. IV p. 156 17. ἴδῃς] εἰδῇς? 24. ἄρ'] ἂν ante Porsonum 25. 27. Χίλωνος— Χίλωνι] Χείλωνος et Χείλωνι Vind.

P. 318, 17. ἀνέρρωσεν] ἀνερρώσθη

P. 319, 9. ἀγνοεῖ] ἀγνοῇ

P. 332, 5. μηδ' αὖ] μήτ' αὖ 16. πέτρινον] πτέρινον Casaubonus

P. 333, 22. τοὺς] delet Bevingius

P. 334, 6. ἂν] ἦν

P. 335, 11. βαρὺ τὸ] βαρύ τι ci. Wagner 25. ὅταν] ὅταν δ' 26. λαμπρῷ] λαμπρόν

P. 336, 1. κρίνει] κρινεῖ 7. τοῦ αὐτοῦ Αὔγης acc. e Vind. ubi Αὐγῆς. cf. Ephem. Marb. 1846 p. 1087 8. τοῦ αὐτοῦ Ἀλκμαίωνι acc. e Vind. ubi est ἀλκ.

P. 337, 1. ἢ εἰς] ἢ om. cod. Schowii 10. Βάκχαις acc.

e Vind. 26. τάλαντ' ἐκεῖνα] τάλανθ' ἱκανὰ ante Grotium 27. ἂν ἀποθάνῃς] cf. Com. gr. fr. IV p. 157 28. μηδ'] μήτ'

P. 338, 13. Χορός acc. e Vind. 14. τὴν θνητὴν] τὴν om. A φύσιν] φύσιν, εὖ? nisi θνητὴν φύσιν ex θνητοὺς φῦντας corruptum est 28. ἂν δ'] δ' om. Vind. 30. ἧς] corr. errorem ῆς χρόνων] τόκων?

P. 339, 5. τὰ ὀπίσω] τὠπίσω 8. τίν'] τι B, fort. τις 10. σεμνύνῃ] σεμνύνῃς nescio quis 15. πονῆσαν εὐτύχησεν.] πονήσαντες εὐτύχησεν A. scripsi olim Com. gr. fr. IV p. 143 πονήσαντ' εὐτυχεῖν, nunc posui πονήσαντας τυχεῖν, quod etiam Pflugkius voluit Sched. crit. p. 34 16. εὐδαιμονία εἴωθεν] εὐδαιμονίας εἴωθ'. vulgo hic versus cum lemmate Εὐριπίδου a praecedente separatus est; quod Com. gr. l. l. suspicatus sum, confirmat nunc Vind. qui lemma omittit et locum cum superiore coniungit ὑπερηφανίας] ὑπερηφανίαν? 28. προσέταξε καὶ τοὺς ἰδίους αὐτοῦ] προσέταξεν αὐτῷ τοὺς ἀγροὺς τοὺς ἰδίους ex A

P. 340, 2. οἳ περὶ] οἵπερ Halmius

P. 341, 1. εἰς] ἐς 2. κρείσσονι] imo κρέσσονι

P. 342, 11. οὐθεὶς ἐπ' αὐτοῦ] οὐδεὶς ἐφ' αὑτοῦ 15. ἐστὶ] ἔσται e codd.

P. 343, 3. ἢ τοὺς ὑφάντας] ἢ om. Vind. 16. ἱστορίας γ' acc. e Vind. 19. ἀνελοίατο] ἂν ἑλοίατο 22. ἐν ταυτῷ acc. e Vind. 29. ἐφ'] πρὸς ex A

P. 344, 1. μᾶλλον] ἄλλων Wyttenbachius

P. 347, 13. διακναιόμενοι] διακαιόμενοι e codd. 14. ἢ] καὶ A p. m.

P. 350, 21. ἀνάρετος] ἀνάρατος A 22. ὠδυνάσεις] ἃ δὲ μνᾶσις (μνᾶστις) Grotius θανάτοις] θνατοῖς Grotius εὐποτμότατε] εὐποτμοτάτα 27. Σάτυροι] Σατύρων 28. καὶ τὴν] καὶ om. A πάντ'] ἅπαντ' Wagner

P. 352, 6. αὐτὸς] αὐτοὺς ex A 8. ὡς] addidit Gaisfordus 22. ἱστορίας ς' acc. ex Vind.

P. 354, 16. γὰρ] addidit Grotius 21. δ'] addidit Grotius

P. 355, 2. νῦν] δὴ Voss. 13. πρός με πρὸς θεῶν θεοὺς] ita Grotius; revocavi librorum scripturam 22. πέλας ἢ] περάσῃ? ἢ καὶ τῷ] libri ἢ καὶ τό, fort. ἢ διὰ τὸ vel ἢ καὶ [διὰ] τὸ

P. 356, 6. τὸν μὲν γὰρ] γὰρ libri om.

P. 357. Haec quantivis pretii ecloga quem auctorem habeat incertum est. Scriptores ionica dialecto usos Stobaeus praeter Heraclitum et Democritum ad partes vocat duos, Anaxarchum (Abderitam?) et Eusebium. Possit videri Eusebii esse, cuius locum de periurio posuit Stobaeus eiusdem tituli no. 13. Sed Eusebius in ceteris apud Stobaeum excerptis eam secutus est et dicendi et disserendi rationem, a qua nostrae eclogae color vehementer abhorret. Itaque non incredibile est esse Anaxarchi, cuius e scriptis quae attulit Stobaeus XXXIV, 19, ex libro περὶ βασιλείας ducta esse e Clemente Alexandrino constat. Atque ad hunc librum, in quo locus de fide servanda tractari potuit, fortasse ecloga nostra referenda est. 1. βαναύσῳ τέχνῃ προσθάλψαντες] ita ex A editum, vulgo βασάνῳ pro βαναύσῳ, B in marg. e nescio cuius coniectura βασάνῳ προσάψαντες (προσθλίψαντες?) 6. ὅρκου ἐπιορκίης] ὅρκου ἐπιορκίην Gesn. 8. καθεστῶτος] imo κατεστεῶτος 11. ἡγείσθω] ἡγεέσθω διεστῶτας] malim διεστεῶτας 12. οὓς περσῶν ἐκτὸς ἀμηρύτους] fort. οὕσπερ ἐὼν ἐκτὸς [ἄτης] ἀμηρύτους vel simile quid ὁ θεὸς] ὁ ἄθεος scr. e Damasc. 13. παρεπιδημεῖν] παρεπιδημέειν ζώοις] ζωοῖς vel ζωιοῖς volebam, non ζωίοις, ut male editum est 15. 16. παρεπιδημίαν] παρεπιδημίην Damasc.

17. πόλεως] imo πόλιος 18. δὲ] δὴ 19. οὕτως ἔχοντα] post οὕτως excidit fortasse νόου vel διανοίης vel simile quid 20. ὡς τὰ] λώιστα 23. παραθέσει] rectius παραθέσι 24. εἰς] ἐς Dam. ἀμφιβολίην] ἀντιλογίην?

ων

25. μὲν οὖν] μὲν οὖν A, hinc scripsi μὲν ὦν 27. εἰς] ἐς 30. ἐδέσμευε] ἐδέσμευσε Trinc. et Dam. 30. κρύπτοι] κρύπτοιτο A et Dam. 31. παρῆν] imo παρέην 32. ἔκλυσιν] dubitanter scripsi ἤλυσιν διήρειδε τὸν] διηρείδετο Iacobsius

P. 358, 1. νάρθηκα] νάρθηκι Iacobsius νοσευτίην] αἰτίην Valckenarius, νοσηλείην Iacobsius; locus nondum persanatus 2. τοῦ νεὼ] τοῦ θεοῦ ποιεῖσθαι] ποιέεσθαι 5. δὲ τῶν ἑῶν χερῶν] Dam. δ' ἐν τῷ νεῷ χερῶν 7. 8. ὅπερ — ψεῦδος] haec fort. sine causa seclusi 8. βαρυνθεὶς] fort. addendum δὲ 10. ἔρευ] ἐρρύη, quod iuvat

Dam. qui ἔρριε habet παρακαταθήκης] hoc ex uno B dedit Gaisfordus, ceteri libri παραθήκης 11. οὖν] ὦν 14. ὅπη δὴ] Gaisfordus in notis ὁπηδεῖ, nisi fuit ὁποίη δὴ et in seqq. ἀπαντοίη scribendum est cum Iacobsio pro παντοίη 15. παντοίη τύχη] τύχη παντοίη ex A et Dam. φορὴ] φορῇ Dam. 15. αἰωρουμένη] αἰωρευμένη

Scrib. Berolini m. Maio MDCCCLV.

ERRATA.

P. 1, 14. ὑπο pro ὑπὸ 10, 31. φιλεταῖρὸν pro φιλέταιρον 61, 16. post ἀεὶ comma delendum 127, 21. post διήγαγον pone comma pro signo interrogationis, et 21. vice versa 130. dele uncum et pone 31. ante ἀβίους 135, 1. ἀκρασία pro ἀφρασία 138, 4. μικρά, πρὸ pro μικρὰ πρὸ 166, 12. τᾶς pro τὰς 196, 21. ἄ pro ἃ 274, 11. dele comma post χρέεσθαι

EX PHOTII BIBLIOTHECA

COD. CLXVII p. 112 Bekk.

Ἀνεγνώσθη Ἰωάννου Στοβαίου ἐκλογῶν ἀποφθεγμάτων ὑποθηκῶν βιβλία τέσσαρα ἐν τεύχεσι δυσί· προσφωνεῖ δὲ ταῦτα, δι' ὃν καὶ τὴν συνάθροισιν φιλοπονῆσαι λέγει, Σεπτιμίῳ ἰδίῳ υἱῷ. ἡ δὲ συναγωγὴ αὐτῷ ἔκ τε ποιητῶν καὶ ῥητόρων καὶ τῶν κατὰ τὰς πολιτείας λαμπρῶς βεβιωκότων ἐγένετο, ὧν, ὡς καὶ αὐτός φησι, τῶν μὲν τας ἐκλογὰς τῶν δὲ τὰ ἀποφθέγματα καί τινων ὑποθήκας συλλεξάμενος, ἐπὶ τῷ ῥυθμίσαι καὶ βελτιῶσαι τῷ παιδὶ τὴν φύσιν, ἀμαυρότερον ἔχουσαν, πρὸς τὴν τῶν ἀναγνωσμάτων μνήμην στείλειεν.

Ἔστι δὲ αὐτῷ τὸ μὲν πρῶτον βιβλίον φυσικόν, τοῦ δὲ δευτέρου τὸ μέν τι κατ' ἀρχὰς μέρος λογικόν, τὸ δὲ λοιπὸν καὶ πλεῖστον ἠθικόν· καὶ τὸ τρίτον δὲ καὶ τὸ τέταρτον πλὴν ὀλιγίστων ἠθικὰ καὶ πολιτικά. καὶ γὰρ τὸ μὲν πρῶτον ἔχει μὲν κεφάλαιά ξ', οἷς καὶ τὰς τῶν παλαιῶν ἁρμόζει χρήσεις καὶ χρείας· ταῦτα δέ εἰσι μετὰ τὸ

Περὶ θεοῦ διαλαβεῖν, ὅτι δημιουργὸς τῶν ὄντων καὶ διέπει τὸ ὅλον τῷ τῆς προνοίας λόγῳ.

δεύτερον Περὶ τῶν νομιζόντων μὴ εἶναι πρόνοιαν, καὶ ἑπομένας ταύτῃ θείας ἐπὶ τῇ τοῦ παντὸς διοικήσει δυνάμεις.

εἶτα Περὶ δίκης παρὰ τοῦ θεοῦ τεταγμένης ἐποπτεύειν τὰ γινόμενα ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, τιμωρὸν οὖσαν τῶν ἁμαρτανόντων.

καὶ Περὶ ἀνάγκης θείας καθ' ἣν ἀπαραιτήτως τὰ κατὰ τὴν τοῦ θεοῦ γίνεται βούλησιν.

Περί τε εἱμαρμένης καὶ τῆς τῶν γινομένων εὐταξίας.

Περί τε τύχης ἢ ταυτομάτου.

καὶ Ὅτι ἀλόγιστος ἡ φορὰ τῆς τύχης.

Περί τε χρόνου οὐσίας καὶ μερῶν, καὶ πόσων εἴη αἴτιος.

καὶ Περὶ Ἀφροδίτης οὐρανίας καὶ ἔρωτος θείου.

δέκατον Περὶ ἀρχῶν καὶ στοιχείων καὶ τοῦ παντός.
εἶτα Περὶ ὕλης.
Περὶ ἰδέας.
Περὶ αἰτίων.
Περὶ σωμάτων καὶ περὶ τῆς τούτων τομῆς καὶ περὶ ἐλαχίστου.
Περὶ σχημάτων.
Περὶ χρωμάτων.
Περὶ μίξεως καὶ κράσεως.
Περὶ κενοῦ καὶ τόπου καὶ χώρας.
Περὶ κινήσεως.
εἰκοστὸν δὲ Περὶ γενέσεως καὶ φθορᾶς.
Περὶ κόσμου καὶ εἰ ἔμψυχος καὶ προνοίᾳ διοικούμενος, καὶ ποῦ ἔχει τὸ ἡγεμονικόν, καὶ πόθεν τρέφεται.
Περὶ τάξεως τοῦ κόσμου, εἰ ἓν τὸ πᾶν.
Περὶ τῆς οὐρανοῦ οὐσίας καὶ διαιρέσεως.
Περὶ οὐσίας ἄστρων καὶ σχημάτων, κινήσεώς τε καὶ ἐπισημασίας.
Περὶ οὐσίας ἡλίου καὶ μεγέθους σχήματός τε καὶ τροπῶν καὶ ἐκλείψεως καὶ σημείων καὶ κινήσεως.
Περὶ σελήνης οὐσίας, μεγέθους καὶ σχήματος φωτισμῶν τε καὶ περὶ ἐκλείψεως καὶ ἐμφάσεωςκαὶ περὶ ἀποστημάτων καὶ σημείων.
Περὶ γάλακτος.
Περὶ κομητῶν καὶ διαττόντων καὶ τῶν τοιούτων.
Περὶ βροντῶν, ἀστραπῶν, κεραυνῶν, πρηστήρων, τυφώνων.
τριακοστὸν δὲ Περὶ ἴριδος, περὶ ἅλω καὶ παρηλίου καὶ ῥάβδων, καὶ δὴ καὶ περὶ νεφῶν, ὁμίχλης, ὑετῶν, δρόσου, χιόνος, πάχνης, χαλάζης.
Περὶ ἀνέμων.
Περὶ γῆς, εἰ μία καὶ πεπερασμένη, καὶ [περὶ] ποίου μεγέθους, καὶ περὶ θέσεως αὐτῆς, καὶ περὶ σχήματος γῆς, καὶ πότερα μένει ἡ γῆ ἢ κινεῖται· περί τε σεισμῶν γῆς, καὶ περὶ θαλάττης, πῶς ἄμπωτις καὶ πλημμῦραι γίνονται.
Περὶ ὑδάτων.
Περὶ τοῦ παντός.
Περὶ φύσεως καὶ τῶν συμβαινόντων ἐξ αὐτῆς αἰτίων.

Περὶ τῆς τῶν ζώων γενέσεως καὶ τὰ ἑξῆς.
Πόσα γένη ζώων, καὶ εἰ πάντα λογικὰ καὶ αἰσθητά.
Περὶ ὕπνου καὶ θανάτου.
Περὶ φυτῶν.
Περὶ τροφῆς καὶ ὀρέξεως τῶν ζώων.
Περὶ φύσεως ἀνθρώπων.
Περὶ νοῦ.
Περὶ ψυχῆς.
Περὶ αἰσθήσεως καὶ αἰσθητῶν καὶ εἰ ἀληθεῖς αἱ αἰσθήσεις.
Πόσαι εἰσὶν αἱ αἰσθήσεις, καὶ ποίας οὐσίας καὶ ἐνεργείας ἑκάστη.
Περὶ ὁράσεως καὶ κατοπτρικῶν ἐμφάσεων.
Περὶ ἀκοῆς.
Περὶ ὀσφρήσεως.
Περὶ γεύσεως.
Περὶ ἀφῆς.
Περὶ φωνῆς, καὶ εἰ ἀσώματος ἡ φωνή, καὶ τί αυτῆς τὸ ἡγεμονικόν.
Περὶ φαντασίας, καὶ κριτηρίου.
νθ΄ Περὶ δόξης.
καὶ ξ΄ Περὶ ἀναπνοῆς καὶ παθῶν.

καὶ τὰ 'μὲν τοῦ πρώτου βιβλίου κεφάλαια τοσαῦτα καὶ περὶ τούτων· καὶ δηλονότι φυσικά, πλὴν ἐνίων τῶν ἐν ἀρχῇ, ἃ μᾶλλον ἄν τις εἰς τὰ μετὰ τὰ φυσικὰ ἀνάξοι· τούτοις δέ, ὡς ἔφημεν, τὰς τῶν παλαιῶν δόξας, εἴτε συμφώνους οὔσας εἴτε καὶ διαφώνους, παρατίθησιν. ἐν μέντοι τούτῳ τῷ βιβλίῳ, πρὸ τοῦ τοῖς εἰρημένοις κεφαλαίοις ἐπιβαλεῖν, περὶ δύο κεφαλαίων διαλαμβάνει· ὧν τὸ μὲν ἔπαινός ἐστι φιλοσοφίας, καὶ οὗτος ἐκ διαφόρων αὐτῷ συνηρανισμένος, τὸ δὲ περὶ τῶν κατὰ αὐτὴν συνεστηκυιῶν αἱρέσεων, ἐν ᾧ καὶ περὶ γεωμετρίας καὶ μουσικῆς καὶ αριθμητικῆς δόξας παλαιὰς συναναγράφει.

τὸ δὲ δεύτερον βιβλίον συμπληροῦται μὲν κεφαλαίοις ς΄ καὶ μ΄. διαλαμβάνει δὲ πρῶτον μὲν

Περὶ τῶν τὰ θεῖα ἑρμηνευόντων, καὶ ὡς εἴη ἀνθρώποις ἀκατάληπτος ἡ τῶν νοητῶν κατὰ τὴν οὐσίαν ἀλήθεια.

εἶτα Περὶ διαλεκτικῆς.

καὶ Περὶ ῥητορικῆς.
καὶ Περὶ λόγου καὶ γραμμάτων.
Περὶ ποιητικῆς.
Περὶ χαρακτῆρος τῶν παλαιῶν.
Περὶ τοῦ ἠθικοῦ εἴδους τῆς φιλοσοφίας.
Περὶ τῶν ἐφ' ἡμῖν.
Ὅτι οὐδεὶς ἑκὼν πονηρός.
Ὁποῖον χρὴ εἶναι τὸν φιλόσοφον.
Ὅτι χρὴ σέβειν τὸ θεῖον.
Ὅτι τοῖς εὐσεβέσι καὶ δικαίοις βοηθεῖ τὸ κρεῖττον.
Περὶ μαντικῆς.
Ὅτι χρὴ περὶ πολλοῦ ποιεῖσθαι τὰς τῶν σοφῶν συνουσίας, ἐκκλίνειν δὲ τοὺς φαύλους καὶ ἀπαιδεύτους.
Περὶ τοῦ δοκεῖν καὶ τοῦ εἶναι· καὶ ὅτι οὐ τῷ λόγῳ χρὴ κρίνειν τὸν ἄνθρωπον, ἀλλὰ τῷ τρόπῳ.
Ὅτι οἱ ἄλλοις ἐπιβουλεύοντες ἑαυτοὺς λανθάνουσι καταβλάπτοντες.
Περὶ εὐδοξίας.
Περὶ φήμης.
Ὅτι μέτρον ἄριστον.
Ὅτι δυσκατόρθωτον ἡ ἀρετή, εὐμεταχείριστον δὲ ἡ κακία.
Ὅτι οὐ χρὴ λόγον ποιεῖσθαι περὶ τῆς τῶν ἀσυνέτων δοκιμασίας.
Ὅτι τὴν ὑπόκρισιν, τοῖς κεχρημένοις ἐπιβλαβῆ οὖσαν καὶ πρὸς οὓς γίνεται, τῆς ψυχῆς ἐκβλητέον.
Ὅτι οὐ χρὴ πολυπραγμονεῖν, φθόνου γὰρ καὶ διαβολῆς αἴτιον γίνεται τὸ τοιοῦτον.
Ὅτι ἐν οἷς πλημμελεῖ τις τὸ μεταμελεῖσθαι κάλλιστον.
Περὶ λοιδορίας, ὡς οὐκ ἀγαθόν.
Ὅτι ἐν τῷ λοιδορεῖσθαι χρὴ σκοπεῖν μὴ τοῖς αὐτοῖς περιπεπτώκαμεν ἐλαττώμασι.
Περὶ ἀνάγκης τῆς κατὰ τὸν βίον.
Ὅτι εὐκαίρως δεῖ πράττειν.
Περὶ τοῦ βούλεσθαι, ὅτι οὐ δεῖ ὡς ἔτυχεν ἀναβάλλεσθαι.
Ὅτι τὸ δυστυχῆσαι πολλάκις ἐπωφελὲς γίνεται, καὶ μάλιστα τοῖς ἄφροσι.
Περὶ ἀγωγῆς καὶ παιδείας.
Ὅτι κάλλιστον ἡ φιλία τῶν ἀγαθῶν.

Ὅτι ἡ ὁμοιότης τῶν τρόπων φιλίαν ἀπεργάζεται.
Ὅτι χρὴ ἐν ταῖς δυστυχίαις καὶ τοῖς κινδύνοις μη περιορᾶν τοὺς φίλους.
Ὅτι οὐ χρὴ συναδικεῖν τοῖς φίλοις.
Περὶ γνησίων καὶ ἀβεβαίων φίλων.
Ὅτι χρὴ ταχείας ποιεῖσθαι τὰς πρὸς τοὺς φίλους διαλλαγὰς τὰ ἁμαρτήματα αὐτῶν ῥᾷον φέροντας μετὰ τῆς ἀμνηστίας.
Ὅτι ἐν ταῖς ἀτυχίαις τοὺς γνησίους τῶν φίλων διαγινώσκομεν.
Φιλικὰ παραγγέλματα.
Περὶ ἔχθρας, καὶ τοῦ ὁποῖόν τινα χρὴ εἶναι πρὸς τοὺς ἐχθρούς.
Περὶ τοῦ πῶς ἔστιν ἀπ' ἐχθρῶν ὠφεληθῆναι.
Περὶ τοῦ εὐεργετεῖν.
Ὅτι μείζων ἡ χάρις ἐν καιρῷ δοθεῖσα.
Περὶ τοῦ ἀντευεργετεῖν.
Ὅτι τοὺς πονηροὺς οὐ χρὴ εὖ ποιεῖν, οὐδὲ παρ' αὐτῶν εὐεργετεῖσθαι.
Καὶ τὸ τελευταῖον Περὶ εὐχαριστίας,
ἐν οἷς καὶ τὰ τοῦ δευτέρου κεφάλαια.

Ἐν δὲ τῷ τρίτῳ περιέχεται κεφάλαια μβ'.

πρῶτον Περὶ ἀρετῆς. 1
εἶτα Περὶ κακίας. 2
Περὶ φρονήσεως. 3
Περὶ ἀφροσύνης. 4
Περὶ σωφροσύνης. 5
Περὶ ἀκολασίας. 6
Περὶ ἀνδρίας. 7
Περὶ δειλίας. 8
Περὶ δικαιοσύνης. 9
Περὶ πλεονεξίας καὶ ἀδικίας. 10
Περὶ ἀληθείας. 11
Περὶ ψεύδους. 12
Περὶ παρρησίας. 13
Περὶ κολακείας. 14
Περὶ ἀσωτίας. 15
Περὶ φειδωλίας. 16
Περὶ ἐγκρατείας. 17
Περὶ ἀκρασίας. 18
Περὶ ἀνεξικακίας. 19
Περὶ ὀργῆς. 20
Περὶ τοῦ γνῶθι σαυτόν. 21
Περὶ ὑπεροψίας. 22
Περὶ φιλαυτίας. 23
Περὶ τοῦ συνειδότος. 24
Περὶ μνήμης. 25
Περὶ λήθης. 26
Περὶ ὅρκου. 27

Περὶ ἐπιορκίας. 28
Περὶ φιλοπονίας. 29
Περὶ ἀργίας. 30
Περὶ αἰδοῦς. 31
Περὶ ἀναιδείας. 32
Περὶ σιγῆς. 33
Περὶ τοῦ εὐκαίρως λέγειν. 34
Περὶ βραχυλογίας. 35
Περὶ ἀδολεσχίας. 36
Περὶ χρηστότητος. 37
Περὶ φθόνου. 38
Περὶ πατρίδος. 39
Περὶ ξένης. 40
Περὶ ἀπορρήτων. 41
καὶ μβ´ Περὶ διαβολῆς. 42

Τὰ δὲ τοῦ τετάρτου βιβλίου ἐστὶ ταῦτα·

πρῶτον Περὶ πολιτείας. 43
δεύτερον Περὶ νόμων καὶ ἐθῶν. 44
Περὶ δήμου.
Περὶ τῶν ἐν ταῖς πόλεσι δυνατῶν. 45
Περὶ ἀρχῆς καὶ περὶ τοῦ ὁποῖον χρὴ εἶναι τὸν ἄρχοντα. 46
Ὅτι κάλλιστον ἡ μοναρχία. 47
Ὑποθῆκαι περὶ βασιλείας. 48
Ψόγος τυραννίδος. 49
Περὶ πολέμου. 50
Περὶ τόλμης. 51
Περὶ νεότητος. 52
Περὶ στρατηγῶν καὶ περὶ τῶν κατὰ πόλεμον χρειῶν ὑποθῆκαι. 54
Περὶ εἰρήνης. 55
Περὶ γεωργίας. 56, 57
Περὶ ἡσυχίας. 58
Περὶ ναυτιλίας. 59
Περὶ τεχνῶν. 60, 61
Περὶ δεσποτῶν καὶ δούλων. 62
Περὶ Ἀφροδίτης πανδήμου καὶ περὶ ἔρωτος τῶν κατὰ τὸ σῶμα ἡδονῶν. 63, 64
Περὶ κάλλους. 65, 66
καὶ τὰ ἑξῆς τοῦ κεφαλαίου τούτου. Περὶ γάμου κ. τ. ἑ. τ. κ. τ. 67—73
Γαμικὰ παραγγέλματα. 74
Περὶ παίδων κ. τ. ἑ. τ. κ. τ. 75—78
καὶ Ὅτι χρὴ τοὺς γονεῖς τῆς καθηκούσης τιμῆς καταξιοῦσθαι παρὰ τῶν τέκνων. 79

Ὁποίους χρὴ εἶναι τοὺς πατέρας περὶ τὰ τέκνα. 83
Ὅτι κάλλιστον ἡ φιλαδελφία καὶ ἡ περὶ τοὺς συγγενεῖς διάθεσις. 84
Οἰκονομικός. 85
Περὶ εὐγενείας κ. τ. ἑ. τ. κ. τ. 86—89
Περὶ δυσγενείας. 90
Περὶ πλούτου κ. τ. ἑ. τ. κ. τ. 91—94
Περὶ πενίας. 95
Σύγκρισις πενίας καὶ πλούτου. 96, 97
Ὅτι ὁ βίος βραχὺς καὶ φροντίδων ἀνάμεστος. 98
Περὶ λύπης ὅτι λίαν μοχθηρά. 99
Περὶ νόσου καὶ ἰάσεως. 100
Περὶ ὑγιείας καὶ διαμονῆς αὐτῆς. 101
Περὶ ἰατρῶν. 102
Περὶ εὐδαιμονίας. 103
Περὶ κακοδαιμονίας. 104
Ὅτι ἀβέβαιος ἡ τῶν ἀνθρώπων εὐπραξία. 105
Περὶ τῶν παρ' ἀξίαν εὐτυχούντων. 106
Περὶ τῶν παρ' ἀξίαν δυστυχούντων. 107
Ὅτι δεῖ γενναίως φέρειν τὰ προσπίπτοντα. 108
Ὅτι δεῖ τὰς εὐτυχίας προφαίνειν, τὰς δ' ἀτυχίας κρύπτειν. 109
Περὶ ἐλπίδος. 110
Περὶ τῶν παρ' ἐλπίδα. 111
Οτι οὐ χρὴ ἐπιχαίρειν τοῖς ἀτυχοῦσιν. 112
Ὅτι οἱ ἀτυχοῦντες χρήζουσι τῶν συμπασχόντων. 113
Περὶ γήρως κ. τ. ἑ τ. κ. τ. 115—117
Περὶ θανάτου. 118
Περὶ ζωῆς. 119
Σύγκρισις ζωῆς καὶ θανάτου. 121
Περὶ πένθους. 122
Περὶ ταφῆς. 123
Παρηγορικά. 124
Ὅτι οὐ χρὴ παροινεῖν εἰς τοὺς τετελευτηκότας. 125
Ὅτι τῶν πλείστων μετὰ θάνατον ἡ μνήμη διαρρεῖ ταχέως. 126

Ὁμοῦ τὰ κεφάλαια τοῦ τετάρτου νη'. τῶν δὲ τεσσάρων βιβλίων ση'. οἷς παρατίθησιν, ὡς ἔφημεν, ὁ Ἰωάννης ἔκ τε

τῶν ἐκλογῶν καὶ τῶν ἀποφθεγμάτων καὶ τῶν ὑποθηκῶν δόξας τε καὶ χρήσεις καὶ χρείας. ἀγείρει δὲ ταύτας ἀπὸ μὲν

φιλοσόφων ἀπό τε
Αἰσχίνου τοῦ Σωκρατικοῦ καὶ
Ἀναξάρχου καὶ
Ἀναχάρσιδος
Ἀριστωνύμου καὶ
Ἀπολλωνίου
Ἀντισθένους καὶ
Ἀριστίππου
Ἀρίστωνος καὶ
Ἀριστοξένου καὶ
Ἀρχύτου
Ἀριστοτέλους
Ἀναξιμάνδρου
Ἀναξιμένους
Ἀρχελάου
Ἀναξαγόρα
Ἀρχαινέτου
Ἀρκεσιλάου
Ἀρριανοῦ
Ἀντιπάτρου Ἱστιαίου
Ἀντιφάνους
Ἀπολλοδώρου
Ἀριστάρχου
Ἀσκληπιάδου
Ἀρισταίου
Ἀρχεδήμου Ἑκαταίου
Ἀπολλοφάνους
Αἰγιμίου
Αἴσαρος
Ἀττικοῦ
Ἀμελίου
Ἀλβίνου
Ἀριστάνδρου
Ἁρποκρατίωνος
Ἀπελλοῦς
Ἀρισταγόρου
Ἀριστομβρότου
Ἀρχιμήδους
Βοηθοῦ
Βίαντος
Βηρώσου
Βερονίκης
Βροτίνου
Βίωνος
Γλαύγωνος
Δημώνακτος
Δημητρίου
Δαμίππου
Διογένους
Διοδώρου
Δημοκρίτου
Διοτίμου
Διοκλέους
Δαμαρμένους
Διδύμου
Δίωνος
Δίου
Εὐκλείδου
Εὐφράτου
Ἐπιχάρμου
Ἐπανδρίδου
Ἐρασιστράτου
Ἐκπώλου
Ἐπικούρου Γαργητίου
Ἐπικτήτου
Ἑρμοῦ
Ἐμπεδοκλέους
Ἐπικούρου Ἀθηναίου
Εὐσεβίου
Εὐρύσου
Ἐρατοσθένους
Εὐρυστράτου
Ἐκφάντου
Ἐπιδίκου
Εὐδόξου
Ἐπιγένους
Ἐνηνίου
Εὐρυφάμου
Ζαλεύκου
Ζήνωνος
Ζωροάστρου
Ἡρακλείδου
Ἡρακλείτου
Ἡροφίλου
Θεμιστίου
Θεοβούλου
Θεανοῦς
Θεάγους
Θεοφράστου
Θεοδώρου
Θάλητος
Θεοκρίτου
Θρασύλλου
Ἱερωνύμου
Ἱππίου
Ἰαμβλίχου
Ἱεροκλέους
Ἱππάλου
Ἴωνος
Ἱππώνου
Ἱέρακος
Ἱπποδάμου
Ἱππάσου
Ἰούγκου

Κρίτωνος
Κλεοβούλου
Κέβητος
Κορίσκου
Κλειτομάχου
Κριτολάου
Κλινίου
Καρνεάδου
Κλεάνθους
Καλλιμάχου
Κριτίου
Κράντορος
Καλλικρατίδου
Λευκίππου
Λουκίου
Λύσιδος
Λύκου
Λύκωνος
Λεωφάνους
Λογγίνου
Μεναίχμου
Μητροκλέους
Μετώπου
Μενεδήμου
Μουσωνίου
Μνησάρχου
Μελίσσου
Μητροδώρου
Μίλωνος
Μοδεράτου
Μαξίμου
Νικολάου
Νουμηνίου
Ναυμαχίου
Ναυκράτους
Νικίου
Νικοστράτου
Ξενοκράτους
Ξενοφάνους
Ὀνάτου
Ὀκέλλου
Ὀνήτορος
Πανακαίου
Πιττακοῦ
Περιάνδρου
Πυθαγόρου
Πλουτάρχου
Πεμπέλου
Πλάτωνος
Παναιτίου
Ποσειδωνίου
Περικτιόνης
Πορφυρίου
Παρμενίδου
Πολέμωνος
Πυθέου
Πώρου
Πολυβίου
Πλωτίνου
Πρωταγόρου
Πυθιάδος
Πύρρωνος
Ῥούφου
Ῥηγίνου
Σόλωνος
Σωτίωνος
Σωσιάδου
Σερήνου
Σωκράτους
Στίλπωνος
Σπευσίππου
Στράτωνος
Σκυθίνου
Σφαίρου
Σελεύκου
Σεβήρου
Τίμωνος
Τιμαίου
Ταύρου
Τιμαγόρου
Τέληνος
Ὑψαίου
Φιλοξένου
Φιλολάου
Φερεκύδου
Φαβωρίνου
Φίντιος
Χίωνος
Χρυσίππου
Χαρώνδου
Χίλωνος
καὶ κυνικῶν δὲ
Ἀντισθένους
Διογένους
Κράτητος
Ἡγησιάνακτος
Ὀνησικρίτου
Μενάνδρου
Μονίμου
Πολυζήλου
Ξανθίππου
Θεομνήστου

Καὶ τῶν μὲν φιλοσόφων, ἐξ ὧν τὴν συλλογὴν ἐποιήσατο, οὗτοι.

ποιηταὶ δὲ
Ἀθηνόδωρος
Ἀναξίλλης
Ἄρχιππος
Ἀπολλωνίδης
Ἀλκιδάμας

Ἀρισταῖος
Ἀντίμαχος
Ἀντιφάνης
Ἀρίσταρχος
Ἀρχίλοχος
Ἀχαιός
Αἰσχύλος
Ἀγάθων
Ἄλεξις
Ἀριστοκράτης
Ἄμφις
Ἀλκαῖος
Ἄρατος
Ἀστυδάμας
Ἀνδρόνικος
Ἀναξανδρίδης
Ἀριστοφάνης
Ἀράλοχος
Ἀπολλόδωρος
Ἀλέξανδρος
Ἀνακρέων
Ἀξίνικος
Ἀριστοφῶν
Βακχυλίδης
Βίων
Βίοτος
Βάθων
Δίφιλος
Διονύσιος
Δημήτριος
Δικαιογένης
Διόδωρος
Δίκτυς
Εὐθύδαμος
Εὔπολις
Εὔφρων
Ἐρατοσθένης
Ἐπίχαρμος
Εὔηνος
Εὐφορίων
Ἑρμόλοχος
Εὐριπίδης
Ζήνων
Ζηνόδοτος
Ζώπυρος
Ἡσίοδος
Ἡρώδης
Ἡνίοχος
Ἡλιόδωρος
Θεόδεκτος
Θέσπις
Θέογνις
Θεόκριτος
Θελέροφος
Ἰοφῶν
Ἱππόθοος
Ἱππῶναξ
Ἰσίδωρος
Ἱπποθόων
Ἰούλιος
Ἴων
Κλεάνθης
Κλεαίνετος
Καλλίμαχος
Κριτίας
Κλεόβουλος
Κρατῖνος
Καρκίνος
Κερκιδᾶς
Καλλίνικος
Κλεινίας
Κράντωρ
Κλειτόμαχος
Λίνος
Λικύμνιος
Λυκόφρων
Λεωνίδης
Λάων
Μένανδρος
Μύρων
Μοσχίων
Μένιππος
Μόσχος
Μίμνερμος
Μελινὼ
Μητρόδωρος
Μηνόφιλος
Νικόστρατος
Νικόλαος
Νεόφρων
Νικόμαχος
Ναυμάχιος
Νεοπτόλεμος
Ξενοφάνης
Ξέναρχος
Ὅμηρος
Ὀρφεύς
Ὀλυμπιάς
Πίνδαρος
Παρμενείδης
Ποσίδιππος
Πανσανίας
Πολυείδης
Πατροκλεύς
Πείσανδρος
Πανύασις
Πειρίθους
Πομπήιος
Ῥιανός
Σοφοκλῆς
Σωτάδης
Σιμωνίδης
Σωσιφάνης
Σιμύλος
Σωσίθεος
Σκλήριος
Σαπφώ

Σαραπίων	Τελέσιλλα	Φίλιππος
Σωσικράτης	Ὑποβολιμαῖος	Φοινικίδης
Στασῖνος	Ὑψαῖος	Φιλίσκος
Σώπατρος	Φιλήτας	Φερεκράτης
Σθενίδης	Φιλόξενος	Φανοκλῆς
Σουσαρίων	Φιλιππίδης	Φίντυς
Στησίχορος	Φρύνιχος	Φιλαῖος
Τιμόστρατος	Φιλωνίδης	Χαιρήμων
Τιμοκλῆς	Φιλήμων	Χοίριλος
Τυρταῖος	Φωκυλίδης	Χάρης.

Ἀλλὰ καὶ ποιηταί, ὧν χρήσεις τοῖς κεφαλαίοις παρέθηκεν, οὗτοι. ῥήτορες δὲ καὶ ἱστοριογράφοι βασιλεῖς τε καὶ στρατηγοί, καὶ γὰρ ἐκ τούτων μαρτυρίας συνήθροισεν, οἵδε

Ἀριστείδης	Καλλισθένης	Δαρεῖος
Ἀριστοκλῆς	Κλειτοφῶν	Ἐπαμεινώνδας
Αἰλιανός	Κτησίας	Εὐδαμίδας
Αἰσχίνης	Λυσίας	Θεμιστοκλῆς
Ἀγάθων	Νικίας	Ἰφικράτης
Ἀντιφῶν	Ξενοφῶν	Ἵππαρχος
Ἀρχέλαος	Ὄβριμος	Κότυς
Γάιος	Πολύαινος	Κλείταρχος
Γοργίας	Πρόδικος	Λυκοῦργος
Δημοσθένης	Πρωταγόρας	Λεωνίδης
Δημάδης	Σώστρατος	Λάμαχος
Δημάρατος	Τιμαγόρας	Μαλλίας
Ἔφορος	Τρόφιμος	Περικλῆς
Ζώπυρος	Ὑπερείδης	Πύρρος
Ἡρόδοτος	Φιλόστρατος	Πτολεμαῖος
Ἡγησιάδης	Χρύσερμος	Σεμίραμις
Ἡγήσιος	Ἀλέξανδρος	Σκηπίων
Θουκυδίδης	Ἀγησίλαος	Σκίλλουρος
Θησεύς	Ἀγαθοκλῆς	Τιμόθεος
Θεόδωρος	Ἀντίγονος	Φίλιππος
Θράσυλλος	Ἆγις	Φωκίων
Θεόπομπος	Ἀγριππῖνος	Φάλαρις
Ἰσοκράτης	Ἀναξίλαος	Χάριλλος
Ἰσαῖος	Ἀρχίδαμος	Χαρίας
Κορνηλιανός	Διονύσιος	Χάρης

Ἀριστοφάνης
Αἴσωπος
Ἀντιγενίδας
Ἀριστοτέλης
Ἀριστείδης ὁ δίκαιος
Ἀλκμαίων ἰατρός
Ἄντυλλος ἰατρός
Ἀρίμνηστος
Ἀπελλῆς
Βρύσων
Γλαύκων
Γαληνὸς ἰατρός
Δικαίαρχος
Δίων
Διονύσιος
Διοκλῆς ἰατρός
Εὐξίθεος
Ἕρμαρχος
Ἕρμιππος
Ἐρυξίμαχος
Εὐφρανίας
Ἐρασίστρατος ἰατρός
Εὐρυφῶν ἰατρός
Ἐρατοσθένης
Εὔβουλος
Θεόπομπος
Θεόκριτος
Θυμαρίδης
Θύνων
Ἱπποκράτης ἰατρός
Κάτων
Κηφισόδωρος
Κλεόστρατος
Κλειτόμαχος
Λικύμνιος
Μύσων
Μητρόδωρος
Μητροκλῆς
Νικόστρατος
Πραυσίων
Σιμωνίδης
Σερίφιος
Σωτίων
Σώστρατος
Σπεύσιππος

Ἀλλὰ τὰ μὲν κεφάλαια, οἷς τὰς τῶν παλαιοτέρων ῥήσεις ἥρμοσεν Ἰωάννης ὁ Στοβαῖος, καὶ ἐξ ὧν ἀνδρῶν φιλοσόφων τε καὶ ποιητῶν ῥητόρων τε καὶ βασιλέων καὶ στρατηγῶν, ταύτας συνήθροισε, τοσαῦτα καὶ ἐκ τοσούτων.

Χρήσιμον δὲ τὸ βιβλίον τοῖς μὲν ἀνεγνωκόσιν αὐτὰ τὰ συντάγματα τῶν ἀνδρῶν πρὸς ἀνάμνησιν, τοῖς δ' οὐκ εἰληφόσι πεῖραν ἐκείνων, ὅτι διὰ συνεχοῦς αὐτῶν μελέτης οὐκ ἐν πολλῷ χρόνῳ πολλῶν καὶ καλῶν καὶ ποικίλων νοημάτων εἰ καὶ κεφαλαιώδη μνήμην καρπώσονται· κοινὸν δ' ἀμφοτέροις ἡ τῶν ζητουμένων, ὡς εἰκός, ἀταλαίπωρος καὶ σύντομος εὕρεσις, ἐπειδάν τις ἀπὸ τῶν κεφαλαίων εἰς αὐτὰ τὰ πλάτη ἀναδραμεῖν ἐθελήσειε· καὶ πρὸς ἄλλα δὲ τοῖς ῥητορεύειν καὶ γράφειν σπουδάζουσιν οὐκ ἄχρηστον τὸ βιβλίον.

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ
ΑΝΘΟΛΟΓΙΟΝ.
ΠΕΡΙ ΑΡΕΤΗΣ. Α.

---

1 Σοφοκλέους Ἐριφύλης.
Ἀρετῆς βέβαιαι δ' εἰσὶν αἱ κτήσεις μόναι.

2 Εὐριπίδου Ἀνδρομάχης (775).
Οὔ τοι λείψανα τῶν ἀγαθῶν
ἀνδρῶν ἀφαιρεῖται χρόνος· ἁ δ' ἀρετὰ
καὶ θανοῦσι λάμπει.

3 Εὐριπίδου Οἰδίποδος.
Οὔ τοι νόμισμα λευκὸς ἄργυρος μόνον
καὶ χρυσός ἐστιν, ἀλλὰ χἀρετὴ βροτοῖς
νόμισμα κεῖται πᾶσιν, ᾗ χρῆσθαι χρεών.

4 Εὐριπίδου Τημενιδῶν.
Ἀρετὴ δὲ κἂν θάνῃ τις οὐκ ἀπόλλυται,
ζῇ δ' οὐκ ἔτ' ὄντος σώματος· κακοῖσι δὲ
ἅπαντα φροῦδα συνθανόνθ' ὑπο χθονός.

5 Εὐριπίδου Ἱκετίδων (911).
Αἰσχύνεται δὲ τἀγάθ' ἀσκήσας ἀνὴρ
κακὸς κεκλῆσθαι πᾶς τις· ἡ δ' εὐανδρία
διδακτόν, εἴπερ καὶ βρέφος διδάσκεται

λέγειν ἀκούειν θ᾽ ὧν μάθησιν οὐκ ἔχει.
ἃ δ᾽ ἂν μάθῃ τις, ταῦτα σώζεσθαι φιλεῖ
πρὸς γῆρας. οὕτω παῖδας εὖ παιδεύετε.

6 Οὐκ ἔστιν ἀρετῆς κτῆμα τιμιώτερον.
οὐ γὰρ πέφυκε δοῦλον οὔτε χρημάτων
οὔτ᾽ εὐγενείας οὔτε θωπείας ὄχλου.

6ª Ἀρετὴ δ᾽, ὅσῳ περ μᾶλλον ἂν χρῆσθαι θέλῃς,
τοσῷδε μᾶλλον αὔξεται τελουμένη.

7 Εὐριπίδου.
Ἀρετὴ μέγιστον τῶν ἐν ἀνθρώποις καλόν.

8 Εὐριπίδου Ἀντιόπη.
Τρεῖς εἰσὶν ἀρεταὶ τὰς χρεών σ᾽ ἀσκεῖν, τέκνον,
θεούς τε τιμᾶν τούς τε θρέψαντας γονεῖς
νόμους τε κοινοὺς Ἑλλάδος· καὶ ταῦτα δρῶν
κάλλιστον ἕξεις στέφανον εὐκλείας ἀεί.

---

9 Βακχυλίδου.
Εἷς ὅρος, μία βροτοῖσιν ἐστὶν εὐτυχίας ὁδός, | θυμὸν εἴ τις ἔχων ἀπενθῆ δύναται διατελεῖν βίον.

10 Ἴαμβοι.
Ἀνάπαυσίς ἐστι τῶν κακῶν ἀπραξία. | ἃ μὴ προσήκει, μήτ᾽ ἄκουε μήθ᾽ ὅρα. | βέλτιόν ἐστι σῶμά γ᾽ ἢ ψυχὴν νοσεῖν. | εὔτακτον εἶναι τἀλλότρια δειπνοῦντα δεῖ. | ἐλευθέρου γὰρ ἀνδρὸς τἀληθῆ λέγειν. | ἐλεύθερον φύλασσε τὸν σαυτοῦ τρόπον. | σαυτὸν φύλαττε τοῖς τρόποις ἐλεύθερον. | ταμεῖον ἀρετῆς ἐστι σωφροσύνη μόνη. | ψυχῆς ἐπιμελοῦ τῆς σεαυτοῦ, καθὰ δύνῃ. | καλὸν φύουσι καρπὸν οἱ σεμνοὶ τρόποι. | καρπὸς δ᾽ ἀγαθὸς ἐστιν εὔτακτος βίος. | λάβε πρόνοιαν τοῦ προσήκοντος βίου. | μακάριος, ὅστις μακαρίοις ὑπηρετεῖ. | ὅπλον μέγιστόν ἐστιν ἡ ᾽ρετὴ βροτοῖς.

13 *Φιλιππίδου Ἀνανεούσῃ.*
Ὅταν δ' ἁμαρτάνῃς τι, χαῖρ' ἡττώμενος·
μάλιστα γὰρ οὕτω σώζεται τὸ συμφέρον.

14 *Ἐπιχάρμου.*
Οὐ μετανοεῖν, ἀλλὰ προνοεῖν χρὴ τὸν ἄνδρα τὸν σοφόν.

15 *Πυθαγόρου* (Aur. carm. 9).
Κρατεῖν δὲ ἐθίζεο τῶνδε,
γαστρὸς μὲν πρώτιστα καὶ ὕπνου λαγνείης τε
καὶ θυμοῦ· πρήξεις δ' αἰσχρόν ποτε μήτε μετ' ἄλλου
μήτ' αὐτός· πάντων δὲ μάλιστ' αἰσχύνεο σαυτόν.
εἶτα δικαιοσύνην ἄσκει ἔργῳ τε λόγῳ τε.
μήτ' ἀλογίστως σαυτὸν ἔχειν περὶ μηδὲν ἔθιζε·
ἀλλὰ γνῶθι μὲν ὡς θανέειν πέπρωται ἅπασιν·
χρήματα δ' ἄλλοτε μὲν κτᾶσθαι φιλεῖ ἄλλοτ' ὀλέσθαι.

---

11 Ἴαμβοι. Εἰς ἄνδρας ἀγαθούς.
Ἀνὴρ δὲ χρηστὸς χρηστὸν οὐ μισεῖ ποτέ. | γνώμης γὰρ ἐσθλῆς ἔργα χρηστὰ γίγνεται. | ἐσθλῷ γὰρ ἀνδρὶ ἐσθλὰ καὶ διδοῖ θεός. | ζήλου τὸν ἐσθλὸν ἄνδρα, καὶ τὸν σώφρονα. | ἤθους δὲ βάσανός ἐστιν ἀνθρώποις χρόνος.

12 Ἀριστοτέλους ὕμνος εἰς Ἀρετήν.
Ἀρετὰ πολύμοχθε γένει βροτείῳ, | θήραμα κάλλιστον βίῳ. | σᾶς πέρι, παρθένε, μορφᾶς, | καὶ θανεῖν ζηλωτὸς ἐν Ἑλλάδι πότμος, | καὶ πόνους τλῆναι μαλεροὺς καὶ ἀκάμαντας. | τοῖον ἐπὶ φρένα βάλλεις | καρπὸν ἐς ἀθάνατον, | χρυσοῦ τε κρείσσονα καὶ γονέων | μαλακαυγητοῖό θ' ὕπνου. | σοῦ δ' ἕνεκ' ἐκ Διὸς Ἡρακλέης, | Λήδας τε κοῦροι πόλλ' ἀνέτλασαν, | ἔργοις ἀναγορεύοντες δύναμιν. | σοῖς δὲ πόθοις Ἀχιλλεὺς | Αἴας τ' Ἀΐδαο δόμους ἦλθον. | σᾶς δ' ἕνεκεν φιλίου μορφᾶς | Ἀταρνέως ἔντροφος | ἀελίου χήρωσεν αὐγάς. | τοὶ γὰρ ἀοίδιμος ἔργοις, | ἀθάνατοί τε μιν αὐξήσουσι | Μοῦσαι, Μναμοσύνας θύγατρες, | Διὸς ξενίου σέβας αὔξουσαι.

16 Θεόγνιδος (315).

Πολλοὶ μὲν πλουτοῦσι κακοί, ἀγαθοὶ δὲ πένονται.
  ἀλλ' ἡμεῖς τούτοις οὐ διαμειψόμεθα
τῆς ἀρετῆς τὸν πλοῦτον· ἐπεὶ τὸ μὲν ἔμπεδον ἀεί,
  χρήματα δ' ἀνθρώπων ἄλλοτε ἄλλος ἔχει.

17 Ἡσιόδου (Op. 287).

Τῆς δ' ἀρετῆς ἱδρῶτα θεοὶ προπάροιθεν ἔθηκαν
ἀθάνατοι· μακρὸς δὲ καὶ ὄρθιος οἶμος ἐπ' αὐτήν,
καὶ τρηχὺς τὸ πρῶτον· ἐπὴν δ' εἰς ἄκρον ἵκηται,
ῥηΐδίη δ' ἤπειτα πέλει, χαλεπή περ ἐοῦσα.

18 Ἀριστοτέλους περὶ ἀρετῆς.

Ἐπαινετὰ μέν ἐστι τὰ καλά, ψεκτὰ δὲ τὰ αἰσχρά· καὶ τῶν μὲν καλῶν ἡγοῦνται αἱ ἀρεταί, τῶν δὲ αἰσχρῶν αἱ κακίαι. ἐπαινετὰ δέ ἐστι καὶ τὰ αἴτια τῶν ἀρετῶν, καὶ τὰ παρεπόμενα ταῖς ἀρεταῖς, καὶ τὰ γινόμενα ἀπ' αὐτῶν, καὶ τὰ ἔργα αὐτῶν, ψεκτὰ δὲ τὰ ἐναντία. τριμεροῦς δὲ τῆς ψυχῆς λαμβανομένης κατὰ Πλάτωνα, τοῦ μὲν λογιστικοῦ ἀρετή ἐστιν ἡ φρόνησις, τοῦ δὲ θυμοειδοῦς ἥ τε πραότης καὶ ἡ ἀνδρία, τοῦ δὲ ἐπιθυμητικοῦ ἥ τε σωφροσύνη καὶ ἡ ἐγκράτεια, ὅλης δὲ τῆς ψυχῆς ἥ τε δικαιοσύνη καὶ ἡ ἐλευθεριότης καὶ ἡ μεγαλοψυχία. κακία δὲ τοῦ μὲν λογιστικοῦ ἡ ἀφροσύνη, τοῦ δὲ θυμοειδοῦς ἥ τε ὀργιλότης καὶ ἡ δειλία, τοῦ δὲ ἐπιθυμητικοῦ ἥ τε ἀκολασία καὶ ἡ ἀκρασία· ὅλης δὲ τῆς ψυχῆς ἥ τε ἀδικία καὶ ἡ ἀνελευθερία καὶ ἡ μικροψυχία.

ἔστι δὲ φρόνησις μὲν ἀρετὴ τοῦ λογιστικοῦ, παρασκευαστικὴ τῶν πρὸς εὐδαιμονίαν τεινόντων.

πραότης δ' ἐστὶν ἀρετὴ τοῦ θυμοειδοῦς, καθ' ἣν ὑπὸ ὀργῆς γίνονται δυσκίνητοι.

ἀνδρία δέ ἐστιν ἀρετὴ τοῦ θυμοειδοῦς, καθ' ἣν δυσέκπληκτοί εἰσιν ὑπὸ φόβων τῶν περὶ θάνατον.

σωφροσύνη δέ ἐστιν ἀρετὴ τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, καθ' ἣν ἀνόρεκτοι γίνονται τῶν περὶ τὰς ἀπολαύσεις φαύλων ἡδονῶν.

ἐγκράτεια δέ ἐστιν ἀρετὴ τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, καθ' ἣν κατέχουσι τῷ λογισμῷ τὴν ἐπιθυμίαν ὁρμῶσαν ἐπὶ τὰς φαύλας ἡδονάς.

δικαιοσύνη δέ ἐστιν ἀρετὴ ψυχῆς, διανεμητικὴ τῶν κατ' ἀξίαν.

ἐλευθεριότης δέ ἐστιν ἀρετὴ ψυχῆς εὐδάπανος εἰς τὰ καλά.

μεγαλοψυχία δέ ἐστιν ἀρετὴ ψυχῆς, καθ' ἣν δύναται φέρειν εὐτυχίαν καὶ δυστυχίαν καὶ τιμὴν καὶ ἀτιμίαν.

ἀφροσύνη δέ ἐστι κακία τοῦ λογιστικοῦ, αἰτία τοῦ ζῆν κακῶς.

ὀργιλότης δέ ἐστι κακία τοῦ θυμοειδοῦς, καθ' ἣν εὐκίνητοι γίνονται πρὸς ὀργήν.

δειλία δὲ κακία τοῦ θυμοειδοῦς, καθ' ἣν ἐκπλήττονται ὑπὸ φόβων καὶ μάλιστα τῶν περὶ θάνατον.

ἀκολασία δέ ἐστι κακία τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, καθ' ἣν ὀρεκτικοὶ γίνονται τῶν περὶ τὰς ἀπολαύσεις φαύλων ἡδονῶν.

ἀκρασία δέ ἐστι κακία τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, καθ' ἣν αἱροῦνται τὰς φαύλας ἡδονὰς κωλύοντος τοῦ λογισμοῦ.

ἀδικία δέ ἐστι κακία ψυχῆς, καθ' ἣν πλεονεκτικοὶ γίνονται παρὰ τὴν ἀξίαν.

ἀνελευθερία δέ ἐστι κακία ψυχῆς, καθ' ἣν αἱρετικοὶ γίνονται κέρδους αἰσχροῦ.

μικροψυχία δέ ἐστι κακία ψυχῆς, καθ' ἣν ἀδύνα-

τοί εἰσι φέρειν καὶ εὐτυχίαν καὶ ἀτυχίαν καὶ τιμὴν καὶ ἀτιμίαν.

ἔργα δὲ τῆς φρονήσεώς ἐστι τὸ εὖ βουλεύεσθαι, τὸ κρῖναι τὰ ἀγαθὰ καὶ τὰ κακὰ καὶ πάντα τὰ ἐν τῷ βίῳ αἱρετὰ καὶ φευκτά, τὸ χρῆσθαι καλῶς πᾶσι τοῖς ὑπάρχουσιν ἀγαθοῖς, τὸ ὁμιλῆσαι ὀρθῶς, τὸ συνιδεῖν τοὺς καιρούς, τὸ ἀγχινόως χρῆσθαι καὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ, τὸ ἐμπειρίαν ἔχειν τῶν χρησίμων πάντων. μνήμη δὲ καὶ ἐμπειρία καὶ ἀγχίνοια καὶ δεξιότης καὶ εὐβουλία ἤτοι ἀπὸ φρονήσεως ἕκαστον αὐτῶν ἐστιν ἢ παρέπεται τῇ φρονήσει. καὶ τὰ μὲν αὐτῶν οἷον συναίτια τῆς φρονήσεως, καθάπερ ἡ ἐμπειρία καὶ ἡ μνήμη, τὰ δὲ οἷον μέρη, οἷον εὐβουλία τε καὶ ἀγχίνοια.

πραότητος δέ ἐστι τὸ δύνασθαι φέρειν μετρίως ἐγκλήματα καὶ ὀλιγωρίας [μετρίας], καὶ τὸ μὴ ταχέως ὁρμᾶν ἐπὶ τὰς τιμωρίας, καὶ δυσκίνητον εἶναι πρὸς τὰς ὀργάς, ἄπικρον δὲ τῷ ἤθει καὶ ἀφιλόνεικον ἔχοντα τὸ ἠρεμαῖον ἐν τῇ ψυχῇ καὶ στάσιμον.

ἀνδρίας δέ ἐστι τὸ δυσέκπληκτον εἶναι ὑπὸ φόβων τῶν περὶ τὸν θάνατον, καὶ τὸ εὐθαρσῆ εἶναι ἐν τοῖς δεινοῖς καὶ εὔτολμον πρὸς τοὺς κινδύνους, καὶ τὸ μᾶλλον αἱρεῖσθαι τεθνάναι καλῶς ἢ αἰσχρῶς σωθῆναι, καὶ τὸ νίκης αἴτιον εἶναι. ἔστι δὲ ἀνδρίας καὶ τὸ πονεῖν καὶ τὸ καρτερεῖν καὶ προαιρεῖσθαι καὶ δύνασθαι ἀνδραγαθίζεσθαι. παρέπεται δὲ τῇ ἀνδρίᾳ ἡ εὐτολμία καὶ ἡ εὐψυχία καὶ τὸ θάρσος, ἔτι δὲ ἥ τε φιλοπονία καὶ ἡ καρτερία.

σωφροσύνης δέ ἐστι τὸ μὴ θαυμάζειν τὰς ἀπολαύσεις τῶν σωματικῶν ἡδονῶν, τὸ εἶναι πάσης ἀπολαύσεως αἰσχρᾶς ἡδονῆς ἀνόρεκτον καὶ τὸ φοβεῖσθαι τὴν ἀδοξίαν καὶ τὸ τετάχθαι περὶ τὸν βίον ὁμοίως ἔν

τε μικροῖς καὶ μεγάλοις. παρέπεται δὲ τῇ σωφροσύνῃ εὐταξία κοσμιότης αἰδὼς εὐλάβεια.

ἐγκρατείας δέ ἐστι τὸ δύνασθαι κατασχεῖν τῷ λογισμῷ τὴν ἐπιθυμίαν ὁρμῶσαν ἐπὶ φαύλας ἡδονὰς καὶ ἀπολαύσεις, καὶ τὸ καρτερεῖν καὶ τὸ ὑπομενετικὸν εἶναι τῆς κατὰ φύσιν ἐνδείας τε καὶ λύπης.

δικαιοσύνης δέ ἐστι τὸ διατεμητικὸν εἶναι τοῦ κατ᾽ ἀξίαν, τὸ σώζειν τὰ πάτρια ἔθη καὶ τὰ νόμιμα, τὸ σώζειν τοὺς γεγραμμένους νόμους, τὸ ἀληθεύειν ἐν τῷ διαφέροντι, τὸ διαφυλάττειν τὰς ὁμολογίας. ἔστι δὲ πρῶτα τῶν δικαίων τὰ πρὸς τοὺς θεούς, εἶτα πρὸς δαίμονας, εἶτα πρὸς πατρίδα καὶ νονεῖς, εἶτα πρὸς τοὺς κατοιχομένους· ἐν οἷς ἐστι καὶ εὐσέβεια, ἤτοι μέρος οὖσα τῆς δικαιοσύνης ἢ παρακολουθοῦσα. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ δικαιοσύνῃ καὶ ἡ ὁσιότης καὶ ἡ ἀλήθεια καὶ ἡ πίστις καὶ ἡ μισοπονηρία.

ἐλευθεριότητος δέ ἐστι τὸ προετικὸν εἶναι χρημάτων εἰς τὰ ἐπαινετά, καὶ τὸ ἐπιδαψιλεῖν ἐπὶ τὰ εἰς δέοντα ἀναλωθῆναι, καὶ τὸ βοηθητικὸν εἶναι ἐν τῷ διαφόρῳ, καὶ τὸ φιλάνθρωπον, καὶ τὸ μὴ λαβεῖν ὅθεν μὴ δεῖ, καὶ ὅθεν δεῖ λαβεῖν. ἔστι δὲ ὁ ἐλευθέριος καὶ περὶ ἐσθῆτα καθάρειος καὶ περὶ οἴκησιν, κατασκευαστικός τε ὧν τῶν περιττῶν καὶ καλῶν καὶ διαγωγὴν ἐχόντων ἡδεῖαν ἄνευ τοῦ λυσιτελοῦντος, καὶ θρεπτικὸς τῶν ζώων τῶν ἴδιόν τι ἐχόντων ἢ θαυμαστόν. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἐλευθεριότητι ἡ τοῦ ἤθους ὑγρότης, καὶ εὐαγωγία καὶ φιλανθρωπία καὶ τὸ εἶναι ἐλεητικὸν καὶ φιλόφιλον καὶ φιλόξενον καὶ φιλόκαλον.

μεγαλοψυχίας δέ ἐστι τὸ καλῶς ἐνεγκεῖν καὶ εὐψύχως καὶ ἀτυχίαν καὶ εὐτυχίαν καὶ τιμὴν καὶ ἀτιμίαν, καὶ τὸ μὴ θαυμάζειν μήτε τρυφὴν μήτε θεραπείαν μήτε ἐξουσίαν μήτε τὰς νίκας τὰς ἐναγωνίους,

ἔχειν δέ τι βάθος τῆς ψυχῆς καὶ μέγεθος. ἔστι δὲ ὁ μεγαλόψυχος οὐδὲ τὸ ζῆν περὶ πολλοῦ ποιούμενος οὐδὲ φιλόζωος, ἁπλοῦς δὲ τῷ ἤθει καὶ γενναῖος καὶ ἀδικεῖσθαι δυνάμενος καὶ οὐ τιμωρητικός. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ μεγαλοψυχίᾳ ἁπλότης καὶ γενναιότης καὶ ἀλήθεια.

ἀφροσύνης δέ ἐστι τὸ κρῖναι κακῶς τὰ πράγματα, τὸ βουλεύεσθαι κακῶς, τὸ ὁμιλῆσαι κακῶς, τὸ χρῆσθαι κακῶς τοῖς παροῦσιν ἀγαθοῖς, τὸ ψευδῶς δοξάζειν περὶ τῶν εἰς τὸν βίον ἀγαθῶν καὶ καλῶν. παρακολουθεῖ δὲ τῇ ἀφροσύνῃ ἀπειρία ἀμαθία ἀκρασία ἐπαριστερότης ἀμνημοσύνη.

ὀργιλότητος δέ ἐστιν εἴδη τρία, ἀκροχολία πικρία βαρυθυμία. ἔστι δὲ τοῦ ὀργίλου τὸ μὴ δύνασθαι φέρειν μήτε τὰς μικρὰς ὀλιγωρίας μήτε τὰς ἐλαττώσεις, εἶναι δὲ κολαστικὸν καὶ ἄγριον καὶ εὐκίνητον πρὸς ὀργὴν καὶ ὑπὸ λόγου καὶ ἔργου τοῦ τυχόντος. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ὀργιλότητι τὸ πάροξυ τοῦ ἤθους καὶ εὐμετάβολον καὶ ἡ πικρολογία καὶ ἡ μεταμέλεια καὶ τὸ ἐπὶ μικροῖς λυπεῖσθαι καὶ ἥδεσθαι, καὶ ταῦτα πάσχειν ταχέως καὶ παρὰ βραχὺν καιρόν.

δειλίας δέ ἐστι τὸ ὑπὸ τῶν τυχόντων φόβων εὐκίνητον εἶναι καὶ μάλιστα τῶν περὶ θάνατον καὶ τὰς σωματικὰς πηρώσεις, καὶ τὸ ὑπολαβεῖν κρεῖττον εἶναι ὁπωσοῦν σωθῆναι ἢ τελευτῆσαι καλῶς. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ δειλίᾳ μαλακία ἀνανδρία φιλοψυχία καὶ ἀπονία· ὕπεστι δέ τις καὶ εὐλάβεια καὶ τὸ ἀφιλόνεικον τοῦ ἤθους.

ἀκολασίας δέ ἐστι τὸ αἱρεῖσθαι τὰς ἀπολαύσεις τῶν ἡδονῶν τῶν βλαβερῶν καὶ αἰσχρῶν, καὶ ὑπολαμβάνειν εὐδαιμονεῖν μάλιστα τοὺς ἐν ταῖς τοιαύταις ἡδοναῖς ζῶντας, καὶ φιλόγελων εἶναι καὶ φιλοσκώ-

πτην καὶ φιλευτράπελον, καὶ ῥαδιουργὸν εἶναι ἐν τοῖς λόγοις καὶ ἐν τοῖς ἔργοις. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀκολασίᾳ ἀταξία ἀναίδεια ἀκοσμία τρυφὴ ῥᾳθυμία ἀμέλεια ὀλιγωρία ἔκλυσις.

ἀκρασίας δέ ἐστι τὸ κωλύοντος τοῦ λογισμοῦ τὰς ἀπολαύσεις τῶν ἡδονῶν αἱρεῖσθαι καὶ τὸ ὑπολαμβάνοντα κρεῖττον εἶναι μὴ μετασχεῖν αὐτῶν, μετέχειν δὲ μηδὲν ἧττον, καὶ τὸ οἴεσθαι μὲν δεῖν πράττειν καὶ τὰ καλὰ καὶ τὰ συμφέροντα, ἀφίστασθαι δὲ αὐτῶν διὰ τὰς ἡδονάς. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀκρασίᾳ μαλακία μεταμέλεια καὶ τὰ πλεῖστα τὰ αὐτὰ ἃ καὶ τῇ ἀκολασίᾳ.

ἀδικίας δέ ἐστιν εἴδη τρία, ἀσέβεια πλεονεξία ὕβρις. ἀσέβεια μὲν ἡ περὶ θεοὺς πλημμέλεια καὶ περὶ δαίμονας καὶ τοὺς κατοιχομένους καὶ περὶ γονεῖς καὶ πατρίδα, πλεονεξία δὲ ἡ περὶ τὰ συμβόλαια παρὰ τὴν ἀξίαν αἱρουμένη τὸ διάφορον, ὕβρις δὲ καθ' ἣν τὰς ἡδονὰς αὑτοῖς παρασκευάζουσιν, εἰς ὄνειδος ἄγοντες ἑτέρους. ὅθεν καὶ Εὔηνος περὶ αὐτῆς λέγει

ἥτις κερδαίνουσ' οὐδὲν ὅμως ἀδικεῖ.

ἔστι δὲ ἀδικίας τὸ παραβαίνειν τὰ πάτρια ἔθη καὶ τὰ νόμιμα, τὸ ἀπειθεῖν τοῖς νόμοις καὶ τοῖς ἄρχουσι, τὸ ψεύδεσθαι, τὸ ἐπιορκεῖν, τὸ παραβαίνειν τὰς ὁμολογίας καὶ τὰς πίστεις. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀδικίᾳ συκοφαντία ἀλαζονεία ἀφιλανθρωπία προσποίησις κακοήθεια πανουργία.

ἀνελευθερίας δέ ἐστιν εἴδη τρία, αἰσχροκέρδεια φειδωλία κιμβικία. ἔστι δὲ αἰσχροκέρδεια μὲν καθ' ἣν κερδαίνειν ζητοῦσι πανταχόθεν καὶ τὸ κέρδος τῆς αἰσχύνης περὶ πλείονος ποιοῦνται, φειδωλία δὲ καθ' ἣν ἀδάπανοι γίνονται τῶν χρημάτων εἰς τὸ δέον, κιμβικία δέ ἐστι καθ' ἣν δαπανῶσι μὲν κατὰ μικρὸν δὲ

καὶ κακῶς καὶ πλείω βλάπτονται, τῷ μὴ κατὰ καιρὸν ποιεῖσθαι τὸ διάφορον. ἔστι δὲ τῆς ἀνελευθερίας τὸ περὶ πλείστου ποιεῖσθαι χρήματα, καὶ τὸ μηδὲν ὄνειδος ἡγεῖσθαι τῶν ποιούντων κέρδος, καὶ βίος θητικὸς καὶ δουλοπρεπὴς καὶ ῥυπαρὸς καὶ φιλοτιμίας καὶ ἐλευθερίας ἀλλότριος. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀνελευθερίᾳ μικρολογία βαρυθυμία μικροψυχία ταπεινότης ἀμετρία ἀγένεια μισανθρωπία.

μικροψυχίας δέ ἐστι τὸ μήτε τιμὴν μήτε ἀτιμίαν μήτε εὐτυχίαν μήτε ἀτυχίαν δύνασθαι φέρειν, ἀλλὰ τιμώμενον μὲν ἀναχαυνοῦσθαι καὶ μικρὰ εὐτυχήσαντα ἐξαίρεσθαι, ἀτιμίαν δὲ μηδὲ τὴν ἐλαχίστην ἐνεγκεῖν δύνασθαι, ἀπότευγμα δὲ ὁτιοῦν ἀτυχίαν κρίνειν μεγάλην, ὀδύρεσθαι δὲ ἐπὶ πᾶσι καὶ δυσφορεῖν. ἔτι δὲ καὶ τοιοῦτός ἐστιν ὁ μικρόψυχος οἷος πάντα τὰ ὀλιγωρήματα καλεῖν ὕβριν καὶ ἀτιμίαν, καὶ τὰ δι' ἄγνοιαν ἢ λήθην ἢ ἄνοιαν γινόμενα. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ μικροψυχίᾳ μικρολογία μεμψιμοιρία δυσελπιστία ταπεινότης.

καθόλου δὲ τῆς μὲν ἀρετῆς ἐστι τὸ ποιεῖν σπουδαίαν τὴν διάθεσιν περὶ τὴν ψυχὴν ἠρεμαίαις καὶ τεταγμέναις κινήσεσι χρωμένην καὶ συμφωνοῦσαν κατὰ πάντα τὰ μέρη· διὸ καὶ δοκεῖ παράδειγμα πολιτείας ἀγαθῆς εἶναι σπουδαίας ψυχῆς διάθεσις. ἔστι δὲ τῆς ἀρετῆς τὸ εὐεργετεῖν τοὺς ἀξίους, καὶ τὸ φιλεῖν τοὺς ἀγαθούς, καὶ τὸ μισεῖν τοὺς κακούς, καὶ τὸ μήτε κολαστικὸν εἶναι μήτε τιμωρητικόν, ἀλλὰ προσηνῆ καὶ εὐμενικὸν καὶ συγγνωμονικόν. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀρετῇ χρηστότης ἐπιείκεια εὐγνωμοσύνη ἐλπὶς ἀγαθὴ μνήμη ἀγαθή· ἔτι δὲ καὶ τὰ τοιαῦτα, φιλοίκειον εἶναι καὶ φιλόφιλον καὶ φιλεταῖρον καὶ φιλόξενον καὶ φιλάνθρωπον καὶ φιλόκαλον, ἃ δὴ πάντα τῶν ἐπαινου-

μένων ἐστί· τῆς δὲ κακίας ἐστὶ τὰ ἐναντία, καὶ παρακολουθεῖ τὰ ἐναντία αὐτῇ. πάντα δὲ τὰ τῆς κακίας καὶ τὰ ἀκολουθοῦντα αὐτῇ τῶν ψεγομένων ἐστί.

19 *Πυθαγόρου.*

Ἄγρυπνος ἔσο κατὰ νοῦν· συγγενὴς γὰρ τοῦ ἀληθινοῦ θανάτου ὁ περὶ τοῦτον ὕπνος.

20 Ἃ μὴ δεῖ ποιεῖν, μηδὲ ὑπονοοῦ ποιεῖν.

21 Ζητεῖν δεῖ καὶ ἄνδρα καὶ τέκνα καὶ φίλους τοὺς κατὰ τὴν ἀπαλλαγὴν τοῦ βίου παραμενοῦντας.

22 *Πυθαγόρου.*

Ἰσχύειν τῇ ψυχῇ αἱροῦ μᾶλλον ἢ τῷ σώματι.

23 Πέπεισο μὴ εἶναι σὸν κτῆμα ὅ περ μὴ ἐντὸς διανοίας ἔχεις.

24 Πρᾶττε μεγάλα μὴ ὑπισχνούμενος μεγάλα.

25 Τέκνα μάθε τίκτειν οὐ τὰ γηροβοσκήσοντα τὸ σῶμα, τὰ δὲ τὴν ψυχὴν θρέψοντα τῇ ἀϊδίῳ τροφῇ.

26 Τὰ ἐπίπονα τῶν ἡδέων μᾶλλον ἡγοῦ συντελεῖν εἰς ἀρετήν.

27 Χαλεπὸν πολλὰς ὁδοὺς ἅμα τοῦ βίου βαδίζειν.

28 Ψυχῆς πᾶν πάθος εἰς σωτηρίαν αὐτῆς πολεμιώτατον.

29 *Πυθαγόρου.*

Πυθαγόρας ἔφη ὅτι χρὴ βίον αἱρεῖσθαι τὸν ἄριστον, ἡδὺν γὰρ αὐτὸν ἡ συνήθεια ποιήσει. πλοῦτος ἀσθενὴς ἄγκυρα, δόξα ἔτι ἀσθενεστέρα· τὸ σῶμα ὁμοίως, αἱ ἀρχαί, αἱ τιμαί· πάντα ταῦτα ἀσθενῆ καὶ ἀδύνατα. τίνες οὖν ἄγκυραι δυναταί; φρόνησις μεγαλοψυχία ἀνδρεία· ταύτας οὐδεὶς χειμὼν σαλεύει.

οὗτος θεοῦ νόμος, ἀρετὴν εἶναι τὸ ἰσχυρὸν καὶ βέβαιον μόνον, τὰ δ' ἄλλα λῆρον.

30 *Ἀντισθένους.*

Οὔτε συμπόσιον χωρὶς ὁμιλίας οὔτε πλοῦτος χωρὶς ἀρετῆς ἡδονὴν ἔχει.

31 *Φωκίωνος.*

Οὔτε ἐξ ἱεροῦ βωμὸν οὔτε ἐκ τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως ἀφαιρετέον τὸν ἔλεον.

32 *Διογένους.*

Πυνθανομένου τινὸς πῶς ἄν τις ἑαυτοῦ διδάσκαλος γένοιτο; "εἰ ὑπὲρ ὧν ἐπιτιμᾷ τοῖς ἄλλοις" ἔφη "καὶ ἑαυτῷ ἐπιτιμῴη μάλιστα."

33 *Σωκράτους.*

Τοῦ βίου καθάπερ ἀγάλματος πάντα τὰ μέρη καλὰ εἶναι δεῖ.

34 *Ἀνδριὰς μὲν ἐπὶ βάσεως, σπουδαῖος δὲ ἀνὴρ ἐπὶ καλῆς προαιρέσεως ἑστὼς ἀμετακίνητος ὀφείλει εἶναι.*

35 *Τὸν λιβανωτὸν τοῖς θεοῖς, τὸν δὲ ἔπαινον τοῖς ἀγαθοῖς ἀπονέμειν δεῖ.*

36 *Ἀπολογεῖσθαι μὲν γὰρ χρὴ ὑπὲρ τῶν ἀδίκως περὶ τὸ ἀδικεῖν αἰτίαν ἐχόντων, ἐπαινεῖν δὲ τοὺς ἐπ' ἀγαθῷ τινι διαφέροντας.*

37 *Σωκράτους.*

Οὔτε ἵππος εὐγενὴς κρίνοιτ' ἂν ὁ πολυτελῆ σκευὴν ἔχων ἀλλ' ὁ τῇ φύσει λαμπρός, οὔτε ἀνὴρ σπουδαῖος ὁ πολύτιμον οὐσίαν κεκτημένος ἀλλ' ὁ τὴν ψυχὴν γενναῖος.

38 *Τοῦ σοφοῦ στόματος ἀνοιχθέντος καθάπερ ἱεροῦ τὰ τῆς ψυχῆς καλὰ βλέπεται ὥσπερ ἀγάλματα.*

39 Δημοκρίτου.

Ἀνθρώποισι ἁρμόδιον ψυχῆς μᾶλλον ἢ σώματος ποιέεσθαι λόγον. ψυχὴ μὲν γὰρ τελεωτάτη σκήνεος μοχθηρίην ὀρθοῖ, σκήνεος δὲ ἰσχὺς ἄνευ λογισμοῦ ψυχὴν οὐδέν τι ἀμείνω τίθησι.

40. Δημοκρίτου.

Ἀνθρώποισι γὰρ εὐθυμίη γίνεται μετριότητι τέρψιος καὶ βίου συμμετρίῃ, τὰ δὲ λείποντα καὶ ὑπερβάλλοντα μεταπίπτειν τε φιλέει καὶ μεγάλας κινήσιας ἐμποιέειν τῇ ψυχῇ. αἱ δ' ἐκ μεγάλων διαστημάτων κινεόμεναι τῶν ψυχέων, οὔτε εὐσταθέες εἰσὶ οὔτε εὔθυμοι. ἐπὶ τοῖσι δυνατοῖσι ὧν δεῖ ἔχειν τὴν γνώμην καὶ τοῖσι παρεοῦσι ἀρκέεσθαι, τῶν μὲν ζηλουμένων καὶ θωυμαζομένων ὀλίγην μνήμην ἔχοντα καὶ τῇ διανοίῃ μὴ προσεδρεύοντα, τῶν δὲ ταλαιπωρεόντων τοὺς βίους θεωρέειν, ἐννοεύμενον ἃ πάσχουσι κάρτα, ὅκως ἂν τὰ παρεόντα σοι καὶ ὑπάρχοντα μεγάλα καὶ ζηλωτὰ φαίνηται καὶ μηκέτι πλειόνων ἐπιθυμέοντι συμβαίνῃ κακοπαθέειν τῇ ψυχῇ. ὁ γὰρ θωυμάζων τοὺς ἔχοντας καὶ μακαριζομένους ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων, καὶ τῇ μνήμῃ πᾶσαν ὥρην προσεδρεύων, ἀεὶ ἐπικαινουργέειν ἀναγκάζεται καὶ ἐπιβάλλεσθαι δι' ἐπιθυμίην τοῦ τι πρήσσειν ἀνήκεστον ὧν νόμοι κωλύουσιν. διόπερ τὰ μὲν μὴ δίζησθαι χρεών, ἐπὶ δὲ τοῖσι εὐθυμέεσθαι χρεὼν παραβάλλοντα τὸν ἑωυτοῦ βίον πρὸς τὸν τῶν φαυλότερον πρησσόντων, καὶ μακαρίζειν ἑωυτόν, ἐνθυμεύμενον ἃ πάσχουσι καὶ ὅκως αὐτέων βέλτιον πρήσσει τε καὶ διάγει. ταύτης γὰρ ἐχόμενος τῆς γνώμης εὐθυμότερόν τε διάξεις καὶ οὐκ ὀλίγας κῆρας ἐν τῷ βίῳ διώσεαι, φθόνον καὶ ζῆλον καὶ δυσμενίην.

41 *Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι* (39 b).

Μὴ τὴν κακίαν οἴεσθε μᾶλλον τῆς ἀρετῆς ὠφελεῖν, τὸ δ' ὄνομα ἀτυχέστερον ἔχειν· ἀλλ' οἵων περ ὀνομάτων ἕκαστα τῶν πραγμάτων τετύχηκε, τοιαύτας ἡγεῖσθε καὶ τὰς δυνάμεις αὐτῶν εἶναι.

---

42 *Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον.*

Τῆς ἀρετῆς οὐδὲν κτῆμα σεμνότερον οὐδὲ βεβαιότερόν ἐστι.

43 *Ἐν ταυτῷ.*

Ἡ δὲ τῆς ἀρετῆς κτῆσις, οἷς ἂν ἀκιβδήλως ταῖς διανοίαις συναυξηθῇ, μόνη μὲν συγγηράσκει, πλούτου δὲ κρείττων, χρησιμωτέρα δ' εὐγενείας ἐστίν, τὰ μὲν τοῖς ἄλλοις ἀδύνατα δυνατὰ καθιστῶσα, τὰ δὲ τῷ πλήθει φοβερὰ θαρσαλέως ὑπομένουσα, καὶ τὸν μὲν ὄκνον ψόγον τὸν δὲ πόνον ἔπαινον ἡγουμένη.

44 *Ἰσοκράτους Παναθηναϊκοῦ.*

Τίνας οὖν καλῶ πεπαιδευμένους; ἐπεὶ τὰς τέχνας καὶ τὰς ἐπιστήμας καὶ τὰς δυνάμεις ἀποδοκιμάζω. πρῶτον μὲν τοὺς καλῶς χρωμένους τοῖς πράγμασι τοῖς κατὰ τὴν ἡμέραν ἑκάστην προσπίπτουσι, καὶ τὴν δόξαν ἐπιτυχῆ τῶν καιρῶν ἔχοντας, καὶ δυναμένην ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ στοχάζεσθαι τοῦ συμφέροντος· ἔπειτα τοὺς πρεπόντως καὶ δικαίως ὁμιλοῦντας τοῖς ἀεὶ πλησιάζουσι· καὶ τὰς μὲν τῶν ἄλλων ἀηδίας καὶ βαρύτητας εὐκόλως καὶ ῥᾳδίως φέροντας, σφᾶς δὲ αὐτοὺς ὡς δυνατὸν ἐλαφροτάτους καὶ μετριωτάτους τοῖς συνοῦσι παρέχοντας· ἔτι τοὺς μὲν τῶν ἡδονῶν ἀεὶ κρατοῦντας, τῶν δὲ συμφορῶν μὴ λίαν ἡττωμένους, ἀλλ' ἀνδρωδῶς ἐν αὐταῖς διακειμένους, καὶ τῆς φύσεως ἀξίους ἧς μετέχοντες τυγχάνομεν· τέταρτον, ὅπερ μέγιστον, μὴ διαφθειρομένους ὑπὸ τῶν εὐπραγιῶν μηδ' ἐξισταμένους αὐτῶν μηδὲ ὑπερηφάνους γιγνομένους, ἀλλ' ἐμμένοντας τῇ τάξει τῶν εὖ φρονούντων, καὶ μὴ μᾶλλον χαίροντας τοῖς διὰ τύχην ὑπάρξασιν ἀγαθοῖς ἢ τοῖς διὰ τὴν αὐτῶν φύσιν καὶ φρόνησιν ἐξ ἀρχῆς γιγνομένοις. τοὺς δὲ μὴ μόνον πρὸς ἓν τούτων ἀλλὰ πρὸς ἅπαντα ταῦτα τὴν ἕξιν τῆς ψυχῆς εὐάρμοστον ἔχοντας, τούτους φημὶ φρονίμους εἶναι καὶ τελείους ἄνδρας καὶ πάσας ἔχειν τὰς ἀρετάς.

45 *Ἰσοκράτους.*

Ἰσοκράτης εἶπεν ὅτι τὸν χρηστὸν καὶ ἀγαθὸν ἄνδρα δεῖ τῶν μὲν προγεγενημένων μεμνῆσθαι, τὰ δὲ ἐνεστῶτα πράττειν, περὶ δὲ τῶν μελλόντων φυλάττεσθαι.

46 *Ἐπικτήτου.*

Ὁ τύχῃ βίος συμπεπλεγμένος ἔοικε χειμάρρῳ ποταμῷ· καὶ γὰρ ταραχώδης καὶ ἰλύος ἀνάμεστος καὶ δυσέμβατος καὶ τυραννικὸς καὶ πολύηχος καὶ ὀλιγοχρόνιος.

47 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ψυχὴ ὁμιλοῦσα ἀρετῇ ἔοικεν ἀενάῳ πηγῇ· καὶ γὰρ καθαρὸν καὶ ἀτάραχον καὶ πότιμον καὶ νόστιμον καὶ κοινωνικὸν καὶ πλούσιον καὶ ἀβλαβὲς καὶ ἀνώλεθρον.

48 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἰ βούλει ἀγαθὸς εἶναι, πρῶτον πίστευσον ὅτι κακὸς εἶ.

49 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Βέλτιον ὀλιγάκις πλημμελεῖν ὁμολογοῦντα σωφρονεῖν πλεονάκις ἢ ὀλιγάκις ἁμαρτεῖν λέγοντα πλημμελεῖν πολλάκις.

50 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Κόλαζε τὰ πάθη, ἵνα μὴ ὑπ' αὐτῶν τιμωρῇ.

51 *Μὴ οὕτω τὸ τῆς δόξης αἰσχύνου ὡς τὸ ἐκ τῆς ἀληθείας ἀπόφευγε.*

52 *Εἰ βούλει καλῶς ἀκούειν, μάθε καλῶς λέγειν, μαθὼν δὲ καλῶς λέγειν, πειρῶ καλῶς πράττειν, καὶ οὕτω καρπώσῃ τὸ καλῶς ἀκούειν.*

53 *Τοῦ αὐτοῦ Ἐγχειριδίου* (c. 42).

Ὅταν τις κακῶς τι ποιῇ ἢ κακῶς τι λέγῃ, μέμνησο ὅτι καθήκειν αὐτῷ οἰόμενος ποιεῖ. τί οὖν; ἀκολουθήσει τῷ σοι φαινομένῳ ἢ τῷ αὐτῷ; ἀλλὰ κακῶς αὐτῷ φαίνεται· τίς οὖν ἐξηπάτηται; ἐκεῖνος. τίς οὖν βέβλαπται; ὁ ἐξηπατημένος. καὶ γὰρ τὸ ἀληθὲς συμπεπλεγμένον ἐάν τις ὑπολάβῃ ψεῦδος, οὐ τὸ συμπεπλεγμένον βλάπτεται, ἀλλ' ὁ ὑπολαβών.

54 *Ἐλευθερία καὶ δουλεία τὸ μὲν ἀρετῆς ὄνομα τὸ δὲ κακίας, ἄμφω δὲ προαιρέσεως ἔργα. οἷς δὲ προαίρεσις οὐ κοινωνεῖ, τούτων ψαύει μὲν οὐδέτερον· ψυχὴ δὲ δεσπόζειν εἴωθε σώματος καὶ ὅσα τῶν ἀμφὶ σῶμα προαιρέσεως ἀκοινώνητα. οὐδεὶς γὰρ δοῦλος τὴν προαίρεσιν ὑπάρχων ἐλεύθερος.*

55 *Κακὸς δεσμὸς σώματος μὲν τύχη ψυχῆς δὲ κακία. ὁ μὲν γὰρ τὸ σῶμα λελυμένος τὴν δὲ ψυχὴν δεδεμένος, δοῦλος· ὁ δ' αὖ τὸ σῶμα δεδεμένος τὴν δὲ ψυχὴν λελυμένος, ἐλεύθερος.*

56 *Τὸν μὲν τοῦ σώματος δεσμὸν λύει καὶ φύσις διὰ θανάτου καὶ κακία διὰ χρημάτων, τὸν δὲ τῆς ψυχῆς ἀρετὴ διὰ μαθήσεως καὶ ἐμπειρίας καὶ ἀσκήσεως.*

57 *Εἰ βούλει ἀταράχως καὶ εὐαρέστως ζῆν, πειρῶ τοὺς συνοικοῦντάς σοι πάντας ἀγαθοὺς ἔχειν. ἕξεις δὲ ἀγαθούς, εἰ τοὺς μὲν ἑκόντας παιδεύοις τοὺς δὲ ἄκοντας ἀπολύοις. συμφεύξεται γὰρ τοῖς φυγοῦσιν ἡ μοχθηρία ἅμα καὶ ἡ κακία, συνυπολειφθήσεται δὲ τοῖς συμμένουσί σοι ἡ χρηστότης καὶ ἡ ἐλευθερία.*

58 *Ἐκ τῶν Ἰαμβλίχου* (Protr. 2 p. 14).

Ψυχῇ ζῶντας ἡμᾶς τῇ ταύτης ἀρετῇ ῥητέον εὖ ζῆν, ὡς ὀφθαλμοῖς ὁρῶντας τῇ τούτων ἀρετῇ καλῶς ὁρᾶν.

59 *Τοῦ αὐτοῦ προτρεπτικῶν εἰς φιλοσοφίαν λόγων* (ib. p. 16).

Καθάπερ εἰς ἄσυλον τέμενος τὴν ἀρετὴν ὁρμητέον, ὅπως εἰς μηδεμίαν ἀγεννῆ τύχης ὕβριν ὦμεν ἔκδοτοι.

60 *Τοῦ αὐτοῦ πρὸς Σωκράτην περὶ ἀρετῆς.*

Ψυχῆς μὲν οὖν ἂν εἴη ἀρετὴ τελεότης καὶ εὐμετρία τῆς ζωῆς, λόγου τε καὶ νοῦ καὶ διανοήσεως ἡ ἀκροτάτη καὶ καθαρωτάτη ἐνέργεια. τὰ δὲ ἔργα τῆς ἀρετῆς ἀγαθοειδῆ, κάλλιστα, νοερά, σπουδαῖα, πλήρη μεσότητος, εὐκαιρίας μετέχοντα, προηγούμενα, τέλους ἀρίστου στοχαζόμενα, χαρίεντα, ὅτι μάλιστα θεωρείσθω.

62 *Περικτιόνης Πυθαγορείας περὶ σοφίας.*

Γέγονε δὲ καὶ συνέστα ὁ ἄνθρωπος ποττὸ θεωρῆσαι τὸν λόγον τᾶς τῶν ὅλων φύσιος καὶ τᾶς σοφίας· ἔργον ἐστὶν αὐτῷ τούτῳ κτήσασθαι καὶ θεωρῆσαι τὰν τῶν ἐόντων φρόνασιν.

63 *Ἐν ταυτῷ.*

Γαμετρία μὲν ὦν καὶ ἀριθμητικὰ καὶ τἄλλα τὰ θεωρητικὰ καὶ ἐπισταμονικὰ περί τινα τῶν ἐόντων κατασχολέονται, ἁ δὲ σοφία περὶ πάντα τὰ γένη τῶν ἐόντων. οὕτως γὰρ ἔχει σοφία περὶ πάντα τὰ ἐόντα, ὡς ὄψις περὶ πάντα τὰ ὁρατά, καὶ ἀκοὰ περὶ πάντα τὰ ἀκουστά. τὰ δὲ συμβεβακότα τοῖς ἐοῦσιν ἃ μὲν

---

61 *Ἀγαπητοῦ πρὸς Ἰουστινιανόν.*

Σπούδαζε διαπαντός, καὶ ὥσπερ οἱ τὰς κλίμακας ἀναβαίνειν ἀρξάμενοι οὐ πρότερον ἵστανται τῆς ἐπὶ τὰ ἄνω φορᾶς πρὶν ἂν τῆς ἄκρας ἐφίκωνται βαθμίδος, οὕτω καὶ αὐτὸς ἔχου τῆς τῶν καλῶν ἀναβάσεως.

καθόλω πᾶσι συμβέβακεν, ἃ δὲ πλείστοις αὐτῶν, ἃ δὲ παρ' ἑνὶ ἑκάστῳ. τὰ μὲν ὦν καθόλω πᾶσιν συμβεβακότα συνιδὲν καὶ θεωρῆσαι τᾶς σοφίας οἰκῆον, τὰ δὲ τοῖς πλείστοις τᾶς περὶ φύσιν ἐπιστάμας, τὰ δ' ἴδια καθ' ἕκαστον τᾶς περί τι ἀφωρισμένον ἐπιστάμας. καὶ διὰ τοῦτο σοφία μὲν τὰς τῶν ἐόντων ἁπάντων ἀρχὰς ἀνευρίσκει, φυσικὰ δὲ τὰς τῶν φύσει γιγνομένων, γαμετρία δὲ καὶ ἀριθμητικὰ καὶ μουσικὰ τὰς περὶ τὸ ποσὸν καὶ τὸ ἐμμελές. ὅστις ὦν ἀναλῦσαι οἷός τ' ἐντὶ πάντα τὰ γένεα ὑπὸ μίαν καὶ τὰν αὐτὰν ἀρχάν, καὶ πάλιν ἐκ ταύτας συνθεῖναι καὶ συναρθμήσασθαι, οὗτος δοκεῖ καὶ σοφώτατος ἦμεν καὶ παναλαθέστατος, ἔτι δὲ καὶ καλὰν σκοπιὰν ἀνευρηκέναι, ἀφ' ἇς δυνατὸς ἐσεῖται τόν τε θεὸν κατόψεσθαι καὶ πάντα τὰ ἐν τᾷ συστοιχίᾳ τε καὶ τάξει τὰ ἐκείνω κατακεχωρισμένα.

64 *Μετώπου Πυθαγορείου Μεταποντίνου ἐκ τοῦ περὶ ἀρετῆς.*

Ἀρετά ἐντι ἀνθρώπω τελειότας φύσιος ἀνθρώπω. ἕκαστον γὰρ τῶν ἐόντων τέλειον καὶ ἄκρον γίνεται καττὰν οἰκείαν τᾶς φύσιος ἀρετάν. ἵππω τε γὰρ ἀρετά ἐντι ἁ ἐς τὸ ἄκρον ἄγοισα τὰν τῶ ἵππω φύσιν, καὶ ἐπὶ τῶν μερέων δὲ τῶν καθ' ἕκαστον ὁ αὐτὸς λόγος. ὀπτίλων τε γὰρ ἀρετὰ ὀξυδορκία· αὐτὰ δ' ἀκρότας ἐντὶ τᾶς ὀφθαλμῶν φύσιος. καὶ οὐάτων ἀρετὰ ὀξυακοΐα· αὐτὰ δ' ἀκρότας ἐντὶ τᾶς οὐάτων φύσιος. καὶ ποδῶν ἀρετὰ ποδωκεία· [καὶ] αὐτὰ δ' ἀκρότας ἐντὶ τᾶς ποδῶν φύσιος. ἀνάγκα δ' ἀρετὰν πᾶσαν τρία ταῦτ' ἔχεν, λόγον καὶ δύναμιν καὶ προαίρεσιν· λόγον μέν, ᾧ κρίνει καὶ θεωρεῖ· δύναμιν δέ, ᾇ ἀντέχει καὶ κρατεῖ· προαίρεσιν δέ, ᾇ στέργει καὶ ἀγαπῇ. τὸ

μὲν ὦν κρίνεν καὶ θεωρὲν ἐντὶ τῶ διανοητικῶ μέρεος τᾶς ψυχᾶς, τὸ δ' ἀντέχεν καὶ κρατὲν ἴδιον τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς, τὸ δὲ στέργεν καὶ ἀγαπῆν κοινὸν καὶ τῶ διανοητικῶ καὶ τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς. συνέστακε γὰρ προαίρεσις ἐκ διανοίας καὶ ὀρέξιος· ἁ μὲν ὦν διάνοια ἀπὸ τῶ λογικῶ μέρεός ἐντι τᾶς ψυχᾶς, ἁ δὲ ὄρεξις ἀπὸ τῶ ἀλόγω. τὸ δὲ πλῆθος τᾶν ἀρετᾶν ἁπασᾶν ἐκ τῶν μερέων τᾶς ψυχᾶς κατίδοιτο κά τις, ὡσαύτως δὲ καὶ τὰν γένεσιν καὶ τὰν σύστασιν τᾶς ἀρετᾶς. ἐπὶ γὰρ τῶν μερέων τᾶς ψυχᾶς δύο τὰ πρῶτα, τὸ μὲν λογιστικὸν τὸ δ' ἄλογον. καὶ λογιστικὸν μέν, ᾧ κρίνομες καὶ θεωρέομες· ἄλογον δέ, ᾧ ὁρμῶμες καὶ ὀρεγόμεθα. ταῦτα δὲ ἀλλάλοις ἢ συμφωνοῦντι ἢ διαφωνοῦντι, ἁ δὲ μάχα καὶ διαφωνία γίνεται αὐτοῖς δι' ὑπερβολὰν καὶ ἔλλειψιν. φανερὸν ὦν ὅτι, ὄκκα μὲν τὸ λογιστικὸν μέρος τᾶς ψυχᾶς ἐπικρατῇ τῶ ἀλόγω, γίνεται καρτερία καὶ ἐγκράτεια· ὄκκα δὲ τὸ ἄλογον μέρος τᾶς ψυχᾶς τῶ λογιστικῶ, ἀκρασία καὶ μαλακία· ὄκκα δὲ τὸ μὲν ἄγῆται τὸ δ' ἕπηται, καὶ ἀμφότερα συμφωνῇ ἀλλάλοις, τὸ τηνικαῦτα ἀρετά. ἁ μὲν ὦν καρτερία καὶ ἐγκράτεια γίνεται μετὰ λύπας· ἀλλ' ἁ μὲν καρτερία ἐν τῷ ἀντέχεν πόνῳ, ἁ δ' ἐγκράτεια ἐν τῷ ἀντέχεν ἁδονᾷ, ἁ δ' ἀκρασία καὶ μαλακία ἐν τῷ μὴ ἀντέχεν μηδὲ κρατέν. καὶ διὰ τοῦτο συμβαίνει φεύγεν τἀγαθὰ τὼς ἀνθρώπως διὰ λύπαν, ἀποβάλλεν δ' αὐτὰ διὰ ἁδονάν. καὶ τοὶ ἔπαινοι δὲ καὶ ψόγοι καὶ τὰ καλὰ πάντα [καὶ κακὰ] τὰ περὶ τὸν ἄνθρωπον γίνεται ἐν τούτοις τοῖς μέρεσι τᾶς ψυχᾶς. καὶ καθόλω μὲν ἁ τᾶς ἀρετᾶς σύστασις γίνεται τοῦτον τὸν τρόπον· τὰ δὲ εἴδεα αὐτᾶς καὶ τὰ μέρεα οὕτως κά τις ἀθρήσαι. ἐπεὶ γὰρ τᾶς ψυχᾶς δύο μέρεα, τὸ μὲν λογιστικὸν τὸ δὲ ἄλογον, καὶ τὸ μὲν

λογιστικόν ἐντι ᾧ κρίνομες καὶ θεωροῦμες, τὸ δ' ἄλογον ᾧ ὁρμῶμες καὶ ὀρεγόμεθα, τῶ δὲ ἀλόγω τὸ μὲν θυμοειδὲς τὸ δ' ἐπιθυματικόν, καὶ τούτου τὸ μὲν οἷον ἀμυντικὸν καὶ ὑπερμαχατικὸν ποττοὺς πλασίον θυμοειδὲς ὀνυμάζεται, τὸ δ' οἷον ὀρεκτικὸν καὶ ποθητικὸν τᾶς οἰκείας τῶ σώματος συστάσιος ἐπιθυματικόν· φανερὸν ὡς κατὰ λόγον τοῖς μέρεσι τούτοις τᾶς ψυχᾶς καὶ τὸ πλᾶθος τᾶν ἀρετᾶν ἀκολούθακεν καὶ ταὶ διαφοραὶ καὶ ἰδιότατες αὐτῶν. τῶ μὲν γὰρ λογιστικῶ μέρεος τᾶς ψυχᾶς ἀρετὰ ἁ φρόνασις, κριτικὰ γὰρ ἐντὶ καὶ θεωρητικὰ ἕξις· τῶ δὲ θυμοειδέος ἁ ἀνδρία· ἕξις γὰρ ἐντὶ ἀντερειστικὰ καὶ ὑποστατικὰ τῶν δεινῶν· τῶ δ' ἐπιθυμητικῶ ἁ σωφροσύνα· μετριότας γὰρ ἐντὶ καὶ κατοχὰ ποθ' ἁδονὰν τὰν διὰ σώματος· ὅλας δὲ τᾶς ψυχᾶς ἁ δικαιοσύνα. φαῦλοι μὲν γὰρ τοὶ ἄνθρωποι γίνονται ἢ διὰ κακίαν ἢ δι' ἀκρασίαν ἢ διὰ θηριότατα· ἀδικοῦντι δ' ἀλλάλως ἢ διὰ κέρδος ἢ δι' ἁδονὰν ἢ διὰ φιλοτιμίαν. ἁ μὲν ὦν κακία τῶ λογιστικῶ μέρεος τᾶς ψυχᾶς ἐντὶν οἰκειοτέρα· ποτέοικε γὰρ ἁ μὲν φρόνασις τᾷ τέχνᾳ, ἁ δὲ κακία τᾷ κακοτεχνίᾳ· ἕξιν μαχανάσιος γὰρ ποθὲν εὑρίσκει τὸ ἄδικον· ἁ δ' ἀκρασία μᾶλλον τῶ ἐπιθυμητικῶ· ἐν γὰρ τῷ κρατὲν ἁδονᾶς ἁ ἐγκράτεια, καὶ ἐν τῷ μὴ κρατὲν ἁ ἀκρασία. ἁ δὲ θηριότας τῶ θυμοειδέος· ὅκκα γὰρ τᾷ ἐπιθυμίᾳ τῶ κακῶς ποιῆσαι χαρίζηταί τις, οὐχ ὡς ἄνθρωπος ἀλλ' ὡς θηρίον, τὸ τοιόνδε ὀνυμάζεται θηριῶδες. ἀκόλουθα δὲ καὶ τὰ ἀποτελέσματα τᾶν διαθέσεων τούτων, ἃν περ ἕνεκα πράσσοντι. ἁ μὲν γὰρ πλεονεξία ἀπὸ κακίας, ἁ δὲ κακία ἀπὸ τῶ λογιστικῶ μέρεος τᾶς ψυχᾶς. καὶ ἁ μὲν φιλοτιμία ἀπὸ τῶ θυμοειδέος· αὐτὰ δ' ἐν ὑπερβολᾷ γενομένα γεννῆ τὰν θηριότητα. πάλιν δὲ ἁ μὲν ἁδονὰ ἐν τῷ ἐπιθυμητικῷ,

σφοδρότερον δὲ μαστευομένα γεννῇ τὰν ἀκρασίαν. ὥστ' ἐπεὶ τὸ ἀδικὲν γίνεται δι' αἰτίας τοσαύτας, φανερὸν ὅτι τὸ δικαιοπραγὲν γίνεται διὰ τὰς ἴσας. φύσει γὰρ ἁ μὲν ἀρετὰ ἀγαθοποιὸς καὶ ὠφελητικά, ἁ δὲ κακία κακοποιὸς καὶ βλαπτικά. ἐπεὶ δὲ τῶν τᾶς ψυχᾶς μερέων τὸ μὲν ἐντὶ ἁγεόμενον τὸ δ' ἑπόμενον, αἱ δ' ἀρεταὶ καὶ αἱ κακίαι περὶ ταῦτα καὶ ἐν τούτοις· φανερὸν ὅτι καὶ τᾶν ἀρετᾶν ταὶ μὲν ἐντὶ ἁγεμονικαὶ ταὶ δ' ἑπητικαὶ ταὶ δὲ σύνθετοι ἐκ τούτων. ἁγεμονικαὶ μὲν οἷον ἁ φρόνασις, ἑπητικαὶ δὲ οἷον ἁ ἀνδρία καὶ σωφροσύνα, σύνθετοι δ' ἐκ τούτων οἷον ἁ δικαιότας. τὰ δὲ πάθεα τᾶς ἀρετᾶς ὕλα· περὶ ταῦτα γὰρ καὶ ἐν τούτοις ἁ ἀρετά. τῶν δὲ παθέων τὸ μὲν ἑκούσιον τὸ δ' ἀκούσιον· καὶ ἑκούσιον μὲν ἁδονά, ἀκούσιον δὲ λύπα. ταὐτὰ δὲ ταῦτα καὶ ἐπιτείνοντι καὶ ἀνίεντι τοὶ πολιτικοί, συναρμόζοντες τὰ ἄλογα μέρεα τᾶς ψυχᾶς ποτὶ τὰ λόγον ἔχοντα· τᾶς δὲ συναρμογᾶς ὅρος τὸ μήτε διὰ τὰν ἔνδειαν μήτε διὰ τὰν ὑπερβολὰν ἀπείργεσθαι τὸν νόον τὸ ἴδιον ἔργον ἐπιτελέν. συντέτακται γὰρ τὸ χέρηον ἕνεκα τῶ βελτίονος, ὡς ἐν μὲν τῷ κόσμῳ τὸ ἀειπαθὲς πᾶν μέρος ἕνεκα τῶ ἀεικινάτω, ἐν δὲ τᾷ συζυγίᾳ τῶν ζώων τὸ θῆλυ ἕνεκα τῶ ἄρρενος· τὸ μὲν γὰρ σπείρει τὰν ψυχὰν γεννῶν, τὸ δὲ μόνον τὰν ὕλαν παρέχεται τῷ γεννωμένῳ· ἐν δέ γε τᾷ ψυχᾷ τὸ ἄλογον τῶ λογικῶ. συντέτακται γὰρ καὶ ὁ θυμὸς καὶ ἁ ἐπιθυμία ποτὶ τὸ πρᾶτον μέρος τᾶς ψυχᾶς, τὸ μὲν ὥσπερ δορυφόρος τις καὶ σωματοφύλαξ, τὸ δ' ὡς οἰκονόμος καὶ οἰκουρὸς τῶν ἀναγκαίων· ὁ δὲ νόος ἐπ' ἄκρας τᾶς κορυφᾶς τῶ σώματος ἱδρυμένος καὶ ἔχων περιαυγέα καὶ διαυγέα τὰν ἔποψιν, μαστεύεται τὰν τῶν ἐόντων φρόνασιν· καὶ τοῦτ' ἔργον ἐντὶ αὐτῷ κατὰ φύσιν, τὸ μαστευσάμενον καὶ

κτησάμενον ἀκολουθῆσαι τοῖς βελτίοσιν αὐτῶ καὶ τιμιωτάτοις· ἀρχὰ γὰρ καὶ αἰτία καὶ κανών ἐντι τᾶς ἀνθρωπίνας εὐδαιμοσύνας ἁ τῶν θείων καὶ τιμιωτάτων ἐπίγνωσις.

65 *Κλεινίου Πυθαγορείου Ταραντίνου.*

Πᾶσα μὲν ὦν ἀρετὰ τελεοῦται, καθάπερ ἐν ἀρχᾷ διώρισται, ἐκ λόγω καὶ προαιρέσιος καὶ δυνάμιος. τούτων δὲ καθ' ἑαυτὸ ἕκαστον οὐκ ἀρετᾶς μέρος ἐντί, ἀλλ' αἴτιον ἀρετᾶς. ὅσοι μὲν ὦν ἔχοντι τὸ νοατικὸν καὶ γνωστικὸν μέρος αὐτᾶς, δεινοί τε καὶ συνετοὶ ὀνυμαίνονται· ὅσοι δὲ τὸ ἠθικόν τε καὶ προαιρετικόν, χρήσιμοί τε καὶ ἐπιεικέες. . . .

66 *Κλεινίου Πυθαγορείου Ταραντίνου ἐκ τῶν περὶ ὁσιότητος καὶ εὐσεβείας.*

Ὁπόσας δεῖ τὰς αἰτίας ἀνευρέν, δι' ἃς ἀδικὲν πέφυκεν ἄνθρωπος. αὗται δὲ τρεῖς τυγχάνοντι· φιλαδονία μὲν ἐν ταῖς ἀπολαύσεσι ταῖς διὰ σώματος, πλεονεξία δὲ ἐν τῷ κερδαίνεν, φιλοδοξία δὲ ἐν τῷ καθυπερέχεν τῶν ἴσων τε καὶ ὁμοίων. δεῖ τοιγαρῶν γνωρίζεν, ὅτι τούτοις ἀντιτιθέμεν οἷόν τέ ἐστιν, ἃ μὲν φόβον ἐμπαρασκευάζοντι τοῖς ἀνθρώποις, ἃ δὲ αἰσχύναν, ἃ δὲ καὶ ἐπιθυμίαν· φόβον μὲν δὴ τῶν νόμων, αἰσχύναν δὲ τῶν θεῶν, ἐπιθυμίαν δὲ τῶν λόγων. διδάσκεν ὦν δεῖ τὼς νέως ἐξ ἀρχᾶς τάν τε τῶν θεῶν τιμὰν καὶ τὰν τῶν νόμων· ἐκ τῶνδε γὰρ φανερὸν ἂν εἴη, ὅτι πᾶν ἔργον ἀνθρώπινον καὶ βίος ὃς ὁσιότατός τε καὶ εὐσεβείας μεθέξει, καὶ ὀρθοπλοεῖ.

67 *Θεαγοῦς Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ ἀρετῆς.*

Ἀρχαὶ τᾶς συμπάσας ἀρετᾶς τρεῖς, γνῶσις καὶ

δύναμις καὶ προαίρεσις. καὶ ἔντιν ἁ μὲν γνῶσις οἷον ὄψις ᾇ θεωροῦμεν καὶ κρίνομεν τὰ πράγματα, ἁ δὲ δύναμις οἷον ἀλκά τις τῶ σκάνεος ᾇ ὑφιστάμεθα καὶ ἐμμένομεν τοῖς πράγμασιν, ἁ δὲ προαίρεσις οἷον χεῖρες ψυχᾶς τινες αἷς ὁρμῶμεν καὶ ἀντιλαζύμεθα τῶν πραγμάτων. ἔχει δὲ καὶ ὁ τᾶς ψυχᾶς διάκοσμος οὕτως. τὸ μὲν γάρ τι αὐτᾶς ἐντι λογισμὸς τὸ δὲ θυμὸς τὸ δ' ἐπιθυμία. λογισμὸς μὲν ὦν ὁ κρατέων τᾶς γνώσιος, θυμὸς δὲ ὁ κρατέων τῶ μένεος, ἐπιθυμία δὲ ἁ κρατοῦσα τῶ ἐπιθυματικῶ ἁδεῶς. ὅκκαν ὦν ἐς τὸ ἓν τὰ τρία ταῦτα μολῇ μίαν ἐπιδεξάμενα συναρμογάν, τόκα δὲ γίνεται ἀρετὰ καὶ ὁμολογία ἐν τᾷ ψυχᾷ· ὅκκαν δὲ στασιάζοντα καὶ ἀπ' ἀλλάλων ἀπόσπαστα ᾖ, τόκα δὲ γίνεται κακία καὶ ἀναρμοστία ἐν τᾷ ψυχᾷ· καὶ ὅκκαν μὲν ὁ λογισμὸς ἐπικρατέῃ τῶν ἀλόγων μερέων τᾶς ψυχᾶς, τόκα δὲ γίνεται καρτερία καὶ ἐγκράτεια, καρτερία μὲν ἐν τᾷ κατοχᾷ τῶν πόνων, ἐγκράτεια δὲ ἐν τᾷ κατοχᾷ τῶν ἁδέων. ὅκκαν δὲ τὰ ἄλογα μέρεα τᾶς ψυχᾶς ἐπικρατέῃ τῶ λογισμῶ, τόκα δὲ γίνεται μαλακία καὶ ἀκρασία· μαλακία μὲν ἐν τῷ φεύγεν τὼς πόνως, ἀκρασία δὲ ἐν τῷ νικᾶσθαι ὑπὸ τῶν ἁδέων. ὅκκαν δὲ τὸ μὲν κρέσσον ἄρχῃ μέρος τᾶς ψυχᾶς τὸ δὲ χέρηον ἄρχηται, καὶ τὸ μὲν ἁγῆται τὸ δ' ἕπηται, ἀμφότερα δὲ συνευδοκῆται καὶ συνομολογῆται ἀλλάλοις, τόκα δὲ γίνεται ἀρετὰ καὶ παναγαθία περὶ ὅλαν τὰν ψυχάν. καὶ ὅκκαν μὲν τὸ ἐπιθυματικὸν ἕπηται μέρος τᾶς ψυχᾶς τῷ λογιστικῷ, γίνεται σωφροσύνα· ὅκκαν δὲ τὸ θυμοειδές, ἀνδρειότας· ὅκκαν δὲ τὰ μέρεα πάντα, δικαιότας. αὕτα γάρ ἐντιν ἁ διείργουσα τάς τε κακίας πάσας τᾶς ψυχᾶς καὶ τὰς ἀρετὰς ἀπ' ἀλλάλων. καὶ ἔντιν ἁ δικαιότας οἷον σύστημά τι τᾶς ἁρμογᾶς τῶν μερέων τᾶς ψυχᾶς καὶ

ἀρετὰ τελεία καὶ πανυπερτάτα· πάντα γὰρ ἐν ταύτᾳ, τὰ δ' ἄλλ' ἀγαθὰ τᾶς ψυχᾶς οὐκ ἄτερθε ταύτας· διόπερ καὶ ἐν θεοῖς μέγα κράτος ἔχει ἁ δικαιότας καὶ ἐν ἀνθρώποις· τῶ γὰρ ὅλω καὶ τῶ παντὸς ἅδ' ἀρετὰ συνέχει τὰν κοινωνίαν καὶ τὰν ἐν θεοῖς καὶ τὰν ἐν ἀνθρώποις. θέμις γε οὖν φατίζεται παρὰ τοῖς οὐρανίοις θεοῖς, δίκα δὲ παρὰ τοῖς χθονίοις, νόμος δὲ παρὰ τοῖς ἀνθρώποις. ταῦτα δ' ἐντὶ σαμεῖα καὶ σύμβολα τῶ τὰν δικαιότατα πανυπερτάταν ἀρετὰν ὑπάρχεν. καὶ ἄλλως δὲ πιστοῦται ὁ λόγος ἐξ ὀνυμάτων· ὄκκα μὲν γὰρ ὁ νόος τᾶς ψυχᾶς ἀμβλακίσκῃ, ὀνομάζεται ἁ τοιάδε διάθεσις ἀφροσύνα· ὅκκα δὲ ὁ θυμός, θρασύτας ἢ δειλία· ὅκκα δὲ ἐπιθυμία, ἀκρασία· καὶ ὅκκα μὲν ἐπὶ τὸ μῆον ἀμβλακίσκῃ ὁ νόος, ἀφροσύνα, ὅκκα δ' ἐπὶ τὸ μέζον, πανουργία· καὶ ὅκκα μὲν ἐπὶ τὸ μῆον ἀμβλακίσκῃ ὁ θυμός, δειλία, ὅκκα δ' ἐπὶ τὸ μέζον, θράσος· καὶ ὅκκα μὲν ἐπὶ τὸ μῆον ἀμβλακίσκῃ ἁ ἐπιθυμία, φιλαδονία· ὅκκα δ' ἐπὶ τὸ μέζον, ἀκολασία· ὅλως δὲ ἁ μὲν οὐ κατ' ὀρθὸν λόγον συναρμογά, κακία· αὕτα δέ, ἂν μηδένος ἕκατι γένηται, καλέεται ἀβελτηρία· ὅκκα δὲ φόβω, δειλία, ὅκκα δὲ ἁδονᾶς, ἀκολασία, ὅκκα δὲ κέρδεος, ἀδικία. ἁ δὲ κατ' ὀρθὸν λόγον αὐτᾶς σύνταξις, ὅκκα μὲν ἐν τῷ θεωρὲν καὶ κρίνεν γένηται, καλέεται φρόνασις· ὅκκα δὲ ἐν τῷ ὑφίστασθαι ..... τὰ ἁδέα, σαοφροσύνα· ὅκκα δ' ἐν τῷ κέρδεος ἀποσχέσθαι καὶ βλάβας τᾶς εἰς τὸν πλατίον, δικαιότας. ἁ δὲ κατὰ τὸν ὀρθὸν λόγον αὐτᾶς σύνταξις καὶ παρὰ τὸν ὀρθὸν λόγον παράβασις τῶ δέοντός ἐντι στοχασμὸς καὶ τῶ μὴ δέοντος ἐπίπτωσις. ἔντι δὲ τὸ μὲν δέον ὃ δεῖ ἦμεν· τοῦτο δὲ οὔτ' ἀφαιρέσιος οὔτε προσθέσιος δέεται· αὐτὸ γάρ ἐντιν ὃ δεῖ ἦμεν. τῶ δὲ μὴ δέοντος εἴδεε δύο, τὸ μὲν ὑπερ-

βολά, τὸ δὲ ἔλλειψις. καὶ ἁ μὲν ὑπερβολὰ τὸ πλέον τῶ δέοντός ἐντι, ἁ δ' ἔλλειψις τὸ ἔλαττον. ἁ δ' ἀρετὰ ἕξις τίς ἐντι τῶ δέοντος· διόπερ καὶ ἀκρότας καὶ μεσότας εὐθέως ἐντί· ἀκρότας μέν, διότι τῶ δέοντος ἔχεται, μεσότας δέ, ὅτι μεταξὺ τᾶς ὑπερβολᾶς καὶ τᾶς ἐλλείψιός ἐντιν. οὕτως γὰρ καὶ μεσότατες τυγχάνοντι καὶ ἀκρότατες· μεσότατες μέν, ὅτι ἐντὸς τᾶς ὑπερβολᾶς καὶ τᾶς ἐλλείψιος πίπτοντι· ἀκρότατες δέ, ὅτι οὔτε προσθέσιος οὔτ' ἀφαιρέσιος δέονται· αὐτὰ γὰρ ἐντὶ ταῦτα ἃ δεῖ αὐτὰ ἦμεν.

68 Ἐν ταυτῷ.

Ἐπεὶ δὲ ἁ τῶ ἤθεος ἀρετὰ περὶ πάθεα, τῶν δὲ παθέων ἁδονὰ καὶ λύπα ὑπέρτατα, φανερὸν ὅτι οὐκ ἐν τῷ ὑπεξελέσθαι τὰ πάθεα τᾶς ψυχᾶς, ἁδονὰν καὶ λύπαν, ἁ ἀρετὰ πέπτωκεν, ἀλλ' ἐν τῷ ταῦτα συναρμόζεσθαι. οὐδὲ γὰρ ὑγίεια, εὐκρασία τις ἔασα τῶν τῶ σώματος δυνάμεων, ἐν τῷ ὑπεξελέσθαι τὸ ψυχρὸν καὶ τὸ θερμὸν καὶ τὸ ὑγρὸν καὶ τὸ ξηρόν, πέπτωκεν, ἀλλ' ἐν τῷ ταῦτα συγκερασθῆμεν· ἔντι γὰρ οἷον συμμετρία τις τούτων· οὐδ' ἐν τᾷ μωσικᾷ ἐν τῷ ὑπεξελέσθαι τὸ ὀξὺ καὶ τὸ βαρὺ τὸ σύμφωνον πέπτωκεν, ἀλλ' ἐν τῷ ταῦτά πως συναρμόξασθαι. συναρμοσμένων [γὰρ] τῶ ὀξέος καὶ τῶ βαρέος τὸ μὲν σύμφωνον ἐναπολαμβάνεται, τὸ δὲ διάφωνον ἐκκρούεται· συναρμοσμένων δὲ καὶ τῶ θερμῶ καὶ τῶ ψυχρῶ καὶ τῶ ὑγρῶ καὶ τῶ ξηρῶ ἁ μὲν ὑγίεια γίνεται, ἁ δὲ νόσος ἀπόλλυται· συναρμοσμένων δὲ καὶ τῶ θυμῶ καὶ τᾶς ἐπιθυμίας αἱ μὲν κακίαι καὶ τὰ πάθεα ἐξαιρέονται, ταὶ δ' ἀρεταὶ καὶ τὰ ἤθεα ἐγγίνονται. ἰδιαίτατον δὲ τᾶς τῶ ἤθεος ἀρετᾶς ἁ προαίρεσις ἁ ἐν τοῖς καλοῖς. λόγῳ γὰρ καὶ δυνάμει συγχρέεσθαι δυνατὸν καὶ ἄνευ

ἀρετᾶς, προαιρέσει δὲ οὐ δυνατόν· τὸ γὰρ ἀξίωμα τῶ ἤθεος ἁ προαίρεσις σαμαίνει. διὸ καὶ μετὰ βίας μὲν ἐπικρατέων ὁ λογισμὸς θυμῶ καὶ ἐπιθυμίας ἐγκράτειαν καὶ καρτερίαν ἐμποιεῖ, μετὰ βίας δὲ πάλιν ἐκβιασθεὶς αὐτὸς ὑπὸ τῶ ἀλόγω ἀκρασίαν καὶ μαλακίαν. ταὶ δὲ τοιαῦται διαθέσιες τᾶς ψυχᾶς ἡμιτελέες μὲν ἀρεταί, ἡμιτελέες δὲ κακίαι τυγχάνοντι. ὁ μὲν γὰρ λογισμὸς ὑγιαίνει, τὰ δ' ἄλογα μέρεα τᾶς ψυχᾶς νοσεῖ. καὶ καθὸ μὲν ἄρχεται καὶ ἄγεται ὁ θυμὸς καὶ ἁ ἐπιθυμία ὑπὸ τῶ λόγον ἔχοντος μέρεος τᾶς ψυχᾶς, ἁ ἐγκράτεια καὶ ἁ καρτερία ἀρεταὶ τυγχάνοντι, καθὸ δὲ μετὰ βίας ἀλλ' οὐχ ἑκουσίως τοῦτο πράσσοντι, κακίαι τυγχάνοντι. δεῖ γὰρ τὰν ἀρετὰν μὴ μετὰ λύπας ἀλλὰ μεθ' ἁδονᾶς τὰ δέοντα πράσσεν. πάλιν δὲ καθὸ μὲν ἐπικρατεῖ ὁ θυμὸς καὶ ἁ ἐπιθυμία τῶ λογισμῶ, μαλακίαν καὶ ἀκρασίαν ἐπιφέροντα, κακίαι τινὲς τυγχάνοντι· καθὸ δὲ μετὰ λύπας χαρίζονται τοῖς πάθεσιν, εἰδότες ὅτι ἀμβλακίσκοντι τῷ ὑγιὲς ἦμεν τὸ ὄμμα τᾶς ψυχᾶς, ταύτᾳ δὲ οὐ κακίαι. πάλιν ὦν αὐτό γε τοῦτο φανερόν, ὅτι ἑκουσίως δεῖ τὰν ἀρετὰν τὰ δέοντα πράσσεν, τὸ μὲν ἀκούσιον οὐκ ἄνευ λύπας καὶ φόβω, τὸ δὲ ἑκούσιον οὐκ ἄνευ ἁδονᾶς καὶ φιλοφροσύνας. ἅμα δὲ καὶ ὁ λόγος ὁ τᾶς διαιρέσιος ἐμπεδοῖ καὶ παρίητι ταῦθ' οὕτως ἔχεν. ἁ μὲν γὰρ γνῶσις καὶ ἁ ὅρασις τῶν πραγμάτων τῶ λόγον ἔχοντος μέρεος ἐντὶ τᾶς ψυχᾶς, ἁ δὲ δύναμις τῶ ἀλόγω. τὸ γὰρ ἀντέχεν μὴ δύνασθαι τοῖς πόνοις, ἐπικρατὲν δὲ τᾶν ἁδονᾶν, οἰκεῖόν ἐντι τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς. ἁ δὲ προαίρεσις ἐν ἀμφοτέροις αὐτοῖς γίνεται, καὶ τῷ λόγον ἔχοντι μέρει τᾶς ψυχᾶς καὶ τῷ ἀλόγῳ· σύγκειται γὰρ ἐκ διανοίας καὶ ὀρέξιος, ὧν ἁ μὲν διάνοια τῶ λόγον ἔχοντός ἐντι, ἁ δ' ὄρεξις τῶ ἀλόγω.

διὸ καὶ ἀρετὰ πᾶσα ἐν συναρμογᾷ γίνεται τῶν μερέων τᾶς ψυχᾶς, καὶ τὸ ἑκούσιον δὲ καὶ τὸ προαιρετὸν πάντως ἐν τᾷ ἀρετᾷ.

69 *Ἐν ταυτῷ.*

Καθόλω μὲν ὦν ἀρετὰ συναρμογά τις ἐντὶ τῶν ἀλόγων μερέων τᾶς ψυχᾶς ποτὶ τὸ λόγον ἔχον. γίνεται δὲ αὐτὰ τῷ κατὰ τὰν ἁδονὰν καὶ τὰν λύπαν ὅρον ἐπιδέξασθαι τὸν τῶ δέοντος. οὐδὲν γὰρ ἅτερον ἀλαθινὰ ἀρετὰ εἰ μὴ ἕξις τῶ δέοντος· αὐτὸ δὲ τὸ δέον ἐντὶ ὅπερ δεῖ ἦμεν, τὸ δὲ μὴ δέον ὅπερ οὐ δεῖ ἦμεν. τῶ δὲ μὴ δέοντος εἴδεε δύο, τὸ μὲν ὑπερβολὰ τὸ δ' ἔλλειψις. καὶ ὑπερβολὰ μὲν ἐντὶ τὸ πλέον τῶ δέοντος, ἔλλειψις δὲ τὸ ἔλαττον τῶ δέοντος. τὸ δὲ δέον αὐτὸ ἐὸν ὅπερ δεῖ ἦμεν καὶ ἄκρον ἂν ὑπάρχοι καὶ μέσον· ἄκρον μὲν ὅτι οὔτ' ἀφαιρέσιος οὔτε προσθέσιος δέεται, μέσον δὲ ὅτι μεταξύ ἐντι τᾶς ὑπερβολᾶς καὶ τᾶς ἐλλείψιος. ἔχει δὲ τὸ δέον καὶ [τὸ] μὴ δέον πρὸς ἄλλαλα οὕτως ὥσπερ τὸ ἴσον καὶ τὸ ἄνισον, καὶ τὸ τεταγμένον καὶ τὸ ἄτακτον, ταῦτα δ' ἐντὶν ἀμφότερα τὸ πεπερασμένον καὶ τὸ ἄπειρον, καὶ διὰ τοῦτο τῶ ἀνίσω τὰ μέρεα λέγεται ποτὶ τὸ μέσον, ἀλλ' οὐ ποτ' ἄλλαλα. ἀμβλεῖά τε γὰρ ὀνομάζεται γωνία ἁ μέζων ὀρθᾶς, ὀξεῖα δὲ ἁ μείων ὀρθᾶς, καὶ μέζων μὲν εὐθεῖα ἁ ὑπερέχουσα τὰν ἐκ τῶ κέντρω· καὶ μακροτέρα μὲν ἁμέρα ἰσημερινᾶς. καὶ ταὶ νόσοι δὲ γίνονται τῶ σώματος διὰ τὸ θερμότερον ἢ κρυμωδέστερον γίνεσθαι τὸ σῶμα. τὸ μὲν γὰρ θερμότερόν ἐντι τὸ πλέον τῶ μετρίω, τὸ δὲ κρυμωδέστερον ἔλασσον τούτω. ἔχει δέ γε καὶ ἁ ψυχὰ καὶ ἁ περὶ αὐτὰν διάθεσις τὰν ἀναλογίαν ταύταν. ἁ μὲν γὰρ θρασύτας ἐντὶ ὑπερβολὰ τῶ δέοντος ἐν ὑποστάσει δεινῶν, ἁ δὲ δει-

λότας ἔλλειψις τῶ αὐτῶ. καὶ ἁ μὲν ἀσωτία ὑπερβολὰ τῶ δέοντος ἐν δαπάνᾳ χρημάτων, ἁ δ' ἀνελευθερία ἔλλειψις τῶ αὐτῶ. καὶ ἁ μὲν ὀργὰ ἐντὶ ὑπερβολὰ τῶ δέοντος ἐν ὁρμᾷ θυμῶ, ἁ δ' ἀναλγησία ἔλλειψις τούτω. ὁ δ' αὐτὸς λόγος καὶ ἐπὶ τᾶν ἄλλων διαθεσίων τᾶν ἀντικειμένων. δεῖ δ' ἕξιν τῶ δέοντος ὑπάρχοισαν τὰν ἀρετὰν καὶ μεσότατα τῶν παθέων μήτ' ἀπαθέα μήτ' ἐμπαθέα ἦμεν. ἁ μὲν γὰρ ἀπάθεια ἀπαρόρματον καὶ ἀνενθουσίαστον παρέχεται τὰν ψυχὰν ποτὶ τὸ καλόν, ἁ δ' ἐμπάθεια συντεταραγμένον καὶ ἀνεπιλόγιστον. δεῖ ὦν τὸ πάθος οὕτω παρεμφαίνεσθαι ἐν τᾷ ἀρετᾷ, ὥσπερ καὶ τὰν σκιὰν καὶ τὰ λαμπρὰ ἐπὶ τᾶς γραφᾶς· τὸ γὰρ ἔμψυχον καὶ τὸ ἁπαλὸν καὶ τὸ μεμιμαμένον τὰν ἀλάθειαν σὺν τᾷ χρηστότατι τῶν χρωμάτων μάλιστα γίνεται διὰ τούτων. ἔμψυχα δὲ ἐκ παρορμάσιος καὶ ἐνθουσιασμῶ ἀρετᾶς τᾶς κατὰ φύσιν τὰ πάθεα τᾶς ψυχᾶς. γίνεται γὰρ ἐκ τῶν παθέων ἁ ἀρετά, καὶ γεναθεῖσα πάλιν συναύξεται τούτοις, ὥσπερ καὶ τὸ καλῶς ἁρμοσμένον ἐκ τῶ ὀξέος καὶ βαρέος, καὶ τὸ εὔκρατον ἐκ τῶ θερμῶ καὶ ψυχρῶ, καὶ τὸ ἰσόρροπον ἐκ τῶ βαρέος καὶ κούφω. οὐκ ἀφελὲν ὦν δεῖ τὰ πάθεα τᾶς ψυχᾶς, οὐδὲ γὰρ ὠφέλιμον, ἀλλὰ συναρμόσασθαι ποτὶ τὸ λόγον ἔχον τῶ δέοντος καὶ τῶ μετρίω.

70 Ἀρχύτα Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ παιδεύσεως ἠθικῆς.

Φαμὶ τὰν ἀρετὰν ἦμεν ποττὸ μὴ κακοδαιμονεῖν ἱκανάν, τὰν δὲ κακίαν ποττὸ μὴ εὐδαιμονεῖν, αἴκα τὰς ἕξιας αὐτὰς κρίνωμες. αἰεὶ μὲν γὰρ κακοδαιμονεῖν ἀνάγκα τὸν κακόν, αἴτε ἔχῃ ὕλαν (κακῶς τε γὰρ αὐτᾷ χρέεται) αἴτε σπανίζῃ· ὡς καὶ τὸν τυφλόν, αἴτε

φῶς ἔχῃ καὶ λαμπρότατα ὁρατάν, αἴτε ἐν σκότει διατελῇ· οὐκ αἰεὶ δὲ εὐδαιμονεῖν τὸν ἀγαθόν. οὐ γὰρ ἁ κτᾶσις τᾶς ἀρετᾶς εὐδαιμονία ἦς, ἀλλ' ἁ χρᾶσις. καὶ γὰρ ὁ ἔχων τὰν ὄψιν οὐχ ὁρᾷ αἰεί· αἰ γὰρ μὴ ἔχῃ φῶς, οὐκ ὄψεται. δύο δ' ὁδοὶ τέμνονται ἐν βίῳ, ἃ μὲν σκυθρωποτέρα, τὰν ὁ τλάμων ἐβάδιζεν Ὀδυσσεύς, ἃ δὲ εὐδιεινοτέρα, τὰν ἐπορεύετο Νέστωρ. τὰν ὦν ἀρετὰν φαμι δήλεσθαι μὲν ταύταν, δύνασθαι δὲ καὶ τήναν. ἀλλὰ τὰν εὐδαιμονίαν καρύσσει ἁ φύσις βίον εὐκταῖον καὶ εὐσταθέα, διὰ τὸ γνώμας τελεσθῆμεν· ὥστε ἃ μὴ δηλῆταί τις παριόντα, οὐκ εὐδαίμων μέν, οὐ μὰν πάντα κακοδαίμων.

71 Ἐν ταυτῷ.

Μὴ ὦν ἄνοσον καὶ ἀνάλγητον τολμῶντι τὸν ἀγαθὸν εἰπέν, μηδὲ ἄλυπον θρασυνεέσθωσαν λέγεν· ὡς γὰρ σώματι ἀλγεινά τινα ἀπολείπομεν, οὕτω καὶ ψυχαῖς ἐπώδυνα. ἀλλὰ ταὶ μὲν ἀφρόνων λῦπαι ἀλόγιστοι πέλονται, ταὶ δὲ φρονίμων ἐς ὅσον κα λόγος ἐπιτρέποι ὁρίδδων τὰ πράγματα. ἀλλὰ μὰν καὶ τὸ καύχαμα αὐτῶν τᾶς ἀπαθείας ἐκλύει τᾶς ἀρετᾶς τὸ γενναῖον, αἴκα ἐν ἀδιαφόροις καὶ μὴ κακοῖς θανάτῳ τε καὶ ἀλγηδόνι καὶ πενίᾳ ἀντιβεβάκῃ. εὐκαταγώνιστα γὰρ τὰ μὴ κακά. ἀσκητέον ὦν ποττὰν μετριοπαθίαν ἴεμεν, ὡς τό τε ἀνάλγητον εἰς ἶσον τῷ ἐμπαθεῖ φεύγωμες, μηδὲ μέζον φύσιος τᾶς ἁμετέρας φθεγγώμεθα.

72 Τοῦ αὐτοῦ περὶ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ εὐδαίμονος.

Πρῶτον μὲν ὦν χρὴ τοῦτο γινώσκεν, ὅτι ὁ μὲν ἀγαθὸς ἀνὴρ οὐκ εὐθέως εὐδαίμων ἐξ ἀνάγκας ἐστίν, ὁ δὲ εὐδαίμων καὶ ἀγαθὸς ἀνήρ ἐστιν. ὁ μὲν γὰρ εὐδαίμων ἐξ ἐπαινετῶ καὶ μακαριστῶ γίνεται, ὁ δὲ ἀγα-

θὸς ἀνὴρ ἐξ ἐπαινετῶ μόνον. γίνεται δὲ ὁ μὲν ἔπαινός ἐπ' ἀρετᾷ, ὁ δὲ μακαρισμὸς ἐπ' εὐτυχίᾳ. καὶ ὁ μὲν ἀγαθὸς ἀνὴρ ἐπὶ τοῖς παρ' ἀρετᾶς ἀγαθοῖς γίνεται τοιοῦτος, ὁ δ' εὐδαίμων καὶ ἐπὶ τοῖς διὰ τύχαν· καὶ ὁ μὲν ἀγαθὸς ἀνὴρ ἀναφαίρετον ἔχει τὰν ἀρετάν, ὁ δ' εὐδαίμων ἐστὶν ὄκ' ἀφαιρέεται τὰν εὐδαιμοσύναν. τᾶς μὲν γὰρ ἀρετᾶς ἀνυπεύθυνος ἁ δύναμις, τᾶς δ' εὐδαιμοσύνας εὐθυνομένα. νόσοι τε γὰρ μακραὶ σώματος καὶ πηρώσιες αἰσθαταρίων ἀπομαραίνοντι τὰν εὐθάλειαν τᾶς εὐδαιμοσύνας.

73 *Ἐν ταυτῷ.*

Διαφέρει δὲ θεὸς ἀνθρώπω ἀγαθῶ, ὅτι θεὸς μὲν οὐ μόνον εἰλικρινῆ καὶ διυλισμέναν ἔχει τὰν ἀρετὰν ἀπὸ παντὸς τῶ θνατῶ πάθεος, ἀλλὰ καὶ τὰν δύναμιν αὐτᾶς ἄτρυτον πέπαται καὶ ἀνυπεύθυνον, ὡς πρὸς αἰωνίων ἔργων σεμνότατά τε καὶ μεγαλοπρέπειαν· ἄνθρωπος δ' οὐ μόνον τῷ θνατῷ τᾶς φύσιος καταστάματι μήονα ταύταν πέπαται, ἔστι δ' ὄκκα καὶ δι' ἀγαθῶν ἀμετρίαν καὶ διὰ συνήθειαν ἰσχυρὰν καὶ διὰ φύσιν μοχθηρὰν καὶ δι' ἄλλας αἰτίας πολλὰς ἀδυνατεῖ κατ' ἄκρας γεναθῆμεν παναλαθέως ἀγαθός.

74 *Ἐν ταυτῷ.*

Φαμὶ δὴ τὸν ἀγαθὸν ἄνδρα τοῦτον εἶμεν, τὸν πράγμασι μεγάλοις καὶ καιροῖς καλῶς χρεόμενον. οὗτος δέ κα εἴη ὁ εὐτυχίαν τε δυνάμενος καλῶς φέρεν καὶ πάλιν ἀτυχίαν, καὶ ὁ ἔν τε τοῖς καλοῖς καὶ τιμίοις ἄξιος γενόμενος τῶν ὑποκειμένων, καὶ μεταβαλοίσας τᾶς τύχας εὖ τὸ παρὸν ἐκδεχόμενος. εἰ δὲ συντόμως τε καὶ κεφαλαιωδῶς δεῖ φράσαι, ὁ ἐν πάντεσσι τοῖς καιροῖς καλῶς ἀγωνιζόμενος ἐκ τῶν ἐνδεχομένων,

καὶ μὴ μόνον αὕταυτον οὕτως διατιθείς, ἀλλὰ καὶ τὼ ἐμπιστεύσαντας αὐτῷ καὶ συναγωνισαμένω.

75 *Ἐν ταυτῷ.*

Ἐπεὶ ὦν τῶν ἀγαθῶν ἃ μὲν αὐτά ἐντι δι' αὕταυτα αἱρετά, οὐ μὰν δι' ἅτερον, ἃ δὲ δι' ἅτερον, οὐ μὰν δι' αὕταυτα, εἴη ἂν καὶ τρίτον τι εἶδος ἅτερον ἀγαθῶν, ὃ καὶ δι' αὕταυτον αἱρετόν ἐντι καὶ δι' ἅτερον. τίνων ὦν ἐντὶ τὰ τοιαῦτα τῶν ἀγαθῶν, ἅπερ αὐτὰ δι' αὕταυτα αἱρετὰ πέφυκεν ἧμεν, οὐ μὰν διὰ ἕτερον; φανερὸν ὅτι ἁ εὐδαιμοσύνα. ταύτας γὰρ ἕνεκα τὰ ἄλλα αἱρεόμεθα, αὐτὰν δὲ ταύταν οὐδενὸς ἁτέρω. τίνα δὲ πάλιν ἐντί, ἃ δι' ἅτερον μὲν αἱρεόμεθα, οὐ μὰν δι' αὕταυτά γε; δᾶλον ὅτι τὰ ὠφέλιμα καὶ τὰ προτρεπτικὰ τῶν ἀγαθῶν, ἅπερ αἴτια γίνεται τῶν ἁτέρων, οἷον πόνοι μὲν σώματος καὶ γυμνάσια καὶ τρίψιες εὐεκτίας, ἀναγνώσιες δὲ καὶ μελέται καὶ ἐπιτηδεύσιες καλῶν καὶ ἀρετᾶς. τίνα δὲ καὶ δι' αὕταυτα αἱρετὰ καὶ τὰ δι' ἅτερον; . . . . οἷον αἵ τε ἀρεταὶ καὶ αἱ ἕξιες αὐτῶν, καὶ αἱ προαιρέσιες, καὶ αἱ πράξιες, καὶ πᾶν τὸ ἐχόμενον τᾶς τῶ καλῶ οὐσίας. τὸ μὲν ὦν δι' αὕταυτο αἱρετόν, οὐ μὰν δι' ἅτερον, μονῆρες ἀγαθόν ἐντι καὶ ἕν· τὸ δὲ καὶ δι' αὐτὸ καὶ δι' ἅτερον, τριχᾷ δέδασται. τὸ μὲν γάρ τι αὐτῶ περὶ ψυχάν ἐστιν, τὸ δὲ περὶ σῶμα, τὸ δέ τι ἐκτός· περὶ ψυχὰν μὲν αἱ τᾶς ψυχᾶς ἀρεταί, περὶ σῶμα δὲ αἱ τῶ σώματος, ἐκτὸς δὲ φίλοι δόξα τιμὰ πλοῦτος. παραπλησίως δὲ καὶ τὸ δι' ἅτερον αἱρετόν· τὸ μὲν γάρ τι αὐτῶ τὰ ποιητικὰ τῶν τᾶς ψυχᾶς ἀγαθῶν, περὶ σῶμα δὲ τὰ τῶ σώματος, ἐκτὸς δὲ τὰ αἴτια πλούτω καὶ δόξας καὶ τιμᾶς καὶ φιλίας. ὅτι δὲ τὰν ἀρετὰν ἧμεν συμβέβακεν αὐτὰν δι' αὑταύταν αἱρετάν, δᾶλον καὶ ἐκ τῶνδε. εἰ γὰρ τὰ

καταδεέστερα τᾷ φύσει, λέγω δὴ τὰ σώματος ἀγαθά, αὐτὰ δι᾽ αὔταυτα αἱρεόμεθα, κρέσσων δὲ ψυχὰ σώματος, φανερὸν ὅτι καὶ τὰ τᾶς ψυχᾶς ἀγαθὰ αὐτὰ δι᾽ αὔταυτα ἀγαπέομες, ἀλλ᾽ οὐ διὰ τὰ ἀποβαίνοντα ἀπ᾽ αὐτῶν.

76 Ἐν ταυτῷ.

Τῷ δ᾽ ἀνθρωπίνῳ βίῳ καιροὶ τρεῖς, ὃ μὲν ἐν εὐτυχίᾳ ὃ δὲ ἐν ἀτυχίᾳ ὃ δὲ μεταξὺ τούτων. ἐπεὶ ὦν ἀγαθὸς ἀνὴρ ὁ ἔχων ἀρετὰν καὶ ὁ χρεόμενος ἀρετᾷ, χρᾶται δὲ αὐτᾷ κατὰ τὼς τρεῖς καιρώς· ἢ γὰρ ἐν ἀτυχίᾳ ἢ ἐν εὐτυχίᾳ ἢ ἐν τοῖς μεταξὺ τούτων· καὶ ἐν ἀτυχίᾳ μέν ἐντι κακοδαίμων, ἐν δ᾽ εὐτυχίᾳ εὐδαίμων, ἐν δὲ τᾷ μέσᾳ καταστάσει οὐκ εὐδαίμων· φανερὸν ὅτι οὐδὲν ἅτερόν ἐστιν εὐδαιμοσύνα ἀλλ᾽ ἢ χρᾶσις ἀρετᾶς ἐν εὐτυχίᾳ. λέγομες δὲ νῦν εὐδαιμοσύναν τὰν τῶ ἀνθρώπω. ὁ δ᾽ ἄνθρωπος οὐχ ἁ ψυχὰ μόνον, ἀλλὰ καὶ τὸ σῶμα· τὸ γὰρ ἐξ ἀμφοτέρων ζῶον καὶ τὸ ἐκ τοιούτων ἄνθρωπος. καὶ γὰρ εἰ τᾶς ψυχᾶς ὄργανον τὸ σῶμα πέφυκεν, ἀλλὰ καὶ τῶ ἀνθρώπω μέρος καὶ τοῦτο καὶ ἁ ψυχά. διὸ καὶ τῶν ἀγαθῶν ἃ μὲν ἔντι τῶ ἀνθρώπω ἃ δὲ τῶν μερέων. καὶ ἀνθρώπω μὲν ἀγαθὸν εὐδαιμοσύνα, τῶν δὲ μερέων τῶ ἀνθρώπω ψυχᾶς μὲν φρόνασις ἀνδρεία δικαιοσύνα σωφροσύνα, σώματος δὲ κάλλος ὑγίεια εὐεκτία εὐαισθησία. τὰ δὲ ἐκτός, πλοῦτος καὶ δόξα καὶ τιμὰ καὶ εὐγένεια, πέφυκεν ἐπιγένναμα ἧμεν τῶ ἀνθρώπω καὶ ἀκόλουθα τοῖς φύσει προϋφεστακόσιν ἀγαθοῖς, δορυφορεῖ δὲ τὰ μήονα τῶν ἀγαθῶν τὰ μέζονα· φιλία μὲν καὶ δόξα καὶ πλοῦτος σῶμα καὶ ψυχάν, ὑγίεια δὲ καὶ ἰσχὺς καὶ εὐαισθησία ψυχάν, φρόνασις δὲ καὶ ἀνδρία καὶ σωφροσύνα καὶ ἁ δικαιοσύνα τὸν νόον τᾶς ψυχᾶς, ὁ δὲ νόος τὸν θεόν·

οὗτος γὰρ ὁ κράτιστός ἐστι καὶ ὁ ἁγεμονεύων. καὶ τούτων ἕνεκα καὶ τὰ ἄλλα τῶν ἀγαθῶν δεῖ παρῆμεν. στρατεύματος μὲν γὰρ ἁγεῖται στραταγός, πλωτήρων δὲ κυβερνάτας, τῷ δὲ κόσμῳ θεός, τᾶς δὲ ψυχᾶς νόος, τᾶς δὲ περὶ τὸν βίον εὐδαιμοσύνας φρόνασις· οὐδὲν γὰρ ἅτερόν ἐστι φρόνασις εἰ μὴ ἐπιστάμα τᾶς περὶ τὸν βίον εὐδαιμοσύνας, ἢ ἐπιστάμα τῶν κατὰ φύσιν ἀνθρώπῳ ἀγαθῶν.

77 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ θεῷ μὲν εὐδαιμοσύνα καὶ βίος ἄριστος, τῷ δ' ἀνθρώπῳ ἐξ ἐπιστάμας καὶ ἀρετᾶς καὶ τρίτῳ εὐτυχίας σωματουμένα παραγίνεται. λέγω δὲ σοφίαν μὲν ἐπιστάμαν τῶν θείων καὶ δαιμονίων, φρόνασιν δὲ τῶν ἀνθρωπίνων καὶ τῶν περὶ τὸν βίον· τὰς γὰρ λόγοις καὶ ἀποδείξεσιν ποτιχρωμένας ἀρετὰς δέον ἐπιστάμας ποταγορεύεν· ἀρετὰν δὲ τὰν ἠθικὰν καὶ βελτίσταν ἕξιν τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς, καθ' ἃν καὶ ποιοί τινες ἦμεν λεγόμεθα κατὰ τὸ ἦθος, οἷον ἐλευθέριοι δίκαιοι καὶ σώφρονες· εὐτυχίαν δὲ τὰν παρὰ τὸν λόγον τῶν ἀγαθῶν παρουσίαν καὶ μὴ δι' αὐτὸν γινομέναν. ἐπεὶ ὦν ἁ μὲν ἀρετὰ καὶ ἐπιστάμα ἐφ' ἁμῖν, ἁ δ' εὐτυχία οὐκ ἐφ' ἁμῖν· ἐν δὲ θεωρίαις καὶ πράξεσι τῶν καλῶν τὸ εὐδαιμονᾶν· αἱ δὲ θεωρίαι καὶ αἱ πράξιες ποτάντεις μὲν οὖσαι λειτουργίαν καὶ ἀνάγκαν ἐπιφέροντι, εὐοδοῦσαι δὲ διαγωγὰν καὶ εὐδαιμοσύναν· γίνεται δὲ ταῦτα ἐν εὐτυχίᾳ· φανερὸν ὅτι οὐδὲν ἅτερόν ἐστιν εὐδαιμοσύνα εἰ μὴ χρᾶσις ἀρετᾶς ἐν εὐτυχίᾳ.

78 Ἐν ταυτῷ.

Ὅτι ὁ ἀγαθὸς ἀνὴρ οὕτω διάκειται ποτ' εὐτυχίαν, ὥσπερ καὶ ὁ τῷ σώματι καλῶς ἔχων καὶ ῥωμαλέως.

καὶ γὰρ ἐκεῖνος οἷός τε καὶ θάλπος καὶ ψῦχος ὑπομένεν, καὶ βάρος ἆραι μέγα, καὶ πολλὰς ἀτέρας εὐχερῶς ὑπομένεν κακοπαθείας.

79 *Ἐν ταυτῷ.*

Ἐπεὶ ὦν εὐδαιμοσύνα χρᾶσις ἀρετᾶς ἐν εὐτυχίᾳ, περὶ ἀρετᾶς καὶ εὐτυχίας λέγωμες, καὶ πρῶτον περὶ εὐτυχίας. τῶν γὰρ ἀγαθῶν ἃ μὲν οὐκ ἐπιδέχεται ὑπερβολάν, οἷον ἀρετά· οὐ γὰρ ἔστιν ὑπερβάλλοισά τις ἀρετὰ καὶ ὑπερβαλλόντως τις ἀγαθός· ἁ γὰρ ἀρετὰ στάθμαν ἔχει τὸ δέον, καὶ ἔστι τῶ δέοντος ἕξις ἐν τοῖς πρακτοῖς· ἁ δ' εὐτυχία καὶ τὰν ὑπερβολὰν ἐπιδέχεται καὶ τὰν μήωσιν. ὑπερβάλλοισα δὲ γεννᾷ τινας κακίας, καὶ ἐξίστησι τὸν ἄνθρωπον ἐκ τᾶς κατὰ φύσιν ἕξιος, ὥστε πολλάκις ἀντιβαίνεν καὶ τᾷ συστάσει τᾶς ἀρετᾶς. καὶ οὐ μόνον ἁ εὐτυχία, ἀλλὰ καὶ ἅτεραι αἰτίαι πλείονες. οὐδέποκα γὰρ δεῖ θαυμαίνεν περὶ μὲν αὐλητικὰν ἦμέν τινας ἀλαζόνας, οἳ τὰ ποτ' ἀλάθειαν ἐάσαντες φαντασίᾳ τινὶ ψευδεῖ τὼς ἀμώσως αἱρέοντι, περὶ δὲ τὰν ἀρετὰν μὴ ἦμεν τὸ τοιοῦτον γένος, ἀλλ' ὅσῳ περ σεμνότερόν ἐστι, τοσούτῳ καὶ τὸ ποτιποιούμενον περὶ αὐτὰν πλέον ἦμεν γένος. πολλὰ γάρ ἐστι τὰ διαστρέφοντα τὰς περὶ τὰν ἀρετὰν ἐπιφανείας, ὧν ἓν μέν ἐστι τὸ τῶν ἐπιβουλευόντων καὶ ποτιποιουμένων γένος· ἅτερα δὲ φυσικὰ πάθεα παρακολουθέοντα ἐνιόκα ποιέοντι ἐναντίαν ἐπιπρέπειαν τᾶς ἀλαθινᾶς διαθέσιος· τινὰ δὲ καὶ δι' ἔθος συνεκτεθραμμένα ἐκ παλαιῶν χρόνων· οὐκ ὀλίγα δὲ καὶ δι' ἁλικίας ἁβατικάς τε καὶ γεροντικάς, καὶ δι' εὐτυχίας ἢ καὶ ἀτυχίας, καὶ δι' ἀτέρως παμπληθέας τρόπως. ὥστε οὐδέποκα δεῖ θαυμαίνεν, εἰ πάντ' ἀνεστραμμένως ἐνιόκα κρίνεται, τᾶς ἀληθινᾶς διαθέσιος

μεταπιπτούσας. ὥσπερ καὶ τέκτονα τὸν ἄριστον ἦμεν δοκέοντα πολλὰ ἐν τοῖς ὑποκειμένοις ἔργοις ὁρέομες ἁμαρτάνοντα, καὶ στραταγὸν καὶ κυβερνάταν καὶ γραφέα καὶ πάντας ἁπλῶς, καὶ ὅμως οὐκ ἀποστεροῦμες τᾶς ὑπαρχοίσας ἕξιος· οὕτως οὐδὲ τὸν ἀκολασταίνοντα ἔν τισι καιροῖς οὐδὲ τὸν ἀδικήσαντα οὐδὲ τὸν ἀποδειλιάσαντα εἰς τὼς κακὼς τακτέον ἄνδρας, οὐδὲ μὰν τὼς τούτων τι κατορθώσαντας εἰς τὼς ἀγαθώς· ἀλλὰ τοῖς τε φαύλοις τὸ τυχὲν ποτὲ δοτέον τοῖς τε ἀγαθοῖς τὸ διαμαρτάνεν· τὰν δὲ ἀλαθινὰν κρίσιν οὐ ποθ᾽ ἕνα καιρὸν ἐπιβλέποντας οὐδ᾽ ἐπὶ χρόνου τι πλᾶθος, ἀλλ᾽ ἐπὶ πάντα τὸν βίον. ὥσπερ δὲ τὸ σῶμα βλάπτει μὲν καὶ τὸ τᾶς ἐνδείας καὶ τὸ τᾶς ὑπερβολᾶς εἶδος, οὐ μὰν ἀλλὰ νόσως ἔτι μέζονας ἐμποιεῖν πέφυκεν ἁ ὑπερβολὰ καὶ τὰ καλεόμενα περισσώματα· οὕτω καὶ ψυχὰν βλάπτει μὲν καὶ τὸ τᾶς εὐτυχίας ἢ ἀτυχίας εἶδος ἀκαίρως παραγενόμενον, οὐ μὰν ἀλλὰ νόσως ἔτι μέζονας ποὲν πέφυκεν ἁ λεγομένα παρὰ πάντεσσιν εὐτυχία, ὥσπερ οἶνος καταμεθύσκουσα τοῖς ἀγαθοῖς τὰν διάνοιαν.

80 *Ἀρχύτα Πυθαγορείου περὶ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ εὐδαίμονος.*

Ὅθεν οὐκ ἀτυχίαν ἐνεγκὲν ἐμμελῶς χαλεπώτερόν ἐστιν, ἀλλ᾽ εὐτυχίαν. πάντες μὲν γὰρ ἐν ἀτυχίᾳ μένοντες ὡς ἐπὶ πολὺ μέτριοι καὶ κόσμιοι τὸ ἦθος ἦμεν φαίνονται, ἐν δ᾽ εὐπραγίαις ἀνδρεῖοι μεγαλόφρονες μεγαλόψυχοι. δεινὰ γὰρ ἀτυχία συναγαγὲν καὶ καταρτίσαι τὰν ψυχάν, ἁ δ᾽ εὐπραγία τοὐναντίον ἐπᾶραι καὶ κενῶσαι. διὸ ποθεκτικοὶ μὲν ἅπαντες καὶ συνετοὶ τὸν τρόπον ἀτυχέοντες, ἐπιθετικοὶ δὲ καὶ θαρσαλέοι τὸν τρόπον εὐτυχέοντες.

81 *Ἐν ταυτῷ.*

Ὅρος δέ ἐστιν εὐτυχίας, ἂν προέλοιτο ὁ ἀγαθὸς ἀνὴρ συνεργὸν αὐτῷ γενομέναν ποττὰς ἰδίας πράξιας· ὥσπερ καὶ μέγεθος ναῷ, καὶ μέγεθος παδαλίῳ, ᾧ καθικνεῖσθαι δύναται ὁ ἀγαθὸς κυβερνάτας μεγάλα πελάγεα διαπεραιούμενος καὶ μεγάλαν ναυκλαρίαν στελλόμενος. ἁ δ' ὑπερβολὰ τᾶς εὐτυχίας τοῖς ἀγαθοῖς οὐ κρατεῖσθαι πέφυκεν ὑπὸ τᾶς ψυχᾶς, ἀλλὰ κρατὲν αὐτᾶς. ὥσπερ γὰρ τὸ λαμπρὸν φάος μαραυγίαν περιτίθησι τοῖς ὀφθαλμοῖς, οὕτω καὶ ἁ ὑπερβάλλοισα εὐτυχία τῷ νόῳ τᾶς ψυχᾶς. καὶ περὶ μὲν ὦν εὐτυχίας ἅλις εἰρήσθω.

---

82 *Ὅτι ἀντακολουθοῦσιν αἱ ἀρεταί.*

Ὅτι ἀντακολουθοῦσιν αἱ ἠθικαὶ ἀρεταί, δεικτέον καὶ ἀπὸ τῆς προαιρέσεως. εἰ γὰρ ἡ ἀρετὴ μάλιστα τῇ προαιρέσει κρίνεται, ἡ δὲ ὀρθὴ προαίρεσις ἐκ φρονήσεως ἕπεται. τὸ γὰρ βουλεύεσθαι τῆς φρονήσεως καὶ ἠθικῆς ἀρετῆς, εἴγε δεῖ μὲν τῷ καλῶς βουλευομένῳ τὸν σκοπὸν ὀρθὸν κεῖσθαι, εἰς ὃν περὶ τῶν συντελούντων εἰς αὐτὴν βουλεύεται. ὁρίζεται δὲ ὁ σκοπὸς ὑπὸ τῆς ἠθικῆς ἀρετῆς· οὗ γὰρ ἐφιέμεθα, περὶ τούτου βουλενόμεθα· ἡ δὲ τῶν προσηκόντων ἔφεσις ἀπὸ τῆς ἠθικῆς ἀρετῆς, ὥσπερ εἶπεν Ἀριστοτέλης, οὐκ ἔστιν ἡ προαίρεσις ὀρθὴ ἄνευ φρονήσεως οὐδὲ ἄνευ ἀρετῆς· ἡ μὲν γὰρ τὸ τέλος, ἡ δὲ τὰ πρὸς τὸ τέλος ποιεῖ πράττειν. ἔτι εἰ ἀνάγκη μὲν ἡντινοῦν ἀρετὴν ἠθικὴν ἔχοντα φρόνησιν ἔχειν· εἴγε ἐστὶν ἠθικὴ ἀρετὴ πρακτικὴ τῶν ὡρισμένων φρονήσει τε καὶ τῷ ὀρθῷ λόγῳ· ἀνάγκη δὲ καὶ τὸν φρόνησιν ἔχοντα ἔχειν ἠθικὴν ἀρετήν· εἴγε οἰκεῖον τῇ φρονήσει τὸ ζητεῖν πῶς οἷόν τε τυχεῖν τοῦ δέοντος σκοποῦ, ὃν τῆς ἠθικῆς ὁρίσαι· αὐτὴ γὰρ τῆς ὀρεκτικῆς δυνάμεως ἀρετή. ταύτῃ γὰρ φρόνησίς τε καὶ δεινότης διαφέρουσιν· ᾗ ἡ μὲν φρόνησις τῶν πρὸς τὸν ὀρθὸν σκοπὸν φερόντων ἐστὶν εὑρετική τε καὶ ζητητική· ἡ δὲ δεινότης τῶν πρὸς τὸν τυχόντα. **Alexandri Aphrod. Quaest. IV, 22.**

83 *Μουσωνίου.*

Οὐκ ἔστι τὴν ἐνεστηκυῖαν ἡμέραν καλῶς βιῶναι μὴ προθέμενον αὐτὴν ὡς ἐσχάτην βιῶσαι.

84 *Μουσωνίου ἐκ τοῦ περὶ σκέπης.*

Ταῦτα μὲν περὶ τροφῆς εἶπεν. ἠξίου δὲ καὶ σκέπην τὸν σώφρονα τῷ σώματι ζητεῖν οὐ τὴν πολυτελῆ καὶ περιττήν· εὐθὺς γὰρ ἐσθῆτι καὶ ὑποδέσει τὸν αὐτὸν τρόπον ἔφη εἶναι χρηστέον ὅνπερ πανοπλίᾳ, φυλακῆς ἕνεκεν τοῦ σώματος ἀλλ' οὐκ ἐπιδείξεως. ὥσπερ οὖν ὅπλα κάλλιστα τὰ ἰσχυρότατα καὶ σώζειν μάλιστα δυνάμενα τὸν χρώμενον, οὐ τὰ περίβλεπτα καὶ λαμπρά, οὕτως ἀμπεχόνη καὶ ὑπόδεσις ἡ χρησιμωτάτη τῷ σώματι κρατίστη, καὶ οὐχ ἡ δυναμένη τὰς τῶν ἀνοήτων ὄψεις ἐπιστρέφειν. δεῖ γὰρ τῆς σκέπης αὐτῆς κρεῖττον ἀποφαίνειν τὸ σκεπόμενον καὶ ἰσχυρότερον, ἀλλ' οὐκ ἀσθενέστερόν τε καὶ χεῖρον. οἱ μὲν οὖν λειότητά τε καὶ ἁπαλότητα σαρκὸς διὰ τῶν σκεπασμάτων μηχανώμενοι χείρω τὰ σώματα ποιοῦσιν, εἴγε τὸ τεθρυμμένον σῶμα καὶ μαλακὸν πολὺ κάκιον τοῦ σκληροῦ τε καὶ διαπεπονημένου ἐστίν· οἱ δὲ ῥωννύντες καὶ κρατύνοντες τῇ σκέπῃ, οὗτοι τὰ σκεπόμενα μόνοι ὠφελοῦσιν. διὰ τοῦτο οὐδαμῶς καλὸν οὔτε ἐσθῆσι πολλαῖς κατασκέπειν τὸ σῶμα, οὔτε ταινίαις κατειλεῖν, οὔτε χεῖράς τε καὶ πόδας περιδέσει πίλων ἢ ὑφασμάτων τινῶν μαλακύνειν, τούς γε μὴ νοσοῦντας· οὐδ' ὅλως εἶναι ἀγεύστους καλὸν ψύχους τε καὶ θάλπους, ἀλλὰ ῥιγοῦν χρὴ τὰ μέτρια χειμῶνος καὶ ἡλιοῦσθαι θέρους, καὶ σκιατροφεῖσθαι ἥκιστα. καὶ τὸ μὲν ἑνὶ χρῆσθαι χιτῶνι τοῦ δεῖσθαι δυοῖν προτιμητέον, τοῦ δ' ἑνὶ χρῆσθαι χιτῶνι τὸ μηδενί, ἀλλὰ ἱματίῳ μόνον. καὶ τοῦ γε ὑποδεδέσθαι τὸ ἀνυποδε-

τεῖν τῷ δυναμένῳ κρεῖττον· κινδυνεύει γὰρ τὸ μὲν ὑποδεδέσθαι τῷ δεδέσθαι ἐγγὺς εἶναι, ἡ δ' ἀνυποδησία πολλὴν εὐλυσίαν τινὰ καὶ εὐκολίαν παρέχει τοῖς ποσίν, ὅταν ἠσκημένοι ὦσιν. ὅθεν καὶ τοὺς ἡμεροδρόμους ὁρᾶν ἔστιν οὐ χρωμένους ὑποδήμασιν ἐν ταῖς ὁδοῖς, καὶ τῶν ἀθλούντων τοὺς δρομεῖς, οὐκ ἂν δυναμένους σώζειν τὸ τάχος, εἰ δέοι τρέχειν αὐτοὺς ἐν ὑποδήμασιν.

ἐπεὶ δὲ σκέπης ἕνεκα καὶ τὰς οἰκίας ποιούμεθα, φημὶ καὶ ταύτας δεῖν ποιεῖσθαι πρὸς τὸ τῆς χρείας ἀναγκαῖον, ὡς ἀπερύκειν μὲν κρύος, ἀπερύκειν δὲ θάλπος τὸ σφοδρόν, εἶναι δὲ ἡλίου καὶ ἀνέμων ἐπικούρημα τοῖς δεομένοις. καθόλου δὲ ὅπερ ἂν παρέχοι σπήλαιον αὐτοφυές, ἔχον μετρίαν ὑπόδυσιν ἀνθρώπῳ, τοῦτο χρὴ παρέχειν ἡμῖν τὴν οἰκίαν, τοσοῦτον εἴπερ ἄρα περιττεύουσαν, ὅσον καὶ ἀπόθεσιν τροφῆς ἀνθρωπίνης ἐπιτηδείαν ἔχειν. τί δ' αἱ περίστυλοι αὐλαί; τί δὲ αἱ ποικίλαι χρίσεις; τί δ' αἱ χρυσόροφοι στέγαι; τί δ' αἱ πολυτέλειαι τῶν λίθων, τῶν μὲν χαμαὶ συνηρμοσμένων, τῶν δ' εἰς τοίχους ἐγκειμένων, ἐνίων καὶ πάνυ πόρρωθεν ἠγμένων [λίθων] καὶ δι' ἀναλωμάτων πλείστων; οὐ ταῦτα πάντα περιττὰ καὶ οὐκ ἀναγκαῖα, ὧν χωρὶς καὶ ζῆν καὶ ὑγιαίνειν ἔστι, πραγματείαν δ' ἔχει πλείστην, καὶ διὰ χρημάτων γίνεται πολλῶν, ἀφ' ὧν ἄν τις ἐδυνήθη καὶ δημοσίᾳ καὶ ἰδίᾳ πολλοὺς ἀνθρώπους εὐεργετῆσαι; καίτοι πόσῳ μὲν εὐκλεέστερον τοῦ πολυτελῶς οἰκεῖν τὸ πολλοὺς εὐεργετεῖν; πόσῳ δὲ καλοκαγαθικώτερον τοῦ ἀναλίσκειν εἰς ξύλα καὶ λίθους τὸ εἰς ἀνθρώπους ἀναλίσκειν; πόσῳ δὲ ὠφελιμώτερον τοῦ περιβεβλῆσθαι μεγάλην οἰκίαν τὸ κεκτῆσθαι φίλους πολλούς; ὅπερ γίνεται τῷ προθύμως εὐεργετοῦντι. τί δ' ἂν

ὄναιτό τις τηλικοῦτον ἀπ' οἰκίας μεγέθους τε καὶ κάλλους, ἡλίκον ἀπὸ τοῦ χαρίζεσθαι πόλει καὶ πολίταις ἐκ τῶν ἑαυτοῦ;

85. *Εὐσεβίου.*

Ἐχθρὸς γενοίμην μηδενός, φίλος δὲ τοῦ αἰεὶ καὶ παραμενέοντος· καὶ μήκοτε μὲν διενεχθείην πρὸς τοὺς οἰκειοτάτους, διενεχθεὶς δὲ διαλλαχθείην ὡς τάχιστα. μηδενὶ ἐπιβουλεύσαιμι, ἐπιβουλευόμενος δὲ ἄνευ ἀνάγκης τοῦ τι ἂν δρᾶσαι ἀνήκεστον ἀπαθὴς διαφύγοιμι. ὀργῆς κρατοίην. ἐρῴην [καὶ ἐπιθυμέοιμι] καὶ τυγχάνοιμι μούνων τῶν καλῶν, τῶν δὲ ἀπ' ἐναντίης τῆς ἐπιθυμίης, μηδὲ ἁμαρτών κοτε ὥστε εὔξασθαι, τύχοιμι. βουλοίμην πάντας εὐτυχέειν, φθονήσαιμι μηδενὶ τῶν εὐτυχεόντων. μήκοτέ τις ἐμὲ τῶν νομιζομένων παραλόγως εὖ πρήσσειν ἐκπλήξειε μηδὲ ἀνιήσειε· τί γὰρ δεῖ τοῖς παρὰ τῆς τύχης διδομένοις φθονέειν; φίλοι δέ με καὶ οἱ κατ' ἀξίην εὐτυχέοντες εὐφραίνοιεν. μήκοτε τῷ ἀπὸ οἰκείης γνώμης ἔχθρην κατ' ἐμοῦ ἐπανελομένῳ δυστυχήσαντι ἐπησθείην. μήκοτε συγγνοίην ἐμωυτῷ κακοῦ τευ τινὶ αἰτίην παρασχόντι. λαθών κοτε ἐμωυτὸν ὡς παρὰ μέλος ἤτοι τὶ εἴπας ἢ πράξας, μὴ περιμείναιμι τοὺς μωμησομένους καὶ ἐπιπλήξοντας· αὐτὸς δὲ ἐμωυτὸν μωμησαίμην ἄχρι τοῦ ἀκέσασθαι. εἰδείην γενναίως φέρειν τὰ προσπίπτοντα, καὶ τὰ μέτρια ἐκδεχοίμην ὥσπερ αὐτῶν ἔχει ἡ φύσις, τοῖς δὲ ὑπερβάλλουσι μὴ καὶ τὸ παρ' ἐμωυτοῦ προστιθείην. εὐτυχίην εἰδείην φέρειν σωφρόνως. μήκοτε ὑπὸ εὐπρηγίης ἐς ὑπερηφανίην ἄλογον ἀερθείην. πλοῦτον νομίζοιμι τὸν ἀρκέοντα βίῳ τῷ σώφρονι. ἄπαυστον καὶ ἀκόρεστον ἐπιθυμίην χρημάτων μὲν μήκοτε σχοίην, μούνων δὲ

τῶν ὠφελεόντων τὴν ψυχὴν μαθημάτων ἐθέλοιμι ἃ δεῖ ἔσεσθαι. νικῴην νίκην τὴν καὶ ἐμοὶ καὶ τῷ προσδιαλεγομένῳ ἀβλαβέα. φιλοτιμέεσθαι παρὰ καιρὸν πρὸς φίλους καὶ ἐν ταῖς ζητήσεσι φυλασσοίμην. μήκοτε καὶ παρὰ τὸ ἐμοὶ δοκέον ἐν ταῖς ζητήσεσι τοῦ νικᾶν ἕνεκα ἔριν ἀσπασαίμην. μήκοτε ἐπὶ βλάβῃ τοῦ ἀληθέος καὶ ὥστε παρ' ἃ αὐτὸς οἶδα παραλογίσασθαι τὸν προσδιαλεγόμενον ἐρίσαι ἐπαρθείην. τοῖς τὸ ἀληθὲς λόγοις ξυνιστᾶσιν ἀεὶ ξυμμαχοίμην. ἀκολάστου ἐπιθυμίης τι μήκοτε μηδὲ ἐννοηθείην. ξυνείην ἀεὶ τοῖς σώφροσιν· εἴη τέ μοι ἀεὶ προσδιαλέγεσθαι παρ' ὧν ἔστι τι πάντως ἀπελθεῖν χρηστὸν προσλαβόντι. μήκοτε ἐπαρθείην κέρδεος ἕνεκα πλημμελῆσαι. φίλους διαφερομένους καταρτίζοιμι. φίλοις δυνάμενος καὶ τοῖς δεομένοις τὰ δέοντα ἐπαρκέοιμι. φίλους ἐν κινδύνοις καταστάντας δυνάμενος ὠφελέειν μήκοτε ἐγκαταλείποιμι. φίλων ξυμφορὰς ἀφ' ὧν οἷόν τε ἐπανορθοῦσθαι προθυμοίμην. λυπεομένοισι παρεὼν ἐλαφρύνοιμι ἠπίῳ καὶ ἀκεσίμῳ λόγῳ τὰς ἀνίας. εἰδείην ἐμωυτὸν αἰδέεσθαι. τῶν καλῶν φιλομαθείην ἀσκέοιμι. ζητοίην μὴ τὰ περισσά, ἀλλὰ περὶ ὧν ἄριστον καὶ ἃ μαθὼν ὠφελησοίμην. θεοὺς τιμῴην καὶ νόμῳ πόλιος καὶ σπουδῇ οἰκείῃ νόῳ εὐσεβεῖ. ἀεὶ τὸ ἐν ἐμοὶ θυμούμενον ἡμεροίην. ἐθίζοιμι ἐμωυτὸν ἵλεω εἶναι καὶ μὴ πρὸς τὰ πρήγματα ἔχειν δυσκόλως. τίς πονηρός, καὶ τίνι τούτων τί κοτε πέπρηκται, μὴ μέλοι μοι· εἰδείην δὲ τοὺς ἀγαθούς, καὶ τούτους μεταδιώκοιμι. ὀφείλοιμι μηδενὶ μηδέν· εἰ δέ κοτε ὑπ' ἀνάγκης μεγάλης ἐς τοῦτο κατασταίην, γένοιτό μοι τάχιστα ἐλευθέρῳ γενέσθαι δυνηθῆναι. αἰνέοιμι τοὺς ἀγαθοὺς ἀφθόνως· φιλόψογον δὲ γλῶσσαν παντὸς ἀποστυγοίην. εἰδείην σιγᾶν περὶ ὧν ἄμεινον.

86 *Σωκράτους.*

Οὔτε ναῦν ἐξ ἑνὸς ἀγκυρίου οὔτε βίον ἐκ μιᾶς ἐλπίδος ὁρμιστέον.

87 ***Θεμιστίου ἐκ τοῦ Μετριοπαθοῦς ἢ Φιλοτέκνου*** (359 c. Hard.).

Οὕτω δὲ καὶ τῷ ἀνθρώπῳ ἐγκεχρῶσθαί ἐστιν ἀναγκαῖον ἡδονὴν καὶ λύπην καὶ ξύμπαντα τὰ ἄλλα παθήματα, πλείω δὲ καὶ ἐμμονωτέραν τὴν λύπην. καὶ τοῦτο αὖ πάλιν Αἴσωπος λέγει· τὸν γὰρ πηλὸν αὐτῷ ὁ Προμηθεύς, ἀφ' οὗ τὸν ἄνθρωπον διεπλάσατο, οὐκ ἐφύρασεν ὕδατι, ἀλλὰ δακρύοις. οὐχὶ οὖν ἐκκόπτειν αὐτὰ πειρᾶσθαι χρεών, ἀμήχανον γάρ. ἀλλ' εἴπερ ἄρα εἴη ἐπικόπτειν τε καὶ πραΰνειν, κοιμίζειν τε ἐφ' ὅσον δυνατόν, καὶ νουθετεῖν· ταύτην γὰρ εὐμενῶς προσίεται τὴν ἐπιμέλειαν. καὶ οὕτως σοι αὐτὰ παιδαγωγοῦντι ἀναφανήσεται χρήσιμά τε καὶ ὠφέλιμα ἀντὶ ἀχρήστων καὶ βλαβερῶν. οὐ γὰρ ὁ θεὸς αὐτὰ ἐνεκεράσατο τῷ ἀνθρώπῳ, ὅπως λώβην τε αὐτῷ καὶ αἶσχος προσθείη, ἀλλὰ καὶ ταῦτα πρὸς διαμονὴν καὶ σωτηρίαν τοῦ γένους προσύφηνέ τε καὶ προσῳκοδόμησε τῇ ψυχῇ· θυμὸν μέν, ὅπως ἂν τὰ βλάπτοντα ἀμυνώμεθα· ἐπιθυμίαν δὲ ἐδωδῆς καὶ ποτῶν πρὸς τὴν ξύμφυτον καὶ ἀναγκαίαν ἀπορροήν· καὶ οὕτω δὴ ἄλλο πρὸς ἄλλην τινὰ τεταγμένον τοῦ σώματος κῆρα. μένειν δὲ ἕκαστον χρὴ ἐν τῷ μέτρῳ· καὶ τὸ μέτρον τοῦτο ἑκάστου γίνεται ἀρετή· τοῦ μὲν θυμοειδοῦς ἀνδρία, τοῦ δὲ ἐπιθυμητικοῦ σωφροσύνη, τοῦ δ' αὖ φιλοχρημάτου καὶ φιλοκερδοῦς ἐλευθεριότης τε καὶ μεγαλοπρέπεια· ὅσον δὲ ἐπτόηται περὶ τιμὰς καὶ δυνάμεις καὶ προεδρίας, τούτου ἐστὶ τὸ μέτρον μεγαλοψυχία. εἰ δὲ ἀκόσμητα ἐαθείη καὶ ἀθε-

ράπευτα ὑπὸ τοῦ λόγου, καθάπερ φυτὰ ἥμερα καὶ χρηστά, ἐξαμελήσαντος γεωργοῦ, ἀπαγριοῦται εὐθὺς καὶ ἐξυβρίζει καὶ παραβλαστάνει τὰς κακίας καθάπερ ἀκάνθας χαλεπὰς καὶ φαρμακώδεις τοῖς τε ἄλλοις καὶ μάλιστα τῷ κεκτημένῳ. ἔστι δ' ἐφ' ὧν ἔμπαλιν καταφθίνει καὶ ἀπομαραίνεται εἴσω τῆς ἀκμῆς· καὶ δέονται οὗτοι τοῦ λόγου οὐ κολούοντος καὶ θλίβοντος καὶ πιέζοντος, ἀλλὰ τοῦ ἐπάρδοντός τε καὶ ἐπανάγοντος καὶ ἐρεθίζοντος πρὸς τὴν αὔξην τὴν ἐοικυῖαν. καὶ διὰ τοῦτο ἄρα ἑκάστην ἀρετὴν περικάθηνται ἔνθεν καὶ ἔνθεν δύο κακίαι, ἡ μὲν τὸ ἐνδεὲς τοῦ παθήματος ἀγαπῶσα, ἡ δὲ τὸ πλεονάζον ἀσπαζομένη. δεῖ δ' οὐ πρὸς τὰ φαῦλα καὶ διεστραμμένα ὁρῶντας ἅπαντα ὁμοίως ὑποπτεύειν καὶ ἐξελαύνειν, ἀλλὰ τὸ βούλημα ἐξετάζειν τῆς φύσεως, καὶ πρὸς ὅ τι ἕκαστον τῶν παθημάτων ἐνεφύτευσεν καὶ ἐνεσημήνατο τῇ ψυχῇ.

88 *Πορφυρίου ἐκ τοῦ περὶ τῶν πρὸς τὰ νοητὰ ἀφορμῶν.*

Ἄλλαι αἱ ἀρεταὶ τοῦ πολιτικοῦ, καὶ ἄλλαι αἱ τοῦ πρὸς θεωρίαν ἀνιόντος καὶ διὰ τοῦτο λεγομένου θεωρητικοῦ, καὶ ἄλλαι αἱ τοῦ ἤδη τελείου θεωρητικοῦ καὶ ἤδη θεατοῦ, καὶ ἄλλαι αἱ τοῦ νοῦ, καθὸ νοῦς, καὶ ἀπὸ ψυχῆς καθαροῦ. αἱ μὲν τοῦ πολιτικοῦ ἐν μετριοπαθείᾳ τοῦ ἀλόγου κείμεναι τῷ ἕπεσθαι καὶ ἀκολουθεῖν τῷ λογισμῷ τοῦ καθήκοντος κατὰ τὰς πράξεις. διὸ πρὸς κοινωνίαν βλέπουσαι τὴν ἀβλαβῆ τῶν πλησίον ἐκ τοῦ συναγελασμοῦ καὶ τῆς κοινωνίας πολιτικαὶ λέγονται. καὶ ἔστι φρόνησις μὲν περὶ τὸ λογιζόμενον, ἀνδρία δὲ περὶ τὸ θυμούμενον, σωφροσύνη δ' [ἐν ὁμολογίᾳ καὶ συμφωνίᾳ ἐπιθυμητικοῦ πρὸς λογισμόν, δικαιοσύνη δὲ] ἡ ἑκάστου τούτων ὁμοῦ οἰ-

κειοπραγία, ἀρχῆς πέρι καὶ τοῦ ἄρχεσθαι. αἱ δὲ τοῦ πρὸς θεωρίαν προκόπτοντος θεωρητικοῦ ἐν ἀποστάσει κεῖνται τῶν ἐντεῦθεν· διὸ καὶ καθάρσεις αὗται λέγονται ἐν ἀποχῇ θεωρούμεναι τῶν τοῦ σώματος πράξεων καὶ συμπαθειῶν τῶν πρὸς αὐτό. αὗται μὲν γὰρ τῆς ψυχῆς ἀφισταμένης πρὸς τὸ ὄντως ὄν, αἱ δὲ πολιτικαὶ τὸν θνητὸν ἄνθρωπον κατακοσμοῦσι. καὶ πρόδρομοι δὲ πολιτικαὶ τῶν καθάρσεων· δεῖ γὰρ κοσμηθέντα κατ' αὐτὰς ἀποστῆναι τοῦ σὺν σώματι πράττειν τι προηγουμένως. διὸ ἐν ταῖς καθάρσεσιν τὸ μὲν μὴ συνδοξάζειν τῷ σώματι, ἀλλὰ μόνον ἐνεργεῖν, ὑφίστησι τὸ φρονεῖν, ὃ διὰ τοῦ καθαρῶς νοεῖν τελειοῦται· τὸ δέ γε μὴ ὁμοπαθεῖν συνίστησι τὸ σωφρονεῖν, τὸ δὲ μὴ φοβεῖσθαι ἀφισταμένην τοῦ σώματος ὡς εἰς κενόν τι καὶ μὴ ὂν τὴν ἀνδρίαν. ἡγουμένου δὲ λόγου καὶ νοῦ καὶ μηδενὸς ἀντιτείνοντος, δικαιοσύνη τὸ τοιοῦτον. ἡ μὲν οὖν κατὰ τὰς πολιτικὰς ἀρετὰς διάθεσις ἐν μετριοπαθείᾳ θεωρεῖται, τέλος ἔχουσα τὸ ζῆν ὡς ἄνθρωπον κατὰ φύσιν· ἡ δὲ κατὰ τὰς θεωρητικὰς ἐν ἀπαθείᾳ, ἧς τέλος ἡ πρὸς θεὸν ὁμοίωσις. ἐπεὶ δὲ κάθαρσις ἢ μέν τις ἦν καθαίρουσα ἢ δὲ κεκαθαρμένων, αἱ καθαρτικαὶ ἀρεταὶ κατ' ἄμφω θεωροῦνται τὰ σημαινόμενα τῆς καθάρσεως· καθαίρουσί τε γὰρ τὴν ψυχὴν καὶ καθαρθείσῃ σύνεισι· τέλος γὰρ τὸ κεκαθάρθαι τοῦ καθαίρειν. ἀλλ' ἐπεὶ τὸ καθαίρειν καὶ κεκαθάρθαι ἀφαίρεσις ἦν παντὸς τοῦ ἀλλοτρίου, τὸ ἀγαθὸν ἕτερον ἂν εἴη τοῦ καθαίροντος· ὥστε γε πρὸς τῆς ἀκαθαρσίας ἀρκεῖ· ἀλλ' ἀρκέσει μὲν ἡ κάθαρσις, τὸ δὲ καταλειπόμενον ἔσται τὸ ἀγαθόν, καὶ οὐχ ἡ κάθαρσις. ἀλλὰ ἡ ψυχῆς φύσις οὐκ ἦν ἀγαθόν, ἀλλ' ἀγαθοῦ μετέχειν δυνάμενον καὶ ἀγαθοειδές· οὐ γὰρ ἂν ἐγένετο ἐν κακῷ. τὸ οὖν ἀγαθὸν

αὐτῇ ἐν τῷ συνεῖναι τῷ γεννήσαντι, κακία δὲ τὸ τοῖς ὑστέροις. καὶ διπλῇ γε κακία, τό τε τούτοις συνεῖναι καὶ μετὰ παθῶν ὑπερβολῆς· διόπερ αἱ πολιτικαὶ ἀρεταὶ μιᾶς γοῦν αὐτὴν κακίας ἀπαλλάττουσαι ἀρεταὶ ἐκρίθησαν καὶ τίμιαι, αἱ δὲ καθαρτικαὶ τιμιώτεραι καὶ τῆς ὡς ψυχικῆς κακίας ἀπαλλάττουσαι. δεῖ τοίνυν καθηραμένην αὐτὴν συνεῖναι τῷ γεννήσαντι. καὶ ἀρετὴ ἄρα αὐτῆς μετὰ τὴν ἐπιστροφὴν αὕτη, ἥπερ ἐστὶν ἐν γνώσει καὶ εἰδήσει τοῦ ὄντος· οὐχ ὅτι οὐκ ἔχει παρ' αὐτῇ ταύτην, ἀλλ' ὅτι ἄνευ τοῦ πρὸ αὐτῆς οὐχ ὁρᾷ τὰ αὐτῆς. ἄλλο οὖν γένος τρίτον ἀρετῶν μετὰ τὰς καθαρτικὰς καὶ τὰς πολιτικάς, νοερῶς τῆς ψυχῆς ἐνεργούσης· σοφία μὲν καὶ φρόνησις ἐν θεωρίᾳ ὧν νοῦς ἔχει, δικαιοσύνη δὲ ἐν οἰκειοπραγίᾳ μὲν ἐν τῇ πρὸς τὸν νοῦν ἀκολουθίᾳ καὶ τῷ πρὸς νοῦν ἐνεργεῖν. σωφροσύνη δὲ ἡ εἴσω πρὸς νοῦν στροφή· ἡ δὲ ἀνδρία ἀπάθεια, καθ' ὁμοίωσιν τοῦ πρὸς ὃ βλέπει ἀπαθὲς ὂν τὴν φύσιν. καὶ ἀντακολουθοῦσί γε αὗται ἀλλήλαις ὥσπερ καὶ ἄλλαι. τέταρτον εἶδος ἀρετῶν τὸ τῶν παραδειγματικῶν, αἵπερ ἦσαν ἐν τῷ νῷ κρείττους οὖσαι τῶν ψυχικῶν, καὶ τούτων ὥσπερ παραδείγματα· ἐπιστήμη μὲν ἡ νόησις, σοφία δὲ γιγνώσκων ὁ νοῦς· τὸ δὲ πρὸς αὐτὸν ἡ σωφροσύνη, τὸ δὲ οἰκεῖον ἔργον ἡ οἰκειοπραγία, ἡ δὲ ἀνδρία ἡ ταυτότης καὶ τὸ ἐφ' ἑαυτοῦ μένειν καθαρὸν διὰ δυνάμεως περιουσίαν. τέτταρα τοίνυν ἀρετῶν γένη πέφηνεν· [ὧν] αἱ μὲν ἦσαν αἱ τοῦ νοῦ αἱ παραδειγματικαὶ καὶ σύνδρομοι αὐτοῦ τῇ οὐσίᾳ· αἱ δὲ ψυχῆς πρὸς νοῦν ἐνορώσης ἤδη καὶ πληρουμένης ἀπ' αὐτοῦ· αἱ δὲ ψυχῆς ἀνθρώπου καθαιρομένης τε καὶ καθαρθείσης ἀπὸ σώματος καὶ τῶν ἀλόγων παθῶν· αἱ δὲ ψυχῆς ἀνθρώπου κατακοσμούσης τὸν ἄνθρωπον, διὰ τοῦ τὰ

μέτρα τῇ ἀλογίᾳ ἀφορίζειν καὶ μετριοπάθειαν ἐνεργάζεσθαι. καὶ ὁ μὲν ἔχων τὰς μείζους ἐξ ἀνάγκης ἔχει καὶ τὰς ἐλάττους· οὐ μὴν καὶ ἔμπαλιν. οὐκ ἔτι μέντοι ὁ ἔχων τὰς μείζους ἐνεργήσει καὶ κατὰ τὰς ἐλάττους προηγουμένως, ἀλλὰ μόνον κατὰ περίστασιν τῆς γενέσεως. ἄλλοι γὰρ οἱ σκοποί, ὥσπερ εἴρηται, καὶ κατὰ γένος διάφοροι. τῶν μὲν γὰρ πολιτικῶν μέτρον ἐπιθεῖναι τοῖς πάθεσι πρὸς τὰς ἐν τοῖς κατὰ φύσιν ἐνεργείας· τῶν δὲ καθαρτικῶν, τελέως τῶν παθῶν ἀποστῆσαι, τὸ τέως μέτρον λαμβάνον· τῶν δὲ πρὸς νοῦν ἐνεργῆσαι, μηδὲ τοῦ ἀποστῆσαι ἐκ τῶν παθῶν εἰς ἔννοιαν ἐρχομένους· τῶν δὲ μηδὲ πρὸς νοῦν ἐχουσῶν τὴν ἐνέργειαν, ἀλλὰ τῇ αὐτοῦ οὐσίᾳ εἰς συνδρομὴν ἀφιγμένων. διὸ καὶ ὁ κατὰ μὲν τὰς πρακτικὰς ἐνεργῶν σπουδαῖος ἦν ἄνθρωπος, ὁ δὲ κατὰ τὰς καθαρτικὰς δαιμόνιος ἦν ἄνθρωπος ἢ καὶ δαίμων ἀγαθός, ὁ δὲ κατὰ μόνας τὰς πρὸς τὸν νοῦν θεός, ὁ δὲ κατὰ τὰς παραδειγματικὰς θεῶν πατήρ. ἐπιμελητέον οὖν μάλιστα τῶν καθαρτικῶν ἡμῖν, σκεψαμένοις ὅτι τούτων μὲν ἡ τεῦξις ἐν τῷ βίῳ τούτῳ, διὰ τούτων δὲ καὶ ἡ εἰς τὰς τιμιωτέρας ἄνοδος. διὸ θεωρητέον ἄχρι τίνος καὶ πόσον οἷά τε παραλαμβάνεσθαι ἡ κάθαρσις. ἔστι μὲν γὰρ ἐν ἀποστάσει σώματος καὶ τῆς ἀλόγου παθητικῆς κινήσεως. πῶς δ' ἂν γένοιτο καὶ ἄχρι τίνος, ῥητέον. πρῶτον μὲν οἷον θεμέλιος καὶ ὑποβάθρα τῆς καθάρσεως τὸ γνῶναι ἑαυτὸν ψυχὴν ὄντα ἐν ἀλλοτρίῳ τῷ πράγματι καὶ ἑτερουσίῳ συνδεδεμένον· δεύτερον δὲ τὸ ἀπὸ τούτου ὁρμώμενον τοῦ πείσματος συναγαγεῖν αὐτὸν ἀπὸ τοῦ σώματος (καὶ τοῖς μὲν τόποις) πάντως γε μὴν ἀπαθῶς πρὸς αὐτὸ διατιθέμενον. ἐνεργῶν μὲν γάρ τις συνεχῶς κατ' αἴσθησιν, εἰ καὶ μὴ μετὰ προσπαθείας καὶ τῆς

τοῦ ἥδεσθαι ἀπολαύσεως τοῦτο ποιεῖ, ἀλλ' οὖν ἐσκέδασται περὶ τὸ σῶμα, συναφὴς αὐτῷ κατὰ ταύτην γινόμενος, προσπάσχων δὲ ταῖς τῶν αἰσθημάτων ἡδοναῖς ἢ λύπαις σὺν προθυμίᾳ καὶ ἐπινεύσει συμπαθεῖ· ἀφ' ἧς δὴ μάλιστα διαθέσεως αὐτὸν προσήκει καθαίρειν. τοῦτο δ' ἂν γένοιτο, εἰ καὶ τὰς ἀναγκαίας τῶν ἡδονῶν καὶ τὰς αἰσθήσεις ἰατρείας ἕνεκα μόνον τις παραλαμβάνοι ἢ ἀπαλλαγῆς πόνων, ἵνα μὴ ἐμποδίζοιτο. ἀφαιρετέον δὲ καὶ τὰς ἀλγηδόνας· εἰ δὲ μὴ οἷόν τε εἴη, πράως οἰστέον ἐλάττους τιθέντα τῷ μὴ συμπάσχειν. τὸν δὲ θυμὸν ὡς οἷόν τε ἀφαιρετέον καὶ μελετητέον πάντῃ· εἰ δὲ μή, αὐτῷ γοῦν συναναμιγνύναι τὴν προαίρεσιν, ἀλλ' ἄλλου εἶναι τὸ ἀπροαίρετον· τὸ δ' ἀπροαίρετον ἀσθενὲς καὶ ὀλίγον· τὸν δὲ φόβον πάντῃ, περὶ οὐδενὸς γὰρ φοβήσεται· τὸ δ' ἀπροαίρετον καὶ ἐνταῦθα. χρηστέον δὴ ἄρα καὶ θυμῷ καὶ φόβῳ ἐν νουθετήσει· ἐπιθυμίαν δὲ παντὸς φαύλου ἐξοριστέον· σίτων δὲ καὶ ποτῶν οὐκ αὐτὸς ἕξει ἧπερ αὐτός· ἀφροδισίων τε τῶν φυσικῶν οὐδὲ τὸ ἀπροαίρετον, εἰ δ' ἄρα, ὅσον μέχρι φαντασίας προπετοῦς τῆς κατὰ τοὺς ὕπνους. ὅλως δ' αὐτὴ μὲν πάντων ἡ ψυχὴ νοερὰ τοῦ καθαιρομένου τούτων ἔστω καθαρά. βουλέσθω δὲ καὶ τὸ κινούμενον πρὸς τὸ ἄλογον τῶν σωματικῶν παθῶν ἀσυμπαθῶς κινεῖσθαι καὶ ἀπροσεκτῶς, ὥστε καὶ τὰς κινήσεις εὐθύς τε λύεσθαι τῇ γειτνιάσει τοῦ λογιζομένου.

89 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος* (67 e).

Τῷ ὄντι ἄρα, ἔφη, ὦ Σιμμία, οἱ ὀρθῶς φιλοσοφοῦντες ἀποθνήσκειν μελετῶσι, καὶ τεθνάναι ἥκιστα αὐτοῖς ἀνθρώπων φοβερόν.

90 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κλειτοφῶντος* (408 b).

Τούτοις δὴ τοῖς λόγοις παγκάλως λεγομένοις, ὡς διδακτὸν ἀρετή, καὶ πάντων ἑαυτοῦ δεῖ μάλιστα ἐπιμελεῖσθαι, σχεδὸν οὔτ' ἀντεῖπον πώποτε οὔτ' οἶμαι μή ποτε ὕστερον ἀντείπω.

91 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ Ἐπιταφίου* (240 d).

Ἀλλὰ πᾶν πλῆθος καὶ πᾶς πλοῦτος ἀρετῇ ὑπείκει.

92 *Πλάτωνος Πολιτείας ε΄* (457).

Κάλλιστα γὰρ δὴ τοῦτο καὶ λέγεται καὶ λελέξεται, ὅτι τὸ μὲν ὠφέλιμον καλόν, τὸ δὲ βλαβερὸν αἰσχρόν. παντάπασι μὲν οὖν.

93 *Πλάτωνος ἐν Πολιτείᾳ πέμπτῃ* (452).

Ὅτι μάταιος ὃς γελοῖον ἄλλο τὶ ἡγεῖται ἢ τὸ κακόν· καὶ ὁ γελωτοποιεῖν ἐπιχειρῶν εἰς ἄλλην τινὰ ὄψιν ἀποβλέπων, ὡς γελοίου, ἢ τὴν τοῦ ἄφρονός τε καὶ κακοῦ· καὶ καλοῦ αὖ σπουδάζει εἰς ἄλλον τινὰ σκοπὸν στησάμενος ἢ τὸν τοῦ ἀγαθοῦ.

94 *Πλάτωνος Πολιτείας ε΄* (450 d).

Ἐν γὰρ φρονίμοις τε καὶ φίλοις περὶ τῶν μεγίστων τἀληθῆ εἰδότα λέγειν ἀσφαλὲς καὶ θαρραλέον· ἀπιστοῦντα δὲ καὶ ζητοῦντα ἅμα τοὺς λόγους ποιεῖσθαι, ὃ δὴ ἐγὼ δρῶ, φοβερόν τε καὶ σφαλερὸν οὔ τι γέλωτα ὀφλεῖν.

95 *Πλάτωνος Νόμων ε΄* (727 e).

Οὐδέ γε ὁπότ' ἂν χρήματά τις ἐρᾷ κτᾶσθαι μὴ καλῶς ἢ μὴ δυσχερῶς φέρῃ κτώμενος, δώροις ἄρα τιμᾷ τότε τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν· παντὸς μὲν οὖν λείπει· τὸ γὰρ αὐτῆς τίμιον ἅμα καὶ καλὸν ἀποδίδοται σμικροῦ χρυσίου· πᾶς γὰρ ὅ τ' ἐπὶ γῆς καὶ ὑπὸ γῆς

χρυσὸς ἀρετῆς οὐκ ἀντάξιος. — Τίμιον εἶναι σῶμα οὐ τὸ καλὸν οὐδὲ ἰσχυρὸν οὐδὲ τάχος ἔχον οὐδὲ μέγα οὐδέ γε τὸ ὑγιεινόν, καίτοι πολλοῖς ἂν τοῦτό γε δοκοῖ· καὶ μὴν οὐδὲ τὰ τούτων γε ἐναντία· τὰ δ' ἐν τῷ μέσῳ ἁπάσης ταύτης τῆς ἕξεως ἐφαπτόμενα σωφρονέστατα ἅμα τε καὶ ἀσφαλέστατα εἶναι μακρῷ. τὰ μὲν γὰρ χαύνους τὰς ψυχὰς καὶ θρασείας ποιεῖ, τὰ δὲ ταπεινάς τε καὶ ἀνελευθέρους· ὡς δ' αὕτως ἡ τῶν χρημάτων καὶ κτημάτων κτῆσις καὶ τιμήσεων κατὰ τὸν αὐτὸν ῥυθμὸν ἔχει· τὰ μὲν ὑπέρογκα γὰρ ἑκάστων τούτων ἔχθρας καὶ στάσεις ἀπεργάζεται ταῖς πόλεσι καὶ ἰδίᾳ, τὰ δ' ἐλλείποντα δουλείας ὡς ἐπὶ τὸ πολύ. μὴ δή τις φιλοχρηματείτω παίδων γε ἕνεκα ὅτι πλουσιωτάτους καταλείψει· οὔτε γὰρ ἐκείνοις οὔτε αὐτῇ πόλει ἄμεινον· ἡ γὰρ τῶν νέων ἀκολάκευτος οὐσία, τῶν δὲ ἀναγκαίων μὴ ἐνδεὴς αὐτὴ μουσικωτάτη τε καὶ ἀρίστη· ξυμφωνοῦσα γὰρ ἡμῖν καὶ συναρμόττουσα εἰς ταῦτα, ἄλυπον τὸν βίον ἀπεργάζεται. παισὶ δ' αἰδῶ χρὴ πολλήν, οὐ χρυσὸν καταλείπειν. οἰόμεθα δ' ἐπιπλήττοντες τοῖς νέοις αναισχυντοῦσι τοῦτο καταλείψειν· τὸ δ' ἔστιν οὐκ ἐκ τοῦ νῦν παρακελεύσματος τοῖς νέοις γιγνόμενον, ὃ παρακελεύονται λέγοντες ὡς δεῖ πάντα αἰσχύνεσθαι τὸν νέον. ὁ δὲ ἔμφρων νομοθέτης τοῖς πρεσβυτέροις ἂν μᾶλλον παρακελεύοιτο αἰσχύνεσθαι τοὺς νέους καὶ πάντων μάλιστα εὐλαβεῖσθαι μή ποτέ τις αὐτὸν ἴδῃ τῶν νέων ἢ καὶ ἐπακούσῃ δρῶντα ἢ λέγοντά τι τῶν αἰσχρῶν· ὡς ὅπου ἀναισχυντοῦσι γέροντες, ἀνάγκη καὶ νέους ἐνταῦθα εἶναι ἀναιδεστάτους. παιδεία γὰρ νέων διαφέρουσά ἐστιν ἅμα καὶ αὐτῶν, οὐ τὸ νουθετεῖν, ἀλλ' ἅπερ ἂν ἄλλον νουθετῶν εἴποι τις, φαίνεσθαι ταῦτα αὐτὸν δρῶντα διὰ βίου. —

Ἀλήθεια δὴ πάντων μὲν ἀγαθῶν θεοῖς ἡγεῖται, πάντων δὲ ἀνθρώποις, ἧς ὁ γενήσεσθαι μέλλων μακάριός τε καὶ εὐδαίμων ἐξ ἀρχῆς εὐθὺς μέτοχος εἴη, ἵνα ὡς ὅτι πλεῖστον χρόνον ἀληθὴς ὢν διαβιοῖ· πιστὸς γάρ. ὁ δὲ ἄπιστος, ᾧ φίλον ψεῦδος ἑκούσιον· ὅτῳ δὲ ἀκούσιον, ἄνους· ὧν οὐδέτερον ζηλωτόν. ἄφιλος γὰρ δὴ πᾶς ὅ γε ἄπιστος καὶ ἀμαθής· χρόνου δὲ προϊόντος γνωσθείς, εἰς τὸ χαλεπὸν γῆρας ἐρημίαν αὐτῷ πᾶσαν κατεσκευάσατο ἐπὶ τέλει τοῦ βίου, ὥστε ζώντων καὶ μὴ ἑταίρων καὶ παίδων σχεδὸν ὁμοίως ὀρφανὸν αὐτῷ γενέσθαι τὸν βίον. τίμιος μὲν δὴ καὶ ὁ μηδὲν ἀδικῶν· ὁ δὲ μηδ' ἐπιτρέπων τοῖς ἀδικοῦσιν ἀδικεῖν, πλέον ἢ διπλασίας τιμῆς ἄξιος ἐκείνου. ὁ μὲν γὰρ ἑνός, ὁ δὲ πολλῶν ἀντάξιος ἑτέρων, μηνύων τὴν τῶν ἄλλων τοῖς ἄρχουσιν ἀδικίαν· ὁ δὲ καὶ ξυγκολάζων εἰς δύναμιν τοῖς ἄρχουσιν, ὁ μέγας ἀνὴρ ἐν πόλει καὶ τέλειος, οὗτος ἀναγορευέσθω νικηφόρος ἀρετῇ. τὸν αὐτὸν δὴ τοῦτον ἔπαινον καὶ περὶ σωφροσύνης χρὴ λέγειν καὶ περὶ φρονήσεως καὶ ὅσα ἄλλα τις ἀγαθὰ κέκτηται, δυνατὰ μὴ μόνον αὐτὸν ἔχειν, ἀλλὰ καὶ ἄλλοις μεταδιδόναι. καὶ τὸν μὲν μεταδιδόντα ὡς ἀκρότατον χρὴ τιμᾶν· τὸν δ' αὖ μὴ δυνάμενον, ἐθέλοντα δέ, ἐᾶν δεύτερον· τὸν δὲ φθονοῦντα καὶ ἑκόντα μηδενὶ κοινωνὸν διὰ φιλίας γιγνόμενον ἀγαθῶν τινῶν, αὐτὸν μὲν ψέγειν· τὸ δὲ κτῆμα μηδὲν μᾶλλον διὰ τὸν κεκτημένον ἀτιμάζειν, ἀλλὰ κτᾶσθαι κατὰ δύναμιν. φιλονεικείτω δὲ ἡμῖν πᾶς πρὸς ἀρετὴν ἀφθόνως· ὁ μὲν γὰρ τοιοῦτος τὰς πόλεις αὔξει, ἁμιλλώμενος μὲν αὐτός, τοὺς ἄλλους δὲ οὐ κωλύων διαβολαῖς· ὁ δὲ φθονερός, τῇ τῶν ἄλλων διαβολῇ δεῖν οἰόμενος ὑπερέχειν, αὐτός τε ἧττον ξυντείνει εἰς ἀρετὴν τὴν ἀληθῆ, τούς τε ἀνθαμιλλω-

μένους εἰς ἀθυμίαν καθίστησι τῷ ἀδίκως ψέγεσθαι· καὶ διὰ ταῦτα ἀγύμναστον τὴν πόλιν ὅλην εἰς ἅμιλλαν ἀρετῆς ποιῶν, σμικροτέραν αὐτὴν πρὸς εὐδοξίαν τὸ ἑαυτοῦ μέρος ἀπεργάζεται. θυμοειδῆ μὲν δὴ χρὴ πάντα ἄνδρα εἶναι, πρᾷον δὲ ὡς ὅτι μάλιστα· τὰ γὰρ τῶν ἄλλων χαλεπὰ καὶ δυσίατα, ἢ καὶ τὸ παράπαν ἀνίατα ἀδικήματα, οὐκ ἔστιν ἄλλως ἐκφυγεῖν, ἢ μαχόμενον καὶ ἀμυνόμενον νικῶντα, καὶ τῷ μηδὲν ἀνιέναι κολάζοντα· τοῦτο δὲ ἄνευ θυμοῦ γενναίου ψυχὴ πᾶσα ἀδύνατος δρᾶν. τὰ δ' αὐτῶν, ὅσοι ἀδικοῦσι μέν, ἰατὰ δέ, γινώσκειν χρή, πρῶτον μέν, ὅτι πᾶς ὁ ἄδικος οὐχ ἑκὼν ἄδικος· τῶν γὰρ μεγίστων κακῶν οὐδεὶς οὐδαμῶς οὐδὲν ἑκὼν κέκτητο ἄν ποτε, πολὺ δὲ ἥκιστα ἐν τοῖς αὐτοῦ τιμιωτάτοις· ψυχὴ δ', ὡς εἴπομεν, ἀληθείᾳ γ' ἐστὶ πᾶσι τιμιώτατον· ἐν οὖν τῷ τιμιωτάτῳ τὸ μέγιστον κακὸν οὐδεὶς ἑκὼν μή ποτε λάβῃ, καὶ ζῇ διὰ βίου κεκτημένος αὐτό· ἀλλὰ ἐλεεινὸς μὲν πάντως ὅ γε ἄδικος, καὶ ὁ κακὰ ἔχων· ἐλεεῖν δὲ τὸν μὲν ἰάσιμα ἔχοντα ἐγχωρεῖ, καὶ ἀνείργοντα τὸν θυμὸν πραΰνειν καὶ μὴ ἀκροχολοῦντα γυναικείως πικραινόμενον διατελεῖν· τῷ δὲ ἀκράτως καὶ ἀπαραμυθήτως πλημμελεῖ καὶ κακῷ ἐφιέναι δεῖ τὴν ὀργήν. διὸ δὴ θυμοειδῆ πρέπειν καὶ πρᾷον ἑκάστοτε φαμὲν εἶναι δεῖν τὸν ἀγαθόν. πάντων δὲ μέγιστον κακὸν ἀνθρώποις τοῖς πολλοῖς ἔμφυτον ἐν ταῖς ψυχαῖς ἐστίν, οὗ πᾶς αὑτῷ συγγνώμην ἔχων, ἀποφυγὴν οὐδεμίαν μηχανᾶται. τοῦτο δ' ἐστὶν ὃ λέγουσιν, ὡς φίλος αὑτῷ πᾶς ἄνθρωπος φύσει τέ ἐστι, καὶ ὀρθῶς ἔχει τὸ δεῖν εἶναι τοιοῦτον· τὸ δὲ ἀληθείᾳ γε πάντων ἁμαρτημάτων διὰ τὴν σφόδρα ἑαυτοῦ φιλίαν αἴτιον ἑκάστῳ γίνεται ἑκάστοτε. τυφλοῦται γὰρ περὶ τὸ φιλούμενον ὁ φιλῶν, ὥστε τὰ δίκαια καὶ τὰ ἀγαθὰ

καὶ τὰ καλὰ κακῶς κρίνει, τὸ αὑτοῦ πρὸ τοῦ ἀληθοῦς ἀεὶ τιμᾶν δεῖν ἡγούμενος. οὔτε γὰρ ἑαυτόν, οὔτε τὰ ἑαυτοῦ χρὴ τόν γε μέγαν ἄνδρα ἐσόμενον στέργειν· ἀλλὰ τὰ δίκαια, ἐάν τε παρ' αὑτῷ ἐάν τε παρ' ἄλλῳ μᾶλλον πραττόμενα τυγχάνῃ. ἐκ ταυτοῦ δ' ἁμαρτήματος τούτου καὶ τὸ τὴν ἀμαθίαν τὴν παρ' αὑτῷ δοκεῖν σοφίαν εἶναι γεγονέναι πᾶσιν· ὅθεν οὐκ εἰδότες, ὡς ἔπος εἰπεῖν, οὐδέν, οἰόμεθα τὰ πάντα εἰδέναι· οὐκ ἐπιτρέποντες δὲ ἀλλήλοις ἃ μὴ ἐπιστάμεθα πράττειν, ἀναγκαζόμεθα ἁμαρτάνειν αὐτὸν πράττοντα. διὸ πάντα ἄνθρωπον χρὴ φεύγειν τὸ σφόδρα φιλεῖν αὑτόν, τὸ δ' αὑτοῦ βέλτιον διώκειν ἀεί, μὴ δὲ μίαν αἰσχύνην ἐπὶ τῷ τοιούτῳ προσποιούμενον.

96 Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ζ (808 b).

Ὕπνος γὰρ δὴ πολὺς οὔτε τοῖς σώμασιν οὔτε ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν οὔτ' αὖ ταῖς πράξεσι ταῖς περὶ ταῦτα πάντα ἁρμόττων ἐστὶ κατὰ φύσιν. καθεύδων γὰρ οὐδεὶς οὐδενὸς ἄξιος, οὐδὲν μᾶλλον τοῦ μὴ ζῶντος· ἀλλ' ὅστις τοῦ ζῆν ἡμῶν καὶ τοῦ φρονεῖν μάλιστά ἐστι κηδεμών, ἐγρήγορε χρόνον ὡς πλεῖστον, τὸ πρὸς ὑγίειαν αὐτοῦ μόνον φυλάττων χρήσιμον. ἔστι δ' οὐ πολύ, καλῶς εἰς ἔθος ἰόν. ἐγρηγορότες δὲ ἄρχοντες ἐν πόλεσι νύκτωρ, φοβεροὶ μὲν κακοῖς πολεμίοις τε ἅμα καὶ πολίταις, ἀγαστοὶ δὲ καὶ τίμιοι τοῖς δικαίοις τε καὶ σώφροσιν, ὠφέλιμοι δὲ αὑτοῖς τε καὶ ξυμπάσῃ τῇ πόλει.

97 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ περὶ ἀρετῆς (379 b).

Πῶς οὖν ἄν, ὦ Σώκρατές, σοι δοκοῦσι γίγνεσθαι, εἰ μήτε φύσει μήτε μαθήσει γίγνονται· τίν' ἄλλον τρόπον γίγνοιντ' ἂν οἱ ἀγαθοί; οἶμαι μὲν οὐκ ἂν ῥᾳδίως αὐτὸ δηλωθῆναι· τοπάζω μέντοι θεῖόν τι

μάλιστα εἶναι τὸ κτῆμα, καὶ γίγνεσθαι τοὺς ἀγαθοὺς ὥσπερ οἱ θεῖοι τῶν μάντεων καὶ οἱ χρησμολόγοι. οὗτοι γὰρ οὔτε φύσει τοιοῦτοι γίγνονται οὔτε τέχνῃ, ἀλλ' ἐπίπνοι ἐκ τῶν θεῶν γιγνόμενοι τοιοῦτοί εἰσιν· οὕτω δὲ καὶ οἱ ἄνδρες οἱ ἀγαθοὶ λέγουσι ταῖς πόλεσιν ἑκάστοτε τὰ ἀποβησόμενα καὶ τὰ μέλλοντα ἔσεσθαι ἐκ θεοῦ ἐπιπνοίας πολὺ μᾶλλον καὶ ἐναργέστερον ἢ οἱ χρησμῳδοί. λέγουσι γάρ που καὶ αἱ γυναῖκες, ὅτι θεῖος ἀνὴρ οὗτός ἐστι, καὶ Λακεδαιμόνιοι ὅταν τινὰ μεγαλοπρεπῶς ἐπαινῶσι, θεῖον ἄνδρα φασὶν εἶναι· πολλαχοῦ δὲ καὶ Ὅμηρος τῷ αὐτῷ τούτῳ καταχρῆται καὶ οἱ ἄλλοι ποιηταί. καὶ ὅταν βούληται θεὸς εὖ πρᾶξαι πόλιν, ἄνδρας ἀγαθοὺς ἐνεποίησεν· ὅταν δὲ μέλλῃ κακῶς πράξειν πόλις, ἐξεῖλε τοὺς ἄνδρας τοὺς ἀγαθοὺς ἐκ ταύτης τῆς πόλεως ὁ θεός. οὕτως ἔοικεν οὔτε διδακτὸν εἶναι οὔτε φύσει ἀρετή, ἀλλὰ θείᾳ μοίρᾳ παραγίνεται κτωμένοις.

99 *Ξενοφῶντος ἐν β' (6, 39) ἀπομνημονευμάτων.*

Ὅσαι δὲ ἐν ἀνθρώποις ἀρεταὶ λέγονται, σκοπού-

---

98 *Περὶ τῆς ἀρετῆς βουλευόμεθα καὶ διαποροῦμεν, εἰ διδακτόν ἐστι τὸ φρονεῖν, τὸ δικαιοπραγεῖν, τὸ εὖ ζῆν, εἶτα θαυμάζομεν εἰ ῥητόρων μὲν ἔργα καὶ κυβερνητῶν καὶ οἰκοδόμων καὶ γεωργῶν μυρία γ' ἐστίν, ἀγαθοὶ δ' ἄνδρες ὀνομάζονται καὶ λέγονται μόνον, ὡς ἱπποκένταυροι καὶ γίγαντες καὶ κύκλωπες· ἔργον δ' ἀμεμφὲς εἰς ἀρετὴν καὶ ἀκέραιον οὐκ ἔστιν εὑρεῖν οὐδὲ πάθους ἀκέραιον ἦθος καὶ ἄθικτον. ἀλλ' εἰ καί τι καλὸν ἡ φύσις αὐτομάτως ἐκφέρει, τοῦτο πολλῷ τῷ ἀλλοτρίῳ, καθάπερ ὕλῃ καρπὸς ἀγρίᾳ καὶ ἀκαθάρτῳ μιγνύμενος, ἐξαμαυροῦται. ψάλλειν μανθάνουσιν ἄνθρωποι καὶ ὀρχεῖσθαι καὶ ἀναγινώσκειν γράμματα καὶ γεωργεῖν καὶ ἱππεύειν· ὑποδεῖσθαι μανθάνουσι, περιβάλλεσθαι, οἰνοχοεῖν διδάσκουσιν, ὀψοποιεῖν· ταῦτα ἄνευ τοῦ μαθεῖν οὐκ ἔστι χρησίμως ποιεῖν.* Plut. Mor. 439 a.

μενος εὑρήσεις πάσας μαθήσει τε καὶ μελέτῃ αὐξανομένας.

100 Ξενοφῶντος ἐν α′ (6, 13) ἀπομνημονευμάτων.

Ὁ δὲ Σωκράτης πρὸς ταῦτα εἶπεν· Ὦ Ἀντιφῶν, παρ' ἡμῖν νομίζεται τὴν ὥραν καὶ τὴν σοφίαν ὁμοίως μὲν καλόν, ὁμοίως δὲ αἰσχρὸν διατίθεσθαι εἶναι. τήν τε γὰρ ὥραν ἐὰν μέν τις ἀργυρίου πωλῇ τῷ βουλομένῳ, πόρνον αὐτὸν ἀποκαλοῦσιν· ἐὰν δέ τις ὃν ἂν γνῷ καλόν τε κἀγαθὸν ἐραστὴν ὄντα, τοῦτον φίλον ἑαυτῷ ποιῆται, σώφρονα νομίζομεν· καὶ τὴν σοφίαν ὡσαύτως τοὺς μὲν ἀργυρίου τῷ βουλομένῳ πωλοῦντας σοφιστάς, ὥσπερ πόρνους, ἀποκαλοῦσιν· ὅστις δὲ ὃν ἂν γνῷ εὐφυῆ ὄντα, διδάσκων ὅ τι ἂν ἔχῃ ἀγαθόν, φίλον ποιεῖται, τοῦτον νομίζομεν, ἃ τῷ καλῷ κἀγαθῷ πολίτῃ προσήκει, ταῦτα ποιεῖν. ἐγὼ δ' οὖν καὶ αὐτός, ὦ Ἀντιφῶν, ὥσπερ ἄλλος τις ἢ ἵππῳ ἀγαθῷ ἢ κυνὶ ἢ ὄρνιθι ἥδεται, οὕτω καὶ ἔτι μᾶλλον ἥδομαι φίλοις ἀγαθοῖς· καὶ ἐάν τι σχῶ ἀγαθόν, διδάσκω καὶ ἄλλοις συνίστημι, παρ' ὧν ἂν ἡγῶμαι ὠφελήσεσθαί τι αὐτοὺς εἰς ἀρετήν. καὶ τοὺς θησαυροὺς τῶν πάλαι σοφῶν ἀνδρῶν, οὓς ἐκεῖνοι κατέλιπον ἐν βιβλίοις γράψαντες, ἀνελίττων κοινῇ σὺν τοῖς φίλοις διέρχομαι· καὶ ἄν τι ὁρῶμεν ἀγαθόν, ἐκλεγόμεθα· καὶ μέγα νομίζομεν κέρδος, ἐὰν ἀλλήλοις φίλοι γινώμεθα. ἐμοὶ μὲν δὴ ταῦτα ἀκούοντι ἐδόκει αὐτός τε μακάριος εἶναι καὶ τοὺς ἀκούοντας ἐπὶ καλοκαγαθίαν ἄγειν. καὶ πάλιν ποτὲ τοῦ Ἀντιφῶντος ἐρομένου αὐτόν, πῶς ἄλλους μὲν ἡγοῖτο πολιτικοὺς ποιεῖν, αὐτὸς δὲ οὐ πράττοι τὰ πολιτικά, εἴπερ ἐπίσταιτο; ποτέρως δ' ἄν, ἔφη, ὦ Ἀντιφῶν, μᾶλλον τὰ πολιτικὰ

πράττοιμι, εἰ μόνος αὐτὰ πράττοιμι, ἢ εἰ ἐπιμελοίμην τοῦ ὡς πλείστους ἱκανοὺς εἶναι πράττειν αὐτά;

101 *Τοῦ αὐτοῦ ἐν τῷ δευτέρῳ* (1, 18) *ἀπομνημονευμάτων.*

Ἔπειτα ὁ μὲν ἑκουσίως ταλαιπωρῶν ἐπ' ἀγαθῇ ἐλπίδι πονῶν εὐφραίνεται, οἷον οἱ τὰ θηρία θηρῶντες ἐλπίδι τοῦ λήψεσθαι ἡδέως μοχθοῦσι. καὶ τὰ μὲν τοιαῦτα ἆθλα τῶν πόνων μικροῦ τινος ἄξιά ἐστι· τοὺς δὲ πονοῦντας, ἵνα φίλους ἀγαθοὺς κτήσωνται ἢ ὅπως ἐχθροὺς χειρώσωνται ἢ ἵνα δυνατοὶ γενόμενοι καὶ τοῖς σώμασι καὶ ταῖς ψυχαῖς, καὶ τὸν ἑαυτῶν οἶκον καλῶς οἰκῶσι καὶ τοὺς φίλους εὖ ποιῶσι καὶ τὴν πατρίδα εὐεργετῶσι, πῶς οὐκ οἴεσθαι χρὴ τούτους καὶ πονεῖν ἡδέως εἰς τὰ τοιαῦτα καὶ ζῆν εὐφραινομένους, ἀγασαμένους μὲν ἑαυτούς, ἐπαινουμένους δὲ καὶ ζηλουμένους ὑπὸ τῶν ἄλλων; ἔτι δὲ αἱ μὲν ῥᾳδιουργίαι καὶ ἐκ τοῦ παραχρῆμα ἡδοναὶ οὔτε σώματι εὐεξίαν ἱκαναί εἰσιν ἐργάζεσθαι, ὥς φασιν οἱ γυμνασταί, οὔτε ψυχῇ ἐπιστήμην ἀξιόλογον οὐδεμίαν ἐμποιοῦσιν· αἱ δὲ διὰ καρτερίας ἐπιμέλειαι τῶν καλῶν τε κἀγαθῶν ἔργων ἐξικνεῖσθαι ποιοῦσιν, ὥς φασὶν οἱ ἀγαθοὶ ἄνδρες. λέγει δέ που καὶ Ἡσίοδος,

Τὴν μὲν γὰρ κακότητα καὶ ἰλαδόν ἐστιν ἑλέσθαι
ῥηϊδίως, λείη μὲν ὁδός, μάλα δ' ἐγγύθι ναίει.
τῆς δ' ἀρετῆς ἱδρῶτα θεοὶ προπάροιθεν ἔθηκαν
ἀθάνατοι· μακρὸς δὲ καὶ ὄρθιος οἶμος ἐς αὐτήν
καὶ τρηχὺς τὸ πρῶτον· ἐπὴν δ' εἰς ἄκρον ἵκηαι,
ῥηϊδίη δ' ἤπειτα πέλει χαλεπή περ ἐοῦσα.

μαρτυρεῖ δὲ καὶ Ἐπίχαρμος ἐν τῷδε·

Τῶν πόνων πωλοῦσιν ἡμῖν πάντα τἀγάθ' οἱ θεοί.

καὶ ἐν ἄλλῳ δὲ τόπῳ φησίν,

Ὦ πονηρὲ μὴ τὰ μαλακὰ μῶσο μὴ τὰ σκλήρ' ἔχῃς.

καὶ Πρόδικος δ' ὁ σοφὸς ἐν τῷ συγγράμματι τῷ περὶ τοῦ Ἡρακλέους, ὅπερ δὴ καὶ πλείστοις ἐπιδείκνυται, ὡσαύτως περὶ τῆς ἀρετῆς ἀποφαίνεται, ὧδέ πως λέγων, ὅσα ἐγὼ μέμνημαι. φησὶ γὰρ Ἡρακλέα ἐπεὶ ἐκ παίδων εἰς ἥβην ὡρμᾶτο (ἐν ᾗ οἱ νέοι ἤδη αὐτοκράτορες γιγνόμενοι δηλοῦσιν εἴτε τὴν δι' ἀρετῆς ὁδὸν τρέψονται ἐπὶ τὸν βίον, εἴτε τὴν διὰ κακίας) ἐξελθόντα εἰς ἡσυχίαν καθῆσθαι, ἀποροῦντα ὁποτέραν τῶν ὁδῶν τράπηται· καὶ φανῆναι αὐτῷ δύο γυναῖκας προσιέναι μεγάλας· τὴν μὲν ἑτέραν εὐπρεπῆ ἰδεῖν καὶ ἐλευθερίαν φύσει, κεκοσμημένην τὸ μὲν σῶμα καθαριότητι, τὰ δὲ ὄμματα αἰδοῖ, τὸ δὲ σχῆμα σωφροσύνῃ· τὴν δὲ ἑτέραν τεθραμμένην εἰς πολυσαρκίαν τε καὶ ἁπαλότητα, κεκαλλωπισμένην τὸ μὲν χρῶμα, ὥστε λευκοτέραν καὶ ἐρυθροτέραν τοῦ ὄντος δοκεῖν φαίνεσθαι, τὸ δὲ σχῆμα, ὥστε δοκεῖν ὀρθοτέραν τῆς φύσεως εἶναι, τὰ δὲ ὄμματα ἔχειν ἀναπεπταμένα, ἐσθῆτα δὲ ἐξ ἧς μάλιστα ἡ ὥρα διαλάμποι· κατασκοπεῖσθαι δὲ θαμὰ ἑαυτήν, ἐπισκοπεῖν δὲ καὶ εἴ τις ἄλλος αὐτὴν θεᾶται, πολλάκις δὲ καὶ εἰς τὴν αὑτῆς σκιὰν ἀποβλέπειν. ὡς δὲ ἐγένοντο πλησιαίτερον τοῦ Ἡρακλέους, τὴν μὲν πρόσθεν ῥηθεῖσαν ἰέναι τὸν αὐτὸν τρόπον, τὴν δὲ ἑτέραν φθάσαι βουλομένην προσδραμεῖν τῷ Ἡρακλεῖ καὶ εἰπεῖν, ὁρῶ σε, ὦ Ἡράκλεις, ἀποροῦντα ποίαν ὁδὸν ἐπὶ τὸν βίον τραπῇς· ἐὰν ἐμὲ φίλην ποιησάμενος ἐπί θ' ἡδίστην καὶ ῥᾴστην ὁδὸν ἄξω σε· καὶ τῶν μὲν τερπνῶν οὐδενὸς ἄγευστος ἔσῃ, τῶν δὲ χαλεπῶν ἄπειρος διαβιώσῃ. πρῶτον μὲν γὰρ οὐ πολέμων οὐδὲ πραγμάτων φροντιεῖς, ἀλλὰ σκοπούμενος διέσῃ τι ἂν κεχαρισμένον ἢ σῖτον ἢ ποτὸν εὕροις, ἢ τι ἂν ἰδὼν ἢ ἀκούσας τερφθήσῃ, τινῶν

ὀσφραινόμενος ἢ ἁπτόμενος, τί δὲ παιδικοῖς ὁμιλῶν μάλιστα εὐφρανθείης, καὶ πῶς ἂν μαλακώτατα καθεύδοις, καὶ πῶς ἂν ἀπονώτατα τούτων πάντων τυγχάνοις. ἐὰν δέ ποτε γένηταί τις ὑποψία σπανίως ἀφ' ὧν ἔσται ταῦτα, οὐ φόβος μή σε ἀγάγω ἐπὶ τὸν πονοῦντα καὶ ταλαιπωροῦντα τῷ σώματι καὶ τῇ ψυχῇ ταῦτα πορίζεσθαι· ἀλλ' οἷς ἂν οἱ ἄλλοι ἐργάζωνται, τούτοις σὺ χρήσῃ, οὐδενὸς ἀπεχόμενος ὅθεν ἂν δυνατὸν ᾖ τι κερδᾶναι· πανταχόθεν γὰρ ὠφελεῖσθαι τοῖς ἐμοὶ συνοῦσι ἐξουσίαν ἐγὼ παρέχω. καὶ ὁ Ἡρακλῆς ἀκούσας ταῦτα, ἔφη, Ὦ γύναι, ὄνομα δέ σοι τί ἐστι; ἡ δέ, Οἱ μὲν ἐμοὶ φίλοι καλοῦσί με Εὐδαιμονίαν, οἱ δὲ μισοῦντές με ὑποκοριζόμενοι ὀνομάζουσι Κακίαν. καὶ ἐν τούτῳ ἡ ἑτέρα γυνὴ προσελθοῦσα εἶπεν· Καὶ ἐγὼ ἥκω πρός σε, ὦ Ἡράκλεις, εἰδυῖα τοὺς γεννήσαντάς σε καὶ τὴν φύσιν τὴν σὴν ἐν τῇ παιδείᾳ καταμαθοῦσα· ἐξ ὧν ἐλπίζω, εἰ τὴν πρὸς ἐμὲ ὁδὸν τράποιο, σφόδρα ἄν σε τῶν καλῶν καὶ σεμνῶν ἀγαθὸν ἐργάτην γενέσθαι, καὶ ἐμὲ ἔτι πολὺ ἐντιμοτέραν καὶ ἐπ' ἀγαθοῖς διαπρεπεστέραν φανῆναι. οὐκ ἀπατήσω δέ σε προοιμίοις ἡδονῆς, ἀλλ' ᾗπερ οἱ θεοὶ διέθεσαν, τὰ ὄντα διηγήσομαι μετὰ ἀληθείας. τῶν γὰρ ὄντων ἀγαθῶν καὶ καλῶν οὐδὲν ἄνευ πόνου καὶ ἐπιμελείας οἱ θεοὶ διδόασιν ἀνθρώποις· ἀλλ' εἴτε τοὺς θεοὺς ἵλεω εἶναι σοι βούλει, θεραπευτέον τοὺς θεούς· εἴτε ὑπὸ φίλων ἐθέλεις ἀγαπᾶσθαι, τοὺς φίλους εὐεργετητέον· εἴτε ὑπό τινος πόλεως ἐπιθυμεῖς τιμᾶσθαι, τὴν πόλιν ὠφελητέον· εἴτε ὑπὸ τῆς Ἑλλάδος πάσης ἄξιος ἐπ' ἀρετῇ θαυμάζεσθαι, τὴν Ἑλλάδα πειρατέον εὖ ποιεῖν· εἴτε γῆν βούλει σοι καρποὺς ἀφθόνους φέρειν, τὴν γῆν θεραπευτέον· εἴτε ἀπὸ βοσκημάτων οἴει δεῖν πλουτίζεσθαι, τῶν βοσκημάτων ἐπιμελητέον·

εἴτε διὰ πολέμου ὁρμᾷς αὔξεσθαι καὶ βούλει δύνασθαι τούς τε φίλους ἐλευθεροῦν καὶ τοὺς ἐχθροὺς χειροῦσθαι, τὰς πολεμικὰς τέχνας τάς τε παρὰ τῶν ἐπισταμένων μαθητέον καὶ ὅπως δεῖ αὐταῖς χρῆσθαι ἀσκητέον· εἰ δὲ τῷ σώματι βούλει δυνατὸς εἶναι, τῇ γνώμῃ ὑπηρετεῖν ἐθιστέον τὸ σῶμα καὶ γυμναστέον σὺν πόνοις καὶ ἱδρῶτι. καὶ ἡ Κακία ὑπολαβοῦσα εἶπεν, ὥς φησι Πρόδικος, Ἐννοεῖς, ὦ Ἡράκλεις, ὡς χαλεπὴν καὶ μακρὴν ὁδὸν ἐπὶ τὰς εὐφροσύνας ἡ γυνή σοι διηγεῖται· ἐγὼ δὲ ῥᾳδίαν καὶ βραχεῖαν ὁδὸν ἐπὶ τὴν εὐδαιμονίαν ἄξω σε. καὶ ἡ Ἀρετὴ εἶπεν, Ὦ τλῆμον, τί δὲ σὺ ἀγαθὸν ἔχεις, ἢ τί ἡδύ; οἶσθα μηδὲν τούτων ἕνεκα πράττειν ἐθέλουσα, ἥ τις οὐδὲ τὴν τῶν ἡδέων ἐπιθυμίαν ἀναμένεις, ἀλλὰ πρὶν ἐπιθυμῆσαι πάντων ἐμπίπλασαι· πρὶν μὲν πεινῆν ἐσθίουσα, πρὶν δὲ διψῆν πίνουσα· ἵνα μὲν ἡδέως φάγῃς ὀψοποιοὺς μηχανωμένη, ἵνα δὲ ἡδέως πίῃς οἴνους τε πολυτελεῖς παρασκευάζει, καὶ τοῦ θέρους χιόνα περιθέουσα ζητεῖς· ἵνα δὲ καθυπνώσῃς ἡδέως, οὐ μόνον τὰς στρωμνὰς μαλακάς, ἀλλὰ καὶ τὰς κλίνας καὶ τὰ ὑπόβαθρα ταῖς κλίναις παρασκευάζεις· οὐ γὰρ διὰ τὸ πονεῖν, ἀλλὰ διὰ τὸ μηδὲν ἔχειν ὅ τι ποιήσεις, ὕπνου ἐπιθυμεῖς· τὰ δὲ ἀφροδίσια πρὸ τοῦ δεῖσθαι ἀναγκάζεις πάντα μηχανωμένη, καὶ γυναιξὶ τοῖς ἀνδράσι χρωμένη· οὕτως γὰρ παιδεύεις τοὺς ἑαυτῆς φίλους, τῆς μὲν νυκτὸς ὑβρίζουσα, τῆς δὲ ἡμέρας τὸ χρησιμώτατον κατακοιμίζουσα· ἀθάνατος δὲ οὖσα ἐκ θεῶν μὲν ἀπέρριψαι, ὑπὸ δὲ ἀνθρώπων ἀγαθῶν ἀτιμάζῃ· τοῦ δὲ πάντων ἡδίστου ἀκούσματος, ἐπαίνου σαυτῆς, ἀνήκοος εἶ, καὶ τοῦ πάντων ἡδίστου θεάματος· οὐδέποτε γὰρ σεαυτῆς ἔργον καλὸν τεθέασαι. τίς δ' ἄν σοι λεγούσῃ πιστεύσειε; τίς δ' ἂν δεομένῃ τινὸς ἐπαρ-

κέσειε; ἢ τίς ἂν εὖ φρονῶν τοῦ σοῦ θιάσου τολμήσειεν εἶναι; οἱ νέοι μὲν ὄντες τοῖς σώμασιν ἀδύνατοί εἰσι, πρεσβύτεροι δὲ γενόμενοι ταῖς ψυχαῖς ἀνόητοι· ἀπόνως μὲν λιπαροὶ διὰ νεότητος τρεφόμενοι, ἐπιπόνως δὲ αὐχμηροὶ διὰ γήρως περῶντες· τοῖς μὲν πεπραγμένοις αἰσχυνόμενοι, τοῖς δὲ πραττομένοις παροινούμενοι, τὰ μὲν ἡδέα ἐν τῇ νεότητι διαδραμόντες, τὰ δὲ χαλεπὰ εἰς τὸ γῆρας ἀποθέμενοι. ἐγὼ δὲ σύνειμι μὲν θεοῖς, σύνειμι δὲ ἀνθρώποις τοῖς ἀγαθοῖς· ἔργον δὲ καλὸν οὔτε θεῖον οὔτε ἀνθρώπινον χωρὶς ἐμοῦ γίγνεται· τιμῶμαι δὲ μάλιστα πάντων καὶ παρὰ θεοῖς καὶ παρ' ἀνθρώποις οἷς προσήκει· ἀγαπητὴ μὲν γὰρ συνεργὸς τεχνίταις, πιστὴ δὲ φύλαξ οἴκων δεσπόταις, εὐμενὴς δὲ παραστάτης οἰκέταις, ἀγαθὴ δὲ συλλήπτειρα τῶν ἐν εἰρήνῃ πόνων, βεβαία δὲ τῶν ἐν πολέμῳ σύμμαχος ἔργων. ἔστι δὲ τοῖς ἐμοῖς φίλοις ἡδεῖα μὲν καὶ ἀπράγμων σίτων καὶ ποτῶν ἀπόλαυσις, ἀνέχονται γὰρ ἕως ἂν ἐπιθυμήσωσιν αὐτῶν, ὕπνος δὲ αὐτοῖς πάρεστιν ἡδίων ἢ τοῖς ἀμόχθοις, καὶ οὔτε ἀπολιπόντες αὐτὸν ἄχθονται οὔτε διὰ τοῦτον μεθιᾶσι τὰ δέοντα πράττειν. καὶ οἱ μὲν νέοι τοῖς τῶν πρεσβυτέρων ἐπαίνοις χαίρουσιν, οἱ δὲ γεραίτεροι ταῖς τῶν νέων τιμαῖς ἀγάλλονται· καὶ ἡδέως μὲν τῶν παλαιῶν πράξεων μέμνηνται, εὖ δὲ τὰς παρούσας ἥδονται πράττοντες, δι' ἐμὲ φίλοι μὲν θεοῖς ὄντες, ἀγαπητοὶ δὲ φίλοις, τίμιοι δὲ πατρίσιν· ὅταν δὲ ἔλθῃ τὸ πεπρωμένον τέλος, οὐ μετὰ λήθης ἄτιμοι κεῖνται, ἀλλὰ μετὰ μνήμης τὸν ἀεὶ χρόνον ὑμνούμενοι θάλλουσι. τοιαῦτά σοι, ὦ παῖ πατέρων ἀγαθῶν Ἡράκλεις, ἔξεστι διαπονησαμένῳ τὴν μακαρίαν εὐδαιμονίαν κτήσασθαι. Οὕτω πως διοικεῖ Πρόδικος τὴν ὑπ' ἀρετῆς Ἡρακλέους παίδευσιν.

102 Ξενοφῶντος ἀπομνημονευμάτων γ′ (9, 14).

Ἐρομένου δέ τινος αὐτὸν τί δοκοίη αὐτῷ κράτιστον ἀνδρὶ ἐπιτήδευμα εἶναι, ἀπεκρίνατο εὐπραξίαν. ἐρομένου δὲ πάλιν εἰ καὶ τὴν εὐτυχίαν ἐπιτήδευμα νομίζοι εἶναι, Πᾶν μὲν οὖν τοὐναντίον ἔγωγε, ἔφη, τύχην καὶ πρᾶξιν ἡγοῦμαι· τὸ μὲν γὰρ μὴ ζητοῦντα ἐπιτυχεῖν τινὶ τῶν δεόντων, εὐτυχίαν οἴομαι εἶναι· τὸ δὲ μαθόντα τι καὶ μελετήσαντα εὖ ποιεῖν, εὐπραξίαν νομίζω· καὶ οἱ τοῦτο ἐπιτηδεύοντες δοκοῦσί μοι εὖ πράττειν. καὶ ἀρίστους δὲ καὶ θεοφιλεστάτους ἔφη εἶναι ἐν μὲν γεωργίᾳ τοὺς τὰ γεωργικὰ εὖ πράττοντας, ἐν δ᾽ ἰατρείᾳ τοὺς τὰ ἰατρικά, ἐν δὲ πολιτείᾳ τοὺς τὰ πολιτικά· τὸν δὲ μηδὲν εὖ πράττοντα, οὔτε χρήσιμον οὐδὲν ἔφη εἶναι οὔτε θεοφιλῆ.

103 Τοῦ αὐτοῦ ἐν δ′ (1, 1) ἀπομνημονευμάτων.

Οὕτω δὲ Σωκράτης ἦν ἐν παντὶ πράγματι καὶ πάντα τρόπον ὠφέλιμος, ὥστε τῷ σκοπουμένῳ τοῦτο καὶ εἰ μετρίως αἰσθανομένῳ φανερὸν εἶναι διότι οὐδὲν ὠφελιμώτερον ἦν τοῦ Σωκράτει συνεῖναι καὶ μετ᾽ ἐκείνου διατρίβειν ὁπουοῦν καὶ ἐν ὁτῳοῦν πράγματι· ἐπεὶ καὶ τὸ ἐκείνου μεμνῆσθαι μὴ παρόντος οὐ μικρὰ ὠφέλει τοὺς εἰωθότας τε αὐτῷ συνεῖναι καὶ ἀποδεχομένους ἐκεῖνον. καὶ γὰρ παίζων οὐδὲν ἧττον ἢ σπουδάζων ἐλυσιτέλει τοῖς συνδιατρίβουσι. πολλάκις γὰρ ἔφη μὲν ἄν τινος ἐρᾶν, φανερὸς δ᾽ ἦν οὐ τῶν τὰ σώματα πρὸς ὥραν, ἀλλὰ τῶν τὰς ψυχὰς πρὸς ἀρετὴν εὖ πεφυκότων ἐφιέμενος. ἐτεκμαίρετο δὲ τὰς ἀγαθὰς φύσεις ἐκ τοῦ ταχύτερον μανθάνειν οἷς προσέχοιεν καὶ μνημονεύειν ἃ ἂν μάθοιεν καὶ ἐπι-

θυμεῖν τῶν μαθημάτων πάντων δι᾽ ὧν ἔστιν οἰκίαν τε καλῶς οἰκεῖν καὶ πόλιν καὶ τὸ ὅλως ἀνθρώποις τε καὶ τοῖς ἀνθρωπίνοις πράγμασιν εὖ χρῆσθαι. τοὺς γὰρ τοιούτους ἡγεῖτο παιδευθέντας οὐκ ἂν μόνον αὐτούς τε εὐδαίμονας εἶναι καὶ τοὺς οἴκους καλῶς οἰκεῖν, ἀλλὰ καὶ ἄλλους ἀνθρώπους καὶ πόλεις δύνασθαι εὐδαίμονας ποιεῖν. οὐ τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον ἐπὶ πάντας ᾔει, ἀλλὰ τοὺς μὲν οἰομένους φύσει ἀγαθοὺς εἶναι μαθήσεως δὲ καταφρονοῦντας ἐδίδασκεν ὅτι αἱ ἄρισται δοκοῦσαι φύσεις μάλιστα παιδείας δέονται, ἐπιδεικνύων τῶν τε ἵππων τοὺς εὐφυεστάτους θυμοειδεῖς καὶ σφοδροὺς ὄντας, εἰ μὲν ἐκ νέων δαμασθεῖεν, εὐχρηστοτάτους καὶ ἀρίστους γιγνομένους, εἰ δὲ ἀγύμναστοι γένοιντο, δυσκαθεκτοτάτους καὶ φαυλοτάτους· καὶ τῶν κυνῶν τῶν εὐφυεστάτων φιλοπόνων τε οὐσῶν καὶ ἐπιθετικῶν τοῖς θηρίοις τὰς μὲν καλῶς ἀχθείσας ἀρίστας γίνεσθαι πρὸς τὰς θήρας καὶ χρησιμωτάτας, ἀναγώγους δὲ γινομένους ματαίους τε καὶ μανιώδεις καὶ δυσπειθεστάτας. ὁμοίως δὲ καὶ τῶν ἀνθρώπων τοὺς εὐφυεστάτους ἐρρωμενεστάτους τε ταῖς ψυχαῖς ὄντας καὶ ἐξεργαστικωτάτους ὧν ἂν ἐγχειρῶσι, παιδευθέντας μὲν καὶ μαθόντας ἃ δεῖ πράττειν, ἀρίστους τε καὶ ὠφελιμωτάτους γίνεσθαι· πλεῖστα γὰρ καὶ μέγιστα ἀγαθὰ ἐξεργάζεσθαι· ἀπαιδεύτους δὲ καὶ ἀμαθεῖς γενομένους κακίστους τε καὶ βλαβερωτάτους γίνεσθαι· κρίνειν γὰρ οὐκ ἐπισταμένους ἃ δεῖ πράττειν πολλάκις πονηροῖς ἐπιχειρεῖν πράγμασιν, μεγαλείους δὲ καὶ σφοδροὺς ὄντας δυσκαθέκτους τε καὶ δυσαποτρίπτους· διὸ πλεῖστά τε καὶ μέγιστα κακὰ ἐργάζεσθαι. τοὺς δὲ ἐπὶ πλούτῳ μέγα φρονοῦντας καὶ νομίζοντας οὐδὲν προσδεῖσθαι παιδείας, ἐξαρκέσειν δέ σφισι τὸν πλοῦτον οἰομένους

πρὸς τὸ διαπράττεσθαι ὅ τι ἂν βούλωνται, καὶ τιμᾶσθαι ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, ἐφρένου λέγων, ὅτι μωρὸς μὲν εἴη εἴ τις οἴεται καὶ μὴ μαθὼν τά τε ὠφέλιμα καὶ τὰ βλαβερὰ τῶν πραγμάτων διαγνώσεσθαι, μωρὸς δὲ εἴ τις μὴ διαγιγνώσκων μὲν ταῦτα, διὰ δὲ τὸν πλοῦτον ὅ τι ἂν βούληται πορίζόμενος οἴεται δυνήσεσθαι τὰ συμφέροντα πράττειν, ἠλίθιος δὲ εἴ τις μὴ δυνάμενος τὰ συμφέροντα πράττειν εὖ τε πράττειν οἴεται καὶ τὰ πρὸς τὸν βίον αὑτῷ ἱκανῶς ἢ καλῶς παρεσκευάσθαι, ἠλίθιος δὲ καὶ εἴ τις οἴεται διὰ τὸν πλοῦτον μηδὲν ἐπιστάμενος δόξειν τι ἀγαθὸς εἶναι, ἢ μηδὲν ἀγαθὸς εἶναι δοκῶν εὐδοκίμησεν.

ΠΕΡΙ ΚΑΚΙΑΣ. Β.

1 *Δημητρίου.*

Σφόδρ' εὐάλωτόν ἐστιν ἡ πονηρία·
εἰς γὰρ τὸ κέρδος μόνον ἀποβλέπουσ' ἀεί,
ἀφρόνως ἅπαντα καὶ προπετῶς συμπείθεται.

2 *'Αξιονίκου.*

Ὅταν δανείζῃ τὶς πονηρῷ χρήματα
ἀνὴρ δικαίως τὸν τόκον λύπας ἔχει.

3 Ὅταν εὐπορῶν τις αἰσχρὰ πράττῃ πράγματα,
τί τοῦτον ἀπορήσαντα πράξειν προσδοκᾷς;

4 *Μενάνδρου Παλλακή.*

Πολλοὺς λογισμοὺς ἡ πονηρία κυκλοῖ.

5 *Μενάνδρου.*

Μισῶ πονηρόν, χρηστὸν ὅταν εἴπῃ λόγον.

6 *Μενάνδρου.*
Ἀσυλλόγιστόν ἐστιν ἡ πονηρία.

7 (Aeschyli fr. 163).
Θεὸς μὲν αἰτίαν φύει βροτοῖς,
ὅταν κακῶσαι δῶμα παμπήδην θέλῃ.

8 (Eurip. fr. Ix. 1. ?)
Τοῦ μὲν δικαίου τὴν δόκησιν ἄρνυσο·
τὰ δ' ἔργα τοῦ πᾶν δρῶντος ἔνθα κερδανεῖ.

9 *Σκληρίου.*
Πολλοῖσι θνητῶν ἡ μὲν ὄψις εὐγενής,
ὁ νοῦς δ' ἐν αὐτῇ δυσγενὴς εὑρίσκεται.

10 *Φιλιππίδου.*
Ὁ τραχύτατος δὲ συκοφάντης μνᾶς δύο
λαβὼν ἄπεισιν ἀρνίου μαλακώτερος.

11 *Ἡσιόδου Ἔργων* (190).
Οὐδέ τις εὐόρκου χάρις ἔσσεται οὐδὲ δικαίου,
οὐδ' ἀγαθοῦ· μᾶλλον δὲ κακῶν ῥεκτῆρα καὶ ὕβριν
ἀνέρα τιμήσουσι· δίκη δ' ἐν χερσὶ καὶ αἰδὼς
οὐκ ἔσται, βλάψει δ' ὁ κακὸς τὸν ἀρείονα φῶτα,
μύθοισι σκολιοῖς ἐνέπων, ἐπὶ δ' ὅρκον ὀμεῖται.
ζῆλος δ' ἀνθρώποισιν ὀιζυροῖσιν ἅπασιν
δυσκέλαδος, κακόχαρτος, ὁμαρτήσει στυγερώπης.

12 *Ζηνοδότου.*
Κηρύσσεται μὲν ἡρετή· κακὸς δ' ἀνὴρ
σιγηλὸν ἔσχε ζῶν τε καὶ θανὼν βίον.

13 *Ἡσιόδου Ἔργων* (270).
Νῦν δὴ ἐγὼ μήτ' αὐτὸς ἐν ἀνθρώποισι δίκαιος
εἴην μήτ' ἐμὸς υἱός· ἐπεὶ κακὸν ἄνδρα δίκαιον
ἔμμεναι, εἰ μείζω γε δίκην ἀδικώτερος ἕξει.

14 *Ἐν ταυτῷ* (346).

Πῆμα κακὸς γείτων ὅσσον τ' ἀγαθὸς μέγ' ὄνειαρ.
ἔμμορέ τοι τιμῆς ὅς κ' ἔμμορε γείτονος ἐσθλοῦ.

15 *Εὐριπίδου ἐκ Βελλεροφόντου.*

Οὐδέ ποτ' εὐτυχίαν κακοῦ ἀνδρὸς ὑπέρφρονά τ' ὄλβον
βέβαιον εἰκάσαι χρεών,
οὐδ' ἀδίκων γενεάν· ὁ γὰρ οὐδενὸς ἐκφὺς
χρόνος δικαίους ἐπάγων κανόνας
δείκνυσιν ἀνθρώπων κακότητας ἐμοί.

16 *Εὐριπίδου Μηδείας* (516).

Ὦ Ζεῦ, τί δὴ χρυσοῦ μέν, ὃς κίβδηλος ᾖν,
τεκμήρι' ἀνθρώποισιν ὤπασας σαφῆ,
ἀνδρῶν δ' ὅτῳ χρὴ τὸν κακὸν διειδέναι,
οὐδεὶς χαρακτὴρ ἐμπέφυκε σώματι.

17 *Τοῦ αὐτοῦ * Τενῦ.*

Φεῦ· οὐδὲν δίκαιόν ἐστιν ἐν τῷ νῦν γένει.

18 *Σοφοκλέους.*

Σκαιοῖσι πολλοῖς εἷς σοφὸς διόλλυται.

19 *Δίωνος ἐκ τοῦ Εὐβοϊκοῦ* (Or. 7, 137).

Ὡς οὔποτε φιλεῖ τὰ μοχθηρὰ μένειν ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς, ἀλλ' ἀεὶ κινεῖται καὶ πρόεισιν ἐπὶ τὸ ἀσελγέστερον, μηδενὸς ἀναγκαίου μέτρου τυγχάνοντα.

20 *Φιλίππου.*

Φίλιππος ἐρωτώμενος ὑπὸ Βυζαντίων τί ἀδικηθεὶς πολιορκεῖ αὐτούς, εὐήθεις ἔφησεν εἶναι καὶ ὁμοίους τῷ εἴ τις ἔχων καλὴν γυναῖκα τοὺς ἐπικωμάζοντας ἐρωτῴη διὰ τί ἐπικωμάζουσιν.

21 *Θαλῆς ἐρωτηθεὶς τί βλαβερώτατον; ἔφη "κακία· καὶ γὰρ τὰ χρηστὰ βλάπτει παραγενομένη."*

22 *Δημοσθένους.*

Δημοσθένης ἔλεγεν ὡς πολλάκις ἐπιὸν αὐτῷ εὔξασθαι τοὺς πονηροὺς ἀπολέσθαι, καὶ φοβοῖτο μὴ ἔρημον ἄρδην ἐκ τῆς εὐχῆς ποιήσῃ τὴν πόλιν.

23 *Πυθαγόρου.*

Νόμου θείου τὸ φαῦλον ἀνήκοον, διὸ καὶ παρανομεῖ.

24 *Λυσίου.*

Ὅστις τοῦ μὲν μὴ ἀδικεῖν οὐ προνοεῖται τοῦ δὲ μὴ δοῦναι δίκην ἐπιμελεῖται, κακουργεῖ.

25 *Δημοσθένους Φιλιππικῶν* (115, 9 R.).

Ὁ γὰρ οἷς ἂν ἐγὼ ληφθείην ταῦτα πράττων καὶ κατασκευαζόμενος, οὗτος ἐμοὶ πολεμεῖ, κἂν μή πω βάλλῃ μηδὲ τοξεύῃ.

26 *Φιλήμονος Ἀγύρτου.*

Ὦ πῶς πονηρόν ἐστιν ἀνθρώπου φύσις
τὸ σύνολον· οὐ γὰρ ἄν ποτ' ἐδεήθη νόμου.

26[a] *Οἴει τι τῶν ἄλλων διαφέρειν θηρίων*
[ἄνθρωπον]; οὐδὲ μικρὸν ἀλλ' ἢ σχήματι·
πλάγι' ἐστὶ τἄλλα, τοῦτο δ' ὀρθὸν θηρίον.

27 *Φιλήμονος.*

Τί ποτε Προμηθεύς, ὃν λέγουσ' ἡμᾶς πλάσαι
καὶ τἄλλα πάντα ζῷα, τοῖς μὲν θηρίοις
ἔδωχ' ἑκάστῳ κατὰ γένος μίαν φύσιν;
ἅπαντες οἱ λέοντες εἰσὶν ἄλκιμοι·
δειλοὶ πάλιν ἑξῆς πάντες εἰσὶν οἱ λαγῴ.
οὐκ ἔστ' ἀλώπηξ ἡ μὲν εἴρων τῇ φύσει

ἡ δ' αὐθέκαστος· ἀλλ' ἐὰν τρισμυρίας
ἀλώπεκάς τις συναγάγῃ, μίαν φύσιν
ἁπαξαπασῶν ὄψεται τρόπον θ' ἕνα.
ἡμῶν δ' ὅσα καὶ τὰ σώματ' ἐστὶ τὸν ἀριθμὸν
καθενός, τοσούτους ἔστι καὶ τρόπους ἰδεῖν.

28 *Σοφοκλέους Αἴαντος* (1159).

Ἄπειμι· καὶ γὰρ αἰσχρὸν εἰ πύθοιτό τις
λόγοις κολάζειν, ᾧ βιάζεσθαι παρῇ.

29 *Ὁ αὐτὸς ἐν Φαίδρᾳ* (El. 1050).

Ἄπειμι τοίνυν· οὔτε γὰρ σὺ τἄμ' ἔπη
τολμᾷς ἐπαινεῖν, οὔτ' ἐγὼ τοὺς σοὺς τρόπους.

30 *Ἐπικτήτου.*

Αἰσχρὸν τοῖς τῶν μελιττῶν δωρήμασι γλυκάζοντα τὴν κατάποσιν τὸ τῶν θεῶν δῶρον τὸν λόγον πικράζειν τῇ κακίᾳ.

31 *Λυκούργου.*

Ὅσοι τοῖς ἀπὸ τῆς φύσεως ἀγαθοῖς ἐπὶ τὰ χείρω χρῶνται, τούτοις πολέμια τὰ εὐτυχήματά ἐστιν. ὡς εἴ τις ἀνδρεῖος ὢν λῃίζεσθαι μᾶλλον ἢ στρατεύεσθαι προαιρεῖται, καὶ ἰσχυρὸς ὢν λωποδυτεῖν μᾶλλον ἢ συμβουλεύειν, ἢ καλὸς ὢν μοιχεύειν μᾶλλον ἢ γαμεῖν, οὗτος τῶν ἀπὸ τῆς φύσεως ἀγαθῶν ὑπαρξάντων προδότης ἐστίν.

32 *Μουσωνίου.*

Τί προβαλλόμεθα τοὺς τυράννους μακρῷ χείρονες αὐτῶν καθεστῶτες; τὰς γὰρ ὁμοίας αὐτοῖς ἔχομεν ὁρμὰς ἐν ταῖς οὐχ ὁμοίαις τύχαις.

33 *Θεοδώρου.*

Θεόδωρος ὁ Κυρηναϊκὸς Λυσιμάχου τοῦ βασιλέως

ἀπειλήσαντος αὐτὸν ἀναιρήσειν "ἐλελήθεις με" εἶπεν "οὐ βασιλέως ἀλλὰ κωνείου δύναμιν ἔχων."

34 *Θεοκρίτου.*

Θεόκριτος ἐρωτηθεὶς ποῖα τῶν θηρίων ἐστὶ τὰ χαλεπώτατα εἶπεν "ἐν μὲν τοῖς ὄρεσιν ἄρκτοι καὶ λέοντες, ἐν δὲ ταῖς πόλεσιν τελῶναι καὶ συκοφάνται."

35 *Ἐκ τῆς ἐπιστολῆς περὶ φιλίας.*

Κακίας αὐτῶν πλάσσονταί τινες ῥημάτων εὐπρεπείᾳ, τὸ μὲν φιλοσκώμματον ἁπλοῦν, τὸ δὲ φιλάργυρον προμηθὲς ἀποκαλούμενοι.

36 *Ἐν ταυτῷ.*

Πολύβουλον εἶναι καὶ πολύτροπον ἔνθα δεῖ καὶ τέχνης κατ᾽ ἀλλοφύλων πολεμίων, χρήσιμον καὶ ἀναγκαῖον· ἐπίβουλον δ᾽ ἦθος καὶ κακομηχανώτατον διὰ παντὸς ἔχειν καὶ κατὰ πάντων, οὐ τῇ τῶν ἀγχινόων, ὥς τινες οἴονται, τῇ δὲ τοῦ πονηροτάτου μερίδι προστίθημι.

37 *Δημοκρίτου.*

Ἔστι ῥηίδιον μὲν ἐπαινέειν ἃ μὴ χρὴ καὶ ψέγειν, ἑκάτερον δὲ πονηροῦ τινος ἤθεος.

38 *Διονυσίου Ἁλικαρνασέως.*

Ἀπὸ γὰρ τῆς αὐτῆς διανοίας οἱ ἄνθρωποι ἀπογιγνώσκουσί τε ἑαυτῶν καὶ ἑτέροις ἀπιστοῦσιν.

39 *Δίωνος ἐν τῷ περὶ δουλείας.*

Φησὶν ὁ Δίων· οἱ ἀγαθοὶ οἰκέται ἐλεύθεροι, οἱ δὲ πονηροὶ ἐλεύθεροι δοῦλοι πολλῶν ἐπιθυμιῶν.

40 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῶν προτρεπτικῶν εἰς φιλοσοφίαν λόγων* (p. 18).

Ὁμοίως ἐπισφαλὲς μαινομένῳ δοῦναι μάχαιραν καὶ πονηρῷ δύναμιν.

41 *Σωκρατικοῦ.*

Σωκρατικὸς ὁ κυνικὸς ἀκούσας ποτὲ πονηροῦ τὸν τρόπον κακῶς λέγοντος Πλάτωνα "παῦσαι" ἔφη "οὔτε γὰρ κακῶς λέγων ἐκεῖνον πιστευθήσῃ οὔτε ἐκεῖνός σε ἐπαινῶν."

42 *Σιμωνίδου.*

Σιμωνίδης ὁ μελοποιὸς εἰπόντος τινὸς ὅτι πολλοὶ αὐτὸν παρ' αὐτῷ κακῶς λέγουσιν "οὐ παύσῃ" ἔφη "ποτὲ σὺ τοῖς ὠσί με βλασφημῶν;"

43 *Ἀνάχαρσις.*

Ἀνάχαρσις ὁ Σκύθης ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος τί ἐστι πολέμιον ἀνθρώποις; "αὐτοὶ" ἔφη "ἑαυτοῖς."

44 *Πλάτωνος πολιτείας γ'* (405 a).

Τῆς δὲ κακῆς τε καὶ αἰσχρᾶς παιδείας ἐν πόλει ἆρα μή τι μεῖζον ἕξεις λαβεῖν τεκμήριον ἢ τὸ δεῖσθαι ἰατρῶν καὶ δικαστῶν ἄκρων μὴ μόνον τοὺς φαύλους τε καὶ χειροτέχνας, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐν ἐλευθέρῳ σχήματι προσποιουμένους τετράφθαι; ἢ οὐκ αἰσχρὸν δοκεῖ καὶ ἀπαιδευσίας μέγα τεκμήριον τὸ ἐπακτῷ παρ' ἄλλων ὡς δεσποτῶν τε καὶ κριτῶν τῷ δικαίῳ ἀναγκάζεσθαι χρῆσθαι καὶ ἀπορίᾳ οἰκείων; Πάντων μὲν οὖν, ἔφη, αἴσχιστον. Ἦ δοκεῖ σοι, ἦν δ' ἐγώ, τούτου αἴσχιον εἶναι τοῦτο; ὅταν δή τις μὴ μόνον τὸ πολὺ τοῦ βίου ἐν δικαστηρίοις φεύγων τε καὶ διώκων κατατρίβηται, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ ἀπειροκαλίας ἐπ' αὐτῷ δὴ τούτῳ πεισθῇ καλλωπίζεσθαι ὡς δεινὸς ὢν περὶ τὸ ἀδικεῖν καὶ ἱκανὸς πάσας μὲν στροφὰς στρέφεσθαι, πάσας δὲ διεξόδους διεξελθὼν ἀποστραφῆναι

λογιζόμενος, ὥστε μὴ παρασχεῖν δίκας, καὶ ταῦτα σμικρῶν τε καὶ οὐδενὸς ἀξίων ἕνεκα, ἀγνοῶν ὅσῳ κάλλιον καὶ ἄμεινον τὸ παρασκευάζειν τὸν βίον αὑτῷ μηδὲν δεῖσθαι νυστάζοντος δικαστοῦ. Οὐκ ἀλλὰ τοῦτ', ἔφη, ἐκείνου ἔτι αἴσχιον.

45 Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Κύρου ἀναβάσεως (II, 6, 21).

Μένων δ' ὁ Θετταλὸς δῆλος ἦν ἐπιθυμῶν μὲν πλούτου ἰσχυρῶς, ἐπιθυμῶν δὲ ἄρχειν ὅπως πλείω λαμβάνοι· ἐπιθυμῶν δὲ τιμᾶσθαι ἵνα πλείω κερδάνοι· φίλος τ' ἐβούλετο εἶναι τοῖς μέγιστον δυναμένοις ἵνα ἀδικῶν μὴ διδοίη δίκην, ἐπὶ δὲ τὸ κατεργάζεσθαι ὧν ἐπιθυμοίη συντομωτάτην ὁδὸν ᾤετο εἶναι διὰ τοῦ ἐπιορκεῖν τε καὶ ψεύδεσθαι καὶ ἐξαπατᾶν· τὸ δὲ ἁπλοῦν τε καὶ ἀληθὲς ἐνόμιζε τὸ αὐτὸ τῷ ἠλιθίῳ εἶναι. στέργων δὲ φανερὸς μὲν ἦν οὐδένα, ὅτῳ δὲ φαίη φίλος εἶναι, τούτῳ ἔνδηλος ἦν ἐπιβουλεύων. καὶ πολεμίου μὲν οὐδενὸς κατεγέλα, τῶν δὲ συνόντων πάντων ὡς καταγελῶν αἰεὶ διελέγετο. καὶ τοῖς μὲν τῶν πολεμίων κτήμασιν οὐκ ἐπεβούλευε· χαλεπὸν γὰρ ᾤετο εἶναι τὰ τῶν φυλαττομένων λαμβάνειν· τὰ δὲ τῶν φίλων μόνος ᾤετο εἰδέναι ὅτι ῥᾷστον ἀφύλακτα λαμβάνειν. καὶ ὅσους μὲν αἰσθάνοιτο ἐπιόρκους καὶ ἀδίκους ὡς εὖ ὡπλισμένους ἐφοβεῖτο, τοῖς δὲ ὁσίοις καὶ ἀλήθειαν ἀσκοῦσιν ὡς ἀνάνδροις ἐπειρᾶτο χρῆσθαι.

46 Πλάτωνος νόμων β' (661 c).

Ἐγὼ μὲν γὰρ λέγω σαφῶς, τὰ μὲν κακὰ λεγόμενα ἀγαθὰ τοῖς ἀδίκοις εἶναι τοῖς δὲ δικαίοις κακά, τὰ δὲ ἀγαθὰ τοῖς μὲν ἀγαθοῖς ὄντως ἀγαθὰ τοῖς δὲ κακοῖς κακά.

47 *Σωκράτους.*

Ταυτὸν ἐξ ἀσθενοῦς ἀγκυρίου σκάφος ὁρμίζειν καὶ ἐκ φαύλης γνώμης ἐλπίδα.

48 *Αἰσχίνου* (490 R.).

Καὶ γὰρ τοῦτ' ἄνθρωπος ἴδιον καὶ οὐ κοινὸν ποιεῖ· οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι ἀλαζόνες, ὁπόταν τι ψεύδωνται, ἀόριστα καὶ ἀσαφῆ πειρῶνται λέγειν, φοβούμενοι τὸν ἔλεγχον· Δημοσθένης δὲ ὅταν ἀλαζονεύηται, πρῶτον μεθ' ὅρκου ψεύδεται ἐξώλειαν ἐπαρώμενος αὐτῷ, δεύτερον δὲ ἃ εἶδεν ἐσόμενα τολμᾷ λέγειν ὡς ποτὲ ἔσται, καὶ ὧν τὰ σώματα οὐχ ἑώρακε, τούτων τὰ ὀνόματα λέγει κλέπτων τὴν ἀκρόασιν, καὶ μιμούμενος τοὺς τἀληθῆ λέγοντας. Ἦ καὶ σφόδρα ἄξιός ἐστι μισεῖσθαι, ὅτι πονηρὸς ὢν καὶ τὰ τῶν χρηστῶν σημεῖα διαφέρει.

ΠΕΡΙ ΦΡΟΝΗΣΕΩΣ. Γ.

1 *Αἰσχύλου.*

Ἃ δεῖ παρὼν φρόντιζε, μὴ παρὼν ἀπῇς.
Ὁ χρήσιμ' εἰδώς, οὐχ ὁ πόλλ' εἰδώς, σοφός.

2 *Σοφοκλέους* (El. 1015).

Προνοίας οὐδὲν ἀνθρώποις ἔφυ
κέρδος λαβεῖν ἄμεινον οὐδὲ νοῦ σοφοῦ.

3 [*Εὐριπίδου.*]

Πολλαῖσι μορφαῖς οἱ θεοὶ σοφισμάτων
σφάλλουσιν ἡμᾶς, κρείσσονες πεφυκότες.

4 *Κἂν σφόδρα σαφῶς εἰδῇς τι, τὸν κρύπτοντά σε*
μηδέποτ' ἐλέγξῃς· δύσκολον πρᾶγμ' ἐστὶ γάρ,
ἃ λανθάνειν τις βούλεται, ταῦτ' εἰδέναι.

5 Σοφοκλῆς Αἴαντι (1246).

Ἐκ τῶνδε μέντοι τῶν τρόπων οὐκ ἄν ποτε
κατάστασις γένοιτ' ἂν οὐδενὸς νόμου,
εἰ τοὺς δίκῃ νικῶντας ἐξωθήσομεν
καὶ τοὺς ὄπισθεν εἰς τὸ πρόσθεν ἄξομεν.
ἀλλ' εἰρκτέον τάδ' ἐστίν· οὐ γὰρ οἱ πλατεῖς
οὐδ' εὐρύνωτοι φῶτες ἀσφαλέστατοι,
ἀλλ' οἱ φρονοῦντες εὖ κρατοῦσι πανταχοῦ.
μέγας δὲ πλευρὰ βοῦς ὑπὸ σμικρᾶς ὅμως
μάστιγος ὀρθὸς εἰς ὁδὸν πορεύεται.

6 Μενάνδρου Θεοφορουμένη.

Ὁ πλεῖστον νοῦν ἔχων
μάντις τ' ἄριστός ἐστι σύμβουλός θ' ἅμα.

7 Μενάνδρου.

Ἆρ' ἔστιν ἀγαθῶν πᾶσι πλείστων αἰτία
ἡ σύνεσις, ἂν ᾖ πρὸς τὰ βελτίω σοφή.

8 Σοφοκλῆς Ἀλήτῃ.

Ψυχὴ γὰρ εὔνους καὶ φρονοῦσα τοὔνδικον
κρείσσων σοφιστοῦ παντός ἐστιν εὑρετίς.

9 Μενάνδρου Ἰμβρίοις.

Οὐκ ἔστιν οὐδέν, πάτερ, ἐν ἀνθρώπου φύσει
μεῖζον λογισμοῦ τῷ διαθέσθαι πράγματα.
Ἕκαστός ἐστι τῷ λογίσασθαι κατὰ τρόπον,
ἄρχων, στρατηγός, ἡγεμὼν δήμου, πάλιν
βουλῆς· ὁ διαφέρων λογισμῷ πάντ' ἔχει.

10 Αἰσχύλου.

Ἁμαρτάνει τοι καὶ σοφοῦ σοφώτερος.

11 Μενάνδρου.

Ἅπαντα δοῦλα τοῦ φρονεῖν καθίσταται.

12 *Εὐριπίδου Ἀντιόπη.*

Τὸ δ' ἀσθενές μου καὶ τὸ θῆλυ σώματος
κακῶς ἐμέμφθης· εἰ γὰρ εὖ φρονεῖν ἔχω,
κρεῖσσον τόδ' ἐστὶ καρτεροῦ βραχίονος.

13 *Ὡς ὄψις ἐν ὀφθαλμῷ, νοῦς ἐν ψυχῇ.*

14. 15. *Ἐσθλοῦ γὰρ ἀνδρὸς τοὺς πονοῦντας ὠφελεῖν·*
ἀλλ' ἡ φρόνησις ἀγαθὴ θεὸς μέγας.

16 *Ἀγάθωνος.*

Οὐ τῇ φρονήσει, τῇ τύχῃ δ' ἐσφάλμεθα.

17 *Χαιρήμονος.*

Οὐχ ὡς νομίζεις τὸ φρονεῖν εἶπας κακῶς.
Τό τοι κράτιστον πανταχοῦ τιμητέον.
Ὁ γὰρ φρονῶν εὖ πάντα συλλαβὼν ἔχει.

18 *Εὐριπίδου Ἐρεχθέως.*

Ὀρθῶς μ' ἐπήρου· βούλομαι δέ σοι, τέκνον,
(φρονεῖς γὰρ ἤδη κἀποσώσαι' ἂν πατρὸς
γνώμας φράσαντος, ἢν θάνω) παραινέσαι
κειμήλι' ἐσθλὰ καὶ νέοισι χρήσιμα.
βραχεῖ δὲ μύθῳ πολλὰ συλλαβὼν ἐρῶ.
πρῶτον φρένας μὲν ἠπίους ἔχειν χρεών·
τῷ πλουσίῳ τε τῷ τε μὴ διδοὺς μέρος
ἴσον, σεαυτὸν εὐσεβεῖν πᾶσιν δίδου.
δυοῖν παρόντοιν πραγμάτοιν, πρὸς θάτερον
*γνώμην προσάπτειν τὴν ἐναντίαν * μίσει.*
ἀδίκως δὲ μὴ κτῶ χρήματ', ἢν βούλῃ πολὺν
χρόνον μελάθροις ἐμμένειν· τὰ γὰρ κακῶς
οἴκους ἐσελθόντ' οὐκ ἔχει σωτηρίαν.
ἔχειν δὲ πειρῶ· τοῦτο γὰρ τό τ' εὐγενὲς
καὶ τοὺς γάμους δίδωσι τοὺς πρώτους ἔχειν.

ἐν τῷ πένεσθαι δ' ἐστὶν ἥ τ' ἀδοξία,
κἂν ᾖ σοφός τις, ἥ τ' ἀτιμία βίου.
φίλων δὲ τοὺς μὲν μὴ χαλῶντας ἐν λόγοις
κέκτησο, τοὺς δὲ πρὸς χάριν σὺν ἡδονῇ
τῇ σῇ πονηροὺς κλῇθρον εἰργέτω στέγης.
ὁμιλίας τε τὰς γεραιτέρους θέλε.
βραχεῖα τέρψις ἡδονῆς τίκτει λύπην.
ἐξουσίᾳ δὲ μή ποτ' ἐντυχών, τέκνον,
αἰσχροὺς ἔρωτας δημοτῶν διωκαθεῖν,
ὃ καὶ σίδηρον ἀγχόνας τ' ἐφέλκεται,
χρηστῶν πενήτων ἥν τις αἰσχύνῃ τέκνα.
καὶ τοὺς πονηροὺς μή ποτ' αὔξαν' ἐν πόλει·
κακοὶ γὰρ ἐμπλησθέντες ἢ νομίσματος
ἢ πόλεος ἐμπεσόντες εἰς ἀρχήν τινα,
σκιρτῶσιν ἀδίκως εὐτυχησάντων δόμων.
ἀλλ', ὦ τέκνον, μοι δὸς χέρ', ὡς θίγῃ πατήρ,
καὶ χαῖρ'· ὑπ' αἰδοῦς δ' οὐ λίαν ἀσπάζομαι·
γυναικόφρων γὰρ θυμὸς ἀνδρὸς οὐ σοφοῦ.

19 *Θεόγνιδος* (1163).

Ὀφθαλμοὶ καὶ γλῶσσα καὶ οὔατα καὶ νόος ἀνδρὸς
ἐν μέσσῳ στηθέων εὐξύνετος φύεται.

20 *Εὐριπίδου Πολυείδου.*

Ὅστις νέμει κάλλιστα τὴν αὑτοῦ φύσιν,
οὗτος σοφὸς πέφυκε πρὸς τὸ συμφέρον.

21 *Πυθαγόρου ἐκ τῶν χρυσῶν ἐπῶν* (21—26 et 39).

Πολλοὶ δ' ἀνθρώποισι λόγοι δειλοί τε καὶ ἐσθλοὶ
προσπίπτουσ', ὧν μήτ' ἐκπλήσσεο μήτ' ἄρ' ἐάσῃς
εἴργεσθαι σαυτόν. ψεῦδος δ' ἥν σοί τι λέγηται,
πράως εἶχ'· ὃ δέ τοι ἐρέω, ἐπὶ πᾶσι τελείσθω.
μηδεὶς μήτε λόγῳ σε παρείπῃ μήτε τι ἔργῳ

πρῆξαι μηδ᾽ εἰπεῖν ὅ τι τοι μὴ βέλτερόν ἐστι.
πρῆσσε δὲ ταῦθ᾽ ἅ σε μὴ βλάπτει, λόγισαι δὲ πρὸ ἔργου.

22 *Εὐριπίδου Πελιάσι.*

Πρὸς κέντρα μὴ λάκτιζε τοῖς κρατοῦσί σου.

23 *Μενάνδρου.*

Ὅταν ἕτερός σοι μηδὲ ἓν πλέον διδῷ,
δέξαι τὸ μόριον· τοῦ λαβεῖν γὰρ μηδὲ ἓν
τὸ λαβεῖν ἔλαττον πλεῖον ἔσται σοι πολύ.

24 *Πυθαγόρου.*

Ἰσχὺς καὶ τεῖχος καὶ ὅπλον σοφοῦ ἡ φρόνησις.

26 *Φωκυλίδου* (Pseudophoc. 124).

Ὅπλον τοι λόγος ἀνδρὶ τομώτερόν ἐστι σιδήρου.
ὅπλον ἑκάστῳ νεῖμε θεός, φύσιν ἠερόφοιτον
ὄρνισιν, πολλὴν ταχυτῆτ᾽ ἀλκήν τε λέουσι,
ταύροις δ᾽ αὐτοχύτοις κεράεσσιν, κέντρα μελίσσαις
ἔμφυτον ἄλκαρ ἔδωκε, λόγος δ᾽ ἔρυμ᾽ ἀνθρώποισι.
τῆς δὲ θεοπνεύστου σοφίης λόγος ἐστὶν ἄριστος.

---

25 *Γνῶμαι μονόστιχοι.*

Ἀγαθὸν μέγιστον ἡ φρόνησίς ἐστ᾽ ἀεί. | ἀνδρὸς χαρακτὴρ ἐκ λόγου γνωρίζεται. | ἄριστόν ἐστι πάντ᾽ ἐπίστασθαι καλά. | ἂν εὖ φρονῇς, τὰ πάντα γ᾽ εὐδαίμων ἔσῃ. | ἀεὶ κράτιστόν ἐστι τἀσφαλέστατον. | ἔνιοι κακῶς φρονοῦσι πράσσοντες καλῶς. | ἐμπειρία γὰρ τῆς ἀπειρίας κρατεῖ. | βλέπων πεπαίδευμ᾽ εἰς τὰ τῶν ἄλλων κακά. | ἡδύ γε πατὴρ φρόνησιν ἀντ᾽ ὀργῆς ἔχων. | ἥδιστόν ἐστιν εὐτυχοῦντα νοῦν ἔχειν. | μισῶ σοφιστὴν ὅστις οὐχ αὑτῷ σοφός. | νοεῖν γάρ ἐστι κρεῖττον ἢ σιγὴν ἔχειν. | συνετὸς πεφυκὼς φεῦγε τὴν κακουργίαν. | ὁ παρ᾽ ἡλικίαν νοῦς μῖσος ἐξεργάζεται. | οὐδεὶς ὃ νοεῖς οἶδεν, ὃ δὲ ποιεῖς βλέπει. | οὐ πανταχῇ δ᾽ ὁ φρόνιμος ἁρμόττειν δοκεῖ. | τὸ μηδὲν εἰκῇ πανταχοῦ ἐστὶ χρήσιμον. | ψυχῆς μέγας χαλινὸς ἀνθρώποις ὁ νοῦς. | ὡς οὐδὲν ἡ μάθησις, ἢν μὴ νοῦς παρῇ.

βέλτερος ἀλκήεντος ἔφυ σεσοφισμένος ἀνήρ.
ἀγροὺς καὶ πόλιας σοφία καὶ νῆα κυβερνᾷ.

27 *Εὐριπίδου Ἀντιόπη.*
Ἐγὼ μὲν οὖν ᾄδοιμι καὶ λέγοιμί τι
σοφόν, ταράσσων μηδὲν ὧν πόλις νοσεῖ.

27ª [*Εὐριπίδου Ἠλέκτρα* 294.]
Ἔνεστι δ' οἶκτος ἀμαθίᾳ μὲν οὐδαμοῦ,
σοφοῖσι δ' ἀνδρῶν. καὶ γὰρ οὐδ' ἀζήμιον
γνώμην ἐνεῖναι τοῖς σοφοῖς λίαν σοφόν.

28 *Θεόγνιδος* (963).
Μή ποτ' ἐπαινέσσῃς πρὶν ἂν εἰδῇς ἄνδρα σαφηνέως
ὀργὴν καὶ θυμὸν καὶ τρόπον ὅντιν' ἔχει.
πολλοί τοι κίβδηλον ἐπίκλοπον ἦθος ἔχοντες
κρύπτουσ' ἐνθέμενοι θυμὸν ἐφημέριον.
τούτων δ' ἐκφαίνει πάντων χρόνος ἦθος ἑκάστου·
καὶ γὰρ ἐγὼ γνώμης πολλὸν ἄρ' ἐκτὸς ἔβην.

29 Νόει, καὶ τότε πρᾶττε.

30 *Βίαντος..*
Βραδέως ἐγχείρει τοῖς πραττομένοις, ἐγχειρήσας δὲ πρᾶττε βεβαίως.

31 *Θεοβούλου.*
Τὰ ἀφανῆ τοῖς φανεροῖς τεκμαίρου.

32 Σωκράτης παρῄνει, ὡς ἥκιστα τοῖς δυνάσταις ἢ ὡς ἥδιστα ὁμιλεῖν.

33 Πρᾶττε ἀμεταμέλητα.

34 *Δημοκρίτου.*
Σοφίη ἄθαμβος ἀξίη πάντων τιμιωτάτη ἐοῦσα.

35 *Δημοκρίτου.*

Ὅρος γὰρ συμφορέων καὶ ἀσυμφορέων τέρψις καὶ ἀτερπίη.

39 Σωτάδου.

Λύπη σε μακρὰν προφεύξεται ἀγαθὰ φρονοῦντα.
μιμοῦ τὸ καλόν, καὶ μενεῖς ἐν βροτοῖς ἄριστος.
νόμος ἐστὶ θεός, τοῦτον ἀεὶ πάντοτε τίμα.
ξένος ὀφείλεις εἶναι τῶν οὐ καλῶς φρονούντων.
οὗ καλῶς βιοῖς, παράμενε, κεὐτυχεῖς τὰ πάντα.
παρατήρει τὰ πάντων καλὰ καὶ ταῦτα σὺ μιμοῦ.
ῥῆσιν δ' ἀγαθὴν δεδομένην φύλασσε σαυτῷ.
σοὶ τοῦτο γενέσθω φίλον, μηδὲν ἀτακτεῖν,
τὴν ἡσυχίαν κατὰ βίον ἵνα πάντοτε τηρῇς.
ὑγιαίνειν εὔχου τοῖς θεοῖς, ἐφ' ὅσον ἔχεις ζῆν.

40 Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.

Κυβερνήτου μὲν ἔργον ἀγαθοῦ εἰς τὰς τῶν πνευμάτων μεταβολὰς ἁρμόσασθαι, ἀνδρὸς δὲ σοφοῦ πρὸς τὰς τῆς τύχης.

41 Σωκράτους.

Ἐν μὲν τῷ καταπλεῖν πείθεσθαι τῷ κυβερνήτῃ, ἐν δὲ τῷ ζῆν τῷ λογίζεσθαι δυναμένῳ βέλτιον.

42 Ὁδὸν μὲν τὴν λειοτάτην ἐκλέγεσθαι, βίον δὲ τὸν ἀλυπότατον.

---

36 Ῥώμη δὲ μετὰ μὲν φρονήσεως ὠφέλησεν, ἄνευ δὲ ταύτης πλεῖον τοὺς ἔχοντας ἔβλαψε. (Isocrates ad Demon. §. 6.)

37 Βουλευόμενος παραδείγματα ποιοῦ τὰ παρεληλυθότα τῶν μελλόντων. (ibid. §. 34.)

38 Ὅπερ δὲ ὑπὲρ τῶν σεαυτοῦ μέλλεις τινὶ συμβουλεύεσθαι, σκόπει πρῶτον πῶς ὑπὲρ τῶν αὑτοῦ διῴκησεν. ὁ γὰρ κακῶς διανοηθεὶς ὑπὲρ τῶν ἰδίων οὐδέποτε καλῶς βουλεύσεται περὶ τῶν ἀλλοτρίων. (ibid. §. 35.)

43 *Μόνῳ τῷ λόγῳ καθάπερ ἐπιτρόπῳ σώφρονι παρακαταθετέον τὸν βίον καὶ τὴν νεότητα.*

44 *Καὶ ὑποδήματα καὶ βίος ἁρμόζων ἀλυπότερος.*

45 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τί φρόνησις; "εὐαρμοστία" εἶπε "ψυχῆς." ὁ αὐτὸς ἐρωτηθεὶς τίνες φρόνιμοι; "οἱ μὴ ῥαδίως" εἶπεν "ἐξαμαρτάνοντες."

46 *Ἀντισθένης ἐρωτηθεὶς τί δή ποτε οὐχ οἱ πλούσιοι πρὸς τοὺς σοφοὺς ἀπίασιν ἀλλ' ἀνάπαλιν; εἶπεν "ὅτι οἱ σοφοὶ μὲν ἴσασιν ὧν ἐστὶν αὐτοῖς χρεία πρὸς τὸν βίον· οἱ δὲ οὐκ ἴσασιν· ἐπεὶ μᾶλλον σοφίας ἢ χρημάτων ἐπεμελοῦντο."*

---

47 *Πλουτάρχου* (virt. mor. cap. 5 p. 443 e).

Ἔστι τοίνυν τῶν πραγμάτων τὰ μὲν ἁπλῶς ἔχοντα τὰ δὲ πῶς ἔχοντα πρὸς ἡμᾶς· ἁπλῶς μὲν ουν ἔχοντα, γῆ, οὐρανός, θάλασσα· πῶς δὲ ἔχοντα πρὸς ἡμᾶς, ἀγαθόν, κακόν, αἱρετόν, φευκτόν, ἡδύ, ἀλγεινόν· ἀμφοῖν δὲ τοῦ λόγου θεωρητικοῦ ὄντος, τὸ μὲν περὶ τὰ ἁπλῶς ἔχοντα μόνον, ἐπιστημονικὸν καὶ θεωρητικόν ἐστι· τὸ δ' ἐν τοῖς πῶς ἔχουσι πρὸς ἡμᾶς, βουλευτικὸν καὶ πρακτικόν· ἀρετὴ δὲ τούτου μὲν ἡ φρόνησις, ἐκείνου δὲ ἡ σοφία. διαφέρει δὲ σοφίας φρόνησις, ᾗ τοῦ θεωρητικοῦ πρὸς τὸ πρακτικὸν καὶ παθητικὸν ἐπιστροφῆς καὶ σχέσεώς τινος γενομένης ὑφίσταται κατὰ λόγον ἡ φρόνησις. διὸ φρόνησις μὲν τύχης δεῖται, σοφία δὲ οὐ δεῖται πρὸς τὸ οἰκεῖον τέλος, οὐδὲ βουλῆς· ἔστι γὰρ περὶ τὰ ἀεὶ καὶ τὰ αὐτὰ ὡσαύτως ἔχοντα. καὶ καθάπερ ὁ γεωμέτρης οὐ βουλεύεται περὶ τοῦ τριγώνου, εἰ δυοῖν ὀρθαῖς ἴσας ἔχει τὰς ἐντὸς γωνίας, ἀλλ' οἶδεν (αἱ γὰρ βουλαὶ περὶ τῶν ἄλλοτε ἄλλως ἐχόντων, οὐ περὶ τῶν βεβαίων καὶ ἀμεταπτώτων)· οὕτως ὁ θεωρητικὸς νοῦς περὶ τὰ πρῶτα καὶ μόνιμα καὶ μίαν ἀεὶ φύσιν ἔχοντα μὴ δεχομένην μεταβολὰς ἐνεργῶν ἀπήλλακται τοῦ βουλεύεσθαι. τὴν δὲ φρόνησιν εἰς πράγματα πλάνης μεστὰ καὶ ταραχῆς καθιεῖσαν ἐπιμίγνυσθαι τοῖς τυχηροῖς πολλάκις ἀναγκαῖόν ἐστι καὶ τῷ βουλευτικῷ χρῆσθαι περὶ τῶν ἀδηλοτέρων· τῷ δὲ πρακτικῷ τὸ

49 *Πλουτάρχου εἰ ἡ τῶν μελλόντων πρόγνωσις ὠφέλιμος.*

Ἀλλὰ μὴν ἡ φρόνησις οὐ σωμάτων ἀλλὰ πραγμάτων ὄψις ἐστί, πρὶν ἐν αὐτοῖς γενέσθαι τὸν ἄνθρωπον, ὅπως ἄριστα χρήσεται τοῖς ἀπαντῶσι καὶ προστυγχάνουσι, παρέχουσα διασκοπεῖν τὸ μέλλον. τὸ μὲν οὖν σῶμα πρόσω μόνον ὠμμάτωται, τοῖς δ' ὄπισθεν τυφλόν ἐστιν ἀτεχνῶς· ἡ δὲ διάνοια καὶ τὰ παρῳχημένα βλέπειν τῇ μνήμῃ πέφυκεν. ὁ γὰρ ἐγκαθήμενος ἀεὶ καὶ οἰκουρῶν γραμματεύς, [ἐν μίνῳ] ὥς φησιν ὁ Πλάτων, οὗτός ἐστι, καὶ προγέγονας ἐνταῦθα τῆς ψυχῆς, εἴτε μέρος εἴτε ὄργανον, ὃ τῶν πραγμάτων ἀντιλαμβάνεται φερομένων, καὶ φυλάττει καὶ ἵστησι, καὶ κύκλον ποιεῖ τὸ παρῳχημένον ἐπιστρέφουσα, καὶ συνάπτουσα τῷ παρόντι, καὶ παραρρεῖν εἰς τὸ ἄπειρον οὐκ ἐῶσα καὶ ἀνύπαρκτον καὶ ἄγνωστον.

50 *Θεοφράστου.*

Χρὴ τοίνυν τὸν μέλλοντα θαυμασθήσεσθαι περὶ τὸ θεῖον φιλοθύτην εἶναι, μὴ τῷ πολλὰ θύειν ἀλλὰ τῷ πυκνὰ τιμᾶν τὸ θεῖον· τὸ μὲν γὰρ εὐπορίας, τὸ δ' ὁσιότητος σημεῖον. ἔπειτα γονεῖς γηροτροφεῖν καλῶς ταῖς τ' ἐκείνων βουλήσεσι τὸν αὐτοῦ βίον εὐπειθῆ κατασκευάζειν. ὁ γὰρ μὴ τοιοῦτος, ἀλλὰ τῶν τε τῆς φύσεως τῶν τε τῆς πόλεως νόμων ὀλιγωρῶν,

---

βουλευτικὸν ἐκδεχομένην ἐνεργεῖν ἤδη καὶ τοῦ ἀλόγου συμπαρόντος καὶ συνεφελκομένου ταῖς κρίσεσιν.

48 *Τοῦ αὐτοῦ* (Plut. cons. ad Apoll. cap. 4 p. 103 a).

Καὶ γὰρ περὶ τἀγαθὸν ἡ φρόνησις πραγματεύεται τετραχῶς, ἢ κτωμένη τἀγαθά, ἢ φυλάττουσα, ἢ αὔξουσα, ἢ χρωμένη δεξιῶς. οὗτοι τῆς φρονήσεως καὶ τῶν ἄλλων ἀρετῶν εἰσι κανόνες, οἷς πρὸς ἀμφότερα χρηστέον.

ἀμφοτέρους τοὺς τῆς δικαιοσύνης τρόπους παραβέβηκε. καὶ μὴν καὶ γυναικὸς καὶ παίδων ἐπιμελητέον καλῶς καὶ φιλανθρώπως· οἵ μὲν γὰρ εἰς τὸ γῆρας ἀμείβονται ταῖς θεραπείαις, ἡ δ' ἐν ταῖς νόσοις καὶ ταῖς καθ' ἡμέραν οἰκονομίαις ἀποδώσει τὴν εὐεργεσίαν. ἐὰν δέ τινι συμβάλλειν ἀνάγκη ᾖ, μετὰ τοῦ βεβαίου πειρῶ τοῦτο πράττειν· φρονιμωτάτου γὰρ ἀνδρὸς δανείσαντα φρονίμως, ἀπολαβεῖν φιλικῶς, ἢ συναλλάξαντα φιλανθρώπως, κομίσασθαι φιλαπεχθημόνως.

51 Δημοκρίτου.

Φρονήσιος ἔργον μέλλουσαν ἀδικίην φυλάξασθαι, ἀναλγησίης δὲ τὸ γενόμενον μὴ ἀμύνασθαι.

52 Ἐκ μὲν τῆς μαντικῆς πρόνοιαν ἔφασαν δεῖν ἐπιζητεῖν, ἐκ δὲ τῆς ἰατρικῆς τῆς τε προνοίας ἐπανόρθωσιν· ταῦτα γὰρ εἶναι πέρατα τῆς ἰατρικῆς ἐπιστήμης· ἐκ δὲ τῆς μουσικῆς αἴσθησιν ἀκριβῆ τε καὶ ἐπιστημονικήν, ἐκ δὲ τῶν μαθηματικῶν ὀνομαζομένων συλλογισμόν τε καὶ ἀπόδειξιν τῶν δι' αὐτῶν νοημάτων.

53 Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης εἶπεν "ἐπειδὴ μὴ γίνεται τὰ πράγματα ὡς βουλόμεθα, δεῖ βούλεσθαι ὡς γίνεται."

54 Ἀριστοτέλους.

Νόμιζε τὴν εὐδαιμονίαν οὐκ ἐν τῷ πολλὰ κεκτῆσθαι γίγνεσθαι, ἀλλ' ἐν τῷ τῇ ψυχῇ εὖ διακεῖσθαι. καὶ γὰρ οὐδὲ τὸ σῶμα αὐτὸ τὸ λαμπρᾷ ἐσθῆτι κεκοσμημένον φαίη τις εἶναι μακάριον, ἀλλὰ τὸ τὴν ὑγείαν ἔχον καὶ σπουδαίως διακείμενον, κἂν μηδὲν τῶν προειρημένων αὐτῷ παρῇ· τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον καὶ ψυχὴ ἐὰν ᾖ πεπαιδευμένη, τὴν τοιαύτην καὶ τὸν τοι-

οὗτον ἄνθρωπον εὐδαίμονα προσαγορευτέον ἐστίν, οὐκ ἂν τοῖς ἐκτὸς ᾖ λαμπρῶς κεκοσμημένος, αὐτὸς μηδενὸς ἄξιος ὤν. οὐδὲ γὰρ ἵππον, κἂν ψέλλια χρυσᾶ καὶ σκευὴν ἔχῃ πολυτελῆ φαῦλος ὤν, τὸν τοιοῦτον ἄξιόν τινος νομίζομεν εἶναι, ἀλλ' ὃς ἂν διακείμενος ᾖ σπουδαίως, τοῦτον μᾶλλον ἐπαινοῦμεν. ὥσπερ γὰρ εἴ τις τῶν οἰκετῶν αὑτοῦ χείρων εἴη, καταγέλαστος ἂν γένοιτο, τὸν αὐτὸν τρόπον οἷς πλείονος ἀξίαν τὴν κτῆσιν εἶναι συμβέβηκε τῆς ἰδίας φύσεως, ἀθλίους τούτους εἶναι δεῖ νομίζειν. καὶ τοῦτο κατ' ἀλήθειαν οὕτως ἔχει· τίκτει γάρ, ὥσπερ φησὶν ἡ παροιμία, κόρος μὲν ὕβριν, ἀπαιδευσία δὲ μετ' ἐξουσίας ἄνοιαν. τοῖς γὰρ διακειμένοις τὰ περὶ τὴν ψυχὴν κακῶς, οὔτε πλοῦτος οὔτε ἰσχὺς οὔτε κάλλος τῶν ἀγαθῶν ἐστιν· ἀλλ' ὅσῳ περ ἂν αὗται μᾶλλον αἱ διαθέσεις καθ' ὑπερβολὴν ὑπάρξωσι, τοσούτῳ καὶ πλείω καὶ μείζω τὸν κεκτημένον βλάπτουσι, χωρὶς φρονήσεως παραγενόμεναι.

55 Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς πρὸς Ἀσφάλιον περὶ φρονήσεως.

Τὴν ἡγεμόν' οὖσαν τῶν ἀρετῶν φρόνησιν καὶ χρωμένην αὐταῖς ὅλαις, καθάπερ ὄμμα νοερόν, τάξεις τε καὶ μέτρα αὐτῶν καὶ τὴν ἐγκαιροτάτην διάθεσιν εὖ διακοσμοῦσαν, ἐπιδείκνυσιν ὁ λόγος ὑπ' αὐγὰς ἐν τῷ παρόντι. αὕτη τοίνυν προηγουμένη μὲν παραδέχεται τὴν ἀπογέννησιν ἀπὸ τοῦ καθαροῦ καὶ τελείου νοῦ· γενομένη δ' οὕτως εἰς αὐτὸν τὸν νοῦν ἀποβλέπει καὶ τελεοῦται ὑπ' αὐτοῦ μέτρον τε καὶ παράδειγμα αὐτὸν ἔχει κάλλιστον τῶν ἐν αὐτῇ πασῶν ἐνεργειῶν. εἰ δέ τις ἐστὶ καὶ πρὸς θεοὺς ἡμῖν κοινωνία, διὰ ταύτης μάλιστα τῆς ἀρετῆς αὕτη συνίστα-

ται, καὶ κατὰ ταύτην διαφερόντως πρὸς αὐτοὺς ἀφομοιούμεθα, ἀγαθῶν τε καὶ συμφερόντων καὶ καλῶν καὶ τῶν ἐναντίων διάγνωσις ἀπὸ ταύτης ἡμῖν πάρεστιν, ἔργων τε προσηκόντων κρίσις καὶ κατόρθωσις δι' αὐτὴν κατευθύνεται. καὶ συλλήβδην φάναι, κυβερνητική τις ἐστὶ τῶν ἀνθρώπων καὶ τῆς ὅλης ἐν αὐτοῖς διατάξεως ἀρχηγός, πόλεις τε καὶ οἴκους καὶ τὸν ἴδιον ἑκάστου βίον εἰς παράδειγμα τὸ θεῖον ἀναφέρουσα διαζωγραφεῖ κατὰ τὴν ἀρίστην ὁμοιότητα, τὸ μὲν ἐξαλείφουσα, τὸ δὲ ἐναπομοργνυμένη, τὰ δὲ ἀμφότερα συμμέτρως ἀπεικάζουσα. εἰκότως ἄρα καὶ θεοειδεῖς ἀπεργάζεται τοὺς ἔχοντας αὐτὴν ἡ φρόνησις.

56 *Περιάνδρου.*

Περίανδρος ἐρωτηθεὶς τί μέγιστον ἐν ἐλαχίστῳ εἶπε "φρένες ἀγαθαὶ ἐν σώματι ἀνθρώπου."

57 *Δημοκρίτου.*

Αἱ μεγάλαι τέρψιες ἀπὸ τοῦ θεᾶσθαι τὰ καλὰ τῶν ἔργων γίνονται.

58 *Πλάτωνος* (Phaedr. 239 a).

Φθονερὸν δὴ ἀνάγκη εἶναι, καὶ πολλῶν μὲν ἄλλων συνουσιῶν ἀπείργοντα καὶ ὠφελίμων, ὅθεν ἂν μάλιστα ἀνὴρ γένοιτο, μεγάλης αἴτιον εἶναι βλάβης· μεγίστης δὲ τῆς ὅθεν ἂν φρονιμώτατός τις εἴη· τοῦτο δὲ ἡ θεία φιλοσοφία τυγχάνει ὄν, ἧς ἐραστὴν παιδικὰ ἀνάγκη πόρρωθεν εἴργειν, περίφοβον ὄντα τοῦ καταφρονηθῆναι.

59 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πέφυκε ξυνιέναι εἰς τὸ αὐτὸ φρόνησίς τε καὶ δύναμις μεγάλη· καὶ ταῦτα ἄλληλα ἀεὶ διώκει καὶ ζητεῖ καὶ συγγίνεται.

60 *Πυθαγόρου.*

Ὑπομίμνησκε σεαυτὸν ὅτι πάντες ἄνθρωποι μέγιστον ἀγαθὸν τὴν φρόνησιν εἶναι λέγουσιν, ὀλίγοι δέ εἰσιν οἳ τὸ μέγιστον ἀγαθὸν τοῦτο κτήσασθαι εὐτονήσαντες.

61 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ὁ φιλόσοφος, πολλὰ τῶν φίλων αὐτῷ πεμπόντων, ἐπειδὴ μηδὲν δεχόμενος ἐπὶ τούτῳ παρὰ τῆς Ξανθίππης εὐθύνετο, ἔφη "ἂν τὰ διδόμενα πάντα ἑτοίμως λαμβάνωμεν, οὐδ' αἰτοῦντες τοὺς διδόντας ἕξομεν."

62 *Διογένους.*

Ἔφη τις τὸν Διογένην ἀνόητον εἶναι· ὃ δὲ "ἀνόητος μὲν οὐκ εἰμὶ" ἔφη "τὸν δὲ αὐτὸν ὑμῖν νοῦν οὐκ ἔχω."

63 *Διογένους.*

Πωλούμενος ἐν Κορίνθῳ, ἐρομένου τοῦ κήρυκος "τί ἐπίστασαι;" "ἀνθρώπων" ἔφη "ἄρχειν." καὶ ὁ κήρυξ γελάσας "μέγα ἐπιτήδευμα πωλῶ, εἴ τις θέλει πρίασθαι κύριον."

64 *Γαΐου ὑπὲρ δεσποτῶν.*

Σωφρονέστερον δὲ οἶμαι τοῦ μετα τὸ παθεῖν ἐγκαλεῖν τὸ πρὶν παθεῖν φυλάξασθαι τὸ μὴ παθεῖν.

65 *Διονυσίου* (Plut. Mor. p. 175 f).

Ξένου τινὸς ἰδίᾳ φράσειν φάσκοντος αὐτῷ, ὅπως προειδήσει τοὺς ἐπιβουλεύοντας, ἐκέλευσεν εἰπεῖν. ὃ δὲ προελθὼν "δός" ἔφη "μοι τάλαντον, ἵνα δόξῃς μεμαθηκέναι τὰ σημεῖα τῶν ἐπιβουλευόντων." ἔδωκεν οὖν θαυμάζων τὴν μέθοδον τοῦ ἀνθρώπου.

66 *Χρυσίππου.*

Χρύσιππος ὁ στωϊκὸς ἔφη τὴν διάνοιαν εἶναι λόγου πηγήν.

67 Σωκράτους.

Ὥσπερ οἱ ἐν εὐδίᾳ πλέοντες καὶ τὰ πρὸς τὸν χειμῶνα ἔχουσιν ἕτοιμα, οὕτως οἱ ἐν εὐτυχίᾳ φρονοῦντες καὶ τὰ πρὸς τὴν ἀτυχίαν ἡτοιμάκασι βοηθήματα.

68 Ἡροδότου ἱστορίας ζ′ (16).

Ἶσον ἐκεῖνο, ὦ βασιλεῦ, παρ᾽ ἐμοὶ κέκριται φρονέειν τε εὖ καὶ τῷ λέγοντι χρηστὰ ἐθέλειν πείθεσθαι.

69 Ἡροδότου ἱστορίας γ′ (52).

Σὺ δὲ μαθὼν ὅσον φθονέεσθαι κρεῖσσόν ἐστιν ἢ οἰκτείρεσθαι, ἅμα τε ὁκοῖον ἐς τοὺς τοκέας καὶ ἐς τοὺς κρέσσονας τεθυμῶσθαι, ἄπιθι εἰς τὰ οἰκεῖα.

70 Πλάτωνος νόμων ιβ′ (963 c).

Οἷον ὅτε τέτταρα ἐφήσαμεν ἀρετῆς εἴδη γεγονέναι, δῆλον ὡς ἓν ἕκαστον ἀνάγκη φάναι, τεττάρων ὄντων. Τί μήν; Καὶ μὴν ἕν γε αὖ πάντα ταῦτα προσαγορεύομεν· ἀνδρίαν γὰρ φαμὲν ἀρετὴν εἶναι, καὶ τὴν φρόνησιν ἀρετήν, καὶ τὰ δύο τἄλλα, ὡς ὄντα οὐ πολλά, ἀλλ᾽ ἓν τοῦτο μόνον ἀρετήν. Πάνυ μὲν οὖν. Ἧι μὲν τοίνυν διαφέρετον αὐτοῖν τούτω τὼ δύο καὶ δύ᾽ ὀνόματα ἐλαβέτην καὶ τὰ ἄλλα, οὐδὲν χαλεπὸν εἰπεῖν· ᾗ δὲ ἐν ἀμφοῖν ἐπωνομάσαμεν ἀρετὴν καὶ τοῖς ἄλλοις, οὐκ εὐπετὲς ἔτι. Πῶς λέγεις; Οὐδὲν χαλεπὸν ὅ γε λέγω δηλῶσαι· διανειμώμεθα γὰρ ἀλλήλοις τὴν ἐρώτησιν καὶ ἀπόκρισιν. Πῶς αὖ φράζεις; Ἐρώτησόν με, τί ποτε ἓν προσαγορεύοντες ἀρετήν, ἀμφότερα δύο πάλιν αὐτὰ προσείπομεν, τὸ μὲν ἀνδρείαν, τὸ δὲ φρόνησιν. Ἐρῶ γάρ σοι τὴν αἰτίαν, ὅτι τὸ μέν ἐστι περὶ φόβον, οὗ καὶ τὰ θηρία

μετέχει τῆς ἀνδρείας, καὶ τά γε τῶν παίδων ἤθη τῶν πάνυ νέων· ἄνευ γὰρ λόγου καὶ φύσει γίγνεται ἀνδρεία ψυχή· ἄνευ δὲ αὖ λόγου ψυχὴ φρόνιμός τε καὶ νοῦν ἔχουσα οὔτ' ἐγένετο πώποτε οὔτ' ἔστιν οὐδ' αὖθίς ποτε γενήσεται, ὡς ὄντος ἑτέρου. Ἀληθῆ λέγεις.

71 Πλάτωνος (?).

Πῶς γάρ, ὦ φίλε, δύναιτο ἄν τις ἀρχόμενος ἀπὸ δόξης ψευδοῦς μηδὲ τῆς ἀληθείας ἐπὶ μικρὸν μέρος ἀφικόμενος, κτήσασθαι σχεδὸν φρόνησιν; Οὐδαμῶς.

72 Σωκράτους.

Ὥσπερ εἰς κενὸν σκάφος τὸ ἀπὸ τῆς φρονήσεως ἕρμα δεῖ προσεμβάλλειν.

73 Ὁ φρόνιμος ὥσπερ εἰς ὁδὸν εἰς τὸν βίον οὐ τὰ πολλοῦ ἄξια συντίθησιν ἐφόδια, ἀλλὰ τὰ ἀναγκαιότατα.

74 Κρίτωνος ἤτοι Δαμίππου Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ φρονήσεως καὶ εὐτυχίας.

Φρόνασις καὶ εὐτυχία ὧδε ἔχοντι ποτ' ἄλλαλα. φρόνασις μὲν τὸ ῥητὸν καὶ λόγον ἔχον· τεταγμένον γάρ τι καὶ ὡρισμένον ἐντί· εὐτυχία δὲ τὸ ἄρρητον καὶ τὸ ἄλογον· ἄτακτον γάρ τι καὶ ἀόριστόν ἐντι. καὶ τὸ μὲν ἀρχᾷ καὶ δυνάμει πρᾶτον, τὸ δὲ ἀρχᾷ καὶ δυνάμει δεύτερον· τὸ μὲν γὰρ κυβερνῆν καὶ ὁρίζεν πέφυκε, τὸ δὲ κυβερνῆσθαι καὶ ὁρίζεσθαι. λαμβάνοντι μάντοι γε συναρμογὰν ἀμφότερα, φρονάσιος καὶ εὐτυχίας εἰς ταυτὸ συνδραμοίσας. αἰεὶ γὰρ δεῖ τὰν μὲν ῥητὰν καὶ λόγον ἔχοισαν φύσιν ἔχεν ὃ περανεῖ τε καὶ συντάξει, τὰν δὲ ἄρρητον καὶ ἄλογον ἔχεν ὑφ' ὧ περανθήσεταί τε καὶ συνταχθήσεται. ἔχει γὰρ οὕτως

ὁ λόγος κατὰ πάντων, ὅ τε τᾶς ἀπείρου φύσιος καὶ τᾶς περαινοίσας. τὰ μὲν γὰρ ἄπειρα φύσιν ἔχει περαίνεσθαί τε καὶ συντετάχθαι ὑπὸ τῶν λόγον ἐχόντων ἀεὶ καὶ φρόνασιν· ὕλας γὰρ καὶ οὐσίας ἔχοντι τάξιν· τὰ δὲ περαίνοντα ἐξ αὐτέων συντετάχθαι τε καὶ ὡρίσθαι· τέχνας γὰρ καὶ αἰτίας ἐνεργατικᾶς ἐπέχοντι τάξιν.

75 Ἐν ταυτῷ.

Ἁ δὲ συναρμογὰ ταυτᾶν τᾶν φυσίων κατ᾽ ἄλλα καὶ ἄλλα γινομένα μεγάλαν καὶ ποικίλαν πεποίηκε τὰν διαφορὰν τῶν συναρμοσμένων. ἔν τε γὰρ τᾷ τῶ ὅλω περιοχᾷ συναρμογὰ ἀμφοτέρων τᾶν φυσίων, τᾶς τε ἀεικινάτω φύσιος καὶ τᾶς ἀειπαθέος, κόσμος ἐντί· ἄλλως γὰρ οὐκ ἐνεδέχετο σώζεσθαι τό τε ὅλον καὶ τὸ πᾶν, μὴ συναρμογὰν ἔχοντος τῶ γεννατῶ ποτὶ τὸ θεῖον καὶ τῶ ἀειπαθέος ποτὶ τὸ ἀεικίνατον. ἔν τε τῷ ἀνθρώπῳ ἁ συναρμογὰ τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς ποτὶ τὸ λόγον ἔχον, ἀρετά. οὔτε γὰρ ἐν τούτοις ἐνδέχεται, στάσιος ἐοίσας ἐν ἀμφοτέροις τοῖς μέρεσιν, ἀποτελεσθῆμεν ἀρετάν. καὶ ἐν πόλει δὲ τῶν μὲν ἀρχομένων ποτὶ τὼς ἄρχοντας ἀποτελεῖ κράτος καὶ ὁμόνοιαν· τὸ μὲν γὰρ ἄρχεν ἴδιον τῶ κρείσσονος, τὸ δ᾽ ἄρχεσθαι ἔργον τῶ χείρονος, τὸ δὲ κρατὲν καὶ ὁμονοὲν κοινὸν ἀμφοτέρων. ὁ δὲ αὐτὸς τρόπος τᾶς ἐπὶ τῶ ὅλω καὶ τᾶς ἐπὶ τῶ οἴκω συναρμογᾶς· συντίθεταί τε καὶ συντάσσεται, σπωδᾶς καὶ παιδιᾶς ποτὶ λόγον ἐς τὸ αὐτὸ συνδραμοίσας, καὶ λύπας δὲ καὶ ἁδονᾶς καὶ εὐτυχίας καὶ ἀτυχίας. χρήζει γὰρ ὁ βίος τυγχάνεν καὶ ἀνέσιος καὶ ἐπιτάσιος, καὶ σκυθρωπότατος καὶ διαχύσιος, καὶ εὐτυχίας καὶ ἀτυχίας. ἃ μὲν γὰρ συνέχεν καὶ συνάγεν δύναται τὸν νόον ἐς τὰν εὐμαχα-

νίαν καὶ ἐς τὰν φρόνασιν, ἃ δ' ἄμπαυσιν καὶ διάχυσιν παρεχόμενα καινότερον καὶ εὔψυχον αὐτὸν αὖ παρασκευάζοντι ποτὶ τὰς πράξιας. εἰ δὲ καὶ τὸ ἓν τούτων ἐνδυναστεύοι κατὰ τὸν βίον, ἑτερομερής τε καὶ ἑτεροκλινὴς γίνεται ὁ βίος, ὅκα μὲν ἐπὶ τὸ σκυθρωπόν τε καὶ χαλεπὸν καταφερόμενος, ὅκα δὲ ἐπὶ τὸ ἀνειμένον καὶ κοῦφον· ἁ δὲ συναρμογὰ τούτων ἁπάντων ὀφείλει γίνεσθαι ποτὶ τὰν φρόνασιν· αὐτὰ γὰρ ἁ διενεργοῦσα ἐντὶ τό τε ἄπειρον καὶ τὸ περαῖνον ἐν ταῖς πράξεσι, διόπερ καὶ τᾶν ἄλλαν ἀρετᾶν αὕτα ἁγεμών ἐντι καὶ μάτηρ. πᾶσαι γὰρ ποτὶ τὸν λόγον καὶ νόμον τὸν ταύτας συναρμοσμέναι τε καὶ συντεταγμέναι τυγχάνοντι. περαίνεται δὴ ὁ λόγος ἤδη μοι κατ' εὐθεῖαν· τὸ γὰρ ἄλογον καὶ τὸ ῥητὸν ἐν πᾶσιν ἔνι, καὶ τὸ μὲν ὁρίζει καὶ περαίνει, τὸ δ' ὁρίζεται καὶ περαίνεται, τὸ δ' ἐξ ἀμφοτέρων αὐτῶν συγκείμενον ἅ τε τῶ ὅλω καὶ τῶ παντὸς συναρμογά ἐντι.

76 Ἀρχύτα Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ εὐδαίμονος.

Φρόνιμος δὲ ἀνὴρ οὕτως ἂν μάλιστα γένοιτο, εἰ φύσιος πρᾶτον εὐστόχω τε καὶ μναμονικᾶς καὶ φιλοπόνω τυχὼν ἐν λογισμοῖς τε καὶ μαθημάτεσσι καὶ ταῖς ποτ' ἀκρίβειαν θεωρίαις εὐθὺς ἐκ νέων γυμνάσαιτο τὰν διάνοιαν φιλοσοφίας ἁπτόμενος ὀρθᾶς, μετὰ δὲ ταύτας θεῶν τε καὶ νόμων καὶ βίων ἀνθρωπίνων ἐμπειρίαν λάβοι. δύο γάρ ἐντι ἐξ ὧν τῶ φρονίμω διάθεσις παραγίνεται, ὧν τὸ μέν ἐντι ἕξιν μαθηματικάν τε καὶ γνωστικὰν λαβέν, τὸ δὲ θεωρήματα καὶ πράγματα πολλὰ ἐπελθόντα, τὰ μὲν καὶ αὐτὸν ἰδόντα τὰ δὲ καὶ δι' ἑτέρω τινὸς τρόπω κατανοήσαντα. οὔτε γὰρ ὁ ἐν λογισμοῖς καὶ μαθημάτεσσι καὶ ταῖς ποτ' ἀκρί-

βειαν θεωρίαις εὐθὺς ἐκ νέων γυμνάσας τὰν διάνοιαν ἱκανός ἐντι ποτὶ φρόνασιν, οὔθ᾽ ὁ τούτων μὲν ἀπολειφθείς, ἐν ἀκροαμάτεσσι δὲ πολλοῖς καὶ πραγμάτεσσιν ἀναστρεφθείς. ἀλλ᾽ ὃ μὲν ἐν τῷ καθ᾽ ἕκαστα κρίνεν τυφλὸς ἐγένετο τὰν διάνοιαν, ὃ δ᾽ ἐν τῷ καθόλω θεωρὲν ἀεί. καθάπερ γὰρ ἐπὶ τῶν λογισμῶν τὰ μέρεα συντιθέντας τὸ ὅλον ἐξ αὐτῶν λογίζεσθαι, οὕτω καὶ ἐπὶ τῶν πραγμάτων δύναται ὁ μὲν λόγος τὰν καθόλω θεωρίαν ὑπογράφεν, ἁ δ᾽ ἐμπειρία καθ᾽ ἕκαστα κρίνεν.

77 Ἐπικτήτου.

Οὐδεὶς φιλοχρήματος καὶ φιλήδονος καὶ φιλόδοξος φιλάνθρωπος, ἀλλὰ μόνος ὁ φιλόκαλος.

78 Ὥσπερ οὐκ ἂν ἐβούλου ἐν νηῒ μεγάλῃ καὶ γλαφυρᾷ καὶ πολυχρύσῳ πλέων βαπτίζεσθαι, οὕτω μηδὲ ἐν οἰκίᾳ αἱροῦ ὑπερμεγέθει καὶ πολυτελεῖ αὐλιζόμενος χειμάζεσθαι.

79 Δημητρίου Φαληρέως τῶν ἑπτὰ σοφῶν ἀποφθέγματα.

α. Κλεόβουλος Εὐαγόρου Λίνδιος ἔφη.

Μέτρον ἄριστον. Πατέρα δεῖ αἰδεῖσθαι. Εὖ τὸ σῶμα ἔχειν καὶ τὴν ψυχήν. Φιλήκοον καὶ μὴ πολυήκοον. Ὀψιμαθῆ ἢ ἀμαθῆ. Γλῶσσαν εὔφημον κεκτῆσθαι. Ἀρετῆς οἰκεῖον [καὶ κακίας ἀλλότριον] ἀδικίαν μισεῖν. Εὐσέβειαν φυλάσσειν. Πολίταις τὰ βέλτιστα συμβουλεύειν. Γλώττης κρατεῖν. Βίᾳ μηδὲν πράττειν. Τέκνα παιδεύειν. Τύχῃ εὔχεσθαι. Ἔχθρας διαλύειν. Τὸν τοῦ δήμου ἐχθρὸν πολέμιον νομίζειν. Γυναικὶ μὴ μάχεσθαι μηδὲ ἄγαν φρονεῖν ἀλλοτρίων παρόντων· τὸ μὲν γάρ ἐστι χέρηον, τὸ δὲ

μανίαν δύναται παρέχειν. Οἰκέτας μεθύοντας μὴ κολάζειν· εἰ δὲ μή, δόξεις καὶ αὐτὸς παροινεῖν. Γαμεῖν ἐκ τῶν ὁμοίων· ἐὰν γὰρ ἐκ τῶν κρειττόνων, δεσπότας, οὐ συγγενεῖς κτήσῃ. Μὴ ἐπιγέλα τῷ σκώπτοντι· ἀπεχθὴς γὰρ ἔσῃ τοῖς σκωπτομένοις. Εὐποροῦντα μὴ ὑπερήφανον εἶναι, ἀποροῦντα μὴ ταπεινοῦσθαι.

β. Σόλων Ἐξηκεστίδου Ἀθηναῖος ἔφη.

Μηδὲν ἄγαν. Κριτὴς μὴ κάθησο· εἰ δὲ μή, τῷ ληφθέντι ἐχθρὸς ἔσῃ. Ἡδονὴν φεῦγε ἥτις λύπην τίκτει. Φύλασσε τρόπου καλοκαγαθίαν ὅρκου πιστοτέραν. Σφράγιζε τοὺς μὲν λόγους σιγῇ, τὴν δὲ σιγὴν καιρῷ. Μὴ ψεύδου, ἀλλ' ἀλήθευε. Τὰ σπουδαῖα μελέτα. Τῶν γονέων μὴ λέγε δικαιότερα. Φίλους μὴ ταχὺ κτῶ, οὓς δ' ἂν κτήσῃ, μὴ ταχὺ ἀποδοκίμαζε. Ἄρχεσθαι μαθὼν ἄρχειν ἐπιστήσῃ. Εὐθύνας ἑτέρους ἀξιῶν διδόναι καὶ αὐτὸς ὕπεχε. Συμβούλευε μὴ τὰ ἥδιστα ἀλλὰ τὰ βέλτιστα τοῖς πολίταις. Μὴ θρασύνου. Μὴ κακοῖς ὁμίλει. Χρῶ τοῖς θεοῖς. Φίλους εὐσέβει. Γονεῖς αἰδοῦ. Νοῦν ἡγεμόνα ποιοῦ. Ὃ δ' ἂν ἴδῃς μὴ λέγε. Εἰδὼς σίγα. Τοῖς σεαυτοῦ πρᾶος ἴσθι. Τὰ ἀφανῆ τοῖς φανεροῖς τεκμαίρου.

γ. Χίλων υἱὸς Δαμαγήτου Λακεδαιμόνιος ἔφη.

Γνῶθι σαυτόν. Πίνων μὴ πολλὰ λάλει· ἁμαρτήσεις γάρ. Μὴ ἀπείλει τοῖς ἐλευθέροις· οὐ γὰρ καλόν. Μὴ κακολόγει τοὺς πλησίον· εἰ δὲ μή, ἀκούσῃ ἐφ' οἷς λυπηθήσῃ. Ἐπὶ τὰ δεῖπνα τῶν φίλων βραδέως πορεύου, ἐπὶ δὲ τὰς ἀτυχίας ταχέως. Γάμους εὐτελεῖς ποιοῦ. Τὸν τετελευτηκότα μακάριζε. Πρεσβύτερον σέβου. Τὸν τὰ ἀλλότρια περιεργαζόμενον

μίσει. Ζημίαν αἱροῦ μᾶλλον ἢ κέρδος αἰσχρόν· τὸ μὲν γὰρ ἅπαξ σε λυπήσει, τὸ δ' ἀεί. Τῷ δυστυχοῦντι μὴ ἐπιγέλα. Τραχέσιν ἥσυχον σεαυτὸν πάρεχε, ὅπως σε αἰσχύνωνται μᾶλλον ἢ φοβῶνται. Τῆς ἰδίας οἰκίας προστάτει. Ἡ γλῶσσά σου μὴ προτρεχέτω τοῦ νοῦ. Θυμοῦ κράτει. Μὴ ἐπιθύμει ἀδύνατα. Ἐν ὁδῷ μὴ σπεῦδε προάγειν μηδὲ τὴν χεῖρα κινεῖν· μανικὸν γάρ. Νόμοις πείθου. Ζημίᾳ χρῶ. Ἀδικούμενος διαλλάσσου, ὑβριζόμενος τιμωροῦ.

δ. Πιττακὸς Μυτιληναῖος.

Ἐγγύη, παρὰ δ' ἄτη. Φίλων παρόντων καὶ ἀπόντων μέμνησο. Μὴ τὴν ὄψιν καλλωπίζου, ἀλλ' ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν ἴσθι καλός. Μὴ πλούτει κακῶς. Μή σε διαβαλλέτω λόγος εἰς τοὺς πίστεως κεκοινωνηκότας. Κολακεύειν γονεῖς μὴ ὄκνει. Μὴ προσδέχου τὸ φαῦλον. Οἵους ἂν ἐράνους εἰσενέγκῃς τοῖς γονεῦσι, τοιούτους αὐτὸς ἐν τῷ γήρᾳ παρὰ τῶν τέκνων προσδέχου. Χαλεπὸν τὸ εὖ γνῶναι. Ἥδιστον τὸ ἐπιθυμίας τυχεῖν. Ἀνιαρὸν ἀργία. Βλαβερὸν ἀκρασία. Βαρὺ ἀπαιδευσία. Δίδασκε καὶ μάνθανε τὸ ἄμεινον. Ἀργὸς μὴ ἴσθι μηδ' ἂν πλουτῇς. Κακὰ ἐν οἴκῳ κρύπτε. Φθόνου χάριν μὴ οἰκτείρου. Μέτρῳ χρῶ. Μὴ πᾶσι πίστευε. Ἄρχων κόσμει σεαυτόν.

ε. Θαλῆς ὁ Μιλήσιος.

Καιρὸν γνῶθι. Ὃ μέλλεις ποιεῖν, μὴ λέγε· ἀποτυχὼν γὰρ καταγελασθήσῃ. Τοῖς ἐπιτηδείοις χρῶ. Ὅσα νεμεσᾷς τῷ πλησίον, αὐτὸς μὴ ποίει. Κακοπραγοῦντα μὴ ὀνείδιζε· ἐπὶ γὰρ τούτοις νέμεσις θεῶν κάθηται. Παρακαταθήκας ἀπόδος. Ἀνέχου ὑπὸ τῶν πλησίον [μικρά. Ἀγάπα τὸν πλησίον] μικρὰ ἐλατ-

τούμενος. Τὸν φίλον κακῶς μὴ λέγε, μὴ δ' εὖ τὸν ἐχθρόν· ἀσυλλόγιστον γὰρ τὸ τοιοῦτον. Δεινὸν τὸ συνιδεῖν τὸ μέλλον. Ἀσφαλὲς τὸ γενόμενον, ἀσαφὲς τὸ μέλλον. Πιστὸν γῆ, ἄπιστον θάλασσα, ἄπληστον κέρδος. Κτῆσαι ἀίδια. Θεραπείαν ζήτει. Φίλει τὴν παιδείαν σωφροσύνην φρόνησιν ἀλήθειαν πίστιν ἐμπειρίαν ἐπιδεξιότητα ἑταιρείαν ἐπιμέλειαν οἰκονομίαν τέχνην εὐσέβειαν.

ζ. Βίας Τευτάμου Πριηνεὺς ἔφη.

Οἱ πλεῖστοι ἄνθρωποι κακοί. Ἐς τὸ ἔσοπτρον ἐμβλέψαντα δεῖ, εἰ μὲν καλὸς φαίνῃ, καλὰ ποιεῖν, εἰ δὲ αἰσχρός, τὸ τῆς φύσεως ἐλλιπὲς διορθοῦσθαι τῇ καλοκαγαθίᾳ. Βραδέως ἐγχείρει, ὃ δ' ἂν ἄρξῃ διαβεβαιοῦ. Μίσει τὸ ταχὺ λαλεῖν, μὴ ἁμάρτῃς· μετάνοια γὰρ ἀκολουθεῖ. Μήτε εὐήθης ἴσθι μήτε κακοήθης. Ἀφροσύνην μὴ προσδέχου. Φρόνησιν ἀγάπα. Περὶ θεῶν λέγε ὡς εἰσὶ θεοί. Νόει τὸ πραττόμενον. Ἄκουε πολλά. Λάλει καίρια. Πένης ὢν πλουσίοις μὴ ἐπιτίμα, ἢν μὴ μέγα ὠφελῇς. Ἀνάξιον ἄνδρα μὴ ἐπαίνει διὰ πλοῦτον. Πείσας λάβε, μὴ βιασάμενος. Ὅταν ἀγαθὸν πράσσῃς, θεούς, μὴ σεαυτὸν αἰτιῶ. Κτῆσαι ἐν μὲν νεότητι εὐπραξίαν, ἐν δὲ τῷ γήραι σοφίαν. Ἕξεις ἔργῳ μνήμην, καιρῷ εὐλάβειαν, τρόπῳ γενναιότητα, πόνῳ ἐγκράτειαν, φόβῳ εὐσέβειαν, πλούτῳ φιλίαν, λόγῳ πειθώ, σιγῇ κόσμον, γνώμῃ δικαιοσύνην, τόλμῃ ἀνδρείαν, πράξει δυναστείαν, δόξῃ ἡγεμονίαν, φύσει εὐγένειαν.

η. Περίανδρος Κυψέλου Κορίνθιος ἔφη.

Μελέτα τὸ πᾶν. Καλὸν ἡσυχία. Ἐπισφαλὲς προπέτεια. Κέρδος αἰσχρὸν φύσεως κατηγορία. Δημο-

κρατία κρεῖττον τυραννίδος. Αἱ μὲν ἡδοναὶ θνηταί, αἱ δ' ἀρεταὶ ἀθάνατοι. Εὐτυχῶν μὲν μέτριος ἴσθι, ἀτυχῶν δὲ φρόνιμος. Φειδόμενον κρεῖττον ἀποθανεῖν ἢ ζῶντα ἐνδεῖσθαι. Σεαυτὸν ἄξιον παρασκεύαζε τῶν γονέων. Ζῶν μὲν ἐπαινοῦ, ἀποθανὼν δὲ μακαρίζου. Φίλοις εὐτυχοῦσι καὶ ἀτυχοῦσιν ὁ αὐτὸς ἴσθι. Ὃν ἂν ἑκὼν ὁμολογήσῃς πονηρόν, παράβαινε. Λόγων ἀπορρήτων ἐκφορὰν μὴ ποιοῦ. Λοιδόρει ὡς ταχὺ φίλος ἐσόμενος. Τοῖς μὲν νόμοις παλαιοῖς χρῶ, τοῖς δ' ὄψοις προσφάτοις. Μὴ μόνον τοὺς ἁμαρτάνοντας κόλαζε, ἀλλὰ καὶ τοὺς μέλλοντας κώλυε. Δυστυχῶν κρύπτε, ἵνα μὴ τοὺς ἐχθροὺς εὐφράνῃς.

80 *Σωσιάδου τῶν ἑπτὰ σοφῶν ὑποθῆκαι.*

Ἕπου θεῷ. Νόμῳ πείθου. Θεοὺς σέβου. Γονεῖς αἰδοῦ. Ἡττῶ ὑπὲρ δικαίου. Γνῶθι μαθών. Ἀκούσας νόει. Σαυτὸν ἴσθι. Γαμεῖν μέλλων καιρὸν γνῶθι. Φρόνει θνητά. Ξένος ὢν ἴσθι. Ἑστίαν τίμα. Ἄρχε σεαυτοῦ. Φίλοις βοήθει. Θυμοῦ κράτει. Φρόνησιν ἄσκει. Πρόνοιαν τίμα. Ὅρκῳ μὴ χρῶ. Φιλίαν ἀγάπα. Παιδείας ἀντέχου. Δόξαν δίωκε. Σοφίαν ζήλου. Καλὸν εὖ λέγε. Ψέγε μηδένα. Ἐπαίνει ἀρετήν. Πρᾶττε δίκαια. Φίλοις εὐνόει. Ἐχθροὺς ἀμύνου. Εὐγένειαν ἄσκει. Κακίας ἀπέχου. Κοινὸς γίνου. Ἴδια φύλασσε. Ἀλλοτρίων ἀπέχου. Εὔφημος ἴσθι. Ἄκουε πάντα. Φίλῳ χαρίζου. Μηδὲν ἄγαν. Χρόνου φείδου. Ὅρα τὸ μέλλον. Ὕβριν μίσει. Ἱκέτας αἰδοῦ. Πᾶσιν ἁρμόζου. Υἱοὺς παίδευε. Ἔχων χαρίζου. Δόλον φοβοῦ. Εὐλόγει πάντας. Φιλόσοφος γίνου. Ὅσια κρῖνε. Γνοὺς πρᾶττε. Φόνου ἀπέχου. Εὔχου δυνατά. Σοφοῖς χρῶ. Ἦθος δοκίμαζε. Λαβὼν ἀπόδος. Ὑφορῶ μηδένα. Τέχνῃ χρῶ. Ὃ μέλ-

λεις, δός. Εὐεργεσίας τίμα. Φθόνει μηδενί. Φυλακῇ πρόσεχε. Ἐλπίδα αἴνει. Διαβολὴν μίσει. Δικαίως κτῶ. Ἀγαθοὺς τίμα. Κριτὴν γνῶθι. Γάμους κράτει. Τύχην νόμιζε. Ἐγγύην φεῦγε. Πᾶσι διαλέγου. Ὁμοίοις χρῶ. Δαπανῶν ἄρχου. Κτώμενος ἥδου. Αἰσχύνην σέβου. Χάριν ἐκτέλει. Εὐτυχίαν εὔχου. Τύχην στέργε. Ἀκούων ὅρα. Ἐργάζου κτητά. Ἔριν μίσει. Ὄνειδος ἔχθαιρε. Γλῶσσαν ἴσχε. Ὕβριν ἀμύνου. Κρῖνε δίκαια. Χρῶ χρήμασιν. Ἀδωροδόκητος δοκίμαζε. Αἰτιῶ παρόντα. Λέγε εἰδώς. Βίας μὴ ἔχου. Ἀλύπως βίου. Ὁμίλει πράως. Πέρας ἐπιτέλει μὴ ἀποδειλιῶν. Φιλοφρόνει πᾶσιν. Υἱοῖς μὴ καταρῶ. Γλώττης ἄρχε. Σεαυτὸν εὖ ποίει. Εὐπροσήγορος γίνου. Ἀποκρίνου ἐν καιρῷ. Πόνει μετὰ δικαίου. Πρᾶττε ἀμετανοήτως. Ἁμαρτάνων μετανόει. Ὀφθαλμοῦ κράτει. Βουλεύου χρόνῳ. Ἐπιτέλει συντόμως. Φιλίαν φύλασσε. Εὐγνώμων γίνου. Ὁμόνοιαν δίωκε. Ἄρρητον μὴ λέγε. Τὸ κρατοῦν φοβοῦ. Τὸ συμφέρον θηρῶ. Καιρὸν προσδέχου. Ἔχθρας διάλυε. Γῆρας προσδέχου. Ἐπὶ ῥώμῃ μὴ καυχῶ. Εὐφημίαν ἄσκει. Ἀπέχθειαν φεῦγε. Πλούτει δικαίως. Δόξαν μὴ λεῖπε. Κακίαν μίσει. Μανθάνων μὴ κάμνε. Κινδύνευε φρονίμως. Φειδόμενος μὴ λεῖπε. Χρησμοὺς θαύμαζε. Οὓς τρέφεις, ἀγάπα. Ἀπόντι μὴ μάχου. Πρεσβύτερον αἰδοῦ. Νεώτερον δίδασκε. Πλούτῳ ἀπίστει. Σεαυτὸν αἰδοῦ. Μὴ ἄρχε ὑβρίζειν. Προγόνους στεφάνου. Θνῆσκε ὑπὲρ πατρίδος. Τῷ βίῳ μὴ μάχου. Ἐπὶ νεκρῷ μὴ γέλα. Ἀτυχοῦντι συνάχθου. Χαρίζου ἀβλαβῶς. Μὴ ἐπὶ παντὶ λυποῦ. Ἐξ εὐγενῶν γέννα. Ἐπαγγέλλου μηδενί. Φθιμένους μὴ ἀδίκει. Εὖ πάσχε ὡς θνητός. Τύχῃ μὴ πίστευε. Παῖς ὢν κόσμιος ἴσθι, ἡβῶν ἐγ-

κρατής, μέσος δίκαιος, πρεσβύτερος εὔλογος. Τελεύτα ἄλυπος. [Πλήθει ἄρεσκε. Μὴ λάλει πρὸς ἡδονήν. Ὁμολογίαις ἔμμενε. Θυσίας πρόσφερε κατὰ δύναμιν. Σεαυτῷ μὴ μάχου. Μὴ ἐπὶ παντὶ λυποῦ. Τῷ βίῳ μὴ ἄχθου. μὴ φιλαίτιος ἴσθι. Ἐπαγγέλλου μηδενὶ τὸ παράπαν. Χρόνου φείδου. Ἐνδαπανώμενος καὶ ἐφ' ἃ μὴ δεῖ, ὀλίγος ἔσῃ ἐφ' ἃ δεῖ.]

81 *Ἡρακλείτου.*

Ὁκόσων λόγους ἤκουσα, οὐδεὶς ἀφικνέεται ἐς τοῦτο, ὥστε γινώσκειν ὅτι σοφόν ἐστι πάντων κεχωρισμένον.

82 *Κρύπτειν ἀμαθίην κρέσσον ἢ ἐς τὸ μέσον φέρειν.*

83 *Ἀνθρώποις γίνεσθαι ὁκόσα θέλουσιν οὐκ ἄμεινον.*

84 *Νοῦσος ὑγιείην ἐποίησεν, ἡδὺ καὶ ἀγαθόν, λιμὸς κόρον, κάματος ἀνάπαυσιν. σωφρονεῖν ἀρετὴ μεγίστη, καὶ σοφίη ἀληθέα λέγειν καὶ ποιέειν κατὰ φύσιν ἐπαΐοντας. ξυνόν ἐστι πᾶσι τὸ φρονέειν. ξὺν νόῳ λέγοντας ἰσχυρίζεσθαι χρὴ τῷ ξυνῷ πάντων. ὅκως περ νόμῳ πόλις, καὶ πόλις ἰσχυροτέρως. τρέφονται γὰρ πάντες οἱ ἀνθρώπινοι νόμοι ὑπὸ ἑνὸς τοῦ θείου· κρατέει γὰρ τοσοῦτον ὁκόσον ἐθέλει, καὶ ἐξαρκέει πᾶσι καὶ περιγίνεται.*

85 *Σωκράτους.*

Ψυχῆς ἐστὶ λόγος ἑαυτὸν αὔξων. Ἐν τῷ βίῳ, καθάπερ ἐν δράματι, χρὴ τὰ πρῶτα λέγειν οὐ τὸν πλουσιώτατον, ἀλλὰ τὸν φρονιμώτατον.

86 *Σωκράτους.*

Καλὸν ἐπὶ μὲν τῆς ἑστίας φαίνεσθαι τὸ πῦρ λαμπρόν, ἐπὶ δὲ τῆς εὐτυχίας τὸν νοῦν.

87 Δεῖ ὥσπερ εὐνομουμένης τῆς πόλεως φυγαδεύειν στασιαστὴν ἄνθρωπον, οὕτως ἐκ τῆς σωθησομένης ψυχῆς τὸν πρὸς τὰ φαῦλα κεκλικότα νοῦν.

88 Πλάτωνος (Gorg. 448 c).

Πολλαὶ τέχναι ἐν ἀνθρώποις εἰσὶν ἐκ τῶν ἐμπειριῶν ἐμπείρως εὑρημέναι. ἐμπειρία μὲν γὰρ ποιεῖ τὸν αἰῶνα ἡμῶν πορεύεσθαι κατὰ τέχνην· ἀπειρία δὲ κατὰ τύχην. ἑκάστων δὲ τούτων μεταλαμβάνουσιν ἄλλοι ἄλλων ἄλλως· τῶν δὲ ἀρίστων οἱ ἄριστοι.

89 Σὺ δὲ δὴ πρὸς θεῶν, ὦ παῖ, δυνατὸν ἡγεῖ τοῦτο; τάχα γὰρ ὑμεῖς μὲν ὀξύτερον οἱ νέοι πρὸς αὐτὸ βλέποιτε, ἡμεῖς δὲ ἀμβλύτερον. Τὸ ποῖον καὶ πρὸς τί μάλιστα λέγεις; οὐ γάρ πω κατανοῶ τὸ νῦν ἐρωτώμενον. Εἰ πάντα ἐπίστασθαί τινα ἄνθρωπόν ἐστι δυνατόν; Μακάριον μέντ' ἂν ἡμῶν, ὦ ξένε, ἦν τὸ γένος. (Plato Soph. 232 e).

90 Σωκράτους.

Οὔτε ἵππῳ χωρὶς χαλινοῦ οὔτε πλούτῳ χωρὶς λογισμοῦ δυνατὸν ἀσφαλῶς χρήσασθαι.

91 Ὁ βίος ὥσπερ ὄργανον ἀνέσει καὶ ἐπιτάσει ἁρμοττόμενος ἡδίων γίνεται.

92 Ἐπαινεῖν χρὴ τὸ κατὰ τέχνην γινόμενον.

93 Πλάτωνος (?).

Μάλιστα ἐπιμελεῖσθαι χρή, ὅπως ἕκαστος ἡμῶν τῶν ἄλλων μαθημάτων ἀμελήσας τούτου τοῦ μαθήματος καὶ μιμητὴς καὶ μαθητὴς ἔσται, ἐάν ποθεν οἷός τ' ᾖ μαθεῖν καὶ ἐξευρεῖν τίς αὐτὸν ποιήσει δυνατὸν καὶ ἐπιστήμονα, βίον χρηστὸν καὶ πονηρὸν διαγινώσκοντα τὰ βελτίω ἐκ τῶν δυνατῶν ἀεὶ πανταχοῦ αἱρεῖσθαι.

94 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τῶν Κλειτοφῶντος* (407 e).

Καὶ ὅταν λέγῃς ὡς ὅτῳ τὶς μὴ ἐπίσταται χρῆσθαι, κρεῖττον ἐᾶν τὴν τούτου χρῆσιν. εἰ δή τις μὴ ἐπίσταται ὀφθαλμοῖς χρῆσθαι μηδὲ ὠσὶ μηδὲ ξύμπαντι τῷ σώματι, τούτῳ μήτε ἀκούειν μήθ' ὁρᾶν μήτε ἄλλην χρείαν μηδεμίαν χρῆσθαι τῷ σώματι κρεῖττον ἢ ὁπηοῦν χρῆσθαι. καὶ δὴ καὶ περὶ τέχνην ὡσαύτως· ὅστις γὰρ ἂν δὴ μὴ ἐπίσταται τῇ ἑαυτοῦ λύρᾳ χρῆσθαι, δῆλον ὡς οὐδὲ τῇ τοῦ γείτονος, οὐδὲ ὅστις μὴ τῇ τῶν ἄλλων, οὐδὲ τῇ ἑαυτοῦ, οὐδὲ τῶν ὀργάνων ἄλλῳ οὐδὲ κτημάτων οὐδενί. καὶ τελευτᾷ δὴ καλῶς ὁ λόγος οὗτός σοι, ὡς ὅστις ψυχῇ μὴ ἐπίσταται χρῆσθαι, τούτῳ τὸ ἄγειν ἡσυχίαν τῇ ψυχῇ, καὶ μὴ ζῆν κρεῖττον ἢ ζῆν πράττοντι καθ' αὑτόν· εἰ δέ τις ἀνάγκη ζῆν εἴη, δούλῳ ἄμεινον ἢ ἐλευθέρῳ διάγειν τῷ τοιούτῳ τὸν βίον.

95 *Τοῦ αὐτοῦ Ἀλκιβιάδου* (146 c).

Οὐκ οὖν φαμὲν πάλιν τοὺς πολλοὺς διημαρτηκέναι τοῦ βελτίστου, ὡς τὰ πολλά γε, οἶμαι, ἄνευ νοῦ δόξῃ πεπιστευκότας; Φαμὲν γάρ. Λυσιτελεῖ ἄρα τοῖς πολλοῖς μήτε εἰδέναι μηδὲν μήτε οἴεσθαι εἰδέναι, εἴπερ γε προθυμήσονται μᾶλλον πράττειν ταῦθ' ἅττ' ἂν εἰδῶσιν ἢ οἰηθῶσιν εἰδέναι, πράττοντες δὲ βλάπτεσθαι τὰ πλείω μᾶλλον ἢ ὠφελεῖσθαι. Ἀληθέστατα λέγεις. Ὁρᾷς οὖν ὅτε γ' ἔφην κινδυνεύειν τότε τῶν ἄλλων ἐπιστημῶν κτῆμα, ἐάν τις ἄνευ τῆς τοῦ βελτίστου ἐπιστήμης κεκτημένος ᾖ, ὀλιγάκις μὲν ὠφελεῖν, βλάπτειν δὲ τὰ πλείω τὸν ἔχοντα αὐτό, ἆρ' οὐχὶ τῷ ὄντι ὀρθῶς ἐφαινόμην λέγων; Καὶ εἰ μὴ τότε, ἀλλὰ νῦν μοι δοκεῖ, ὦ Σώκρατες. Δεῖ ἄρα καὶ πόλιν καὶ ψυχὴν τὴν μέλλουσαν ὀρθῶς βιώσεσθαι

ταύτης τῆς ἐπιστήμης ἀντέχεσθαι, ἀτεχνῶς ὥσπερ ἀσθενοῦντα ἰατροῦ ἢ τινὸς κυβερνήτου τὸν ἀσφαλῶς μέλλοντα πλεῖν.

96 Φρόνησις, δύναμις ποιητικὴ καθ' αὑτὴν τῆς ἀνθρώπου εὐδαιμονίας· διάθεσις, καθ' ἣν κρίνομεν τί πρακτέον καὶ τί οὐ πρακτέον· ἐπιστήμη ἀγαθῶν καὶ κακῶν· ἐπιστήμη ποιητικὴ εὐδαιμονίας. (Plat. Defin. 411 d.)

97 Ἐπίστασαί τινας ἤδη βλαβέντας ὑπὸ ἐχθρῶν; Πῶς γὰρ οὔ; Τί δέ; ὑπὸ τῶν καλουμένων φίλων καὶ συνηθῶν ἢ καὶ ὑπὸ συγγενῶν τινων; ἐνίους καὶ ὑπὸ τῶν ἔγγιστα, ἀδελφῶν ἢ υἱῶν ἢ πατέρων; Ἔγωγε πολλούς. Τίς οὖν ἡ αἰτία, δι' ἣν οὐ μόνον οἱ ἐχθροὶ τοὺς ἐχθροὺς ἀδικοῦσιν, ἀλλὰ καὶ οἱ λεγόμενοι φίλοι ἀλλήλους, καὶ νὴ Δία πολλοὶ καὶ τῶν ὄντως ἀναγκαίων; Δῆλον ὡς ἡ κακία τῶν ἀνθρώπων, ὑφ' ἧς ἕκαστος, οἶμαι, καὶ αὐτὸς αὑτῷ ἐστὶ βλαβερός. Πάντας ἄρα τοὺς φίλους φυλάττεσθαι δεῖ καὶ μὴ πιστεύειν μηδὲν μᾶλλον, κἂν φίλος ἢ συνήθης ἢ αἵματος ἐγγὺς εἶναι δοκῇ; Πάντας, ὡς ὁ λόγος οὗτος φησίν. Οὐκ οὖν ὀρθῶς ἔγραψεν ὁ γράψας τοῦτο τὸ ἔπος, "νᾶφε καὶ μέμνησ' ἀπιστεῖν· ἄρθρα ταῦτα τῶν φρενῶν"; Ἴσως ὀρθῶς. (Dio Chrys. Or. 74, 1 p. 739 Emp.)

ΠΕΡΙ ΑΦΡΟΣΥΝΗΣ. Δ.

1 Σοφοκλέους.

Ἀλλ' οἱ κακῶς πράσσοντες οὐ κωφοὶ μόνον,
ἀλλ' οὐδ' ὁρῶντες εἰσορῶσι τἀμφανῆ.

2 Εὐριπίδου.

Τὸ μὴ εἰδέναι σε μηδὲν ὧν ἁμαρτάνεις
ἔκκαυμα τόλμης ἱκανόν ἐστι καὶ θράσους.

3 Ἡσιόδου (Op. 210).

Ἄφρων δ' ὅς κε θέλῃ πρὸς κρείσσονας ἀντιφερίζειν,
νίκης τε στέρεται πρός τ' αἴσχεσιν ἄλγεα πάσχει.

4 Μενάνδρου.

Ἄνοια θνητοῖς δυστύχημ' αὐθαίρετον.

5 Σοφοκλέους.

Ὡς δυσπέλαστον ἀμαθία κακόν.

6 Μενάνδρου.

Τί σαυτὸν ἀδικῶν τὴν τύχην καταιτιᾷ;

7 Τοῦ αὐτοῦ Στρατιώταις.

Οὐδεὶς ξύνοιδεν ἐξαμαρτάνων πόσον
ἁμαρτάνει τὸ μέγεθος, ὕστερον δ' ὁρᾷ.

8 Τοῦ αὐτοῦ.

Χαλεπόν γε τοιαῦτ' ἐστὶν ἐξαμαρτάνειν,
ἃ καὶ λέγειν ὀκνοῦμεν οἱ πεπραχότες.

9 Εὐριπίδου Ἰνοῦς.

Πολλοί γε θνητῶν τῷ θράσει τὰς συμφορὰς
ζητοῦσ' ἀμαυροῦν κἀποκρύπτεσθαι κακά.

10 Εὐριπίδου Τημενίδαις.

Ἀσύνετος ὅστις ἐν φόβῳ μὲν ἀσθενής,
λαβὼν δὲ μικρὸν τῆς τύχης φρονεῖ μέγα.

11 Τοῦ αὐτοῦ Αἰόλῳ.

Κακῆς ἀπ' ἀρχῆς γίνεται τέλος κακόν.

12 Σαπφοῦς πρὸς ἀπαίδευτον γυναῖκα.

Κατθανοῖσα δὲ κείσεαι, οὐδέποκα μναμοσύνα σέθεν
ἔσσετ' οὐδέποκα ὕστερον· οὐ γὰρ πεδέχεις ῥόδων
τῶν ἐκ Πιερίας· ἀλλ' ἀφανὴς κἠν Ἀίδα δόμοις
φοιτάσεις πεδ' ἀμαυρῶν νεκύων ἐκπεποταμένα.

13 *Μενάνδρου.*
Τυφλόν τι τἀνόητον εἶναί μοι δοκεῖ.

14 *Χαιρήμονος.*
Οὐ ζῶσιν οἵ τι μὴ συνιέντες σοφόν.

15 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Πρὶν γὰρ φρονεῖν καταφρονεῖν ἐπίστασαι.

16 *Αἰσχύλου.*
Οὐ χρὴ ποδώκη τὸν τρόπον λίαν φορεῖν.
σφαλεὶς γὰρ οὐδεὶς εὖ βεβουλεῦσθαι δοκεῖ.

16[a] *Ἦ βαρὺ φόρημ' ἄνθρωπος εὐτυχῶν ἄφρων.*

17 *Σοφοκλέους.*
Ἡ δὲ μωρία
μάλιστ' ἀδελφὴ τῆς πονηρίας ἔφυ.

18 *Εὐριπίδου* (Bacch. 480).
Δόξει τις ἀμαθεῖ σοφὰ λέγων οὐκ εὖ λέγειν.

19 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Τὸ δ' ὠκὺ τοῦτο καὶ τὸ λαιψηρὸν φρενῶν
εἰς πημονὰς ἔστησε πολλὰ δὴ βροτούς.

20 *Τοῦ αὐτοῦ* (Iph. T. 1193).
Θάλασσα κλύζει πάντα τἀνθρώπων κακά.

21 *Αἰσχύλος ἐν Φρυξί.*

. . . .

21[a] *Πολλάκι τοι καὶ μωρὸς ἀνὴρ κατακαίριον εἶπεν.*

22 *Ἡσιόδου ἡμερῶν καὶ ἔργων* (293).
Κεῖνος μὲν πανάριστος, ὃς αὐτῷ πάντα νοήσῃ,
[φρασσάμενος τά κ' ἔπειτα καὶ ἐς τέλος ᾖσιν ἀμείνω.]
ἐσθλὸς δ' αὖ κἀκεῖνος, ὃς εὖ εἰπόντι πίθηται.
ὃς δέ κε μήτ' αὐτὸς νοέῃ μήτ' ἄλλου ἀκούων
ἐν θυμῷ βάλληται, ὃ δ' αὖτ' ἀχρήιος ἀνήρ.

23 *Σοφοκλέους Αἴαντος* (964).
Οἱ γὰρ κακοὶ γνώμαισι τἀγαθὸν χεροῖν
ἔχοντες οὐκ ἴσασι πρίν τις ἐκβάλῃ.

24 *Τοῦ αὐτοῦ* (Eur. Bacch. 369).
Μῶρα γὰρ μῶρος λέγει.

25 *Εὐριπίδου* (Herc. fur. 299).
Ἥκιστα· φεύγειν σκαιὸν ἄνδρ' ἐχθρὸν χρεών,
σοφοῖσι δ' εἴκειν καὶ τεθραμμένοις καλῶς.

26 *Σοφοκλέους* (El. 1047).
Βουλῆς γὰρ οὐδέν ἐστιν ἔχθιον κακῆς.

27 *Θεόγνιδος* (221).
Ὅστις τοι δοκέει τὸν πλησίον ἴδμεναι οὐδέν,
ἀλλ' αὐτὸς μοῦνος ποικίλα δήνε' ἔχειν,
κεῖνός γ' ἄφρων ἐστὶ νόου βεβλαμμένος ἐσθλοῦ.
ἴσως γὰρ πάντες ποικίλ' ἐπιστάμεθα.
ἀλλ' ὃ μὲν οὐκ ἐθέλει κακοκερδίῃσιν ἕπεσθαι,
τῷ δὲ δολοπλοκίαι μᾶλλον ἔτ' εἰσὶ φίλαι.

28 *Μενάνδρου.*
Εὐηθία μοι φαίνεται, Φιλουμένη,
τὸ νοεῖν μὲν ὅσα δεῖ, μὴ φυλάττεσθαι δ' ἃ δεῖ.

29 *Ἐπὰν ἐν ἀγαθοῖς εὐνοούμενός τις ὢν*
ζητῇ τὶ κρεῖττον ὧν ἔχει, ζητεῖ κακά.

30 *Εὐριπίδου.*
Οὐκ ἂν δυναίμην μὴ στέγοντα πιμπλάναι,
σοφοὺς ἐπαντλῶν ἀνδρὶ μὴ σοφῷ λόγους.

31 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Εὖ γὰρ τόδ' ἴσθι, κεἴ σ' ἐλάνθανεν πάρος,
τὸ σκαιὸν εἶναι πρῶτ' ἀμουσίας ἔχει.

32 *Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.*

Ὅθεν δὲ νικᾶν χρῆν σε, δυστυχεῖς, ἄναξ,
ὅθεν δέ σ' οὐ χρῆν, εὐτυχεῖς· δούλοισι γὰρ
τοῖς σοῖσιν ἥκεις, τοῖς δ' ἐλευθέροισιν οὔ.

33 *Εὐπόλιδος.*

Ἀλλ' ἀκούετ', ὦ θεαταί, τἀμὰ δὲ ξυνίετε
ῥήματ', εὐθὺ γὰρ πρὸς ὑμᾶς πρῶτον ἀπολογήσομαι,
ὅ τι παθόντες τοὺς ξένους μὲν λέγετε ποιητὰς σοφούς·
ἢν δέ τις τῶν ἐνθάδ' αὐτοῦ, μηδὲ ἓν χεῖρον φρονῶν,
ἐπιτιθῆται τῇ ποιήσει, πάνυ δοκεῖ κακῶς φρονεῖν,
μαίνεταί τε καὶ παραρρεῖ τῶν φρενῶν τῷ σῷ λόγῳ.
ἀλλ' ἐμοὶ πείθεσθε, πάντως μεταβαλόντες τοὺς τρό-
πους,
μὴ φθονεῖθ' ὅταν τις ἡμῶν μουσικῇ χαίρῃ νέων.

34 *Ῥιανοῦ.*

Ἦ ἄρα δὴ μάλα πάντες ἁμαρτίνοοι πελόμεσθα
ἄνθρωποι, φέρομεν δὲ θεῶν ἑτερόρροπα δῶρα
ἀφραδέι κραδίῃ. βιότοιο μὲν ὅς κ' ἐπιδευὴς
στρωφᾶται, μακάρεσσιν ἐπὶ ψόγον αἰνὸν ἰάπτει
ἀχνύμενος, σφετέρην δ' ἀρετὴν καὶ θυμὸν ἀτίζει,
οὐδέ τι θαρσαλέος νοέειν ἔπος, οὐδέ τι ῥέξαι
ἐρριγώς, ὅθι τ' ἄνδρες ἐχεκτέανοι παρέωσι,
καί οἱ θυμὸν ἔδουσι κατηφείη καὶ ὀιζύς.
ὃς δέ κεν εὐοχθῆσι, θεὸς δ' ἐπὶ ὄλβον ὀπάζῃ
καὶ πολυκοιρανίην, ἐπιλήθεται οὕνεκα γαῖαν
ποσσὶν ἐπιστείβει, θνητοὶ δέ οἱ εἰσὶ τοκῆες·
ἀλλ' ὑπεροπλίῃ καὶ ἁμαρτωλῇσι νόοιο
ἶσα Διὶ βρομέει, κεφαλὴν δ' ὑπὲρ αὐχέν' ἀνίσχει,
καί περ ἐὼν ὀλίγος; μνᾶται δ' εὔπηχυν Ἀθήνην,
ἠέ τιν' ἀτραπιτὸν τεκμαίρεται οὔλυμπόνδε,
ὥς κε μετ' ἀθανάτοισιν ἀρίθμιος εἰλαπινάζῃ.
ἡ δ' Ἄτη ἁπαλοῖσι μετατρωχῶσα πόδεσσι

ἄκρης ἐν κεφαλῇσιν ἀνώιστος καὶ ἄφαντος,
ἄλλοτε μὲν γραίῃσι νεωτέρη, ἄλλοτε δ' αὖτε
ὁπλοτέρῃσι γρηῢς ἐφίσταται ἀμπλακίῃσι,
Ζηνὶ θεῶν κρείοντι Δίκῃ τ' ἐπίηρα φέρουσα.

35 Μενάνδρου.
Οὐκ ἔστ' ἀνοίας οὐδέν, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ,
τολμηρότερον.

36 Ἡσιόδου (Scut. 92).
Σχέτλιος, ἦ που πολλὰ μετεστοναχίζετ' ὀπίσσω,
ἣν ἄτην ἀχέων, ἣ δ' οὐ παλινάγρετός ἐστιν.

37 Σοφοκλέους Ἀλεάδαις.
Ἐνταῦθα μέντοι πάντα τἀνθρώπων νοσεῖ,
κακοῖς ὅταν θέλωσιν ἰᾶσθαι κακά.

38 Τοῦ αὐτοῦ.
Ταῦτ' ἐστὶν ἄλγιστ', ἣν παρὸν θέσθαι καλῶς
αὐτός τις αὑτῷ τὴν βλάβην προσθῇ φέρων.

39 Μενάνδρου.
Ὁ μὴ φέρων γὰρ εὖ τι τῶν ἐν τῷ βίῳ
ἀγαθῶν, ἀλόγιστός ἐστιν, οὐχὶ μακάριος.

40 Μενάνδρου Θεττάλῃ.
Μικρά γε πρόφασίς ἐστι τοῦ πρᾶξαι κακῶς.

41 Φιλήμονος.
Ἐπὰν ὁ νοῦς ᾖ μὴ καθεστηκώς τινι,
οὐκ ἔστ' ἀκούειν οὐδὲν αὐτὸν οὐδ' ὁρᾶν.

42 Ἐπιχάρμου.
Νοῦς ὁρῇ καὶ νοῦς ἀκούει.

43 Κερκίδου.
Πῶς κεν ἴδοιεν τὰν σοφίαν πέλας ἑστακυῖαν

ἀνέρες, ὧν τὸ κέαρ
παλῶ σέσακται καὶ δυσεκνίπτῳ τρυγός;

44 *Παροιμία.*
Ὄνος λύρας ἤκουε καὶ σάλπιγγος ὗς.

45 *Θεόγνιδος* (693).
Πολλούς τοι κόρος ἄνδρας ἀπώλεσεν ἀφραίνοντας·
γνῶναι γὰρ χαλεπὸν μέτρον, ὅτ᾽ ἐσθλὰ παρῇ.

46 *Ῥηγίνου ἐκ τοῦ περὶ φιλίας.*
Καθάπερ τὸ τοῦ ἡλίου φῶς οὐκ ἔστι θεάσασθαι ἀσθενεῖ καὶ ἀδυνάτῳ τῇ ὄψει, οὕτω καὶ ἔτι μᾶλλον τὴν ἀλήθειαν οὐκ ἔστιν ἰδεῖν ἀσθενεῖ καὶ ἀδυνάτῳ τῇ διανοίᾳ.

47 *Κορνηλιανοῦ κατὰ Βερονίκης.*
Ἀλλ᾽ ὅμως τὰ μεγάλα ταῦτα καὶ δεινὰ ὡμολόγει αὐτὴ καθ᾽ αὑτῆς. τοῦτο γὰρ αὐτῶν καὶ μόνον τῇ προαιρέσει πρόσεστιν ἀγαθόν, ὅπερ ἐστὶ μέγιστον τῶν κακῶν, ὅτι περὶ ὧν πράττουσι κακῶς καὶ παρρησιάζονται.

48 *Ἰσοκράτους Βουσίριδι* (p. 221).
Γιγνώσκω μὲν οὖν ὅτι τοῖς πλείστοις τῶν νουθετουμένων ἔμφυτόν ἐστι, μὴ πρὸς τὰς ὠφελείας ἀποβλέπειν, ἀλλὰ τοσούτῳ χαλεπώτερον ἀκούειν τῶν λεγομένων, ὅσῳ περ ἂν τις αὐτῶν ἀκριβέστερον ἐξετάζῃ τὰς ἁμαρτίας.

49 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος* (89 c).
Ἀλλὰ πρῶτον μὲν εὐλαβηθῶμεν τὶ πάθος μὴ πάθωμεν. τὸ ποῖον; ἦν δ᾽ ἐγώ. μὴ γενώμεθα, ἦ δ᾽ ὅς, μισολόγοι, ὥσπερ οἱ μισάνθρωποι γιγνόμενοι· ὡς οὐκ ἔστιν, ἔφη, ὅ τι ἂν τις μεῖζον τούτου κακὸν πάθοι ἢ λόγους μισήσας. γίγνεται δὲ ἐκ τοῦ αὐτοῦ

τρόπου μισολογία τε καὶ μισανθρωπία· ἥ τε γὰρ μισανθρωπία ἐνδύεται ἐκ τοῦ σφόδρα τινὶ πιστεῦσαι ἄνευ τέχνης καὶ ἡγήσασθαι παντάπασί γε ἀληθῆ εἶναι καὶ ὑγιῆ καὶ πιστὸν τὸν ἄνθρωπον, ἔπειτα ὀλίγον ὕστερον εὑρεῖν τοῦτον πονηρόν τε καὶ ἄπιστον, καὶ αὖθις ἕτερον. καὶ ὅταν τοῦτο πολλάκις πάθῃ τις καὶ ὑπὸ τούτων μάλιστα οὓς ἂν ἡγήσαιτο οἰκειοτάτους καὶ ἑταιροτάτους, τελευτῶν δὲ θαμὰ προσκρούων μισεῖ τε πάντας καὶ ἡγεῖται οὐδενὸς οὐδὲν ὑγιὲς εἶναι. ἢ οὐκ ᾔσθησαι σὺ οὕτω τοῦτο γιγνόμενον; πάνυ γε, ἦν δ' ἐγώ. οὐκ οὖν, ἦ δ' ὅς, αἰσχρόν, καὶ δῆλον ὅτι ἄνευ τέχνης τῆς περὶ τὰ ἀνθρώπεια ὁ τοιοῦτος χρῆσθαι ἐπεχείρει τοῖς ἀνθρώποις; εἰ γάρ που μετὰ τέχνης ἐχρῆτο, ὥσπερ ἔχει, οὕτως ἂν ἡγήσατο, τοὺς μὲν χρηστοὺς καὶ πονηροὺς ὀλίγους εἶναι σφόδρα ἑκατέρους, τοὺς δὲ μεταξὺ τοὺς πλείστους.

50 *Ἐν ταυτῷ* (91 a).

Ὡς κινδυνεύω ἐγὼ ἐν τῷ παρόντι περὶ αὐτοῦ τούτου οὐ φιλοσόφως ἔχειν, ἀλλ' ὥσπερ οἱ πάνυ ἀπαίδευτοι φιλονείκως. καὶ γὰρ ἐκεῖνοι ὅταν περί του ἀμφισβητῶσιν, ὅπῃ μὲν ἔχει περὶ ὧν ἂν ὁ λόγος ᾖ, οὐ φροντίζουσιν· ὅπως δὲ ἃ αὐτοὶ ἔθεντο ταῦτα δόξει τοῖς παροῦσι, τοῦτο προθυμοῦνται.

51 *Δημοσθένους.*

Δημοσθένης ὁ ῥήτωρ θεασάμενός τινα δημαγωγὸν ἀφυῆ μέγα βοῶντα ἔφη "ἀλλ' οὐ τὸ μέγα εὖ ἐστι, τὸ δὲ εὖ μέγα."

52 *Κράτητος.*

Κράτης ἀπείκαζε τοὺς ἀνοήτους τῶν ἀνθρώπων τοῖς τρυπάνοις· ἄνευ γὰρ δεσμοῦ καὶ ἀνάγκης μηδὲν ἐθέλειν τῶν δεόντων ποιεῖν.

53 *Δημοκρίτου.*

Ἀνθρώποισι κακὰ ἐξ ἀγαθῶν φύεται, ἐπήν τις τἀγαθὰ μὴ ἐπίστηται ποδηγετέειν μηδὲ ὀχέειν εὐπόρως.

54 ***Βίωνος.***

Βίων ἔλεγε τοὺς γραμματικοὺς ζητοῦντας περὶ τῆς Ὀδυσσέως πλάνης μὴ ἐξετάζειν τὴν ἰδίαν, μηδὲ καθορᾶν ὅτι καὶ ἐν αὐτῷ τούτῳ πλανῶνται, πονοῦντες περὶ τὰ μηδὲν χρήσιμα.

55 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κλειτοφῶντος* (407 e).

Καὶ ὁπόταν αὖ φῇς τοὺς ἀσκοῦντας μὲν τὰ σώματα, τῆς δὲ ψυχῆς ἠμεληκότας, ἕτερόν τι πράττειν τοιοῦτον, τοῦ μὲν ἄρξοντος ἀμελεῖν, περὶ δὲ τὸ ἀρξόμενον ἐσπουδακέναι.

56 *Ἡρακλείτου.*

Κακοὶ γίνονται ὀφθαλμοὶ καὶ ὦτα ἀφρόνων ἀνθρώπων ψυχὰς βαρβάρους ἐχόντων.

57 *Σωκράτους.*

Ὁ μὲν δειλὸς τῆς πατρίδος, ὁ δὲ φιλόδοξος τῆς πατρῴας οὐσίας ἐστὶ προδότης.

58 *Οἱ δραπέται κἂν μὴ διώκωνται φοβοῦνται, οἱ δὲ ἄφρονες κἂν μὴ κακῶς πράττωσι ταράττονται.*

59 *Ἐν μὲν ταῖς μέθαις παροινοῦσιν, ἐν δὲ ταῖς ἀτυχίαις παρανοοῦσιν οἱ ἀνόητοι.*

60 *Οὔθ' οἱ ἄμουσοι τοῖς ὀργάνοις οὔθ' οἱ ἀπαίδευτοι ταῖς ἀτυχίαις δύνανται συναρμόσασθαι.*

61 *Τῷ τῶν ἀπαιδεύτων βίῳ καθάπερ ὑποκριτῇ πολλὰ τύφου μετεκδύματα παράκειται.*

62 *Τοῖς ἄφροσιν ὥσπερ τοῖς παιδίοις μικρὰ πρόφασις εἰς τὸ κλαίειν ἱκανή.*

63 Οἱ μὲν ξένοι ἐν ταῖς ὁδοῖς, οἱ δὲ ἀπαίδευτοι ἐν τοῖς πράγμασι πλανῶνται.

64 Ταυτόν ἐστιν ἀρρωστοῦντι φορτίον ἀναθέσθαι καὶ ἀπαιδεύτοις εὐτυχίαν.

65 Οὔτε πλέοντας παρὰ τόπον ὁρμεῖν ἀσφαλές, οὔτε ζῶντας παρὰ νόμον βιοῦν ἀκίνδυνον.

66 Ὁ μὲν Πρωτεὺς τῇ μορφῇ, ὁ δ' ἀπαίδευτος τῇ ψυχῇ παρ' ἕκαστον ἀλλοιοῦται.

67 Πολλοὺς ὥσπερ ἀσθενοῦντας οὕτω καὶ εὐτυχοῦντας τὸ πλῆθος τῶν παρακειμένων λυπεῖ.

68 Φίλιππος τοὺς Ἀθηναίους εἴκαζε τοῖς ἑρμαῖς ὡς στόμα μόνον ἔχουσι καὶ αἰδοῖα μεγάλα.

69 Δημάδου.

Δημάδης τοὺς Ἀθηναίους εἴκαζεν αὐλοῖς, ὧν εἴ τις ἀφέλοι τὴν γλῶτταν τὸ λοιπὸν οὐδέν ἐστι.

70 Θεόκριτος γραμματοδιδασκάλῳ φαύλως ἀναγινώσκοντι προσελθὼν εἶπε "διὰ τί γεωμετρεῖν οὐ διδάσκεις;" τοῦ δ' εἰπόντος ὅτι οὐκ οἶδα, "καὶ τί τοῦτ';" εἶπεν· "οὐδὲ γὰρ ἀναγινώσκειν."

71 Δημοκρίτου.

Εἴδωλα ἐσθῆτι καὶ κόσμῳ διαπρεπέα πρὸς θεωρίην, ἀλλὰ καρδίης κενεά.

72 Λήθη τῶν ἰδίων κακῶν θρασύτητα γεννᾷ.

73 Ἀνοήμονες ῥυσμοῦνται τοῖσι τῆς τύχης κέρδεσι, οἱ δὲ τῶν τοιῶνδε δαήμονες τοῖσι τῆς σοφίης.

74 Τὸ χρῇζον οἶδεν ὁκόσον χρῄζει, ὁ δὲ χρῄζων οὐ γινώσκει.

75 Ἀνοήμονες τὸ ζῆν ὡς στυγέοντες ζῆν ἐθέλουσι δείματι ἀίδεω.

76 Ἀνοήμονες βιοῦσιν οὐ τερπόμενοι βιοτῇ.

77 Ἀνοήμονες νεότητος ὀρέγονται, οὐ τερπόμενοι δὲ νεότητι.

78 Ἀνοήμονες τῶν ἀπεόντων ὀρέγονται, τὰ δὲ παρεόντα καὶ παρῳχημένων κερδαλεώτερα ἐόντα ἀμαλδύνουσιν.

79 Ἄνθρωποι τὸν θάνατον φεύγοντες διώκουσι [ζωῆς ὀρέγονται γήραος θάνατον δεδοικότες].

80 Ἀνοήμονες οὐδὲ ἓν μανθάνουσι ἐν ὅλῃ τῇ βιοτῇ.

81 Ἀνοήμονες θάνατον δεδοικότες γηράσκειν ἐθέλουσι.

82 Δόξα καὶ πλοῦτος ἄνευ ξυνέσιος οὐκ ἀσφαλέα κτήματα.

83 Πολλοὶ πολυμαθέες νόον οὐκ ἔχουσι.

84 Διογένης.

Ἐπεὶ δὲ ἐν τῇ στοᾷ ἀνάπαλιν περιπατοῦντος αὐτοῦ ἐγέλων τινές, "εἶτ' οὐκ αἰσχύνεσθε" εἶπεν "ὑμεῖς τὴν ἐν τῷ βίῳ ὁδὸν ἀνάπαλιν πορευόμενοι, ἐμοῦ τὴν ἐν τῷ περιπατεῖν κατεγνωκότες;"

85 Σωκράτης ἰδὼν μειράκιον πλούσιον καὶ ἀπαίδευτον "ἰδού" ἔφη "χρυσοῦν ἀνδράποδον."

86 Διογένης ἔλεγε τοὺς ἀνθρώπους τὰ μὲν πρὸς τὸ ζῆν πορίζεσθαι, τὰ δὲ πρὸς τὸ εὖ ζῆν οὐ πορίζεσθαι.

87 Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης τοὺς τὰ ἐναργῆ πράγματα πειρωμένους δεικνύναι ὅμοιον ἔφη ποιεῖν τοῖς διὰ λύχνου τὸν ἥλιον φιλοτιμουμένοις δεικνύναι.

88 Βίωνος.

Βίων ἐρωτηθεὶς τί ἐστιν ἄνοια εἶπε "προκοπῆς ἐγκοπή."

89 *Στίλπωνος Σωκρατικοῦ.*

Στίλπων ἐρωτηθεὶς τί ψυχρότερον ἀνδριάντος "ἄνθρωπος" εἶπεν "ἀναίσθητος."

90 *Κλεάνθους.*

Κλεάνθης ἔφη τοὺς ἀπαιδεύτους μόνῃ τῇ μορφῇ τῶν θηρίων διαφέρειν.

91 *Φαβωρίνου.*

Φαβωρῖνος εἶπε τοὺς ἀνθρώπους πῇ μὲν εἶναι γελοίους, πῇ δὲ μισητούς, πῇ δὲ ἐλεεινούς· γελοίους μὲν θρασύτητι μειζόνων ὀρεγομένους, μισητοὺς δὲ ἐπιτυχόντας, ἐλεεινοὺς δὲ ἁμαρτάνοντας· ζηλωτοὺς δὲ οὐδέποτε.

92 *Ἐπικτήτου.*

Εἰς συμπόσιον μὲν οὖν παρακληθέντες τῷ παρόντι χρώμεθα, εἰ δέ τις κελεύοι τὸν ὑποδεχόμενον ἰχθῦς αὐτῷ παρατιθέναι ἢ πλακοῦντας, ἄτοπος ἂν δόξειεν· ἐν δὲ τῷ κόσμῳ αἰτοῦμεν τοὺς θεοὺς ἃ μὴ διδόασι, καὶ ταῦτα πολλῶν ὄντων ἅ γε ἡμῖν δεδώκασι.

93 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Χαρίεντες, ἔφη, εἰσὶν οἱ μέγα φρονοῦντες ἐπὶ τοῖς οὐκ ἐφ' ἡμῖν. "ἐγώ σου" φησί "κρείττων εἰμί, ἀγροὺς γὰρ ἔχω πολλούς, σὺ δὲ λιμῷ παρατείνῃ." ἄλλος λέγει "ἐγὼ ὑπατικός εἰμι." ἄλλος "ἐγὼ ἐπίτροπος." ἄλλος "ἐγὼ οὔλας τρίχας ἔχω." ἵππος δ' ἵππῳ οὐ λέγει ὅτι "ἐγὼ κρείττων εἰμί σου· πολὺν γὰρ κέκτημαι χιλὸν καὶ κριθὰς πολλάς, καὶ χαλινοί μοι εἰσὶ χρυσοῖ καὶ ἐφίππια ποικίλα," ἀλλ' ὅτι "ὠκύτερός σου εἰμί." καὶ πᾶν ζῷον κρεῖττον καὶ χεῖρόν ἐστιν ἐκ τῆς ἑαυτοῦ ἀρετῆς καὶ κακίας. ἆρ' οὖν ἀνθρώπου μό-

νου ἀρετὴ οὐκ ἔστιν, ἀλλὰ δεῖ ἡμᾶς εἰς τὰς τρίχας ἀφορᾶν καὶ τὰ ἱμάτια καὶ τοὺς πάππους;

94 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τῷ μὲν ἰατρῷ μηδὲν συμβουλεύοντι ἄχθονται οἱ κάμνοντες καὶ ἡγοῦνται ἀπεγνῶσθαι ὑπ' αὐτοῦ· πρὸς δὲ τὸν φιλόσοφον διὰ τί οὐκ ἄν τις οὕτω διατεθείη, ὥστε οἰηθῆναι ἀπεγνῶσθαι ὑπ' αὐτοῦ σωφρονήσειν, εἰ μηδὲν λέγοι τι πρὸς αὐτὸν τῶν χρησίμων;

95 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οἱ τὸ σῶμα εὖ διακείμενοι καὶ καύματα καὶ ψύχη ὑπομένουσιν· οὕτω δὲ καὶ οἱ τὴν ψυχὴν καλῶς διακείμενοι καὶ ὀργὴν καὶ λύπην καὶ περιχάρειαν καὶ τἄλλα πάθη φέρουσι.

96 *Πλάτων* (Euthyphr. 3 a).

Βουλοίμην ἄν, ὦ Σώκρατες, ἀλλ' ὀρρωδῶ μὴ τοὐναντίον γένηται· ἀτεχνῶς γάρ μοι δοκεῖ ἀφ' ἑστίας ἄρχεσθαι κακουργεῖν τὴν πόλιν, ἐπιχειρῶν ἀδικεῖν σε. καί μοι λέγε, τί καὶ ποιοῦντά σε φησὶ διαφθείρειν τοὺς νέους; Ἄτοπα, ὦ θαυμάσιε, ὡς οὕτως ἀκοῦσαι· φησὶ γάρ με ποιητὴν εἶναι θεῶν· καὶ ὡς καινοὺς ποιοῦντα θεούς, τοὺς δ' ἀρχαίους οὐ νομίζοντα ἐγράψατο.

97 *Ἐν ταυτῷ* (Euthyphr. 3 c).

Ἀθηναίοις γάρ, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, οὐ σφόδρα μέλει ἄν τινα δεινὸν οἴωνται, μὴ μέντοι διδασκαλικὸν τῆς αὐτοῦ σοφίας· ὃν δ' ἂν καὶ ἄλλους οἴωνται ποιεῖν τοιούτους, θυμοῦνται, εἴτ' οὖν φθόνῳ, ὡς σὺ λέγεις, εἴτε δι' ἄλλο τι.

98 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Εὐθύφρονος.*

Ψυχὴν ἀνόητον αἰσχρὰν καὶ ἄμετρον θετέον.

99 *Νόσον μὲν ψυχῆς ἄνοιαν συγχωρητέον, δύο δὲ ἀνοίας γένη, τὸ μὲν μανίαν τὸ δὲ ἀμαθίαν* (Plat. Tim. p. 86 b).

100 *Εὐσεβίου.*

Ἄνθρωποι πολυμαθίης ἔχειν δόξαν ἢ τοῦ ἀληθίζεσθαι ἔρωτα πλεῦνα ἐκτέαται. πολλοὶ γοῦν τοῖς πρὸ ἑωυτῶν ἐναντίας δόξας συστησάμενοι τὴν γνῶσιν τοῦ ἀληθέος περὶ τῶν ἀναγκαιοτάτων ἀφείλοντο τῷ τὴν πίστιν αὐτῶν μὴ ἐν βεβαίῳ ἑστάναι, ὑπὸ δὲ τοῦ ἀπὸ τῆς προτέρης δόξης περιτρέψαι εἰς τοὐναντίον, λόγον παρασκευάσαντες ἐν τῷ ἀσταθμητοτάτῳ αἰωρέεσθαι.

101 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐν ταῖσι ζητήσεσι τῶν πραγμάτων ὁμοίως τοῖς ἀλόγοις τῶν ζῴων, ὥσπερ ἐκεῖνα μαχόμενα, οὕτω καὶ αὐτοὶ μούνου τοῦ νικᾶν μεταποιέονται· ὅκως δὲ (τοῦ περ χρὴ πάντα ἄνδρα προμηθέεσθαι καὶ λέγοντα καὶ πρήσσοντα) μὴ παρὰ τὸ ξυμφέρον καὶ σφέων αὐτῶν καὶ τῶν παρεόντων, καὶ ὥστε μὴ τὸ ἀληθὲς αὐτὸ βλάψαι, οὐκέτι λόγον τούτου ποιέονται.

102 *Ἀνθρώποισιν ἔριδες προσφιλέες, καὶ τοῦ περὶ παντὸς τοῦ προτεθέντος ἀντιλέγοντας ἐθέλειν κρατέειν ἄπλετος καὶ ἄλογος ἐπιθυμίη· ὁπότε πολλοὶ οὐκ αἰδέονται καὶ κατὰ τῶν σπουδαιεστάτων καὶ τῶν οὐ χρὴ τῷ χείρονι λόγῳ νικᾶν, νικῶντες ἀξίην κεκλῆσθαι νίκην Καδμηίην.*

103 *Ἄνθρωποι τοὺς μὲν παρὰ φύσιν καὶ ἐν τεράτων λόγῳ ἐόντας ἀσπάζονται, καὶ μεγάλων χρημάτων ὠνεόμενοι ὡς ἐπὶ μεγίστῳ κτήματι χαίρουσι καὶ μεγαλοφρονέονται, περὶ δὲ τὰ σπουδαιότατα καὶ τὰ σμικρὰ ἄχθονται ἀναλίσκοντες.*

104 *Οἱ πλεῦνες τῶν ἀνθρώπων περὶ πάντα τὰ λοιπὰ φειδωλοὺς σφέας παρεχόμενοι καὶ εἰ δαπανοῖεν ἀσχάλλοντες, ὑπὲρ τοῦ παρὰ τῶν δήμων κροτηθῆναι καὶ τὰ ἐόντα σφι πάντα ἡδέως προΐενται.*

105 *Οἱ μάταιοι τῶν ἀνθρώπων τοὺς μὲν μεγάλα χρήματα ἔχοντας καὶ φαύλους ἐόντας τιμῶσί τε καὶ τεθωυμάκασι, τῶν δὲ σπουδαίων, ἐπειδὰν ἀχρηματίην καταγνῶσιν, ὑπερφρονέουσιν.*

106 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Πολλοὶ ἀδικηθέντες ὑπὸ ῥητόρων τοὺς υἱοὺς ῥήτορας διδάσκουσιν, οὐδεὶς δὲ ἀδικηθεὶς ὑπὸ λύκου αὐτὸς λύκος γίνεται καὶ ἀντιδάκνει.

107 *Ζήνωνος.*

Ζήνων δὲ ἔφη γελοῖον ἑκάστους μὲν τοῖς πράγμασιν ὡς δεῖ ζῆν μὴ προσέχειν, ὡς οὐκ εἰδότων, τὸν δὲ παρὰ πάντων ἔπαινον θαυμάζειν, ὡς ἐχόμενον κρίσεως.

108 *Σωκράτους.*

Οἱ μὲν ἀκρατεῖς ἐν ταῖς ἀρρωστίαις, οἱ δὲ ἄφρονες ἐν ταῖς ἀτυχίαις εἰσὶ δυσθεράπευτοι.

109 *Πυθαγόρου.*

Θυηπολίαι ἀφρόνων πυρὸς τροφή, τὰ δὲ ἀναθήματα ἱεροσύλοις χορηγία (Porph. ep. ad Marc. 19).

110 *Ἐκ τῶν Ἀρίστωνος ὁμοιωμάτων.*

Ἀρίστων ὁ Χῖος τοὺς περὶ τὰ ἐγκύκλια μαθήματα πονουμένους, ἀμελοῦντας δὲ φιλοσοφίας, ἔλεγεν ὁμοίους εἶναι τοῖς μνηστῆρσι τῆς Πηνελόπης, οἳ ἀποτυγχάνοντες ἐκείνης περὶ τὰς θεραπαίνας ἐγίνοντο.

111 *Ὁ αὐτὸς τοὺς πολλοὺς εἴκαζε τῷ Λαέρτῃ, ὅστις τῶν κατὰ τὸν ἀγρὸν ἐπιμελούμενος πάντων ὀλιγώρως*

εἶχεν ἑαυτοῦ· καὶ γὰρ τούτους τῶν κτημάτων πλείστην ἐπιμέλειαν ποιουμένους περιορᾶν τὴν ψυχὴν ἑαυτῶν πλήρη παθῶν ἀγρίων οὖσαν.

112 *Διογένους.*

Διογένης ἔλεγε διαπαλαίοντας μὲν πολλοὺς ὁρᾶν καὶ διατρέχοντας, διακαλοκαγαθιζομένους δὲ οὔ.

113 *Πλάτωνος* (Men. 77 b).

Ἆρα λέγεις τὸν τῶν καλῶν ἐπιθυμοῦντα ἀγαθῶν ἐπιθυμητὴν εἶναι; Μάλιστά γε. Ἆρα ὡς ὄντων τινῶν οἳ τῶν κακῶν ἐπιθυμοῦσιν, ἑτέρων δὲ οἳ τῶν ἀγαθῶν; οὐ πάντες, ὦ ἄριστε, δοκοῦσί σοι τῶν ἀγαθῶν ἐπιθυμεῖν; Οὐκ ἔμοιγε. Ἀλλά τινες τῶν κακῶν; Ναί. Οἰόμενοι τὰ κακὰ ἀγαθὰ εἶναι λέγεις, ἢ καὶ γινώσκοντες ὅτι κακά εἰσιν, ὅμως ἐπιθυμοῦσιν αὐτῶν; Ἀμφότερα ἔμοιγε δοκεῖ. Ἦ γὰρ δοκεῖ τις σοί, ὦ Μένων, γιγνώσκων τὰ κακὰ ὅτι κακά ἐστιν, ὅμως ἐπιθυμεῖν αὐτῶν; Μάλιστα. Τί ἐπιθυμεῖν λέγεις; ἦ γενέσθαι αὐτῷ; Γενέσθαι· τί γὰρ ἄλλο; Πότερον ἡγούμενος τὰ κακὰ ὠφελεῖν ἐκεῖνον ᾧ ἂν γένηται, ἢ γιγνώσκων τὰ κακὰ ὅτι βλάπτει ᾧ ἂν παρῇ; Εἰσὶ μὲν οἱ ἡγούμενοι τὰ κακὰ ὠφελεῖν, εἰσὶ δὲ καὶ οἱ γιγνώσκοντες ὅτι βλάπτει. Ἦ καὶ δοκοῦσί σοι γιγνώσκειν τὰ κακὰ ὅτι κακά ἐστιν, οἱ ἡγούμενοι τὰ κακὰ ὠφελεῖν; Οὐ πάνυ μοι δοκεῖ τοῦτό γε. Οὐκ οὖν δῆλον ὅτι οὗτοι μὲν οὐ τῶν κακῶν ἐπιθυμοῦσιν οἱ ἀγνοοῦντες αὐτά, ἀλλ' ἐκείνων ἃ ᾤοντο ἀγαθὰ εἶναι· ἔστι δὲ ταῦτά γε κακά· ὥστε οἱ ἀγνοοῦντες αὐτὰ καὶ οἰόμενοι ἀγαθὰ εἶναι δῆλον ὅτι τῶν ἀγαθῶν ἐπιθυμοῦσιν. ἢ οὔ; Κινδυνεύουσιν οὗτοί γε. Τί δαί; οἱ τῶν κακῶν μὲν ἐπιθυμοῦντες, ὡς φῂς σύ, ἡγούμενοι δὲ τὰ κακὰ βλάπτειν ἐκεῖνον ᾧ ἂν γίγνη-

ται, γιγνώσκουσι δήπου ὅτι βλαβήσονται ὑπ᾽ αὐτῶν; Ἀνάγκη. Ἀλλὰ τοὺς βλαπτομένους οὗτοι οὐκ οἴονται ἀθλίους εἶναι καθόσον βλάπτονται; Καὶ τοῦτο ἀνάγκη. Τοὺς δὲ ἀθλίους οὐ κακοδαίμονας; Οἶμαι ἔγωγε. Ἔστιν οὖν ὅστις βούλεται ἄθλιος καὶ κακοδαίμων εἶναι; Οὔ μοι δοκεῖ, ὦ Σώκρατες. Οὐκ ἄρα βούλεται τὰ κακά, ὦ Μένων, οὐδείς, εἴπερ μὴ βούλεται τοιοῦτος εἶναι. τί γὰρ ἄλλο ἐστὶν ἄθλιον εἶναι ἢ ἐπιθυμεῖν τε τῶν κακῶν καὶ κτᾶσθαι; Κινδυνεύεις ἀληθῆ λέγειν, ὦ Σώκρατες, καὶ οὐδεὶς βούλεται τὰ κακά.

114 *Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς τοὺς Δίωνος οἰκείους ἐπιστολῆς* (336 b).

Νῦν δὲ ἤ που τὶς δαίμων ἤ τὶς ἀλιτήριος ἐμπεσὼν ἀνομίᾳ καὶ ἀθεότητι καὶ τὸ μέγιστον τόλμαις ἀμαθίας, ἐξ ἧς πάντα κακὰ πᾶσιν ἐρρίζωται καὶ βλαστάνει καὶ εἰς ὕστερον ἀποτελεῖ καρπὸν τοῖς γεννήσασι πικρότατον, αὕτη πάντα τὸ δεύτερον ἀνέτρεψέ τε καὶ ἀπώλεσεν.

115 *Σωκράτους.*

Ὁ μὲν δειλὸς καθ᾽ ἑαυτοῦ τὰ ὅπλα ἔχει, ὁ δὲ ἀνόητος τὰ χρήματα.

116 Οὔθ᾽ ὁ αὐστηρὸς οἶνος εἰς πόσιν εὔθετος οὔθ᾽ ὁ ἄγροικος τρόπος εἰς ὁμιλίαν.

117 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ εὐθυμίας* (466 b).

Ἀλλ᾽ ὥσπερ οἱ δειλοὶ καὶ ναυτιῶντες ἐν τῷ πλεῖν ἀνομοιότερον οἰόμενοι διάξειν, ἐὰν εἰς γαῦλον ἐξ ἀκάτου καὶ πάλιν ἐὰν εἰς τριήρη μεταβῶσιν, οὐδὲν περαίνουσι, τὴν χολὴν καὶ τὴν δειλίαν συμμεταφέρον-

τες ἑαυτοῖς, οὕτως αἱ τῶν βίων ἀντιμεταλήψεις οὐκ ἐξαιροῦσι τῆς ψυχῆς τὰ λυποῦντα καὶ ταράττοντα· ταῦτα δέ ἐστιν ἀπειρία πραγμάτων, ἀλογιστία, τὸ μὴ δύνασθαι μηδὲ ἐπίστασθαι χρῆσθαι τοῖς παροῦσιν ὀρθῶς. ταῦτα καὶ πλουσίους χειμάζει καὶ πένητας, ταῦτα καὶ γεγαμηκότας ἀνιᾷ καὶ ἀγάμους· διὰ ταῦτα φεύγουσι τὴν ἀγοράν, εἶτα τὴν ἡσυχίαν οὐ φέρουσι· διὰ ταῦτα προαγωγὰς ἐν αὐλαῖς διώκουσι καὶ παρελθόντες εὐθὺς βαρύνονται. "δυσάρεστον οἱ νοσοῦντες ἀπορίας ὕπο·" καὶ γὰρ ἡ γυνὴ λυπεῖ καὶ τὸν ἰατρὸν αἰτιῶνται καὶ δυσχεραίνουσι πρὸς τὸ κλινίδιον, "φίλων δ' ὅ τ' ἐλθὼν λυπρὸς ὅ τ' ἀπιὼν βαρύς," ὡς ὁ Ἴων φησίν. εἶτα τῆς νόσου διαλυθείσης καὶ κράσεως ἑτέρας ἐγγενομένης ἦλθεν ἡ ὑγεία φίλα πάντα ποιοῦσα καὶ προσηνῆ· ὁ γὰρ χθὲς ᾠὰ καὶ ἀμύλια καὶ σίτινον ἄρτον διαπτύων σήμερον αὐτόπυρον ἐπ' ἐλαίαις ἢ καρδαμίδι ἐσθίει καὶ προθύμως. τοιαύτην ὁ λογισμὸς εὐκολίαν καὶ μεταβολὴν ἐγγενόμενος ποιεῖ πρὸς τὸν βίον.

118 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Ἀλκιβιάδου β' (140 e).

Ἆρ' οὖν τούτους φρονίμους ὑπολαμβάνεις, οἳ ἂν εἰδῶσιν ἅττα δεῖ πράττειν ἢ λέγειν; Ἔγωγε. Ἄφρονας δὲ ποτέρους; ἆρά γε τοὺς μηδ' ἕτερα τούτων εἰδότας; Τούτους. Οὐκ οὖν οἵ γε μὴ εἰδότες μηδ' ἕτερα τούτων λήσουσιν αὑτοὺς καὶ λέγοντες καὶ πράττοντες ἅττα μὴ δεῖ; Φαίνεται.

119 Σωκράτους.

Οὔτε τὰ τοῦ Ἀχιλλέως ὅπλα τῷ Θερσίτῃ οὔτε τὰ τῆς τύχης ἀγαθὰ τῷ ἄφρονι ἁρμόττει.

120 Νοσοῦντος δίαιτα καὶ ἄφρονος εὐτυχία πολὺ ἔχει τὸ δυσάρεστον.

121 *Αἱ μὲν βρονταὶ μάλιστα τοὺς παῖδας, αἱ δ' ἀπειλαὶ τοὺς ἄφρονας καταπλήττουσιν.*

ΠΕΡΙ ΣΩΦΡΟΣΥΝΗΣ. Ε.

1 *Μενάνδρου Γεωργῷ.*
Οὗτος κράτιστός ἐστ' ἀνήρ, ὦ Γοργία,
ὅστις ἀδικεῖσθαι πλεῖστ' ἐπίσταται βροτῶν.

2 *Ἐγὼ δ'*
οὐδὲν πρεσβύτερον νομί-
ζω τῆς σωφροσύνης, ἐπεὶ
τοῖς ἀγαθοῖς ἀεὶ ξύνεστι. Eurip. inc. 11. D.

3 *Φόβος τὰ θεῖα τοῖσι σώφροσιν βροτῶν.*

4 *Μὴ πλοῦτον εἴπῃς· οὐχὶ θαυμάζω θεόν,*
ὃν καὶ κάκιστος ῥᾳδίως ἐκτήσατο. Eurip. Acol. 5. D.

5 *Οὐκ ἔστ' ἀπ' ἔργων μὴ καλῶν ἔπη καλά.* Soph. fr. 664. D.

6 *Αἰαῖ τόδ' ἤδη θεῖον ἀνθρώποις κακόν,*
ὅταν τὶς εἰδῇ τἀγαθόν, χρῆται δὲ μή. Eurip. Chrys. 2. D.

7 *Ἐπεὶ τί δεῖ βροτοῖσι πλὴν δυοῖν μόνοιν,*
Δήμητρος ἀκτῆς πώματός θ' ὑδρηχόου; Eurip. inc. 12. D.

8 *Εἱμαρμένον δὲ τῶν κακῶν βουλευμάτων*
κακὰς ἀμοιβάς ἐστι καρποῦσθαι βροτοῖς.

9. 11 *Μενάνδρου.*
Ταμιεῖον ἀρετῆς ἐστὶν ἡ σώφρων γυνή.
Ἦ χάριεν ἔστ' ἄνθρωπος, ἂν ἄνθρωπος ᾖ.

---

10 *Εὔτακτον εἶναι τἀλλότρια δειπνοῦντα δεῖ.*
12 *Κλύειν τὸν ἐσθλὸν ἄνδρα χρὴ τῶν ἐν τέλει.*

13 *Σοφοκλέους* (Ai. 131).
Ὡς ἡμέρα κλίνει τε κἀνάγει πάλιν
ἅπαντα τἀνθρώπεια· τοὺς δὲ σώφρονας
θεοὶ φιλοῦσι, καὶ στυγοῦσι τοὺς κακούς.

14 *Σοφοκλέους.*
Χαίρειν ἐπ' αἰσχραῖς ἡδοναῖς οὐ χρή ποτε.

15 *Εὐριπίδης Βάκχαις* (314).
Οὐχ ὁ Διόνυσος μὴ σωφρονεῖν ἀναγκάσῃ
γυναῖκας εἰς τὴν Κύπριν, ἀλλ' ἐν τῇ φύσει
τὸ σωφρονεῖν ἔνεστιν εἰς τὰ πάντ' ἀεί.

16 *Τοῦ αὐτοῦ Ἱππολύτῳ.*
Ὦ μάκαρ, οἵας ἔλαχες τιμάς,
Ἱππόλυθ' ἥρως, διὰ σωφροσύνην.
οὔ ποτε θνητοῖς ἀρετῆς ἄλλη
δύναμις μείζων.
ἦλθε γὰρ ἢ πρόσθ' ἢ μετόπισθεν
τῆς εὐσεβίας χάρις ἐσθλή.

17 *Εὐριπίδου.*
Τὰς συμφορὰς γὰρ τῶν κακῶς πεπραγότων
οὐ πώποθ' ὕβρισ' αὐτὸς ὀρρωδῶν παθεῖν.

18 *Δυοῖν λεγόντοιν, θατέρου θυμουμένου,*
ὁ μὴ ἀντιτείνων τοῖς λόγοις σοφώτερος. Eur. Protes. 2. D.

19 *Στέργοι δέ με σωφροσύνα*
δώρημα κάλλιστον θεῶν. Eur. Med. 635.

20 *Φεῦ φεῦ· τὸ σῶφρον ὡς ἁπανταχῇ καλόν,*
καὶ δόξαν ἐσθλὴν ἐν βροτοῖς κομίζεται. Eur. Hipp. 431.

21 *Εὐριπίδου Θησέως.*
Ἀλλ' ἔστι δή τις ἄλλος ἐν βροτοῖς ἔρως
ψυχῆς δικαίας σώφρονός τε κἀγαθῆς.

22 *Λίνου.*

Φράζεο δὴ σπουδὴν ἐντυνάμενος δι᾽ ἀκουῆς
μύθων ἡμετέρων ἀτραπὸν περὶ παντὸς ἀληθῆ,
κῆρας ἀπωσάμενος πολυπήμονας, αἵ τε βεβήλων
ὄχλον ἀιστῶσαι ἄταις περὶ πάντα πεδῶσι
παντοίαις, μορφῶν χαλεπῶν ἀπατήματ᾽ ἔχουσαι.
τὰς μὲν ἀπὸ ψυχῆς εἴργειν φυλακαῖσι νόοιο.
οὗτος γάρ σε καθαρμὸς ὄντως δικαίως ὁσιεύσει,
εἴ περ ἀληθείῃ μισεῖς ὀλοὸν γένος αὐτῶν.
νηδὺν μὲν πρώτιστ᾽ αἰσχρῶν δώτειραν ἁπάντων,
ἣν ἐπιθυμία ἡνιοχεῖ μάργοισι χαλινοῖς.

23 *Δημοκρίτου.*

Νόμῳ καὶ ἄρχοντι καὶ σοφωτέρῳ εἴκειν κόσμιον.

24 Ἄριστον ἀνθρώπῳ τὸν βίον διάγειν ὡς πλεῖστα εὐθυμηθέντι καὶ ἐλάχιστα ἀνιηθέντι, τοῦτο δ᾽ ἂν εἴη, εἴ τις μὴ ἐπὶ τοῖσι θνητοῖσι τὰς ἡδονὰς ποιέοιτο.

25 Φαύλων ἔργων καὶ τοὺς λόγους παραιτητέον.

26 *Θεοβούλου.*

Ἀδικούμενος διαλλάσσου, ὑβριζόμενος ἀμύνου.

27 *Βίαντος.*

Οὕτω πειρῶ ζῆν ὡς καὶ ὀλίγον καὶ πολὺν χρόνον βιωσόμενος.

28 Ζῆν κρεῖττόν ἐστιν ἐπὶ στιβάδος κατακείμενον καὶ θαρρεῖν ἢ ταράττεσθαι χρυσῆν ἔχοντα κλίνην (Porphyr. Ep. ad Marc. c. 29).

29 Ὧν ἡ τύχη κυρία δοῦναι καὶ ἀφελέσθαι οὐ δεήσῃ οὐδενός.

30 Ὧν τοῦ σώματος ἀπαλλαγεὶς οὐ δεήσῃ, ἐκείνων καταφρόνει πάντων· καὶ ὧν ἀπαλλαγεὶς δεήσῃ, πρὸς ταῦτά σοι ἀσκουμένῳ τοὺς θεοὺς παρακάλει γίνεσθαί σοι συλλήπτορας.

31 *Χίλωνος.*

Ζημίαν αἱροῦ μᾶλλον ἢ κέρδος αἰσχρόν· τὸ μὲν γὰρ ἅπαξ σε λυπήσει, τὸ δὲ διαπαντός.

32 *Σωτάδου.*

Τῆς τύχης σκοπεῖν δεῖ τὸ μέγιστον ὡς ἔλαττον,
καὶ τὸ μὴ παρὸν μὴ θέλειν· οὐδὲ γὰρ σόν ἐστιν.
ἀμφότερα μένειν οὐκ οἶδεν· ἕστηκεν γὰρ οὐδέν.
ἂν πλούσιος ὢν καθ' ἡμέραν σκοπῇς τὸ πλεῖον,
ἐς τοσοῦτον εἶ πενιχρός, ἐς ὅσον εἶ περισσός.
ὡς πένης θέλων ἔχειν, καὶ πλούσιος πλέον σχεῖν,
ἴσον ἔχουσιν αὐτῶν αἱ ψυχαὶ τὸ μεριμνᾶν.

33 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἔλεγε δεῖν τὰς ἡδονὰς μὴ παρ' ἄλλων ἀλλὰ παρ' ἑαυτῶν θηρᾶσθαι, προδιατίθεσθαι δὲ τὸ σῶμα ὃν χρὴ τρόπον.

34 *Σωκράτους.*

Ὁ Σωκράτης ἔλεγεν θεοῦ μὲν εἶναι τὸ μηδενὸς δεῖσθαι, τὸ δ' ὡς ἐλαχίστων ἐγγυτάτω θεοῦ.

35 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνων δεῖ μάλιστα ἀπέχεσθαι "τῶν αἰσχρῶν καὶ ἀδίκων" ἔφη "ἡδονῶν."

36 *Ἀλέξανδρος.*

Ἀλέξανδρος προτρεπομένων τινῶν αὐτὸν ἰδεῖν τὰς Δαρείου θυγατέρας καὶ τὴν κάλλει διαφέρουσαν εἰς γυναῖκα λαβεῖν, "αἰσχρὸν" ἔφη "τοὺς ἄνδρας νικήσαντας ὑπὸ γυναικῶν ἡττᾶσθαι."

37 *Σωκράτους.*

Ἡ αὐτάρκεια καθάπερ ὁδὸς βραχεῖα καὶ ἐπιτερπὴς χάριν μὲν ἔχει μεγάλην πόνον δὲ μικρόν.

38 Δημοκρίτου.

Τράπεζαν πολυτελέα μὲν τύχη παρατίθησιν, αὐταρκέα δὲ σωφροσύνη.

39 Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου (c. 33, 4).

Γέλως μὴ πολὺς ἔστω μηδ' ἐπὶ πολλοῖς.

40 Δείπνοις τοῖς ἔξω καὶ ἰδιωτικοῖς τὸ πολὺ ἀπόταξαι· ἂν δὲ γένηται καιρός, φυλάσσου. ἴσθι γὰρ ὅτι ἂν ἕτερος ᾖ μεμολυσμένος, καὶ τὸν ἕτερον ἐμπλησθῆναι ἀνάγκη, ὅταν γυμνοὶ συνδιατρίβωνται (ibid. 6).

41 Διογένους.

Δεινὸν ἔλεγεν ὁ Διογένης, εἰ οἱ μὲν ἀθληταὶ καὶ οἱ κιθαρῳδοὶ γαστρὸς καὶ ἡδονῶν κρατοῦσιν, οἱ μὲν τῆς φωνῆς χάριν οἱ δὲ τοῦ σώματος, σωφροσύνης δ' ἕνεκα οὐδεὶς τούτων καταφρονήσει.

42 Πυθαγόρου.

Ῥώμη ψυχῆς σωφροσύνη· αὕτη γὰρ ψυχῆς ἀπαθοῦς φῶς ἐστιν.

43 Σωκράτους.

Σωκράτης πρὸς τὸν πυθόμενον τίς πλουσιώτατος εἶπεν "ὁ ἐλαχίστοις ἀρκούμενος." αὐτάρκεια γὰρ φύσεώς ἐστι πλοῦτος.

44 Δημοκρίτου.

Πατέρος σωφροσύνη μέγιστον τέκνοισι παράγγελμα.

45 Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.

Γυμναζόμενον φυλάξασθαι δεῖ τὸν κόπον, εὖ πράττοντα δὲ τὸν φθόνον.

46 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Διονύσιος Ἀρίστιππον ἔπειθεν ἀποθέμενον τὸν

τρίβωνα πορφυροῦν ἱμάτιον περιβαλέσθαι, καὶ πεισθεὶς ἐκεῖνος τὰ αὐτὰ καὶ Πλάτωνα ποιεῖν ἠξίου. ὃ δὲ ἔφη "οὐκ ἂν δυναίμην θῆλυν ἐνδῦναι στολήν." καὶ Ἀρίστιππος τοῦ αὐτοῦ, ἔφη, ἐστὶ ποιητοῦ, "καὶ γὰρ ἐν βακχεύμασιν οὖσ' ἥ γε σώφρων οὐ διαφθαρήσεται."

47 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Ἡ Φωκίωνος γυνὴ πρὸς τὴν ἐπιδεικνυμένην αὐτῇ τὸν κόσμον χρυσοῦν ὄντα καὶ διάλιθον "ἐμοὶ δ'" ἔφη "κόσμος ὑπέρλαμπρός ἐστι Φωκίων πένης ὢν καὶ εἰκοστὸν ἤδη τοῦτο ἔτος Ἀθηναίων στρατηγῶν."

48 Ἐπαμεινώνδου.

Πρέσβεις ἧκον παρὰ βασιλέως χρυσίον κομίζοντες βουλόμενοι δωροδοκῆσαι τὸν Ἐπαμινώνδαν. ὁ δὲ αὐτοὺς εἰς ἄριστον εἰσεδέξατο (ᾔδει γὰρ ἐφ' ᾧ τινι ἧκον) καὶ ἐκέλευσεν αὐτοὺς πρότερον ἀριστᾶν, εἶτα λέγειν περὶ ὅτου βούλοιντο. παρακειμένης δὲ τραπέζης φαύλης . . . καὶ ὀξίνην ἔπινον, οἳ μὲν οὐκ εἶχον ὅ τι καὶ εἴποιεν ἐπὶ τούτοις, ὃ δὲ μειδιάσας "ἄπιτε" ἔφη "καὶ λέγετε τῷ δεσπότῃ τῷ ὑμετέρῳ οἷα ἄριστα ἀριστῶ, καὶ συνήσει ὅτι ἔγωγ' οὐκ ἂν προδοίην τι ὁ τούτοις ἀρκούμενος."

49 Δημοκρίτου.

Σωφροσύνη τὰ τερπνὰ ἀέξει καὶ ἡδονὴν ἐπιμέζονα ποιέει.

50 Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Ἀρίτονοι τῶν ἐμψύχων οὐδὲν ἀποκτείνουσι, τὰ δὲ κεράμεα τῶν χρηστηρίων ἐν χρυσοῖς ἐλύτροις φυλάττουσι.

51 Τοῦ αὐτοῦ.

Δαρδανεῖς, Ἰλλυρικὸν ἔθνος, τρὶς ἐν τῷ βίῳ λούονται μόνον, ὅταν γεννῶνται καὶ ἐπὶ γάμοις καὶ τελευτῶντες.

52 *Κράτητος.*

Κράτης εἰς τὴν ἀγορὰν ἐμβαλὼν καὶ ὁρῶν τοὺς μὲν πιπράσκοντας τοὺς δὲ ὠνουμένους "οὗτοι" ἔφη "διὰ τὸ ἐναντίον πρᾶγμα ἀλλήλους μακαρίζουσιν· ἐγὼ δ' ἐμαυτόν, ὅτι ἀμφοτέρων ἀπήλλαγμαι, μήτε ὠνούμενος μήτε πωλῶν."

53 *Ἀντιφῶντος.*

Ὅστις δὲ τῶν αἰσχρῶν ἢ τῶν κακῶν μήτε ἐπεθύμησε μήτε ἥψατο, οὐκ ἔστι σώφρων· οὐ γὰρ ἔσθ' ὅπου κρατήσας αὐτὸς ἑαυτὸν κόσμιον παρέχεται.

54 *Ἰσαίου.*

Ἡγοῦμαι μεγίστην εἶναι τῶν λειτουργιῶν τὸ καθ' ἡμέραν βίον κόσμιον καὶ σώφρονα παρέχειν.

55 *Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον* (§. 21. 46. 16).

Ὑφ' ὧν κρατεῖσθαι τὴν ψυχὴν αἰσχρόν, τούτων ἐγκράτειαν ἄσκει, κέρδους ὀργῆς ἡδονῆς λύπης. ἔσῃ δὲ τοιοῦτος, ἐὰν κέρδη μὲν εἶναι νομίζῃς δι' ὧν εὐδοκιμήσεις ἀλλὰ μὴ δι' ὧν εὐπορήσεις. τῇ δὲ ὀργῇ παραπλησίως ἔχε εἰς τοὺς ἁμαρτάνοντας ἢ περὶ σὲ τοὺς ἄλλους ἔχειν ἀξιώσειας. ἐν δὲ τοῖς τερπνοῖς, ἐὰν αἰσχρὸν ὑπολάβῃς τῶν μὲν οἰκετῶν ἄρχειν ταῖς δ' ἡδοναῖς δουλεύειν. ἐν δὲ τοῖς λυπηροῖς, ἐὰν τὰς τῶν ἄλλων ἐπιβλέπῃς ἀτυχίας καὶ σαυτὸν ὡς ἄνθρωπος ὢν ὑπομιμνήσκῃς. Μάλιστα δ' ἂν παροξυνθείης ὀρεχθῆναι τῶν καλῶν ἔργων, εἰ καταμάθοις ὅτι καὶ τὰς ἡδονὰς ἐκ τούτων γνησίως ἔχομεν. ἐν μὲν γὰρ τῷ ῥᾳθυμεῖν καὶ τὰς πλησμονὰς ἀγαπᾶν εὐθὺς αἱ λῦπαι

ταῖς ἡδοναῖς παραπεπήγασι· τὸ δὲ περὶ τὴν ἀρετὴν ἀεὶ πονεῖν καὶ σωφρόνως τὸν αὑτοῦ βίον οἰκονομεῖν, ἀεὶ τὰς τέρψεις εἰλικρινεῖς καὶ βεβαιοτέρας ἀποδίδωσι. Τοὺς μὲν θεοὺς φοβοῦ, τοὺς δὲ γονεῖς τίμα, τοὺς δὲ φίλους αἰσχύνου. τὰς ἡδονὰς θήρευε τὰς μετὰ δόξης· τέρψις γὰρ σὺν τῷ καλῷ μὲν ἄριστον ἄνευ δὲ τούτου κάκιστον.

56 *Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι* (c. 13).

Ἃ πάσχοντες ὑφ' ἑτέρων ὀργίζεσθε, ταῦτα τοὺς ἄλλους μὴ ποιεῖτε.

59 *Ἐκ τῆς Ἑρμίππου συναγωγῆς τῶν καλῶς ἀναφωνηθέντων ἐξ Ὁμήρου.*

Δημήτριος ὁ Φαληρεὺς εἰς σωφροσύνην ἔλεγεν ταῦτα ποιεῖν "ἀσπάσιοι λέκτροιο παλαιοῦ θεσμὸν ἵκοντο."

60 *Ἱέρακος ἐκ τοῦ περὶ δικαιοσύνης.*

Ὅθεν τὴν λειπομένην ἀρετὴν ἐπιστῆσαι δεῖ τῇ τῶν ἡδονῶν φυλακῇ, μὴ συγχωροῦσαν ἀποδιδράσκειν

---

57 *Ἀγαπητοῦ.*

Βασιλέα σε κατὰ ἀλήθειαν ὁρίζομαι, ὡς βασιλεύειν καὶ κρατεῖν τῶν ἡδονῶν δυνάμενον καὶ τὸν στέφανον τῆς σωφροσύνης ἀναδησάμενον καὶ τὴν πορφύραν τῆς δικαιοσύνης ἀμφιεσάμενον. ἡ μὲν γὰρ ἄλλη ἐξουσία τὸν θάνατον ἔχει διαδοχήν, ἡ δὲ τοιαύτη βασιλεία τὴν ἀθάνατον σώζει διαμονήν· καὶ ἣ μὲν ἐν τῷ αἰῶνι τούτῳ λύεται ἣ δὲ τῆς αἰωνίου κολάσεως ῥύεται.

58 *Κύριος μὲν πάντων ἐστὶν ὁ βασιλεύς, δοῦλος δὲ μετὰ πάντων ὑπάρχει θεοῦ. τότε δὲ μάλιστα κληθήσεται κύριος, ὅταν αὐτὸς ἑαυτοῦ δεσπόζῃ καὶ ταῖς ἀτόποις ἡδοναῖς μὴ δουλεύῃ, ἀλλὰ σύμμαχον ἔχων τὸν εὐσεβῆ λογισμόν, τὸν ἀήττητον αὐτοκράτορα τῶν ἀλόγων παθῶν, τοὺς πανδαμάτορας ἔρωτας τῇ πανοπλίᾳ τῆς σωφροσύνης καταγωνίζηται.*

τῇ φρονήσει τὸ ἑαυτῆς ἔργον. ἕως μὲν γὰρ φρονεῖ τις, οὐδὲ ἀνακύπτειν συγχωρήσει ταῖς ἐπὶ τὰ τοιαῦτα φερούσαις ἐπιθυμίαις· ἐν δὲ τῷ καταδαρθάνειν ὑπὸ γοητείας ἐπανίστασθαι εἴωθεν ἀφροσύνη συγχορεύειν αὐτῇ παρακαλοῦσα τὴν ἀκολασίαν. ὅθεν τὴν ἀρετὴν τὴν ἀμφοτέρας φυγαδεύουσαν σωφροσύνην ἐκάλεσαν οἱ σοφοί, σωτηρίαν οὖσαν φρονήσεως· κυριώτερον δὲ κεκλήκασιν ποιητῶν παῖδες σαοφροσύνην· σαῶσαι γὰρ τὸ σῶσαι λέγουσι. τὴν οὖν σαοφροσύνην, τήρησιν οὖσαν φρονήσεως καὶ σωτηρίαν, ὅταν τις προσλάβῃ, τελείαν ἔσχε παρ' ἑαυτῷ τὴν τῆς δικαιοσύνης κτῆσιν· εἰ δὲ μή, σφάλλεται πολλὰ καὶ ἀδικεῖ πολυτρόπως, τὰ μὲν ὑπὲρ χρημάτων τὰ δὲ ὑπὲρ δόξης τὰ δὲ ὑπὲρ ἡδονῶν.

61 Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς περὶ σωφροσύνης.

Πᾶσα μὲν γὰρ ἀρετὴ τὸ θνητοειδὲς πᾶν ἀτιμάζει, τὸ δὲ ἀθάνατον ἀσπάζεται· πολὺ δὲ διαφερόντως ἡ σωφροσύνη ταύτην ἔχει τὴν σπουδήν, ἅτε δὴ τὰς προσηλούσας τῷ σώματι τὴν ψυχὴν ἡδονὰς ἀτιμάζουσα καὶ ἐν ἁγνοῖς βάθροις βεβῶσα, ὡς φησὶ Πλάτων.

62 Ἐν ταυτῷ.

Πῶς γὰρ ἡ σωφροσύνη τελέους ἡμᾶς οὐ ποιεῖ τὸ ἀτελὲς καὶ ἐμπαθὲς ὅλον ἀφ' ἡμῶν ἐξορίζουσα; γνοίης δ' ἂν ὡς τοῦτο οὕτως ἔχει τὸν Βελλεροφόντην ἐννοήσας, ὃς μετὰ τῆς κοσμιότητος συναγωνιζομένης τὴν Χίμαιραν καὶ τὸ θηριῶδες καὶ ἄγριον καὶ ἀνήμερον φῦλον πᾶν ἀνεῖλεν. ὅλως γὰρ ἡ τῶν παθῶν ἄμετρος ἐπικράτεια οὐδὲ ἀνθρώπους ἀφίησιν εἶναι τοὺς ἀνθρώπους, πρὸς δὲ τὴν ἀλόγιστον αὐτοὺς ἕλκει φύσιν καὶ θηριώδη καὶ ἄτακτον.

63 Ἐν ταυτῷ.

Ἡ δὲ μέτροις ὡρισμένοις κατέχουσα τὰς ἡδονὰς εὐταξία σώζει μὲν οἴκους σώζει δὲ πόλεις κατὰ τὴν Κράτητος γνώμην· ἔτι δὲ πλησιάζει πως ἤδη πρὸς τὸ ὧν θεῶν εἶδος. τοιγαροῦν Περσεὺς ἐπ' αὐτὸ τὸ ἀκρότατον ἐλαύνων τῆς σωφροσύνης ἀγαθὸν ἡγουμένης τῆς Ἀθηνᾶς ἀπέκοψε τὴν Γοργόνα, τὴν εἰς τὴν ὕλην οἶμαι καθέλκουσαν καὶ ἀπολιθοῦσαν τοὺς ἀνθρώπους ἀνοήτῳ τῶν παθημάτων πλησμονῇ.

64 Ἐν ταυτῷ.

Ὅτι τοίνυν κρηπὶς τῆς ἀρετῆς, ὡς ἔλεγε Σωκράτης, ἡ ἐγκράτειά ἐστι τῆς γλυκυθυμίας· κόσμος δὲ τῶν ἀγαθῶν πάντων ἡ σωφροσύνη θεωρεῖται, ὥσπερ δὴ ἀπεφήνατο Πλάτων. ἀσφάλεια δὲ τῶν καλλίστων ἕξεων ἡ αὐτή ἐστιν ἀρετή, ὥσπερ ἐγὼ λέγω.

65 Ἐν ταυτῷ.

Ὃ δ' ἐστὶν ὄντως ὁμολογούμενον θαρρῶν διισχυρίζομαι, ὅτι δὴ δι' ὅλων τῶν ἀρετῶν τὸ κάλλος διατείνει τῆς σωφροσύνης καὶ συναρμόζει τὰς πάσας ἀρετὰς κατὰ μίαν ἁρμονίαν συμμετρίαν τε αὐταῖς καὶ κρᾶσιν πρὸς ἀλλήλας ἐντίθησι. τοιαύτη δὴ οὖν οὖσα καὶ ἀφορμὴν παρέχει ταῖς ὅλαις ὥστε ἐγγενέσθαι, καὶ ἐγγενομέναις αὐταῖς ἀσφαλῆ παρέχει σωτηρίαν.

66 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ ἡ τῶν ὡρῶν τοῦ ἐνιαυτοῦ σύστασις καὶ ἡ τῶν στοιχείων πρὸς ἄλληλα σύγκρασις συμφωνίαν ἀποσώζει καλλίστην καὶ σώφρονα. καὶ τό γε πᾶν τοῦτο διὰ τὴν κοσμιότητα τῶν καλλίστων μέτρων κόσμος ἐπικαλεῖται.

67 *Ἐκ τῶν τοῦ Τέλητος περὶ αὐταρκείας.*

Δεῖ ὥσπερ τὸν ἀγαθὸν ὑποκριτὴν ὅ τι ἂν ὁ ποιητὴς περιθῇ πρόσωπον τοῦτο ἀγωνίζεσθαι καλῶς, οὕτω καὶ τὸν ἀγαθὸν ἄνδρα ὅ τι ἂν περιθῇ ἡ τύχη. καὶ γὰρ αὕτη, φησὶν ὁ Βίων, ὥσπερ ποιήτρια, ὅτε μὲν πρωτολόγου ὅτε δὲ δευτερολόγου περιτίθησι πρόσωπον, καὶ ὅτε μὲν βασιλέως ὅτε δὲ ἀλήτου. μὴ οὖν βούλου δευτερολόγος ὢν τὸ πρωτολόγου πρόσωπον· εἰ δὲ μή, ἀνάρμοστόν τι ποιήσεις. σὺ μὲν ἄρχεις καλῶς ἐγὼ δὲ ἄρχομαι, φησί, καὶ σὺ μὲν πολλῶν ἐγὼ δὲ ἑνὸς τουτουΐ παιδαγωγὸς γενόμενος, καὶ σὺ μὲν εὔπορος γενόμενος δίδως ἐλευθερίως, ἐγὼ δὲ λαμβάνω εὐθαρσῶς παρὰ σοῦ, οὐχ ὑποπίπτων οὐδὲ ἀγεννίζων οὐδὲ μεμψιμοιρῶν. σὺ κέχρησαι τοῖς πολλοῖς καλῶς ἐγὼ δὲ τοῖς ὀλίγοις· οὐ γὰρ τὰ πολυτελῆ φησὶ τρέφειν, οὐδὲ ἐκείνοις μὲν ἔστι μετ' ὠφελείας χρῆσθαι, τοῖς δὲ ὀλίγοις καὶ εὐτελέσι μετὰ σωφροσύνης οὐκ ἔστι καὶ ἀτυφίας. διὸ καὶ εἰ λάβοι, φησὶν ὁ Βίων, φωνὴν τὰ πράγματα ὃν τρόπον ἡμεῖς καὶ δύναιτο δικαιολογεῖσθαι, οὐκ ἂν εἴποι, φησίν, πρῶτον ἡ πενία "ἄνθρωπε, τί μοι μάχῃ;" ὥσπερ οἰκέτης πρὸς κύριον ἐφ' ἱερὸν καθίσας δικαιολογεῖται "τί μοι μάχῃ; μή τι σοὶ κέκλοφα; οὐ πᾶν τὸ προσταττόμενον ὑπὸ σοῦ ποιῶ; οὐ τὴν ἀποφορὰν εὐτάκτως σοι φέρω;" καὶ ἡ πενία εἴποι πρὸς τὸν ἐγκαλοῦντα "τί μοι μάχῃ; μὴ καλοῦ τινος δι' ἐμὲ στερίσκῃ; μὴ σωφροσύνης; μὴ δικαιοσύνης; ἀνδρείας; ἀλλὰ μὴ τῶν ἀναγκαίων ἐνδεὴς εἶς; οὐ μεσταὶ μὲν αἱ ὁδοὶ λαχάνων; πλήρεις δὲ αἱ κρῆναι ὕδατος; οὐκ εὐνάς σοι τοσαύτας παρέχω ὁπόση γῆ; καὶ στρωμνὰς φύλλα; ἢ εὐφραίνεσθαι μετ' ἐμοῦ οὐκ ἔστιν σοι; ἢ οὐχ ὁρᾷς γρᾴδια φύστην φαγόντα τερετίζοντα; ἢ οὐκ ὄψον ἀδάπανον καὶ ἀτρύ-

φερον παρασκευάζω σοι τὴν πεῖναν; ἢ οὐχ ὁ πεινῶν ἥδιστα ἐσθίει καὶ ἥκιστα ὄψου δεῖται; καὶ ὁ διψῶν ἥδιστα πίνει καὶ ἥκιστα τὸ μὴ παρὸν ποτὸν ἀναμένει; ἢ πεινᾷ τις πλακοῦντα ἢ διψᾷ χιόνα; ἀλλ' οὐ ταῦτα διὰ τρυφὴν ζητοῦσιν οἱ ἄνθρωποι; ἢ οἰκήσεις οὐ παρέχω σοι, πρῶτον μὲν χειμῶνος τὰ βαλανεῖα, θέρους δὲ τὰ ἱερά; ποῖον γάρ σοι τοιοῦτον οἰκητήριον, φησὶν ὁ Διογένης, τοῦ θέρους, οἷον ἐμοὶ ὁ παρθενὼν οὗτος, εὔπνους καὶ πολυτελής;" εἰ ταῦτα λέγοι ἡ πενία, τί ἂν ἔχοις ἀντειπεῖν; ἐγὼ μὲν γὰρ ἂν δοκῶ ἄφωνος γενέσθαι. ἀλλ' ἡμεῖς πάντα μᾶλλον αἰτιώμεθα ἢ τὴν ἑαυτῶν δυστροπίαν καὶ κακοδαιμονίαν, τὸ γῆρας, τὴν πενίαν, τὸν ἀπαντήσαντα, τὴν ἡμέραν, τὴν ὥραν, τὸν τόπον. διό φησιν ὁ Διογένης φωνῆς ἀκηκοέναι κακίας ἑαυτὴν αἰτιωμένης "οὔτις ἐμοὶ τῶνδ' ἄλλος ἐπαίτιος, ἀλλ' ἐγὼ αὐτή." παράφοροι δὲ πολλοὶ οὐχ ἑαυτοῖς ἀλλὰ τοῖς πράγμασι τὴν αἰτίαν ἐπάγουσιν. ὁ δὲ Βίων, ὥσπερ τῶν θηρίων, φησί, παρὰ τὴν λῆψιν ἡ δῆξις γίνεται, κἂν μέσου τοῦ ὄφεως ἐπιλαμβάνῃς, δηχθήσῃ, ἐὰν τοῦ τραχήλου, οὐδὲν πείσῃ· οὕτω καὶ τῶν πραγμάτων, φησί, παρὰ τὴν ὑπόληψιν ἡ ὀδύνη γίνεται, καὶ ἐὰν μὲν οὕτως ὑπολάβῃς περὶ αὐτῶν, ὥσπερ ὁ Σωκράτης, οὐκ ὀδυνήσῃ, ἐὰν δὲ ὡς ἑτέρως, ἀνιάσῃ, οὐχ ὑπὸ τῶν πραγμάτων ἀλλ' ὑπὸ τῶν ἰδίων τρόπων καὶ τῆς ψευδοῦς δόξης. διὸ δεῖ μὴ τὰ πράγματα πειρᾶσθαι μετατιθέναι, ἀλλ' αὑτὸν παρασκευάσαι πρὸς ταῦτα πῶς ἔχοντα, ὅπερ ποιοῦσιν οἱ ναυτικοί· οὐ γὰρ τοὺς ἀνέμους καὶ τὴν θάλατταν πειρῶνται μετατιθέναι, ἀλλὰ παρασκευάζουσιν αὑτοὺς δυναμένους πρὸς ἐκεῖνα στρέφεσθαι. εὐδία; γαλήνη; ταῖς κώπαις πλέουσι· κατὰ ναῦν ἄνεμος; ἐπῆραν τὰ ἄρμενα· ἀντιπέπνευκεν;

ἐστείλαντο, μεθείλαντο. καὶ σὺ πρὸς τὰ παρόντα χρῶ. γέρων γέγονας; μὴ ζήτει τὰ τοῦ νέου· ἀσθενὴς πάλιν; μὴ ζήτει τὰ τοῦ ἰσχυροῦ, φορτία βαστάζειν καὶ διατραχηλίζεσθαι, ἀλλ' ὥσπερ Διογένης, ὃς ἐπεί τις ὤθει καὶ ἐτραχήλιζεν ἀσθενῶς ἔχοντα, οὐ διετραχηλίζετο, ἀλλὰ δείξας αὐτῷ τὸν κίονα "βέλτιστε" ἔφη "τοῦτον ὤθει πρὸς τάδε." ἄπορος πάλιν γέγονας; μὴ ζήτει τὴν τοῦ εὐπόρου δίαιταν, ἀλλ' ὡς πρὸς τὸν ἀέρα φράττῃ (εὐδία, καὶ διεστείλω, ψῦχος, συνεστείλω), οὕτω καὶ πρὸς τὰ ὑπάρχοντα δι' εὐπορίαν διάστειλον, ἀπορίαν καὶ σύστειλον. ἀλλ' ἡμεῖς οὐ δυνάμεθα ἀρκεῖσθαι τοῖς παροῦσιν, ὅταν καὶ τρυφῇ πολὺ διδῶμεν, καὶ τὸ ἐργάζεσθαι [ζημί]αν κρίνωμεν καὶ τὸν θάνατον ἔσχατόν τι τῶν κακῶν. ἐὰν δὲ ποιήσῃ καὶ τῆς ἡδονῆς καταφρονοῦντά τινα, καὶ πρὸς τοὺς πόνους μὴ διαβεβλημένον, καὶ πρὸς δόξαν καὶ ἀδοξίαν ἴσως ἔχοντα, καὶ τὸν θάνατον μὴ φοβούμενον, ὅτι ἂν θέλῃς ἐξέσται σοι ἀνωδύνῳ ὄντι ποιεῖν. διὸ ἅπερ λέγω, οὐχ ὁρῶ πῶς αὐτὰ τὰ πράγματα ἔχει τι δύσκολον, ἢ γῆρας ἢ πενία ἢ ξενία. οὐκ ἀηδῶς γὰρ Ξενοφῶν "ἐάν σοι" φησί "δείξω δύο ἀδελφῶν τὴν ἴσην οὐσίαν διελομένων τὸν μὲν ἐν τῇ πάσῃ ἀπορίᾳ τὸν δὲ ἐν εὐκολίᾳ, οὐ φανερὸν ὅτι οὐ τὰ χρήματα αἰτιατέον ἀλλ' ἕτερόν τι;" οὕτως ἐάν σοι δείξω δύο πένητας, δύο γέροντας, δύο φεύγοντας, τὸν μὲν ἐν τῇ πάσῃ εὐκολίᾳ καὶ ἀπαθείᾳ ὄντα τὸν δὲ ἐν τῇ πάσῃ ταραχῇ, οὐ φανερὸν ὅτι οὐ τὸ γῆρας, οὐ τὴν πενίαν, οὐ τὴν ξενίαν αἰτιατέον ἀλλ' ἕτερόν τι; καὶ ὅπερ Διογένης ἐποίησεν πρὸς τὸν πολυτελῆ φάμενον πόλιν εἶναι τὰς Ἀθήνας· λαβὼν γὰρ αὐτὸν ἦγεν εἰς τὸ μυροπωλεῖον καὶ ἐπυνθάνετο πόσου τῆς κύπρου ἡ κοτύλη. "μνᾶς" φησὶν ὁ μυροπώλης· ἀνέκραγε "πολυ-

τελής γε ἡ πόλις." ἀπῆγεν αὐτὸν πάλιν εἰς τὸ μαγειρεῖον καὶ ἐπυνθάνετο πόσου τὸ ἀκροκώλιον. "τριῶν δραχμῶν." ἐβόα "πολυτελής γε ἡ πόλις." εἰς τὰ ἔρια πάλιν τὰ μαλακὰ καὶ πόσου τὸ πρόβατον. "μνᾶς" φησίν. ἐβόα "πολυτελής γε ἡ πόλις." "δεῦρο δή" φησί. κἀνταῦθα ἄγει αὐτὸν καὶ εἰς τοὺς θέρμους. "πόσου ἡ χοίνιξ;" "χαλκοῦ" φησίν· ἀνέκραγεν ὁ Διογένης "εὐτελής γε ἡ πόλις." πάλιν εἰς τὰς ἰσχάδας, "δύο χαλκῶν·" "τῶν δὲ μύρτων;" "δύο χαλκῶν·" "εὐτελής γε ἡ πόλις." ὃν τρόπον οὖν τῷδε οὐχ ἡ πόλις εὐτελὴς καὶ πολυτελής (ἐὰν μὲν γὰρ οὕτω τὶς ζήσῃ, πολυτελής, ἐὰν δὲ οὕτως, εὐτελής), οὕτω καὶ τὰ πράγματα, ἐὰν μέν τις αὐτοῖς οὕτω χρῆται, εὐπετῆ καὶ ῥάδια φανεῖται, ἐὰν δὲ οὕτως, δυσχερῆ. ἀλλ' ὅμως δοκεῖ μοι ἔχειν τι ἡ πενία δυσχερὲς καὶ ἐπίπονον, καὶ μᾶλλον ἄν τις ἐπαινέσειε τὸν μετὰ πενίας εὐκόλως γῆρας ἐνέγκαντα ἢ τὸν μετὰ πλούτου. καὶ τί ἔχει δυσχερὲς ἢ ἐπίπονον ἡ πενία; ἢ οὐ Κράτης καὶ Διογένης πένητες ἦσαν; καὶ πῶς ῥᾳδίως διεξήγαγον; ἄτυφοι γενόμενοι καὶ ἐπαῖται, καὶ διαίτῃ εὐτελεῖ καὶ λιτῇ δυνάμενοι χρήσασθαι. ἀπορία καὶ δάνεια περιέστηκεν; κόγχον καὶ κύαμον συνάγαγε, φησὶν ὁ Κράτης, καὶ τὰ τούτοις πρόσφορα· κἂν τάδε δράσῃς, ῥᾳδίως στήσεις τρόπαιον κατὰ πενίας. ἢ τί δεῖ μᾶλλον ἐπαινέσαι, τὸν μετὰ πενίας εὐκόλως γῆρας ἐνεγκόντα ἢ τὸν μετὰ πλούτου; ἔπειτα οὐδὲ γνῶναι ῥᾳδιέστερόν ἐστι, ποῖόν τι ἐστὶ πλοῦτος ἢ ποῖόν τι πενία· ἀλλὰ καὶ πλούτῳ πολλοὶ μετὰ γήρως δυσκόλως χρῶνται καὶ πενίᾳ ἀγεννῶς καὶ ὀδυρτικῶς· καὶ οὔτε τοῦτο ῥάδιον, ὥστε τῷ πλούτῳ ἐλευθερίως καὶ ἀφόρτως, οὔτε ἐκεῖνο, ὥστε πενίᾳ γενναίως, ἀλλὰ τοῦ αὐτοῦ ἀμφότερα, καὶ ὥσπερ τοῖς πολλοῖς δύναται κατὰ τρόπον,

οὕτω καὶ τοῖς ἀνάπαλιν. καὶ ἐὰν μὲν ἐκποιῇ πενητεύουσι μένειν ἐν τῷ βίῳ, εἰ δὲ μή, ῥᾳδίως ἀπαλλάττεσθαι ὥσπερ ἐκ πανηγύρεως οὕτω καὶ ἐκ τοῦ βίου. καθάπερ καὶ ἐξ οἰκίας, φησὶν ὁ Βίων, ἐξοικιζόμεθα, ὅταν τὸ ἐνοίκιον ὁ μισθώσας οὐ κομιζόμενος τὴν θύραν ἀφέλῃ, τὸν κέραμον ἀφέλῃ, τὸ φρέαρ ἐγκλείσῃ, οὕτω καὶ ἐκ τοῦ σωματίου ἐξοικίζομαι, ὅταν ἡ μισθώσασα φύσις τοὺς ὀφθαλμοὺς ἀφαιρῆται τὰ ὦτα τὰς χεῖρας τοὺς πόδας· οὐχ ὑπομένω, ἀλλ' ὥσπερ ἐκ συμποσίου ἀπαλλάττομαι οὐθὲν δυσχεραίνων οὕτω καὶ ἐκ τοῦ βίου, ὅταν ἡ ὥρα ᾖ. "ἔμβα πορθμίδος ἔρυμα." ὥσπερ ἀγαθὸς ὑποκριτὴς εὖ καὶ τὸν πρόλογον εὖ καὶ τὰ μέσα εὖ καὶ τὴν καταστροφήν, οὕτω καὶ ὁ ἀγαθὸς ἀνὴρ εὖ καὶ τὰ πρῶτα τοῦ βίου εὖ καὶ τὰ μέσα εὖ καὶ τὴν τελευτήν· καὶ ὥσπερ ἱμάτιον τρίβωνα γενόμενον ἀπεθέμην καὶ οὐ παρέλκω, οὐδὲ φιλοψυχῶ, ἀλλὰ καὶ δυνάμενος ἔτι εὐδαιμονεῖν ἀπαλλάττομαι, καθάπερ καὶ Σωκράτης. ἦν αὐτῷ ἐκ τοῦ δεσμωτηρίου, εἰ ἐβούλετο, ἐξελθεῖν, καὶ τῶν δικαστῶν κελευόντων ἀργυρίου τιμήσασθαι οὐ προσεῖχεν, ἀλλὰ τῆς ἐν πρυτανείῳ σιτήσεως ἐτιμήσατο· καὶ τριῶν ἡμερῶν αὐτῷ δοθεισῶν τῇ πρώτῃ ἔπιεν καὶ οὐ προσέμεινεν τῆς τρίτης ἡμέρας τὴν ἐσχάτην ὥραν παρατηρῶν εἰ ἔτι ἥλιος ἐπὶ τῶν ὀρῶν, ἀλλ' εὐθαρσῶς τῇ πρώτῃ, [καί, ὡς Πλάτων φη]σίν, οὐδὲν τρέψας οὔτε τοῦ προσώπου οὔτε τοῦ χρώματος, ἀλλὰ μάλα ἱλαρῶς τε καὶ εὐκόλως λαβὼν τὸ ποτήριον ἐξέπιεν, καὶ τὸ τελευταῖον ἀποκοτταβίσας "τουτί" φησίν "Ἀλκιβιάδῃ τῷ καλῷ." (ὅρα σχολὴν καὶ παιδείαν· ἡμεῖς δέ, κἂν ἄλλον ἴδωμεν, πεφρίκαμεν) καὶ μέλλων ἀποθνήσκειν, ἐκάθευδε βαθέως, ὥστε μόλις διεγεῖραι τινά (ταχύ γ' ἂν καὶ ἡμῶν τις ἂν κοιμηθείη). καὶ γυναικὸς χαλεπότητα πρᾴως ἔφερε

κἀκείνης βοώσης οὐκ ἐφρόντιζεν, ἀλλὰ Κριτοβούλου εἰπόντος "πῶς ἀνέχῃ ταύτης συμβιούσης;" "πῶς δὲ σὺ τῶν παρὰ σοὶ χηνῶν;" "τί δέ μοι μέλει ἐκείνων" φησίν. "οὕτως οὐδ' ἐμοὶ ταύτης, ἀλλ' ἀκούω ὥσπερ χηνός." καὶ πάλιν παρειληφότος αὐτοῦ Ἀλκιβιάδην ἐπ' ἄριστον, ὡς ἐκείνη παρελθοῦσα τὴν τράπεζαν ἀνέτρεψεν, οὐκ ἐβόα οὐδ' ὠδυνᾶτο δεινοπαθῶν "ὢ τῆς παρανομίας," ὥστε ταύτῃ πάσχειν, ἀλλ' ἀναλέξας τὰ πεσόντα ἐπιθέσθαι πάλιν ἐκέλευσε τὸν Ἀλκιβιάδην· ὡς δὲ ἐκεῖνος οὐ προσεῖχεν ἀλλ' ἐγκαλυψάμενος ἐκάθητο αἰσχυνόμενος "προάγωμεν δὴ" φησίν "ἔξω· φαίνεται γὰρ ἡ Ξανθίππη ὀξυρεγμίᾳ σπαράσσειν ἡμᾶς." εἶτα μετ' ὀλίγας ἡμέρας αὐτὸς ἀριστῶν παρὰ τῷ Ἀλκιβιάδῃ, ὡς ἡ ὄρνις ἡ γενναία ἐπιπτᾶσα κατέβαλε τὸν πίνακα, συγκαλυψάμενος ἐκάθητο καὶ οὐκ ἠρίστα· ὡς δὲ ἐκεῖνος ἐγέλα καὶ ἐπυνθάνετο εἰ διὰ τοῦτο οὐκ ἀριστᾷ ὅτι ἡ ὄρνις ἐπιστᾶσα καταβάλοι "δῆλον ὅτι" φησί "σὺ μὲν πρώην Ξανθίππης ἀνατρεψάσης οὐκ ἐβούλου ἀριστᾶν, ἐμὲ δὲ οἴει νῦν ἀριστᾶν τῆς ὄρνιθος ἀνατρεψάσης; ἢ διαφέρειν τι ἐκείνην ὄρνιθος κορυζώσης ἡγῇ;" "ἀλλ' εἰ μὲν ὗς" φησίν "ἀνέτρεψεν, οὐκ ἂν ὠργίζου, οὐκ ἂν διηνέχθης;" "εἰ δὲ γυνὴ ὑώδης;" ὅρα παιδείαν.

68 Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου (c. 43).

Πᾶν πρᾶγμα καὶ πρόσωπον δύο ἔχει λαβάς, μιᾷ φορητόν, μιᾷ ἀφόρητον· ὁ ἀδελφὸς ἐὰν ἀδικῇ, ἔνθεν αὐτὸ μὴ λάμβανε ὅτι ἀδικεῖ, ἀλλ' ἐκεῖθεν ὅτι ἀδελφός· καὶ οὕτω λήψῃ αὐτὸ καθ' ὃ φορητόν ἐστι.

69 Διωτογένεος Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ ὁσιότητος.

Περὶ βίω ἐκλογισμὸς καθ' ὅν κ' εἴη ὁ ἀνθρώπινος

βίος ὁσιώτατός τε καὶ νομιμώτατος. πρᾶτον μὲν αἴκα τις μὴ πολυπραγμονῇ μηδὲ ταχὺ ἐπὶ τὰς δίκας ὁρμώῃ, ἀλλὰ πολὺν χρόνον ἀμβαλλόμενος αὐτός τε προσκαλεόμενος ἄνευ δίκας, ὥστε ὁ ἀντίδικος προεκαλέσατο ἐμμένεν· καὶ αἴκα τὰ πολλὰ * ἐξηταγόρεν τῷ πράγματι * καμαύλῃ ἀλλ' αὐτὸ τὸ πρᾶγμα. καὶ ἐπὶ μὲν τᾶς ἀλλοτρίας ζαμίας τὸ ἀκριβὲς μῷτο, ἐπὶ δὲ τᾶς ἰδίας τὸ μέτριον· τὸ γὰρ αὐτὸν παρ' αὐτῷ διαιτεῖσθαι μετριωτέρω ἤθεος. καὶ μὴ ἐπὶ τᾷ ζαμίᾳ οὕτως ὡς ἐπὶ τᾷ αἰσχύνᾳ λυποῖτο· τὸ μὲν γὰρ ἐπ' ἀργυρίῳ ὀδυνᾶσθαι φαύλω ἤθεος, τὸ δὲ ἐπὶ τᾷ αἰσχύνᾳ καὶ τᾷ ἀτιμίᾳ καλοκαγάθω.

70 Ἐκ τῶν Ἀριστοξένου Πυθαγορικῶν ἀποφάσεων.

Τὴν ἀληθῆ φιλοκαλίαν ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασι καὶ ἐν ταῖς ἐπιστήμαις ἔλεγεν εἶναι· τὸ γὰρ ἀγαπᾶν καὶ στέργειν τῶν καλῶν ἐθῶν τε καὶ ἐπιτηδευμάτων ὑπάρχειν· ὡσαύτως δὲ καὶ τῶν ἐπιστημῶν τε καὶ ἐμπειριῶν τὰς καλὰς καὶ εὐσχήμονας ἀληθῶς εἶναι φιλοκάλους, τὴν δὲ λεγομένην ὑπὸ τῶν πολλῶν φιλοκαλίαν, οἷον τοῖς ἀναγκαίοις καὶ χρησίμοις πρὸς τὸν βίον γινομένην, λάφυρά που τῆς ἀληθινῆς κεῖσθαι φιλοκαλίας.

71 Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου (c. 33, 15).

Τὰ πολλὰ δὲ καὶ τὸ γελᾶν ἀπέστω καὶ τὸ γέλωτα κινεῖν· ὀλισθηρὸς γὰρ ὁ τόπος εἰς ἰδιωτισμόν, καὶ ἅμα τὴν αἰδῶ τὴν πρὸς σὲ τῶν πλησίον ἱκανὸς ἀνεῖναι καὶ διαφθεῖραι. καὶ ἄλλος παράκειται τόπος ἐπισφαλὴς ταῖς τοιαύταις ἀνέσεσι, τὸ εἰς αἰσχρολογίαν εὐκόλως προαγαγεῖν τὸν πλησίον. ὅταν οὖν τι συμβῇ τοιοῦτον, ἂν μὲν εὔκαιρον ᾖ, καὶ ἐπίπληξον τῷ αἰ-

σχρολογήσαντι· ἐὰν δὲ τοιαῦτα ᾖ τὰ πρόσωπα ὥστε μὴ καιρὸν εἶναι, τῷ ἀποσιωπῆσαι καὶ σκυθρωπάσαι καὶ ἐρυθριᾶσαι δῆλος γενοῦ δυσαρεστῶν τῷ ῥηθέντι.

72 *Πυθαγορικά.*

Καὶ μὴν οὐδέν ἐστιν οὕτω τῆς Πυθαγορικῆς φιλοσοφίας ἴδιον ὡς τὸ συμβολικόν, οἷον ἐν τελετῇ μεμιγμένον φωνῇ καὶ σιωπῇ διδασκαλίας γένος, ὥστε μὴ λέγειν "ἀείσω ξυνετοῖσι, θύρας δ' ἐπίθεσθε βέβηλοι," ἀλλ' αὐτόθεν ἔχειν φῶς καὶ χαρακτῆρα τοῖς συνήθεσι τὸ φραζόμενον, τυφλὸν δὲ καὶ ἄσημον εἶναι τοῖς ἀπείροις. ὡς γὰρ ὁ ἄναξ ὁ ἐν Δελφοῖς οὔτε λέγει οὔτε κρύπτει ἀλλὰ σημαίνει, κατὰ τὸν Ἡράκλειτον, οὕτω τῶν Πυθαγορικῶν συμβόλων καὶ τὸ φράζεσθαι δοκοῦν κρυπτόμενόν ἐστι καὶ τὸ κρύπτεσθαι νοούμενον.

73 *Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.*

Γαλακτοφάγοι, Σκυθικὸν ἔθνος, ἄοικοί τε εἰσίν, ὥσπερ καὶ οἱ πλεῖστοι Σκυθῶν, τροφήν τ' ἔχουσι γάλα μόνον ἵππειον, ἐξ οὗ τυροποιοῦντες ἐσθίουσι καὶ πίνουσι, καὶ εἰσὶ διὰ τοῦτο δυσμαχώτατοι, σὺν αὑτοῖς πάντῃ τὴν τροφὴν ἔχοντες. οὗτοι καὶ Δαρεῖον ἐτρέψαντο. εἰσὶ δὲ καὶ δικαιότατοι, κοινὰ ἔχοντες τά τε κτήματα καὶ τὰς γυναῖκας, ὥστε τοὺς μὲν πρεσβυτέρους αὐτῶν πατέρας νομίζειν, τοὺς δὲ νεωτέρους παῖδας, τοὺς δ' ἥλικας ἀδελφούς. ὧν ἦν καὶ Ἀνάχαρσις, εἷς τῶν ἑπτὰ σοφῶν νομισθείς, ὃς ἦλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα, ἵνα ἱστορήσῃ τὰ τῶν Ἑλλήνων νόμιμα. [τούτων καὶ Ὅμηρος μέμνηται ἐν οἷς φησί

Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων, καὶ ἀγαυῶν Ἱππημολγῶν,
γλακτοφάγων ἀβίων τε, δικαιοτάτων ἀνθρώπων.

ἀβίους δ' αὐτοὺς λέγει ἢ διὰ τὸ γῆν μὴ γεωργεῖν, ἢ

διὰ τὸ ἀοίκους εἶναι, ἢ διὰ τὸ χρῆσθαι τούτους μόνους τόξοις· βιὸν γὰρ λέγει τὸ τόξον.] παρὰ τούτοις οὐδὲ εἷς οὔτε φθονῶν, ὥς φασιν, οὔτε μισῶν οὔτε φοβούμενος ἱστορήθη, διὰ τὴν τοῦ βίου κοινότητα καὶ δικαιοσύνην. μάχιμοι δ' οὐχ ἧττον αὐτῶν αἱ γυναῖκες ἢ οἱ ἄνδρες, καὶ συμπολεμοῦσιν αὐτοῖς ὅταν δέῃ. καὶ διὰ τοῦτο Ἀμαζόνας γενναιοτάτας εἶναι, ὥστε ποτὲ ἐλάσαι μέχρι Ἀθηνῶν καὶ Κιλικίας, ὅτι τούτων παρῴκουν ἐγγὺς τῆς Μαιώτιδος λίμνης.

74 *Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου* (p. 73 R.).

Οὕτω γὰρ χρὴ καθαρὸν εἶναι τὸν βίον τοῦ σώφρονος ἀνδρός, ὥστε μηδὲ δέχεσθαι δόξαν αἰτίας πονηρᾶς.

75 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (c. 15).

Ἐν συμποσίῳ σε οὕτω δεῖ ἀναστρέφεσθαι· περιφερόμενόν τι γέγονε κατὰ σέ; ἐκτείνας τὴν χεῖρα μετρίως ἔφαψαι· παρέρχεται; μὴ κάτεχε· οὔπω ἐλήλυθε; μὴ ἐπίβαλλε πόρρω τὴν ὄρεξιν, ἀλλ' ἐκδέχου κατὰ σὲ γενέσθαι αὐτό. οὕτω πρὸς πλοῦτον, οὕτω πρὸς ἀρχάς, οὕτω πρὸς γάμον, καὶ ἔσῃ ἄξιος συμπότης τῶν θεῶν. ἂν δὲ παρατεθέντων σοι μὴ λάβῃς, ἀλλ' ὑπερίδῃς, τότε οὐ μόνον τῶν θεῶν συμπότης ἔσῃ, ἀλλὰ συνάρχων· οὕτω γὰρ ποιῶν καὶ Διογένης καὶ Ἡράκλειτος καὶ οἱ ὅμοιοι ἀξίως θεῖοί τ' ἦσαν καὶ ἐλέγοντο.

76 *Μουσωνίου.*

Κἂν ἡδονῇ κανονιστέον ᾖ τὰ ἀρεστά, οὐδὲν τῆς σωφροσύνης ἥδιον, κἂν πόνῳ κανονιστέον ᾖ τὰ φευκτά, οὐδέν ἐστι τῆς ἀκρασίας ἐπιπονώτερον.

77 *Δημοκρίτου.*

Ἡδονὴν οὐ πᾶσαν, ἀλλὰ τὴν ἐπὶ τῷ καλῷ αἱρέεσθαι χρεών.

78 Τοῦ αὐτοῦ.

Δίκαιος ἔρως ἀνυβρίστως ἐφίεσθαι τῶν καλῶν.

79 Ξενοφῶντος ἐκ τῆς πρὸς Λαμπρόκλειαν ἐπιστολῆς.

Πρῶτον γὰρ ἂν δέξαιο Σωκράτους ὑπερφυὲς δίδαγμα, πλοῦτον μετρεῖν χρήσει. οὐ γὰρ ἔφη Σωκράτης εἶναι τὴν ὑπέρμετρον κτῆσιν πλοῦτον, τὸ δ' ὅσοις προσήκει χρῆσθαι, ἔπειτα δὲ τούτων μὴ διαμαρτάνειν. τῷ γὰρ ὄντι τούτους κεκλῆσθαι εὐπόρους, τοὺς δ' ἄλλους πένητας ἀπεκάλει, καὶ ἀνίατον αὐτοὺς ἔφασκε πενίαν πένεσθαι· ψυχῆς γὰρ εἶναι τὸ ἀρρώστημα, οὐ κτήσεως.

80 Ἐν ταυτῷ.

Κακὸν οὐδὲν φύεται ἐν ἀνδρὶ θεμέλια θεμένῳ σοφίας σωφροσύνην καὶ ἐγκράτειαν.

81 Σωκράτους.

Δεῖ ὥσπερ σειρῆνας τὰς ἡδονὰς παρελθεῖν τὸν σπεύδοντα τὴν ἀρετὴν ἰδεῖν ὥσπερ πατρίδα.

82 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Εὐριπίδης εὐδοκίμησεν ἐν θεάτρῳ εἰπὼν "τί δ' αἰσχρὸν ἢν μὴ τοῖσι χρωμένοις δοκῇ;" καὶ Πλάτων ἐντυχὼν αὐτῷ "ὦ Εὐριπίδη" ἔφη "αἰσχρὸν τό γ' αἰσχρόν, κἂν δοκῇ κἂν μὴ δοκῇ."

83 Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.

Γέλων ὁ Σικελίας τύραννος σαπρόστομος ἦν. ὡς οὖν τῶν φίλων εἶπέν τις αὐτῷ, ὠργίζετο τῇ γυναικὶ ὅτι οὐκ ἐμήνυσεν αὐτῷ· ἡ δὲ ἔφη "ᾤμην γὰρ καὶ τῶν λοιπῶν ὁμοίως ὄζειν τὸ στόμα."

84 Ἐπικτήτου.

Ἐξέταξε σαυτὸν πότερον πλουτεῖν θέλεις ἢ εὐδαιμονεῖν. καὶ εἰ μὲν πλουτεῖν, ἴσθι ὅτι οὔτε ἀγαθὸν οὔτε ἐπὶ σοὶ πάντῃ, εἰ δὲ εὐδαιμονεῖν, ὅτι καὶ ἀγαθὸν καὶ ἐπὶ σοί· ἐπεὶ τὸ μὲν τύχης ἐπίκαιρον δάνειον, τὸ δὲ τῆς εὐδαιμονίας προαιρέσεως.

85 Καθάπερ ἔχιν ἢ ἀσπίδα ἢ σκορπίον ἐν ἐλεφαντίνῃ ἢ χρυσῇ θεώμενος κίστῃ οὐ διὰ τὸ πολυτελὲς τῆς ὕλης ἀγαπᾷς καὶ εὐδαιμονίζεις, ἀλλ' ὅτι λυμαντικὴ ἡ φύσις ἐκτρέπῃ καὶ μυσάττῃ, οὕτω καὶ ἐπειδὰν ἐν πλούτῳ καὶ ὄγκῳ τύχης θεάσῃ κακίαν ἐνοῦσαν μὴ καταπλαγῇς τὸ περιλαμπὲς τῆς ὕλης, ἀλλὰ καταφρόνει τῆς ἐν τῷ τρόπῳ κιβδηλίας.

86 Ὁ πλοῦτος οὐ τῶν ἀγαθῶν, ἡ πολυτέλεια τῶν κακῶν, ἡ σωφροσύνη τῶν ἀγαθῶν. καλεῖ δὲ ἡ μὲν σωφροσύνη ἐπὶ τὴν εὐτέλειαν καὶ κτῆσιν τῶν ἀγαθῶν, ὁ δὲ πλοῦτος ἐπὶ τὴν πολυτέλειαν, καὶ ἀφέλκει τῆς σωφροσύνης. δυσχερὲς ἄρα πλουτοῦντα σωφρονεῖν ἢ σωφρονοῦντα πλουτεῖν.

87 Ὥσπερ εἰ ἐν νηὶ ἐσπάρης ἢ ἐτέχθης, οὐκ ἂν ἔσπευδες αὐτῆς κυβερνήτης ὑπάρχειν· οὔτε γὰρ ἐκεῖ σοι φύσει ἡ ναῦς συνέσται οὔτε ἐνταῦθα ὁ πλοῦτος, ἀλλὰ πάντῃ ὁ λόγος. ὅπερ οὖν σοι φυσικὸν καὶ συγγενές, ὁ λόγος, τοῦτο καὶ οἰκεῖον ἡγησάμενος τούτου ἐπιμελοῦ.

88 Ἐν Πέρσαις γεννηθεὶς οὐκ ἂν ἔσπευδες οἰκεῖν τὴν Ἑλλάδα ἀλλ' αὐτόθι διάγων εὐτυχεῖν· ἐν πενίᾳ δὲ γεννηθεὶς τί σπεύδεις πλουτεῖν ἀλλ' οὐκ αὐτόθι μένων εὐτυχεῖν;

89 Ὥσπερ ἐπὶ σμικροῦ σκίμποδος θλιβόμενον ὑγιαίνειν ἄμεινον ἢ ἐπὶ πλατείας κλίνης κυλινδόμενον νο-

σεῖν, οὕτω καὶ ἐν μικρᾷ περιουσίᾳ βέλτιον συστελλόμενον εὐθυμεῖν ἢ ἐν μεγάλῃ τυγχάνοντα δυσθυμεῖν.

90 *Οὐ πενία λύπην ἐργάζεται ἀλλὰ ἐπιθυμία, οὐδὲ πλοῦτος φόβον ἀπαλλάττει ἀλλὰ λογισμός. κτησάμενος τοιγαροῦν λογισμὸν οὔτε πλούτου ἐπιθυμήσεις οὔτε πενίαν μέμψῃ.*

91 *Οὔτε ἵππος ἐπὶ φάτνῃ καὶ φαλάροις καὶ τάπησιν οὔτε ὄρνις ἐπὶ βρώμῃ καὶ καλιᾷ ὑψοῦται καὶ γαυριᾷ, ἀλλ' ἄμφω ἐπὶ ὠκύτητι, ὃ μὲν ποδῶν ὃ δὲ πτερῶν. καὶ σὺ τοιγαροῦν μὴ ἐπὶ τροφῇ καὶ σκέπῃ καὶ ἁπλῶς τῇ ἔξωθεν περιουσίᾳ μάταια ὀγκοῦ ἀλλ' ἐπὶ χρηστότητι καὶ εὐποιίᾳ.*

92 *Τὸ καλῶς ζῆν τοῦ πολυτελῶς διαφέρει· τὸ μὲν γὰρ ἐκ σωφροσύνης καὶ αὐταρκείας καὶ εὐταξίας καὶ κοσμιότητος [καὶ εὐτελείας] παραγίνεται, τὸ δὲ ἐξ ἀκολασίας καὶ τρυφῆς καὶ ἀταξίας καὶ ἀκοσμίας· τέλος δὲ τοῦ μὲν ἔπαινος ἀληθὴς τοῦ δὲ ψόγος. εἰ τοίνυν βούλει καλῶς ζῆν, μὴ ζήτει μετὰ πολυτελείας ἐπαινεῖσθαι.*

93 *Μέτρον ἔστω σοι παντὸς σίτου καὶ ποτοῦ ἡ πρώτη τῆς ὀρέξεως ἔμπλησις· ὄψον δὲ καὶ ἡδονὴ αὐτὴ ἡ ὄρεξις· καὶ οὔτε πλείονα τῶν δεόντων προσοίσῃ, οὔτε ὀψοποιῶν δεήσῃ, ποτῷ τε τῷ παραπεσόντι ἀρκεσθήσῃ.*

94 *Τὰς σιτήσεις ποιοῦ μὴ πολυτελεῖς καὶ σκυθρωπάς, ἀλλὰ καὶ λαμπρὰς καὶ εὐτελεῖς, ἵνα μήτε διὰ τὰ σωματικὰ αἱ ψυχαὶ ταράττωνται μήτε φενακιζόμεναι πρὸς τῶν ἡδονῶν τῶν σωματικῶν ὀλιγωρῶσιν, ἐπεί τοι βλάπτονται τρυφῶντα μὲν παραυτίκα νοσοῦντα δὲ εἰσαῦθις τὰ σώματα.*

95 *Φρόντιζε ὅπως σε μὴ τὰ ἐν τῇ γαστρὶ μόνον σι-*

τία ἐπαινῇ, ἀλλ' ἡ ἐν τῇ ψυχῇ εὐκρασία, ἐπεὶ τὰ μὲν ἀποσκυβαλίζεται, καὶ συνεκρεῖ ὁ ἔπαινος, ἣ δὲ κἂν ἡ ψυχὴ χωρισθῇ διαπαντὸς ἀκήρατος μένει.

96 *Ἐν ταῖς ἑστιάσεσι μέμνησο ὅτι δύο ὑποδέχῃ, σῶμα καὶ ψυχήν, καὶ ὅ τι ἂν τῷ σώματι δῷς τοῦτο εὐθέως ἐξέχεας, ὅ τι δ' ἂν τῇ ψυχῇ διαπαντὸς τηρεῖς.*

97 *Μὴ συγκεράσας ἅμα ὀργὴν πολυτελείᾳ προσενέγκῃς, [ἐπεὶ ἡ] πολυτέλεια μὲν εἰσπηδήσασα τῷ σώματι μετ' οὐ πολὺ οἴχεται, ἡ δὲ ὀργὴ ἐνδῦσα τῇ ψυχῇ ἐπὶ τὸ μήκιστον μένει. σκόπει τοιγαροῦν ὅπως μὴ ὑπ' ὀργῆς ἐξαχθεὶς τοὺς δαιτυμόνας πολυτελῶς ὑβρίσῃς, ἀλλὰ μᾶλλον μεθ' ἡμερότητος εὐτελῶς εὐφράνῃς.*

98 *Αἰσχρὸν τοῖς τῶν μελιττῶν δωρήμασι γλυκάζοντα, τὴν κατάποσιν τὸ τῶν θεῶν δῶρον τὸν λόγον πικράζειν τῇ κακίᾳ.*

99 *Μελέτω σοι ἐν τοῖς σιτίοις, ὅπως σοι οἱ ὑπουργοῦντες μὴ πλείους τῶν ὑπουργουμένων ὑπάρχωσιν· ἄτοπον γὰρ ὀλίγαις στιβάσι πολλὰς δουλεύειν ψυχάς.*

100 *Ἄριστον μὲν εἰ κἀν ταῖς παρασκευαῖς χειρουργῶν κἀν ταῖς τροφαῖς ἑστιώμενος κυβερνᾷς τοῖς θεραπεύουσι τῶν παρόντων. εἰ δὲ τὸ τοιόνδε δυσχερὲς τῷ καιρῷ ὑπάρχοι, μέμνησο ὅτι μὴ κάμνων ὑπὸ καμνόντων ὑπουργῇ, ἐσθίων ὑπὸ μὴ ἐσθιόντων, πίνων ὑπὸ μὴ πινόντων, λαλῶν ὑπὸ σιωπώντων, ἀνειμένος ὑπὸ συνεσταλμένων· καὶ οὔτε αὐτὸς φλεγμήνας ἄτοπον πείσῃ οὔθ' ἕτερον ἀγριάνας χαλεπὸν ἐργάσῃ.*

101 *Ἐρίζειν καὶ φιλονεικεῖν πάντῃ μὲν ἄτοπον, μάλιστα δὲ ἐν ταῖς παρὰ πότον ὁμιλίαις ἀπρεπές. οὔτε γὰρ ἂν μεθύων νήφοντα διδάξειέ τις οὔτ' αὖ μεθύων πρὸς νήφοντος πεισθείη. ἔνθα δ' ἂν μὴ παρῇ πειθοῦς τέλος, εἰκῇ σε παρέχεις διατείνεσθαι.*

102 Οἱ τέττιγες μουσικοὶ οἱ δὲ κοχλίαι ἄφωνοι, χαίρουσι δὲ οἳ μὲν ὑγραινόμενοι οἳ δὲ ἀλεαινόμενοι. ἔπειτα προκαλεῖται τοὺς μὲν ἡ δρόσος, καὶ ἐπὶ ταύτῃ ἐκδύνουσι· τοὺς δ' αὖ διεγείρει ἀκμάζων ὁ ἥλιος, καὶ ἐπ' αὐτῷ ᾄδουσι. τοιγαροῦν εἰ βούλει μουσικὸς καὶ εὐάρμοστος ὑπάρχειν ἀνήρ, ἡνίκ' ἂν μὲν ἐν τοῖς πότοις ὑπὸ τοῦ οἴνου δροσισθῇ ἡ ψυχή, τότε αὐτὴν μὴ ἔα προϊοῦσαν μολύνεσθαι· ἀλλ' ἡνίκ' ἂν ἐν ταῖς ἀνυδρίαις ὑπὸ τοῦ λόγου διαπυρωθῇ, τότε θεσπίζειν καὶ ᾄδειν τὰ τῆς δικαιοσύνης κέλευε λόγια.

103 Τὸν προσομιλοῦντα τριχῇ διασκοποῦ, ἢ ὡς ἀμείνονα ἢ ὡς ἥττονα ἢ ὡς ἴσον. καὶ εἰ μὲν ἀμείνονα, ἀκούειν χρὴ καὶ πείθεσθαι αὐτῷ, εἰ δὲ ἥττονα, ἀπειθεῖν, εἰ δὲ ἴσον, συμφωνεῖν· καὶ οὔ ποτε ἁλώσῃ φιλονεικίας.

104 Ἄμεινὸν τῇ ἀληθείᾳ συγχωρήσαντα τὴν δόξαν νικᾶν ἢ τῇ δόξῃ συγχωρήσαντα πρὸς τῆς ἀληθείας ἡττᾶσθαι.

105 Ζητῶν τὴν ἀλήθειαν οὐ ζητήσεις τὸ ἐκ παντὸς τρόπου νικᾶν· καὶ εὑρὼν τὴν ἀλήθειαν ἕξεις τὸ μὴ νικᾶσθαι.

106 Ἡ ἀλήθεια παρ' αὐτῇ νικᾷ, ἡ δὲ δόξα παρὰ τοῖς ἔξω.

107 Ἄριστον μετὰ ἑνὸς ἐλευθέρου ζῶντα ἄφοβον καὶ ἐλεύθερον ὑπάρχειν ἢ μετὰ πολλῶν δουλεύειν.

108 Ὅπερ φεύγεις παθεῖν, τοῦτο μὴ ἐπιχείρει διατιθέναι· φεύγεις δὲ δουλείαν, φυλάσσου τὸ δουλεύεσθαι. ὑπομένων γὰρ δουλεύεσθαι, αὐτὸς ὑπάρχειν πρότερον ἔοικας δοῦλος· οὔτε γὰρ κακία ἀρετῇ κοινωνεῖ οὔτε ἐλευθερία δουλείᾳ.

109 Ὥσπερ ὁ ὑγιαίνων οὐκ ἂν ὑπὸ νοσούντων βούλοιτο θεραπεύεσθαι, οὐδὲ τοὺς συνοικοῦντας αὐτῷ νοσεῖν· οὕτως οὐδ' ὁ ἐλεύθερος ἀνάσχοιτ' ἂν ὑπὸ δούλων ὑπηρετεῖσθαι ἢ τοὺς συμβιοῦντας αὐτῷ δουλεύειν.

110 Εἰ βούλει δούλων ἐκτὸς ὑπάρχειν, αὐτὸς ἀπολύθητι δουλείας· ἔσῃ δ' ἐλεύθερος, ἂν ἀπολυθῇς ἐπιθυμίας. οὔτε γὰρ Ἀριστείδης οὔτε Ἐπαμεινώνδας οὔτε Λυκοῦργος πλουτοῦντες καὶ δουλευόμενοι ὃ μὲν δίκαιος ὃ δὲ σωτὴρ ὃ δὲ θεὸς προσηγορεύθησαν, ἀλλ' ὅτι πενόμενοι τὴν Ἑλλάδα δουλείας ἀπέλυον.

111 Εἰ βούλει σοι τὴν οἰκίαν εὖ οἰκεῖσθαι, μιμοῦ τὸν Σπαρτιάτην Λυκοῦργον· ὃν γὰρ τρόπον οὗτος οὐ τείχεσι τὴν πόλιν ἔφραξεν, ἀλλ' ἀρετῇ τοὺς ἐνοικοῦντας ὠχύρωσε καὶ διαπαντὸς ἐτήρησεν ἐλευθέραν τὴν πόλιν· οὕτω καὶ σὺ μὴ μεγάλην αὐλὴν περίβαλλε καὶ πύργους ὑψηλοὺς ἀνίστα, ἀλλὰ τοὺς ἐνοικοῦντας εὐνοίᾳ καὶ πίστει καὶ φιλίᾳ στήριζε, καὶ οὐδὲν εἰς αὐτὴν εἰσελεύσεται βλαβερόν, οὐδ' ἂν τὸ σύμπαν τῆς κακίας παρατάξηται στῖφος.

112 Μὴ πίναξι καὶ γραφαῖς τὴν οἰκίαν σου περίβαλλε, ἀλλὰ σωφροσύνῃ κατάγραφε· τὸ μὲν γὰρ ἀλλοῖον τῶν ὀφθαλμῶν ἐστὶν ἐπίκαιρος γοητεία, τὸ δὲ σύμφυτος καὶ ἀνεξάλειπτος καὶ ἀίδιος οἰκίας κόσμος.

113 Ἀντὶ βοῶν ἀγέλης πειρῶ φίλων ἀγέλας ἐναγελάξεσθαί σου τῇ οἰκίᾳ.

114 Ὥσπερ λύκος ὅμοιον κυνί, οὕτω καὶ κόλαξ καὶ μοιχὸς καὶ παράσιτος ὅμοιον φίλῳ. πρόσεχε τοίνυν μὴ ἀντὶ κυνῶν φυλάκων λάθῃς εἰσδεχόμενος λυμεῶνας λύκους.

115 Τὸ μὲν γύψῳ λευκανθίζουσαν σπουδάζειν θαυ-

μάζεσθαι τὴν οἰκίαν ἀπειροκάλου, τὸ δὲ ἦθος χρηστότητι κοινωνίας λαμπρύνειν φιλοκάλου τε ἅμα καὶ φιλανθρώπου.

116 Ἐὰν θαυμάζῃς τὰ μικρά, πρὸ τῶν μεγάλων καταφρονηθήσῃ· ἐὰν δὲ καταφρονήσῃς τῶν μικρῶν, μεγάλως θαυμασθήσῃ.

117 Οὐδὲν μικρότερον φιληδονίας καὶ φιλοκερδείας καὶ ἀλαζονείας· οὐδὲν κρεῖσσον μεγαλοψυχίας καὶ πραότητος καὶ φιλανθρωπίας.

118 Ξενοκράτους.

Χρημάτων αὐτῷ κομισθέντων ἀπ' Ἀλεξάνδρου, ἑστιάσας τοὺς κομίζοντας τὸν αὑτοῦ τρόπον "ἀπαγγείλατε" ἔφη "Ἀλεξάνδρῳ, ὅτι ἔστ' ἂν οὕτω ζῶ οὐ δέομαι ταλάντων πεντήκοντα." τοσαῦτα γὰρ ἦν τὰ πεμφθέντα.

119 Ἡρακλείτου.

Ἀνθρώποισι πᾶσι μέτεστι γινώσκειν ἑωυτοὺς καὶ σωφρονέειν.

120 Ἡρακλείτου.

Ἀνὴρ ὁκόταν μεθυσθῇ, ἄγεται ὑπὸ παιδὸς ἀνήβου σφαλλόμενος, οὐκ ἐπαΐων ὅκῃ βαίνει, ὑγρὴν τὴν ψυχὴν ἔχων. αὔη ψυχὴ σοφωτάτη καὶ ἀρίστη.

121 Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Ἰβήρων αἱ γυναῖκες κατ' ἔτος ὅ τι ἂν ἐξυφήνωσιν ἐν κοινῷ δεικνύουσιν· ἄνδρες δὲ χειροτονητοὶ κρίναντες τὴν πλεῖστα ἐργασαμένην προτιμῶσιν. ἔχουσι δὲ καὶ μέτρον τι ζώνης, ἣ τὴν γαστέρα περιλαβεῖν ἂν μὴ δυνηθῶσιν, αἰσχρὸν ἡγοῦνται.

122 Θουκυδίδου δημηγορίας Λακεδαιμονίων (IV, 18).

Σωφρόνων δὲ ἀνδρῶν, οἵ τινες τἀγαθὰ ἐς ἀμφίβολον ἀσφαλῶς ἔθεντο, καὶ ταῖς ξυμφοραῖς οἱ αὐτοὶ εὐξυνετώτερον ἂν προσφέροιντο.

123 Μενεδήμου.

Μενέδημος νεανίσκου τινὸς εἰπόντος "μέγα ἐστὶ τὸ τυχεῖν ὧν ἄν τις ἐπιθυμῇ," εἶπε "πολλῷ μεῖζόν ἐστι τὸ μηδὲ ἐπιθυμεῖν ὧν μὴ δεῖ."

124 Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας (29 a).

Τὸ γάρ τοι θάνατον δεδιέναι, ὦ ἄνδρες, οὐδὲν ἄλλο ἐστὶν ἢ δοκεῖν σοφὸν εἶναι μὴ ὄντα· δοκεῖν γὰρ εἰδέναι ἐστὶν ἃ οὐκ οἶδεν. οἶδε μὲν γὰρ οὐδεὶς τὸν θάνατον, οὐδ' εἰ τυγχάνει τῷ ἀνθρώπῳ πάντων μέγιστον ὂν τῶν ἀγαθῶν· δεδίασι δὲ ὡς εὖ εἰδότες ὅτι μέγιστον τῶν κακῶν ἐστι. καὶ τοῦτο πῶς οὐκ ἂν ἀμαθία ἐστὶν αὕτη ἡ ἐπονείδιστος, ἡ τοῦ οἴεσθαι εἰδέναι ἃ οὐκ οἶδεν; ἐγὼ δέ, ὦ ἄνδρες, τούτῳ καὶ ἐνταῦθα ἴσως διαφέρω τῶν πολλῶν ἀνθρώπων, καὶ εἰ δή τῳ σοφώτερός του φαίην εἶναι, τούτῳ ἄν, ὅτι οὐκ εἰδὼς ἱκανῶς περὶ τῶν ἐν ᾅδου, οὕτω καὶ οἴομαι οὐκ εἰδέναι· τὸ δὲ ἀδικεῖν καὶ ἀπειθεῖν τῷ βελτίονι καὶ θεῷ καὶ ἀνθρώπῳ ὅτι κακὸν καὶ αἰσχρόν ἐστιν οἶδα· πρὸ οὖν τῶν κακῶν ὧν οἶδα ὅτι κακά ἐστιν ἃ μὴ οἶδα, εἰ καὶ ἀγαθὰ ὄντα τυγχάνει, οὐδέποτε φοβήσομαι οὐδὲ φεύξομαι.

125 Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας (30 a).

Οὐδὲν γὰρ ἄλλο πράττων ἐγὼ περιέρχομαι ἢ πείθων ὑμῶν καὶ νεωτέρους καὶ πρεσβυτέρους, μήτε σωμάτων ἐπιμελεῖσθαι μήτε χρημάτων πρότερον μήτε ἄλλου τινὸς οὕτω σφόδρα ὡς τῆς ψυχῆς, ὅπως ὡς

ἀρίστη ἔσται· λέγων ὅτι οὐκ ἐκ χρημάτων ἡ ἀρετὴ γίνεται, ἀλλ' ἐξ ἀρετῆς τὰ χρήματα, καὶ τἄλλ' ἀγαθὰ τοῖς ἀνθρώποις ἅπαντα καὶ ἰδίᾳ καὶ δημοσίᾳ.

126 *Τοῦ αὐτοῦ* (30 c).

Ἀλλὰ μηδαμῶς ποιεῖτε τοῦτο· εὖ γὰρ ἴστε, ἐὰν ἐμὲ ἀποκτείνητε τοιοῦτον ὄντα οἷον ἐγὼ λέγω, οὐκ ἐμὲ μείζω βλάψετε ἢ ὑμᾶς αὐτούς. ἐμὲ μὲν γὰρ οὐδὲν ἂν βλάψειεν οὔτε Μέλητος οὔτε Ἄνυτος· οὐδὲ γὰρ ἂν δύναιντο. οὐ γὰρ οἶμαι θεμιτὸν εἶναι ἀμείνονι ἀνδρὶ ὑπὸ χείρονος βλάπτεσθαι· ἀποκτείνειεν μέντἂν ἴσως ἢ ἐξελάσειεν ἢ ἀτιμάσειεν.

127 *Πλάτωνος πολιτείας γ'* (388 e).

Ἀλλὰ μὴν οὐδὲ φιλογέλωτας δεῖ εἶναι· σχεδὸν γὰρ ὅταν τις ἐφίῃ ἰσχυρῷ γέλωτι, ἰσχυρὰν καὶ μεταβολὴν ζητεῖ τὸ τοιοῦτο. Δοκεῖ μοι, ἔφη. Οὔτε ἄρα ἀνθρώπους ἀξίους λόγου κρατουμένους ὑπὸ γέλωτος, ἄν τις ποιῇ, ἀποδεκτέον· πολὺ δὲ ἧττον, ἐὰν θεούς.

Θάλλουσα λυπῇ τοὺς ἄγαν ὑπέρφρονας.

128 *Πλάτωνος πολιτείας γ'* (389 d).

Τί δαί; σωφροσύνης ἄρα οὐ δεήσει ἡμῖν τοῖς νεανίαις; Πῶς δὲ οὔ; Σωφροσύνης δὲ ὡς πλήθει οὐ τὰ τοιάδε μέγιστα, ἀρχόντων μὲν ὑπηκόους εἶναι, αὐτοὺς δὲ ἄρχοντας τῶν περὶ πότους καὶ ἀφροδίσια καὶ περὶ ἐδωδὰς ἡδονῶν; Ἔμοιγε δοκεῖ.

129 *Τοῦ αὐτοῦ* (Reip. IX 571 b).

Τῶν μὲν ἀναγκαίων ἡδονῶν τε καὶ ἐπιθυμιῶν δοκοῦσί τινες ἐμοὶ εἶναι παράνομοι, αἳ κινδυνεύουσιν ἐγγίνεσθαι μὲν ἐν παντί, κολαζόμεναι δὲ ὑπό τε τῶν νόμων, καὶ τῶν βελτιόνων ἐπιθυμιῶν, μετὰ λόγου, ἐνίων μὲν ἀνθρώπων ἢ παντάπασιν ἀπαλλάττεσθαι,

ἢ ὀλίγαι λείπεσθαι καὶ ἀσθενεῖς· τῶν δὲ ἰσχυρότεραι καὶ πλείους. Λέγεις δὴ τίνας, ἔφη, ταύτας; Τὰς περὶ τὸν ὕπνον, ἦν δ' ἐγώ, ἐγειρομένας, ὅταν τὸ μὲν ἄλλο τῆς ψυχῆς εὕδῃ, ὅσον λογικὸν καὶ ἥμερον καὶ ἄρχον ἐκείνου· τὸ δὲ θηριῶδές τε καὶ ἄγριον, ἢ σίτου ἢ μέθης πλησθέν, σκιρτᾷ τε καὶ ἀπωσάμενον τὸν ὕπνον ζητεῖ ἰέναι καὶ ἀποπιμπλάναι τὰ αὑτοῦ ἤθη· οἶσθ' ὅτι πάντα ἐν τῷ τοιούτῳ τολμᾷ ποιεῖν ὡς ἀπὸ πάσης λελυμένον τε καὶ ἀπηλλαγμένον αἰσχύνης καὶ φρονήσεως· μητρί τε γὰρ ἐπιθυμεῖ μίγνυσθαι, ὡς οἴεται, οὐδὲν ὀκνεῖ, ἄλλῳ τε ὁτῳοῦν ἀνθρώπων καὶ θεῶν καὶ θηρίων· μιαιφονεῖν τε ὁτιοῦν βρώματός τε ἀπέχεσθαι μηδενός· καὶ ἑνὶ λόγῳ, οὔτε ἀνοίας οὐδὲν ἐλλείπει οὔτ' ἀναισχυντίας. Ἀληθέστατα, ἔφη, λέγεις. Ὅταν δέ γ' οἶμαι ὑγιεινῶς τις ἔχῃ αὐτὸς αὑτοῦ καὶ σωφρόνως, καὶ εἰς τὸν ὕπνον ἴῃ, τὸ λογιστικὸν μὲν ἐγείρας αὑτοῦ, καὶ ἑστιάσας λόγων καλῶν καὶ σκέψεων, εἰς σύννοιαν αὐτὸς αὑτοῦ ἀφικόμενος· τὸ ἐπιθυμητικὸν δὲ μήτ' ἐνδείᾳ δοὺς μήτε πλησμονῇ, ὅπως ἂν κοιμηθῇ καὶ μὴ παρέχῃ θόρυβον τῷ βελτίστῳ χαῖρον ἢ λυπούμενον, ἀλλ' ἐῶν αὐτὸ καθ' ἑαυτὸ μόνον καθαρὸν σκοπεῖν καὶ ὀρέγεσθαι του αἰσθάνεσθαι ὃ μὴ οἶδεν, ἤ τι τῶν γεγονότων ἢ ὄντων ἢ καὶ μελλόντων· ὡσαύτως δὲ καὶ τὸ θυμοειδὲς πραΰνας, καὶ μή τισιν εἰς ὀργὴν ἐλθών, κεκινημένῳ τῷ θυμῷ καθεύδῃ, ἀλλ' ἡσυχάσας μὲν τὼ δύο εἴδη, τὸ τρίτον δὲ κινήσας, ἐν ᾧ τὸ φρονεῖν ἐγγίνεται, οὕτως ἀναπαύηται, οἶσθ' ὅτι τῆς ἀληθείας ἐν τῷ τοιούτῳ μάλιστα ἅπτεται, καὶ ἥκιστα παράνομοι τότε αἱ ὄψεις φαντάζονται τῶν ἐνυπνίων. Παντελῶς μὲν οὖν, ἔφη, οἶμαι οὕτω. ταῦτα μὲν τοίνυν ἐπιπλέον ἐξήχθημεν εἰπεῖν· ὃ δὲ βουλόμεθα γνῶναι, τόδ' ἐστίν, ὡς

ἄρα δεινόν τι καὶ ἄγριον καὶ ἄνομον ἐπιθυμιῶν εἶδος ἑκάστῳ ἔνεστι, καὶ πάνυ δοκοῦσιν ἡμῶν ἐνίοις μετρίοις εἶναι. τοῦτο δὲ ἄρα ἐν τοῖς ὕπνοις γίνεται ἔνδηλον.

130 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ συμποσίου (180 e).

Πᾶσα γὰρ πρᾶξις ὧδε ἔχει· αὐτὴ ἐφ' ἑαυτῆς πραττομένη οὔτε καλὴ οὔτε αἰσχρά, οἷον ὃ νῦν ἡμεῖς ποιοῦμεν, ἢ πίνειν ἢ ᾄδειν ἢ διαλέγεσθαι, οὐκ ἔστι τούτων αὐτὸ καθ' αὑτὸ καλὸν οὐδέν· ἀλλ' ἐν τῇ πράξει, ὡς ἂν πραχθῇ, τοιοῦτον ἀπέβη. καλῶς μὲν γὰρ πραττόμενον καὶ ὀρθῶς καλὸν γίγνεται, μὴ ὀρθῶς δὲ αἰσχρόν· οὕτω δὴ καὶ τὸ ἐρᾶν καὶ ὁ ἔρως οὐ πᾶς ἐστι καλὸς οὐδ' ἄξιος ἐγκωμιάζεσθαι, ἀλλ' ὁ καλῶς προτρέπων ἐρᾶν.

131 Πλάτωνος (Symp. 184 b).

Ἔστι γὰρ ἡμῖν νόμος, ὥσπερ ἐπὶ τοῖς ἐρασταῖς ἦν, δουλεύειν ἐθελοντὰς ἡντινοῦν δουλείαν παιδικοῖς, μὴ κολακείαν μηδὲ ἐπονείδιστον εἶναι· οὕτω δὴ καὶ ἄλλη μία μόνη δουλεία ἑκούσιος λείπεται οὐκ ἐπονείδιστος· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ περὶ τὴν ἀρετήν. νενόμισται γὰρ δὴ ἡμῖν, ἐάν τίς τινα θέλῃ θεραπεύειν, ἡγούμενος δι' ἐκεῖνον ἀμείνων ἔσεσθαι, ἢ κατὰ σοφίαν τινὰ ἢ κατὰ ἄλλο ὁτιοῦν μέρος ἀρετῆς, αὕτη αὖ ἡ ἐθελοδουλεία οὐκ αἰσχρά ἐστιν οὐδὲ κολακεία.

132 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος (68 c).

Ἄριστον δὲ τὸ περὶ τὰς ἐπιθυμίας μὴ ἐπτοῆσθαι, ἀλλ' ὀλιγώρως ἔχειν καὶ κοσμίως.

133 Πλάτωνος (Charm. 173 c).

Εἰ δὲ βούλοιό γε καὶ τὴν μαντικὴν εἶναι, συγχωρητέον ἐπιστήμην τοῦ μέλλοντος ἔσεσθαι, καὶ τὴν σωφροσύνην αὐτῆς ἐπιστατοῦσαν, τοὺς μὲν ἀλαζόνας

ἀποτρέπειν, τοὺς δὲ ἀληθεῖς μάντεις καθιστάναι ἡμῖν προφήτας τῶν μελλόντων. κατεσκευασμένον δὴ οὕτω τὸ ἀνθρώπινον γένος, ὅτι μὲν ἐπιστημόνως ἂν πράττοι καὶ ζῴη, ἐγῷμαι· ἡ γὰρ σωφροσύνη φυλάττουσα οὐκ ἂν ἐῴη παρεμπίπτουσαν τὴν ἀνεπιστημοσύνην συνεργὸν ἡμῖν εἶναι.

134 *Ἔστι δὲ δή, ὡς ἔοικεν, ὃ νῦν λέγεις, ὅτι ἡδοναὶ εἰσί τινες αἳ μὲν ἀγαθαὶ αἳ δὲ κακαί· ἦ γάρ; Ναί. Ἆρ' οὖν ἀγαθαὶ μὲν αἱ ὠφέλιμοι, κακαὶ δὲ αἱ βλαβεραί; Πάνυ γε. Ὠφέλιμοι δὲ αἱ ἀγαθὸν ποιοῦσαι, κακαὶ δὲ αἱ κακόν; Φημί. Ἆρ' οὖν τὰς τοιάσδε λέγεις, οἷον κατὰ τὸ σῶμα, ἃς δὴ νῦν λέγομεν ἐν τῷ ἐσθίειν καὶ πίνειν ἡδονάς, εἰ ἄρα τούτων αἱ μὲν ὑγίειαν ποιοῦσαι ἐν τῷ σώματι ἢ ἰσχὺν ἢ ἄλλην τινὰ ἀρετὴν τοῦ σώματος, αὗται μὲν ἀγαθαὶ αἱ δὲ τἀναντία τούτων κακαί; Πάνυ γε. Οὐκ οὖν καὶ λῦπαι ὡσαύτως αἳ μὲν χρησταί εἰσιν αἳ δὲ πονηραί; Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν τὰς μὲν χρηστὰς καὶ ἡδονὰς καὶ λύπας καὶ αἱρετέον ἐστὶ καὶ πρακτέον; Πάνυ γε. Τὰς δὲ πονηρὰς οὔ; Δῆλον γὰρ δή. Ἕνεκα γὰρ δήπου τῶν ἀγαθῶν ἅπαντα ἡμῖν πρακτέα ἐστί· — καὶ τῶν ἀγαθῶν ἄρα ἕνεκα δεῖ ὡς τἄλλα, καὶ τὰ ἡδέα πράττειν, ἀλλ' οὐκ ἀγαθὰ τῶν ἡδέων; Πάνυ γε. Ἆρ' οὖν παντὸς ἀνδρός ἐστιν ἐκλέξασθαι ποῖα ἀγαθὰ τῶν ἡδέων ἐστὶ καὶ ποῖα κακά; ἢ τεχνικοῦ δεῖ εἰς ἕκαστον; Τεχνικοῦ. Ἀναμνησθῶμεν δὴ ὧν αὖ ἐγὼ εἰς Πῶλον καὶ Γοργίαν ἐτύγχανον λέγων· ἔλεγε γὰρ αὐτός, εἰ μνημονεύεις, ὅτι εἶεν παρασκευαί, αἳ μὲν μέχρι ἡδονῆς αὐτὸ τοῦτο παρασκευάζουσαι ἀγνοοῦσαι δὲ τὸ βέλτιον καὶ τὸ χεῖρον, αἳ δὲ γινώσκουσαι ὅτι τε ἀγαθὸν καὶ ὅτι κακόν· καὶ ἐτίθουν τῶν μὲν περὶ τὰς*

ἡδονὰς τὴν μαγειρικὴν ἐμπειρίαν ἀλλ' οὐ τέχνην, τῶν δὲ περὶ τὸ ἀγαθὸν τὴν ἰατρικὴν τέχνην. Plat. Gorg. 499 c.

135 Πλάτωνος (Gorg. 507 c).

Ἐγὼ μὲν οὖν ταῦτα οὕτω τίθεμαι καί φημι ταῦτα ἀληθῆ εἶναι. εἰ δέ ἐστιν ἀληθῆ, τὸν βουλόμενον ὡς ἔοικεν εὐδαίμονα εἶναι, σωφροσύνην μὲν ἀσκητέον καὶ διωκτέον ἐστίν· ἀκολασίαν δὲ φευκτέον ὡς ἔχει ποδῶν ἕκαστος ἡμῶν· καὶ παρασκευαστέον ἑαυτὸν μάλιστα μὲν μηδὲν δεῖσθαι τοῦ κολάζεσθαι, ἐὰν δὲ δεηθῇ ἢ αὐτὸς ἢ ἄλλος τις τῶν οἰκείων ἢ ἰδιώτης ἢ πόλις, ἐπιθετέον δίκην καὶ κολαστέον, εἰ μέλλει εὐδαίμων εἶναι. οὗτος ἔμοιγε δοκεῖ σκοπὸς εἶναι, πρὸς ὃν βλέποντα δεῖ ζῆν· καὶ πάντα εἰς τοῦτο τὰ αὑτοῦ συντείνοντα καὶ τὰ τῆς πόλεως, ὅπως δικαιοσύνη παρέσται καὶ σωφροσύνη τῷ μακαρίῳ μέλλοντι ἔσεσθαι, οὕτω πράττειν· οὐκ ἐπιθυμίας ἐῶντα ἀκολάστους εἶναι καὶ ταύτας ἐπιχειροῦντα πληροῦν, ἀνήνυτον κακόν, λῃστοῦ βίον ζῶντα· οὔτε γὰρ ἂν ἄλλως ἀνθρώπῳ προσφιλὴς εἴη ὁ τοιοῦτος οὔτε θεῷ· κοινωνεῖν γὰρ ἀδύνατος. ὅτῳ γὰρ μὴ ἔνι κοινωνία, φιλία οὐκ ἂν εἴη. φασὶ δὴ σοφοί, ὦ Καλλίκλεις, καὶ οὐρανὸν καὶ γῆν καὶ θεοὺς καὶ ἀνθρώπους τὴν κοινωνίαν συνέχειν, καὶ φιλίαν καὶ κοσμιότητα καὶ σωφροσύνην καὶ δικαιότητα· καὶ τὸ ὅλον τοῦτο διὰ ταῦτα κόσμον καλοῦσιν, ὦ ἑταῖρε, οὐκ ἀκοσμίαν οὐδὲ ἀκολασίαν. σὺ δέ μοι δοκεῖς οὐ προσέχειν τὸν νοῦν τούτοις καὶ ταῦτα σοφὸς ὤν· ἀλλὰ λέληθέ σε ὅτι ἰσότης ἡ γεωμετρικὴ καὶ ἐν θεοῖς καὶ ἐν ἀνθρώποις μέγα δύναται· σὺ δὲ πλεονεξίαν οἴει δεῖν ἀσκεῖν, γεωμετρίας γὰρ ἀμελεῖς.

136 Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Ἀρετὴν περὶ σωφροσύνης.

Τὰ αὐτὰ δὴ οὖν καὶ περὶ πασῶν τῶν δυνάμεων τῆς ψυχῆς ἀποφαίνομαι, τὴν συμμετρίαν αὐτῶν πρὸς ἀλλήλας καὶ εὐταξίαν θυμοῦ τε καὶ ἐπιθυμίας καὶ λόγου κατὰ τὴν προσήκουσαν ἑκάστῳ τάξιν εὐκοσμίαν· καὶ τούτων ἡ τοῦ ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι ἐν δέοντι γινομένη διανομὴ σωφροσύνη ἂν εἴη πολυειδής.

ΠΕΡΙ ΑΚΟΛΑΣΙΑΣ. ϛ.

1 Σοφοκλέους.

Σοφοκλῆν ἤρετό τις πρεσβύτην ὄντα, εἰ ἔτι πλησιάζοι γυναικί· ὃ δ' "εὐφήμει" ἔφη "ἀσμενέστατα ἀπέφυγον ὥσπερ λυττῶντα καὶ ἄγριον δεσπότην."

2 Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης ἔλεγεν τὰς μὴ κατὰ θύραν εἰσιούσας ἡδονὰς ἀναγκαῖον μὴ κατὰ θύραν πάλιν ἐξιέναι· δεήσει οὖν τμηθῆναι ἢ ἐλλεβορισθῆναι.

3 Διογένους.

Διογένης τοὺς πολλοὺς ἔφασκεν ζῶντας μὲν ἑαυτοὺς σήπειν λουτροῖς τέγγοντας καὶ ἀφροδισίοις τήκοντας, ἀποθνήσκοντας δ' ἐν θυμιάμασι τὸ σῶμα κελεύειν ἀποτίθεσθαι, τοὺς δ' ἐν μέλιτι, ὑπὲρ τοῦ μὴ ταχέως κατασαπῆναι.

4 Τοῦ αὐτοῦ.

Διογένης ἔλεγεν τῶν οἴκων ἔνθα πλείστη τροφὴ πολλοὺς μῦς εἶναι καὶ γαλᾶς· καὶ δὴ σώματα τὰ πολλὴν τροφὴν δεχόμενα καὶ νόσους ἴσας ἐφέλκεσθαι.

5 Διογένης πρός τινα νέον περιττῶς καλλωπιζόμε-

νου "εἰ μὲν πρὸς ἄνδρας, ἀτυχεῖς" εἶπεν, "εἰ δὲ πρὸς γυναῖκας, ἀδικεῖς."

6 *Ἐρυξιμάχου.*

Ἐρυξίμαχος τὴν συνουσίαν μικρὰν ἐπιληψίαν ἔλεγεν καὶ χρόνῳ μόνῳ διαλλάττειν.

7 *Ἀντιφῶντος.*

Ἔνθα τὸ ἡδύ ἐστι πλησίον που καὶ τὸ λυπηρόν· αἱ γὰρ ἡδοναὶ οὐκ ἐκ σφῶν αὐτῶν ἐκπορεύονται, ἀλλ' ἀκολουθοῦσιν αὐταῖς λῦπαι καὶ πόνοι.

8 *Μουσωνίου.*

Ἀρχὴ τοῦ μὴ κατοκνεῖν τὰ ἀσχήμονα [πράττειν] τὸ μὴ κατοκνεῖν τὰ ἀσχήμονα λέγειν.

9 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἔφη τοὺς μοιχοὺς ὅμοιόν τι ποιεῖν τοῖς μὴ βουλομένοις ἐκ τῶν ἀπορρεουσῶν πίνειν, ἀλλ' ἐκ τοῦ ὕδατος τοῦ ἐν τῷ βάθει χείρονος ὑπάρχοντος.

10 *Σόλωνος.*

Ἡδονὴν φεῦγε ἥ τις ὕστερον λύπην τίκτει.

11 *Δημοκρίτου.*

Ἔνιοι πολίων μὲν δεσπόζουσι, γυναιξὶ δὲ δουλεύουσι.

12 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος* (68 e).

Καί τοι καλοῦσίν γε ἀκολασίαν τὸ ὑπὸ τῶν ἡδονῶν ἄρχεσθαι.

13 *Εὐσεβίου.*

Τῶν ταῖς αἰσχραῖς ἐπιθυμίαις ἐπιχειρεόντων ἐλεύθερον μηδένα νόμιζε. τῶν γὰρ τοὺς τῇ τύχῃ δούλους κεκτημένων πολὺ βαρυτέροις οὗτοι δεσπόταις τοῖς καταναγκάζουσι ταῦτα δουλεύουσιν.

14 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Γαστριμαργίη σῶμα πιαίνει, ἀλογίην ἀείρει, ψυχῆς δὲ τὸ κάλλιστον λογισμὸν κοιμίζει.

15 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ψυχῇ σῶμα ἀνθρώπου ἔδοσαν οἱ θεοί, ὥστε τῇ ψυχῇ τὸ σῶμα ὑπηρετέεσθαι. οἱ δὲ πολλοὶ τὸ ἔμπαλιν ποιέουσι, σώματι πρὸς πάντα καὶ ἐς μοῦνα τὰ ἐκείνου ὑπουργήματα τὸ κρέσσον τῷ χείρονι καὶ θνητῷ ἀθάνατον ψυχὴν καταδουλεύμενοι.

16 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἀκολασίη ψυχὴν λυμαίνεται καὶ σῶμα διαφθείρει, τόπερ ἕνεκα τῆς ἡδονῆς καὶ ὥστε αὐτῷ χαρίζεσθαι τὸν ἔχοντά μιν καταναγκάσαι τὰ αἴσχιστα πάντα ποιέειν.

17 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἀκολασίη ψυχὴν ὥσπερ νῆα ἄνεμοι ὑπολαβόντες τῇδε καὶ τῇδε φορέοντες συγκλονέουσι καὶ ἀπειθέα ποιέουσι τῷ κυβερνήτῃ· οὕτω καὶ ψυχὴν δονέουσα καὶ ἀπειθέα νόῳ εἶναι καταναγκάζουσα εἰρηνεύειν καὶ ἐν τῷ εὐδίῳ καὶ ἀσφαλεστάτῳ ὁρμέειν οὐ ξυγχωρέει.

18 *Φιλήμονος.*

Σοὶ γάρ τίς ἐστιν, εἰπέ μοι, παρρησία;
σὺ λαλεῖς ἐν ἀνθρώποισιν ὡς ἄνθρωπος ὤν,
τὸ δ' ὅλον περιπατεῖς, ἢ τὸν αὐτὸν ἀέρα
ἑτέροισιν ἕλκεις, εἰπέ μοι, τοιοῦτος ὤν;

19 *Κλεάνθους.*

Ὅστις ἐπιθυμῶν ἀνέχετ' αἰσχροῦ πράγματος,
οὗτος ποιήσει τοῦτ' ἐὰν καιρὸν λάβῃ.

20 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πόθεν ποτ' ἆρα γίνεται μοιχῶν γένος;
ἐκ κριθιῶντος ἀνδρὸς ἐν ἀφροδισίοις.

21 *Εὔφρονος.*
Οὐκ ἔστι μοιχοῦ μεῖζον οὐδὲ ἓν κακόν·
ἐν ταῖς γὰρ ἑτέρων βούλετ' ἀτυχίαις τρυφᾶν.

22 *Εὐριπίδου Ἀντιόπη.*
Καὶ μὴν ὅσοι μὲν σαρκὸς εἰς εὐεξίαν
ἀσκοῦσι βίοτον, ἢν σφαλῶσι χρημάτων,
κακοὶ πολῖται· δεῖ γὰρ ἄνδρ' εἰθισμένον
ἀκόλαστον ἦθος γαστρὸς ἐν ταυτῷ μένειν.

23 *Ἀναξανδρίδου.*
Μηδέποτε δοῦλον ἡδονῆς σαυτὸν ποίει.
λάγνης γυναικός ἐστιν οὐκ ἀνδρὸς τόδε.

24 *Ἀλέξιδος.*
Φεῦγ' ἡδονὴν φέρουσαν ὕστερον βλάβην.

25 *Μενάνδρου Ὀργῇ.*
*Οὐκ ἔστι μοιχοῦ πρᾶγμα **
ἀτιμότερον· θανάτου γάρ ἐστιν ὤνιον.

26 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ὄνειδος αἰσχρὸς βίος ὅμως κἂν ἡδὺς ᾖ.

27 *Ἀριστοφῶντος Ἰατροῦ.*
Αἱ τῶν ἑταιρῶν γὰρ διοπετεῖς οἰκίαι·
γεγόνασιν ἄβατοι τοῖς ἔχουσι μηδὲ ἕν.

28 *Ἀπολλόδωρος.*
Καὶ κλείεθ' ἡ θύρα μοχλοῖς· ἀλλ' οὐδὲ εἷς
τέκτων ὀχυρὰν οὕτως ἐποίησεν θύραν,
δι' ἧς γαλῆ καὶ μοιχὸς οὐκ εἰσέρχεται.

29 *Βάθωνος.*
Πολλῶν σφόδρ' ὄντων χἀτέρων ἐν τῷ βίῳ,

ἐφ' οἷς ἅπαντες εἰκότως θορυβούμεθα,
μάλιστ' ἐμοὶ δήπουθε κινοῦσιν χολὴν
οἱ τῶν τρόπων φάσκοντες ἐπιεικῶς ἐρᾶν,
καὶ λανθάνειν δοκοῦντες, ὅτι πεπλασμένως
τὸ πρᾶγμα παρακεντοῦσι κοὐκ ἀληθινῶς.
τίνα γὰρ ἔχει, πρὸς τῆς Ἀθηνᾶς, διαφορὰν
ὁ τῶν νεωτέρων τε καὶ λείων τρόπος
παρ' ὃν οἱ δασεῖς ἔχουσι καὶ προβεβηκότες;

30 *Φοινικίδου.*

Μὰ τὴν Ἀφροδίτην οὐκ ἂν ὑπομείναιμ' ἔτι,
Πυθιάς, ἑταιρεῖν· χαιρέτω· μή μοι λέγε,
ἀπέτυχον, οὐδὲν πρὸς ἐμέ, καταλῦσαι θέλω.
εὐθὺς ἐπιχειρήσασα φίλον ἔσχον τινὰ
στρατιωτικόν· διαπαντὸς οὗτος τὰς μάχας
ἔλεγεν, ἐδείκνυ δ' ἅμα λέγων τὰ τραύματα,
εἰσέφερε δ' οὐδέν. δωρεὰν ἔφη τινὰ
παρὰ τοῦ βασιλέως λαμβάνειν, καὶ ταῦτ' ἀεὶ
ἔλεγεν· διὰ ταύτην ἣν λέγω τὴν δωρεὰν
ἐνιαυτὸν ἔσχε μ' ὁ κακοδαίμων δωρεάν.
ἀφῆκα τοῦτον, λαμβάνω δ' ἄλλον τινά,
ἰατρόν. οὗτος εἰσάγων πολλούς τινας
ἔτεμν' ἔκαε· πτωχὸς ἦν καὶ δήμιος.
δεινότερος οὗτος θατέρου μοι κατεφάνη.
ὃ μὲν διήγημ' ἔλεγεν, ὃ δ' ἐποίει νεκρούς.
τρίτῳ συνέζευξ' ἡ τύχη με φιλοσόφῳ
πώγων' ἔχοντι καὶ τρίβωνα καὶ λόγον·
εἰς προὖπτον ἦλθον ἐμπεσοῦσα δὴ κακόν.
οὐδὲν ἐδίδου γάρ. τάλαν * αἰτῶ τι ἔφη
οὐκ ἀγαθὸν εἶναι τἀργύριον. ἔστω κακόν,
διὰ τοῦτο δός μοι, ῥῖψον· οὐκ ἐπείθετο.

31 *Σωκράτους.*

Οὔτε πῦρ ἱματίῳ περιστεῖλαι δυνατὸν οὔτε αἰσχρὸν ἁμάρτημα χρόνῳ.

32 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τὸ μὲν πῦρ ὁ ἄνεμος, τὸν δὲ ἔρωτα ἡ συνήθεια ἐκκαίει.

33 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Διογένης κατεγέλα τῶν τὰ μὲν ταμιεῖα κατασημαινομένων μοχλοῖς καὶ κλεισὶ καὶ σημάντροις, τὸ δὲ σῶμα τὸ αὑτῶν πολλαῖς θυρίσι καὶ θύραις ἀνοιγόντων διά τε στόματος καὶ αἰδοίων καὶ ὤτων καὶ ὀφθαλμῶν.

34 *Ζήνωνος.*

Ὁ Ζήνων ᾐτιᾶτο τοὺς πλείστους λέγων, ἐξὸν ἀπὸ τῶν πόνων τὰς ἡδονὰς φέρειν, ἀπὸ τῶν μαγειρείων λαμβάνοντας.

35 *Μουσωνίου.*

Μουσώνιος ἔλεγεν ὑπερβολὴν ἀναισχυντίας εἶναι τὸ πρὸς μὲν τὰς τῶν πόνων ὑπομονὰς μεμνῆσθαι τῆς τοῦ σώματος ἀσθενείας, πρὸς δὲ τὰς τῶν ἡδονῶν ἐκλανθάνεσθαι.

36 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Περὶ Εὐριπίδου τις ἔλεγεν ὅτι μισογύνης εἴη· καὶ ὁ Σοφοκλῆς "ἀλλ' οὐκ ἔν γε τῇ κλίνῃ" ἔφη.

37 *Κλεάνθους.*

Κλεάνθης ἔλεγεν, εἰ τέλος ἐστὶν ἡ ἡδονή, πρὸς κακοῦ τοῖς ἀνθρώποις τὴν φρόνησιν δίδοσθαι.

38 *Διογένους.*

Διογένης "παρὰ μὲν τῶν θεῶν" φησίν "ὑγίειαν εὔχονται· πάντα δὲ οἱ πλεῖστοι τἀναντία τῇ ὑγιείᾳ πράττουσιν."

39 *Κράτης.*

Κράτης ἰδὼν χρυσῆν εἰκόνα Φρύνης τῆς ἑταίρας ἐν Δελφοῖς ἑστῶσαν, ἀνέκραγεν ὅτι τοῦτο τῆς Ἑλλήνων ἀκρασίας τρόπαιον ἕστηκεν.

40 *Αἰσώπου.*

Αἴσωπος πρὸς τὸν τῷ κάλλει κακῶς κεχρημένον εἶπεν "ὁποίῳ ἱματίῳ ἠμφιεσμένος κακῶς αὐτὸ ἀποδύῃ."

41 *Εἰς φιλοσοφίαν λόγων.*

Καὶ μὴν τό γε ἀκολασταίνειν πάλαι ψέγεται, ὅτι ἀνίεται ἐν τῷ τοιούτῳ τὸ ἐπιθυμητικὸν εἰς ἐλευθερίαν πέρα τοῦ δέοντος.

42 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ κατὰ ἡδονῆς.*

Ὅτι τὰ σώματα ἀνίησιν ἡ ἡδονὴ καθ' ἡμέραν ἐκμαλάττουσα ταῖς τρυφαῖς, ὧν ἡ συνέχεια παραιρεῖται τὸν τόνον, ἀναχαλῶσα τὴν ἰσχὺν αὐτῶν, ἐξ ὧν ῥᾳστώνη μὲν νόσων, ῥᾳστώνη δὲ καμάτων, προμελετώμενον δ' ἐν νεότητι γῆρας.

43 *Ἐν ταυτῷ.*

Θηρίον ἐστὶ δουλαγωγὸν ἡδονή, ἀλλ' οὐκ ἄγριον· εἴθε γὰρ ἦν, φανερῶς ἂν πολεμοῦσα ταχέως ἑάλω· νῦν δὲ καὶ ταύτῃ μισητότερον, ὅτι κλέπτει τὴν ἔχθραν ὑποδυομένη σχῆμα εὐνοίας. ὥστε διχῇ ἀποτρόπαιον, καὶ ὧν βλάπτει καὶ ὧν ψεύδεται.

44 *Ἐν ταυτῷ.*

Τὰς μὲν οὖν δικαίας ἡδονὰς οὐκ ἔτ' ἂν ἡδονὰς οὕτω καλέσαιμεν, οὔτε ἴσμεν, ἀλλὰ θεραπείας· ὅσαι δὲ παρὰ ταύτας, πᾶσαι ὕβρεις περιτταί εἰσι, πεπηρωμέναι, βιαζόμεναι, καὶ ταῖς ποικιλίαις κολακεύουσαι λανθάνουσι βλάπτουσαι. οὐ δὲ εἰς τὰ ἡμέτερα νόμος ὁ καὶ τὰ τῶν ἀλόγων ζώων, ὧν μετὰ τὸ ἀκέσα-

σθαι τὰς ἐπιθυμίας οὐδενὸς ὄρεξις, ἀλλὰ κόρος τῶν ἐπειγόντων ἀβιάστοις ἡδοναῖς.

45 *Ἐν ταυτῷ.*

Μή τις προδότας ἐπαινεῖ; τοιοῦτόν ἐστιν ἡ ἡδονή, προδίδωσι τὰ τῆς ἀρετῆς. μή τις βασανιστάς; τοιοῦτόν ἐστιν τὸ ἥδεσθαι, βασανίζει τὰ τῆς σωφροσύνης. μή τις φιλαργυρίαν; ἀπλήρωτόν ἐστιν ἑκάτερον. τί τηλικούτῳ χαίρομεν θηρίῳ, ὃ κολακεῦον ἡμᾶς ἀναλίσκει;

46 *Ἐν ταυτῷ.*

*Τί δ' οὐ πάντων ὁρώντων ἀκρατεύεις, ἀλλὰ καὶ σαυτὸν αἰδούμενος φεύγεις νυκτὶ καὶ σκότῳ τοῖς ἀμαρτύροις πιστεύων τὴν ὕβριν; οὐδεὶς γὰρ τῶν καλῶν ἔργων σκότος προβάλλει τὸ φῶς αὐτοῖς μαρτυρεῖν αἰσχυνόμενος, ἀλλ' ὅλον ἅμα τὸν κόσμον ἥλιον γενέσθαι πρὸς ἃ κατορθοῖ βούλοιτ' ἄν· ἅπασα δὲ κακία ὁρᾶσθαι γυμνὴ φυλάττεται σκέπην προβαλλομένη τὰ πάθη. ἀποκόψαντες οὖν αὐτὰ γυμνὰς βλέπομεν τὰς ἡδονάς· μεθύουσιν εἰς ἀναισθησίαν, λαγνεύουσιν εἰς * αἰῶνα, καθεύδουσιν εἰς ἔργα, οὐκ ἐπιστρέφονται πόλεων, οὐ φροντίζουσι γονέων, οὐκ αἰσχύνονται νόμους.*

47 *Πυθαγόρου.*

Δουλεύειν πάθεσι χαλεπώτερον ἢ τυράννοις (Porph. ep. ad Marc. c. 34).

48 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἐλεύθερον ἀδύνατον εἶναι τὸν πάθεσι δουλεύοντα καὶ ὑπὸ παθῶν κρατούμενον (Porph. ibid).

49 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Χαλεπὸν ἔλεγεν εἶναι ὁ Πλάτων εὑρεῖν τοῖς μὲν ἀκολάστοις ἀγαθὴν ἡδονὴν τοῖς δὲ νοσοῦσιν ὑγιεινήν.

50 Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου.

Τοὺς δυσχερεῖς δὲ φιλοσόφους εἰς μέσον ἄγοντες, οἷς οὐ δοκεῖ κατὰ φύσιν ἡδονὴ εἶναι, ἀλλ' ἐπιγίγνεσθαι τοῖς κατὰ φύσιν, δικαιοσύνῃ σωφροσύνῃ ἐλευθερίᾳ. τί ποτ' οὖν ἡ ψυχὴ ἐπὶ μὲν τοῖς τοῦ σώματος ἀγαθοῖς μικροτέροις οὖσι χαίρει καὶ γαληνιᾷ, ὥς φησιν Ἐπίκουρος, ἐπὶ δὲ τοῖς αὐτῆς ἀγαθοῖς μεγίστοις οὖσιν οὐχ ἥδεται; καί τοι καὶ δέδωκέ μοι ἡ φύσις αἰδῶ, καὶ πολλὰ ὑπερυθριῶ, ὅταν τι ὑπολάβω αἰσχρὸν λέγειν. τοῦτό με τὸ κίνημα οὐκ ἐᾷ τὴν ἡδονὴν θέσθαι ἀγαθὸν καὶ τέλος τοῦ βίου.

51 Πυθαγόρου.

Οὐδεὶς ἐλεύθερος ἑαυτοῦ μὴ κρατῶν.

52 Διογένους.

Διογένης οὐδὲν εὐωνότερον εἶναι μοιχοῦ διωρίζετο τὴν ψυχὴν τῶν δραχμῆς ὠνίων προϊεμένου.

53 Τοῦ αὐτοῦ.

Διογένης ἐσθίειν ἔλεγε τοὺς ἀνθρώπους τοῦ ἥδεσθαι ἕνεκα, ἀποπαύεσθαι δὲ αὐτοῦ τούτου χάριν μὴ ἐθέλειν.

54 Κάτωνος πρεσβυτέρου.

Κάτων ὁ πρεσβύτερος τῆς πολυτελείας καθαπτόμενος εἶπεν ὡς χαλεπόν ἐστι λέγειν πρὸς γαστέρα ὦτα μὴ ἔχουσαν.

55 Δημοκρίτου.

Ἡμερήσιοι ὕπνοι σώματος ὄχλησιν ἢ ψυχῆς ἀδημοσύνην ἢ ἀργίην ἢ ἀπαιδευσίην σημαίνουσιν.

56 Κάτωνος.

Κάτων τοὺς σπουδάζοντας ἐν τοῖς γελοίοις ἔλεγεν ἐν τοῖς σπουδαίοις γίγνεσθαι καταγελάστους.

57 *Δημοκρίτου.*

Ξυνουσίη ἀποπληξίη σμικρή· ἐξέσσυται γὰρ ἄνθρωπος ἐξ ἀνθρώπου.

58 *Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου ἀπομνημονευμάτων.*

Ἐν Ῥώμῃ αἱ γυναῖκες μετὰ χεῖρας ἔχουσι τὴν Πλάτωνος πολιτείαν, ὅτι κοινὰς ἀξιοῖ εἶναι τὰς γυναῖκας. τοῖς γὰρ ῥήμασι προσέχουσι τὸν νοῦν, οὐ τῇ διανοίᾳ τἀνδρός, ὅτι οὐ γαμεῖν κελεύων καὶ συνοικεῖν ἕνα μιᾷ εἶτα κοινὰς εἶναι βούλεται τὰς γυναῖκας, ἀλλ' ἐξαιρῶν τὸν τοιοῦτον γάμον καὶ ἄλλο τι εἶδος γάμου εἰσφέρων. καὶ τὸ ὅλον οἱ ἄνθρωποι χαίρουσιν ἀπολογίας τοῖς ἑαυτῶν ἁμαρτήμασι πορίζοντες. ἐπεί τοι φιλοσοφία φησὶν ὅτι οὐδὲ τὸν δάκτυλον ἐκτείνειν εἰκῇ προσήκει.

59 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τῶν ἡδέων τὰ σπανιώτατα γιγνόμενα μάλιστα τέρπει.

60 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἴ τις ὑπερβάλλοι τὸ μέτριον, τὰ ἐπιτερπέστατα ἀτερπέστατα ἂν γένοιτο.

61 *Μουσωνίου ἐκ τῶν περὶ ἀφροδισίων.*

Μέρος μέντοι τρυφῆς οὐ μικρότατον κἀν τοῖς ἀφροδισίοις ἐστίν, ὅτι ποικίλων δέονται παιδικῶν οἱ τρυφῶντες οὐ νομίμων μόνον ἀλλὰ καὶ παρανόμων, οὐδὲ θηλειῶν μόνον ἀλλὰ καὶ ἀρρένων, ἄλλοτε ἄλλους θηρῶντες ἐρωμένους, καὶ τοῖς μὲν ἐν ἑτοίμῳ οὖσιν οὐκ ἀρκούμενοι, τῶν δὲ σπανίων ἐφιέμενοι, συμπλοκὰς δ' ἀσχήμονας ζητοῦντες, ἅπερ ἅπαντα μεγάλα ἐγκλήματα ἀνθρώπου ἐστί. χρὴ δὲ τοὺς μὴ τρυφῶντας ἢ μὴ κακοὺς μόνα μὲν ἀφροδίσια νομίζειν δίκαια τὰ ἐν γάμῳ καὶ ἐπὶ γενέσει παίδων συντελού-

μενα, ὅτι καὶ νόμιμά ἐστιν· τὰ δέ γε ἡδονὴν θηρώμενα ψιλὴν ἄδικα καὶ παράνομα, κἂν ἐν γάμῳ ᾖ. συμπλοκαὶ δ' ἄλλαι αἵ μὲν κατὰ μοιχείαν παρανομώταται, καὶ μετριώτεραι τούτων οὐδὲν αἵ πρὸς ἄρρενας τοῖς ἄρρεσιν, ὅτι παρὰ φύσιν τὸ τόλμημα· ὅσαι δὲ μοιχείας ἐκτὸς συνουσίαι πρὸς θηλείας εἰσὶν ἐστερημέναι τοῦ γίνεσθαι κατὰ νόμον, καὶ αὗται πᾶσαι αἰσχραί, αἵγε πράττονται δι' ἀκολασίαν· ὡς μετά γε σωφροσύνης οὔτ' ἂν ἑταίρᾳ πλησιάσαι ὑπομείνειέ τις, οὔτ' ἂν ἐλευθέρᾳ γάμου χωρὶς οὔτε μὰ Δία θεραπαίνῃ τῇ αὑτοῦ. τὸ γὰρ μὴ νόμιμον μηδ' εὐπρεπὲς τῶν συνουσιῶν τούτων αἶσχός τε καὶ ὄνειδος μέγα τοῖς θηρωμένοις αὐτάς· ὅθεν οὐδὲ πράττειν φανερῶς οὐδὲν ἀνέχεται τῶν τοιούτων οὐδείς, κἂν ἐπ' ὀλίγον ἐρυθριᾶν οἷός τε ᾖ, ἐπικρυπτόμενοι δὲ καὶ λάθρᾳ οἵγε μὴ τελέως ἀπερρωγότες ταῦτα τολμῶσιν. καίτοι τό γε πειρᾶσθαι λανθάνειν ἐφ' οἷς πράττει τις ὁμολογοῦντος ἁμαρτάνειν ἐστί. νὴ Δία, φησίν· ἀλλ' οὐχ ὥσπερ ὁ μοιχεύων ἀδικεῖ τὸν ἄνδρα τῆς διεφθαρμένης γυναικός, οὕτως καὶ ὁ τῇ ἑταίρᾳ συνὼν ἀδικεῖ τινὰ ἢ νὴ Δία τῇ μὴ ἐχούσῃ ἄνδρα· οὐδὲ γὰρ ἐλπίδα παίδων οὐδενὸς διαφθείρει οὗτος. ἐγὼ δὲ ἔχω μὲν λέγειν, ὡς πᾶς ὅστις ἁμαρτάνει καὶ ἀδικεῖ εὐθύς, εἰ καὶ μηδένα τῶν πέλας, ἀλλ' αὑτόν γε πάντως χείρονα ἀποφαίνων καὶ ἀτιμότερον· ὁ γὰρ ἁμαρτάνων, παρ' ὅσον ἁμαρτάνει, χείρων καὶ ἀτιμότερος. ἵνα οὖν ἐῶ τὴν ἀδικίαν, ἀλλ' ἀκολασίαν γε πᾶσα ἀνάγκη πάντως προσεῖναι τῷ ἡττωμένῳ αἰσχρᾶς ἡδονῆς καὶ χαίροντι τῷ μολύνεσθαι ὥσπερ αἵ ὕες· οἷος οὐχ ἥκιστά ἐστι καὶ ὁ δούλῃ ἰδίᾳ πλησιάζων, ὅπερ νομίζουσί τινες μάλιστά πως εἶναι ἀναίτιον, ἐπεὶ καὶ δεσπότης πᾶς αὐτεξούσιος εἶναι δοκεῖ ὅ τι βούλεται χρῆσθαι δούλῳ

τῷ ἑαυτοῦ. πρὸς τοῦτο δὲ ἁπλοῦς μοι ὁ λόγος· εἰ γάρ τῳ δοκεῖ μὴ αἰσχρὸν μηδ᾽ ἄτοπον εἶναι δούλῃ δεσπότην πλησιάζειν τῇ ἑαυτοῦ, καὶ μάλιστα εἰ τύχοι οὖσα χήρα, λογισάσθω ποῖόν τι καταφαίνεται αὐτῷ, εἰ δέσποινα δούλῳ πλησιάζοι. οὐ γὰρ ἂν δόξειεν εἶναι ἀνεκτόν, οὐ μόνον εἰ κεκτημένη ἄνδρα νόμιμον ἡ γυνὴ προσοῖτο δοῦλον, ἀλλ᾽ εἰ καὶ ἄνανδρος οὖσα τοῦτο πράττοι· καίτοι τοὺς ἄνδρας οὐ δήπου τῶν γυναικῶν ἀξιώσει τις εἶναι χείρονας, οὐδ᾽ ἧττον δύνασθαι τὰς ἐπιθυμίας παιδαγωγεῖν τὰς ἑαυτῶν, τοὺς ἰσχυροτέρους τὴν γνώμην τῶν ἀσθενεστέρων, τοὺς ἄρχοντας τῶν ἀρχομένων. πολὺ γὰρ κρείττονας εἶναι προσήκει τοὺς ἄνδρας, εἴπερ καὶ προεστάναι ἀξιοῦνται τῶν γυναικῶν· ἂν μέντοι ἀκρατέστεροι φαίνωνται ὄντες . . . καὶ κακίονες. ὅτι δ᾽ ἀκρασίας ἔργον καὶ οὐδενὸς ἄλλου ἐστὶ τὸ δεσπότην δούλῃ πλησιάζειν, τί δεῖ καὶ λέγειν; γνώριμον γάρ.

62 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ περὶ κουρᾶς.

Ἔφη μὲν παραπλησίως τὸν ἄνδρα χρῆναι τῇ κεφαλῇ προσφέρειν κουράν, ὡς ἀμπέλῳ προσφέρομεν τομήν, τοῦ μόνον ἀφαιρεῖν χάριν τὸ ἄχρηστον . . . . οὔτε γενείῳ πώγωνα, ἀλλ᾽ εἶναί τινα καὶ ταύτην σκέπην ὑπὸ τῆς φύσεως ἡμῖν πεπορισμένην· τὸν δὲ πώγωνα καὶ σύμβολον γεγονέναι τοῦ ἄρρενος, ὥσπερ ἀλεκτρυόνι λόφον καὶ λέοντι χαίτην· ὅθεν τῆς μὲν κόμης ἀφαιρετέον εἶναι τὸ ἐνοχλοῦν, τοῦ δὲ πώγωνος οὐδέν. οὐδὲ γὰρ ἐνοχλεῖν αὐτὸν οὐδέν, ἕως ἂν ὑγιαίνῃ τὸ σῶμα ἢ νόσον μὴ ᾽τοιαύτην νοσῇ, ἧς ἕνεκα γένοιτ᾽ ἂν ἀφαίρεσις τῶν ἐπὶ τοῦ γενείου τριχῶν. εὖ γὰρ εἴρηται, ἔφη, τὸ τοῦ Ζήνωνος, ὅτι τούτου ἕνεκα καρτέον οὗ καὶ κομητέον, τοῦ κατὰ φύσιν, ἵνα μὴ

βαρούμενός τις ὑπὸ τῆς κόμης μηδ᾽ ἐνοχλούμενος ἢ πρὸς μηδεμίαν ἐνέργειαν. ἡ γὰρ δὴ φύσις τὸ μὲν ἐνδεὲς μᾶλλον φαίνεται φυλαξαμένη, τὸ δὲ περιττὸν ἧττον, ἐπί τε φυτῶν καὶ ἐπὶ ζώων, ὅτι τῆς προσθέσεως τοῦ ἐνδεοῦς ἡ ἀφαίρεσις τοῦ περιττοῦ πολὺ ῥᾴων καὶ εὐπετεστέρα ἐστίν. χρὴ δ᾽ ἐφ᾽ ἑκάτερα τὸν λογισμὸν τὸν ἀνθρώπινον τῇ φύσει βοηθεῖν, ὥστ᾽ ἀναπιμπλάναι τὰς ἐνδείας ἐφ᾽ ὅσον οἷόν τε ἀναπληροῦν, ἐλαττοῦν δὲ καὶ ἀφαιρεῖν τὰς περιττότητας. ὅθεν καὶ καρτέον μόνης ἕνεκα τῆς ἀφαιρέσεως τοῦ περιττοῦ καὶ οὐχὶ κόσμου χάριν, ὅπερ οἴονται δεῖν ἔνιοι τὰ μὲν γένεια λεαινόμενοι καὶ μιμούμενοι τοὺς ἀγενείους ἢ νὴ Δία τοὺς ἄρτι γενειάσκοντας, τὴν δὲ κεφαλὴν οὐχ ὁμοίως κειρόμενοι, διαφόρως δὲ τὰ πρόσω τῶν ὀπίσω. καὶ γάρ τοι δοκῶν εἶναι κόσμος οὗτος πολλὴν ἀκοσμίαν ἔχει, καὶ διαφέρει οὐδὲν τοῦ τῶν γυναικῶν καλλωπισμοῦ. ἐκεῖναί τε γὰρ τὰ μέν τινα μέρη πλέκουσι τῶν τριχῶν τὰ δὲ καθιᾶσι τὰ δὲ ἑτερόν τινα σκευάζουσι τρόπον, ἵνα φαίνωνται καλλίονες, οἵ τε κειρόμενοι οὕτως ἄνδρες κατάδηλοί εἰσιν δι᾽ ἐπιθυμίαν τοῦ φαίνεσθαι καλοὶ οἷς βούλονται ἀρέσκειν, τὰς μὲν τέλεον ἀφαιροῦντες τῶν τριχῶν τὰς δὲ πλάττοντες οὕτως ὡς ἂν εὔοπτοι ὦσιν ἐν γυναιξί τε καὶ παισὶν ὑφ᾽ ὧν ἐπαινεῖσθαι δέονται. ἤδη δὲ τινὲς καὶ αὐτῷ τῷ βαρύνεσθαι τὰς τρίχας κείρονται καὶ λεαίνουσι τὰ γένεια, σαφῶς οὗτοί γε κατεαγότες ὑπὸ τῆς τρυφῆς καὶ ἐκνενευρισμένοι παντάπασιν, οἵ γε ἀνέχονται ἀνδρόγυνοι καὶ γυναικώδεις ὁρᾶσθαι ὄντες, ὅπερ ἔδει φεύγειν ἐξ ἅπαντος, εἰ δὴ τῷ ὄντι ἄνδρες ἦσαν. τί γὰρ δὴ καὶ εἰσὶν αἱ τρίχες ἀνθρώποις βάρος; εἰ μὴ νὴ Δία καὶ τοῖς ὀρνέοις τὰ πτερὰ φαίη τις εἶναι βάρος.

63 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πρωταγόρου* (357 b).

Τοσοῦτον ἐξαρκεῖ πρὸς τὴν ἀπόδειξιν, ἣν ἐμὲ δεῖ καὶ Πρωταγόραν ἀποδεῖξαι περὶ ὧν ἤρεσθ' ἡμᾶς. ἤρεσθε δέ, εἰ μέμνησθε, ἡνίκα ἡμεῖς ἀλλήλοις ὡμολογοῦμεν ἐπιστήμης μὴ εἶναι μηδὲν κρεῖττον, ἀλλὰ τοῦτο ἀεὶ κρατεῖν, ὅπου ἂν ἐνῇ, καὶ ἡδονῆς καὶ τῶν ἄλλων ἁπάντων· ὑμεῖς δὲ δὴ ἔφατε τὴν ἡδονὴν πολλάκις κρατεῖν καὶ τοῦ εἰδότος ἀνθρώπου. ἐπειδὴ δὲ ὑμῖν οὐχ ὁμολογοῦμεν, μετὰ τοῦτο ἤρεσθε ἡμᾶς, ὦ Πρωταγόρα τε καὶ Σώκρατες, εἰ μή ἐστι τοῦτο τὸ πάθημα ἡδονῆς ἡττᾶσθαι, ἀλλὰ τί ποτ' ἐστὶ καὶ τί ὑμεῖς αὐτὸ φατὲ εἶναι, εἴπατε ἡμῖν. εἰ μὲν οὖν τότε εὐθὺς ὑμῖν εἴπομεν ὅτι ἀμαθία, κατεγελᾶτε ἂν ἡμῶν· νῦν δὲ ἂν ἡμῶν καταγελᾶτε, καὶ ὑμῶν αὐτῶν καταγελάσεσθε. καὶ γὰρ ὑμεῖς ὡμολογήκατε ἐπιστήμης ἐνδείᾳ ἐξαμαρτάνειν περὶ τὴν τῶν ἡδονῶν αἵρεσιν καὶ λυπῶν τοὺς ἐξαμαρτάνοντας, (ταῦτα δέ ἐστιν ἀγαθά τε καὶ κακά) καὶ οὐ μόνον ἐπιστήμης, ἀλλὰ καὶ εἰς τὸ πρόσθεν ἔτι ὡμολογήκατε ὅτι μετρητικῆς· ἡ δὲ ἐξαμαρτανομένη πρᾶξις ἄνευ ἐπιστήμης ἴστε που καὶ αὐτοὶ ὅτι ἀμαθίᾳ πράττεται· ὥστε τοῦτ' ἐστὶ τὸ ἡδονῆς ἥττω εἶναι ἀμαθία ἡ μεγίστη.

64 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου* (65 b).

ΣΩΚΡ. Καθ' ἓν ἕκαστον τοίνυν τῶν τριῶν πρὸς τὴν ἡδονὴν καὶ τὸν νοῦν κρίνωμεν. δεῖ γὰρ ἰδεῖν ποτέρῳ μᾶλλον ξυγγενὲς ἕκαστον αὐτῶν ἀπονεμοῦμεν. ΠΡΩΤ. Κάλλους καὶ ἀληθείας καὶ μετριότητος πέρι λέγεις; ΣΩΚΡ. Ναί. πρῶτον δέ γε ἀληθείας λαβοῦ, ὦ Πρώταρχε, καὶ λαβόμενος βλέψας εἰς τρία, νοῦν καὶ ἀλήθειαν καὶ ἡδονήν, πολὺν ἐπισχὼν χρόνον ἀπόκριναι σαυτῷ πότερον ἡδονὴ ξυγγενέστε-

ρον ἢ νοῦς ἀληθείᾳ. ΠΡΩΤ. Τί δὲ χρόνου δεῖ; πολὺ γὰρ οἶμαι διαφέρετον. ἡδονὴ μὲν γὰρ ἁπάντων ἀλαζονέστατον. ὡς δὲ λόγος, καὶ ἐν ταῖς ἡδοναῖς ταῖς περὶ τὰ ἀφροδίσια, αἳ δὴ μέγισται δοκοῦσιν εἶναι, καὶ τὸ ἐπιορκεῖν συγγνώμην εἴληφε παρὰ θεῶν, ὡς καθάπερ παίδων τῶν ἡδονῶν νοῦν οὐδὲ τὸν ὀλίγιστον κεκτημένων. νοῦς δὲ ἤτοι ταυτὸν καὶ ἀλήθειά ἐστιν ἢ πάντων ὁμοιότατόν τε καὶ ἀληθέστατον. ΣΩΚΡ. Οὐκ οὖν τὸ μετὰ τοῦτο τὴν μετριότητα ὡσαύτως σκέψαι πότερον ἡδονὴ φρονήσεως ἢ φρόνησις ἡδονῆς πλείω κέκτηται; ΠΡΩΤ. Εὔσκεπτόν γε καὶ ταύτην τὴν σκέψιν προβέβληκας. οἶμαι γὰρ ἡδονῆς μὲν καὶ περιχαρείας οὐδὲν τῶν ὄντων πεφυκὸς ἀμετρότερον εὑρεῖν ἄν τινα· νοῦ δὲ καὶ ἐπιστήμης ἐμμετρότερον οὐδ' ἂν ἕν ποτε. ΣΩΚΡ. Καλῶς εἴρηκας. ὅμως δ' ἔτι λέγε τὸ τρίτον· νοῦς ἡμῖν κάλλους μετείληφε πλεῖον ἢ τὸ τῆς ἡδονῆς γένος, ὥστε εἶναι καλλίω νοῦν ἡδονῆς ἢ τοὐναντίον; ΠΡΩΤ. Ἆρ' οὖν φρόνησιν μὲν καὶ νοῦν, ὦ Σώκρατες, οὐδεὶς πώποτε οὔθ' ὕπαρ οὔτ' ὄναρ αἰσχρὸν οὔτε εἶδεν οὔτε ἐπενόησεν οὐδαμῇ οὐδαμῶς οὔτε γιγνόμενον οὔτε ὄντα οὔτ' ἐσόμενον; ΣΩΚΡΑΤ. Ὀρθῶς. ΠΡΩΤ. Ἡδονάς δέ γέ που, καὶ ταύτας σχεδὸν τὰς μεγίστας, ὅταν ἴδωμεν ἡδόμενον ὁντινοῦν, ἢ τὸ γελοῖον ἐπ' αὐταῖς ἢ τὸ πάντων αἴσχιστον ἑπόμενον ὁρῶντες αὐτοί τε αἰσχυνόμεθα καὶ ἀφανίζοντες κρύπτομεν ὅ τι μάλιστα, νυκτὶ πάντα τὰ τοιαῦτα διδόντες, ὡς φῶς οὐ δέον ὁρᾶν αὐτά. ΣΩΚΡ. Πάντῃ δὴ φήσεις, ὦ Πρώταρχε, ὑπό τε ἀγγέλων πέμπων καὶ παροῦσι φράζων, ὡς ἡδονὴ κτῆμα οὐκ ἔστι πρῶτον οὐδ' αὖ δεύτερον, ἀλλὰ πρῶτον μέν πῃ περὶ μέτρον, καὶ τὸ μέτριον καὶ καίριον καὶ πάντα ὁπόσα τοιαῦτα χρὴ νομίζειν τὴν

ἀίδιον εἰρῆσθαι φύσιν. ΠΡΩΤ. Φαίνεται γοῦν ἐκ τῶν νῦν λεγομένων. ΣΩΚΡ. Δεύτερον μὴν περὶ τὸ σύμμετρον καὶ καλὸν καὶ τὸ τέλεον καὶ ἱκανὸν καὶ πάνθ' ὁπόσα τῆς γενεᾶς αὖ ταύτης ἐστίν. ΠΡΩΤ. Ἔοικε γοῦν. ΣΩΚΡ. Τὸ τοίνυν τρίτον, ὡς ἡ ἐμὴ μαντεία, νοῦν καὶ φρόνησιν τιθεὶς οὐκ ἂν μέγα τι τῆς ἀληθείας παρεξέλθοις. ΠΡΩΤ. Ἴσως. ΣΩΚΡ. Ἆρ' οὖν οὐ τέταρτα, ἃ τῆς ψυχῆς αὐτῆς ἔθεμεν, ἐπιστήμας τε καὶ τέχνας καὶ δόξας ὀρθὰς λεχθείσας, ταῦτ' εἶναι τὰ πρὸς τοῖς τρισὶ τέταρτα; εἴπερ τοῦ ἀγαθοῦ γέ ἐστι μᾶλλον ἢ τῆς ἡδονῆς ξυγγενῆ. ΠΡΩΤ. Τάχ' ἄν. ΣΩΚΡ. Πέμπτας τοίνυν ἃς ἡδονὰς ἔθεμεν, ἀλύπους ὁρισάμενοι, καθαρὰς ἐπονομάσαντες τῆς ψυχῆς αὐτῆς ἐπιστήμας, ταῖς δὲ αἰσθήσεσιν ἑπομένας; ΠΡΩΤ. Ἴσως. ΣΩΚΡ. "ἕκτῃ δ' ἐν γενεᾷ" φησὶν Ὀρφεὺς "καταπαύσατε κόσμον ἀοιδῆς." ἀτὰρ κινδυνεύει καὶ ὁ ἡμέτερος λόγος ἐν ἕκτῃ καταπεπαυμένος εἶναι κρίσει.

65 *Εὐκλείδου.*

Ἔστι δὲ ὁ μὲν ὕπνος νεώτερος καὶ μειρακιώδης δαίμων, εὔσπειστος καὶ ῥάδιος ἀποφυγεῖν· ὁ δὲ ἕτερος οὗτος πολιὸς καὶ γέρων, ἐν τοῖς πρεσβυτέροις τῶν ἀνθρώπων μάλιστα ἐμπεφυκώς, ἄσπειστος καὶ ἀπαραίτητος. τούτου δὲ τοῦ δαίμονος ἐργῶδές ἐστιν ἀπαλλαγῆναι ὅταν ἅπαξ παρῇ· οὔτε γὰρ λόγοις προσέχει οὐδὲν οὔτε ἀκούειν τὸ σύνολον δύναται· κωφὸς γάρ ἐστιν. οὔτ' αὖ δεικνύων αὐτῷ ἐμφανίσαις τὶ ἄν· τυφλὸς γάρ ἐστιν.

ΠΕΡΙ ΑΝΔΡΕΙΑΣ. Ζ.

1 *Εὐριπίδης Βελλεροφόντῃ.*

Θάρσος δὲ πρὸς τὰς συμφορὰς μέγα σθένει.

2 *Εὐριπίδου Αἰγεῖ.*

Ἔστι καὶ πταίσαντ' ἀρετὰν ἀποδείξασθαι θανάτῳ.

3 *Σοφοκλέους Αἴαντος* (473).

Αἰσχρὸν γὰρ ἄνδρα τοῦ μακροῦ χρῄζειν βίου,
κακοῖσιν ὅστις μηδὲν ἐξαλλάσσεται.
τί γὰρ παρ' ἦμαρ ἡμέρα τέρπειν ἔχει
προσθεῖσα κἀναθεῖσα τοῦ γε κατθανεῖν;
οὐκ ἂν πριαίμην οὐδενὸς λόγου βροτόν,
ὅστις καλαῖσιν ἐλπίσιν θερμαίνεται.
ἀλλ' ἢ καλῶς ζῆν ἢ καλῶς τεθνηκέναι
τὸν εὐγενῆ χρή. πάντ' ἀκήκοας λόγον.

4 *Μενάνδρου.*

Ὅταν τι πράττῃς ὅσιον, ἀγαθὴν ἐλπίδα
πρόβαλλε σαυτῷ, τοῦτο γιγνώσκων ὅτι
τόλμῃ δικαίᾳ καὶ θεὸς συλλαμβάνει.

5 *Εὐριπίδης Ἀρχελάῳ.*

Ἓν δέ σοι μόνον προφωνῶ, μὴ 'πὶ δουλείαν ποτε
ζῶν ἑκὼν ἔλθῃς, παρόν σοι κατθανεῖν ἐλευθέρῳ.

6 *Εὐριπίδης Δανάῃ.*

Φεῦ τοῖσι γενναίοισιν ὡς ἁπανταχοῦ
πρέπει χαρακτὴρ χρηστὸς εἰς εὐψυχίαν.

7 *Σοφοκλῆς Ἐριφύλῃ.*

Ἀνδρῶν γὰρ ἐσθλῶν στέρνον οὐ μαλάσσεται.

8 *Σοφοκλῆς Κρεούσῃ.*

Ὅστις δὲ τόλμῃ πρὸς τὸ δεινὸν ἔρχεται,
ὀρθὴ μὲν ἡ γλῶσσ' ἐστίν, ἀσφαλὴς δ' ὁ νοῦς.

9 *Εὐριπίδης Ἡρακλεῖ.*

Τὸ μὲν σφαγῆναι δεινόν, εὔκλειαν δ' ἔχει·
τὸ μὴ θανεῖν δὲ δειλόν, ἡδονὴ δ' ἔνι.

10 *Εὐριπίδου Οἰδίποδι.*

Πότερα γενέσθαι δῆτα χρησιμώτερον
συνετὸν ἄτολμόν τ' ἢ θρασύν τε κἀμαθῆ;
τὸ μὲν γὰρ αὐτῶν σκαιόν, ἀλλ' ἀμύνεται·
τὸ δ' ἡσυχαῖον ἔργον· ἐν δ' ἀμφοῖν νόσος.

11 *Αἰσχύλου* (S. c. Th. 42).

Ἄνδρες γὰρ ἑπτὰ θούριοι λοχαγέται,
ταυροσφαγοῦντες εἰς μελάνδετον σάκος
καὶ θιγγάνοντες χερσὶ ταυρείου φόνου,
Ἄρη τ' Ἐνυὼ καὶ φιλαίματον Φόβον
ὡρκωμότησαν, ἢ πόλει κατασκαφὰς
θέντες λαπάξειν ἄστυ Καδμείων βίᾳ
ἢ γῆν θανόντες πρόσθε φυράσειν φόνῳ.
σημεῖα δ' αὐτῶν τοῖς τεκοῦσιν εἰς δόμους
πρὸς ἅρμ' Ἀδράστου χερσὶν ἔστεφον δάκρυ
λείβοντες· οἶκτος δ' οὔ τις ἦν ἀνὰ στόμα.
σιδηρόφρων γὰρ θυμὸς ἀνδρίᾳ φλέγων
ἔπνει λεόντων ὡς ἄρην δεδορκότων.
καὶ τῷδε πίστις οὐκ ὄκνῳ χρονίζεται.
κληρουμένους δ' ἔλειπον, ὡς πάλῳ λαχὼν
ἕκαστος αὐτῶν πρὸς πύλας ἄγοι λόχον.

12 *Μιμνέρμου.*

*Οὐ μὲν δὴ * κείνου γε μένος καὶ ἀγήνορα θυμὸν*
τοῖον ἐμεῦ προτέρων πεύθομαι, οἵ μιν ἴδον
Λυδῶν ἱππομάχων πυκινὰς κλονέοντα φάλαγγας
Ἕρμιον ἂμ πεδίον, φῶτα φερεμμελίην.
τοῦ μὲν ἄρ' οὔ ποτε πάμπαν ἐμέμψατο Παλλὰς Ἀθήνη
δριμὺ μένος κραδίης, εὖθ' ὅγ' ἀνὰ προμάχους

σεύαιθ', αἱματόεντος ἐν ὑσμίνῃ πολέμοιο
πικρὰ βιαζομένου δυσμενέων βέλεα.
οὐ γάρ τις κείνου * δηίων ἔτ' ἀμεινότερος φὼς
ἔσκεν ἐποίχεσθαι φυλόπιδος κρατερῆς
ἔργον, ὅτ' αὐγαῖσιν φέρετ' ὠκέος ἠελίοιο —

13 Μελιννοῦς Λεσβίας εἰς Ῥώμην.

Χαῖρέ μοι Ῥώμα, θυγάτηρ Ἄρηος,
χρυσεομίτρα δαΐφρων ἄνασσα,
σεμνὸν ἃ ναίεις ἐπὶ γᾶς ὄλυμπον
αἰὲν ἄθραυστον.
σοὶ μόνᾳ πρέσβιστα δέδωκε Μοῖρα
κῦδος ἀρρήκτω βασιλῆον ἀρχᾶς,
ὄφρα κοιρανῆον ἔχοισα κάρτος
ἁγεμονεύῃς.
σᾷ δ' ὑπὸ σδεύγλᾳ κρατερῶν λεπάδνων
στέρνα γαίας καὶ πολιᾶς θαλάσσας
σφίγγεται· σὺ δ' ἀσφαλέως κυβερνᾷς
ἄστεα λαῶν.
πάντα δὲ σφάλλων ὁ μέγιστος αἰὼν
καὶ μεταπλάσσων βίον ἄλλοτ' ἄλλως
σοὶ μόνᾳ πλησίστιον οὖρον ἀρχᾶς
οὐ μεταβάλλει.
ἦ γὰρ ἐκ πάντων σὺ μόνα κρατίστους
ἄνδρας αἰχματὰς μεγάλους λοχεύεις,
εὔσταχυν Δάματρος ὅπως ἀνεῖσα
καρπὸν ἀπ' ἀνδρῶν.

14 Ὁμήρου (Il. ν 288).

Εἴπερ γάρ κε βλεῖο πονεύμενος ἠὲ τυπείης,
οὐκ ἂν ἐπ' αὐχέν' ὄπισθε πέσοι βέλος οὐδ' ἐπὶ νώτῳ,
ἀλλά κεν ἢ στέρνων ἢ νηδύος ἀντιάσειεν
πρόσσω ἱεμένοιο μετὰ προμάχων ὀαριστύν.

15 *Τοῦ αὐτοῦ* (Il. χ 283).

Οὐ μέν μοι φεύγοντι μεταφρένῳ ἐν δόρυ πήξεις,
ἀλλ' ἰθὺς μεμαῶτι διὰ στήθεσφιν ἔλασσον.

16 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τί ῥώμη εἶπε "κίνησις ψυχῆς μετὰ σώματος."

17 *Ἐπικτήτου.*

Διὰ τοῦτο ἐπαινεῖν Ἀγριππῖνον δίκαιον, ὅτι πλείστου ἄξιος ἀνὴρ γενόμενος οὐδεπώποτε ἐπήνεσεν ἑαυτόν, ἀλλ' εἰ καὶ ἄλλος τις αὐτὸν ἐπήνει, ἠρυθρία. οὗτος δ', ἔφη, ὁ ἀνὴρ τοιοῦτος ἦν, ὥστε τοῦ συμβαίνοντος ἀεὶ ἑαυτῷ δυσκόλου ἔπαινον γράφειν, εἰ μὲν πυρέττοι πυρετοῦ, εἰ δὲ ἀδοξοῖ ἀδοξίας, εἰ δὲ φεύγοι φυγῆς. καί ποτε μέλλοντι, ἔφη, αὐτῷ ἀριστήσειν ἐπέστη ὁ λέγων, ὅτι φεύγειν αὐτὸν κελεύει Νέρων· καὶ ὃς ἔφη "οὐκοῦν" εἶπεν "ἐν Ἀρικίᾳ ἀριστήσομεν."

18 *Διογένους.*

Διογένης οὐδένα καλὸν ἔφησεν εἶναι πόνον, οὗ μὴ τέλος εἴη εὐψυχία καὶ τόνος ψυχῆς, ἀλλ' οὐχὶ σώματος.

19 *Θουκυδίδου δημηγορίας Περικλέους* (II, 63).

Τὸ γὰρ ἄπραγμον οὐ σώζεται μὴ μετὰ τοῦ δραστηρίου τεταγμένον.

20 *Ἀντιγόνου.*

Ἀντίγονος δὲ ἔφη τὰ μέγιστα καλὰ ἄνευ μεγάλων κακῶν οὐκ εἶναι.

21 *Χρυσίππου.*

Ἔλεγεν δὲ ὁ Χρύσιππος ἀλγεῖν μὲν τὸν σοφόν,

μὴ βασανίζεσθαι δέ· μὴ γὰρ ἐνδιδόναι τῇ ψυχῇ. καὶ δεῖσθαι μέν, μὴ προσδέχεσθαι δέ.

22 *Δημοκρίτου.*

Ἀνδρείη τὰς ἄτας μικρὰς ἔρδει.

23 *Μουσωνίου.*

Καὶ ἂν τοῦ συμφέροντος μάλιστα προαιρῇ ἔχεσθαι, μὴ δυσχέραινε ταῖς περιστάσεσιν, ἐνθυμούμενος πόσα ἤδη σοι τῶν ἐν βίῳ οὐχ ὡς σὺ ἐβούλου συνέπεσεν, ἀλλ᾽ ὡς συνέφερεν.

24 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἅρπαξε τὸ καλῶς ἀποθνήσκειν ὅτε ἔξεστι, μὴ μετὰ μικρὸν τὸ μὲν ἀποθνήσκειν σοι παρῇ, τὸ δὲ καλῶς μηκέτι ἐξῇ.

25 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐκ ἔστιν ἐπὶ πολλῶν συμφέροντι ζῶντα καθηκόντως ἀποθανεῖν μὴ ὑπὲρ πλειόνων ἀποθνήσκοντα συμφέροντι.

26 *Δημοκρίτου.*

Ἀνδρεῖος οὐχ ὁ τῶν πολεμίων κρατῶν μόνον, ἀλλὰ καὶ ὁ τῶν ἡδονῶν κρείσσων. ἔνιοι δὲ πολίων μὲν δεσπόζουσι, γυναιξὶ δὲ δουλεύουσιν.

27 *Πλάτωνος.*

Πλάτων ἔφη τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας βίου μὴ μακροῦ ἀλλὰ λαμπροῦ δεῖσθαι.

28 *Δαρείου.*

Δαρεῖος ὁ Ξέρξου πατὴρ ἑαυτὸν ἐγκωμιάζων ἔλεγεν ἐν ταῖς μάχαις καὶ παρὰ τὰ δεινὰ γίγνεσθαι φρονιμώτερος.

29 *Ἐκ τῶν Δίωνος χρειῶν.*

Λάκαινα γυνὴ τοῦ υἱοῦ αὐτῆς ἐν παρατάξει χωλωθέντος καὶ δυσφοροῦντος ἐπὶ τούτῳ "μὴ λυποῦ τέκνον" εἶπεν, "καθ' ἕκαστον γὰρ βῆμα τῆς ἰδίας ἀρετῆς ὑπομνησθήσῃ."

30 *Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.*

Ἀνάξαρχος ὁ φυσικὸς εἰπόντος αὐτῷ Ἀλεξάνδρου ὅτι κρεμῶ σε, "ἀπείλει τούτοις" ἔφη "τοῖς πολλοῖς· ἐμοὶ δὲ οὐδὲν διαφέρει ὑπὲρ γῆς ἢ κατὰ γῆς σήπεσθαι."

31 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Γοργὼ ἡ Λακεδαιμονία Λεωνίδου γυνή, τοῦ υἱοῦ αὐτῆς ἐπὶ στρατείαν πορευομένου, τὴν ἀσπίδα ἐπιδιδοῦσα εἶπεν "ἢ τὰν ἢ ἐπὶ τᾶς."

32 *Δημοκρίτου.*

Δίκης κῦδος γνώμης θάρσος καὶ ἀθαμβίη, ἀδικίης δὲ δεῖμα ξυμφορῆς τέρμα.

33 *Ἡροδότου ἱστορίας ζ'* (50).

Μεγάλα γὰρ πρήγματα μεγάλοισι κινδύνοισιν ἐθέλει καὶ αἱρέεσθαι.

34 *Πλάτωνος ἐκ τῆς ἀπολογίας Σωκράτους* (28 b).

Ἴσως ἂν οὖν εἴποι τις, εἶτ' οὐ καταισχύνῃ, ὦ Σώκρατες, τοιοῦτο ἐπιτήδευμα ἐπιτηδεύσας, ἐξ οὗ κινδυνεύεις νυνὶ ἀποθανεῖν; ἐγὼ δὲ τούτῳ ἂν δίκαιον λόγον ἀντείποιμι, ὅτι οὐ καλῶς λέγεις, ὦ ἄνθρωπε, εἰ οἴει δεῖν κίνδυνον ὑπολογίζεσθαι τοῦ ζῆν ἢ τεθνάναι ἄνδρα, ὅτου τι καὶ σμικρὸν ὄφελός ἐστιν, ἀλλ' οὐκ ἐκεῖνο σκοπεῖν ὅταν πράττῃ, πότερον δίκαια ἢ ἄδικα πράττει, καὶ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ ἔργα ἢ κακοῦ.

35 *Θουκυδίδου δημηγορίας Κνήμου* (II, 87).

Ἄνευ δ' εὐψυχίας οὐδεμία τέχνη πρὸς τοὺς κιν-

θύνους ἰσχύει· φόβος γὰρ μνήμην ἐκπλήσσει, τέχνη δ᾽ ἄνευ αὐτῆς οὐδὲν ὠφελεῖ.

36 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ ἐπιταφίου* (II, 43).

Ἀλγεινοτέρα γὰρ ἀνδρί γε φρόνημα ἔχοντι ἡ μετὰ τοῦ μαλακισθῆναι κάκωσις ἢ ὁ μετὰ ῥώμης καὶ κοινῆς ἐλπίδος ἅμα γιγνόμενος ἀναίσθητος θάνατος.

37 *Ἐν ταυτῷ* (II, 40).

Διαφερόντως γὰρ δὴ καὶ τόδε ἔχομεν, ὥστε τολμᾶν τε οἱ αὐτοὶ μάλιστα καὶ περὶ ὧν ἐπιχειρήσομεν ἐκλογίζεσθαι· ὃ τοῖς ἄλλοις ἀμαθία μὲν θράσος λογισμὸς δὲ ὄκνον φέρει. κράτιστοι δ᾽ ἂν τὴν ψυχὴν δικαίως κριθεῖεν οἱ τά τε δεινὰ καὶ ἡδέα σαφέστατα γινώσκοντες καὶ διὰ ταῦτα μὴ ἀποτρεπόμενοι ἐκ τῶν κινδύνων.

38 *Ζήνωνος.*

Ζήνων ὁ Ἐλεάτης ὑπὸ τοῦ τυράννου στρεβλούμενος, ὅπως εἴπῃ τοὺς συνωμότας "εἰ γὰρ ἦσαν" εἶπεν "οὐκ ἂν ἐτυράννεις."

39 *Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.*

Ὀμβρικοὶ ἐν ταῖς πρὸς τοὺς πολεμίους μάχαις αἴσχιστον ἡγοῦνται ἡττημένοι ζῆν, ἀλλ᾽ ἀναγκαῖον ἢ νικᾶν ἢ ἀποθνήσκειν.

40 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Κελτοὶ οἱ τῷ ὠκεανῷ γειτνιῶντες αἰσχρὸν ἡγοῦνται τοῖχον καταπίπτοντα ἢ οἰκίαν φεύγειν, πλημμυρίδος δὲ ἐκ τῆς ἔξω θαλάττης ἐπερχομένης μεθ᾽ ὅπλων ἀπαντῶντες ὑπομένουσιν ἕως κατακλύζονται, ἵνα μὴ δοκῶσι φεύγοντες τὸν θάνατον φοβεῖσθαι.

41 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Ὀλύμπιον περὶ ἀνδρίας.*

Ἀνδρία νοείσθω ἡ κυριωτάτη, ὅση τέ ἐστιν ἄτρεπτος νοερὰ δύναμις, καὶ ὅση ἀκμαιοτάτη νοερὰ ἐνέργεια, ἥτε τοῦ νοῦ ταυτότης καὶ μόνιμος ἕξις ἐν ἑαυτῇ· τοιαῦτα ἂν εἴη τὰ περὶ τὴν ζωὴν εἴδη θεωρούμενα τῆς ἀνδρίας, ἤτοι καθ' ἑαυτὰ ὑφεστηκότα ἢ κοινωνήσαντα τὴν ἑαυτῶν ῥώμην πρὸς τὴν ἐν τοῖς λόγοις μόνιμον κατάστασιν.

42 Ἐν ταυτῷ.

Ἀπὸ δὴ τούτων τὰ ἐν τοῖς πάθεσιν περί τε δεινὰ καὶ μὴ δεινὰ καὶ περὶ φόβον καὶ θάρσος περί τε ἡδονὴν καὶ λύπην γενναίως ἀνθιστάμενα, καὶ τὰ διαφυλάττοντα ἀεὶ τὰς αὐτὰς ὀρθὰς δόξας, τά τε σύμμετρα καὶ μέσα ἤθη διασώζοντα, καὶ τὰ πραΰνοντα τὸν ὑπὸ τῷ λόγῳ καὶ ἀνεγείροντα αὐτὸν κατὰ καιρόν, καὶ τὰ κοινὰ τούτων ἐκ πάθους καὶ λόγου καὶ προαιρέσεως, τίθεμαι εἶναι πολυμέριστα εἴδη τῆς ἀνδρίας, ἀφ' ὧν ἐπιρρεῖ τοῖς βίοις ἡ ἀνδραγαθία τῶν πράξεων ἀήττητος πάντῃ καὶ ἀβίαστος, ἑκουσίως τὰ καλὰ καὶ δι' ἑαυτὰ αἱρουμένη καὶ πράττουσα, καὶ τῶν ἀγαθῶν ἕνεκα πάντας πόνους καὶ κινδύνους ὑπομένουσα διδοῦσά τε ἑαυτὴν ἑτοίμως εἰς τὰ δοκοῦντα εἶναι δυσχερῆ, καὶ θαρροῦσα τὸν θάνατον καὶ μελετῶσα τάς τε ἀλγηδόνας εὐκόλως φέρουσα καὶ μεταχειριζομένη.

43 Πλάτωνος.

Πλάτων ἐρωτηθεὶς πῶς ἔχειν δεῖ πρὸς τὰ περιπτώματα, "οὕτως" εἶπεν "ὥστε προϊδόντα μὴ ἐμβῆναι, ἐμβάντα δὲ κατ' ἄγνοιαν μὴ φροντίσαι."

44 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὐ τὸ ζῆν περὶ πλείστου ποιητέον, ἀλλὰ τὸ εὖ ζῆν.

45 Ζήνωνος.

Ζήνων ὡς ἤδη γέρων ὢν πταίσας κατέπεσεν "ἔρχομαι" εἶπε "τί με αὔεις;" καὶ εἰσελθὼν ἑαυτὸν ἐξήγαγεν.

46 Λεωνίδου.

Λεωνίδης ἀκούσας ἐπισκιάζεσθαι τὸν ἥλιον τοῖς Περσῶν τοξεύμασιν "χάριεν" ἔφη "ὅτι καὶ ὑπὸ σκιᾷ μαχούμεθα."

47 Διογένους.

Ὁρῶν Μεγαρέας ὁ Διογένης τὰ μακρὰ τείχη ἱστάντας "ὦ μοχθηροί" εἶπε "μὴ τοῦ μεγέθους προνοεῖτε τῶν τειχῶν, ἀλλὰ τῶν ἐπ' αὐτῶν στησομένων."

48 Ἆγις ὁ βασιλεὺς ἔφη τοὺς Λακεδαιμονίους μὴ ἐρωτᾶν ὁπόσοι εἰσὶν ἀλλὰ ποῦ εἰσὶν οἱ πολέμιοι. καὶ ἐρωτῶντος τινός "πόσοι εἰσὶ Λακεδαιμόνιοι;" ἔφη "ἱκανοὶ τοὺς κακοὺς ἀπερύκειν." Plut. Mor. 190 c. d.

49 Ξενοφῶντος.

Ξενοφῶντι ἐν Σκιλλοῦντι ἐστεφανωμένῳ καὶ θύοντι ἀπήγγειλέ τις Γρύλλον τὸν υἱὸν περὶ Μαντίνειαν πολεμοῦντα ἀνῃρῆσθαι. ὃ δὲ ἀποθέμενος τὸν στέφανον εἴρετο ὅπως ἀγωνιζόμενος τελευτήσειε· τοῦ δ' εἰπόντος ἄριστα, ἐπιθέμενος τὸν στέφανον πάλιν ἔθυεν.

50 Δημοσθένους ἐκ τῶν ὑπὲρ τοῦ στεφάνου (258, 19).

Πέρας μὲν γὰρ ἅπασιν ἀνθρώποις τοῦ βίου θάνατος, κἂν ἐν οἰκίσκῳ τις ἑαυτὸν καθείρξας τηρῇ. δεῖ δὲ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας ἐγχειρεῖν μὲν ἅπασιν ἀεὶ τοῖς καλοῖς τὴν ἀγαθὴν προβαλλομένους ἐλπίδα, φέρειν δ' ὃ ἂν ὁ θεὸς διδῷ γενναίως.

51 *Πλάτωνος* (Phaedr. 274 b).

Ἀλλὰ καὶ ἐπιχειροῦντι τοῖς καλοῖς καλὸν καὶ πάσχειν ὅ τι ἂν ξυμβῇ τῳ παθεῖν.

52 *Ἀλεξάνδρου* (Plut. V. Alex. 672 b).

Ἐν Ἰλίῳ θύοντι τῷ Ἀλεξάνδρῳ ἔφη ὁ ἱερεὺς δείξειν τὴν Πάριδος λύραν, ὃ δὲ "τὴν Ἀχιλλέως" εἶπεν "εἰ ἔχεις, δεῖξον, καὶ πρό γε τῆς λύρας τὴν μελίαν."

53 *Κορίσκου.*

Κορίσκος εὖ μάλα γέρων ὤν, ὡς ἀπό τινος χαλεπῆς ἀρρωστίας ἀνέρρωσεν "ἄπαγε" ἔφη "ὡς ἀηδῶς ἀνέστροφα, ἤδη πολὺ τῆς ὁδοῦ προκεκοφὼς ἣν δεῖ πάντως πορευθῆναι.

54 *Κλεάνθους.*

Κλεάνθης, ὑπὸ γλώττης ἕλκους αὐτῷ γενομένου, τὴν τροφὴν οὐκ ἐδύνατο παραπέμπειν· ὡς δὲ ῥᾷον ἔσχε καὶ ὁ ἰατρὸς αὐτῷ τροφὴν προσήγαγεν "σὺ δέ με" ἔφη "βούλει ἤδη τὸ πλέον τῆς ὁδοῦ κατανύσαντα ἀναστρέφειν, εἶτα πάλιν ἐξ ὑπαρχῆς τὴν αὐτὴν ἔρχεσθαι;" καὶ ἐξῆλθεν τοῦ βίου.

55 *Κλειτομάχου.*

Κλειτόμαχος νοσήσας καὶ ληθάργῳ περιπεσὼν ὡς ἀνένηψεν "οὐδέν με" ἔφη "ἐξαπατήσει ἡ φιλοζωία," καὶ ἐξήγαγεν ἑαυτὸν τοῦ βίου.

56 *Σωκράτους.*

Σωκράτους φεύγοντος τὴν δίκην, Λυσίας λόγον τινὰ συγγράψας ἦλθεν αὐτῷ κομίζων καὶ ἐκέλευε χρήσασθαι· τοῦ δὲ Λυσίου εἰπόντος καὶ μὴν κάλλιστον αὐτὸν εἶναι· "καὶ τὰ ῥόδα" ἔφη "κάλλιστά ἐστιν, ἀλλ' οὐ πρέπειν αὐτῷ τὸ στεφάνωμα." "τεθνήξῃ τοίνυν" ἔφη ὁ Λυσίας "εἰ μὴ οὕτως ἀπολο-

γήσῃ· ὃ δὲ “εἰ γὰρ” ἔφη “καὶ μὴ νῦν, πάντως τεθνήξομαι.”

57 Ἐρασιστράτου.

Ἐρασίστρατος ὁ Χῖος ἤδη γηραιὸς ὢν ἕλκος ἐπὶ τοῦ ποδὸς δυσίατον ἔχων “εὖ γε” εἶπεν “ὅτι τῆς πατρίδος ὑπομιμνήσκομαι,” καὶ κώνειον πιὼν κατέστρεψεν.

58 Ἡροδότου ἱστορίας ζ (102).

Λέγει Δημάρατος τάδε “ἐπειδὴ ἀληθείῃ δὴ χρήσασθαι πάντως κελεύεις ταῦτα λέγοντα, τὰ μὴ ψευδόμενός τις ὕστερον ὑπὸ σεῦ ἁλώσεται· τῇ Ἑλλάδι πενίη μὲν αἰεί κοτε σύντροφος σύνεστιν· ἀρετὴ δὲ ἐπακτός ἐστιν ἀπό τε σοφίης κατεργασμένη καὶ νόμου ἰσχυροῦ· τῇ διαχρεομένη Ἑλλὰς τήν τε πενίην ἀπαμύνεται καὶ τὴν δεσποσύνην.”

59 Φιλίππου.

Φίλιππος ἦλθεν ἐπὶ Λακεδαίμονα καὶ προστρατοπεδεύσας ἔπεμψεν ἀπειλῶν πολλὰ καὶ χαλεπά, ἢν μὴ ποιῶσι τὰ προστασσόμενα· τῶν δὲ Λακεδαιμονίων τις ἀκούσας τῶν ἀπειλῶν χάριν αὐτῷ ἔφη εἰδέναι, ὅτι οὐ κωλύει ὃ ἐπὶ τοῖς μαχομένοις ἐστὶν ἀποθανεῖν.

60 Πύρρου.

Πύρρου ἐπιστρατεύσαντος Λακεδαιμονίοις καὶ πολλὰ ἀπειλοῦντος, Δερκυλλίδας εἷς τῶν γερόντων ἀναστὰς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ εἶπεν “εἰ μὲν θεός ἐστιν ὁ ἀπειλῶν, μὴ φοβώμεθα, οὐδὲν γὰρ ἀδικοῦμεν· εἰ δ’ ἄνθρωπος, γνώτω ἀνδράσιν ἀπειλῶν.”

61 Σερήνου.

Ἀλέξανδρον τὸν Φεραίων τύραννον Θήβη ἀπέκτεινε γυνὴ καὶ τοὺς Φεραίους ἠλευθέρωσεν. συνέβη

δὲ καὶ θεωροὺς ἥκοντας αὐτῶν παρ' Ἄμμωνος λέγειν αὐτοῖς κελεύειν τὸν Ἄμμωνα Ἥβης ἱερὸν ἱδρύσασθαι. τῶν δὲ πρεσβυτέρων τις παρακοῦσαι ἔφη τοὺς θεωρούς· τὸν γὰρ Ἄμμωνα Θήβης εἰπεῖν τῆς αὐτοὺς ἐξελομένης τῆς δουλείας.

62 Ἐκ τῶν Πλουτάρχου διηγήσεων (Mor. 305 b).

Δαρεῖος ὁ Περσῶν βασιλεὺς μετὰ τριάκοντα μυριάδων ἐν Μαραθῶνι ἐστρατοπεδεύσατο. Ἀθηναῖοι δὲ θ' χιλίους ἔπεμψαν στρατηγοὺς αὐτοῖς δόντες Πολύζηλον Καλλίμαχον Κυνέγειρον Μιλτιάδην· συμβληθείσης δὲ τῆς παρατάξεως, Πολύζηλος μὲν ὑπὲρ ἄνθρωπον φαντασίαν θεασάμενος, τὴν ὅρασιν ἀπέβαλεν, καὶ τυφλὸς ὢν ἀνεῖλε τεσσαράκοντα καὶ ὀκτώ, Καλλίμαχος δὲ πολλοῖς περιπεπαρμένος δόρασιν καὶ νεκρὸς ἐστάθη, Κυνέγειρος δὲ Περσικὴν ἀγομένην ναῦν κατέχων ἐχειροκοπήθη. ὅθεν καὶ εἰς αὐτοὺς ὑπὸ Παντελείου τοιάδε γεγράφθαι λέγεται

ὦ κενεοῦ καμάτοιο καὶ ἀπρήκτου πολέμοιο.
ἡμετέρῳ βασιλῆι τί λέξομεν ἀντιάσαντες;
ὦ βασιλεῦ, τί μ' ἔπεμπες ἐπ' ἀθανάτους πολεμιστάς;
βάλλομεν, οὐ πίπτουσι· τιτρώσκομεν, οὐ φοβέονται.
μοῦνος ἀνὴρ σύλησεν ὅλον στρατόν· ἐν δ' ἄρα μέσσῳ
αἱματόεις ἕστηκεν ἀτειρέος Ἄρεος εἰκών.
δένδρον δ' ὣς ἕστηκε σιδηρείαις ὑπὸ ῥίζαις,
κοὐκ ἐθέλει πεσέειν, τάχα δ' ἔρχεται ἔνδοθι νηῶν.
λῦε κυβερνῆτα, νέκυος προφύγωμεν ἀπειλάς.

63 Ἀγαθαρχίδου Σαμίου ἐν δ' Περσικῶν.

Ξέρξης μετὰ πεντακοσίων μυριάδων Ἀρτεμισίῳ προσορμίσας πόλεμον τοῖς ἐγχωρίοις κατήγγειλεν. Ἀθηναῖοι δὲ συγκεχυμένοι κατάσκοπον ἔπεμψαν Ἀγη-

σίλαον τὸν Θεμιστοκλέους ἀδελφόν, καίπερ Νεοκλέους τοῦ πατρὸς αὐτοῦ κατ' ὄναρ ἑωρακότος ἀμφοτέρας ἀποβεβληκέναι τὰς χεῖρας. παραγενόμενος δὲ ὁ ἀνὴρ εἰς πλῆθος τῶν βαρβάρων ἐν σχήματι Περσικῷ Μαρδόνιον ἕνα τῶν σωματοφυλάκων ἀνεῖλεν, ὑπολαβὼν Ξέρξην ὑπάρχειν, συλληφθεὶς δὲ ὑπὸ τῶν δορυφόρων πρὸς τὸν βασιλέα δέσμιος ἤχθη. βουθυτεῖν δὲ τοῦ προειρημένου μέλλοντος ἐπὶ τὸν βωμὸν τοῦ ἡλίου τὴν δεξιὰν ἐπέθηκε χεῖρα καὶ ἀστένακτος ὑπομείνας τὴν ἀνάγκην τῶν βασάνων ἠλευθερώθη τῶν δεσμῶν εἰπών "τοιοῦτοι πάντες ἐσμὲν Ἀθηναῖοι· εἰ δ' ἀπιστεῖς, καὶ τὴν ἀριστερὰν ἐπιθήσω." φοβηθεὶς δ' ὁ Ξέρξης φρουρεῖσθαι τὸν Ἀγησίλαον προσέταξεν. Plut. Mor. 305 d.

64 *Ἀριστείδου ἐν τῷ γ' τῶν Περσικῶν.*

Περσῶν μετὰ πεντακοσίων μυριάδων ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα φερομένων, Λακεδαιμόνιοι τριακοσίους εἰς Θερμοπύλας ἔπεμψαν στρατηγὸν αὐτοῖς δόντες Λεωνίδην. οὗτος τὸ ἐπερχόμενον θεασάμενος τῶν πολεμίων πλῆθος εὐωχουμένοις εἶπε τοῖς συμμάχοις "οὕτως ἀριστᾶτε, ὦ τριακόσιοι, ὡς ἐν ᾅδου δειπνήσοντες." ἐπιφανέντων οὖν τῶν βαρβάρων, Λεωνίδας πολλοῖς περιπεπαρμένος δόρασι μεθ' ὁρμῆς ἐπὶ Ξέρξην ἠνέχθη καὶ περιελόμενος αὐτοῦ τὸ διάδημα πρὸ τῶν τραυμάτων κατέσχε καὶ αἱμορραγήσας ἐξέπνευσεν. ἀνατεμὼν δὲ ὁ βασιλεὺς τοῦ προειρημένου τὸ στῆθος εὗρεν αὐτοῦ τὴν καρδίαν τριχῶν γέμουσαν. Plut. Mor. 306 c.

65 *Καλλισθένους ἐν τρίτῳ Μακεδονικῶν.*

Φίλιππος ὁ τῶν Μακεδόνων βασιλεὺς δύο καὶ τριάκοντα Χαλκιδικὰς πόλεις τοῖς ἰδίοις ὑποτάξας σκήπτροις, Μεθωναίους καὶ Ὀλυνθίους λεηλατεῖν

ἤρξατο. γενόμενος δὲ κατὰ γέφυραν ποταμοῦ Σάρδωνος καὶ εἰς τὸ πέραν διαβῆναι βιαζόμενος, ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν Ὀλυνθίων ἐπεσχέθη. τοξότης δέ τις Ἀστὴρ τοὔνομα τόξον ἐντείνας ἐτύφλωσε τὸν Φίλιππον εἰπών "Ἀστὴρ Φιλίππῳ θανάσιμον πέμπει βέλος." ἀποβαλὼν δὲ ὁ βασιλεὺς τὸν ὀφθαλμὸν εἰς τὸν ποταμὸν ἑαυτὸν ἔρριψε καὶ πρὸς τοὺς οἰκείους διανηξάμενος τὸν κίνδυνον ἐξέφυγεν. Plut. Mor. 307 d.

66 *Σωκράτου ἐν δευτέρῳ Θρᾳκικῶν.*

Ἀθηναῖοι πρὸς Θρᾷκας πόλεμον ἔχοντες στρατηγὸν ἐχειροτόνησαν Κόδρον. οὗτος ἀκούσας ὅτι χρησμὸν εἰλήφασιν οἱ πολέμιοι ἐγκρατεῖς γενήσεσθαι τῆς νίκης αὐτούς, ἐὰν τοῦ στρατηγοῦ φείσωνται τῶν Ἀθηναίων, ἐν δρυτόμου σχήματι συνέβαλε μάχην μετά τινων Θρακῶν ξυλιζομένων καὶ τῷ δρεπάνῳ καιρίως ἐξ αὐτῶν ἕνα πλήξας ἀνεῖλεν, οἱ δὲ λοιποὶ τὴν περίστασιν τοῦ στρατηγήματος μὴ γινώσκοντες ἀπέκτειναν τὸν Κόδρον θέλοντα, συμβαλόντες δὲ τὸν πόλεμον Ἀθηναῖοι τῆς νίκης ἐγκρατεῖς ἐγένοντο. Plut. Mor. 310 a.

67 *Ἐκ τῶν Θησέως.*

Λακεδαιμόνιοι καὶ Ἀργεῖοι περὶ χωρίου Θυρέας ἐν μεθορίῳ κειμένης μέχρι μὲν τινὸς ὅλοις τοῖς στρατεύμασιν παρετάσσοντο πρὸς ἀλλήλους, τέλος δ' ἔδοξεν αὐτοῖς ἐπιλέξαι παρ' ἑκατέρων τριακοσίους, κἀκείνων μαχεσαμένων τοῖς κρατήσασιν διαφέρειν τὸ χωρίον· οὗπερ γενομένου, Ὀθρυάδης Λακεδαιμόνιος στρατιώτης πολλοὺς ἀποκτείνας καὶ πολλὰ τετρωμένος ἔκειτο μεταξὺ τῶν ἀνῃρημένων Λακεδαιμονίων μόνος περιλειφθείς, Ἀργείων δὲ δύο Ἀλκήνωρ καὶ Χρόμιος· ὧν ἀπελθόντων εἰς Ἄργος ἀπαγγεῖλαι τὴν νίκην, Ὀθρυάδης πολλοὺς σκυλεύσας τῶν πολεμίων

τρόπαιον ἔστησε καὶ χρησάμενος τῷ τῶν τραυμάτων αἵματι ἐπέγραψεν "Λακεδαιμόνιοι κατ' Ἀργείων," καὶ τοῦτο πράξας ἀπέθανεν.

68 *Ἐκ τῆς Φαλάριδος ἐπιστολῆς πρὸς Περισθένην* (15).

Τὴν Εὐβούλου καὶ τὴν Ἀριστοφάντου γυναῖκα τῶν ἐπιβουλευσάντων μοι ἔπεμψας ὡς ἀπολουμένας .... καὶ πάντως που θαυμάζεις ὅτι ὑφῄρηκα τῆς ὀργῆς. εἰ δὲ καὶ πύθοιο τὴν αἰτίαν, ὅτι δι' εὐγενείας ὑπερβάλλουσαν ἀπόκρισιν οὐδὲν πρὸς ἐμοῦ πεπόνθασι, μᾶλλον ἂν ἔτι θαυμάσειας· ἐρωτώμεναι γὰρ παρ' ἐμοῦ τὴν ἐπιβουλὴν εἰ συνῄδεσαν τοῖς ἀνδράσιν, οὐ μόνον ἔφασαν ἀλλὰ καὶ συνορμῆσαι τυραννοκτονεῖν. "ἀντὶ ποίας ἀδικίας;" εἰπόντος μου, "ἰδίας μὲν οὐδεμιᾶς, τῆς δὲ κοινῆς" ἀπεκρίναντο· κοινὴν γὰρ ἀδικίαν εἶναι τὸ καταδουλοῦσθαι πόλεις ἐλευθέρας. τί παθοῦσαι τοιγάρτοι, πάλιν ἐπανερομένου μου, δίκην ἀποτίσαιντ' ἄν μοι τοῦ μίσους τὴν κατ' ἀξίαν; "ἀποθανοῦσαι" προσέθηκαν. ζῆν δή, οὐ τεθνάναι, ἔκρινα τὰς μετὰ τοιαύτης ἀρετῆς ἀποθνησκούσας.

69 *Καλλισθένους ἐν δευτέρῳ μεταμορφώσεων.*

Κατὰ Κελαινάς, πόλιν τῆς Φρυγίας, διὰ μῆνιν Ἰδαίου Διὸς χάσμα μεθ' ὕδατος γενόμενον πολλὰς οἰκίας αὐτάνδρους εἰς τὸν βυθὸν καθείλκυσε. τοῦ δὲ δήμου κινδυνεύοντος, Μίδας ὁ βασιλεὺς χρησμὸν ἔλαβε συνελεύσεσθαι τὴν γῆν, ἐὰν εἰς τὸ βάραθρον βάλῃ τὸ τιμιώτατον ἐν ἀνθρωπίνῳ βίῳ. τῶν δὲ Κελαινιτῶν χρυσόν τε καὶ ἄργυρον καὶ τὸν κόσμον τῶν γυναικῶν εἰς τὸ χάσμα ῥιψάντων καὶ μηδ' οὕτω τοῦ κακοῦ λήξαντος, Ἀγχοῦρος ὁ υἱὸς Μίδα λογισάμενος

μηδὲν εἶναι τιμιώτερον ἐν βίῳ ψυχῆς ἀνθρωπίνης, ἀναπηδήσας καὶ δοὺς περιπλοκὰς τῷ γεννήσαντι καὶ ἀποταξάμενος τῇ γυναικὶ Τιμοθέᾳ, μεθ' ὁρμῆς ἔφιππος εἰς τὸν τόπον τοῦ χάσματος ἠνέχθη. τῆς δὲ γῆς εἰς τὴν φυσικὴν ἁρμονίαν συνελθούσης, Μίδας βωμὸν ἱδρύσατο Διὸς Ἰδαίου, ὃν χρύσεον ἐποίησε ταῖς χερσὶν ἁψάμενος. οὗτος ὁ βωμὸς περὶ ἐκεῖνον τὸν καιρόν; ἐν ᾧ τὸ χάσμα συνέβη γενέσθαι, λίθινος γίνεται, τῆς δ' ὡρισμένης προθεσμίας παρελθούσης, χρύσεος ὁρᾶται. Plut. Mor. 306 f.

70 *Ἐκ τῶν Θησέως.*

Λοιμοῦ κατασχόντος τὴν Λακεδαίμονα, διὰ τὴν ἀναίρεσιν τῶν κηρύκων τῶν ἀπεσταλμένων παρὰ Ξέρξου, αἰτοῦντος γῆν καὶ ὕδωρ ὥσπερ ἀπαρχὰς δουλείας, χρησμὸς ἐδόθη, ἀπαλλαγήσεσθαι αὐτούς, εἴ γέ τινες ἕλοιντο Λακεδαιμονίων παρὰ τοῦ βασιλέως ἀναιρεθῆναι. τότε Βούλης καὶ Σπέρχης ἀφικόμενοι πρὸς βασιλέα ἠξίουν ἀναιρεθῆναι· ὃ δὲ θαυμάσας αὐτῶν τὴν ἀρετὴν ἐπανιέναι προσέταξε.

71 *Πλουτάρχου* (Mor. 445 a).

Τὴν μὲν ἀνδρίαν μεσότητά φασιν εἶναι δειλίας καὶ θρασύτητος, ὧν ἣ μὲν ἔλλειψις ἣ δὲ ὑπερβολὴ τοῦ θυμοειδοῦς ἐστίν.

72 *Τοῦ αὐτοῦ* (Plut. l. l. 190 f).

Ἀγησίλαος περὶ ἀνδρείας καὶ δικαιοσύνης ἐρωτηθεὶς ποτέρα ἂν κρείττων εἴη, "ηηδὲν ἀνδρείας δεήσεσθαι ἡμᾶς" ἔφη "εἰ δίκαιοι πάντες γίνοιντο."

73 *Ξενοφῶντος ἐν δ'* (6, 10) *ἀπομνημονευμάτων.*

Ἀνδρίαν δέ, ὦ Εὐθύδημε, ἆρα τῶν καλῶν νομί-

ζεις εἶναι; Κάλλιστον μὲν οὖν ἔγωγ', ἔφη. Χρήσιμον ἄρα οὐ πρὸς τὰ ἐλάχιστα νομίζεις τὴν ἀνδρίαν; Μὰ Δί', ἔφη, πρὸς τὰ μέγιστα μὲν οὖν. Ἆρα οὖν δοκεῖ σοι πρὸς τὰ δεινά τε καὶ ἐπικίνδυνα χρήσιμον εἶναι τὸ ἀγνοεῖν αὐτά; Ἥκιστα γάρ, ἔφη. Οἱ ἄρα μὴ φοβούμενοι τὰ τοιαῦτα διὰ τὸ μὴ εἰδέναι τί ἐστιν, οὐκ ἀνδρεῖοι εἰσίν; Νὴ Δί', ἔφη. Πολλοὶ γὰρ ἂν οὕτω γε τῶν τε μαινομένων καὶ τῶν δειλῶν ἀνδρεῖοι εἶεν. Τί δέ, οἱ καὶ τὰ μὴ δεινὰ δεδοικότες; Ἔτι γε, νὴ Δία, ἧττον, ἔφη. Ἆρ' οὖν τοὺς μὲν ἀγαθοὺς πρὸς τὰ δεινὰ καὶ ἐπικίνδυνα ὄντας ἀνδρείους ἡγῇ εἶναι, τοὺς δὲ κακοὺς δειλούς; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Ἀγαθοὺς δὲ πρὸς τὰ τοιαῦτα νομίζεις ἄλλους τινὰς ἢ τοὺς δυναμένους αὐτοῖς καλῶς χρῆσθαι; Οὔκ, ἀλλὰ τούτους, ἔφη. Κακοὺς δὲ ἄρα τοὺς οἵους τούτοις κακῶς χρῆσθαι; Τίνας γὰρ ἄλλους; ἔφη. Ἆρ' οὖν ἕκαστοι χρῶνται, ὡς οἴονται δεῖν; Πῶς γὰρ ἄλλως; ἔφη. Ἆρ' οὖν οἱ μὴ δυνάμενοι καλῶς χρῆσθαι ἴσασιν ὡς δεῖ χρῆσθαι; Οὐ δή που γε, ἔφη. Οἱ ἄρα εἰδότες ὡς δεῖ χρῆσθαι, οὗτοι καὶ δύνανται; Μόνοι γ', ἔφη. Τί δαί, οἱ μὴ διημαρτηκότες, ἆρα κακῶς χρῶνται τοῖς τοιούτοις; Οὐκ οἴομαι, ἔφη. Οἱ ἄρα κακῶς χρώμενοι διημαρτήκασιν; Εἰκός γ', ἔφη. Οἱ μὲν ἄρα ἐπιστάμενοι τοῖς δεινοῖς τε καὶ ἐπικινδύνοις καλῶς χρῆσθαι ἀνδρεῖοί εἰσιν· οἱ δὲ διαμαρτάνοντες τούτων δειλοί; Ἔμοιγε δοκοῦσιν, ἔφη.

74 Ξενοφῶντος ἀπομνημονευμάτων (III, 9, 1).

Πάλιν ἐρωτώμενος, ἡ ἀνδρία πότερον διδακτὸν ἢ φυσικόν· οἶμαι μέν, ἔφη, ὥσπερ σῶμα σώματος ἰσχυρότερον πρὸς τοὺς πόνους φύεται, οὕτω καὶ ψυχὴν ψυχῆς ἐρρωμενεστέραν πρὸς τὰ δεινὰ φύσει γί-

γνεσθαι· ὁρῶ δ' ἐν τοῖς αὐτοῖς νόμοις τε καὶ ἔθεσι τρεφομένους πολὺ διαφέροντας ἀλλήλων τόλμῃ. νομίζω μέντοι πᾶσαν φύσιν μαθήσει καὶ μελέτῃ πρὸς ἀνδρίαν αὔξεσθαι· δῆλον μὲν γὰρ ὅτι Σκύθαι καὶ Θρᾷκες οὐκ ἂν τολμήσειαν ἀσπίδας καὶ δόρατα λαβόντες Λακεδαιμονίοις διαμάχεσθαι· φανερὸν δ' ὅτι Λακεδαιμόνιοι οὔτ' ἂν Θρᾳξὶ πέλταις καὶ ἀκοντίοις οὔτε Σκύθαις τόξοις ἐθέλοιεν διαγωνίζεσθαι. ὁρῶ δ' ἔγωγε καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων πάντων ὁμοίως καὶ φύσει διαφέροντας ἀλλήλων τοὺς ἀνθρώπους, καὶ ἐπιμελείᾳ πολὺ ἐπιδιδόντας. ἐκ δὲ τούτων δῆλόν ἐστιν ὅτι πάντας χρὴ καὶ τοὺς εὐφυεστέρους καὶ τοὺς ἀμβλυτέρους φύσιν, ἐν οἷς ἂν ἀξιόλογοι βούλωνται γενέσθαι, ταῦτα καὶ μανθάνειν καὶ μελετᾶν.

75 Ἐκ τῆς Ξενοφῶντος Σωκράτους ἀπολογίας (c. 28).

Παρὼν δέ τις Ἀπολλόδωρος, ἐπιθυμητὴς μὲν ὢν ἰσχυρῶς αὐτοῦ ἄλλως δ' εὐήθης, εἶπεν· Ἀλλὰ τοῦτο ἔγωγε, ὦ Σώκρατες, χαλεπώτατα φέρω ὅτι ὁρῶ σε ἀδίκως ἀποθνήσκοντα. τὸν δὲ λέγεται καταψήσαντα αὐτοῦ τὴν κεφαλὴν εἰπεῖν· σὺ δέ, ὦ φίλτατε Ἀπολλόδωρε, μᾶλλον ἂν ἐβούλου με ὁρᾶν δικαίως ἀποθνήσκοντα; καὶ ἅμα ἐπιγελάσαι. λέγεται δὲ καὶ Ἄνυτον παριόντα ἰδὼν εἰπεῖν· ἀλλ' ὁ μὲν ἀνὴρ ὅδε γε κυδρός, ὡς μέγα τι καὶ καλὸν διαπεπραγμένος, εἰ ἀπέκτονέ με οὕτως, καὶ τῶν μεγίστων αὐτὸν ὑπὸ τῆς πόλεως ὁρῶν ἀξιούμενον, οὐκέτι χρῆναι τὸν υἱὸν περὶ βύρσας παιδεύειν. ὦ μοχθηρὸς οὗτος, ἔφη, ὃς οὐκ ἔοικεν εἰδέναι, ὅτι ὁπότερος ἡμῶν καὶ συμφορώτερος καὶ καλλίων εἰς τὸν ἀεὶ χρόνον διαπέπλασται. χείρων δέ ἐστιν ὁ νικῶν.

76 *Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας* (28 d).

Οὕτω γὰρ ἔχει, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, τῇ ἀληθείᾳ· οὗ ἄν τις αὑτὸν τάξῃ, ἡγησάμενος βέλτιστον εἶναι, ἢ ὑπὸ ἄρχοντος ταχθῇ, ἐνταῦθα δεῖ, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, μένοντα κινδυνεύειν μηδὲν ὑπολογιζόμενον μήτε θάνατον μήτε ἄλλο τι μηδὲν πρὸ τοῦ αἰσχροῦ. ἐγὼ οὖν δεινὰ ἂν εἴην εἰργασμένος, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, εἰ ὅτε μέν με οἱ ἄρχοντες ἔταττον, οὓς ὑμεῖς εἵλεσθε ἄρχειν μου, καὶ ἐν Ποτιδαίᾳ καὶ ἐν Ἀμφιπόλει καὶ ἐπὶ Δηλίῳ, τότε μὲν οὗ ἐκεῖνοι ἔταττον, ἔμενον ὥσπερ καὶ ἄλλος τις καὶ ἐκινδύνευον ἀποθανεῖν· τοῦ δὲ θεοῦ τάττοντος, ὡς ἐγὼ ᾠήθην τε καὶ ὑπέλαβον, φιλοσοφοῦντά με δεῖν ζῆν καὶ ἐξετάζοντα ἐμαυτὸν καὶ τοὺς ἄλλους, ἐνταῦθα δὲ φοβηθεὶς ἢ θάνατον ἢ ἄλλο ὁτιοῦν πρᾶγμα, λείποιμι τὴν τάξιν. δεινὸν μένταν εἴη, καὶ ὡς ἀληθῶς τότ' ἄν με δικαίως εἰσάγοι τις εἰς δικαστήριον, ὅτι οὐ νομίζω θεοὺς εἶναι, ἀπειθῶν τῇ μαντείᾳ καὶ δεδιὼς θάνατον καὶ οἰόμενος σοφὸς εἶναι οὐκ ὤν. τὸ γάρ τοι θάνατον δεδιέναι, ὦ ἄνδρες, οὐδὲν ἄλλο ἐστὶν ἢ δοκεῖν σοφὸν εἶναι μὴ ὄντα· δοκεῖν γὰρ εἰδέναι ἐστὶν ἃ οὐκ οἶδεν. οἶδεν μὲν γὰρ οὐδεὶς τὸν θάνατον, οὐδ' εἰ τυγχάνει τῷ ἀνθρώπῳ μέγιστον ὂν τῶν ἀγαθῶν· δεδίασι δ' ὡς εὖ εἰδότες ὅτι μέγιστον τῶν κακῶν ἐστι· καὶ τοῦτο πῶς οὐκ ἀμαθία ἐστὶν αὐτὴ ἡ ἐπονείδιστος, ἡ τοῦ οἴεσθαι εἰδέναι ἃ οὐκ οἶδε;

77 *Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας* (38 e).

Οὔτε γὰρ ἐν δίκῃ οὔτ' ἐν πολέμῳ οὔτε ἐμὲ οὔτε ἄλλων οὐδένα δεῖ τοῦτο μηχανᾶσθαι, ὅπως ἀποφεύ-

ξεται πᾶν ποιῶν θάνατον. καὶ γὰρ ἐν ταῖς μάχαις πολλάκις δῆλον γίγνεται ὅτι τό γε ἀποθανεῖν ῥᾷον ἄν τις ἐκφύγοι τά θ' ὅπλα ἀφεὶς καὶ ἐφ' ἱκετείαν τραπεὶς τῶν διωκόντων· καὶ ἄλλαι πολλαὶ μηχαναί εἰσιν ἐν ἑκάστοις τοῖς κινδύνοις ὥστε διαφεύγειν θάνατον, ἐάν τις τολμᾷ πᾶν ποιεῖν καὶ λέγειν. ἀλλὰ μὴ οὐ τοῦτ' ᾖ χαλεπόν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, θάνατον ἐκφυγεῖν· ἀλλὰ πολὺ χαλεπώτερον πονηρίαν· θᾶττον γὰρ θανάτου θεῖ.

78 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Φαίδωνος (84 d).

Βαβαί, ὦ Σιμμία, ἦπου χαλεπῶς τοὺς ἄλλους αὐτοὺς πείσαιμι ὡς οὐ συμφορὰν ἡγοῦμαι τὴν παροῦσαν τύχην, ὅτε γε μηδ' ὑμᾶς δύναμαι πείθειν· ἀλλὰ φοβεῖσθε μὴ δυσκολώτερον νῦν διάκειμαι ἢ ἐν τῷ πρόσθεν βίῳ.

79 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Πρωταγόρα (350 e).

Ἐγὼ δὲ οὐδαμοῦ οὐδ' ἐνταῦθα ὁμολογῶ τοὺς δυνατοὺς ἰσχυροὺς εἶναι, τοὺς μέντοι ἰσχυροὺς δυνατούς· οὐ γὰρ ταυτὸν εἶναι δύναμίν τε καὶ ἰσχύν, ἀλλὰ τὸ μὲν καὶ ἀπὸ ἐπιστήμης γίγνεσθαι, τὴν δύναμιν, καὶ ἀπὸ μανίας γε καὶ ἀπὸ θυμοῦ, ἰσχὺν δὲ ἀπὸ φύσεως καὶ εὐτροφίας τῶν σωμάτων. οὕτω δὲ κἀκεῖ οὐ ταυτὸν εἶναι θάρσος τε καὶ ἀνδρίαν· ὥστε συμβαίνειν τοὺς μὲν ἀνδρείους θαρραλέους εἶναι, μὴ μέντοι τούς γε θαρραλέους ἀνδρείους πάντας. θάρσος μὲν γὰρ καὶ ἀπὸ τέχνης γίγνεται ἀνθρώποις καὶ ἀπὸ θυμοῦ τε καὶ ἀπὸ μανίας, ὥσπερ ἡ δύναμις· ἀνδρία δὲ ἀπὸ φύσεως καὶ εὐτροφίας τῶν ψυχῶν γίγνεται.

80 Δημοκρίτου.

Σοφίη ἄθαμβος ἀξίη πάντων τιμιωτάτη οὖσα.

81 *Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας* (c. 25).

Ὥστε θαυμαστὸν ἔμοιγε δοκεῖ εἶναι, ὅπως ποτὲ ὑμῖν ἐφάνη τοῦ θανάτου ἔργον ἄξιον ἐμοὶ εἰργασμένον. ἀλλ' οὐδὲ μέντοι ὅτι ἀδίκως ἀποθνήσκω, διὰ τοῦτο μεῖον φρονητέον· οὐ γὰρ ἐμοί, ἀλλὰ τοῖς καταγνοῦσι τοῦτο αἰσχρόν ἐστι. παραμυθεῖται δ' ἔτι με καὶ Παλαμήδης ὁ παραπλησίως ἐμοὶ τελευτήσας· ἔτι γὰρ καὶ νῦν πολὺ καλλίους ὕμνους παρέχεται Ὀδυσσέως τοῦ ἀδίκως ἀποκτείναντος αὐτόν. οἶδ' ὅτι καὶ ἐμοὶ μαρτυρήσετε ὑπό τε τοῦ ἐπιόντος καὶ ὑπὸ τοῦ παρεληλυθότος χρόνου, ὅτι ἠδίκησα μὲν οὐδένα πώποτε οὐδὲ πονηρότερον ἐποίησα, εὐεργέτουν δὲ τοὺς ἐμοὶ διαλεγομένους προῖκα διδάσκων ὅ τι ἐδυνάμην ἀγαθόν. εἰπὼν δὲ ταῦτα μάλα ὁμολογουμένως δὴ τοῖς εἰρημένοις ἀπῄει καὶ ὄμμασι καὶ σχήματι καὶ βαδίσματι φαιδρός. ὡς δὲ ᾔσθετο ἄρα τοὺς παρεπομένους δακρύοντας, τί τοῦτο; εἰπεῖν αὐτόν, ἢ ἄρτι δακρύετε; οὐ γὰρ πάλαι ἴστε ὅτι ἐξότου περ ἐγενόμην κατεψηφισμένος ἦν μου ὑπὸ τῆς φύσεως ὁ θάνατος; ἀλλὰ μέντοι, εἰ μὲν ἀγαθῶν ἐπιρρεόντων προαπόλλυμαι, δηλονότι ἐμοὶ καὶ τοῖς ἐμοῖς εὔνοις λυπητέον· εἰ δὲ χαλεπῶν προσδοκωμένων καταλύω τὸν βίον, ἐγὼ μὲν οἶμαι ὡς εὐπραγοῦντος ἐμοῦ πᾶσιν ὑμῖν εὐθυμητέον εἶναι.

ΠΕΡΙ ΔΕΙΛΙΑΣ. Η.

1 *Εὐριπίδου Βελλεροφόντῃ.*

Δόλοι δὲ καὶ σκοτεινὰ μηχανήματα
χρείας ἀνάνδρου φάρμαχ' εὕρηται βροτοῖς.

2 Σοφοκλέους Ἀκρισίῳ. Χορός.

Βοᾷ τις, ὦ·
ἀκούετ'; ἢ μάτην ἀλυκτῶ;
ἅπαντα γάρ τοι τῷ φοβουμένῳ ψοφεῖ.

3 Εὐριπίδου Μελεάγρῳ.

Δειλοὶ γὰρ ἄνδρες οὐκ ἔχουσιν ἐν μάχῃ
ἀριθμόν, ἀλλ' ἄπεισι κἂν παρῶσ' ὅμως.

4 Ὁμήρου Ἰλιάδος μ' (244).

Τίπτε σὺ δείδοικας πόλεμον καὶ δηιοτῆτα;
εἴπερ γάρ τ' ἄλλοι γε περικτεινώμεθα πάντες
νηυσὶν ἐπ' Ἀργείων, σοὶ δ' οὐ δέος ἔστ' ἀπολέσθαι.
οὐ γάρ τοι κραδίη μενεδήιος οὐδὲ μαχήμων.

5 Σοφοκλέους Φρυγῶν.

Τοὺς εὐγενεῖς γὰρ κἀγαθοὺς ὦ παῖ φιλεῖ
Ἄρης ἐναίρειν· οἱ δὲ τῇ γλώσσῃ θρασεῖς,
φεύγοντες ἄτας, ἐκτός εἰσι τῶν κακῶν.
Ἄρης γὰρ οὐδὲν τῶν κακῶν ληίζεται.

6 Εὐριπίδου Ἰφιγενείᾳ (Taur. 484).

Οὔ τοι νομίζω σοφόν, ὃς ἂν μέλλων θανεῖν
οἴκτῳ τὸ δεῖμα τοὐλέθρου νικᾶν θέλῃ.

7 Τοῦ αὐτοῦ Φρίξῳ.

Ἀνὴρ δ' ὃς εἶναι φής, ἀνδρὸς οὐκ ἄξιον
δειλὸν κεκλῆσθαι καὶ νοσεῖν αἰσχρὰν νόσον.

8 Μενάνδρου Ἀδελφοῖς.

Τί πολλὰ τηρεῖν πολλὰ δεῖ δεδοικότα;

9 Θεόγνιδος (1221).

Πολλὰ φέρειν εἴωθε λόγος θνητοῖσι βροτοῖσι
πταίσματα τῆς γνώμης, Κύρνε, ταρασσομένης.

10 Φιλήμων ἐν Ἐγχειριδίῳ.

Κακὴ μὲν ὄψις, ἒν δὲ δειλαῖαι φρένες.

11 *Σοφοκλέους.*

Οὐ τοῖς ἀθύμοις ἡ τύχη ξυλλαμβάνει.

12 *Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.*

Ὁ φόβος, ὅταν τις σώματος μέλλῃ πέρι
λέγειν καταστὰς εἰς ἀγῶν' ἐναντίον,
τό τε στόμ' εἰς ἔκπληξιν ἀνθρώπων ἄγει
τὸν νοῦν τ' ἀπείργει μὴ λέγειν ἃ βούλεται·
τῷ μὲν γὰρ ἔνι κίνδυνος, ὁ δ' ἀθῷος μένει.
ὅμως δ' ἀγῶνα τόνδε δεῖ μ' ὑπεκδραμεῖν·
ψυχὴν γὰρ ἆθλα τιθεμένην ἐμὴν ὁρῶ·

13 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*

Ὁ δ' ἡδὺς αἰὼν ἡ κακή τ' ἀνανδρία
οὔτ' οἶκον οὔτε πόλιν ἀνορθώσειεν ἄν.

14 *Ἀντισθένους.*

Ὅστις δὲ ἑτέρους δέδοικε, δοῦλος ὢν λέληθεν ἑαυτόν.

15 *Διογένους.*

Πάντα μὲν οὖν τὰ δεινὰ πέφυκε μᾶλλον ἐκπλήττειν τοὺς προσδεχομένους ἢ λυπεῖν τοὺς πειραθέντας. ὁ δὲ φόβος οὕτω χαλεπός ἐστιν ὥστε πολλοὶ ἤδη προέλαβον τὸ ἔργον, οἱ μὲν ἐν νηὶ χειμαζόμενοι οὐ περιμείναντες καταδῦναι τὴν ναῦν, ἀλλὰ πρότερον αὑτοὺς ἀποσφάξαντες. . . .

16 *Ὑπερείδου.*

Ὑπερείδης ὁ ῥήτωρ ἔφησε τὴν ἀγωνίαν τοῦ λέγειν πέδην εἶναι.

17 *Θουκυδίδου ἱστορίας β′* (89) *δημηγορίας Φορμίωνος.*

Ἡσσημένων δὲ ἀνδρῶν οὐκ ἐθέλουσιν αἱ γνῶμαι πρὸς τοὺς αὐτοὺς κινδύνους ὅμοιαι εἶναι.

18 Ἀντιφῶντος.

Νόσος δειλοῖσιν ἑορτή· οὐ γὰρ ἐκπορεύονται ἐπὶ πρᾶξιν.

19 Ἱεροκλέους ἐκ τοῦ περὶ δικαιοσύνης.

Ἴδωμεν γὰρ εἰ τοὺς δειλοὺς οἷόν τε δικαίους εἶναι· τοὺς γὰρ ἐναντίως ἔχοντας τούτοις, τοὺς θρασεῖς, ἀδίκους ὄντας εὑρίσκομεν διὰ τὸ πρὸς βίαν τὰ πολλὰ ποιεῖν. δειλία τοίνυν ἐστὶ διαφθορὰ δόξης ἐννόμου δεινῶν τε πέρι καὶ μή· ἢ ἄγνοια δεινῶν τε καὶ οὐ δεινῶν καὶ οὐδετέρων. πῶς ἂν οὖν οἱ δόξαις διεφθαρμέναις καὶ παρανόμοις συζῶντες εἶεν ἂν δίκαιοι; οὐ γὰρ δὴ εἰκάζοιεν ἂν περὶ ὅτου δήποτε καλῶς, μὴ συγχωροῦντος αὐτοῖς τοῦ περὶ τὴν ψυχὴν δέους εἰς ἥντινα οὖν ζήτησιν προκύπτειν.

20 Δημητρίου.

Αὐτίκα γὰρ εἰ τῷ πολεμοῦντι καὶ παρατεταγμένῳ παρασταῖεν ἥ τε ἀνδρία καὶ ἡ δειλία, πόσον ἂν οἴεσθε διαφόρους εἰπεῖν λόγους; ἆρ' οὐχ ἡ μὲν ἀνδρία μένειν κελεύοι καὶ τὴν τάξιν διαφυλάττειν; ἀλλὰ βαλοῦσιν· ὑπόμενε. ἀλλὰ τρωθήσομαι· καρτέρει. ἀλλ' ἀποθανοῦμαι· ἀπόθανε μᾶλλον ἢ λίπῃς τὴν τάξιν. ἀτενὴς οὗτος ὁ λόγος καὶ σκληρός. ἀλλ' ὁ τῆς δειλίας νὴ Δία φιλάνθρωπος καὶ μαλακός· ὑπάγειν γὰρ δῆτα κελεύει τὸν φοβούμενον. ἀλλ' ἡ ἀσπὶς ἐνοχλεῖ· ῥῖψον. ἀλλὰ καὶ ὁ θώραξ· παράλυσον. παντὶ δήπου πραΰτερα ταῦτ' ἐκείνων. ὁμοίως δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων. μὴ λάβῃς, φησὶν ἡ ἐγκράτεια, ὅθεν οὐ δεῖ· μὴ φάγῃς, μὴ πίῃς, ἀνέχου, καρτέρει· τὸ τελευταῖον, ἀπόθανε πρότερον ἢ πράξῃς ὅπερ οὐ δεῖ. ἡ δ' ἀκρασία, πῖθι ὅτε βούλει, φάγε ὅ τι ἂν ἥδιστα φάγοις· ἡ τοῦ γείτονος ἀρέσκει σοι γυνή; πέραινε· χρημάτων

ἀπορεῖς; δάνεισαι· δανεισάμενος ἀδυναμεῖς; μὴ ἀποδῷς· οὐ πιστεύουσιν ἔτι δανείζειν; ἅρπασον. πολύ γε κἀνταῦθα τὸ μεταξύ. ἀλλὰ τίς οὐκ οἶδεν ὅτι ἡ μὲν τοιαύτη χάρις ὀλέθριος γίνεται τοῖς προσδεξαμένοις, ἡ δ' ἐκ τῶν ἐναντίων σωτήριος;

21 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος* (67 e).

Οἱ ὀρθῶς φιλοσοφοῦντες ἀποθνήσκειν μελετῶσι, καὶ τεθνάναι ἥκιστα αὐτοῖς ἀνθρώπων φοβερόν.

22 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος* (68 b).

Οὐκ οὖν ἱκανόν σοι τεκμήριον, ἔφη, τοῦτο ἀνδρός, ὃν ἂν ἴδῃς ἀγανακτοῦντα μέλλοντα ἀποθανεῖσθαι, ὅτι οὐκ ἄρ' ἦν φιλόσοφος ἀλλά τις φιλοσώματος; αὐτὸς δέ που οὗτος τυγχάνει ὢν καὶ φιλοχρήματος καὶ φιλότιμος, ἤτοι τὰ ἕτερα τούτων ἢ ἀμφότερα. πάνυ ἔχει, ἔφη, οὕτως ὡς λέγεις. ἆρ' οὖν, ἔφη, ὦ Σιμμία, οὐ καὶ ἡ ὀνομαζομένη ἀνδρία τοῖς οὕτω διακειμένοις μάλιστα προσήκει; πάντως δή που, ἔφη. οὐκ οὖν καὶ ἡ σωφροσύνη, ἣν καὶ οἱ πολλοὶ ὀνομάζουσι σωφροσύνην, τὸ περὶ τὰς ἐπιθυμίας μὴ ἐπτοῆσθαι, ἀλλ' ὀλιγώρως ἔχειν καὶ κοσμίως, ἆρ' οὐ τούτοις μόνοις προσήκει τοῖς μάλιστα τοῦ σώματος ὀλιγωροῦσί τε καὶ ἐν φιλοσοφίᾳ ζῶσιν; ἀνάγκη, ἔφη. εἰ γὰρ ἐθέλεις, ἦ δ' ὅς, ἐννοῆσαι τήν γε τῶν ἄλλων ἀνδρίαν τε καὶ σωφροσύνην, δόξει σοι εἶναι ἄτοπος. πῶς δή, ὦ Σώκρατες; Οἶσθα, ἦ δ' ὅς, ὅτι τὸν θάνατον ἡγοῦνται πάντες οἱ ἄλλοι τῶν μεγάλων κακῶν εἶναι; καὶ μάλ', ἔφη. οὐκ οὖν φόβῳ μειζόνων κακῶν ὑπομένουσιν αὐτὸν οἱ ἀνδρεῖοι τὸν θάνατον, ὅταν ὑπομένωσιν; ἔστι ταῦτα. τῷ δεδιέναι ἄρα καὶ δέει ἀνδρεῖοί εἰσι πάντες πλὴν οἱ φιλόσοφοι· καίτοι ἄλογόν γε δέει τινὰ καὶ δειλίᾳ ἀνδρεῖον εἶναι. πάνυ

μὲν οὖν. τί δέ, οἱ κόσμιοι αὐτῶν οὐ ταυτὸ τοῦτο πεπόνθασιν, ἀκολασίᾳ τινὶ σώφρονές εἰσι; καίτοι φαμέν γε ἀδύνατον εἶναι, ἀλλ' ὅμως αὐτοῖς συμβαίνει τούτῳ ὅμοιον τὸ πάθος, τὸ περὶ ταύτην τὴν εὐήθη σωφροσύνην. φοβούμενοι γὰρ ἑτέρων ἡδονῶν στερηθῆναι καὶ ἐπιθυμοῦντες ἐκείνων, ἄλλων ἀπέχονται, ὑπ' ἄλλων κρατούμενοι. καίτοι καλοῦσί γε ἀκολασίαν τὸ ὑπὸ τῶν ἡδονῶν ἄρχεσθαι· ἀλλ' ὅμως συμβαίνει αὐτοῖς κρατουμένοις ὑφ' ἡδονῶν κρατεῖν ἄλλων ἡδονῶν. τοῦτο δ' ὅμοιόν ἐστιν, ὃ νῦν δὴ ἐλέγετο, τὸ τρόπον τινὰ δι' ἀκολασίαν αὐτοὺς σεσωφρονίσθαι. ἔοικε γάρ. ὦ μακάριε Σιμμία, μὴ γὰρ οὐχ αὕτη ᾖ ἡ ὀρθὴ πρὸς ἀρετήν, ἡδονὰς πρὸς ἡδονὰς καὶ λύπας πρὸς λύπας καὶ φόβον πρὸς φόβον καταλλάττεσθαι, μείζω πρὸς ἐλάττω ὥσπερ νομίσματα· ἀλλ' ᾖ ἐκεῖνο μόνον τὸ νόμισμα ὀρθόν, ἀντὶ οὗ δεῖ ταῦτα πάντα καταλλάττεσθαι, φρόνησις, καὶ τούτου μὲν πάντα καὶ μετὰ τούτου ὠνούμενά τε καὶ πιπρασκόμενα τῷ ὄντι ᾖ, καὶ ἀνδρία καὶ σωφροσύνη καὶ ξυλλήβδην ἀληθὴς ἀρετὴ μετὰ φρονήσεως, καὶ προσγινομένων καὶ ἀπογινομένων καὶ ἡδονῶν καὶ φόβων καὶ τῶν ἄλλων πάντων τῶν τοιούτων· χωριζόμενα δὲ φρονήσεως καὶ ἀλλαττόμενα ἀντὶ ἀλλήλων, μὴ σκιαγραφία τις ᾖ τοιαύτη ἀρετὴ καὶ τῷ ὄντι ἀνδραποδώδης τε καὶ οὐδὲν ὑγιὲς οὐδ' ἀληθὲς ἔχῃ· τὸ δ' ἀληθὲς τῷ ὄντι ᾖ κάθαρσις τῶν τοιούτων πάντων, καὶ ἡ σωφροσύνη καὶ ἡ δικαιοσύνη καὶ ἡ ἀνδρία καὶ ἔτι αὐτὴ ἡ φρόνησις μὴ καθαρμός τις ᾖ· ὡς κινδυνεύουσι καὶ οἱ τὰς τελετὰς ἡμῖν οὗτοι καταστήσαντες οὐ φαῦλοι εἶναι, ἀλλὰ τῷ ὄντι πάλαι αἰνίττεσθαι, ὅτι ὃς ἂν ἀμύητος καὶ ἀτέλεστος εἰς ᾅδου ἀφίκηται, ἐν βορβόρῳ κείσεται, ὁ δὲ κεκαθαρμένος τε καὶ τετε-

λεσμένος ἐκεῖσε ἀφικόμενος μετὰ θεῶν οἰκήσεται. εἰσὶ γὰρ δή, ὥς φασιν οἱ περὶ τὰς τελετάς, ναρθηκοφόροι μὲν πολλοί, Βάκχοι δέ τε παῦροι· οὗτοι δ' εἰσὶ κατὰ τὴν ἐμὴν δόξαν οὐκ ἄλλοι ἢ οἱ πεφιλοσοφηκότες ὀρθῶς.

ΠΕΡΙ ΔΙΚΑΙΟΣΥΝΗΣ. Θ.

4 Εὐριπίδου Ἀλεάδαι.
Τοῖς γὰρ δικαίοις ἀντέχειν οὐ ῥᾴδιον.

5 Εὐριπίδου Ἰνοῦς.
Κέκτησο δ' ὀρθῶς [ἂν ἔχῃς] ἄνευ ψόγου
καὶ μικρὰ σώζου τῇ δίκῃ ξυνοῦσ' ἀεί.

6 Εὐριπίδου Ἑκάβης (844).
Ἐσθλοῦ γὰρ ἀνδρὸς τῇ δίκῃ θ' ὑπηρετεῖν
καὶ τοὺς κακοὺς δρᾶν πανταχοῦ κακῶς ἀεί.

7 Σοφοκλέους Αἴαντι (1334).
Μηδ' ἡ βία σε μηδαμῶς νικησάτω
τοσόνδε μισεῖν ὥστε τὴν δίκην πατεῖν.

---

1 Εἰς δίκαιον, γνῶμαι μονόστιχοι.
Ἀνδρὸς δικαίου καρπὸς οὐκ ἀπόλλυται.
βάδιζε τὴν εὐθεῖαν, ἣν δίκαιος ᾖς.
βίου δικαίου γίγνεται τέλος καλόν.
δίκαιος ἴσθ', ἵνα καὶ δικαίων δὴ τύχῃς.
δίκαιος εἶναι μᾶλλον ἢ χρηστὸς θέλε.
δίκαια δράσας συμμάχου τεύξῃ θεοῦ.
κρίνειν δίκαιον, μὴ τὸ συμφέρον, θέλε.
πρὸς εὖ λέγοντας οὐδὲν ἀντειπεῖν ἔχω.
τρόπος δίκαιος κτῆμα τιμιώτατον.

2 Ὄμμα δίκης καθορᾷ πάντα τὰ γιγνόμενα.

3 Δίκη γὰρ οὐκ ἔνεστ' ἐν ὀφθαλμοῖς βροτῶν.

8 *Εὐριπίδου Θησεῖ.*

Κρεῖσσον δὲ πλούτου καὶ πολυχρύσου χλιδῆς
ἀνδρῶν δικαίων κἀγαθῶν παρουσία.

9 *Μενάνδρου.*

Δίκαιος ἂν ᾖς, τῷ τρόπῳ χρήσῃ νόμῳ.
Χρηστοῦ πρὸς ἀνδρὸς μηδὲν ἐννοεῖν κακόν.
Δίκαιος ἀδικεῖν οὐκ ἐπίσταται τρόπος.

10 *Μενάνδρου.*

Τὸ μηδὲν ἀδικεῖν πᾶσιν ἀνθρώποις πρέπει.

11 *Μενάνδρου Δεισιδαίμονι.*

Οὐ δεῖ γὰρ ἀδικεῖν τοὺς ἱκέτας, ἄλλως τε καὶ
ὅταν μετ' εὐνοίας τι, μὴ πονηρίᾳ
πταίσωσιν. αἰσχρὸν τοῦτο τἄρ' ἐστιν πάνυ.

12 *Μενάνδρου.*

Ἐν παντὶ δεῖ καιρῷ τὸ δίκαιον ἐπικρατεῖν.

13 *Εὐριπίδου Παλαμήδει.*

Εἷς τοι δίκαιος μυρίων οὐκ ἐνδίκων
κρατεῖ, τὸ θεῖον τὴν δίκην τε συλλαβών.

14 *Φιλωνίδου.*

Οὐκ ἔστιν οὐδεὶς δειλὸς ὁ δεδοικὼς νόμον·
πρὸς τοὺς πολεμίους δ' ἐστὶν ἀνδρίας κρίσις.
Ὑπὸ τοῦ δικαίου δ' ἐστὶν ἡττᾶσθαι καλόν.

15 *Εὐριπίδου.*

Φεῦ φεῦ. τὸ νικᾶν τἄνδιχ' ὡς καλὸν γέρας,
τὰ μὴ δίκαια δ' ὡς ἁπανταχοῦ κακόν.
καὶ γλῶσσα φλαύρα, καὶ φθόνος τοῦ μὴ φθονεῖν
ὅσῳ κάκιον μὴ καλῶς ὠγκωμένοις.

16 *Ἀντιφάνους.*

Ὁ μηδὲν ἀδικῶν οὐδενὸς δεῖται νόμου.

17 *Μενάνδρου Καρχηδονίῳ.*

Τὸ καλῶς ἔχον που κρεῖττόν ἐστι καὶ νόμου.

18 *Μενάνδρου Κιθαριστῇ.*

Εἰ τοὺς ἀδικηθέντας, πάτερ, φευξούμεθα,
τίσιν ἂν βοηθήσοιμεν ἄλλοις ῥᾳδίως;

19 *Ἐν ταυτῷ.*

Τὸ μηδὲν ἀδικεῖν ἐκμαθεῖν γάρ, ὦ Λάχης,
ἀστεῖον ἐπιτήδευμα κρίνω τῷ βίῳ.

20 *Μενάνδρου Τροφωνίῳ.*

Τὸ μηδὲν ἀδικεῖν καὶ φιλανθρώπους ποιεῖ.

21 *Φιλήμονος ἐν Παλαμήδει.*

Τοῦ γὰρ δικαίου κἂν βροτοῖσι καὶ θεοῖς
ἀθάνατος ἀεὶ δόξα διατελεῖ μόνου.

22 *Φιλήμονος.*

Ἀνὴρ δίκαιός ἐστιν οὐχ ὁ μὴ ἀδικῶν,
ἀλλ' ὅστις ἀδικεῖν δυνάμενος μὴ βούλεται,
οὐδ' ὃς τὰ μικρὰ λαμβάνειν ἀπέσχετο,
ἀλλ' ὃς τὰ μεγάλα καρτερεῖ μὴ λαμβάνων,
ἔχειν δυνάμενος καὶ κρατεῖν ἀζημίως.
οὐδ' ὅς γε ταῦτα πάντα διατηρεῖ μόνον,
ἀλλ' ὅστις ἄδολον γνησίαν τ' ἔχων φύσιν
εἶναι δίκαιος κοὐ δοκεῖν εἶναι θέλει.

23 *Αἰσχύλου.*

Ἀπάτης δικαίας οὐκ ἀποστατεῖ θεός.

24 *Ἱππάρχου* (Plat. Hipparch. 229 a).

Μνῆμα τόδ' Ἱππάρχου· στεῖχε δίκαια φρονῶν.

25 *Σόλωνος.*

Μνημοσύνης καὶ Ζηνὸς Ὀλυμπίου ἀγλαὰ τέκνα,
Μοῦσαι Πιερίδες, κλῦτέ μοι εὐχομένῳ.

ὄλβον μοι πρὸς θεῶν μακάρων δότε καὶ πρὸς ἁπάντων
  ἀνθρώπων αἰεὶ δόξαν ἔχειν ἀγαθήν.
εἶναι δὲ γλυκὺν ὧδε φίλοις, ἐχθροῖσι δὲ πικρόν·
  τοῖσι μὲν αἰδοῖον, τοῖσι δὲ δεινὸν ἰδεῖν.
χρήματα δ' ἱμείρω μὲν ἔχειν, ἀδίκως δὲ πεπᾶσθαι
  οὐκ ἐθέλω· πάντως ὕστερον ἦλθε δίκη.
πλοῦτον δ' ὃν μὲν δῶσι θεοί, παραγίγνεται ἀνδρὶ
  ἔμπεδος ἐκ νεάτου πυθμένος εἰς κορυφήν·
ὃν δ' ἄνδρες τιμῶσιν ὑφ' ὕβριος, οὐ κατὰ κόσμον
  ἔρχεται, ἀλλ' ἀδίκοις ἔργμασι πειθόμενος
οὐκ ἐθέλων ἕπεται, ταχέως δ' ἀναμίσγεται ἄτῃ.
  ἀρχὴ δ' ἐξ ὀλίγου γίγνεται, ὥστε πυρός,
φλαύρη μὲν τὸ πρῶτον, ἀνιηρὴ δὲ τελευτᾷ·
  οὐ γὰρ δὴν θνητοῖς ὕβριος ἔργα πέλει.
ἀλλὰ Ζεὺς πάντων ἐφορᾷ τέλος· ἐξαπίνης δέ,
  ὥστ' ἄνεμος νεφέλας αἶψα διεσκέδασεν
ἠρινός, ὃς πόντου πολυκύμονος ἀτρυγέτοιο
  πυθμένα κινήσας γῆν κατὰ πυροφόρον
δῃώσας καλὰ ἔργα, θεῶν ἕδος αἰπὺν ἱκάνει
  οὐρανόν, αἰθρίην δ' αὖτις ἔθηκεν ἰδεῖν,
λάμπει δ' ἠελίοιο μένος κατὰ πίονα γαῖαν
  καλόν, ἀτὰρ νεφέων οὐδὲν ἔτ' ἔστιν ἰδεῖν·
τοιαύτη Ζηνὸς πέλεται τίσις, οὐδ' ἐφ' ἑκάστῳ,
  ὥσπερ θνητὸς ἀνήρ, γίγνεται ὀξύχολος.
αἰεὶ δ' οὔ τι λέληθε διαμπερὲς ὅστις ἀλιτρὸν
  θυμὸν ἔχει, πάντως δ' ἐς τέλος ἐξεφάνη.
ἀλλ' ὁ μὲν αὐτίκ' ἔτισεν ὁ δ' ὕστερον, ἢν δὲ φύγωσιν
  αὐτοί, μηδὲ θεῶν μοῖρ' ἐπιοῦσα κίχῃ,
ἤλυθε πάντως, αὐτίκ' ἀναίτια ἔργα τίνουσιν
  ἢ παῖδες τούτων ἢ γένος ἐξοπίσω.
θνητοὶ δ' ὧδε νοεῦμεν, ὁμῶς ἀγαθός τε κακός τε,
  (ἧνδανεν ἣν αὐτὸς δόξαν ἕκαστος ἔχει,)

πρίν τι παθεῖν, τότε δ' αὖτις ὀδύρεται, ἄχρι δὲ τούτου
χάσκοντες κούφαις ἐλπίσι τερπόμεθα.
χὤστις μὲν νούσοισιν ὑπ' ἀργαλέῃσι πιεσθῇ,
ὡς ὑγιὴς ἔσται τοῦτο κατεφράσατο.
ἄλλος δειλὸς ἐών, ἀγαθὸς δοκεῖ ἔμμεναι ἀνήρ,
καὶ καλός, μορφὴν οὐ χαρίεσσαν ἔχων.
εἰ δέ τις ἀχρήμων, πενίης δέ μιν ἔργα βιᾶται,
κτήσασθαι πάντων χρήματα πολλὰ δοκεῖ.
σπεύδει δ' ἄλλοθεν ἄλλος· ὃ μὲν κατὰ πόντον ἀλᾶται,
ἐν νηυσὶν χρῄζων οἴκαδε κέρδος ἄγειν,
ἰχθυόεντ' ἀνέμοισι φορεύμενος ἀργαλέοισι,
φειδωλὴν ψυχῆς οὐδεμίην θέμενος.
ἄλλος γῆν τέμνων πολυδένδρεον, εἰς ἐνιαυτὸν
λατρεύει, τοῖσιν καμπύλ' ἄροτρα μέλει.
ἄλλος Ἀθηναίης τε καὶ Ἡφαίστου πολυτέχνεω
ἔργα δαεὶς χειροῖν ξυλλέγεται βίοτον.
ἄλλος Ὀλυμπιάδων Μουσέων πάρα δῶρα διδαχθείς,
ἱμερτῆς σοφίης μέτρον ἐπιστάμενος.
ἄλλον μάντιν ἔθηκεν ἄναξ ἑκάεργος Ἀπόλλων,
ἔγνω δ' ἀνδρὶ κακὸν τηλόθεν ἐρχόμενον,
ᾧ συνομαρτήσουσι θεοί· τὰ δὲ μόρσιμα πάντως
οὔτε τις οἰωνὸς ῥύσεται οὔθ' ἱερά.
ἄλλοι Παιῶνος πολυφαρμάκου ἔργον ἔχοντες,
ἰητροί, καὶ τοῖς οὐδὲν ἔπεστι τέλος.
πολλάκι δ' ἐξ ὀλίγης ὀδύνης μέγα γίγνεται ἄλγος,
κοὐκ ἄν τις λύσαιτ' ἤπια φάρμακα δούς.
τὸν δὲ κακαῖς νούσοισι κυκώμενον ἀργαλέαις τε
ἁψάμενος χειροῖν αἶψα τίθησ' ὑγιῆ.
μοῖρα δέ τοι θνητοῖσι κακὸν φέρει ἠδὲ καὶ ἐσθλόν,
δῶρα δ' ἄφυκτα θεῶν γίγνεται ἀθανάτων.
πᾶσι δέ τοι κίνδυνος ἐπ' ἔργμασιν, οὐδέ τις οἶδεν
ᾗ μέλλει σχήσειν χρήματος ἀρχομένου.

ἀλλ᾽ ὁ μὲν εὖ ἕρδειν πειρώμενος, οὐ προνοήσας,
  εἰς μεγάλην ἄτην καὶ χαλεπὴν ἔπεσεν.
τῷ δὲ καλῶς ἕρδοντι θεὸς περὶ πάντα δίδωσι
  συντυχίην ἀγαθήν, ἔκλυσιν ἀφροσύνης.
πλούτου δ᾽ οὐδὲν τέρμα πεφασμένον ἀνδράσι κεῖται.
  οἳ γὰρ νῦν ἡμέων πλεῖστον ἔχουσι βίον,
διπλασίως σπεύδουσι· τίς ἂν κορέσειεν ἅπαντας;
  κέρδεά τοι θνητοῖς ὤπασαν ἀθάνατοι·
ἄτη δ᾽ ἐξ αὐτῶν ἀναφαίνεται, ἣν ὁπόταν Ζεὺς
  πέμψῃ τισομένην, ἄλλοτ᾽ ἂν ἄλλος ἔχοι.

26 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ α΄ τῆς πολιτείας* (336 e).

Μὴ γὰρ δὴ οἴου, εἰ μὲν χρυσὸν ἐζητοῦμεν, οὐκ ἄν ποτε ἡμᾶς ἑκόντας εἶναι ὑποκατακλίνεσθαι ἀλλήλοις ἐν τῇ ζητήσει καὶ διαφθείρειν τὴν εὕρεσιν αὐτοῦ, δικαιοσύνην δὲ ζητοῦντας, πρᾶγμα πολλῷ χρυσίου τιμιώτερον, ἔπειθ᾽ οὕτως ἀνοήτως ὑπείκειν ἀλλήλοις καὶ οὐ σπουδάζειν ὅτι μάλιστα φανεῖται αὐτό.

27 *Ἀγησιλάου.*

Ἀνδρίας μὲν γὰρ οὐδὲν ὄφελος, μὴ παρούσης δικαιοσύνης· εἰ δὲ δίκαιοι πάντες γίνοιντο, μηδὲν ἀνδρίας δεήσεσθαι.

28 *Ἰσοκράτους κατὰ τῶν σοφιστῶν* (295 d).

Καὶ μηδεὶς οἰέσθω με λέγειν ὡς ἔστι δικαιοσύνη διδακτόν. ὅλως μὲν γὰρ οὐδεμίαν ἡγοῦμαι τοιαύτην τέχνην εἶναι, ἥ τις τοῖς κακῶς πεφυκόσι πρὸς αὐτὴν δικαιοσύνην ἂν ἐμποιήσειεν.

29 *Δημοσθένους.*

Ἄξιον τούτους ἐπαινεῖν τῶν ἀνθρώπων, οἳ μηδεμίαν ὠφελίαν προαιροῦνται τοῦ δικαίου. χρήματα μὲν γὰρ ἔστι κτήσασθαι, δόξαν δὲ χρημάτων οὐ ῥάδιον πρίασθαι.

30 *Πλάτωνος* (Menex. 246 e).

Πᾶσά τε ἐπιστήμη, χωριζομένη δικαιοσύνης καὶ τῆς ἄλλης ἀρετῆς, πανουργία ἀλλ' οὐ σοφία φαίνεται.

31 *Δημοκρίτου.*

Ἀγαθὸν οὐ τὸ μὴ ἀδικέειν ἀλλὰ τὸ μηδὲ ἐθέλειν.

32 *Δημοκρίτου.*

Μοῦνοι θεοφιλέες ὅσοις ἐχθρὸν τὸ ἀδικέειν.

33 *Πιττακοῦ.*

Πιττακὸς ἔφη "ἡδονὴ σὺν τῷ καλῷ δίκαιον."

34 *Πιττακὸς ἔφη "παρακαταθήκην λαβὼν δικαίως ἀπόδος."*

35 *Ἀριστείδου.*

Ἀριστείδης ὁ δίκαιος ἐρωτηθεὶς παρά τινος τί ἐστι τὸ δίκαιον "τὸ μὴ ἀλλοτρίων ἐπιθυμεῖν" ἔφη.

36 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πρωταγόρου* (331 b).

Ἐγὼ μὲν γὰρ αὐτὸς ὑπέρ γε ἐμαυτοῦ φαίην ἂν καὶ τὴν δικαιοσύνην ὅσιον εἶναι καὶ τὴν ὁσιότητα δίκαιον· καὶ ὑπὲρ σοῦ δέ, εἴ με ἐῴης, ταυτὰ ἂν αὐτὰ ἀποκρινοίμην, ὅτι ἤτοι ταυτόν γ' ἐστὶ δικαιότης ὁσιότητι ἢ ὅτι ὁμοιότατον, καὶ μάλιστα πάντων ἥ τε δικαιοσύνη οἷον ὁσιότης καὶ ἡ ὁσιότης οἷον δικαιοσύνη.

37 *Πυθαγόρου.*

Ξένος ἀνὴρ δίκαιος οὐ μόνον πολίτου ἀλλὰ καὶ συγγενοῦς διαφέρει.

38 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Ἀνατόλιον περὶ δικαιοσύνης.*

Ἐπ' αὐτὸ δὴ τὸ τῶν ὅλων ἀρετῶν τέλος καὶ τὴν συναγωγὴν αὐτῶν συμπασῶν, ἐν ᾗ δὴ πᾶσαι ἔνεισι

συλλήβδην κατὰ τὸν παλαιὸν λόγον, γένοιτο ἄν τις εἰς τὴν δικαιοσύνην ἀγόμενος.

39 Ἐν ταυτῷ.

Ἐν δὲ τῷ ἀνθρωπίνῳ βίῳ διανομὴ τῶν κατ' ἀξίαν ἔργων τε καὶ τιμῶν καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐπιβαλλόντων ἑκάστοις ὑφίστησι τὴν εἰς τὸν ἀνθρώπινον βίον τείνουσαν δικαιοσύνην. ἔργα τοίνυν τῆς δικαιοσύνης τὰ πρόσφορα καὶ ἐπιτηδεύματα εἴη ἄν, ὅσα κοινωνικὰ καὶ ἥμερα τυγχάνει καὶ εὐσύμβολα καὶ εὐσυνάλλακτα καὶ ὠφέλιμα, τῶν βλαβερῶν κωλυτικὰ διαπράξεων, τῶν δ' ἐναντίων τὴν ὅλην κατάστασιν εὐπρεπῆ παρασκευάζοντα.

40 Ἐπικτήτου.

Ὥσπερ ἀληθὴς ζυγὸς οὔτε πρὸς ἀληθοῦς εὐθύνεται ζυγοῦ οὔθ' ὑπὸ ψευδοῦς κρίνεται, οὕτω καὶ ὁ δίκαιος κριτὴς οὔθ' ὑπὸ δικαίων εὐθύνεται οὔτε παρ' ἀδίκοις δικάζεται.

41 Ὥσπερ τὸ εὐθὺ εὐθέος οὐ δεῖται, οὕτως οὐδὲ τὸ δίκαιον δικαίου.

42 Μὴ πρότερον ἑτέρῳ δικαστηρίῳ δικάσῃς, πρὶν αὐτὸς παρὰ τῇ δίκῃ κριθῇς.

43 Εἰ βούλει τὰς κρίσεις δικαίας ποιεῖσθαι, μηδένα τῶν δικαζομένων καὶ δικαιολογούντων ἐπιγίγνωσκε, ἀλλ' αὐτὴν τὴν δίκην.

44 Ἥκιστα πταίσεις ἐν ταῖς κρίσεσιν, ἐὰν αὐτὸς ἐν τῷ βίῳ ἄπταιστος διατελῇς.

45 Ἄμεινον δικαίως κρίνοντα πρὸς τοῦ καταδικασθέντος ἀδίκως μεμφθῆναι, ἢ ἀδίκως κρίναντα παρὰ τῇ φύσει δικαίως ψέγεσθαι.

46 Καθάπερ ἡ τὸν χρυσὸν δοκιμάζουσα λίθος οὐκέτι

καὶ αὐτὴ πρὸς τοῦ χρυσοῦ δοκιμάζεται, οὕτω καὶ ὁ τὸ κριτήριον ἔχων.

47 Αἰσχρὸν τὸν δικαστὴν πρὸς ἑτέρων δικάζεσθαι.

48 Καθάπερ ὀρθοῦ οὐδὲν ὀρθότερον, οὕτως οὐδὲ δικαίου οὐδὲν δικαιότερον.

49 Διογένους.

Ἡ τοίνυν δικαιοσύνη πολλὴν ἔχει ῥᾳστώνην τῇ ψυχῇ. τὸ γὰρ μηδένα μήτε φοβούμενον μήτε αἰσχυνόμενον ζῆν, ἡδονή τις ἐστὶν καὶ ἱκανότης τῷ βίῳ· ὁ δὲ τὴν δικαιοσύνην ἔχων ἐν τῇ ψυχῇ, οὐ μόνον τοῖς ἄλλοις ὠφέλιμός ἐστιν, ἀλλὰ πολὺ μάλιστα αὐτὸς αὑτῷ· οὐ γὰρ πειράσεται αὑτὸν ἀδικεῖν οὐδὲ καθ᾽ ἓν μέρος. οὐδὲ γὰρ λύπης αὑτῷ αἴτιός ἐστιν οὐδὲ νόσου· ἀλλὰ τὰ αἰσθητήρια τὰ τῆς φύσεως θεοὺς ὑπολαμβάνων εἶναι, δικαίως χρήσεται αὐτοῖς, οὐδὲν μὲν ὑπὲρ τὴν δύναμιν πράττων, φυλάττων δὲ τὰ μάλιστα καὶ ἡδονὰς καὶ ὠφελείας λαμβάνων διὰ τούτων. καὶ γὰρ ἀπὸ ἀκοῆς καὶ ἀπὸ ὁράσεως καὶ ἀπὸ τῆς τροφῆς καὶ ἀπὸ τῶν ἀφροδισίων ἡδοναὶ ἔσονται τῷ δικαίως ἑαυτῷ χρωμένῳ, τῷ δὲ μὴ δικαίως χρωμένῳ καὶ κίνδυνοι γίνονται περὶ τὰ πλείστου ἄξια καὶ ἀναγκαιότατα. ἢ οὐχ ἑώρακας τὴν ψυχὴν ταραττομένους καὶ νυκτὸς καὶ ἡμέρας καὶ εἰς τὴν θάλασσαν ἑαυτοὺς ῥιπτοῦντας εἰκῇ καὶ εἰς μάχαιραν;

50 Λυκούργου.

Ζηλωτὸν ἴσως ὁ πλοῦτος· τίμιον μέντοι καὶ θαυμαστὸν ἡ δικαιοσύνη.

51 Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν β′ (21).

Ὥσπερ γὰρ οἰκίας, οἶμαι, καὶ πλοίου καὶ τῶν ἄλλων τῶν τοιούτων τὰ κάτωθεν ἰσχυρότατα εἶναι δεῖ,

οὕτω καὶ τῶν πράξεων τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς ὑποθέσεις ἀληθεῖς καὶ δικαίας εἶναι προσήκει.

52 Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Ἐν Παιδαλίοις, Ἰνδικῷ ἔθνει, οὐχ ὁ θύων ἀλλ' ὁ συνετώτατος τῶν παρόντων κατάρχεται τῶν ἱερῶν. αἰτεῖται δ' ἀεὶ παρὰ τῶν θεῶν οὐδὲν ἄλλο πλὴν δικαιοσύνης.

53 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Θεαιτήτου (176 b).

Θεὸς οὐδαμῇ οὐδαμῶς ἄδικος, ἀλλ' ὡς οἷόν τε δικαιότατος, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτῷ ὁμοιότερον οὐδὲν ἢ ὃς ἂν ἡμῶν αὖ γένηται ὅτι δικαιότατος.

54 Ἐκ τῶν Πώλου Πυθαγορείου Λευκανοῦ περὶ δικαιοσύνης.

Δοκεῖ μοι τῶν ἀνδρῶν τὰν δικαιοσύναν ματέρα τε καὶ τιθανὰν τᾶν ἀλλᾶν ἀρετᾶν προσειπέν· ἄτερ γὰρ ταύτας οὔτε σώφρονα οὔτε ἀνδρεῖον οὔτε φρόνιμον οἷόν τε ἦμεν. ἁρμονία γάρ ἐντι καὶ εἰράνα τᾶς ὅλας ψυχᾶς μετ' εὐρυθμίας. δηλοφανέστερον δέ κα γένοιτο τὸ ταύτας κράτος ἐτάξουσιν ἁμῖν τὰς ἄλλας ἕξιας. μερικὰν γὰρ ἔχοντι αὗται τὰν ὠφέλειαν καὶ ποθ' ἕνα, ἃ δὲ ποθ' ὅλα τὰ συστάματα καὶ ἐν πλάθει. ἐν κόσμῳ μὲν ὦν αὐτὰ τὰν ὅλαν ἀρχὰν διαστραταγοῦσα πρόνοιά τε καὶ ἁρμονία καὶ δίκα καὶ νῶς τινὸς θεῶν οὕτω ψαφιξαμένω· ἐν πόλει δὲ εἰράνα τε καὶ εὐνομία δικαίως κέκληται· ἐν οἴκῳ δ' ἔντι ἀνδρὸς μὲν καὶ γυναικὸς ποτ' ἀλλάλως ὁμοφροσύνα, οἰκετᾶν δὲ ποτὶ δεσπότας εὔνοια, δεσποτᾶν δὲ ποτὶ θεράποντας καδεμονία· ἐν σώματι δὲ καὶ ψυχᾷ πρᾶτα μὲν καὶ ἅπασιν ἀγαπατότατα ζῴοις ἅ τε ὑγίεια καὶ ἀρτιότας, σοφία τ' ἐκ τᾶς ἐπιστάμας τε καὶ δικαιοσύνας γενομένα τε παρ' ἀνθρώποις. εἰ δ' αὐτὰ τὸ ὅλον

καὶ τὰ μέρεα οὕτω παιδαγωγεῖ τε καὶ σώζει ὁμόφρονα καὶ ποτάγορα ἀλλάλοις ἀπεργαζομένα, πῶς οὐ μάτηρ καὶ τιθανὰ πασᾶν τε καὶ πάντων παμψαφί [κα] λέγοιτο;

55 *Πλάτωνος Νόμων ε'* (730 d).

Τίμιος μὲν δὴ καὶ ὁ μηδὲν ἀδικῶν· ὁ δὲ μηδ' ἐπιτρέπων τοῖς ἀδικοῦσιν ἀδικεῖν πλέον ἢ διπλασίας τιμῆς ἄξιος ἐκείνου. ὁ μὲν γὰρ ἑνός, ὁ δὲ πολλῶν ἀντάξιος ἑτέρων, μηνύων τὴν τῶν ἄλλων τοῖς ἄρχουσιν ἀδικίαν· ὁ δὲ καὶ ξυγκολάζων εἰς δύναμιν τοῖς ἄρχουσιν, ὁ μέγας ἀνὴρ ἐν πόλει καὶ τέλειος οὗτος ἀναγορευέσθω νικηφόρος ἀρετῇ.

56. 57 *Ἱέρακος ἐκ τοῦ περὶ δικαιοσύνης.*

Φέρε γὰρ ἴδωμεν, τί τοῖς πολλοῖς δοκεῖ περὶ δικαιοσύνης. οἱ μὲν οὖν ἕξιν εἶναι φασὶ ψυχῆς ἀδωροδόκητον, τοῦ κατὰ δύναμιν ἑκάστου στοχαζομένην· οἱ δὲ ἕξιν ἐν ψυχῇ, μήτε τῇ χείρονι τύχῃ μήτε τῇ κρείττονι πλέον ἢ ἔλαττον ἀπονέμουσαν, τὸ δ' ἴσον πᾶσι φυλάττουσαν. δοκοῦσι δέ μοι οἱ μὲν πρότεροι τὸν μὴ ἀλλοτρίων ἐπιθυμοῦντα χρημάτων θαυμάζειν, τηρήσαντα δ' ἂν καὶ τὸ κατὰ δύναμιν ἑκάστῳ, εἰ κελεύειν τισὶ συγχωρηθείη· οἱ δεύτεροι δὲ τὸν μὴ τῇ τύχῃ τὸ πλέον μετροῦντα, πάντας δὲ τῶν αὐτῶν ἀξιοῦντα. τί οὖν, εἰ τοῦτο μαθών τις ἐν τοῖς ἄλλοις ἀδικώτατος εἴη; καὶ εἰ χρημάτων μὲν ἅρπαξ, ἀλλοτρίων δὲ ἐπιθυμοῖ, ὑβριστὴς δὲ ὑπάρχοι καὶ ἀκόλαστος περὶ ἡδονάς, ἆρα τοιούτων κακῶν ἀνάπλεως δίκαιος ἂν εἴη; ὅταν δὲ καὶ τῶν αὐτῶν ἀξιώσῃ πάντας, πῶς μὲν οὐκ ἄφρων, πῶς δὲ οὐκ ἄδικος, εἰ ὁμοίως τιμήσει τόν τε σώφρονα καὶ τὸν ἀκόλαστον, καὶ τὸν ἄφρονα καὶ τὸν φρόνιμον; ἀλλ' οὐδὲ τὸ μὴ χρημάτων ἀλλοτρίων ἐπιθυμεῖν

δικαιοσύνης ὅρος, εὐτύχημα δὲ περὶ ἕν τι τῶν παθῶν. ὑποκείσθω γὰρ ὑπερβολῇ πλούσιον εἶναί τινα, δυνάμενον ἄλλοις ἐπαρκεῖν πολλοῖς ἐκ τῶν ἰδίων, δόξης δὲ τοῦτον ἡττώμενον καὶ φιλοτιμίας, καὶ μηδενὸς ἐλευθεριάζοντος ἀνέχεσθαι, ἀλλὰ τοὺς μὲν ὑβρίζειν, τοὺς δὲ τύπτειν, τοῖς δὲ κελεύειν τερπόμενον τῷ πάντας ὑπακούειν αὐτῷ· τί οὖν ἄν τις τοῦτον εἴποι, ὅταν μηδενὸς μὲν τῶν ἀλλοτρίων ἐπιθυμῇ, βίαιος δὲ ἄλλως ᾖ καὶ τύραννος· καὶ πρῶτον μὲν τοῖς οἰκέταις καὶ ταῖς θεραπαινίσι χρῆσθαι κακῶς, τοὺς μὲν ὑπὲρ τὸ μέτρον κολάζοντα ταῖς δὲ συγγινόμενον ἀνέδην, ἔπειτα μηδὲν ἀδικεῖν ἡγεῖσθαι ταῦτα ποιοῦντα;

58 Ἐν ταυτῷ.

Οἱ μὲν ἀπὸ τοῦ περιπάτου μεσότητα πλεονεξίας καὶ μειονεξίας τὴν δικαιοσύνην εἰρήκασιν, οἱ δὲ ἀπὸ τῆς στοᾶς ἕξιν ἰσότητος ἀπονεμητικήν. καὶ ὡς μὲν οὐ μόνον οὐ δίκαιον, ἀλλὰ καὶ ἀδικώτατον τὸ πάντας τῶν αὐτῶν ἀξιοῦν, ἐν τοῖς ἔμπροσθεν εἴρηται· τὸ δὲ μεταξὺ πλεονεξίας καὶ μειονεξίας ἔκβασίς ἐστι πράξεως ἀκατονόμαστος, ἀλλ᾿ οὐκ ἀρετὴ ψυχῆς. πᾶσα δὲ πρᾶξις ἐνέργεια ψυχῆς διὰ σώματος· ἡ δ᾿ ἐνέργεια οὐκ ἀρετή, ἢ πᾶσα [ἂν] ἐνέργεια ἦν ἀρετή. τὴν δὲ δικαιοσύνην πάντες ἁπαξαπλῶς ἀρετὴν ψυχῆς ὁμολογοῦσιν, ἀλλ᾿ οὐ πρᾶξιν οὐδὲ πράξεως ἀποτέλεσμα. τρία γάρ ἐστι περὶ ἕκαστον, ἢ ἕξις ἢ πρᾶξις ἢ ἀποτέλεσμα. ἕξις μὲν καθ᾿ ἣν πλεονεκτικοί τινες ἢ μειονεκτικοὶ ἐσμέν· πρᾶξις δὲ τὸ μειονεκτεῖν καὶ πλεονεκτεῖν· ἀποτέλεσμα δὲ ἡ μειονεξία καὶ ἡ πλεονεξία. ὥσπερ ἕξις μὲν ἡ ζωγραφική, πρᾶξις δὲ ἡ ζωγραφία, ἀποτέλεσμα δὲ ἡ γραφή. καὶ πάλιν· ἕξις μὲν ἡ ἀγαλματοποιική, πρᾶξις δὲ τὸ ἀγαλματοποιεῖν, ἀποτέλεσμα

δὲ τὸ ἄγαλμα. εἰ δέ τις τὴν ἕξιν ὁρίζοιτο γραφὴν καὶ ἄγαλμα, τῷ τοῦ ἀποτελέσματος ὀνόματι καλῶν σφάλλεσθαι ἂν ὁμολογοῖτο καὶ σύγχυσιν ποιεῖν· οὕτως ὁ πλεονεξίαν καὶ μειονεξίαν τὴν ἕξιν ὀνομάζων, τῷ τοῦ ἀποτελέσματος ὀνόματι χρῆται κατὰ τῆς ἐν τῇ ψυχῇ ἕξεως. καὶ ἡ μεσότης τοίνυν τῶν ἀποτελεσμάτων ἀποτέλεσμα ἂν εἴη· τεταγμένων γὰρ ἐν τοῖς ἐκ τῶν πραγμάτων ἀποτελουμένοις πλεονεξίας καὶ μειονεξίας, καὶ ἡ τούτων μεσότης εἴη ἂν ἀποτέλεσμα, οὐχ ἕξις. ἔστω δὲ μὴ ἔκβασις, ἀλλ᾽ ἕξις ψυχῆς, οὔτε πλεονεκτικὴ οὔτε μειονεκτική· ὁ περί τι τοίνυν, ἢ τινὶ μήτε πλεονεκτῶν μήτε μειονεκτῶν, ἔσται δίκαιος. περὶ μὲν δὴ τὰ σωματικὰ ἀγαθὰ οὐκ ἂν φαῖεν εἶναι ταύτην, οὔτε ὡς τούτων ἀκρότητα οὔτε ὡς μεσότητα· οὐ γὰρ δὴ κτητὰ ταῦτα γίγνεται κατὰ τὴν ἡμετέραν πρόθεσίν τε καὶ σπουδήν, ἀλλὰ τὰ πολλὰ τούτων ἐστὶ φύσεως. κάλλος μὲν γάρ ἐστι φύσει καὶ ἰσχὺς σώματος καὶ ὑγίεια· εἰ δὲ γηρώμεθα τὴν μὲν ἰσχὺν ἐπιτείνειν τροφαῖς τε καὶ γυμνασίοις, τὴν δὲ ὑγίειαν διαίτῃ ποιᾷ τηρεῖν καὶ ἐκπίπτουσαν ἀνακαλέσασθαι· ἀλλ᾽ ὅμως ὡς οὐκ ἐφ᾽ ἡμῖν οὔσης ἐξ ἀρχῆς τῆς τούτων κτήσεως, ἀπονεμητέον τῇ τοῦ σώματος φύσει. καίτοι καὶ τούτοις πλεονεκτεῖν λέγονταί τινες, ἰσχύι μὲν εἰ τύχοι Μίλων ὁ Κροτωνιάτης, κάλλει δὲ Λαΐς ἡ Κορινθία, καὶ εἴ τινες τούτοις παραπλήσιοι. τίς οὖν ἂν γένοιτο Μίλωνος ἀδικία; ἢ τίς Λαΐδος πλεονεξία; ἆρα εἰ μὲν Μίλων περιέλθοι τοὺς ἀσθενεστέρους τύπτων τε καὶ τὰ τούτων χρήματα διαρπάζων καὶ τὰς τούτων γυναῖκας; καὶ Λαΐς ὁμοίως, μισθὸν μὲν πλεῖστον εἰσπράττουσα παρὰ τῶν ἐραστῶν, ἐνίων δὲ γυναικῶν καὶ γάμους διαλύουσα, τοῦτ᾽ ἂν εἴη τὸ πλεονεκτεῖν; περὶ ποίαν οὖν ὕλην τὴν αἵρεσίν τις ποιή-

σεται τοῦ μήτε ὑπερβάλλοντος μήτ' αὖ ἐλλείποντος; ἢ τὸ ἀγελαῖον ἐκεῖνο καὶ κοινόν "ἀρκοῦ τοῖς αὑτοῦ, καὶ μὴ διάρπαζε τὰ πλησίον," μηδ' αὖ προΐεσο τῶν σῶν, ὡς κατὰ τοῦτο μειονεκτῶν; τὸ μὲν δὴ μὴ βιάζεσθαι δυναίμην, εἴποι τις ἄν, ἐπ' ἐμοὶ γὰρ τοῦτο· τὸ δὲ μὴ πλεονεκτεῖσθαι πῶς ἂν γένοιτο; πολλοὶ γὰρ οἱ κρείττους. ἀλλ' εἴ τις βούλοιτο δεομένοις ἐπαρκεῖν καὶ ὀρφανὰς συνεκδιδόναι καὶ αἰχμαλώτους λύσασθαι, ταῦτα μὲν ἴσως δυνατόν ἐστι ποιεῖν, ἀλλ' οὐ τῷ γε τιμῶντι τὴν προειρημένην μεσότητα· πλεονεκτεῖσθαί γάρ ἐστι καὶ μειονεκτεῖν τὸν ταῦτα ποιεῖν ἀνεχόμενον. πῶς οὖν αὐτὴν ὁρίζεται ὁ καθ' ἡμᾶς λόγος; ἕξιν εὔλογον ψυχῆς ὀρθότητος ἐπιμελουμένην· ἢ τιμωρίας ἀπαίτησιν παρὰ τῶν προηδικηκότων. οὐχ ὡς τοῦ ἢ συνδεσμοῦντος τὴν ἑτέραν τῶν προτάσεων.

59 Ξενοφῶντος ἐν δ' (2, 11) ἀπομνημονευμάτων.

Καὶ ὁ Σωκράτης ἔφη Οὐ δήπου, ὦ Εὐθύδημε, ταύτης τῆς ἀρετῆς ἐφίεσαι δι' ἣν ἄνθρωποι πολιτικοὶ γίγνονται καὶ οἰκονομικοὶ καὶ ἄρχειν ἱκανοὶ καὶ ὠφέλιμοι τοῖς τε ἄλλοις ἀνθρώποις καὶ ἑαυτοῖς; Καὶ ὁ Εὐθύδημος, Σφόδρα γ', ἔφη, ὦ Σώκρατες, ταύτης τῆς ἀρετῆς δέομαι. Νὴ Δί', ἔφη ὁ Σωκράτης, τῆς καλλίστης ἀρετῆς καὶ μεγίστης ἐφίεσαι τέχνης· ἔστι γὰρ τῶν βασιλέων αὕτη καὶ καλεῖται βασιλική. Ἀτάρ, ἔφη, κατανενόηκας, εἰ οἷόν τέ ἐστι μὴ ὄντα δίκαιον ἀγαθὸν ταῦτα γενέσθαι; Καὶ μάλα, ἔφη, οὐχ οἷόν τέ γε ἄνευ δικαιοσύνης ἀγαθὸν πολίτην γενέσθαι. Τί οὖν, ἔφη, σὺ ἤδη τοῦτο κατείργασαι; Οἶμαί γε, ἔφη, ὦ Σώκρατες, οὐδενὸς ἂν ἧττον φανῆναι δίκαιος. Ἆρ' οὖν, ἔφη, τῶν δικαίων ἔστιν

ἔργα, ὥσπερ τῶν τεκτόνων; Ἔστι μέντοι, ἔφη. Ἆρ' οὖν, ἔφη, ὥσπερ οἱ τέκτονες ἔχουσι τὰ ἑαυτῶν ἔργα ἐπιδεῖξαι, οὕτως οἱ δίκαιοι τὰ ἑαυτῶν ἔχοιεν ἂν ἐξηγήσασθαι; Μὴ οὖν, ἔφη ὁ Εὐθύδημος, ἐγὼ οὐ δύναμαι τὰ τῆς δικαιοσύνης ἔργα ἐξηγήσασθαι; καὶ νὴ Δί' ἔγωγε τὰ τῆς ἀδικίας· ἐπεὶ οὐκ ὀλίγα ἐστὶ καθ' ἑκάστην ἡμέραν ὁρᾶν τε τοιαῦτα καὶ ἀκούειν. Βούλει οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, γράψομεν ἐνταυθοῖ μὲν δέλτα, ἐνταυθοῖ δὲ ἄλφα· εἶτα ὅ τι μὲν ἂν δοκῇ ἡμῖν τῆς δικαιοσύνης ἔργον εἶναι, πρὸς τὸ δέλτα τιθῶμεν· ὅ τι δ' ἂν τῆς ἀδικίας, πρὸς τὸ ἄλφα. Εἴ τι σοι δοκεῖ, ἔφη, προσδεῖν τούτων, ποίει ταῦτα. Καὶ ὁ Σωκράτης γράψας, ὥσπερ εἶπεν, Οὐκ οὖν, ἔφη, ἔστιν ἐν ἀνθρώποις ψεύδεσθαι; Ἔστι μέντοι, ἔφη. Ποτέρωσε οὖν, ἔφη, θῶμεν τοῦτο; Δῆλον ὅτι, ἔφη, πρὸς τὴν ἀδικίαν. Οὐκ οὖν, ἔφη, καὶ ἐξαπατᾶν ἐστι; Καὶ μάλα, ἔφη. Τοῦτο οὖν ποτέρωσε θῶ; Καὶ τοῦτο δῆλον ὅτι, ἔφη, πρὸς τὴν ἀδικίαν. Τί δὲ τὸ κλέπτειν; Καὶ τοῦτο, ἔφη. Τί δ' ἀνδραποδίζεσθαι; Καὶ τοῦτο. Πρὸς δὲ τῇ δικαιοσύνῃ οὐδὲν τούτων ἡμῖν κείσεται, ὦ Εὐθύδημε; Δεινὸν δ' ἂν εἴη, ἔφη. Τί δέ, ἐάν τις στρατηγὸς αἱρεθεὶς ἄδικόν τε καὶ αἰσχρὰν πόλιν ἐξανδραποδίσηται, φήσομεν τοῦτον ἀδικεῖν; Οὐ δῆτα, ἔφη. Δίκαια δὲ ποιεῖν οὐ φήσομεν; Καὶ μάλα. Τί δέ, ἂν ἐξαπατᾷ πολεμῶν αὐτοῖς; Δίκαιον, ἔφη, καὶ τοῦτο. Ἐὰν δὲ κλέπτῃ τε καὶ ἁρπάζῃ τὰ τούτων, οὐ δίκαια ποιήσει; Καὶ μάλα, ἔφη. Ἀλλ' ἐγώ σε τὸ πρῶτον ὑπέλαβον πρὸς τοὺς φίλους μόνους ταῦτα ἐρωτᾶν. Οὐκ οὖν, ἔφη, ὅσα πρὸς τῇ ἀδικίᾳ ἐθήκαμεν, ταῦτα καὶ πρὸς τῇ δικαιοσύνῃ θετέον ἂν εἴη; ἔφη, Ἔοικε. Βούλει οὖν, ἔφη, ταῦτα θέντες οὕτω διορισόμεθα πάλιν, πρὸς μὲν τοὺς πολεμίους

δίκαιον εἶναι ταῦτα ποιεῖν, πρὸς δὲ τοὺς φίλους ἄδικον· ἀλλὰ δεῖν πρός γε τούτους ὡς ἁπλούστατον εἶναι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη ὁ Εὐθύδημος. Τί οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, ἐάν τις στρατηγὸς ὁρῶν ἀθύμως ἔχον τὸ στράτευμα, ψευσάμενος φήσῃ συμμάχους προσιέναι καὶ τῷ ψεύδει τούτῳ καταπαύσῃ τῆς ἀθυμίας τοὺς στρατιώτας, ποτέρωθι τὴν ἀπάτην ταύτην θήσομεν; Δοκεῖ μοι, ἔφη, πρὸς τὴν δικαιοσύνην. Ἐὰν δέ τις υἱὸν αὐτοῦ δεόμενον φαρμακείας καὶ μὴ προσιέμενον φάρμακον ἐξαπατήσας ὡς σῖτον τὸ φάρμακον δῷ καὶ τῷ ψεύδει χρησάμενος οὕτως ὑγιῆ ποιήσῃ, ταύτην αὖ τὴν ἀπάτην ποῖ θετέον; Δοκεῖ μοι, ἔφη, καὶ ταύτην εἰς τὸ αὐτό. Τί δέ, ἐάν τις ἐν ἀθυμίᾳ ὄντος φίλου, δείσας μὴ διαχρήσηται ἑαυτόν, κλέψῃ ἢ ἁρπάσῃ ξίφος ἢ ἄλλο τι τοιοῦτο, τοῦτο αὖ ποτέρωσε θετέον; Καὶ τοῦτο νὴ Δία πρὸς τὴν δικαιοσύνην. Λέγεις, ἔφη, σὺ οὐδὲ πρὸς τοὺς φίλους ἅπαντα δεῖν ἁπλοΐζεσθαι; Μὰ Δί' οὐ δῆτα, ἔφη· ἀλλὰ μετατίθεμαι τὰ εἰρημένα, εἴπερ ἔξεστι. Δεῖ γέ τοι, ἔφη ὁ Σωκράτης, ἐξεῖναι πολὺ μᾶλλον, ἢ μὴ ὀρθῶς τιθέναι. Τῶν δὲ δὴ τοὺς φίλους ἐξαπατώντων ἐπὶ βλάβῃ, ἵνα μηδὲ τοῦτο παραλίπωμεν ἄσκεπτον, πότερος ἀδικώτερός ἐστιν ὁ ἑκὼν ἢ ὁ ἄκων; Ἀλλ', ὦ Σώκρατες, οὐκέτι μὲν ἔγωγε πιστεύω οἷς ἀποκρίνομαι· καὶ γὰρ τὰ πρόσθεν πάντα νῦν ἄλλως ἔχειν δοκεῖ μοι ἢ ὡς ἐγὼ τότε ᾤμην. Ὅμως δὲ εἰρήσθω μοι ἀδικώτερον εἶναι τὸν ἑκόντα ψευδόμενον τοῦ ἄκοντος. Δοκεῖ δέ σοι μάθησις καὶ ἐπιστήμη τοῦ δικαίου εἶναι, ὥσπερ τῶν γραμμάτων; Ἔμοιγε. Πότερον δὲ γραμματικώτερον κρίνεις ὃς ἂν ἑκὼν μὴ ὀρθῶς γράφῃ καὶ ἀναγινώσκῃ, ἢ ὃς ἂν ἄκων; Ὃς ἂν ἑκών, ἔγωγε. Δύναιτο γάρ, ὁπότε βούλοιτο, καὶ ὀρθῶς αὐτὰ ποιεῖν.

Οὐκ οὖν ὁ μὲν ἑκὼν μὴ ὀρθῶς γράφων γραμματικὸς ἂν εἴη· ὁ δὲ ἄκων ἀγράμματος; Πῶς γὰρ οὔ; Τὰ δίκαια δὲ πότερον ὁ ἑκὼν ψευδόμενος καὶ ἐξαπατῶν οἶδεν, ἢ ὁ ἄκων; Δηλονότι ὁ ἑκών. Οὐκ οὖν γραμματικώτερον μὲν τὸν ἐπιστάμενον γράμματα τοῦ μὴ ἐπισταμένου φῂς εἶναι; Ναί. Δικαιότερον δὲ τὸν ἐπιστάμενον τὰ δίκαια τοῦ μὴ ἐπισταμένου; Φαίνεται. Δοκῶ δέ μοι καὶ ταῦτα οὐκ οἶδ' ὅπως λέγειν. Τί δὲ δή, ὃς ἂν βουλόμενος τἀληθῆ λέγειν μηδέποτε ταὐτὰ περὶ τῶν αὐτῶν λέγῃ, ἀλλ' ὁδόν τε φράζων τὴν αὐτήν, τοτὲ μὲν πρὸς ἕω, τοτὲ δὲ πρὸς ἑσπέραν φράζῃ; καὶ λογισμὸν ἀποφαινόμενος τὸν αὐτόν, τοτὲ μὲν πλείω, τοτὲ δὲ ἐλάττω ἀποφαίνεται, τί σοι δοκεῖ ὁ τοιοῦτος; Δῆλος νὴ Δί' εἶναι, ὅτι ἃ ᾤετο εἰδέναι οὐκ οἶδεν. Οἶσθα δε τινας ἀνδραποδώδεις καλουμένους; Ἔγωγε. Πότερον δι' ἀμαθίαν ἢ διὰ σοφίαν; Δῆλον ὅτι δι' ἀμαθίαν. Ἆρ' οὖν διὰ τὴν τοῦ χαλκεύειν ἀμαθίαν τοῦ ὀνόματος τούτου τυγχάνουσιν; Οὐ δῆτα. Ἀλλ' ἆρα διὰ τὴν τοῦ τεκταίνεσθαι; Οὐδὲ διὰ ταύτην. Ἀλλὰ τὴν τοῦ σκυτεύειν; Οὐδὲ δι' ἓν τούτων, ἔφη, ἀλλὰ καὶ τοὐναντίον· οἱ γὰρ πλεῖστοι τῶν τὰ τοιαῦτα ἐπισταμένων ἀνδραποδώδεις εἰσίν. Ἆρ' οὖν τῶν τὰ καλὰ καὶ ἀγαθὰ καὶ τὰ δίκαια μὴ εἰδότων τὸ ὄνομα τοῦτό ἐστιν; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Οὐκ οὖν δεῖ παντὶ τρόπῳ διατεινομένους φεύγειν, ὅπως μὴ ἀνδράποδα ὦμεν;

60 *Ἐν ταυτῷ* (4, 5).

Οἶδα δέ ποτ' αὐτὸν καὶ πρὸς Ἱππίαν τὸν Ἠλεῖον περὶ τοῦ δικαίου τοιάδε διαλεχθέντα. διὰ χρόνου γὰρ ἀφικόμενος ὁ Ἱππίας Ἀθήναζε, παρεγένετο τῷ Σωκράτει λέγοντι πρός τινας, ὡς θαυμαστὸν εἴη τὸ εἰ

μέν τις μέλλοιτο σκυτέα διδάξασθαί τινα, ἢ τέκτονα, ἢ χαλκέα, ἢ ἱππέα, μὴ ἀπορεῖν ὅπη ἂν πέμψας τούτου τύχοι· (φασὶ δέ τινες καὶ ἵππον καὶ βοῦν τῷ βουλομένῳ δικαίους ποιήσασθαι, πάντα μεστὰ εἶναι τῶν διδαξόντων·) ἐὰν δέ τις βούληται ἢ αὐτὸς μαθεῖν τὸ δίκαιον, ἢ υἱὸν ἢ οἰκέτην διδάξασθαι, μὴ εἰδέναι ποίαν ἐλθὼν τύχοι τούτου. καὶ ὁ μὲν Ἱππίας ἀκούσας ταῦτα, ὥσπερ ἐπισκώπτων αὐτόν, Ἔτι γὰρ σύ, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ἐκεῖνα τὰ αὐτὰ λέγεις ἃ ἐγὼ πάλαι ποτέ σου ἤκουσα; Καὶ ὁ Σωκράτης, Ὃ δέ γε τούτου δεινότερον, ἔφη, ὦ Ἱππία, οὐ μόνον ἀεὶ ταυτὰ λέγω, ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν αὐτῶν· σὺ δ᾽ ἴσως διὰ τὸ πολυμαθὴς εἶναι, περὶ τῶν αὐτῶν οὐδέποτε τὰ αὐτὰ λέγεις. Ἀμέλει, ἔφη, πειρῶμαι καινόν τι λέγειν ἀεί. Πότερον, ἔφη, καὶ περὶ ὧν ἐπίστασαι, οἷον περὶ γραμμάτων ἐάν τις ἔρηταί σε, πόσα καὶ ποῖα Σωκράτους ἐστίν, ἄλλα μὲν πρὶν ἄλλα δὲ νῦν πειρᾷ λέγειν; ἢ περὶ ἀριθμῶν τοῖς ἐρωτῶσιν, εἰ τὰ δὶς πέντε δέκα γίνονται, οὐ τὰ αὐτὰ νῦν ἃ καὶ πρότερον ἀποκρίνῃ; Περὶ μὲν τούτων, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ὥσπερ σὺ καὶ ἐγὼ ἀεὶ τὰ αὐτὰ λέγω· περὶ μέντοι τοῦ δικαίου πάνυ οἶμαι νῦν ἔχειν εἰπεῖν, πρὸς ἃ οὔτε σὺ οὔτ᾽ ἂν ἄλλος οὐδεὶς δύναιτο εἰπεῖν. Νὴ τὴν Ἥραν, ἔφη, μέγα λέγεις ἀγαθὸν εὑρηκέναι, εἰ παύσονται μὲν οἱ δικασταὶ δίχα ψηφιζόμενοι· παύσονται δὲ οἱ πολῖται περὶ τῶν δικαίων ἀντιλέγοντές τε καὶ ἀντιδικοῦντες καὶ στασιάζοντες· παύσονται δ᾽ αἱ πόλεις διαφερόμεναι περὶ τῶν δικαίων καὶ πολεμοῦσαι· καὶ ἐγὼ μὲν οὐκ οἶδ᾽ ὅπως ἀπολειφθείην ἄν σου, πρὸ τοῦ ἀκοῦσαι τηλικοῦτον ἀγαθὸν εὑρηκότος. Ἀλλὰ μὰ Δί᾽, ἔφη, οὐκ ἀκούσῃ πρίν γ᾽ ἂν αὐτὸς ἀποφήνῃ ὅ τι νομίζεις τὸ δίκαιον εἶναι· ἀρκεῖ γὰρ ὅτι τῶν ἄλλων καταγελᾷς,

ἐρωτῶν μὲν καὶ ἐλέγχων πάντας, αὐτὸς δ' οὐδενὶ ἐθέλων ὑπέχειν λόγον οὐδὲ γνώμην ἀποφαίνεσθαι περὶ οὐδενός. Τί δέ, ὦ Ἱππία, ἔφη, οὐκ ᾔσθησαι, ὅτι ἐγὼ ἃ δοκεῖ μοι δίκαια εἶναι οὐδὲν παύομαι ἀποδεικνύμενος; Καὶ ποῖος δή σοι, ἔφη, οὗτος ὁ λόγος ἐστίν; Εἰ δὲ μὴ λόγῳ, ἔφη, ἀλλ' ἔργῳ ἐπιδείκνυμι· ἢ οὐ δοκεῖ σοι ἀξιοτεκμαρτότερον τοῦ λόγου τὸ ἔργον εἶναι; Πολύ γε νὴ Δί', ἔφη. Δίκαια μὲν γὰρ λέγοντες πολλοὶ ἄδικα ποιοῦσι· δίκαια δὲ πραττόντων οὐδ' ἂν εἷς ἄδικος εἴη. Ἤισθησαι οὖν πώποτέ μου ἢ ψευδομαρτυροῦντος, ἢ συκοφαντοῦντος, ἢ πόλιν ἢ φίλους εἰς στάσιν ἐμβαλόντος, ἢ ἄλλο τι ἄδικον πράττοντος; Οὐκ ἔγωγ', ἔφη. Τὸ δὲ τῶν ἀδίκων ἀπέχεσθαι οὐ δίκαιον ἡγῇ; Δῆλος εἶ, ἔφη, ὦ Σώκρατες, καὶ νῦν διαφεύγειν ἐγχειρῶν τὸ ἀποδείκνυσθαι γνώμην, ὅ τι νομίζεις τὸ δίκαιον· οὐ γὰρ ἃ πράττουσιν οἱ δίκαιοι, ἀλλ' ἃ μὴ πράττουσι, ταῦτα λέγεις. Ἀλλ' ᾤμην ἔγωγε, ἔφη ὁ Σωκράτης, τὸ μὴ θέλειν ἀδικεῖν ἱκανὸν δικαιοσύνης ἐπίδειγμα εἶναι· εἰ δέ σοι μὴ δοκεῖ, σκέψαι, ἐὰν τόδε σοι μᾶλλον ἀρέσκῃ· φημὶ γὰρ ἐγὼ τὸ νόμιμον δίκαιον εἶναι. Ἆρα τὸ αὐτὸ λέγεις, ὦ Σώκρατες, νόμιμόν τε καὶ δίκαιον εἶναι; Ἔγωγε, ἔφη. Οὐκ ἄρα αἰσθάνομαί σου, ὁποῖον νόμιμον ἢ ποῖον δίκαιον λέγεις. Νόμους δὲ πόλεως, ἔφη, γιγνώσκεις; Ἔγωγε, ἔφη. Καὶ τίνας τούτους νομίζεις; Ἃ οἱ πολῖται, ἔφη, συνθέμενοι ἅ τε δεῖ ποιεῖν καὶ ὧν ἀπέχεσθαι, ἐγράψαντο. Οὐκ οὖν, ἔφη, νόμιμος μὲν ἂν εἴη ὁ κατὰ ταῦτα πολιτευόμενος· ἄνομος δὲ ὁ ταῦτα παραβαίνων; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ δίκαια μὲν ἂν πράττοι ὁ τούτοις πειθόμενος, ἄδικα δὲ ὁ τούτοις ἀπειθῶν; Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ οὖν ὁ μὲν τὰ δίκαια πράττων δίκαιος· ὁ δὲ τὰ ἄδικα ἄδι-

κος; Πῶς γὰρ οὔ; Ὁ μὲν ἄρα νόμιμος δίκαιός ἐστιν, ὁ δὲ ἄνομος ἄδικος; Καὶ ὁ Ἱππίας, Νόμους δ', ἔφη, ὦ Σώκρατες, πῶς ἄν τις ἡγήσαιτο σπουδαῖον πρᾶγμ' εἶναι ἢ τὸ πείθεσθαι αὐτοῖς, οὕς γε πολλάκις αὐτοὶ οἱ θέμενοι ἀποδοκιμάσαντες μετατίθενται; Καὶ γὰρ πόλεμον, ἔφη ὁ Σωκράτης, πολλάκις ἀράμεναι πόλεις πάλιν εἰρήνην ποιοῦνται. Καὶ μάλα, ἔφη. Διάφορον οὖν τι οἴει ποιεῖν, ἔφη, τοὺς τοῖς νόμοις πειθομένους φαυλίζων, ὅτι καταλυθεῖεν ἂν οἱ νόμοι, ἢ εἰ τοὺς ἐν τοῖς πολέμοις εὐτακτοῦντας ψέγοις, ὅτι γένοιτ' ἂν εἰρήνη; ἢ καὶ τοὺς ἐν τοῖς πολέμοις ταῖς πατρίσι προθύμως βοηθοῦντας μέμφῃ; Μὰ Δί' οὐκ ἐγώ, ἔφη. Λυκοῦργον δὲ τὸν Λακεδαιμόνιον, ἔφη ὁ Σωκράτης, καταμεμάθηκας, ὅτι οὐδὲν ἂν διάφορον τῶν ἄλλων πόλεων τὴν Σπάρτην ἐποίησεν, εἰ μὴ τὸ πείθεσθαι τοῖς νόμοις μάλιστα ἐνειργάσατο αὐτῇ; τῶν δὲ ἀρχόντων ἐν ταῖς πόλεσιν, οὐκ οἶσθα, ὅτι οἵτινες ἂν τοῖς πολίταις αἰτιώτατοι ὦσι τοῦ τοῖς νόμοις πείθεσθαι, οὗτοι ἄριστοί εἰσι; καὶ πόλις, ἐν ᾗ μάλιστα οἱ πολῖται τοῖς νόμοις πείθονται, ἐν εἰρήνῃ τε ἄριστα διάγει καὶ ἐν πολέμῳ ἀνυπόστατός ἐστιν; Ἀλλὰ μὴν καὶ ὁμόνοιά γε μέγιστόν τε ἀγαθὸν δοκεῖ ταῖς πόλεσιν εἶναι, καὶ πλειστάκις ἐν αὐταῖς αἱ γερουσίαι καὶ οἱ ἄριστοι ἄνδρες παρακελεύονται τοῖς πολίταις ὁμονοεῖν, καὶ πανταχοῦ ἐν τῇ Ἑλλάδι νόμος κεῖται τοὺς πολίτας ὀμνύναι ὁμονοήσειν, καὶ πανταχοῦ ὀμνύουσι τὸν ὅρκον τοῦτον. Οἶμαι δ' ἐγὼ ταῦτα γίγνεσθαι οὐχ ὅπως τοὺς αὐτοὺς χοροὺς κρίνωσιν οἱ πολῖται, οὐδ' ὅπως τοὺς αὐτοὺς αὐλητὰς ἐπαινῶσιν, οὐδ' ὅπως τοὺς αὐτοὺς ποιητὰς αἱρῶνται, οὐδ' ἵνα τοῖς αὐτοῖς ἥδωνται, ἀλλ' ἵνα τοῖς νόμοις πείθωνται· τούτοις γὰρ τῶν πολιτῶν ἐμμενόντων αἱ πόλεις ἰσχυρόταταί

τε καὶ εὐδαιμονέσταται γίγνονται, ἄνευ δ' ὁμονοίας οὔτ' ἂν πόλις εὖ πολιτευθείη, οὔτ' οἶκος καλῶς οἰκηθείη. Ἰδίᾳ δὲ πῶς μὲν ἄν τις ἧττον ὑπὸ πόλεως ζημιοῖτο, πῶς δ' ἂν μᾶλλον τιμῷτο, ἢ εἰ τοῖς νόμοις πείθοιτο; πῶς δ' ἂν ἧττον ἐν τοῖς δικαστηρίοις ἡττῷτο, ἢ πῶς ἂν μᾶλλον νικῴη; Τίνι δ' ἄν τις μᾶλλον πιστεύσειεν παρακαταθήκας ἢ χρήματα ἢ θυγατέρας ἢ υἱούς; τίνα δ' ἂν ἡ πόλις ὅλη ἀξιοπιστότερον ἡγήσαιτο τοῦ νομίμου; παρὰ τίνος δ' ἂν μᾶλλον τῶν δικαίων τύχοιεν ἢ γονεῖς ἢ οἰκεῖοι, ἢ οἰκέται ἢ φίλοι, ἢ πολῖται ἢ ξένοι; τίνι δ' ἂν μᾶλλον πολέμιοι πιστεύσειαν ἢ ἀνοχὰς ἢ σπονδὰς ἢ συνθήκας περὶ εἰρήνης; τίνι δ' ἂν μᾶλλον ἢ τῷ νομίμῳ σύμμαχοι ἐθέλοιεν γίγνεσθαι; τίνι δ' ἂν μᾶλλον οἱ σύμμαχοι πιστεύσειαν ἡγεμονίαν ἢ φρουραρχίαν ἢ πόλεις; τίνα δ' ἄν τις εὐεργετήσας ὑπολάβοι κομιεῖσθαι χάριν μᾶλλον ἢ τὸν νόμιμον; ἢ τίνα μᾶλλον ἄν τις εὐεργετήσειεν ἢ παρ' οὗ χάριν ἀπολήψεσθαι νομίζει; τῷ δ' ἄν τις βούλοιτο μᾶλλον φίλος εἶναι ἢ τῷ τοιούτῳ, ἢ τῷ ἧττον ἐχθρός; τῷ δ' ἄν τις ἧττον πολεμήσειεν ἢ ᾧ μάλιστα μὲν εἶναι φίλος βούλοιτο, ἥκιστα δ' ἐχθρός; καὶ ᾧ πλεῖστοι μὲν φίλοι καὶ σύμμαχοι βούλοιντο εἶναι, ἐλάχιστοι δ' ἐχθροὶ καὶ πολέμιοι; Ἐγὼ μὲν οὖν, ὦ Ἱππία, τὸ αὐτὸ ἐπιδείκνυμαι νόμιμόν τε καὶ δίκαιον εἶναι· σὺ δ', εἰ τἀναντία ἃ γιγνώσκεις, δίδασκε. Καὶ ὁ Ἱππίας, Ἀλλὰ μὰ τὸν Δί', ἔφη, ὦ Σώκρατες, οὔ μοι δοκῶ τἀναντία γιγνώσκειν οἷς εἴρηκας περὶ τοῦ δικαίου. Ἀγράφους δέ τινας οἶσθα, ἔφη, ὦ Ἱππία, νόμους; Τούς γε ἐν πάσῃ χώρᾳ, ἔφη, κατὰ ταὐτὰ νομιζομένους. Ἔχοις ἂν οὖν εἰπεῖν, ἔφη, ὅτι οἱ ἄνθρωποι αὐτοὺς ἔθεντο; Καὶ πῶς ἄν, ἔφη, οἵ γε οὔτε συνελθεῖν ἅπαντες δυνηθεῖεν οὔτε ὁμόφωνοί

εἰσι; Τίνας οὖν, ἔφη, νομίζεις τοὺς νόμους τεθεικέναι τούτους; Ἐγὼ μέν, ἔφη, θεοὺς οἶμαι τοὺς νόμους τούτους τοῖς ἀνθρώποις θεῖναι· καὶ γὰρ παρὰ πᾶσιν ἀνθρώποις πρῶτον νομίζεται θεοὺς εὐσεβεῖν. Οὐκ οὖν καὶ γονέας τιμᾶν πανταχοῦ νομίζεται; Καὶ τοῦτο, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ μήτε γονεῖς παισὶ μίγνυσθαι μήτε παῖδας γονεῦσιν; Οὐκ ἔτι μοι δοκεῖ, ἔφη, ὦ Σώκρατες, οὗτος θεοῦ νόμος εἶναι. Τί δή; ἔφη. Ὅτι, ἔφη, αἰσθάνομαί τινας παραβαίνοντας αὐτόν. Καὶ γὰρ ἄλλα πολλά, ἔφη, παρανομοῦσιν. Ἀλλὰ δίκην γέ τοι διδόασιν οἱ παραβαίνοντες τοὺς ὑπὸ τῶν θεῶν κειμένους νόμους, ἣν οὐδενὶ τρόπῳ δυνατὸν ἀνθρώπῳ διαφυγεῖν· ὥσπερ τοὺς ὑπ' ἀνθρώπων κειμένους νόμους ἔνιοι παραβαίνοντες, διαφεύγουσι τὸ δίκην δοῦναι, οἱ μὲν λανθάνοντες, οἱ δὲ βιαζόμενοι. Καὶ ποίαν, ἔφη, δίκην, ὦ Σώκρατες, οὐ δύνανται διαφεύγειν γονεῖς τε παισὶ καὶ παῖδες γονεῦσι μιγνύμενοι; Τὴν μεγίστην νὴ Δία, ἔφη. Τί γὰρ ἂν μεῖζον πάθοιεν ἄνθρωποι τεκνοποιούμενοι τοῦ κακῶς τεκνοποιεῖσθαι; Πῶς οὖν, ἔφη, κακῶς οὗτοι τεκνοποιοῦνται, ὅτε οὐδὲν κωλύει ἀγαθοὺς αὐτοὺς ὄντας ἐξ ἀγαθῶν τεκνοποιεῖσθαι; Ὅτι νὴ Δί', ἔφη, οὐ μόνον ἀγαθοὺς δεῖ τοὺς ἐξ ἀλλήλων παιδοποιουμένους εἶναι, ἀλλὰ καὶ ἀκμάζοντας τοῖς σώμασιν. Ἦ δοκεῖ σοι ὅμοια τὰ σπέρματα εἶναι τὰ τῶν ἀκμαζόντων ἢ τῶν παρηκμακότων; Ἀλλὰ μὰ Δί', ἔφη, οὐκ εἰκὸς ὅμοια εἶναι. Πότερα οὖν, ἔφη, βελτίω; Δῆλον ὅτι τὰ τῶν ἀκμαζόντων. Τῶν μὴ ἀκμαζόντων ἆρα οὐ σπουδαῖα; Οὐκ εἰκὸς μὰ Δί', ἔφη. Οὐκ οὖν οὕτω γε οὐ δεῖ παιδοποιεῖσθαι; Οὐ γὰρ οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν οἵ γε οὕτω παιδοποιούμενοι ὡς οὐ δεῖ παιδοποιοῦνται; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Τίνες οὖν, ἔφη, ἄλ-

λοι κακῶς ἂν παιδοποιοῖντο, εἴγε μὴ οὗτοι; Ὁμογνωμονῶ σοι, ἔφη, καὶ τοῦτο. Τί δέ, τοὺς εὖ ποιοῦντας ἀντευεργετεῖν, οὐ πανταχοῦ νόμιμόν ἐστι; Νόμιμον, ἔφη. Παραβαίνεται δὲ καὶ τοῦτο. Οὐκ οὖν καὶ οἱ τοῦτο παραβαίνοντες δίκην διδόασι, φίλων μὲν ἀγαθῶν ἔρημοι γιγνόμενοι, τοὺς δὲ μισοῦντας ἑαυτοὺς ἀναγκαζόμενοι διώκειν; ἢ οὐχ οἱ μὲν εὖ ποιοῦντες τοὺς χρωμένους ἑαυτοῖς ἀγαθοὶ φίλοι εἰσίν, οἱ δὲ μὴ ἀντευεργετοῦντες τοὺς τοιούτους διὰ μὲν τὴν ἀχαριστίαν μισοῦνται ὑπ' αὐτῶν, διὰ δὲ τὸ μάλιστα λυσιτελεῖν τοῖς τοιούτοις χρῆσθαι, τούτους μάλιστα διώκουσι; Νὴ τὸν Δί', ὦ Σώκρατες, ἔφη, θεοῖς πάντα ταῦτ' ἔοικε· τὸ γὰρ τοὺς νόμους αὐτοῖς τοῖς παραβαίνουσι τὰς τιμωρίας ἔχειν, βελτίονος ἢ κατὰ ἄνθρωπον νομοθέτου δοκεῖ μοι εἶναι. Πότερον οὖν, ὦ Ἱππία, τοὺς θεοὺς ἡγῇ τὰ δίκαια νομοθετεῖν ἢ ἄλλα τῶν δικαίων; Οὐκ ἄλλα μὰ Δί', ἔφη· σχολῇ γὰρ ἂν ἄλλος γέ τις τὰ δίκαια νομοθετήσειεν, εἰ μὴ θεός. Καὶ τοῖς θεοῖς ἄρα, ὦ Ἱππία, τὸ αὐτὸ δίκαιόν τε καὶ νόμιμον εἶναι ἀρέσκει.

61 *Πλάτωνος πολιτειῶν α'* (348 e).

Τοῦτο, ἦν δ' ἐγώ, ἤδη στερεώτερον, ὦ ἑταῖρε, καὶ οὐκ ἔτι ῥᾴδιον ἔχειν ὅ τι τὶς εἴπῃ. εἰ γὰρ λυσιτελεῖν μὲν τὴν ἀδικίαν ἐτίθεσο, κακίαν μέντοι ἢ αἰσχρὸν αὐτὸ ὡμολόγεις εἶναι, ὥσπερ ἄλλοι τινές, εἴχομεν ἄν τι λέγειν κατὰ τὰ νομιζόμενα λέγοντες· νῦν δὲ δῆλος εἶ ὅτι φήσεις αὐτὸ καὶ καλὸν καὶ αἰσχρὸν εἶναι καὶ τἄλλα αὐτῷ πάντα προσθήσεις, ἃ ἡμεῖς τῷ δικαίῳ προσετίθεμεν, ἐπειδή γε καὶ ἐν ἀρετῇ αὐτὸ καὶ σοφίᾳ ἐτόλμησας θεῖναι. Ἀληθέστατα, ἔφη, μαντεύῃ. — Ἀλλὰ τόδε μοι πειρῶ ἀποκρίνασθαι· ὁ

δίκαιος τοῦ δικαίου δοκεῖ τί σοι ἂν ἐθέλειν πλεῖον ἔχειν; Οὐδαμῶς, ἔφη· οὐ γὰρ ἂν ἦν ἀστεῖος, ὥσπερ νῦν, καὶ εὐήθης. Τί δαί, τῆς δικαίας πράξεως; Οὐδὲ τῆς δικαίας, ἔφη. Τοῦ δὲ ἀδίκου πότερον ἀξιοῖ ἂν πλέον ἔχειν καὶ ἡγοῖτο δίκαιον εἶναι, ἢ οὐκ ἂν ἡγοῖτο δίκαιον; Ἡγοῖτ' ἄν, ἦ δ' ὅς, καὶ ἀξιοῖ, ἀλλ' οὐκ ἂν δύναιτο. Ἀλλ' οὐ τοῦτο, ἦν δ' ἐγώ, ἐρωτῶ· ἀλλὰ εἰ τοῦ μὲν δικαίου μὴ ἀξιοῖ πλέον ἔχειν μηδὲ βούλεται ὁ δίκαιος, τοῦ δὲ ἀδίκου; Ἀλλ' οὕτως, ἔφη, ἔχει. Τί δαὶ δὴ ὁ ἄδικος, ἆρα ἀξιοῖ τοῦ δικαίου πλεονεκτεῖν καὶ τῆς δικαίας πράξεως; Πῶς γὰρ οὔ, ἔφη, ὅς γε πάντων πλέον ἔχειν ἀξιοῖ; Οὐκ οὖν καὶ ἀδίκου γε ἀνθρώπου τε καὶ πράξεως ὁ ἄδικος πλεονεκτήσει τε καὶ ἁμιλλήσεται, ὡς ἁπάντων πλεῖστον αὐτὸς λάβῃ; Ἔστι ταῦτα. Ὧδε δὴ λέγομεν, ἔφη, ὁ δίκαιος τοῦ μὲν ὁμοίου οὐ πλεονεκτεῖ, τοῦ δὲ ἀνομοίου· ὁ δὲ ἄδικος τοῦ τε ὁμοίου καὶ τοῦ ἀνομοίου. Ἄριστα, ἔφη, εἴρηκας. Ἔστι δέ γε, ἔφην, φρόνιμός τε καὶ ἀγαθὸς ὁ ἄδικος, ὁ δὲ δίκαιος οὐδέτερα; Καὶ τοῦτ', ἔφη, εὖ. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ ἔοικε τῷ φρονίμῳ καὶ ἀγαθῷ ὁ ἄδικος, ὁ δὲ δίκαιος οὐκ ἔοικε; Πῶς γὰρ οὐ μέλλει, ἔφη, τοιοῦτος ὢν καὶ ἐοικέναι τοῖς τοιούτοις, ὁ δὲ μὴ ἐοικέναι; Καλῶς. Τοιοῦτος ἄρα ἐστὶν ἑκάτερος αὐτῶν οἷσπερ ἔοικεν. Ἀλλὰ τί μέλλει; ἔφη. Εἶεν, ὦ Θρασύμαχε· μουσικὸν δέ τινα λέγεις, ἕτερον δὲ ἄμουσον; Ἔγωγε. Πότερον φρόνιμον καὶ πότερον ἄφρονα; Τὸν μὲν μουσικὸν δήπου φρόνιμον, τὸν δὲ ἄμουσον ἄφρονα. Οὐκ οὖν ἅπερ φρόνιμον, ἀγαθόν· ἃ δὲ ἄφρονα, κακόν; Ναί. Τί δαί, ἰατρικὸν οὐχ οὕτως; Οὕτως. Ἆρ' οὖν τίς σοι, ὦ ἄριστε, δοκεῖ μουσικὸς ἁρμοττόμενος λύραν ἐθέλειν μουσικοῦ ἀνδρὸς ἐν τῇ ἐπιτάσει καὶ ἀνέσει τῶν χορ-

δῶν πλεονεκτεῖν ἢ ἀξιοῦν πλεῖον ἔχειν; Οὐκ ἔμοιγε. Τί δαί, ἀμούσου; Ἀνάγκη, ἔφη. Τί δέ, ἰατρικός, ἐν τῇ ἐδωδῇ ἢ πόσει ἐθέλειν ἄν τι ἰατρικοῦ πλεονεκτεῖν, ἢ ἀνδρὸς ἢ πράγματος; Οὐ δῆτα. Μὴ ἰατρικοῦ δέ; Ναί. Περὶ πάσης δὴ ὅρα ἐπιστήμης τε καὶ ἀνεπιστημοσύνης εἴ τις σοι δοκεῖ ἐπιστήμων, ὅστις οὖν ἐθέλειν πλείω ἂν αἱρεῖσθαι ἢ ὅσα ἄλλος ἐπιστήμων ἢ πράττειν ἢ λέγειν, καὶ οὐ ταυτὰ τῷ ὁμοίῳ ἑαυτῷ εἰς τὴν αὐτὴν πρᾶξιν; Ἀλλ' ἴσως, ἔφη, ἀνάγκη τοῦτό γε οὕτως ἔχειν. Τί δαί, ὁ ἀνεπιστήμων οὐχ ὁμοίως μὲν ἐπιστήμονος πλεονεκτήσειν, ἀνομοίως δὲ ἀνεπιστήμονος; Ἴσως. Ὁ δὲ ἐπιστήμων σοφός; Ναί. Ὁ δὲ σοφὸς ἀγαθός; Φημί. Ὁ ἄρα ἀγαθός τε καὶ σοφὸς τοῦ μὲν ὁμοίου οὐκ ἐθελήσει πλεονεκτεῖν, τοῦ δ' ἀνομοίου τε καὶ ἐναντίου; Ἔοικεν, ἔφη. Ὁ δὲ κακός τε καὶ ἀμαθὴς τοῦ τε ὁμοίου καὶ τοῦ ἐναντίου; Φαίνεται. Οὐκ οὖν, ὦ Θρασύμαχε, ἦν δ' ἐγώ, ὁ ἄδικος ἡμῖν τοῦ ἀνομοίου τε καὶ ὁμοίου πλεονεκτεῖ; ἢ οὐχ οὕτως ἔλεγες; Ἔγωγε, ἔφη. Ὁ δὲ δίκαιος τοῦ μὲν ὁμοίου οὐ πλεονεκτήσει, τοῦ δὲ ἀνομοίου; Ναί. Ἔοικεν ἄρα, ἦν δ' ἐγώ, ὁ μὲν δίκαιος τῷ σοφῷ τε καὶ ἀγαθῷ, ὁ δὲ ἄδικος τῷ κακῷ τε καὶ ἀμαθεῖ. Κινδυνεύει. Ἀλλὰ μὴν ὡμολογοῦμεν, ᾧ γε ὅμοιος ἑκάτερος εἴη, τοιοῦτον καὶ ἑκάτερον εἶναι. Ὡμολογοῦμεν γάρ. Ὁ μὲν ἄρα δίκαιος ἡμῖν ἀναπέφανται ὢν ἀγαθός τε καὶ σοφός· ὁ δὲ ἄδικος ἀμαθής τε καὶ κακός.

62 Ἐπειδὴ δ' οὖν διωμολογησάμεθα τὴν δικαιοσύνην ἀρετὴν εἶναι καὶ σοφίαν, τὴν δ' ἀδικίαν κακίαν τε καὶ ἀμαθίαν, Εἶεν, ἦν δ' ἐγώ· τοῦτο μὲν ἡμῖν οὕτω κείσθω· ἔφαμεν δὲ δὴ καὶ ἰσχυρότερον εἶναι τὴν ἀδικίαν. (Plato Pol. 1, 350 d.)

63 *Ἀλλὰ τῇδέ πῃ σκέψασθαι χρή. πόλιν φαίης ἂν ἄδικον εἶναι καὶ ἄλλας πόλεις ἐπιχειρεῖν δουλοῦσθαι ἀδίκως καὶ καταδεδουλῶσθαι, πολλὰς δὲ καὶ ὑφ' ἑαυτῇ ἔχειν δουλωσαμένην; Πῶς γὰρ οὔκ; ἔφη· καὶ τοῦτό γε ἡ ἀρίστη μάλιστα ποιήσει καὶ τελεώτατα οὖσα ἄδικος. Μανθάνω, ἔφην, ὅτι σὸς οὗτος ἦν ὁ λόγος· ἀλλὰ τόδε περὶ αὐτοῦ σκοπῶ, πότερον οὖν ἡ κρείττων γιγνομένη πόλις πόλεως ἄνευ δικαιοσύνης τὴν δύναμιν ταύτην ἕξει, ἢ ἀνάγκη αὐτῇ μετὰ δικαιοσύνης; Εἰ μέν, ἔφη, ὡς σὺ ἄρτι ἔλεγες, ἔστιν ἡ δικαιοσύνη σοφία, μετὰ δικαιοσύνης, εἰ δ' ὡς ἐγώ, μετ' ἀδικίας. Πάνυ γε ἄγαμαι, ἦν δ' ἐγώ, ὦ Θρασύμαχε, ὅτι οὐκ ἐπινεύεις μόνον καὶ ἀνανεύεις, ἀλλὰ καὶ ἀποκρίνῃ πάνυ καλῶς. Σοὶ γάρ, ἔφη, χαρίζομαι. Εὖ γε σὺ ποιῶν· ἀλλὰ δὴ καὶ τόδε μοι χάρισαι καὶ λέγε· δοκεῖς ἂν οὖν ἢ πόλιν ἢ στρατόπεδον ἢ λῃστὰς ἢ κλέπτας ἢ ἄλλο τι ἔθνος, ὅσα κοινῇ ἐπί τι ἔρχεται ἀδίκως, πρᾶξαι ἄν τι δύνασθαι, εἰ ἀδικοῖεν ἀλλήλους; Οὐ δῆτα, ἦ δ' ὅς. Τί δ' εἰ μὴ ἀδικοῖεν; οὐ μᾶλλον; Πάνυ γε. Στάσεις γάρ που, ὦ Θρασύμαχε, ἥ γε ἀδικία καὶ μίση καὶ μάχας ἐν ἀλλήλοις παρέχει, ἡ δὲ δικαιοσύνη ὁμόνοιαν καὶ φιλίαν. ἦ γάρ; Ἔστω, ἦ δ' ὅς, ἵνα σοὶ μὴ διαφέρωμαι. Ἀλλ' εὖ γε σὺ ποιῶν, ὦ ἄριστε· τόδε δέ μοι λέγε· ἆρα εἰ τοῦτο ἔργον ἀδικίας, μῖσος ἐμποιεῖν ὅπου ἂν ἐνῇ, οὐ καὶ ἐλευθέροις τε καὶ δούλοις ἐγγινομένη μισεῖν ποιήσει ἀλλήλους καὶ στασιάζειν καὶ ἀδυνάτους εἶναι κοινῇ μετ' ἀλλήλων πράττειν; Πάνυ γε. Τί δέ, ἂν ἐν δυοῖν ἐγγένηται, οὐ διοίσονται καὶ μισήσουσι καὶ ἐχθροὶ ἔσονται ἀλλήλοις τε καὶ τοῖς δικαίοις; Ἔσονται, ἔφη. Ἐὰν δὲ δή, ὦ θαυμάσιε, ἐν ἑνὶ ἐγγένηται ἀδικία, μῶν μὴ ἀπολεῖ τὴν αὑτῆς δύναμιν; ἢ οὐδὲν*

ἧττον ἕξει; Μηδὲν ἧττον ἐχέτω, ἔφη. Οὐκ οὖν τοιάνδε τινὰ φαίνεται ἔχουσα τὴν δύναμιν, οἵαν ᾧ ἂν ἐγγένηται, εἴτε πόλει τινί, εἴτε γένει, εἴτε στρατοπέδῳ, εἴτε ἄλλῳ ὁτῳοῦν, πρῶτον μὲν ἀδύνατον αὐτὸ ποιεῖ πράττειν μεθ' αὑτοῦ διὰ τὸ στασιάζειν καὶ διαφέρεσθαι, ἔτι δ' ἐχθρὸν εἶναι ἑαυτῷ τε καὶ τῷ ἐναντίῳ παντὶ καὶ τῷ δικαίῳ; οὐχ οὕτως; Πάνυ γε. Καὶ ἐν ἑνὶ δὴ οἶμαι ἐνοῦσα ταῦτα πάντα ποιήσει, ἅπερ πέφυκεν ἐργάζεσθαι· πρῶτον μὲν ἀδύνατον αὐτὸν ποιήσει πράττειν στασιάζοντα καὶ οὐχ ὁμονοοῦντα αὐτὸν ἑαυτῷ, ἔπειτα ἐχθρὸν καὶ ἑαυτῷ καὶ τοῖς δικαίοις. Ἦ γάρ; Ναί. Δίκαιοι δέ γ' εἰσίν, ὦ φίλε, καὶ οἱ θεοί; Ἔστωσαν, ἔφη. Καὶ θεοῖς ἄρα ἐχθρὸς ἔσται, ὦ Θρασύμαχε, ὁ ἄδικος, ὁ δὲ δίκαιος φίλος. Εὐωχοῦ τοῦ λόγου, ἔφη, θαρρῶν· οὐ γὰρ ἔγωγέ σοι ἐναντιώσομαι, ἵνα μὴ τοῖσδε ἀπέχθωμαι. Ἴθι δή, ἦν δ' ἐγώ, καὶ τὰ λοιπά μοι τῆς ἑστιάσεως ἀποπλήρωσον ἀποκρινόμενος ὥσπερ καὶ νῦν· ὅτι μὲν γὰρ καὶ σοφώτεροι καὶ ἀμείνους καὶ δυνατώτεροι πράττειν οἱ δίκαιοι φαίνονται, οἱ δὲ ἄδικοι οὐδὲν πράττειν μετ' ἀλλήλων οἷοί τε. ἀλλὰ δὴ καὶ οὓς φαμὲν ἐρρωμένως πώποτέ τι μετ' ἀλλήλων κοινῇ πρᾶξαι, ἀδίκους ὄντας, τοῦτο οὐ παντάπασιν ἀληθὲς ἐλέγομεν· οὐ γὰρ ἂν ἀπείχοντο ἀλλήλων, κομιδῇ ὄντες ἄδικοι· ἀλλὰ δῆλον ὅτι ἐνῆν τις αὐτοῖς δικαιοσύνη, ἣ αὐτοὺς ἐποίει, μή τι καὶ ἀλλήλους γε καὶ ἐφ' οὓς ᾖεσαν ἀδικεῖν ἅμα, δι' ἣν ἔπραξαν ἃ ἔπραξαν· ὥρμησαν δὲ ἐπὶ τὰ ἄδικα ἀδικίᾳ, ἡμιμόχθηροι ὄντες, ἐπεὶ οἵ γε παμπόνηροι καὶ τελέως ἄδικοι τελέως εἰσὶ καὶ πράττειν ἀδύνατοι. ταῦτα μὲν οὖν ὅτι οὕτως ἔχει, μανθάνω, ἀλλ' οὐχ ὡς σὺ τὸ πρῶτον ἐτίθεσο· εἰ δὲ καὶ ἄμεινον ζῶσιν οἱ δίκαιοι τῶν ἀδίκων καὶ εὐδαιμονέστεροι εἰσίν,

ὅπερ τὸ ὕστερον προυθέμεθα σκέψασθαι, σκεπτέον. φαίνονται μὲν οὖν καὶ νῦν, ὥς γε μοι δοκεῖ, ἐξ ὧν εἰρήκαμεν· ὅμως δέ τι βέλτιον σκεπτέον· οὐ γὰρ περὶ τοῦ ἐπιτυχόντος ὁ λόγος, ἀλλὰ περὶ τοῦ ὅν τινα τρόπον χρὴ ζῆν. Σκόπει δή, ἔφη. Σκοπῶ, ἦν δ᾽ ἐγώ, καί μοι λέγε· δοκεῖ τί σοι εἶναι ἵππου ἔργον; Ἔμοιγε. Ἆρ᾽ οὖν τοῦτο ἂν θείης καὶ ἵππου καὶ ἄλλου ὁτουοῦν ἔργον, ὃ ἂν ἢ μόνῳ ἐκείνῳ ποιῇ τις ἢ ἄριστα; Οὐ μανθάνω, ἔφη. Ἀλλ᾽ ὧδε· ἔσθ᾽ ὅτῳ ἂν ἄλλῳ ἴδοις ἢ ὀφθαλμοῖς; Οὐ δῆτα. Τί δαί; ἀκούσαις ἄλλῳ ἢ ὠσίν; Οὐδαμῶς. Οὐκ οὖν δικαίως ἂν ταῦτα τούτων φαμὲν ἔργα εἶναι; Πάνυ γε. Τί δαί; μαχαίρᾳ ἂν ἀμπέλου κλῆμα ἀποτέμοις καὶ σμίλῃ καὶ ἄλλοις πολλοῖς; Πῶς γὰρ οὔ; Ἀλλ᾽ οὐδενί γ᾽ ἂν οἶμαι οὕτω καλῶς, ὡς δρεπάνῳ τῷ ἐπὶ τούτῳ ἐργασθέντι. Ἀληθῆ. Ἆρ᾽ οὖν οὐ τοῦτο τούτου ἔργον θήσομεν; Θήσομεν μὲν οὖν. Νῦν δὴ οἶμαι ἄμεινον ἂν μάθοις ὃ ἄρτι ἠρώτων πυνθανόμενος, εἰ οὐ τοῦτο ἑκάστου εἴη ἔργον, ὃ ἂν ἢ μόνον τι ἢ κάλλιστα τῶν ἄλλων ἀπεργάζηται. Ἀλλά, ἔφη, μανθάνω τε καί μοι δοκεῖ τοῦτο ἑκάστου πράγματος ἔργον εἶναι. Εἶεν, ἦν δ᾽ ἐγώ. Οὐκ οὖν καὶ ἀρετὴ δοκεῖ σοι εἶναι ἑκάστῳ, ᾧπερ καὶ ἔργον τι προστέτακται; ἴωμεν δὲ ἐπὶ τὰ αὐτὰ πάλιν· ὀφθαλμῶν φαμὲν ἔστι τι ἔργον. Ἔστιν. Ἆρ᾽ οὖν καὶ ἀρετὴ ὀφθαλμῶν ἐστι; Καὶ ἀρετή. Τί δέ, ὤτων ἦν τι ἔργον; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ ἀρετή; Καὶ ἀρετή. Τί δὴ γὰρ καὶ περὶ τῶν ἄλλων; οὐχ οὕτως; Οὕτως ἔχει δή. Ἆρ᾽ ἄν ποτε ὄμματα τὸ αὑτῶν ἔργον καλῶς ἀπεργάσαιντο μὴ ἔχοντα τὴν αὑτῶν οἰκείαν ἀρετήν, ἀλλ᾽ ἀντὶ τῆς ἀρετῆς κακίαν; Καὶ πῶς ἄν, ἔφη; τυφλότητα γὰρ ἴσως λέγεις ἀντὶ τῆς ὄψεως. Ἥτις, ἦν δ᾽ ἐγώ, αὑτῶν ἡ ἀρετή· οὐ γάρ πω τοῦτο ἐρωτῶ, ἀλλὰ

εἰ τῇ μὲν οἰκείᾳ ἀρετῇ τὸ αὑτῶν ἔργον εὖ ἐργάσεται τὰ ἐργαζόμενα, κακίᾳ δὲ κακῶς. Ἀληθές, ἔφη, τοῦτό γε λέγεις. Οὐκ οὖν καὶ ὦτα στερόμενα τῆς αὑτῶν ἀρετῆς κακῶς τὸ αὑτῶν ἔργον ἀπεργάσεται; Πάνυ γε. Τίθεμεν οὖν καὶ τὰ ἄλλα πάντα εἰς τὸν αὐτὸν τοῦτον λόγον; Ἔμοιγε δοκεῖ. Ἴθι δή, μετὰ ταῦτα τόδε σκέψαι. ψυχῆς ἔστι τι ἔργον, ὃ ἄλλῳ τῶν ὄντων οὐδ᾽ ἂν ἑνὶ πράξαις; οἷον τὸ τοιόνδε· τὸ ἐπιμελεῖσθαι καὶ ἄρχειν καὶ τὸ βουλεύεσθαι καὶ τὰ τοιαῦτα πάντα, ἔστιν ὅτῳ ἄλλῳ ἢ ψυχῇ δικαίως ἂν αὐτὰ ἀποδοῖμεν καὶ φαῖμεν ἴδια ἐκείνης εἶναι; Οὐδενὶ ἄλλῳ. Τί δ᾽ αὖ τὸ ζῆν; οὐ ψυχῆς ἔργον φήσομεν εἶναι; Μάλιστ᾽ ἄν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ ἀρετὴν φαμέν τινα ψυχῆς εἶναι; Φαμέν. Ἆρ᾽ οὖν ποτε, ὦ Θρασύμαχε, ψυχὴ τὰ αὑτῆς ἔργα εὖ ἀπεργάσεται στερομένη τῆς οἰκείας ἀρετῆς, ἢ ἀδύνατον; Ἀδύνατον. Ἀνάγκη ἄρα κακῇ ψυχῇ κακῶς ἄρχειν καὶ ἐπιμελεῖσθαι, τῇ δὲ ἀγαθῇ πάντα ταῦτα εὖ πράττειν. Ἀνάγκη. Οὐκ οὖν ἀρετὴν μὲν ξυνεχωρήσαμεν ψυχῆς εἶναι δικαιοσύνην, κακίαν δὲ ἀδικίαν; Ξυνεχωρήσαμεν γάρ. Ἡ μὲν ἄρα δικαία ψυχὴ καὶ ὁ δίκαιος ἀνὴρ εὖ βιώσεται, κακῶς δὲ ὁ ἄδικος; Φαίνεται, ἔφη, κατὰ τὸν σὸν λόγον. Ἀλλὰ μὴν ὅ γε εὖ ζῶν μακάριός τε καὶ εὐδαίμων, ὁ δὲ μὴ τἀναντία; Πῶς γὰρ οὔ; Ὁ μὲν δίκαιος ἄρα εὐδαίμων, ὁ δ᾽ ἄδικος ἄθλιος; Ἔστω, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν ἄθλιόν γε οὐ λυσιτελεῖ εἶναι, εὐδαίμονα δέ. Πῶς γὰρ οὔ; Οὐδέποτε ἄρα, ὦ μακάριε Θρασύμαχε, λυσιτελέστερον ἀδικία δικαιοσύνης. (Plato Polit. 1, 351 a.)

64 Ἐν ταυτῷ (IV, 441 c).

Ταῦτα μὲν ἄρα, ἦν δ᾽ ἐγώ, μόγις διανενεύκαμεν, καὶ ἡμῖν ἐπιεικῶς ὡμολόγηται, ταυτὰ μὲν ἐν πόλει,

ταυτὰ δὲ ἐν ἑνὶ ἑκάστου τῇ ψυχῇ γένη ἐνεῖναι καὶ ἴσα τὸν ἀριθμόν. Ἔστι ταῦτα. Οὐκ οὖν ἐκεῖνό γε ἤδη ἀναγκαῖον, ὡς πόλις ἦν σοφὴ καὶ ᾧ, οὕτω καὶ τὸν ἰδιώτην καὶ τούτῳ σοφὸν εἶναι; Τί μήν; Καὶ ᾧ δὴ ἀνδρεῖος ἰδιώτης καὶ ὥς, τούτῳ καὶ πόλιν ἀνδρείαν· καὶ οὕτω καὶ τἄλλα πάντα πρὸς ἀρετὴν ὡσαύτως ἀμφότερα ἔχειν; Ἀνάγκη. Καὶ δίκαιον δή, ὦ Γλαύκων, οἶμαι, φήσομεν ἄνδρα εἶναι τῷ αὐτῷ τρόπῳ ᾧπερ καὶ πόλις ἦν δικαία; Καὶ τοῦτο πᾶσα ἀνάγκη. Ἀλλ' οὔπω μὴν τοῦτό γε ἐπιλελήσμεθα, ὅτι ἐκείνη γε τῷ τὸ ἑαυτοῦ ἕκαστον ἐν αὐτῇ πράττειν, τριῶν ὄντων γενῶν, δικαία ἦν. Οὔ μοι δοκοῦμεν, ἔφη, ἐπιλελῆσθαι. Μνημονευτέον ἄρα ἡμῖν, ὅτι καὶ ἡμῶν ἕκαστος ὅταν τὰ αὑτοῦ ἐν αὑτῷ πράττῃ, οὕτω δικαιότερός τε ἔσται καὶ τὰ αὑτοῦ πράττων. Καὶ μάλα, ἦ δ' ὅς, μνημονευτέον. Οὐκ οὖν τῷ μὲν λογικῷ ἄρχειν προσῆκον, σοφῷ ὄντι, καὶ ἔχοντι τὴν ὑπὲρ ἁπάσης ψυχῆς προμήθειαν, τῷ δὲ θυμοειδεῖ ὑπηκόῳ εἶναι καὶ ξυμμάχῳ τούτου; Πάνυ γε. Ἆρ' οὖν οὐχ, ὥσπερ ἐλέγομεν, μουσικῆς καὶ γυμναστικῆς κρᾶσις σύμφωνα αὐτὰ ποιήσει, τὸ μὲν ἐπιτείνουσα καὶ τρέφουσα λόγοις τε καλοῖς καὶ μαθήμασι, τὸ δ' ἀνιεῖσα, καὶ παραμυθουμένη καὶ ἡμεροῦσα ἁρμονίᾳ τε καὶ ῥυθμῷ; Κομιδῇ γε, ἦ δ' ὅς. Καὶ τούτω δὴ οὕτω τραφέντε καὶ ὡς ἀληθῶς τὰ αὑτὰ μαθόντε καὶ παιδευθέντε, προστήσετον τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, ὃ δὴ κρεῖττον τῆς ψυχῆς ἐν ἑκάστῳ ἐστί, καὶ χρημάτων φύσει ἀπληστότατον· ὃ τηρήσετον μὴ τῷ πίμπλασθαι τῶν περὶ τὸ σῶμα καλουμένων ἡδονῶν πολὺ καὶ ἰσχυρὸν γενόμενον οὐ τὰ αὑτοῦ πράττῃ, ἀλλὰ καταδουλώσασθαι καὶ ἄρχειν ἐθέλῃ ὧν οὐ προσῆκον αὐτῷ γε ἦ, καὶ ξύμπαντα τὸν βίον πάντων ἀνατρέψῃ. Πάνυ μὲν

οὖν, ἔφη. Ἆρ' οὖν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ τοὺς ἔξωθεν πολεμίους τούτω ἂν κάλλιστα φυλαττοίτην ὑπὲρ ἁπάσης τῆς ψυχῆς τε καὶ τοῦ σώματος, τὸ μὲν κελευόμενον, τὸ δὲ προπολεμοῦν, ἑπόμενον δὲ τῷ ἄρχοντι καὶ τῇ ἀνδρείᾳ ἐπιτελοῦν τὰ βουλευθέντα. Ἔστι ταῦτα. Καὶ ἀνδρεῖον δή, οἶμαι, τούτῳ τῷ μέρει καλοῦμεν ἕνα ἕκαστον, ὅταν αὐτοῦ τὸ θυμοειδὲς διασώζῃ διά τε λυπῶν καὶ ἡδονῶν τὸ ὑπὸ τοῦ λόγου παραγγελθὲν δεινόν τε καὶ μή. Ὀρθῶς γε, ἔφη. Σοφὸν δέ γε ἐκείνῳ τῷ σμικρῷ μέρει, πῶς ἦρχέ τε ἐν αὐτῷ καὶ ταῦτα παρήγγελλεν, ἔχον αὖ κἀκεῖνο ἐπιστήμην ἐν αὐτῷ τὴν τοῦ ξυμφέροντος ἑκάστοτε καὶ ὅλῳ τῷ κοινῷ σφῶν αὐτῶν τριῶν ὄντων. Πάνυ μὲν οὖν. Τί δέ; σώφρονα οὐ τῇ φιλίᾳ καὶ τῇ ξυμφωνίᾳ τῇ αὐτῶν τούτων, ὅταν τό τε ἄρχον καὶ τὼ ἀρχομένω ὁμοδοξῶσιν, ὡς δεῖν ἄρχειν τὸ λογιστικόν, καὶ μὴ στασιάσωσιν αὐτῷ; Σωφροσύνη γ' οὖν, ἦ δ' ὅς, οὐκ ἄλλο τί ἐστιν ἢ τοῦτο, πόλεώς τε καὶ ἰδιώτου· ἀλλὰ μὲν δὴ δίκαιός γε, ὡς πολλάκις λέγομεν, τούτῳ καὶ οὕτως ἔσται. Πολλὴ ἀνάγκη. Τί οὖν; εἶπον ἐγώ· μή πῃ ἡμῖν ἀπαμβλύνεται ἄλλο τι δικαιοσύνη δοκεῖν εἶναι ἢ ὅπερ ἐν τῇ πόλει ἐφάνη; Οὐκ ἔμοιγε, ἔφη, δοκεῖ. Ὧδε γάρ, ἦν δ' ἐγώ, πάντα παντάπασιν ἂν βεβαιωσαίμεθα, εἴ τι ἡμῶν ἔτι ἐν τῇ ψυχῇ ἀμφισβητεῖ, τὰ φορτικὰ αὐτῷ προσφέροντες. Ποῖα δή; Οἷον εἰ δέοι ἡμᾶς ἀνομολογεῖσθαι περί τε ἐκείνης τῆς πόλεως καὶ τοῦ ἐκείνῃ ὁμοίως πεφυκότος τε καὶ τεθραμμένου ἀνδρός, ἐδόκει ἂν παρακαταθήκην χρυσίου ἢ ἀργυρίου δεξάμενος ὁ τοιοῦτος ἀποστερῆσαι, τίνα ἂν οἴει οἰηθῆναι τοῦτο αὐτὸν δρᾶσαι μᾶλλον ἢ ὅσοι μὴ τοιοῦτοι; Οὐδένα ἄν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ ἱεροσυλιῶν καὶ κλοπῶν καὶ προδοσιῶν, ἢ ἰδιαίτερον ἢ δημοσίᾳ πό-

λεων, ἐκτὸς ἂν οὗτος εἴη; Ἐκτός. Καὶ μὴν οὐδ' ὁπωστισγεοῦν ἄπιστος ἢ κατὰ τοὺς ὅρκους ἢ κατὰ τὰς ἄλλας ὁμολογίας. Πῶς γὰρ ἄν; Μοιχεῖαί γε μὴν καὶ γονέων ἀμέλειαι καὶ θεῶν ἀθεραπευσίαι παντὶ ἄλλῳ μᾶλλον ἢ τῷ τοιούτῳ προσήκουσι. Παντὶ μέντοι, ἔφη. Οὐκ οὖν τούτων πάντων αἴτιον, ὅτι αὐτὸ τῶν ἐν αὐτῷ ἕκαστον τὰ αὑτοῦ πράττει ἀρχῆς τε πέρι καὶ τοῦ ἄρχεσθαι; Τοῦτο μὲν δὴ οὖν καὶ οὐδὲν ἄλλο. Ἔτι οὖν ἕτερον ζητεῖς δικαιοσύνην εἶναι ἢ ταύτην τὴν δύναμιν, ἣ τοὺς τοιούτους ἄνδρας τε παρέχεται καὶ πόλεις; Μὰ Δί', ἦ δ' ὅς, οὐκ ἔγωγε. Τέλεον ἄρα ἡμῖν τὸ ἐνύπνιον ἀποτετέλεσται, ὃ ἔφαμεν ὑποπτεῦσαι, ὡς εὐθὺς ἀρχόμενοι τῆς πόλεως οἰκίζειν κατὰ θεόν τινα εἰς ἀρχήν τε καὶ τύπον τινὰ τῆς δικαιοσύνης κινδυνεύομεν ἐμβεβηκέναι. Παντάπασι μὲν οὖν. Τὸ δέ γε ἦν ἄρα, ὦ Γλαύκων, διὸ καὶ ὠφελεῖ εἴδωλόν τι τῆς δικαιοσύνης, τὸ τὸν μὲν σκυτοτομικὸν φύσει ὀρθῶς ἔχειν σκυτοτομεῖν καὶ ἄλλο μηδὲν πράττειν, τὸν δὲ τεκτονικὸν τεκταίνεσθαι, καὶ τὰ ἄλλα δὴ οὕτω. Φαίνεται. Τὸ δέ γε ἀληθές, τοιοῦτόν τι ἦν, ὡς ἔοικεν, ἡ δικαιοσύνη, ἀλλ' οὐ περὶ τὴν ἔξω πρᾶξιν τῶν αὑτοῦ, ἀλλὰ περὶ τὴν ἐντὸς ὡς ἀληθῶς, περὶ ἑαυτὸν καὶ τὰ αὑτοῦ, μὴ ἐάσαντα τὰ ἀλλότρια πράττειν ἕκαστον ἐν ἑαυτῷ μηδὲ πολυπραγμονεῖν πρὸς ἄλληλα τὰ ἐν τῇ ψυχῇ γένη· ἀλλὰ τῷ ὄντι τὰ οἰκεῖα ἐνθυμούμενον καὶ ἄρξαντα αὐτὸν αὑτοῦ καὶ κοσμήσαντα καὶ φίλον γενόμενον ἑαυτῷ καὶ συναρμόσαντα τρία ὄντα, ὥσπερ ὅρους τρεῖς ἁρμονίας ἀτεχνῶς, νεάτης τε καὶ ὑπάτης καὶ μέσης, καὶ εἰ ἄλλ' ἄττα μεταξὺ τυγχάνει ὄντα, πάντα ταῦτα ξυνδήσαντα καὶ παντάπασιν ἕνα γενόμενον καὶ ἐκ πολλῶν σώφρονα καὶ ἡρμοσμένον, οὕτω δὴ πράττειν ἤδη, ἐάν τι πράττῃ

ἢ περὶ χρημάτων κτῆσιν ἢ περὶ σώματος θεραπείαν ἢ καὶ περὶ πολιτικόν τι ἢ περὶ τὰ ἴδια ξυμβόλαια, ἐν πᾶσι τούτοις ἡγούμενον καὶ ὀνομάζοντα δικαίαν μὲν καὶ καλὴν πρᾶξιν, ἣ ἂν ταύτην τὴν ἕξιν σώζῃ τε καὶ συναπεργάζηται, σοφίαν δὲ τὴν ἐπιστατοῦσαν ταύτῃ τῇ πράξει ἐπιστήμην· ἄδικον δὲ πρᾶξιν, ἣ ἂν ἀεὶ ταύτην λύῃ· ἀμαθίαν τε, ὡς τὴν ταύτῃ ἂν ἐπιστατοῦσαν δόξαν. Παντάπασιν, ἦ δ' ὅς, ὦ Σώκρατες, ἀληθῆ λέγεις. Εἶεν, ἦν δ' ἐγώ, τὸν μὲν δίκαιον καὶ ἄνδρα καὶ πόλιν καὶ δικαιοσύνην, ὃ τυγχάνει ἐν αὐτοῖς ὄν, εἰ φαῖμεν εὑρηκέναι, οὐκ ἂν πάνυ τι, οἶμαι, δόξαιμεν ψεύδεσθαι. Μὰ Δί' οὐ μέντοι, ἔφη. Φῶμεν ἄρα; Φῶμεν. Ἔστω δή, ἦν δ' ἐγώ· μετὰ γὰρ τοῦτο σκεπτέον, οἶμαι, ἀδικίαν. Δῆλον. Οὐκ οὖν στάσιν τινὰ αὖ τριῶν ὄντων τούτων δεῖ αὐτὴν εἶναι καὶ πολυπραγμοσύνην καὶ ἐπανάστασιν μέρους τινὸς τῷ ὅλῳ τῆς ψυχῆς, ἵνα ἄρχῃ ἐν αὐτῇ οὐ προσῆκον, ἀλλὰ τοιούτου ὄντος φύσει, οἵου πρέπειν αὐτῷ δουλεύειν τῷ τοῦ ἀρχικοῦ γένους ὄντι· τοιαῦτ' ἄττα, οἶμαι, φήσομεν καὶ τὴν τούτων ταραχὴν καὶ πλάνην εἶναι, τήν τε ἀδικίαν καὶ ἀκολασίαν καὶ δειλίαν καὶ ἀμαθίαν καὶ ξυλλήβδην πᾶσαν κακίαν. Ταῦτα μὲν οὖν ταὐτῃ, ἔφη. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ τὸ ἄδικα πράττειν καὶ τὸ ἀδικεῖν καὶ αὖ τὸ δίκαια ποιεῖν, πάντα ταῦτα τυγχάνει ὄντα κατάδηλα ἤδη σαφῶς, ἥπερ καὶ ἡ ἀδικία καὶ δικαιοσύνη; Πῶς δή; Ὅτι, ἦν δ' ἐγώ, τυγχάνει οὐδὲν διαφέροντα τῶν ὑγιεινῶν τε καὶ νοσωδῶν, ὡς ἐκεῖνα ἐν σώματι, ταῦτα ἐν τῇ ψυχῇ. Πῇ; ἔφη. Τὰ μέν που ὑγιεινὰ ὑγίειαν ἐμποιεῖ, τὰ δὲ νοσώδη νόσον. Ναί. Οὐκ οὖν καὶ τὸ μὲν δίκαια πράττειν δικαιοσύνην ἐμποιεῖ, τὸ δὲ ἄδικα ἀδικίαν; Ἀνάγκη. Ἔστι δὲ τὸ μὲν ὑγίειαν ποιεῖν τὰ ἐν

τῷ σώματι κατὰ φύσιν καθιστάναι κρατεῖν τε καὶ κρατεῖσθαι ὑπ' ἀλλήλων, τὸ δὲ νόσον παρὰ φύσιν ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι ἄλλο ὑπ' ἄλλου. Ἔστι γάρ. Οὐκ οὖν αὖ, ἔφην, τὸ δικαιοσύνην ἐμποιεῖν τὰ ἐν τῇ ψυχῇ κατὰ φύσιν καθιστάναι κρατεῖν τε καὶ κρατεῖσθαι ὑπ' ἀλλήλων, τὸ δὲ ἀδικίαν παρὰ φύσιν ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι ἄλλο ὑπ' ἄλλου; Κομιδῇ, ἔφη. Ἀρετὴ μὲν ἄρα, ὡς ἔοικεν, ὑγίειά τέ τις ἂν εἴη καὶ κάλλος καὶ εὐεξία ψυχῆς· κακία δὲ νόσος τε καὶ αἶσχος καὶ ἀσθένεια. Ἔστιν οὕτως. Ἆρ' οὖν οὐ καὶ τὰ μὲν καλὰ ἐπιτηδεύματα εἰς ἀρετῆς κτῆσιν φέρει, τὰ δὲ αἰσχρὰ εἰς κακίας; Ἀνάγκη. Τὸ δὴ λοιπὸν ἤδη, ὡς ἔοικεν, ἡμῖν ἐστι σκέψασθαι, πότερον αὖ λυσιτελεῖ δίκαιά τε πράττειν καὶ καλὰ ἐπιτηδεύειν καὶ εἶναι δίκαιον, ἐάν τε λανθάνῃ ἐάν τε μή, τοιοῦτος ὤν, ἢ ἀδικεῖν τε καὶ ἄδικον εἶναι, ἐάν περ μὴ διδῷ δίκην μηδὲ βελτίων γίγνηται κολαζόμενος. Ἀλλά, ἔφη, ὦ Σώκρατες, γελοῖον ἔμοιγε φαίνεται τὸ σκέμμα γίγνεσθαι ἤδη, εἰ τοῦ μὲν σώματος τῆς φύσεως διαφθειρομένης δοκεῖ οὐ βιωτὸν εἶναι οὐδὲ μετὰ πάντων σιτίων τε καὶ ποτῶν καὶ παντὸς πλούτου καὶ πάσης ἀρχῆς, τῆς δὲ αὐτοῦ τούτου ᾧ ζῶμεν φύσεως ταραττομένης τε καὶ διαφθειρομένης βιωτὸν ἄρα ἔσται, ἄν περ τὶς ποιῇ ὃ ἂν βουληθῇ ἄλλο πλὴν τοῦτο ὁπόθεν κακίας μὲν καὶ ἀδικίας ἀπαλλαγήσεται, δικαιοσύνην δὲ καὶ ἀρετὴν κτήσεται, ἐπειδή γε ἐφάνη γε ὄντα ἑκάτερα οἷα ἡμεῖς διεληλύθαμεν. Γελοῖον γάρ, ἦν δ' ἐγώ· ἀλλ' ὅμως ἐπείπερ ἐνταῦθα ἐληλύθαμεν ὅσον οἷόν τε σαφέστατα κατιδεῖν ὅτι ταῦτα οὕτως ἔχει, οὐ χρὴ ἀποκάμνειν. Ἥκιστα, νὴ τὸν Δί', ἔφη, πάντων ἀποκνητέον.

65 *Πλάτωνος τῇ θ' Πολιτείᾳ* (588 b).

Εἶεν δή, εἶπον, ἐπειδὴ ἐνταῦθα λόγου γεγόναμεν, ἀναλάβωμεν τὰ πρῶτα λεχθέντα, δι' ἃ δεῦρ' ἥκομεν· ἦν δέ που λεγόμενον λυσιτελεῖν ἀδικεῖν τῷ τελέως μὲν ἀδίκῳ, δοξαζομένῳ δὲ δικαίῳ· ἢ οὐχ οὕτως ἐλέχθη; Οὕτω μὲν οὖν. Νῦν δή, ἔφην, αὐτῷ διαλεγώμεθα, ἐπειδὴ διωμολογησάμεθα τό τε ἀδικεῖν καὶ τὸ δίκαια πράττειν ἣν ἑκάτερον ἔχει δύναμιν. Πῶς, ἔφη; Εἰκόνα πλάσαντες τῆς ψυχῆς λόγῳ, ἵνα εἰδῇ ὁ ἐκεῖνα λέγων, οἷα ἔλεγε. Ποίαν τινά; ἦ δ' ὅς. Τῶν τοιούτων τινά, ἦν δ' ἐγώ, οἷαι μυθολογοῦνται παλαιαὶ γενέσθαι φύσεις, ἥ τε Χιμαίρας καὶ ἡ Σκύλλης καὶ Κερβέρου, καὶ ἄλλαι τινὲς συχναὶ λέγονται ξυμπεφυκυῖαι ἰδέαι πολλαὶ εἰς ἓν γενέσθαι. Λέγονται γάρ, ἔφη. Πλάττε τοίνυν μίαν μὲν ἰδέαν θηρίου ποικίλου καὶ πολυκεφάλου, ἡμέρων δὲ θηρίων ἔχοντος κεφαλὰς κύκλῳ καὶ ἀγρίων, καὶ δυνατοῦ μεταβάλλειν καὶ φύειν ἐξ αὑτοῦ πάντα ταῦτα. Δεινοῦ πλάστου, ἔφη, τὸ ἔργον· ὅμως δ' ἐπειδὴ εὐπλαστότερον κηροῦ καὶ τῶν τοιούτων λόγος, πεπλάσθω. Μίαν δὴ τοίνυν ἄλλην ἰδέαν λέοντος, μίαν δ' ἀνθρώπου, πολὺ δὲ μέγιστον ἔστω τὸ πρῶτον καὶ δεύτερον τὸ δεύτερον. Ταῦτα, ἔφη, ῥᾴω, καὶ πέπλασται. Σύναπτε τοίνυν αὐτὰ εἰς ἓν τρία ὄντα, ὥστε πῃ ξυμπεφυκέναι ἀλλήλοις. Συνῆπται, ἔφη. Περίπλασον δὴ αὐτοῖς ἔξωθεν ἑνὸς εἰκόνα, τὴν τοῦ ἀνθρώπου, ὥστε τῷ μὴ δυναμένῳ τὰ ἐντὸς ὁρᾶν, ἀλλὰ τὸ ἔξω μόνον ἔλυτρον ὁρῶντι, ἓν ζῶον φαίνεσθαι, ἄνθρωπον. Περιπέπλασται, ἔφη. Λέγωμεν δὴ τῷ λέγοντι ὡς λυσιτελεῖ τούτῳ ἀδικεῖν τῷ ἀνθρώπῳ, δίκαια δὲ πράττειν οὐ ξυμφέρει, ὅτι οὐδὲν ἄλλο φησὶν ἢ λυσιτελεῖν αὐτῷ τὸ παντοδαπὸν θηρίον εὐω-

χοῦντι ποιεῖν ἰσχυρὸν καὶ τὸν λέοντα καὶ τὰ περὶ τὸν λέοντα, τὸν δὲ ἄνθρωπον λιμοκτονεῖν καὶ ποιεῖν ἀσθενῆ, ὥστε ἕλκεσθαι ὅπῃ ἂν ἐκείνων ὁπότερον ἄγῃ, καὶ μηδὲν ἕτερον ἑτέρῳ συνεθίζειν μηδὲ φίλον ποιεῖν, ἀλλ' ἐᾶν αὐτὰ ἐν αὐτοῖς δάκνεσθαί τε καὶ μαχόμενα ἐσθίειν ἄλληλα. Παντάπασι γάρ, ἔφη, ταῦτα λέγει, ὁ τὸ ἀδικεῖν ἐπαινῶν. Οὐκ οὖν αὖ ὁ τὰ δίκαια λέγων λυσιτελεῖν φαίη ἂν δεῖν ταῦτα πράττειν καὶ ταῦτα λέγειν, ὅθεν τοῦ ἀνθρώπου ὁ ἐντὸς ἄνθρωπος ἔσται ἐγκρατέστατος, καὶ τοῦ πολυκεφάλου θρέμματος ἐπιμελήσεται, ὥσπερ γεωργὸς τὰ μὲν ἥμερα τρέφων καὶ τιθασσεύων, τὰ δ' ἄγρια ἀποκωλύων φύεσθαι, ξύμμαχον ποιησάμενος τὴν τοῦ λέοντος φύσιν, καὶ κοινῇ πάντων κηδόμενος, φίλα ποιησάμενος ἀλλήλοις τε καὶ αὑτῷ, οὕτω θρέψει; Κομιδῇ γὰρ αὖ λέγει ταῦτα ὁ τὸ δίκαιον ἐπαινῶν. Κατὰ πάντα δὴ τρόπον ὁ μὲν τὸ δίκαιον ἐγκωμιάζων ἀληθῆ ἂν λέγοι, ὁ δὲ τἄδικα ψεύδοιτο· πρός τε γὰρ ἡδονὴν καὶ πρὸς εὐδοξίαν καὶ ὠφέλειαν σκοπουμένῳ ὁ μὲν ἐπαινέτης τοῦ δικαίου ἀληθεύει, ὁ δὲ ψέκτης οὐδὲν ὑγιὲς οὐδὲ εἰδὼς ψέγει ὅ τι ψέγοι. Οὔ μοι δοκεῖ, ἦ δ' ὅς, οὐδαμῇ γε. Πείθωμεν τοίνυν αὐτὸν πρᾴως, οὐ γὰρ ἑκὼν ἁμαρτάνει, ἐρωτῶντες· Ὦ μακάριε, οὐ καὶ τὰ καλὰ καὶ τὰ αἰσχρὰ νόμιμα διὰ τὰ τοιαῦτα ἂν φαῖμεν γεγονέναι; τὰ μὲν καλὰ τὰ ὑπὸ τῷ ἀνθρώπῳ, μᾶλλον δ' ἴσως τὰ ὑπὸ τῷ θείῳ τὰ θηριώδη ποιοῦντα τῆς φύσεως, αἰσχρὰ δὲ τὰ ὑπὸ τῷ ἀγρίῳ τὸ ἥμερον δουλούμενα; συμφήσει, ἢ πῶς; Ἐὰν ἐμοί, ἔφη, πίθηται. Ἔστιν οὖν, εἶπον, ὅτῳ λυσιτελεῖ ἐκ τούτου τοῦ λόγου χρυσίον λαμβάνειν ἀδίκως, εἴπερ τοιόνδε τὶ γίγνεται, λαμβάνων τὸ χρυσίον, ἅμα καταδουλοῦται τὸ βέλτιστον αὑτοῦ τῷ μοχθηροτάτῳ; ἢ εἰ μὲν λαβὼν

χρυσόν, υἱὸν ἢ θυγατέρα ἐδουλοῦτο, καὶ ταῦτ᾽ εἰς ἀγρίων τε καὶ κακῶν ἀνδρῶν, οὐκ ἂν αὐτῷ ἐλυσιτέλει οὐδ᾽ ἂν πάμπολυ ἐπὶ τούτῳ λαμβάνοι; εἰ δὲ τὸ αὑτοῦ θειότατον ὑπὸ τῷ ἀθεωτάτῳ τε καὶ μιαρωτάτῳ δουλοῦται καὶ μηδὲν ἐλεεῖ, οὐκ ἄρα ἄθλιός ἐστι καὶ πολὺ ἐπὶ δεινοτέρῳ ὀλέθρῳ χρυσὸν δωροδοκεῖ ἢ Ἐριφύλη ἐπὶ τῇ τοῦ ἀνδρὸς ψυχῇ τὸν ὅρμον δεξαμένη; Πολὺ μέντοι, ἦ δ᾽ ὃς ὁ Γλαύκων· ἐγὼ γάρ σοι ὑπὲρ ἐκείνου ἀποκρινοῦμαι. Οὐκ οὖν καὶ τὸ ἀκολασταίνειν οἴει διὰ τὰ τοιαῦτα πάντα ψέγεσθαι, ὅτι ἀνίεται ἐν τῷ τοιούτῳ τὸ δεινὸν τὸ μέγα ἐκεῖνο καὶ πολυειδὲς θρέμμα εἰς ἐλευθερίαν πέρα τοῦ δέοντος; Δῆλον, ἔφη. Ἡ δ᾽ αὐθάδεια καὶ δυσκολία ψέγεται οὐχ ὅταν τὸ λεοντῶδες καὶ ὀφεῶδες αὔξηται καὶ συντείνηται ἀναρμόστως; Πάνυ μὲν οὖν. Τρυφὴ μὲν οὖν καὶ μαλθακία οὐκ ἐπὶ τῇ αὐτοῦ τούτου χαλάσει τε καὶ ἀνέσει ψέγεται, ὅταν ἐν αὐτῷ δειλίαν ἐμποιῇ; Τί μήν; Κολακεία δὲ καὶ ἀνελευθερία οὐχ ὅταν τὶς τὸ αὐτὸ τοῦτο τὸ θυμοειδὲς ὑπὸ τῷ ὀχλώδει θηρίῳ ποιῇ, καὶ ἕνεκα χρημάτων καὶ τῆς ἐκείνου ἀπληστίας προπηλακιζόμενον ἐθίζῃ ἐκ νέου ἀντὶ λέοντος πίθηκον γίγνεσθαι; Καὶ μάλα, ἔφη. Βαναυσία δὲ καὶ χειροτεχνία διὰ τί, οἴει, ὄνειδος φέρει; ἢ δι᾽ ἄλλο τι φήσομεν ἢ ὅταν τις ἀσθενὲς φύσει ἔχῃ τὸ τοῦ βελτίστου εἶδος, ὥστε μὴ ἂν δύνασθαι ἄρχειν τῶν ἐν αὑτῷ θρεμμάτων, ἀλλὰ θεραπεύειν ἐκεῖνα, καὶ τὰ θωπεύματα αὐτῶν μόνον δύνηται μανθάνειν; Ἔοικεν, ἔφη. Οὐκ οὖν ἵνα καὶ ὁ τοιοῦτος ὑφ᾽ ὁμοίου ἄρχηται, οἵουπερ ὁ βέλτιστος, δοῦλον αὐτὸν φαμὲν δεῖν εἶναι ἐκείνου τοῦ βελτίστου, καὶ ἔχοντος ἐν αὑτῷ τὸ θεῖον ἄρχον, οὐκ ἐπὶ βλάβῃ τῇ τοῦ δούλου οἰόμενοι δεῖν ἄρχεσθαι αὐτόν, ὥσπερ Θρασύμαχος ᾤετο τοὺς ἀρχο-

μένους, ἀλλ' ὡς ἄμεινον παντὶ ὑπὸ θείου καὶ φρονίμου ἄρχεσθαι, μάλιστα μὲν οἰκεῖον ἔχοντος ἐν ἑαυτῷ, εἰ δὲ μή, ἔξωθεν ἐφεστῶτος, ἵνα εἰς δύναμιν πάντες ὅμοιοι ὦμεν καὶ φίλοι, τῷ αὐτῷ κυβερνώμενοι; Καὶ ὀρθῶς γ', ἔφη. Δηλοῖ δέ γε, ἦν δ' ἐγώ, καὶ ὁ νόμος ὅτι τοιοῦτον βούλεται, πᾶσι τοῖς ἐν τῇ πόλει ξύμμαχος ὤν, καὶ ἡ τῶν παίδων ἀρχή, τὸ μὴ ἐᾶν ἐλευθέρους εἶναι, ἕως ἂν ἐν αὐτοῖς ὥσπερ ἐν πόλει πολιτείαν καταστήσωμεν, καὶ τὸ βέλτιστον θεραπεύσαντες τῷ παρ' ἡμῖν τοιούτῳ ἀντικαταστήσωμεν φύλακα ὅμοιον καὶ ἄρχοντα ἐν αὐτῷ· καὶ τότε δὴ ἐλευθερίαν ἀφίεμεν. Δηλοῖ γάρ, ἦ δ' ὅς.

66 *Πλάτωνος πολιτείας ι'* (612 a).

Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, τά τε ἄλλα ἀπελυσάμεθα ἐν τῷ λόγῳ, καὶ οὐ τοὺς μισθοὺς οὐδὲ τὰς δόξας δικαιοσύνης ἀπηνέγκαμεν, ὥσπερ Ἡσίοδόν τε καὶ Ὅμηρον ὑμεῖς ἔφατε, ἀλλ' αὐτοδικαιοσύνην αὐτῇ τῇ ψυχῇ ἄριστον εὕρομεν, καὶ ποιητέον εἶναι αὐτῇ τὰ δίκαια, ἐάν τ' ἔχῃ τὸν Γύγου δακτύλιον, ἐάν τε μή, καὶ πρὸς τοιούτῳ δακτυλίῳ τὴν Ἄιδος κυνέην; Ἀληθέστατα, ἔφη, λέγεις. Ἆρ' οὖν, ἦν δ' ἐγώ, ὦ Γλαύκων, νῦν ἤδη ἀνεπίφθονόν ἐστι πρὸς ἐκείνοις καὶ τοὺς μισθοὺς τῇ δικαιοσύνῃ καὶ τῇ ἄλλῃ ἀρετῇ ἀποδοῦναι, ὅσους καὶ οἵους τῇ ψυχῇ παρέχει παρ' ἀνθρώπων τε καὶ θεῶν, ζῶντός τε ἔτι τοῦ ἀνθρώπου καὶ ἐπειδὰν τελευτήσῃ; Παντάπασι μὲν οὖν, ἦ δ' ὅς. Ἆρ' οὖν ἀποδώσετέ μοι ἃ ἐδανείσασθε ἐν τῷ λόγῳ; Τί μάλιστα; Ἔδωκα ὑμῖν τὸν δίκαιον δοκεῖν ἄδικον εἶναι καὶ τὸν ἄδικον δίκαιον· ὑμεῖς γὰρ ἡγεῖσθε, κἂν εἰ μὴ δυνατὸν εἴη ταῦτα λανθάνειν καὶ θεοὺς καὶ ἀνθρώπους, ὅμως δοτέον εἶναι τοῦ λόγου ἕνεκα, ἵν' ἡ αὐτὴ δικαιο-

σύνη πρὸς ἀδικίαν αὐτὴν κριθείη· ἢ οὐ μνημονεύεις; Ἀδικοίην μέντ' ἄν, ἔφη, εἰ μή. Ἐπειδὴ τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, κεκριμέναι εἰσίν, ἐγὼ πάλιν ἀπαιτῶ ὑπὲρ δικαιοσύνης, ὥσπερ ἔχει δόξης καὶ παρὰ θεῶν καὶ παρ' ἀνθρώπων, καὶ ὑμᾶς ὁμολογεῖν περὶ αὐτῆς δοκεῖσθαι οὕτως, ἵνα καὶ τὰ νικητήρια κομίσηται, ἃ ἀπὸ τοῦ δοκεῖν κτωμένη δίδωσι τοῖς ἔχουσιν αὐτήν, ἐπειδὴ καὶ τὰ ἀπὸ τοῦ εἶναι ἀγαθὰ διδοῦσα ἐφάνη καὶ οὐκ ἐξαπατῶσα τοὺς τῷ ὄντι λαμβάνοντας αὐτήν. Δίκαια, ἔφη, αἰτεῖ. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, πρῶτον μὲν τοῦτο ἀποδώσετε, ὅτι θεούς γε οὐ λανθάνει ἑκάτερος αὐτῶν οἷος ἐστίν; Ἀποδώσομεν, ἔφη. Εἰ δὲ μὴ λανθάνετον, ὃ μὲν θεοφιλὴς ἂν εἴη ὃ δὲ θεομισής, ὥσπερ καὶ κατ' ἀρχὰς ὡμολογοῦμεν. Ἔστι ταῦτα. Τῷ δὲ θεοφιλεῖ οὐχ ὁμολογήσομεν, ὅσα γε ἀπὸ θεῶν γίγνεται, πάντα γίγνεσθαι ὡς οἷόν τε ἄριστα, εἰ μή τι ἀναγκαῖον αὐτῷ κακὸν ἐκ προτέρας ἁμαρτίας ὑπῆρχεν; Πάνυ μὲν οὖν. Οὕτως ἄρα ὑποληπτέον περὶ τοῦ δικαίου ἀνδρός, ἐάν τ' ἐν πενίᾳ γίγνηται ἐάν τ' ἐν νόσοις ἤ τινι ἄλλῳ τῶν δοκούντων κακῶν, ὡς τούτῳ ταῦτα εἰς ἀγαθόν τι τελευτήσει ζῶντι ἢ καὶ ἀποθανόντι· οὐ γὰρ δὴ ὑπό γε θεῶν ποτε ἀμελεῖται ὃς ἂν προθυμεῖσθαι ἐθέλῃ δίκαιος γίγνεσθαι, καὶ ἐπιτηδεύων ἀρετὴν εἰς ὅσον δυνατὸν ἀνθρώπῳ ὁμοιοῦσθαι θεῷ. Εἰκός γ', ἔφη, τὸν τοιοῦτον μὴ ἀμελεῖσθαι ὑπὸ τοῦ ὁμοίου. Οὐκ οὖν περὶ τοῦ ἀδίκου τἀναντία τούτων δεῖ διανοεῖσθαι; Σφόδρα γε. Τὰ μὲν δὴ παρὰ θεῶν τοιαῦτ' ἄττ' ἂν εἴη νικητήρια τῷ δικαίῳ. Κατὰ γοῦν ἐμὴν δόξαν, ἔφη. Τί δ', ἦν δ' ἐγώ, παρ' ἀνθρώπων; ἆρα οὐχ ὧδε ἔχει, εἰ δεῖ τὸ ὂν τιθέναι; οὐχ οἱ μὲν δεινοί τε καὶ ἄδικοι δρῶσιν ὅπερ οἱ δρομεῖς, ὅσοι ἂν θέωσιν εὖ ἀπὸ τῶν κάτω, ἀπὸ δὲ τῶν

ἄνω μή, τὸ μὲν πρῶτον ὀξέως ἀποπηδῶσι, τελευτῶντες δὲ καταγέλαστοι γίγνονται, τὰ ὦτα ἐπὶ τῶν ὤμων ἔχοντες καὶ ἀστεφάνωτοι ἀποτρέχοντες· οἱ δὲ τῇ ἀληθείᾳ δρομικοὶ εἰς τέλος ἐλθόντες τά τε ἆθλα λαμβάνουσι καὶ στεφανοῦνται; οὐχ οὕτω καὶ περὶ τῶν δικαίων τὸ πολὺ ξυμβαίνει, πρὸς τὸ τέλος ἑκάστης πράξεως καὶ ὁμιλίας καὶ τοῦ βίου εὐδοκιμοῦσί τε καὶ τὰ ἆθλα παρὰ τῶν ἀνθρώπων φέρονται; Καὶ μάλα. Ἀνέξει ἄρα λέγοντος ἐμοῦ περὶ τούτων ἅπερ αὐτὸς ἔλεγες περὶ τῶν ἀδίκων; ἐρῶ γὰρ δή, ὅτι οἱ μὲν δίκαιοι, ἐπειδὰν πρεσβύτεροι γένωνται, ἐν τῇ αὐτῶν πόλει ἄρχουσί τε ἃς ἂν βούλωνται ἀρχάς, γαμοῦσί τε ὁπόθεν ἂν βούλωνται, ἐκδιδόασί τε εἰς οὓς ἂν ἐθέλωσι· καὶ πάντα ἃ σὺ περὶ ἐκείνων, ἐγὼ νῦν λέγω περὶ τῶνδε· καὶ αὖ καὶ περὶ τῶν ἀδίκων, ὅτι οἱ πολλοὶ αὐτῶν, καὶ ἐὰν νέοι ὄντες λάθωσιν, ἐπὶ τέλους τοῦ δρόμου αἱρεθέντες καταγέλαστοί εἰσι καὶ γέροντες γιγνόμενοι ἄθλιοι προπηλακίζονται, ὑπὸ ξένων τε καὶ ἀστῶν μαστιγούμενοι, καὶ ἃ ἀγροῖκα ἔφησθα σὺ εἶναι, ἀληθῆ λέγων, εἶτα στρεβλώσονται καὶ ἐκκαυθήσονται· πάντα ἐκεῖνα οἴου καὶ ἐμοῦ ἀκηκοέναι ὡς πάσχουσιν· ἀλλ' ὃ λέγω ὅρα εἰ ἀνέξῃ. Καὶ πάνυ, ἔφη· δίκαια γὰρ λέγεις. Ἃ μὲν τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, ζῶντι τῷ δικαίῳ παρὰ θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων ἆθλά τε καὶ μισθοὶ καὶ δῶρα γίγνεται πρὸς ἐκείνοις τοῖς ἀγαθοῖς, οἷς αὐτὴ παρείχετο ἡ δικαιοσύνη, τοιαῦτ' ἂν εἴη. Καὶ μάλα, ἔφη, καλά τε καὶ βέβαια. Ταῦτα τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, οὐδέν ἐστι πλήθει οὐδὲ μεγέθει πρὸς ἐκεῖνα, ἃ τελευτήσαντα ἑκάτερον περιμένει.

67 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κλειτοφῶντος* (408 e).

Τί τοὐντεῦθεν; πῶς ἄρχεσθαι δεῖν φαμὲν δι-

καιοσύνης περὶ μαθήσεως; ὥσπερ ἂν εἴ τις ἡμᾶς προύτρεπε τοῦ σώματος ἐπιμέλειαν ποιεῖσθαι μηδὲν προνοοῦντας ὁρῶν, καθάπερ παῖδας, ὡς ἔστι τις γυμναστικὴ καὶ ἰατρική, καὶ ἔπειτα ὠνείδιζε, λέγων ὡς αἰσχρὸν πυρῶν μὲν καὶ κριθῶν καὶ ἀμπέλων ἐπιμέλειαν πᾶσαν ποιεῖσθαι καὶ ὅσα τοῦ σώματος ἕνεκα διαπονούμεθά τε καὶ κτώμεθα, τούτου δ' αὐτοῦ μηδεμίαν τέχνην μηδὲ μηχανήν, ὅπως ὡς βέλτιστον ἔσται τὸ σῶμα, ἐξευρίσκειν, καὶ ταῦτα οὖσαν· εἰ δ' ἐπανειρόμεθα τὸν ταῦθ' ἡμᾶς προτρέποντα, λέγεις δὲ εἶναι τίνας ταύτας τὰς τέχνας; εἶπεν ἂν ἴσως ὅτι γυμναστικὴ καὶ ἰατρική· καὶ νῦν δὴ τίνα φαμὲν εἶναι τὴν ἐπὶ τῇ τῆς ψυχῆς ἀρετῇ τέχνην, λεγέσθω. Ὁ δὴ δοκῶν αὐτῶν ἐρρωμενέστατος εἶναι πρὸς ταῦτα ἀποκρινόμενος εἶπε ταύτην τὴν τέχνην εἶναι, ἥνπερ ἀκούεις σὺ λέγοντος, ἔφη, Σωκράτους, οὐκ ἄλλην ἢ δικαιοσύνην. Εἰπόντος δέ μου, μή μοι τὸ ὄνομα εἴπῃς μόνον, ἀλλὰ ὡδί, ἰατρική που τις λέγεται τέχνη, ταύτης δέ ἐστι διττὰ τὰ ἀποτελούμενα, τὸ μὲν ἰατροὺς ἀεὶ πρὸς τοῖς οὖσιν ἑτέρους ἐξεργάζεσθαι, τὸ δὲ ὑγίειαν· ἔστι δὲ τούτων θάτερον οὐκέτι τέχνη, τῆς τέχνης δὲ τῆς διδασκούσης τε καὶ διδασκομένης ἔργον, ὃ δὴ λέγομεν ὑγίειαν. καὶ τεκτονικῆς δὲ κατὰ ταυτά, οἰκία τε καὶ τεκτονική, τὸ μὲν ἔργον τὸ δὲ δίδαγμα· τῆς δὴ δικαιοσύνης ὡσαύτως τὸ μὲν δικαίους ἔστω ποιεῖν, καθάπερ ἐκεῖ τοὺς τεχνίτας ἑκάστους, τὸ δ' ἕτερον, ὃ δύναται ποιεῖν ἡμῖν ἔργον ὁ δίκαιος, τί τοῦτο φαμέν; εἰπέ. Οὗτος μέν, ὡς οἶμαι, τὸ συμφέρον ἀπεκρίνατο· ἄλλος δὲ τὸ δέον, ἕτερος δὲ τὸ ὠφέλιμον· ὁ δὲ τὸ λυσιτελοῦν. Ἐπανῄειν δὴ ἐγὼ λέγων, ὅτι ἐκεῖ τά γε ὀνόματα ταῦτ' ἐστὶν ἐν ἑκάστῃ τῶν τεχνῶν, ὀρθῶς πράττειν, λυσιτελοῦντα, ὠφέ-

λιμα, καὶ τὰ τοιαῦτα· ἀλλὰ πρὸς ὅ τι ταῦτα πάντα τείνει, ἐρεῖ τὸ ἴδιον ἑκάστῃ τέχνῃ, οἷον ἡ τεκτονική, τὸ εὖ, τὸ καλῶς, τὸ δεόντως, ὥστε τὰ ξύλινα φήσει σκεύη γίγνεσθαι· ἃ δὴ οὐκ ἔστι τέχνη. λεγέσθω δὴ καὶ τὸ τῆς δικαιοσύνης ὡσαύτως. Τελευτῶν ἀπεκρίνατό τις, ὦ Σώκρατες, μοι τῶν σῶν ἑταίρων ὃς δὴ κομψότατα ἔδοξεν εἰπεῖν, ὅτι τοῦτ᾽ εἴη τὸ τῆς δικαιοσύνης ἴδιον ἔργον, ὃ τῶν ἄλλων οὐδεμιᾶς, φιλίαν ἐν ταῖς πόλεσι ποιεῖν. οὗτος δ᾽ αὖ ἐρωτώμενος τὴν φιλίαν ἀγαθόν τε ἔφη εἶναι καὶ οὐδέποτε κακόν· τὰς δὲ τῶν παίδων φιλίας καὶ τὰς τῶν θηρίων, ἃς ἡμεῖς τοῦτο τοὔνομα ἐπονομάζομεν, οὐκ ἀπεδέχετο εἶναι φιλίας ἐπανερωτώμενος· συνέβαινε γὰρ αὐτῷ τὰ πλείω τὰς τοιαύτας βλαβερὰς ἢ ἀγαθὰς εἶναι· φεύγων δὴ τὸ τοιοῦτον οὐδὲ φιλίας ἔφη τὰς τοιαύτας εἶναι, ψευδῶς δὲ ὀνομάζειν αὐτὰς τοὺς οὕτως ὀνομάζοντας· τὴν δὲ ὄντως καὶ ἀληθῶς φιλίαν εἶναι σαφέστατα ὁμόνοιαν. τὴν δὲ ὁμόνοιαν ἐρωτώμενος εἰ ὁμοδοξίαν εἶναι λέγοι ἢ ἐπιστήμην, τὴν μὲν ὁμοδοξίαν ἠτίμαζεν· ἠναγκάζοντο γὰρ πολλαὶ καὶ βλαβεραὶ γίγνεσθαι ὁμοδοξίαι ἀνθρώπων· τὴν δὲ φιλίαν ἀγαθὸν ὡμολογήκει πάντως εἶναι καὶ δικαιοσύνης ἔργον. ὥστε ταυτὸ ἔφησεν εἶναι ὁμόνοιαν καὶ ἐπιστήμην οὖσαν, ἀλλὰ οὐ δόξαν. ὅτε δὴ ἐνταῦθα ἦμεν τοῦ λόγου ἀποροῦντες, οἱ παρόντες ἱκανοὶ ἦσαν ἐπιπλήττειν τε αὐτῷ καὶ λέγειν, ὅτι περιδεδράμηκεν εἰς ταυτὸν ὁ λόγος τοῖς πρώτοις· καὶ ἔλεγον ὅτι καὶ ἡ ἰατρικὴ ὁμόνοιά τις ἐστι, καὶ ἅπασαι αἱ τέχναι, καὶ περὶ ὅτου εἰσὶν ἔχουσι λέγειν· τὴν δὲ ὑπὸ σοῦ λεγομένην, δικαιοσύνην ἢ ὁμόνοιαν, ὅπου τείνουσά ἐστι διαπέφευγε, καὶ ἄδηλον αὐτῆς ὅ τι ποτέ ἐστι τὸ ἔργον. ταῦτα, ὦ Σώκρατες, ἐγὼ τελευτῶν καὶ σεαυτὸν ἠρώτων, καὶ

εἶπάς μοι δικαιοσύνης εἶναι τοὺς μὲν ἐχθροὺς βλάπτειν, τοὺς δὲ φίλους εὖ ποιεῖν. ὕστερον δὲ ἐφάνη βλάπτειν γε οὐδέποτε ὁ δίκαιος οὐδέν· ἅπαντα γὰρ ἐπ' ὠφελείᾳ πάντας δρᾶν.

68 *Πλάτωνος* (Alcib. 1, 109 e).

Τί δ' εἰ μὴ ἔχω; οὐκ ἂν οἴει με ἄλλως εἰδέναι περὶ τῶν δικαίων καὶ ἀδίκων; Ναί, εἴ γε εὕροις. Ἀλλ' οὐκ ἂν εὑρεῖν με ἡγῇ; Καὶ μάλα γε, εἰ ζητήσαις. Εἶτα ζητῆσαι οὐκ ἂν οἴει με; Ἔγωγε, εἰ οἰηθείης γε μὴ εἰδέναι.

69 *Ἐν ταυτῷ* (110 d).

Εὑρὼν μὲν ἄρα οὐκ οἶσθα τὰ δίκαια καὶ τἄδικα; Οὐ πάνυ φαίνομαι. Ἀλλὰ μὴν ἄρτι γε οὐδὲ μαθὼν ἔφησθα εἰδέναι· εἰ δὲ μήθ' εὗρες μήτ' ἔμαθες, πῶς οἶσθα καὶ πόθεν; Ἀλλ' ἴσως τοῦτό σοι οὐκ ὀρθῶς ἀπεκρίθη, τὸ φάναι εἰδέναι αὐτὸς ἐξευρών. Τὸ δὲ πῶς εἶχεν; Ἔμαθον, οἶμαι, καὶ ἐγώ, ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι. Πάλιν εἰς τὸν αὐτὸν ἥκομεν λόγον· παρὰ τοῦ; φράζε κἀμοί. Παρὰ τῶν πολλῶν. Οὐκ εἰς σπουδαίους γε διδασκάλους καταφεύγεις εἰς τοὺς πολλοὺς ἀναφέρων.

70 *Ἐν ταυτῷ* (114 e).

Ἀποκρίνου δή· καὶ ἂν μὴ αὐτὸς σὺ σαυτοῦ ἀκούσῃς ὅτι τὰ δίκαια καὶ συμφέροντά ἐστιν, ἄλλῳ γε λέγοντι μὴ πιστεύσῃς. Οὔ τοι· ἀλλ' ἀποκριτέον· καὶ γὰρ οὐδὲν οἶμαι βλαβήσεσθαι. Μαντικὸς γὰρ εἶ. καί μοι λέγε, τῶν δικαίων φῂς ἔνια μὲν συμφέρειν ἔνια δ' οὔ; Ναί. Τί δέ, τὰ μὲν καλὰ εἶναι αὐτῶν τὰ δ' οὔ; Πῶς τοῦτο ἐρωτᾷς; Εἴ τις σοι ἤδη ἔδοξεν αἰσχρὰ μέν, δίκαια δέ, πράττειν; Οὐκ ἔμοιγε. Ἀλλὰ πάντα τὰ δίκαια καὶ καλά; Ναί. Τί δ' αὖ τὰ καλά; πότερον πάντα ἀγαθά, ἢ τὰ μὲν τὰ δ' οὔ; Οἶμαι ἔγωγε,

ὦ Σώκρατες, ἔνια τῶν καλῶν κακὰ εἶναι. Ἠ καὶ αἰσχρὰ ἀγαθά; Ναί. Ἆρα λέγεις τὰ τοιάδε, οἷον πολλοὶ ἐν πολέμῳ βοηθήσαντες ἑταίρῳ ἢ οἰκείῳ, τραύματά τε ἔλαβον καὶ ἀπέθανον· οἱ δ' οὐ βοηθήσαντες, δέον, ὑγιεῖς ἀπῆλθον; Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ οὖν τὴν τοιαύτην βοήθειαν καλὴν μὲν λέγεις κατὰ τὴν ἐπιχείρησιν τοῦ σῶσαι οὓς ἔδει, τοῦτο δέ ἐστιν ἀνδρεία ἢ οὔ; Ναί. Κακὴν δέ γε, κατὰ τοὺς θανάτους τε καὶ τὰ ἕλκη· ἦ γάρ; Ναί. Ἆρ' οὖν οὐκ ἄλλο μὲν ἡ ἀνδρεία ἄλλο δὲ ὁ θάνατος; Πάνυ γε. Οὐκ ἄρα κατὰ ταυτόν γ' ἐστὶ καλὸν καὶ κακὸν τὸ τοῖς φίλοις βοηθεῖν. Οὐ φαίνεται. Ὅρα τοίνυν εἴ γε καλὸν καὶ ἀγαθόν, ὥσπερ καὶ ἐνταῦθα· κατὰ τὴν ἀνδρείαν γὰρ ὁμολογεῖς καλὸν εἶναι τὴν βοήθειαν· τοῦτ' οὖν αὐτὸ σκόπει, τὴν ἀνδρείαν ἀγαθὸν ἢ κακόν; ὧδε δὲ σκόπει· σὺ πότερ' ἂν δέξαιό σοι εἶναι ἀγαθὰ ἢ κακά; Ἀγαθά. Οὐκ οὖν τὰ μέγιστα; Μάλιστα. Καὶ ἥκιστα τῶν τοιούτων δέξαι' ἂν στέρεσθαι; Πῶς γὰρ οὔ; Πῶς οὖν λέγεις περὶ ἀνδρείας, ἐπὶ πόσῳ ἂν αὐτοῦ δέξαιο στέρεσθαι; Οὐδὲ ζῆν ἂν ἔγωγε δεξαίμην δειλὸς ὤν. Ἔσχατον ἆρά σοι δοκεῖ κακὸν εἶναι ἡ δειλία; Ἔμοιγε. Ἐξίσου τῷ τεθνάναι, ὡς ἔοικε. Φημί. Οὐκ οὖν θανάτῳ τε καὶ δειλίᾳ ἐναντιώτατον ζωὴ καὶ ἀνδρεία; Ναί. Καὶ τὰ μὲν μάλιστα εἶναι βούλοιό σοι, τὰ δὲ ἥκιστα; Ναί. Ἆρ' ὅτι τὰ μὲν ἄριστα ἡγῇ, τὰ δὲ κάκιστα; Πάνυ γε. (Ἐν τοῖς ἀρίστοις ἆρα σὺ ἡγῇ ἀνδρείαν εἶναι, κἂν τοῖς κακίστοις θάνατον; Ἔγωγε.) Τὸ ἄρα βοηθεῖν ἐν πολέμῳ τοῖς φίλοις, ᾗ μὲν καλόν, κατὰ ἀγαθοῦ πρᾶξιν τὴν τῆς ἀνδρείας, καλὸν αὐτὸ προσεῖπας; Φαίνομαί γε. Κατὰ δὲ κακοῦ πρᾶξιν τὴν τοῦ θανάτου, κακόν; Ναί. Οὐκ οὖν δίκαιον ὧδε προσαγορεύειν ἑκάστην τῶν πράξεων, εἴπερ ᾗ κακὸν

ἀπεργάζεται, κακὴν καλεῖς, καὶ ᾗ ἀγαθόν, ἀγαθὴν κλητέον; Ἔμοιγε δοκεῖ. Ἆρ᾿ οὖν καὶ ᾗ ἀγαθόν, καλόν, ᾗ δὲ κακόν, αἰσχρόν; Πάνυ γε. Τὴν ἄρ᾿ ἐν τῷ πολέμῳ τοῖς φίλοις βοήθειαν λέγων καλὴν μὲν εἶναι κακὴν δέ, οὐδὲν διαφερόντως λέγεις, ἢ εἰ προσεῖπες αὐτὴν ἀγαθὴν μὲν κακὴν δὲ οὐδαμῶς; Ἀληθῆ μοι δοκεῖς λέγειν, ὦ Σώκρατες. Οὐδὲν ἄρα τῶν καλῶν, καθόσον καλόν, κακόν, οὐδὲ τῶν αἰσχρῶν, καθόσον αἰσχρόν, ἀγαθόν. Οὐ φαίνεται. Ἔτι τοίνυν καὶ ὧδε σκέψαι· ὅστις καλῶς πράττει, οὐχὶ καὶ εὖ πράττει; Ναί. Οἱ δ᾿ εὖ πράσσοντες, οὐκ εὐδαίμονες; Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν ἡ εὐδαιμονία δι᾿ ἀγαθῶν κτῆσιν; Μάλιστα. Κτῶνται δὲ ταῦτα τῷ εὖ καὶ καλῶς πράττειν; Ναί. Τὸ γοῦν καλῶς πράττειν ἀγαθόν; Πῶς δ᾿ οὔ; Οὐκ οὖν καλὸν ἡ εὐπραγία; Ναί. Ταυτὸν ἄρα ἐφάνη ἡμῖν πάλαι αὖ καλόν τε καὶ ἀγαθόν. Φαίνεται. Ὅ τι ἂν ἄρα εὕρωμεν καλόν τε καὶ ἀγαθόν, εὑρήσομεν ἔκ γε τούτου τοῦ λόγου. Ἀνάγκη. Τί δέ, τὰ ἀγαθὰ συμφέρει, ἢ οὔ; Συμφέρει. Μνημονεύεις οὖν περὶ τῶν δικαίων πῶς ὡμολογήσαμεν; Οἶμαί γε τοὺς τὰ δίκαια πράττοντας ἀναγκαῖον εἶναι καλὰ πράττειν. Οὐκ οὖν τοὺς τὰ καλά, ἀγαθά; Ναί. Τὰ δ᾿ ἀγαθὰ συμφέρει; Ναί. Τὰ δίκαια ἄρα, ὦ Ἀλκιβιάδη, συμφέροντά ἐστι. Ἔοικε.

ΠΕΡΙ ΑΔΙΚΙΑΣ ΚΑΙ ΦΙΛΑΡΓΥΡΙΑΣ ΚΑΙ ΠΛΕΟΝΕΞΙΑΣ. Ι.

1 Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν (1).

Πάλαι ποτ᾿ ἐστὶ τοῦτό μοι δεδογμένον·
ὁ μὲν δίκαιος τοῖς πέλας πέφυκ᾿ ἀνήρ,

ὁ δ' εἰς τὸ κέρδος λῆμ' ἔχων ἀνειμένον
φίλοις τ' ἄχρηστος καὶ συναλλάξαι βαρύς.

2 *Σεραπίωνος.*

Οὐ τῆς ἐμῆς ἕκατι καρδίας φέρεις
λόγους προσηνεῖς, τοῦ δὲ σοῦ κέρδους χάριν.

3 *Μενάνδρου.*

Πλεονεξία μέγιστον ἀνθρώποις κακόν.
οἳ γὰρ θέλοντες προσλαβεῖν τὰ τῶν πέλας
ἀποτυγχάνουσι πολλάκις νικώμενοι,
τὰ δ' ἴδια προστιθέασι τοῖς ἀλλοτρίοις.

4 *Διφίλου.*

Ἆρ' ἐστὶν ἀνοητότατον αἰσχροκερδία;
πρὸς τῷ λαβεῖν γὰρ ὢν ὁ νοῦς τἄλλ' οὐχ ὁρᾷ.

5 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἰ μὴ τὸ λαβεῖν ἦν, οὐδὲ εἷς πονηρὸς ην.
Φιλαργυρία τοῦτ' ἐστίν, ὅταν ἀφεὶς σκοπεῖν
τὰ δίκαια τοῦ κέρδους διαπαντὸς δοῦλος ᾖς.

6 *Μενάνδρου.*

Λέγεις· ἃ δὲ λέγεις, ἕνεκα τοῦ λαβεῖν λέγεις.

7 *Εὐριπίδου Ἰξίονι.*

Ὅστις γὰρ ἐπὶ τὸ πλέον ἔχειν πέφυκ' ἀνήρ,
οὐδὲν φρονεῖ δίκαιον οὐδὲ βούλεται,
φίλοις τ' ἄμικτός ἐστι καὶ πάσῃ πόλει.

8 *Θεοδέκτου.*

Ὦ καλλιφεγγῆ λαμπάδ' εἱλίσσων φλογὸς
ἥλιε, ποθεινὸν πᾶσιν ἀνθρώποις σέλας,
εἶδές τιν' ἄλλον πώποτ' εἰς οὕτω μέγαν
ἐλθόντ' ἀγῶνα καὶ δυσέκφευκτον κρίσιν,
ὅπου κατηγορεῖ μὲν ἐν λόγοισί μου

γυνή, πρὸς ὃν δ' εἴρηκε, τυγχάνει πόσις,
κρατοῦσι δ' οἵπερ καὶ κατηγοροῦσί μου;

9 Ἀριστοφάνους (Eccles. 206).

Τὰ δημόσια γὰρ μισθοφοροῦντες χρήματα,
ἴδια σκοπεῖσθ' ἕκαστος, ὅ τι τις κερδανεῖ·
τὸ δὲ κοινὸν ὥσπερ Αἴσιμος κυλίνδεται.

10 Ἡσιόδου ἔργων (320).

Χρήματα δ' οὐχ ἁρπακτὰ θεόσδοτα πολλὸν ἀμείνω.

11 Ἡσιόδου ἔργων (40).

Νήπιοι, οὐδ' ἴσασιν ὅσῳ πλέον ἥμισυ παντός,
οὐδ' ὅσον ἐν μαλάχῃ τε καὶ ἀσφοδέλῳ μέγ' ὄνειαρ.

12 Ἐν ταυτῷ (352).

Μὴ κακὰ κερδαίνειν, κακὰ κέρδεα ἶσ' ἄτῃσι.

13 Ἐπιχάρμου.

Ἁ δὲ χεὶρ τὰν χεῖρα νίζει.

14 Βακχυλίδου ἐπινικίων.

Ὡς δ' ἅπαξ εἰπεῖν, φρένα καὶ πυκινὰν
κέρδος ἀνθρώπων βιᾶται.

15 Πινδάρου (Pyth. 3, 54).

Ἀλλὰ κέρδει καὶ σοφία δέδεται.

16 Ἡσιόδου ἔργων (356).

Δὼς ἀγαθή, ἅρπαξ δὲ κακή, θανάτοιο δότειρα.
ὃς μὲν γάρ κεν ἀνὴρ ἐθέλων ὅδε καὶ μέγα δῴη,
χαίρει τῷ δώρῳ καὶ τέρπεται ὃν κατὰ θυμόν·
ὃς δέ κεν αὐτὸς ἕληται ἀναιδείηφι πιθήσας,
καί τε σμικρὸν ἐόν, τό γ' ἐπάχνωσεν φίλον ἦτορ.

17 Εὐριπίδου Βελλεροφόντῃ.

Ὡς ἔμφυτος μὲν πᾶσιν ἀνθρώποις κάκη.
ὅστις δὲ πλεῖστον μισθὸν εἰς χεῖρας λαβὼν

κακὸς γένηται, τῷδε συγγνώμη μὲν οὔ,
πλείω δὲ μισθὸν μείζονος τόλμης ἔχων
τὸν τῶν λεγόντων ῥᾷον ἂν φέροι ψόγον.

18 Εὐριπίδου Δανάης.

Κρείσσων γὰρ οὐδεὶς χρημάτων πέφυκ᾽ ἀνήρ,
πλὴν εἷς τις· ὅστις δ᾽ οὗτός ἐστιν, οὐχ ὁρῶ.

19 Σοφοκλέους Οἰδίποδος (Tyr. 387).

Ὑφεὶς μάγον τοιόνδε μηχανορράφον,
δόλιον ἀγύρτην, ὅστις ἐν τοῖς κέρδεσι
μόνον δέδορκε, τὴν τέχνην δ᾽ ἔφυ τυφλός.

20 Μενάνδρου Λευκαδίᾳ.

Ὅστις ὑπέχει χρυσίῳ
τὴν χεῖρα, κἂν μὴ φῇ, πονηρὰ βούλεται.

21 Μενάνδρου Κόλακι.

Οὐδεὶς ἐπλούτησε ταχέως δίκαιος ὤν.
ὃ μὲν γὰρ αὑτῷ συλλέγει καὶ φείδεται·
ὃ δὲ τὸν πάλαι τηροῦντ᾽ ἐνεδρεύσας πάντ᾽ ἔχει.

22 Ἀντιφάνους.

Τὰ πονηρὰ κέρδη τὰς μὲν ἡδονὰς ἔχει
μικράς, ἔπειτα δ᾽ ὕστερον λύπας μακράς.

23 Εὐριπίδου Ἰνοῦς.

Βίᾳ νυν ἕλκετ᾽ ὦ κακοὶ τιμὰς βροτοί,
καὶ κτᾶσθε πλοῦτον πάντοθεν θηρώμενοι,
σύμμικτα μὴ δίκαια καὶ δίκαι᾽ ὁμοῦ·
ἔπειτ᾽ ἀμᾶσθε τῶνδε δύστηνον θέρος.

24 Μενάνδρου Ἀδελφοῖς.

Ἔργον εὑρεῖν συγγενῆ
πένητός ἐστιν. οὐδὲ εἷς γὰρ ὁμολογεῖ
αὑτῷ προσήκειν τὸν βοηθείας τινὸς
δεόμενον· αἰτεῖσθαι γὰρ ἅμα τι προσδοκᾷ.

25 *Σοφοκλέους Τηρεῖ.*

Φιλάργυρον μὲν πᾶν τὸ βάρβαρον γένος.

26 *Εὐριπίδου Ὑψιπύλῃ.*

Κακοῖς τὸ κέρδος τῆς δίκης ὑπέρτερον.

27 *Πλάτωνος ἐν τῷ Κρίτωνι* (49 b).

Ὅμως τό γε ἀδικεῖν τῷ ἀδικοῦντι καὶ κακὸν καὶ αἰσχρὸν τυγχάνει ὂν παντὶ τρόπῳ; φαμὲν ἢ οὔ; Φαμέν. Οὐδαμῶς ἄρα δεῖ ἀδικεῖν; Οὐ δῆτα. Οὐδὲ ἀδικούμενον ἄρα ἀνταδικεῖν, ὡς οἱ πολλοὶ οἴονται, ἐπειδή γε οὐδαμῶς δεῖ ἀδικεῖν; Οὐ φαίνεται. Τί δαὶ δή, κακουργεῖν δεῖ, ὦ Κρίτων, ἢ οὔ; Οὐ δεῖ δήπου, ὦ Σώκρατες. Τί δέ, ἀντικακουργεῖν κακῶς πάσχοντα, ὡς οἱ πολλοί φασι, δίκαιον ἢ οὐ δίκαιον; Οὐδαμῶς. Τὸ γάρ που κακῶς ποιεῖν ἀνθρώπους τοῦ ἀδικεῖν οὐδὲν διαφέρει. Ἀληθῆ λέγεις. Οὔτε ἄρα ἀνταδικεῖν δεῖ οὔτε κακῶς ποιεῖν οὐδένα ἀνθρώπων οὐδ' ἂν ὁτιοῦν πάσχῃ ὑπ' αὐτῶν. καὶ ὅρα, ὦ Κρίτων, ταῦτα καθομολογῶν, ὅπως μὴ παρὰ δόξαν ὁμολογῇς· οἶδα γὰρ ὅτι ὀλίγοις τισὶ ταῦτα καὶ δοκεῖ καὶ δόξει. οἷς δ' οὕτω δέδοκται καὶ οἷς μή, τούτοις οὐκ ἔστι κοινὴ βουλή, ἀλλ' ἀνάγκη τούτους ἀλλήλων καταφρονεῖν ὁρῶντας τὰ ἀλλήλων βουλεύματα.

28 *Εὐσεβίου.*

Φιλοχρηματίη τοῦ κτήσασθαι [εὑρεῖν] ἀρκέοντα οὖρον οὐκ οἶδε.

29 *Φιλοχρηματίην ἐφ' ἡμέρῃ ἑκάστῃ ἐπιρρέων πλοῦτος οὐχ ἵστησιν, ὥσπερ οὐδὲ πυρκαϊὴν ὕλη ἐπιβαλλομένη· ἐπιγινόμενος δ' ἀεὶ ἐς τοῦ πλεῦνος τὴν ἐπιθυμίην ἐξάπτει μειζόνως. νόος δὲ μοῦνος παραστὰς καὶ τοῦτο οἶδεν ἀκέεσθαι.*

30 Τοῦ αὐτοῦ.

Φιλοχρηματίην ἄλογον τὰ κτώμενα ἀποβαλλόμενα μᾶλλον ἂν στήσειεν ἢ ὁ ἐφ' ἑκάστῃ ἡμέρῃ πλοῦτος ἄπλετος ἐπιγινόμενος.

31. 32 Τοῦ αὐτοῦ.

Τὸ οἰκονομέειν τὰ παρεόντα ἀνδρὸς προνόου· τὸ δὲ μηδ' ὅλως ἐθέλειν ἔς τι τῶν δεόντων χρέεσθαι οὐ δεσπότεω τῶν κτηθέντων, καταδεδουλωμένου δὲ ἑωυτὸν τῶν χρημάτων ἐστὶ τῇ κτήσει.

33 Τοῦ αὐτοῦ.

Οἱ πλεῦνες τῶν ἀνθρώπων παρὰ λόγον φειδεύμενοι ἀξιεῦσι πολυχρήματοι πεπιστευμένοι ἠλίθιοι καὶ σκαιοὶ νομίζεσθαι ἢ περὶ τὰ δεῖ ἀναλίσκοντες δεξιοὶ κεκλῆσθαι.

34 Προδίκου.

Δός τι καὶ λάβοις τι.

35 Ἡροδότου ἱστορίας ζ (18).

Ἐγὼ μέν, ὦ βασιλεῦ, οἷα ἄνθρωπος ἰδὼν ἤδη πολλά τε καὶ μεγάλα πεσόντα πρήγματα ὑπὸ ἡσσόνων, οὐκ ἐῶ σε τὰ πάντα τῇ ἡλικίῃ εἴκειν, ἐπιστάμενος ὡς κακὸν εἴη τὸ πολλῶν ἐπιθυμέειν.

36 Εὐσεβίου.

Πλούσιον χρὴ νομίζειν τὸν ἡγεόμενον ἔχειν τὰ ἀρκέοντα· τὸν δὲ αἰεὶ ἐπιθυμέοντα προσκτήσασθαι καὶ πληθώρην μηδέποτε τοῦ τοιούτου λαμβάνοντα, καὶ εἰ Μίδεω πλουτέοι μᾶλλον, πένητα καλέω καὶ Ἴρου ἣν ἐκεῖνος ἐξ ἀνάγκης εἶχε τύχην κεκτῆσθαι.

37 Δημοκρίτου.

Πλοῦτος ἀπὸ κακῆς ἐργασίης περιγενόμενος ἐπιφανέστερον τὸ ὄνειδος κέκτηται.

38 *Βίωνος.*

Βίων ὁ σοφιστὴς τὴν φιλαργυρίαν μητρόπολιν ἔλεγε πάσης κακίας εἶναι.

39 *Σιμωνίδου.*

Σιμωνίδης παρακαλοῦντος τινὸς ἐγκώμιον ποιῆσαι καὶ χάριν ἕξειν λέγοντος ἀργύριον δὲ μὴ διδόντος "δύο" εἶπεν οὗτος "ἔχω κιβωτούς, τὴν μὲν χαρίτων τὴν δὲ ἀργυρίου· καὶ πρὸς τὰς χρείας τὴν μὲν τῶν χαρίτων κενὴν εὑρίσκω, ὅταν ἀνοίξω, τὴν δὲ χρησίμην μόνην."

40 *Ἀντιφῶντος.*

Οἱ δὲ ἐργαζόμενοι μὲν καὶ φειδόμενοι καὶ ταλαιπωροῦντες καὶ προστιθέντες ἥδονται οἷα δή τις ἂν εἰκάσειεν ἥδεσθαι, ἀφαιροῦντες δὲ καὶ χρώμενοι ἀλγοῦσιν ὥσπερ ἀπὸ τῶν σαρκῶν ἀφαιρούμενοι.

41 *Ἡροδότου* (7, 16).

Ὡς κακὸν εἴη, διδάσκειν τὴν ψυχὴν πλέον τι δίζεσθαι καὶ ἔχειν τοῦ παρεόντος.

42 *Ἀντισθένους.*

Φιλάργυρος οὐδεὶς ἀγαθὸς οὔτε βασιλεὺς οὔτε ἐλεύθερος.

43 *Δημοκρίτου.*

Χρυσοῦ τὸν οἰόμενον νόον ἔχειν ὁ νουθετέων τί ματαιοπονέει.

44 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Χρημάτων ὄρεξις, ἢν μὴ ὁρίζηται κόρῳ, πενίης ἐσχάτης πολλὸν χαλεπωτέρη· μέζονες γὰρ ὀρέξιες μέζονας ἐνδείας ποιεῦσι.

45 *Δημοκρίτου.*

Κακὰ κέρδεα ζημίην ἀρετῆς φέρει.

46 *Διογένους.*

Διογένης ὡμοίου τοὺς φιλαργύρους τοῖς ὑδρωπικοῖς· καὶ ἐκείνους γὰρ πλήρεις ὄντας ἀργυρίου ἐπιθυμεῖν πλείονος, ἀμφοτέρους δὲ πρὸς κακοῦ. ἐπιτείνεσθαι γὰρ μᾶλλον τὰ πάθη, ὅσῳ τὰ ἐπιθυμούμενα πορίζεται.

47 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνες φιλοχρήματοι "οἵ τὰ αἰσχρὰ κέρδη θηρώμενοι" εἶπε "καὶ τοὺς ἀναγκαίους τῶν φίλων ὑπερορῶντες."

48 *Πιττακοῦ.*

Ἄπληστον τὸ διαπαντὸς κέρδος.

49 *Περιάνδρου.*

Κέρδος αἰσχρὸν βαρὺ κειμήλιον.

50 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Ἀριστοτέλης φησὶν ὅτι ὀκτώ τινες κοινῇ ληστεύοντες ἐστασίασαν πρὸς ἀλλήλους περὶ τῶν σύλων καὶ τέσσαρες αὐτῶν κατελείφθησαν. πάλιν οὗτοι πρὸς ἀλλήλους διηνέχθησαν καὶ δύο κατελείφθησαν, εἶτα εἷς. καὶ τί ὑπόλοιπον ἢ στασιάσαι τὰ δεξιὰ πρὸς τὰ εὐώνυμα;

51 *Ἐν ταυτῷ.*

Τοῦ Πύρρου ὀνειροπολοῦντος αὑτῷ Σικελίαν καὶ μετὰ ταῦτα Καρχηδόνα καὶ πολλὴν γῆν, ὁ συνὼν αὐτῷ Κινέας ἔφη "εἶτα μετὰ τοῦτο τί;" τοῦ δὲ εἰπόντος ὅτι ζησόμεθα λοιπόν, ὃ δὲ ἔφη "τί οὖν κωλύει ἀπὸ τοῦ νῦν ζῆν πρὶν πολλὰς πόλεις ἀπολέσαι;"

52 *Ἔοικεν οὖν ὁ τοῦ φιλαργύρου βίος νεκροῦ δείπνῳ· πάντα γὰρ ἔχων τὸν εὐφρανθησόμενον οὐκ ἔχει.*

53 *Σεμιράμιδος.*

Σεμίραμις δὲ ἑαυτῇ κατασκευάσασα τάφον ἐπέγραψεν, ὅστις χρημάτων δεηθῇ βασιλεύς, διελόντα τὸ μνημεῖον ὅσα βούλεται λαβεῖν. Δαρεῖος οὖν διελὼν χρήματα μὲν οὐχ εὗρε, γράμμασι δ' ἑτέροις ἐνέτυχε τάδε φράζουσιν "εἰ μὴ κακὸς ἦς ἀνὴρ καὶ χρημάτων ἄπληστος, οὐκ ἂν νεκρῶν θήκας ἐκίνεις."

54 Τίμωνος.

Τίμων ὁ μισάνθρωπος στοιχεῖα ἔφη τῶν κακῶν εἶναι ἀπληστίαν καὶ φιλοδοξίαν.

55 Σωκράτους.

Ὑποστάθμη ἐστὶν οἴνου μὲν τρύξ, φιλαργύρου δὲ ἀνελευθερία.

56 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὔτε παρὰ νεκροῦ ὁμιλίαν οὔτε παρὰ φιλαργύρου χάριν δεῖ ζητεῖν.

57 Ξενοφῶντος ἐν δ' (2, 37) ἀπομνημονευμάτων.

Τί νομίζεις δῆμον εἶναι; Τοὺς πένητας τῶν πολιτῶν ἔγωγε. Καὶ τοὺς πένητας ἄρα οἶσθα; Πῶς γὰρ οὔ; Ἆρ' οὖν καὶ τοὺς πλουσίους οἶσθα; Οὐδέν γε ἧττον ἢ καὶ τοὺς πένητας. Ποίους δὲ πένητας καὶ ποίους πλουσίους καλεῖς; Τοὺς μέν, οἶμαι, μὴ ἱκανὰ ἔχοντας εἰς ἃ δεῖ τελεῖν, πένητας· τοὺς δὲ πλείω τῶν ἱκανῶν, πλουσίους. Καταμεμάθηκας οὖν ὅτι ἐνίοις μὲν πάνυ ὀλίγα ἔχουσιν οὐ μόνον ἀρκεῖ ταῦτα, ἀλλὰ καὶ περιποιοῦνται ἀπ' αὐτῶν, ἐνίοις δὲ πάνυ πολλὰ οὐχ ἱκανά ἐστι; Καὶ νὴ Δί', ἔφη ὁ Εὐθύδημος· ὀρθῶς γάρ με ἀναμιμνήσκεις· οἶδα καὶ τυράννους τινάς, οἳ δι' ἔνδειαν, ὥσπερ οἱ ἀπορώτατοι, ἀναγκάζονται ἀδικεῖν. Οὐκ οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, εἴ γε ταῦτα οὔ-

τως ἔχει, τοὺς μὲν τυράννους εἰς τὸν δῆμον θήσομεν, τοὺς δὲ ὀλίγα κεκτημένους, ἐὰν οἰκονομικοὶ ὦσιν, εἰς τοὺς πλουσίους;

58 *Δημοκρίτου.*

Ἐλπὶς κακοῦ κέρδεος ἀρχὴ ζημίης.

59 *Διογένους.*

Οἱ φιλάργυροι καθάπερ μαχαίρᾳ τῷ βίῳ χρῶνται, πάντα ποιοῦντες κατὰ τὴν λαβήν.

60 *Πλάτωνος.*

Πλάτων πρὸς τὸν ἀεὶ ζητοῦντα χρηματίζεσθαι "ὦ πονηρὲ" εἶπε "μὴ πειρῶ τὴν κτῆσιν αὔξειν, ἀλλὰ τὴν ἐπιθυμίαν μειῶσαι."

61 *Διογένους.*

Διογένης ὁ κύων θεασάμενός τινα πλουσίας γραίας προσποιούμενον ἐρᾶν ἔφη "ταύτῃ οὐ τὸν ὀφθαλμόν, ἀλλὰ τὸν ὀδόντα ἐπιβέβληκεν."

62 *Σιμωνίδου.*

Σιμωνίδης ἐρωτηθεὶς διὰ τί ἐσχάτου γήρως ὢν φιλάργυρος εἴη; "ὅτι" εἶπε "βουλοίμην ἂν ἀποθανὼν τοῖς ἐχθροῖς μᾶλλον ἀπολιπεῖν ἢ ζῶν δεῖσθαι τῶν φίλων," κατεγνωκὼς τῆς τῶν πολλῶν φιλίας τὸ ἀβέβαιον.

63 *Διογένους.*

Διογένης τοὺς μεγάλα καὶ ἀθρόα λαμβάνοντας μεγαλοπτώχους ἐκάλει.

64 *Ἀπολλώνιος Εὐφράτῃ.*

Οὐκ ἐπιλογιζομένη ἡ ψυχὴ τὸ τοῦ σώματος αὔταρκες οὐ δύναται ἑαυτὴν αὐτάρκη ποιῆσαι.

65 *Δημοκρίτου.*

Ἡ τέκνοισι ἄγαν χρημάτων συναγωγὴ πρόφασίς ἐστι φιλαργυρίης τρόπον ἴδιον ἐλέγχουσα.

66 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὧν τὸ σκῆνος χρηίζει πᾶσι πάρεστιν εὐμαρέως ἄτερ μόχθου καὶ ταλαιπωρίης· ὁκόσα δὲ μόχθου καὶ ταλαιπωρίης χρηίζει καὶ βίον ἀλγύνει, τούτων οὐκ ἱμείρεται τὸ σκῆνος, ἀλλ' ἡ τῆς γνώμης κακοθηγίη.

67 Ἐκ τῶν Ἀριστοξένου Πυθαγορικῶν ἀποφάσεων.

Περὶ δὲ ἐπιθυμίας τάδε ἔλεγεν, εἶναι τὸ πάθος τοῦτο ποικίλον [καὶ πολύπονον] καὶ πολυειδέστατον· εἶναι δὲ τῶν ἐπιθυμιῶν τὰς μὲν ἐπικτήτους τε καὶ παρασκευαστάς, τὰς δὲ συμφύτους· αὐτὴν μέντοι τὴν ἐπιθυμίαν ἐπιφοράν τινα τῆς ψυχῆς καὶ ὁρμὴν καὶ ὄρεξιν εἶναι πληρώσεως, ἢ παρουσίας αἰσθήσεως, ἢ κενώσεως καὶ ἀπουσίας, καὶ τοῦ μὴ αἰσθάνεσθαι .... ἐπιθυμίας δὲ ἡμαρτημένης τε καὶ φαύλης τρία εἶναι ἤδη τὰ γνωρίσματα, ἀσχημοσύνην ἀσυμμετρίαν ἀκαιρίαν· ἢ γὰρ αὐτόθεν εἶναι τὴν ἐπιθυμίαν ἀσχήμονά τε καὶ φορτικὴν καὶ ἀνελεύθερον, ἢ τοῦτο μὲν οὔ, σφοδρότερον δὲ καὶ χρονιώτερον τοῦ προσήκοντος· ἢ τρίτον πρὸς ταῦτα, ὅτε οὐ δεῖ καὶ πρὸς ἃ οὐ δεῖ.

68 Πλάτωνος (Leg. V 736 e).

Πενίαν ἡγητέον εἶναι μὴ τὸ τὴν οὐσίαν ἐλάττω ποιεῖν, ἀλλὰ τὸ τὴν ἀπληστίαν πλείω.

69 Δημοκρίτου.

Τοῦ πλέονος ἐπιθυμίη τὸ παρεὸν ἀπόλλυσι, τῇ Αἰσωπηίῃ κυνὶ ἰκέλη γιγνομένη.

70 Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Ὀμβρικοὶ ὅταν πρὸς ἀλλήλους ἔχωσιν ἀμφισβή-

τησιν, καθοπλισθέντες ὡς ἐν πολέμῳ μάχονται· καὶ δοκοῦσι δικαιότερα λέγειν οἱ τοὺς ἐναντίους ἀποσφάξαντες.

71 Κλειτοφῶντος ἐκ τοῦ ε' Ἰταλικῶν.

Βρέννος ὁ τῶν Γαλατῶν βασιλεὺς λεηλατῶν τὴν Ἀσίαν εἰς Ἔφεσον ἦλθε, καὶ στρατοπεδευσάμενος περιέμενε τοῦ πολέμου τὴν προθεσμίαν. παρθένος δέ τις τῶν ἐπισήμων τοὔνομα Δημονίκη εἰς ἐπιθυμίαν ἐμπεσοῦσα τοῦ βαρβάρου, προδώσειν αὐτῷ τὴν Ἔφεσον ὑπέσχετο, ἐὰν μισθὸν λάβοι τὰ ψέλια καὶ τοὺς ὅρμους· ὁ Βρέννος δὲ δεξάμενος αὐτὴν εἰς τόπον ὡρισμένον, ἤγαγε τοὺς ὑποτεταγμένους καὶ προσέταξεν αὐτοῖς τὸν χρυσὸν ὅσον εἶχον κόσμου χάριν βάλλειν εἰς τὸν τῆς φιλαργύρου κόλπον. ποιησάντων δὲ αὐτῶν τὸ παραγγελθέν, ἡ Δημονίκη ὑπὸ τῆς δαψιλείας τοῦ βαλλομένου χρυσοῦ ζῶσα κατεχώσθη.

72 Πλάτωνος πολιτείας β' (361 a).

Ἐσχάτη γὰρ ἀδικία δοκεῖν δίκαιον μὴ ὄντα.

73 Πλάτωνος πολιτείας α' (347 b).

Ἢ οὐκ οἶσθα ὅτι φιλάργυρόν τε καὶ φιλότιμον εἶναι ὄνειδος λέγεταί τε καὶ ἐστίν;

74 Ἐν ταυτῷ (350 d).

Ἐπειδὴ οὖν διωμολογησάμεθα τὴν δικαιοσύνην ἀρετὴν εἶναι καὶ σοφίαν, τὴν δὲ ἀδικίαν κακίαν τε καὶ ἀμαθίαν, εἶεν, ἦν δ' ἐγώ, τοῦτο μὲν ἡμῖν οὕτω κείσθω.

75 Πλάτωνος πολιτείας ι' (Leg. XII 941 b).

Κλοπὴ μὲν χρημάτων ἀνελεύθερον, ἁρπαγὴ δὲ ἀναίσχυντον.

76 Ἐν ταυτῷ (941 c).

Ἐάν τις τὶ κλέπτῃ δημόσιον μέγα ἢ καὶ σμικρόν, τῆς αὐτῆς δίκης δεῖ. σμικρόν τε γὰρ ὁ κλέπτων ἔρωτι μὲν ταυτῷ δυνάμει δὲ ἐλάττονι κέκλοφε. -

77 Ἱέρακος περὶ δικαιοσύνης.

Ἐπειδὴ δὲ ὁ κατάρχων αὐτὸς πρὸ τῶν ἀδικεῖσθαι μελλόντων ἑαυτὸν ἀδικῶν ἀγνοεῖ, ἴστω ὡς διπλῆς οὔσης τῆς ἀδικίας αὐτὸς ἀπολαύει πρότερος, ἔπειτα καὶ τὸ ἀδικούμενον ὑπ' αὐτοῦ μέρος· μὴ γὰρ οὕτως ἀναισθητεῖν εἴη μηδενὶ τῶν ἀνοήτων, εἰ δυνατὸν δέ, μηδὲ τῶν πονηρῶν (ὑπὲρ γὰρ ὑγείας ψυχῆς ἡ εὐχή) ὡς δι' ἀναισθησίαν νομίζειν τοὺς ἀδικουμένους μᾶλλον τῶν ἀδικούντων βλάπτεσθαι. ἓν μὲν γὰρ μόνον ἐστὶ τὸ ἀδικούμενον ἐκ παντὸς ἡ ψυχή, τὸ δὲ ἀδικοῦν καὶ ἐπιβουλεῦον ἡ κακία, καὶ ἐν τῷ ἀδικοῦντι καὶ κατὰ τοῦ ἀδικουμένου, ἀλλὰ τὸν μὲν ἔλαττον τὸν δὲ πλεῖστον, ἔλαττον μὲν τὸν ἀδικεῖσθαι μέλλοντα, πλεῖστον δὲ τὸν ἀδικεῖν διανοούμενον, ἐπεὶ καὶ ἀπ' αὐτοῦ τὴν κίνησιν λαμβάνει καὶ τὴν ἔπαρσιν. ἐγειρομένη τοίνυν τὸν τεκόντα πρῶτον ἀνάπτει, καὶ πρὶν τεκεῖν ἐν ταῖς ὠδῖσι φλέγει, καὶ διιοῦσα λυμαίνεται καὶ τῷ ἀπ' αὐτῆς ἰῷ χρῴζει δευσοποιῷ τῇ βαφῇ. οὔτε γὰρ τῷ πυρὶ τὴν τεκοῦσαν ὕλην διελθεῖν δυνατὸν ἐπὶ τὴν τῶν ἄλλων λύμην πρὶν παντελῶς αὐτὴν ἀναλῶσαι, οὔτε τῇ μυραίνῃ τοὺς ἐνύδρους ὄφεις εἰς ἄλλων ὄλεθρον ἀπογεννᾶν πρὶν τὴν κυήσασαν γαστέρα καταφαγεῖν, ὡς Νίκανδρος ὁ Κολοφώνιος καὶ Ἀρχέλαος ὁ φυσικὸς γράφουσιν· οὕτω καὶ πᾶς ἄδικος αὐτὸς τῆς κακίας πρῶτος γεύεται πρὶν εἰς ἄλλους ἀφιέναι. πολλοὶ γοῦν ἀνεγείραντες τὴν ἐν αὐτοῖς χολήν, ἐκ τῆς πρὸς ἄλλους ὀργῆς αὐτοὶ πρῶτον ἀπέθανον πρὶν τοὺς ἐχθροὺς τιμωρήσασθαι. τοῦτο τοίνυν ἀγνοήσαντες πολλοὶ ταῖς κα-

τὰ τῶν ἀσθενεστέρων ἀδικίαις ἀνέδην ἐχρήσαντο, μηδὲν εἶναι πρὸς αὐτοὺς οἰηθέντες τὸ λυπηρόν. τούτου δὲ ὁμολογουμένου δεῖ καθάπαξ παραιτεῖσθαι τὸ ἀδικεῖν.

78 *Ἱέρακος ἐκ τοῦ περὶ δικαιοσύνης.*

Ἢ τί φαίη τις ἂν περὶ τοῦ τοὺς τρόπους ἐριστικοῦ, κἂν μηδενὸς πώποτε κτήματος τῶν μηδὲν αὐτῷ προσηκόντων ἐφίεται; Πῶς ἂν δίκαιόν τι πράττοι, εἰ καθ' αὑτὸν ἐνθυμοῖτο μηδενὶ συντίθεσθαι τῶν ὁμολογουμένων ἀξίων, ἀλλ' ἐρίζειν πρὸς ἅπαντας παρεσκευασμένος, μέτρον δὲ οὐδέν, ἀλλ' οὐδὲ καιρὸν οὐδένα τιθέμενος εἰς φιλονεικίαν; οὐ γὰρ δὴ μόνον ἐν τοῖς λόγοις τὸ ὀρθῶς ἔχον ὁ τοιοῦτος ἀναιρεῖν πειρᾶται, ἀλλὰ καὶ ἐν τῷ πράττειν τὰ πολλὰ καὶ φιλονεικεῖν ὁδοὺς βιαίους πολλάκις καὶ διαστρόφους τὰς πράξεις ποιήσεται, ἑαυτὸν μὴ συναινοῦντα ταῖς τῶν πολλῶν δόξαις ἐπιδεικνύς· ἐκ τούτων δὲ αὐτὸς μὲν τοῖς ἄλλοις ἀπεχθής, τοὺς φεύγοντας δὲ αὐτὸν καὶ τὰς τοιαύτας συνουσίας μισήσει· τοὺς δ' ὑπ' ἐλευθερίας ἐλέγχοντας αὐτοῦ τὸ σκαιὸν τοῦ ἤθους, οὐδὲ ἰδεῖν ὀρθοῖς τοῖς ὀφθαλμοῖς ἀνέχεται· εἰ δὲ εἰς τοὺς ὁμοίους ἐμπέσοι (οὐ γὰρ δὴ πολλὴ σπάνις τῶν τοιούτων) εὐθὺς στάσεις λοιδορίαι καὶ πόλεμος ἄσπονδος, ἐξ ὧν ψευδεῖς διαβολαὶ καὶ πᾶν εἶδος ἐπιβουλῆς καὶ σκέψεις, ὅπως ἂν ἀλλήλους ἀπολέσειαν. τὰ γὰρ μεγάλα κακὰ οὐκ ἄλλως ἢ ἐκ τῆς τυχούσης φιλονεικίας συνίσταται.

ΠΕΡΙ ΑΛΗΘΕΙΑΣ. ΙΑ.

1 *Μιμνέρμου Ναννοῦς.*

Ἀληθείη δὲ παρέστω
σοὶ καὶ ἐμοί, πάντων χρῆμα δικαιότατον.

2 *Ὀλυμπιάδος.*

Ἀλάθεια θεῶν ὁμόπολις, μόνα θεοῖς συνδιαιτωμένα.

3 *Πινδάρου.*

Ἀρχὰ μεγάλας ἀρετᾶς ὤνασσ' ἀλάθεια,
μὴ πταίσῃς ἐμὰν σύνθεσιν τραχεῖ ποτὶ ψεύδει.

6 *Ἰλιάδος Ὁμήρου α'* (526).

Οὐ γὰρ ἐμὸν παλινάγρετον, οὐδ' ἀπατηλόν,
οὐδ' ἀτελεύτητον, ὅπερ ἂν κεφαλῇ κατανεύσω.

7 *Βακχυλίδου ὑπορχημάτων.*

Λυδία μὲν γὰρ λίθος μανύει χρυσόν· ἀνδρῶν
δ' ἀρετὰν σοφίαν τε παγκρατὴς ἐλέγχει ἀλάθεια.

8 *Αἰσχύλου ὅπλων κρίσεως.*

Ἁπλᾶ γάρ ἐστι τῆς ἀληθείας ἔπη.

9 *Σοφοκλέους Ἠλέκτρα* (467).

Δράσω· τὸ γὰρ δίκαιον οὐκ ἔχει λόγον
δυοῖν ἐρίζειν, ἀλλ' ἐπισπεύδει τὸ δρᾶν.

10 *Μενάνδρου Ῥαπιζομένῃ.*

Ἔρχεται τἀληθὲς εἰς φῶς ἐνίοτ' οὐ ζητούμενον.

11 *Μενάνδρου Ὑποβολιμαίῳ.*

Ἀεὶ κράτιστόν ἐστι τἀληθῆ λέγειν
ἐν παντὶ καιρῷ· τοῦτ' ἐγὼ παρεγγυῶ
εἰς ἀσφάλειαν τῷ βίῳ πλεῖστον μέρος.

12 *Εὐριπίδου Φοινίσσαις* (469).

Ἁπλοῦς ὁ μῦθος τῆς ἀληθείας ἔφυ,

---

4 Ἐλευθέρου γὰρ ἀνδρὸς τἀληθῆ λέγειν (Men. mon. 162). Ἡ γλῶσσ' ἁμαρτάνουσα τἀληθῆ λέγει (Men. mon. 228).
5 Πίστιν δ' ἐν πᾶσι φυλάσσειν (Pseudophocyl. 13).

κοὐ ποικίλων δεῖ τἄνδιχ' ἑρμηνευμάτων·
ἔχει γὰρ αὐτὰ καιρόν· ὁ δ' ἄδικος λόγος
νοσῶν ἐν αὐτῷ φαρμάκων δεῖται σοφῶν.

13 *Σοφοκλέους Οἰδίποδος* (Col. 880).
Τοῖς τοι δικαίοις χὠ βραχὺς νικᾷ μέγαν.

14 *Ἰαμβλίχου Σωπάτρῳ.*

Ἀλήθεια μέν, ὥσπερ καὶ τοὔνομα δηλοῖ, περὶ θεοὺς ποιεῖ τὴν ἐπιστροφὴν καὶ τῶν θεῶν τὴν ἀκήρατον ἐνέργειαν· ἡ δὲ δοξομιμητικὴ αὕτη εἰδωλοποιία, ὥς φησι Πλάτων, περὶ τὸ ἄθεον καὶ σκοτεινὸν πλανᾶται. καὶ ἣ μὲν τοῖς νοητικοῖς εἴδεσι καὶ θείοις καὶ τοῖς ὄντως οὖσι καὶ κατὰ τὰ αὐτὰ ἀεὶ ἔχουσι τελειοῦται, ἣ δὲ τὸ ἀνείδεον καὶ μὴ ὂν καὶ ἄλλοτε ἄλλως ἔχον ἀποβλέπει καὶ περὶ αὐτοῦ ἀμβλυώττει. καὶ ἣ μὲν αὐτὸ ὅ ἐστι θεωρεῖ, ἣ δ' οἷον φαίνεται τοῖς πολλοῖς τοιοῦτον ὑποδύεται πρόσχημα. διόπερ δὴ ἣ μὲν πρὸς νοῦν ὁμιλεῖ καὶ τὸ ἐν ἡμῖν νοερὸν αὔξει, ἣ δὲ τῷ ἀεὶ δοκοῦντι θηρεύεται τὴν ἄνοιαν καὶ ἐξαπατᾷ.

15 *Ἐκ τῶν Σερήνου ἀπομνημονευμάτων.*

Πλάτων μὲν ἥδιστον εἶναι τῶν ἀκουσμάτων τὴν ἀλήθειαν ἔλεγε, Πολέμων δὲ πολὺ ἥδιον τοῦ ἀκούειν τὸ λέγειν εἶναι τἀληθῆ.

16 *Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου* (p. 107).

Ὑμεῖς δ' ἐξεβάλετε αὐτὸν ὑπολαμβάνοντες· ἴσμεν, ὦ Πύρανδρε, ὅτι οὐ δεῖ γελᾶν τούτων ἐναντίον· ἀλλ' οὕτως ἰσχυρόν ἐστιν ἀλήθεια, ὥστε πάντων ἐπικρατεῖν τῶν ἀνθρωπίνων λογισμῶν.

17 *Γαΐου ἐκ τοῦ κατὰ Μουσαίου μοιχείας.*

Τότ' οὖν ἀπολαβὼν ἤδη θεράπαιναν ἠρώτα πῶς

ἔχοι τὰ περὶ τὴν γυναῖκα, ἣ δὲ οὐδὲ μελλήσασα εὐθὺς εἶπεν. οὕτω τὸ ἀληθὲς ἀμελέτητόν ἐστιν.

18 Πλάτωνος νόμων ε′ (730 b).

Ἀλήθεια δὴ πάντων μὲν ἀγαθῶν θεοῖς ἡγεῖται πάντων δ' ἀνθρώποις· ἧς ὁ γενήσεσθαι μέλλων μακάριός τε καὶ εὐδαίμων ἐξ ἀρχῆς εὐθὺς μέτοχος εἴη, ἵνα ὅτι πλεῖστον χρόνον ἀληθὴς ὢν διαβιοῖ, πιστὸς γάρ· ὁ δὲ ἄπιστος, ᾧ φίλον ψεῦδος ἑκούσιον· ὅτῳ δ' ἀκούσιον, ἄνους· ὧν οὐδέτερον ζηλωτόν. ἄφιλος γὰρ δὴ πᾶς, ὅ τε ἄπιστος καὶ ἀμαθής.

19 Ἡγουμένης δὲ ἀληθείας οὐκ ἄν ποτε, οἶμαι, φαμὲν αὐτῇ χορὸν κακῶν ἀκολουθῆσαι. (Plato Rep. 490 c.)

20 Ἀπολλώνιος Δηλίῳ.

Ψεύδεσθαι ἀνελεύθερον, ἀλήθεια γενναῖον.

21 Εὐσεβίου.

Ἀληθείην νόος ἀσπάζεται καὶ αἰεὶ αὐτῇ συνοικέει· ἐὼν δὲ ἐν τοῖς ἑωυτοῦ ἀψευδέστατος, ὅμως ἔστιν ὅτε καὶ ψεῦδος ἀγαθῷ κεράσας παρέχεται ἐπ' ὠφελίῃ ἀνθρώπων τῶν τούτου χρηζόντων καὶ ἐπὶ χρηστῷ τῷ σφετέρῳ παραλογισθησομένων πρὸς αὐτοῦ. τότε γὰρ δὴ μοῦνον καὶ οὔκοτε ἄλλοτε νόος, καὶ ἐν καιρῷ τῷ αὐτὸς οἶδε, πάντα τἄλλα ψεύδεα ἀποστυγέων, ψεῦδος τὸ τοιοῦτον εἰσφέρεται, ἀπὸ τῆς τῶν λοιπῶν ἁπάντων ψευδέων φύσιος ἐς ἄλλο εἶδος μεταμειφθὲν χρησιμώτατον, τέχνῃ καὶ σοφίῃ αὐτοῦ τοῦ νόου τοῦ φαῦλον πρῆγμα ἐς τοῦτο μετακοσμήσαντος.

22 Τοῦ αὐτοῦ.

Ψεύδεσθαι ἐν πόλει μηδὲ εἷς νόμος ξυγχωρεέτω μηδενὶ πλὴν τοῦ φιλαληθέος καὶ νοήμονος ἐπισταμένου τε ὁκότε καὶ ὅκως ὠφελίῃ ψεύδεος, τῆς δὲ

ἀπὸ τούτου γινομένης χρείης ἀναγκαίης καὶ τοῦτο ποιέειν.

23 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Τάτ.

Περὶ ἀληθείας, ὦ Τάτ, οὐκ ἔστι δυνατὸν ἄνθρωπον ὄντα, ζῶον ἀτελὲς ἐξ ἀτελῶν συγκείμενον μελῶν καὶ ἐξ ἀλλοτρίων σωμάτων καὶ πολλῶν τὸ σκῆνος συνεστός, τολμήσαντα εἰπεῖν· ὃ δ' ἐστὶ δυνατὸν καὶ δίκαιον, τοῦτο φημί, ἀλήθειαν εἶναι ἐν μόνοις τοῖς ἀιδίοις σώμασιν, ὧν καὶ τὰ σώματα αὐτὰ ἀληθῆ ἐστι, πῦρ αὐτοπῦρ μόνον καὶ οὐδὲν ἄλλο, γῆ αὐτογῆ καὶ οὐδὲν ἄλλο, ἀὴρ αὐτοαὴρ καὶ οὐδὲν ἄλλο, ὕδωρ αὐτοῦδωρ καὶ οὐδὲν ἄλλο· τὰ δὲ ἡμέτερα σώματα ἐκ πάντων τούτων συνέστηκεν· ἔχει μὲν γὰρ πυρός, ἔχει δὲ καὶ γῆς, ἔχει καὶ ὕδατος καὶ ἀέρος, καὶ οὔτε πῦρ ἐστιν οὔτε γῆ οὔτε ὕδωρ οὔτε ἀὴρ οὔτε οὐδὲν ἀληθές· εἰ δὲ μὴ τὴν ἀρχὴν ἡ σύστασις ἡμῶν ἔσχε τὴν ἀλήθειαν, πῶς ἂν δύναιτο ἀλήθειαν ἢ ἰδεῖν ἢ εἰπεῖν; νοῆσαι δὲ μόνον, ἐὰν ὁ θεὸς θέλῃ. πάντα οὖν, ὦ Τάτιε, τὰ ἐπὶ γῆς ἀλήθεια μὲν οὐκ ἔστι, τῆς δὲ ἀληθείας μιμήματα· καὶ οὐ πάντα, ὀλίγα δὲ ταῦτα, ἄλλα δὲ ψεῦδος καὶ πλάνος, ὦ Τάτιε, καὶ δόξαι φαντασίας καθάπερ εἰκόνες συνεστῶτα. ὅταν δ' ἄνωθεν τὴν ἐπίρροιαν ἔχῃ ἡ φαντασία, τῆς ἀληθείας γίγνεται μίμησις· χωρὶς δὲ τῆς ἄνωθεν ἐνεργείας ψεῦδος καταλείπεται· καθάπερ καὶ ἡ εἰκὼν τὸ μὲν σῶμα τῇ γραφῇ δείκνυσιν, αὐτὴ δὲ οὐκ ἔστι σῶμα κατὰ τὴν φαντασίαν τοῦ ὁρωμένου. καὶ ὀφθαλμοὺς μὲν ὁρᾶται ἔχουσα, βλέπει δὲ οὐδέν· καὶ ὦτα, ἀκούει δὲ οὐδὲν ὅλως. καὶ τὰ ἄλλα πάντα ἔχει μὲν ἡ γραφή, ψευδῆ δέ ἐστι τὰς τῶν ὁρώντων ὄψεις ἐξαπατῶντα, τῶν μὲν δοκούντων ἀλήθειαν ὁρᾶν, τῶν δὲ ὡς ἀληθῶς ὄντων

ψευδῶν. ὅσοι μὲν οὖν οὐ ψεῦδος ὁρῶσιν, ἀλήθειαν ὁρῶσιν . . . . ἐὰν οὖν ἕκαστον τούτων οὕτω νοῶμεν ἢ ὁρῶμεν ὡς ἔστιν, ἀληθὲς καὶ νοοῦμεν καὶ ὁρῶμεν· ἐὰν δὲ παρὰ τὸ ὄν, οὐδὲν ἀληθὲς οὔτε νοήσομεν οὔτ' εἰσόμεθα. Ἔστιν οὖν, πάτερ, ἀλήθεια καὶ ἐν τῇ γῇ; Καὶ οὐκ ἀσκόπως σφάλλῃ, ὦ τέκνον. ἀλήθεια μὲν οὐδαμῶς ἐστὶν ἐν τῇ γῇ, ὦ Τάτιε, οὔτε γενέσθαι δύναται· περὶ δὲ ἀληθείας νοῆσαι ἐνίους τῶν ἀνθρώπων, οἷς ἂν ὁ θεὸς τὴν θεοπτικὴν δωρήσηται δύναμιν γενέσθαι. οὕτως ἀληθὲς οὐδὲν ἔστιν ἐν τῇ γῇ νοῶ καὶ λέγω· φαντασίαι εἰσὶ καὶ δόξαι πάντα, ἀληθῆ νοῶ καὶ λέγω. οὐκ οὖν τό τε ἀληθῆ νοεῖν καὶ λέγειν, τοῦτο ἀλήθειαν δεῖ καλεῖν; τί δαί; τὰ ὄντα δεῖ νοεῖν καὶ λέγειν; ἔστι δὲ οὐδὲν ἀληθὲς ἐπὶ τῆς γῆς. τοῦτο ἀληθές ἐστι τὸ μὴ εἰδέναι μηδὲν ἀληθὲς ἐνθάδε, πῶς ἂν καὶ δύναιτο γενέσθαι, ὦ τέκνον; ἡ γὰρ ἀλήθεια τελεωτάτη ἀρετή ἐστιν, αὐτὸ τὸ ἄκρατον ἀγαθόν, τὸ μήτε ὑπὸ ὕλης θολούμενον μήτε ὑπὸ σώματος περιβαλλόμενον, γυμνὸν φανὸν ἄτρεπτον σεμνὸν ἀναλλοίωτον ἀγαθόν· τὰ δὲ ἐνθάδε, ὦ τέκνον, οἷά ἐστιν ὁρᾷς ἄδεκτα τούτου τοῦ ἀγαθοῦ, φθαρτὰ παθητὰ διαλυτὰ τρεπτὰ ἀεὶ ἐναλλοιούμενα, ἄλλα ἐξ ἄλλων γινόμενα. ἃ οὖν μηδὲ πρὸς ἑαυτὰ ἀληθῆ ἐστι, πῶς ἂν δύναιτο ἀληθῆ εἶναι; πᾶν γὰρ τὸ ἀλλοιούμενον ψεῦδός ἐστι, μὴ μένον ἐν ᾧ ἐστί, φαντασίας δὲ μετατρεπόμενον ἄλλας καὶ ἄλλας ἐπιδείκνυται ἡμῖν. Οὐδὲ ἄνθρωπος ἀληθής ἐστιν, ὦ πάτερ; Καθότι ἄνθρωπος, οὐκ ἔστιν ἀληθής, ὦ τέκνον. τὸ γὰρ ἀληθές ἐστι τὸ ἐξ αὑτοῦ μόνου τὴν σύστασιν ἔχον καὶ μένον καθ' αὑτὸ οἷον ἐστίν· ὁ δὲ ἄνθρωπος ἐκ πολλῶν συνέστηκε καὶ οὐ μένει καθ' αὑτόν, τρέπεται δὲ καὶ μεταβάλλεται ἡλικίαν ἐξ ἡλικίας καὶ ἰδέαν ἐξ ἰδέας, καὶ ταῦτα ἔτι

ῷν ἐν τῷ σκήνει. καὶ πολλοὶ τέκνα οὐκ ἐγνώρισαν χρόνου ὀλίγου μεταξὺ γενομένου, καὶ πάλιν τέκνα γονεῖς ὁμοίως. τὸ οὖν οὕτως μεταβαλλόμενον ὥστε ἀγνοεῖσθαι, δύναται ἀληθὲς εἶναι, ὦ Τάτιε; οὐ τοὐναντίον ψεῦδός ἐστιν ἐν ποικίλαις γινόμενον φαντασίαις τῶν μεταβολῶν; σὺ δὲ νόει ἀληθές τι εἶναι τὸ μένον καὶ ἀίδιον· ὁ δὲ ἄνθρωπος οὐκ ἔστιν ἀεί· ἄρα οὐδὲ ἀληθές ἐστι. φαντασία δέ ἐστί τις ὁ ἄνθρωπος, ἡ δὲ φαντασία ψεῦδος ἂν εἴη ἀκρότατον. Οὐδὲ ταῦτα οὖν, ὦ πάτερ, τὰ ἀίδια σώματα, ἐπεὶ μεταβάλλεται, ἀληθῆ ἐστι. Πᾶν μὲν οὖν τὸ γεννητὸν καὶ μεταβλητὸν οὐκ ἀληθές· ὑπὸ δὲ τοῦ προπάτορος γενόμενα τὴν ὕλην δύναται ἀληθῆ ἐσχηκέναι. ἔχει δέ τι καὶ ταῦτα ψεῦδος ἐν τῇ μεταβολῇ· οὐδὲν γὰρ μὴ μένον ἐφ' αὑτῷ ἀληθές ἐστιν. Ἀληθές, ὦ πάτερ. Τί οὖν ἂν εἴποι τις μόνον τὸν ἥλιον παρὰ τὰ ἄλλα πάντα μὴ μεταβαλλόμενον, μένοντα δὲ ἐφ' ἑαυτῷ, ἀλήθειαν; διὸ καὶ τὴν ἐν τῷ κόσμῳ πάντων δημιουργίαν αὐτὸς μόνος πεπίστευται, ἄρχων πάντων καὶ ποιῶν πάντα, ὃν καὶ σέβομαι, καὶ προσκυνῶ αὐτοῦ τὴν ἀλήθειαν, καὶ μετὰ τὸν ἕνα καὶ πρῶτον τοῦτον δημιουργὸν γνωρίζω. Τί οὖν ἂν εἶναι τὴν πρώτην ἀλήθειαν, ὦ πάτερ; Ἕνα καὶ μόνον, ὦ Τάτιε, τὸν μὴ ἐξ ὕλης, τὸν μὴ ἐν σώματι, τὸν ἀχρώματον, τὸν ἀσχημάτιστον, τὸν ἄτρεπτον, τὸν μὴ ἀλλοιούμενον, τὸν ἀεὶ ὄντα. τὸ δὲ ψεῦδος, ὦ τέκνον, φθείρεται. πάντα δὲ τὰ ἐπὶ γῆς φθορὰ κατέλαβε καὶ ἐμπεριέχει, καὶ ἐμπεριέξει ἡ τοῦ ἀληθοῦς πρόνοια. χωρὶς γὰρ φθορᾶς οὐδὲ γένεσις δύναται συστῆναι· πάσῃ δὲ γενέσει φθορὰ ἕπεται, ἵνα πάλιν γένηται· τὰ γὰρ γιγνόμενα ἐκ τῶν φθειρομένων ἀνάγκη γίγνεσθαι, φθείρεσθαι δὲ τὰ γιγνόμενα ἀνάγκη, ἵνα μὴ στῇ ἡ γένεσις τῶν ὄντων. πρῶ-

τον τοῦτον δημιουργὸν γνώριζε εἰς τὴν γένεσιν τῶν ὄντων. τά γ' οὖν ἐκ φθορᾶς γινόμενα ψευδῆ ἂν εἴη, ὡς ποτὲ μὲν ἄλλα ποτὲ δὲ ἄλλα γινόμενα· τὰ γὰρ αὐτὰ γίνεσθαι ἀδύνατον· τὸ δὲ μὴ αὐτό, πῶς ἂν ἀληθὲς εἴη; φαντασίας οὖν καλεῖν δεῖ τὰ τοιαῦτα, ὦ τέκνον, εἴ γε ὀρθῶς προσαγορεύομεν τὸν ἄνθρωπον, ἀνθρωπότητος φαντασίαν· τὸ δὲ παιδίον παιδίου φαντασίαν, τὸν δὲ νεανίσκον νεανίσκου φαντασίαν, τὸν δὲ ἄνδρα ἀνδρὸς φαντασίαν, τὸν δὲ γέροντα γέροντος φαντασίαν. οὔτε γὰρ ὁ ἄνθρωπος ἄνθρωπος, οὔτε τὸ παιδίον παιδίον, οὔτε ὁ νεανίσκος νεανίσκος, οὔτε ὁ ἀνὴρ ἀνήρ, οὔτε ὁ γέρων γέρων· μεταβαλλόμενα δὲ ψεύδεται καὶ τὰ προόντα καὶ τὰ ὄντα. ταῦτα μέντοι οὕτω νόει, ὦ τέκνον, ὡς καὶ τῶν ψευδῶν τούτων ἐνεργειῶν ἄνωθεν ἠρτημένων ἀπ' αὐτῆς τῆς ἀληθείας· τούτου δὲ οὕτως ἔχοντος, τὸ ψεῦδος φημὶ τῆς ἀληθείας ἐνέργημα εἶναι.

24 *Ἐκ τῶν Ὁμήρου* (Il. α' 525).

Ὅτι ἡ ἀλήθεια κάλλιστον καὶ ἐν θεοῖς ὑπάρχει μέγιστον, δηλοῖ διὰ τῶν ἐπῶν τούτων·

Τοῦτο γὰρ ἐξ ἐμέθεν γε μετ' ἀθανάτοισι μέγιστον
τέκμωρ. οὐ γὰρ ἐμὸν παλινάγρετον, οὐδ' ἀπατηλόν,
οὐδ' ἀτελεύτητον, ὅ τι κεν κεφαλῇ κατανεύσω.

Τριῶν γὰρ αἰτιῶν οὐσῶν δι' ἃς ἄνθρωποι παραβαίνουσι τὰς ὑποσχέσεις καὶ ψεύδονται· ἢ γὰρ εὐθὺς ἐξαπατῶν τις ἔφησεν ἢ φήσας ὕστερον μετενόησεν ἢ βουλόμενος ἐξησθένησε· τούτων δὲ τὸ μέν ἐστι φαύλης προαιρέσεως τὸ δὲ ἀσθενοῦς κρίσεως τὸ δὲ ἐνδεοῦς δυνάμεως. πάντα δὲ ὁ θεὸς ἐκπέφευγε· τῷ φιλαγάθῳ τὸ ἀπατηλόν, καὶ τῷ βεβαίῳ τὸ παλινάγρετον, καὶ τῷ τελεσιουργῷ τὸ ἀτελεύτητον.

25 *Πυθαγόρου.*

Πυθαγόρας ἐρωτηθεὶς τί ποιοῦσιν ἄνθρωποι θεοῖς ὅμοιον ἔφη "ἐὰν ἀληθεύωσιν." Οἱ δὲ μάγοι ἀποφαίνονται τοῦ μεγίστου τῶν θεῶν, ὃν Ὡρομάγδην καλοῦσιν, ἐοικέναι τὸ μὲν σῶμα φωτὶ τὴν δὲ ψυχὴν ἀληθείᾳ.

ΠΕΡΙ ΨΕΥΔΟΥΣ. ΙΒ.

1 *Εὐριπίδου.*

Δύστηνος, ὅστις καὶ τὰ καλὰ ψευδῆ λέγων,
οὐ τοῖσδε χρῆται τοῖς κακοῖς ἀληθέσιν.

2 *Σοφοκλέους Ἀκρισίῳ.*

Ἀλλ' οὐδὲν ἕρπει ψεῦδος ἐς γῆρας χρόνου.

2[a] *Τοῦ αὐτοῦ Ἀλεάδαις.*

3 *Κακὸν τὸ κεύθειν κοὐ πρὸς ἀνδρὸς εὐγενοῦς.*

4 *Σοφοκλέους Κρεούσῃ.*

Καλὸν μὲν οὖν οὐκ ἔστι τὰ ψευδῆ λέγειν,
ὅτῳ δ' ὄλεθρον δεινὸν ἀλήθει' ἄγει,
συγγνωστὸν εἰπεῖν ἐστὶ καὶ τὸ μὴ καλόν.

5 *Μενάνδρου.*

Κρεῖττον λέγεσθαι ψεῦδος ἢ ἀληθὲς κακόν.

6 *Πεισάνδρου.*

Οὐ νέμεσις καὶ ψεῦδος ὑπὲρ ψυχῆς ἀγορεύειν.

7 *Ὁμήρου* (Odyss. γ' 20).

Ψεῦδος δ' οὐκ ἐρέει, μάλα γὰρ πεπνυμένος ἐστί.

8 *Μενάνδρου.*

Τὸ ψεῦδος ἰσχὺν τῆς ἀληθείας ἔχει
ἐνίοτε μείζω καὶ πιθανωτέραν ὄχλου.

9 Μενάνδρου.

Ἦ πού τι χαλεπόν ἐστι τὸ ψευδῆ λέγειν.

10 Εὐριπίδου Ἱππολύτου.

Ἔγωγέ φημι καὶ νόμον γε μὴ σέβειν
ἐν τοῖσι δεινοῖς τῶν ἀναγκαίων πλέον.

11 Διφίλου.

Καιρῷ τιθέμενον κέρδος ὡς καρπὸν φέρει.

12 Διφίλου Θησαυροῦ.

Ὑπολαμβάνω τὸ ψεῦδος ἐπὶ σωτηρίᾳ
λεγόμενον οὐθὲν περιποιεῖσθαι δυσχερές.

13 Δημοκρίτου.

Ἀληθομυθεύειν χρεὼν ὅπου λώιον.

14 Θαλῆς.

Θαλῆς ὁ Μιλήσιος ἐρωτηθεὶς πόσον ἀπέχει τὸ ψεῦδος τοῦ ἀληθοῦς "ὅσον" ἔφη "ὀφθαλμοὶ τῶν ὤτων."

15 Χαιρήμονος.

Ψευδῆ δὲ τοῖς ἐσθλοῖσιν οὐ πρέπει λέγειν.

17 Θεόγνιδος (607).

Ἀρχῇ ἐπὶ ψεύδους μικρὰ χάρις, εἰς δὲ τελευτὴν
αἰσχρὸν δὴ κέρδος καὶ κακὸν ἀμφότερα

---

16 Ἐχθρὸς γάρ μοι κεῖνος ὁμῶς αἴδαο πύλῃσιν,
ὅς χ' ἕτερον μὲν κεύθει ἐνὶ φρεσίν, ἄλλο δὲ εἴπῃ (Il. ι' 312).
Ψεύδεα μὴ βάζειν· τὰ δ' ἐτήτυμα πάντ' ἀγορεύειν (Pseudoph. 7).
Μηδ' ἕτερον κεύθῃς κραδίῃ νόον, ἄλλ' ἀγορεύων (ibid. 48).
Ψεῦδος δὲ μισεῖ πᾶς φρόνιμος καὶ σοφός.
Ψεῦδος δὲ μισεῖ πᾶς σοφὸς καὶ χρήσιμος (Men. mon. 554).
Ψεύδους διαβολὴ τὸν βίον λυμαίνεται (ibid. 553).
Ψευδόμενος οὐδεὶς λανθάνει πολὺν χρόνον (ibid. 547).
Μήτε δόλους ῥάπτειν (Pseudophocyl. 4).
Μαρτυρίην ψευδῆ φεύγειν, τὰ δίκαι' ἀγορεύειν (ibid. 12).

γίνεται. οὐδέ τι καλὸν ὅτῳ ψεῦδος προσομαρτῇ
ἀνδρὶ καὶ ἐξέλθῃ πρῶτον ἀπὸ στόματος.

18 Δημήτριος ἐρωτηθεὶς τί φαῦλον τοῖς ψευδομένοις παρακολουθεῖ εἶπε "τὸ μηδ' ἂν τἀληθῆ λέγωσιν ἔτι πιστεύεσθαι."

19 Θεοφράστου.

Ἐκ διαβολῆς καὶ φθόνου ψεῦδος ἐπ' ὀλίγον ἰσχῦσαν ἀπεμαράνθη.

20 Αἰλιανοῦ (VH. VII, 20).

Ἀνὴρ εἰς Λακεδαίμονα ἀφίκετο Χῖος γέρων ἤδη ὤν, τὰ μὲν ἄλλα ἀλαζών, ᾐδεῖτο δὲ ἐπὶ τῷ γήραι καὶ τὴν τρίχα πολιὰν οὖσαν ἐπειρᾶτο βαφῇ ἀφανίζειν. παρελθὼν οὖν εἶπεν ἐκεῖνα ὑπὲρ ὧν καὶ ἀφίκετο. ἀναστὰς οὖν ὁ Ἀρχίδαμος "τί ἂν" ἔφη "οὗτος ὑγιὲς εἴποι, ὃς οὐ μόνον ἐπὶ τῇ ψυχῇ τὸ ψεῦδος, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῇ κεφαλῇ περιφέρει;"

21 Λυσίου.

Ψεύδεσθαι προχειρότατον τοῖς πολλάκις ἁμαρτάνουσιν.

22 Θεμιστίου ἐκ τοῦ Βασανιστοῦ ἢ φιλοτέκνου (258 b).

Οὐδεμία γὰρ μοχθηρία μᾶλλον δυσκοινώνητος ἀπιστίας· ἀλλ' αὕτη ἐστὶν ἡ κακία, πρὸς ἣν μόνην καὶ φυλακῆς ἐξαποροῦμεν. καὶ γὰρ δὴ ὃ μόνον ἐπορισάμεθα φυλακτήριον, λέγω δὲ τὸν ὅρκον, * τούτῳ αὐτῷ μάλιστα καταχρῆται, * ὅταν δέῃ τι ἄπιστον ἄνδρα κακῶς δράσαντα ἐξαρνήσασθαι. * ἔστι δὲ δή τι καὶ ἕτερον ψεῦδος, ὃ τοὺς μὲν ἄλλους οὐ πάνυ δή τι λυμαίνεται, αἶσχος δέ ἐστι τοῦ χρωμένου· γίνεται γὰρ οὐκ ἐν τῷ καθ' ἑτέρου τὶ λέγειν ἢ πράττειν, ἀλλ'

ἐν τῷ περὶ αὑτοῦ τε καὶ τῶν ἑαυτοῦ. διπλοῦν δὲ τοῦτο καὶ δισχιδές· ἢ γὰρ ἐν τῷ φαυλότερα καὶ ἐλάττω λέγειν τῶν προσόντων ἀληθινῶς, ἢ ἐν τῷ μείζω τε καὶ σεμνότερα. καλεῖται δὲ τὸ μὲν ἐνδεέστερον εἰρωνεία, τὸ δὲ πλέον ἀλαζονεία. τὸ μὲν δὴ ἐλλεῖπον τοῦ ἀληθοῦς κομψόν τέ ἐστι καὶ αἱμύλον καὶ ἐνίοτε οὐκ ἄχρηστον τῷ φιλοσόφῳ, καὶ διὰ τοῦτο αὐτὸ καὶ Σωκράτης παρελάμβανεν ἐν τοῖς λόγοις, ὁπότε ἐδεῖτο ἐπισκῶψαί τινα σοφιστὴν τύφου μεστὸν καὶ γέμοντα περιφροσύνης. μᾶλλον γάρ τι αἰσθάνονται τῆς ἑαυτῶν οὐδενείας, ὅταν ἀμαθέστεροι ἐξελέγχωνται τοῦ μηδὲν εἰδέναι προσποιουμένου. τὸ δὲ ἕτερον τὸ ὑπερβάλλον βαρύ τε καὶ ἐπαχθές, καὶ οὐδὲν οὕτως ἄκουσμα φορτικὸν ὡς ὁ καθ᾽ αὑτοῦ ἔπαινος, καὶ ταῦτα ἐπὶ παιδείᾳ, ἐφ᾽ ᾗ καὶ ἄλλων ἐπαινούντων ἐρυθριᾶν χρεὼν τοὺς ἀληθινῶς αὐτῆς ἐπηβόλους. — Οὐκ οὖν καὶ πρὸς ἀλήθειαν, ταυτὸν τοῦτο ἀνάπηρον ψυχὴν θήσομεν, ἣ ἂν τὸ μὲν ἑκούσιον ψεῦδος μισῇ, καὶ χαλεπῶς φέρῃ αὐτή τε καὶ ἑτέρων ψευδομένων ὑπεραγανακτῇ, τὸ δὲ ἀκούσιον εὐκόλως προσδέχηται, καὶ ἀμαθαίνουσά που ἁλισκομένη μὴ ἀγανακτῇ, ἀλλ᾽ εὐχερῶς ὥσπερ θηρίον ὕειον ἐν ἀμαθίᾳ μολύνηται;

23 *Ἡροδότου* (III, 72).

Ἔνθα γάρ τι δεῖ καὶ ψεῦδος λέγεσθαι, λεγέσθω.

24 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ σοφιστοῦ* (240 c).

Ὁρᾷς γοῦν ὅτι καὶ νῦν διὰ τῆς ἐπάλξεως ταύτης ὁ πολυκέφαλος σοφιστὴς ἠνάγκασεν ἡμᾶς τὸ μὴ ὂν οὐχ ἑκόντας ὁμολογεῖν εἶναί πως; Ὁρῶ καὶ μάλα. Τί δαὶ δή; τὴν τέχνην αὐτοῦ τίνα ἀφορίζοντες ἡμῖν αὐτοῖς συμφωνεῖν οἷοί τε ἐσόμεθα; Πῇ καὶ τὸ ποιόν τι φοβούμενος οὕτω λέγεις; Ὅταν περὶ τὸ φάντασμα

αὐτὸν ἀπατᾶν φῶμεν καὶ τὴν τέχνην εἶναί τινα ἀπατητικὴν αὐτοῦ, τότε πότερον ψευδῆ δοξάζειν τὴν ψυχὴν ἡμῶν φήσομεν ὑπὸ τῆς ἐκείνου τέχνης, ἢ τί ποτ' ἐροῦμεν; Τοῦτο. τί γὰρ ἂν ἄλλο εἴποιμεν; Ψευδὴς δ' αὖ δόξα ἔσται τἀναντία τοῖς οὖσι δοξάζουσα; ἢ πῶς; Τὰ ἐναντία. Λέγεις ἄρα τὰ μὴ ὄντα δοξάζειν τὴν ψευδῆ δόξαν; Ἀνάγκη. Πότερον μὴ εἶναι τὰ μὴ ὄντα δοξάζουσαν, ἢ πῶς λέγεις εἶναι τὰ μηδαμῶς ὄντα; Εἶναί πως τὰ μὴ ὄντα δεῖ γε, εἴπερ ψεύσεταί ποτέ τις τὶ καὶ κατὰ βραχύ. Τί δ'; οὐ καὶ μηδαμῶς εἶναι τὰ πάντως ὄντα δοξάζεται; Ναί. Καὶ τοῦτο δὴ ψεῦδος; Καὶ τοῦτο. Καὶ λόγος, οἶμαι, ψευδής, οὕτω κατὰ ταυτὰ νομισθήσεται, τά τε ὄντα λέγων μὴ εἶναι καὶ τὰ μὴ ὄντα εἶναι. Πῶς γὰρ ἂν ἄλλως τοιοῦτος γένοιτο;

25 *Ἐν ταυτῷ* (260 b).

Τὸ μὲν δὴ μὴ ὂν ἡμῖν ἕν τι τῶν ἄλλων γένος ὂν ἀνεφάνη, κατὰ πάντα τὰ ὄντα διεσπαρμένον. Οὕτως. Οὐκ οὖν τὸ μετὰ τοῦτο σκεπτέον, εἰ δόξῃ τε καὶ λόγῳ μίγνυται; Τί δή; Μὴ μιγνυμένου μὲν αὐτοῦ τούτοις, ἀναγκαῖον ἀληθῆ πάντ' εἶναι· μιγνυμένου δέ, δόξα τε ψευδὴς γίνεται καὶ λόγος. τὸ γὰρ τὰ μὴ ὄντα δοξάζειν ἢ λέγειν, τοῦτ' ἐστί που τὸ ψεῦδος ἐν διανοίᾳ τε καὶ λόγοις γιγνόμενον. Οὕτως. Ὄντος δέ γε ψεύδους ἔστιν ἀπάτη; Ναί. Καὶ μὴν ἀπάτης οὔσης, εἰδώλων τε καὶ εἰκόνων ἤδη καὶ φαντασίας ἅπαντα ἀνάγκη μεστὰ εἶναι. Πῶς γὰρ οὔ;

26 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ περὶ δικαίου* (374 b).

Φέρε δή, πότερον ἡγῇ δίκαιον εἶναι ψεύδεσθαι ἢ ἀληθῆ λέγειν; Ἀληθῆ ἔγωγε. Ψεύδεσθαι ἄρα ἄδικον; Ναί. Πότερον δὲ καὶ ἐξαπατᾶν ἡγῇ δίκαιον ἢ

μὴ ἐξαπατᾶν; Μὴ ἐξαπατᾶν δήπου. Ἐξαπατᾶν ἄρα ἄδικον; Ναί. Τί δαί, βλάπτειν δίκαιον ἢ ὠφελεῖν; Ὠφελεῖν. Βλάπτειν ἄρα ἄδικον; Ναί. Ἔστιν ἄρα ἀληθῆ μὲν λέγειν καὶ μὴ ἐξαπατᾶν καὶ ὠφελεῖν δίκαιον, ψεύδεσθαι δὲ καὶ βλάπτειν καὶ ἐξαπατᾶν ἄδικον; Ναὶ μὰ Δία σφόδρα γε. Ἦ καὶ τοὺς πολεμίους; Οὐδαμῶς. Ἀλλὰ βλάπτειν δίκαιον τοὺς πολεμίους, ὠφελεῖν δὲ ἄδικον; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ ἐξαπατῶντας δίκαιον βλάπτειν τοὺς πολεμίους; Πῶς γὰρ οὔ; Τί δέ, ψεύδεσθαι ἵνα ἐξαπατῶμεν καὶ βλάπτωμεν αὐτοὺς οὐ δίκαιον; Ναί. Τί δαί, τοὺς φίλους οὐκ ὠφελεῖν δίκαιον εἶναι φής; Ἔγωγε. Πότερον μὴ ἐξαπατῶντας ἢ ἐξαπατῶντας ἐπ' ὠφελείᾳ τῇ ἐκείνων; Καὶ ἐξαπατῶντας νὴ Δία. Ἀλλ' ἐξαπατῶντας μὲν δίκαιον ἄρα ὠφελεῖν, οὐ μέντοι ψευδομένους γε ἢ καὶ ψευδομένους; Καὶ ψευδομένους δίκαιον. Ἔστιν ἄρα, ὡς ἔοικε, ψεύδεσθαί τε καὶ ἀληθῆ λέγειν δίκαιον καὶ ἄδικον; Ναί. Καὶ μὴ ἐξαπατᾶν καὶ ἐξαπατᾶν, δίκαιον καὶ ἄδικον; Ἔοικε. Καὶ βλάπτειν καὶ ὠφελεῖν, δίκαιον καὶ ἄδικον; Ναί. Ταῦτα δή, ὡς ἔοικε, πάντα τὰ τοιαῦτα ὄντα, καὶ δίκαια καὶ ἄδικα ἔστιν; Ἔμοιγε φαίνεται. Ἄκουε δή. Ὀφθαλμὸν ἐγὼ ἔχω δεξιὸν καὶ ἀριστερόν, ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι ἄνθρωποι; Ναί. Καὶ μυκτῆρα δεξιὸν καὶ ἀριστερόν, καὶ χεῖρα δεξιὰν καὶ ἀριστεράν; Ναί. Οὐκ οὖν ἐπειδὴ ταυτὰ ὀνομάζων τὰ μὲν δεξιὰ φὴς εἶναι τὰ δὲ ἀριστερὰ τῶν ἐμῶν, εἴ σε ἐγὼ ἐροίμην, ὁπότερα ἂν ἔχοις εἰπεῖν, ὅτι τὰ μὲν πρὸς τοῦδε δεξιά ἐστι, τὰ δὲ πρὸς σοῦ ἀριστερά; Ναί. Ἴθι δὴ καὶ ἐκεῖ. Ἐπειδὴ ταυτὰ ὀνομάζων τὰ μὲν δίκαια φὴς εἶναι τὰ δὲ ἄδικα, ἔχεις εἰπεῖν, ὁπότερα τὰ δίκαια καὶ ὁπότερα τὰ ἄδικα; Ἐμοὶ μὲν τοίνυν δοκεῖ, ἐν μὲν τῷ δέοντι καιρῷ ἕκαστα τούτων

γιγνόμενα δίκαια εἶναι, ἐν δὲ τῷ μὴ δέοντι ἄδικα. Καλῶς γέ σοι δοκοῦν· ὁ μὲν ἄρα ἐν τῷ δέοντι ἕκαστα τούτων ποιῶν δίκαια ποιεῖ, ὁ δὲ μὴ ἐν τῷ δέοντι ἄδικα; Ναί. Οὐκ οὖν ὁ μὲν τὰ δίκαια ποιῶν δίκαιος, ὁ δὲ τὰ ἄδικα ἄδικος; Ἔστι ταῦτα. Τίς οὖν ὁ ἐν τῷ δέοντι καιρῷ οἷός τε τέμνειν καὶ κάειν καὶ ἰσχναίνειν; Ὁ ἰατρός. Ὅτι ἐπίσταται ἢ δι' ἄλλο τι; Ὅτι ἐπίσταται. Τίς δὲ ἐν τῷ δέοντι σκάπτειν καὶ ἀροῦν καὶ φυτεύειν οἷός τε; Ὁ γεωργός. Ὅτι ἐπίσταται ἢ ὅτι οὔ; Ὅτι ἐπίσταται. Οὐκ οὖν καὶ τὰ ἄλλα οὕτως, ὁ μὲν ἐπιστάμενος οἷός τε τὰ δέοντα ποιεῖν ἐστι καὶ ἐν τῷ δέοντι καιρῷ, ὁ δὲ μὴ ἐπιστάμενος οὔ; Οὕτως. Καὶ ψεύδεσθαι ἄρα καὶ ἐξαπατᾶν καὶ ὠφελεῖν ὁ μὲν ἐπιστάμενος οἷός τε ποιεῖν ἕκαστα τούτων ἐν τῷ δέοντι καιρῷ· ὁ δὲ μὴ ἐπιστάμενος οὔ; Ἀληθῆ λέγεις.

ΠΕΡΙ ΠΑΡΡΗΣΙΑΣ. ΙΓ.

1 *Εὐριπίδου.*

Πότερα θέλεις σοι μαλθακὰ ψευδῆ λέγω
ἢ σκλήρ' ἀληθῆ; φράζε· σὴ γὰρ ἡ κρίσις.

2 *Σοφοκλέους Οἰδίποδος* (Tyr. 354).

Οὕτως ἀναιδῶς ἐξεκίνησας τόδε
τὸ ῥῆμα· καὶ ποῦ τοῦτο φεύξεσθαι δοκεῖς;
Πέφευγα· τἀληθὲς γὰρ ἰσχυρὸν τρέφω.

3 *Σοφοκλέους Αἴαντι* (1118).

Οὐδ' αὖ τοιαύτην γλῶσσαν ἐν κακοῖς φιλῶ.
τὰ σκληρὰ γάρ τοι, κἂν ὑπέρδικ' ᾖ, δάκνει.

4 *Ἐν τῷ αὐτῷ* (1124).

Ἡ γλῶσσά σου τὸν θυμὸν ὡς δεινὸν τρέφει.
ξὺν τῷ δικαίῳ γὰρ μέγ' ἔξεστιν φρονεῖν.

5 Σοφοκλέους Τηρεῖ.

Θάρσει· λέγων τἀληθὲς οὐ σφαλεῖ ποτέ.

6 Σοφοκλέους Ἀλεάδαι.

Καὶ γὰρ δικαία γλῶσσ' ἔχει κράτος μέγα.

7 Εὐριπίδου Ἰνοῦς.

Ἐμοὶ γένοιτο πτωχός, εἰ δὲ βούλεται,
πτωχοῦ κακίων, ὅστις ὢν εὔνους ἐμοὶ
φόβον παρελθὼν τἀπὸ καρδίας ἐρεῖ.

8 Εὐριπίδου Τημενίδαις.

Καλόν γ' ἀληθὴς κἀτενὴς παρρησία.

9 Σοφοκλέους.

Αἰδὼς γὰρ ἐν κακοῖσιν οὐδὲν ὠφελεῖ·
ἡ γὰρ σιωπὴ τὠγκαλοῦντι σύμμαχος.

10 Εὐριπίδου ἐκ Τηλέφου.

Ἀγάμεμνον, οὐδ' εἰ πέλεκυν ἐν χεροῖν ἔχων
μέλλοι τις ἐς τράχηλον ἐμβαλεῖν ἐμόν,
σιγήσομαι, δίκαιά γ' ἀντειπεῖν ἔχων.

11 Φιλήμονος Ἐπιδικαζομένου.

Πρόχειρον ἐπὶ τὴν γλῶτταν εὐλόγῳ τρέχειν.

12 Εὐριπίδου Ἑκάβης (1238).

Φεῦ φεῦ· βροτοῖσιν ὡς τὰ χρηστὰ πράγματα
χρηστῶν ἀφορμὰς ἐνδίδωσ' ἀεὶ λόγων.

13 Εὐριπίδου ἐν τῷ Δίκτυι.

Θάρσει· τό τοι δίκαιον ἰσχύει μέγα.

14 Μοσχίωνος.

Ὅμως τό γ' ὀρθὸν καὶ δίκαιον οὔ ποτε
σιγῇ παρήσω. τὴν γὰρ ἐντεθραμμένην

ἀστοῖς Ἀθάνας τῇ τε Θησέως πόλει
καλὸν φυλάξαι γνησίως παρρησίαν.

15 Εὐριπίδου.
Ἀτὰρ σιωπᾶν τά γε δίκαι' οὐ χρή ποτε.

16 Φιλοξένου.

Φιλόξενος παραδοθεὶς ὑπὸ Διονυσίου ποτὲ εἰς τὰς λατομίας διὰ τὸ φαυλίζειν τὰ ποιήματα αὐτοῦ, καὶ ἀνακληθεὶς ἔπειτα πάλιν ἐπὶ τὴν ἀκρόασιν αὐτῶν ἐκλήθη· μέχρι τινὸς ὑπομείνας ἀνέστη· πυθομένου δὲ τοῦ Διονυσίου "ποῖ δὴ σύ;" "εἰς τὰς λατομίας" εἶπεν.

17 Δημοσθένους.

Οὐδὲν ἂν εἴη τοῖς ἐλευθέροις μεῖζον ἀτύχημα τοῦ στέρεσθαι τῆς παρρησίας.

18 Ἐκ τῶν Διογένους διατριβῶν.

Ὥσπερ οὖν τοῦ Ποντικοῦ μέλιτος γεύσασθαι ἐπιχειροῦσιν οἱ ἄπειροι, γευσάμενοι δὲ παραχρῆμα ἐξέπτυσαν δυσχεράναντες, ὅτι πικρόν ἐστι καὶ ἀηδές· οὕτω καὶ τοῦ Διογένους ἀποπειρᾶσθαι μὲν ἤθελον διὰ πολυπραγμοσύνην, ἐλεγχόμενοι δὲ ἀπεστρέφοντο καὶ ἔφευγον, καὶ ἄλλων μὲν ἥδοντο λοιδορουμένων, αὐτοὶ δ' ἐφοβοῦντο καὶ ἀνεχώρουν· καὶ εἰ μὲν ἔσκωπτε καὶ ἔπαιζεν, ὥσπερ εἰώθει ἐνίοτε, ὑπερφυῶς ἔχαιρον, ἀνατεινομένου δὲ καὶ σπουδάζοντος οὐχ ὑπέμενον τὴν παρρησίαν.

19 Ἐν ταυτῷ.

Ἐπεὶ αὐτόν γε τὸν Ἀντισθένην παραβάλλων πρὸς τοὺς λόγους ἐνίοτε ἤλεγχεν ὡς πολὺ μαλακώτερον καὶ ἔφη αὐτὸν εἶναι σάλπιγγα λοιδορῶν, αὐτοῦ γὰρ οὐκ ἀκούειν φθεγγομένου μέγιστον. καὶ Ἀντισθένης ἀμυ-

νόμενος ἀντὶ τῆς σάλπιγγος ἔλεγε ταῖς σφηξὶν ὅμοιον αὐτὸν εἶναι· καὶ γὰρ τῶν σφηκῶν τὸν μὲν ψόφον τῶν πτερῶν εἶναι μικρόν, τὸ δὲ κέντρον δριμύτατον. ἔχαιρεν οὖν τῇ παρρησίᾳ τοῦ Διογένους.

20 *Σόλωνος.*

Συμβούλευε μὴ τὰ ἥδιστα, ἀλλὰ τὰ ἄριστα.

21 *Πυθαγόρου.*

Συγγενεῖ καὶ ἄρχοντι πλὴν ἐλευθερίας πάντα εἶκε.

22 *Ἐκ τῶν Ἀρίστωνος ὁμοιωμάτων.*

Ὅμοιον ἀψινθίου τὸ δριμὺ καὶ λόγου παρρησίαν ἐκκόψαι.

23 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Ὥσπερ τὸ μέλι τὰ ἡλκωμένα δάκνει, τοῖς δὲ κατὰ φύσιν ἡδύ ἐστιν, οὕτω καὶ οἱ ἐκ φιλοσοφίας λόγοι.

24 *Ἐκ τῶν Δίωνος χρειῶν.*

Τὴν ἐπιτίμησιν ὁ Διογένης ἀλλότριον ἀγαθὸν ἔλεγεν εἶναι.

25 *Διογένους.*

Διογένης Ἀττικοῦ τινὸς ἐγκαλοῦντος αὐτῷ διότι Λακεδαιμονίους μᾶλλον ἐπαινῶν παρ' ἐκείνοις οὐ διατρίβει "οὐδὲ γὰρ ἰατρὸς" εἶπεν "ὑγιείας ὢν ποιητικὸς ἐν τοῖς ὑγιαίνουσι τὴν διατριβὴν ποιεῖται."

26 *Δημοκρίτου.*

Κρέσσον τὰ οἰκήια ἁμαρτήματα ἐλέγχειν ἢ τὰ ὀθνεῖα.

27 *Διογένους.*

Ὁ Διογένης ἔλεγεν, ὅτι οἱ μὲν ἄλλοι κύνες τοὺς ἐχθροὺς δάκνουσιν, ἐγὼ δὲ τοὺς φίλους, ἵνα σώσω.

28 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Ἀντιπάτρῳ ἀγροῖκος ἄνθρωπος ἐπεδίδου βιβλίον ἐντυχίαν ἔχον, ὃ δὲ οὐ σχολάζειν ἔφη. "καὶ μὴ βασίλευε" εἶπεν ἐκεῖνος "εἰ μὴ σχολὴν ἄγεις."

29 Ἐν ταυτῷ.

Πρεσβῦτις δικαζομένη ἐπὶ Φιλίππου, ὡς ἑώρα νυστάζοντα ἔπειτα μέλλοντα ἀποφαίνεσθαι, ἐδεῖτο συγχωρῆσαι αὐτῇ ἐφεῖναι. ὃ δὲ "ἐπὶ τίνα;" εἶπεν. "ἐπὶ Φίλιππον" ἀπεκρίνατο "ἐγρηγορότα."

30 Δημοκράτους.

Δημοκράτης ἰδὼν κλέπτην ὑπὸ τῶν ἕνδεκα ἀπαγόμενον "ἄθλιε" εἶπε "τί γὰρ τὰ μικρὰ ἔκλεπτες ἀλλ' οὐ τὰ μεγάλα, ἵνα καὶ σὺ ἄλλους ἀπῆγες;"

31 Ἱπποκράτους.

Ἱπποκράτην ἔπειθέ τις πρὸς Ξέρξην ἀπαίρειν, χρηστὸν εἶναι φάσκων βασιλέα· ὃ δὲ "οὐ δέομαι" ἔφη "χρηστοῦ δεσπότου."

32 Δημοσθένους.

Δημοσθένης πρὸς κλέπτην εἰπόντα "οὐκ ᾔδειν ὅτι σόν ἐστιν," "ὅτι δὲ" ἔφη "σὸν οὐκ ἔστιν ᾔδεις."

33 Πυθαγόρου.

Τὰ ἁμαρτήματά σου πειρῶ μὴ λόγοις καλύπτειν, ἀλλὰ θεραπεύειν ἐλέγχοις.

34 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὐχ οὕτω χαλεπὸν ἁμαρτάνειν ὡς τὸν ἁμαρτάνοντα μὴ ἐξελέγχειν.

35 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὥσπερ σωματικὸν πάθος οὐ κρυπτόμενον οὐδὲ ἐπαινούμενον ὑγιάζεται, οὕτως οὐδὲ ψυχὴ κακῶς φρουρουμένη καὶ συναγορευομένη θεραπεύεται.

36 *Πλάτωνος.*

Διονύσιος ὁ τύραννος ἀτιμάζων αὐτὸν διὰ τὴν πρὸς Δίωνα φιλίαν κατέκλινεν αὐτὸν ἐν τῇ ἐσχάτῃ χώρᾳ· καὶ μυκτηρίζων "ἦ που ὁ Πλάτων" ἔφη "ἐνθένδε ἀπελθὼν πολὺν ἐν Ἀκαδημείᾳ λόγον καθ' ἡμῶν διαθήσει." ὁ δὲ "μὴ λόγων" ἔφη "γένοιτο τοσαύτη ἀπορία ὥστε περὶ σοῦ διαλέγεσθαι."

37 *Διογένους.*

Διογένης ἤρετο Πλάτωνα εἰ νόμους γράφει· ὃ δὲ ἔφη. Τί δαί; πολιτείαν ἔγραψας; Πάνυ μὲν οὖν. Τί οὖν, ἡ πολιτεία νόμους οὐκ εἶχεν; Εἶχεν. Τί οὖν ἔδει σε πάλιν νόμους γράφειν;

38 *Αἰλιανοῦ* (VH. 14, 3).

Τιμόθεος ὁ Κόνωνος πρὸς Ἀριστοφῶντα τὸν Ἀζηνιέα πάντων ἄριστα ἔχοντα λόγον εἶπεν· ἐπεὶ γὰρ ἄσωτος ἦν ὁ Ἀριστοφῶν, πικρότατα αὐτοῦ καθίκετο ὁ Τιμόθεος εἰπὼν "ᾧ ἱκανὸν οὐδέν, τούτῳ γε αἰσχρὸν οὐδέν."

39 *Ἐκ τῶν Ἀρίστωνος ὁμοιωμάτων.*

Φήσαντός τινος "λίαν μοι ἐπισκώπτεις," ἔφη "καὶ γὰρ τοῖς σπληνικοῖς τὰ μὲν δριμέα καὶ πικρὰ ὠφέλιμα, τὰ δὲ γλυκέα βλαβερά.

40 *Δημοκρίτου.*

Οἰκήιον ἐλευθερίης παρρησίη, κίνδυνος δὲ ἡ τοῦ καιροῦ διάγνωσις.

41 *Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν γ'* (p. 34).

Ἀλλὰ δικαίου πολίτου κρίνω τὴν τῶν πραγμάτων σωτηρίαν ἀντὶ τῆς ἐν τῷ λέγειν χάριτος αἱρεῖσθαι.

42 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Ἡ Λάκαινα πωλουμένη πρὸς τὸν ἐρόμενον τί ἐπίσταται, "ἐλευθέρα" ἔφη "εἶναι."

43 Θεμιστίου ἐκ τοῦ περὶ ψυχῆς.

Εἰ μὲν οὖν ὀρθῶς ἐπὶ Πλάτωνος εἶπε Διογένης "τί δὲ ὄφελος ἡμῖν ἀνδρὸς ὃς πολὺν ἤδη χρόνον φιλοσοφῶν οὐδένα λελύπηκεν;" ἕτεροι κρινοῦσιν. ἴσως γὰρ ὡς τὸ μέλι δεῖ καὶ τὸν λόγον τοῦ φιλοσόφου τὸ γλυκὺ δηκτικὸν ἔχειν τῶν ἡλκωμένων.

44 Εὐσεβίου.

Παρρησίη ἀπὸ γνώμης ἐλευθέρης καὶ ἀληθείην ἀσπαζομένης προέρχεται· παρέξεαι δὲ αὐτὴν ἀμώμητον οὐ τῷ πᾶσι καὶ ὡς ἔτυχεν ἐπιτιμᾶν καὶ λοιδορέεσθαι, νομίζων τοῦτο εἶναι τὴν παρρησίην· ἀλλ' εἰ πρὸς οὓς δεῖ καὶ ὑπὲρ τίνων χρὴ καὶ ἐν ᾧ χρὴ μετὰ τοῦ χρησίμου τῶν παρισταμένων ξὺν νόῳ προσδιαλέγοιο.

45 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἐχθρὸς τἀληθέα εἰπὼν τοῦ προσποιευμένου φίλου πρὸς χάριν εἰπόντος παντὸς αἱρετώτερος.

46 Σωκράτους.

Τῆς παρρησίας ὥσπερ ὥρας ἐν καιρῷ ἡ χάρις ἡδίων.

47 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὔτε μάχαιραν ἀμβλεῖαν οὔτε παρρησίαν ἄπρακτον ἔχειν δεῖ.

48 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὔτε ἐκ τοῦ κόσμου τὸν ἥλιον οὔτε ἐκ τῆς παιδείας ἀρτέον τὴν παρρησίαν.

49 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἔστιν ὥσπερ τρίβωνα ῥυπαρὸν ἀμπεχόμενον εὐ-

εκτεῖν, οὑτωσὶ καὶ βίον ἔχοντα πενιχρὸν παρρησιάζεσθαι.

50 *Ἑρμοῦ ἐκ τοῦ Ἴσιδος πρὸς Ὧρον.*

Ἔλεγχος γὰρ ἐπιγνωσθείς, ὦ μέγιστε βασιλεῦ, εἰς ἐπιθυμίαν φέρει τὸν ἐλεγχθέντα ὧν πρότερον οὐκ ᾔδει.

ΠΕΡΙ ΚΟΛΑΚΕΙΑΣ. ΙΔ.

1 *Ποσειδίππου.*

Τὴν χλανίδα πάντες, ὡς ἔοικεν, οὐκ ἐμὲ
προσηγόρευον. οὐδὲ εἷς νῦν μοι λαλεῖ.

2 *Κριτίου.*

Ὅστις δὲ τοῖς φίλοισι πάντα πρὸς χάριν
πράσσων ὁμιλεῖ, τὴν παραυτίχ' ἡδονὴν
ἔχθραν καθίστησ' εἰς τὸν ὕστερον χρόνον.

3 *Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.*

Φίλους δὲ τοὺς μὲν μὴ χαλῶντας ἐν λόγοις
κέκτησο, τοὺς δὲ πρὸς χάριν σὺν ἡδονῇ
τῇ σῇ πονηροὺς κλῇθρον εἰργέτω στέγης.

4 *Ζήνωνος.*

Ἔλεγχε σαυτὸν ὅστις εἶ, μὴ πρὸς χάριν
ἄκου', ἀφαιροῦ δὲ κολάκων παρρησίαν.

5 *Εὐριπίδου Ἰφιγενείας* (Aul. 979).

Αἰνούμενοι γὰρ ἀγαθοὶ τρόπον τινὰ
μισοῦσι τοὺς αἰνοῦντας, ἢν αἰνῶσ' ἄγαν.

6 *Εὐριπίδου Ὀρέστου* (1162).

Βάρος τι καὶ τόδ' ἐστὶν αἰνεῖσθαι λίαν.

7 *Νικολάου.*

Τὸ τῶν παρασίτων, ἄνδρες, ἐξεῦρεν γένος
Διὸς πεφυκώς, ὡς λέγουσι, Τάνταλος.
οὐ δυνάμενος δὲ τῇ τέχνῃ χρῆσθαι καλῶς,
ἀκόλαστον ἔσχε γλῶσσαν, εἶτ' ἀκουσίῳ
δίφρῳ περιπεσὼν δυναμένῳ λιμὸν ποιεῖν,
ἀπὸ τῆς τραπέζης ἐξαπίνης ἀπεστράφη.
ἄφνω δὲ πληγεὶς εἰς μέσην τὴν γαστέρα
ἔδοξεν αὐτῷ γεγονέναι τἄνω κάτω,
Σίπυλόν τε τοῦτον ἀνατετράφθαι τὸν τρόπον.
καὶ μάλα δικαίως· Φρὺξ γὰρ ὢν οὐχ ἱκανὸς ἦν
τὴν τοῦ τρέφοντος εὖ φέρειν παρρησίαν.
διὸ δὴ τοιαύτης παντελῶς καχεξίας
ἐν τοῖς βίοις παρὰ πᾶσιν ἐξηλωμένης,
πικρῶς ἐπιπλῆξαι βούλομ', ἄν περ νὴ Δία
παρρησίαν μοι δῶτε, τοὺς ἀσυμβόλους
τἀλλότρια δειπνεῖν ἑλομένους ἄνευ πόνου.
τί γὰρ μαθών, ἄνθρωπε, πρὸς τῶν δαιμόνων
βούλει παρασιτεῖν; ἢ τί τῶν ἐν τῷ βίῳ
ξυνῆκας; εἶπον, ἄξιον γὰρ εἰδέναι.
τίνος μαθητὴς γέγονας; αἵρεσιν τίνα
ζηλοῖς; ἀπὸ τίνων δογμάτων ὁρμώμενος
τολμᾷς παρασιτεῖν; ἃ μόλις ἡμεῖς τὸν βίον
ἅπαντα κατατρίψαντες, οὐδὲ νῦν ἔτι
ἀνεῳγμένην δυνάμεθα τὴν θύραν ἰδεῖν,
διὰ τοὺς ἀνοδίᾳ τἀλλότρια μασωμένους.
οὐ παντὸς ἀνδρὸς ἐπὶ τράπεζαν ἔσθ' ὁ πλοῦς.
πλευρὰν ἔχειν πρώτιστον ἐν τούτοισι δεῖ,
πρόσωπον ἰταμόν, χρῶμα διαμένον, γνάθον
ἀκάματον, εὐθὺς δυναμένην πληγὰς φέρειν·
στοιχεῖα μὲν ταῦτ' ἐστὶ τῆς ὅλης τέχνης.
ἔπειτα δεῖ σκωπτόμενον ἐφ' ἑαυτῷ γελᾶν·
αἰσχρὸν γὰρ οἶμαι δοῦλον εἶναι σκώμματος.

ἀπὸ τῶν ἐτῶν κλέπτει τις, ἢ καὶ βλάπτεται
θέλων καλὸς εἶναι, καὶ παρ' ἡλικίαν νοσεῖ;
ἔστω Γανυμήδης οὗτος ἀποθεούμενος.
πρὸς χάριν ὁμίλει τοῦ τρέφοντος ἐπ' ὀλέθρῳ.
παρατάττεταί τις καὶ ποιεῖ πάντας νεκροὺς
δειπνῶν; σιωπῇ τοῦτον ὑπομυκτηρίσας
εἰς τὴν τράπεζαν καὶ σὺ τὴν χολὴν ἄφες.
οἶμαι δ' ἐμαυτὸν εὔθετον τῷ πράγματι,
παῖδες, γεγονέναι· πάντα γὰρ πρόσεστί μοι
ὅσα περ ἔχειν τἀλλότρια τὸν δειπνοῦντα δεῖ,
λιμὸς ἀπόνοια τόλμα γαστὴρ ἀργία.
καὶ νῦν μ' ὁ Λυδῶν τῶν πολυχρύσων ἄναξ
σύνδειπνον αὐτῷ κέκρικεν εἶναι καὶ φίλον.

8 *Δημοκρίτου.*

Εὐλογέειν ἐπὶ καλοῖς ἔργμασι καλόν· τὸ γὰρ ἐπὶ φλαύροισι κίβδηλον καὶ ἀπατεῶνος ἔργον.

9 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Τὰ μὲν ξύλα τὸ πῦρ αὔξοντα ὑπ' αὐτοῦ καταναλίσκεται, ὁ δὲ πλοῦτος ἐκτρέφων τοὺς κόλακας ὑπ' αὐτῶν τούτων διαφθείρεται.

10 *Σωτίωνος ἐκ τοῦ περὶ ὀργῆς.*

Οἱ δελφῖνες μέχρι τοῦ κλύδωνος συνδιανήχονται τοῖς κολυμβῶσι, πρὸς δὲ τὸ ξηρὸν οὐκ ἐξοκέλλουσιν· οὕτως οἱ κόλακες ἐν εὐδίᾳ παραμένουσιν, ὡς καὶ οἱ τοὺς φίλους εἰς ἀποδημίαν προπέμποντες μέχρι τῆς λείας συμπαρακολουθοῦσιν, ἐπειδὰν δὲ εἰς τραχεῖαν ἔλθωσιν, ἀπίασιν.

11 *Φαβωρίνου.*

Ἔστι δὲ οὐκ ἀξιόπιστος ἔπαινος, ὃν ἐπαινεῖ τις ἕτερον διὰ τὸ ἑαυτοῦ συμφέρον.

12 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὥσπερ ὁ Ἀκταίων ὑπὸ τῶν τρεφομένων ὑπ' αὐτοῦ κυνῶν ἀπέθανεν, οὕτως οἱ κόλακες τοὺς τρέφοντας κατεσθίουσι.

13 Θεοδώρου ὑπὲρ Ἐλπίδος Φοριανῆς.

Εἴσοδος δὲ ἦν παρ' αὐτὴν οὐκ ὀλίγη, τῶν μὲν τοῦ ἤθους τὴν ἀφέλειαν ἀποδεχομένων, τῶν δέ τι καὶ δεομένων ἴσως· τῶν δὲ πολλῶν συνήθη νοσούντων καὶ οἰκείᾳ φύσει χρωμένων, οἳ τοὺς πλουτοῦντας ὥσπέρ τι κρεῖττον θαυμάζοντες φθείρεσθαι πρὸς τὰς τούτων θύρας εἰώθασιν, κἂν μηδ' ὁτιοῦν τῆς εὐπορίας μεθέξειν μέλλωσιν.

14 Διογένους.

Ἐπὶ τῆς κολακείας ὥσπερ ἐπὶ μνήματος αὐτὸ μόνον τὸ ὄνομα τῆς φιλίας ἐπιγέγραπται.

15 Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον.

Μίσει τοὺς κολακεύοντας ὥσπερ τοὺς ἐξαπατῶντας· ἀμφότεροι γὰρ πιστευθέντες τοὺς πιστεύοντας ἀδικοῦσι.

16 Κράτητος.

Κράτης τοὺς κόλακάς φησι συγκατανευσιφάγους.

17 Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης αἱρετώτερόν φησιν εἰς κόρακας ἐμπεσεῖν ἢ εἰς κόλακας· οἳ μὲν γὰρ ἀποθανόντος τὸ σῶμα, οἳ δὲ ζῶντος τὴν ψυχὴν λυμαίνονται.

18 Πυθαγόρου.

Χαῖρε τοῖς ἐλέγχουσί σε μᾶλλον ἢ τοῖς κολακεύουσιν· ὡς δ' ἐχθρῶν χείρονας ἐκτρέπου τοὺς κολακεύοντας.

19 Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης ἔλεγεν, ὥσπερ τὰς ἑταίρας τἀγαθὰ πάντα εὔχεσθαι τοῖς ἐρασταῖς παρεῖναι πλὴν νοῦ καὶ φρονήσεως, οὕτω καὶ τοὺς κόλακας οἷς σύνεισι.

20 *Κράτητος.*

Κράτης πρὸς νέον πλούσιον πολλοὺς κόλακας ἐπισυρόμενον "νεανίσκε" εἶπεν "ἐλεῶ σου τὴν ἐρημίαν."

21 *Σωκράτους.*

Ἡ τῶν κολάκων εὔνοια καθάπερ ἐκ τροπῆς φεύγει τὰς ἀτυχίας.

22 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Θηρεύουσι τοῖς μὲν κυσὶ τοὺς λαγωοὺς οἱ κυνηγοί, τοῖς δὲ ἐπαίνοις τοὺς ἀνοήτους οἱ κόλακες.

23 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οἱ μὲν λύκοι τοῖς κυσίν, οἱ δὲ κόλακες τοῖς φίλοις ὄντες ὅμοιοι ἀνομοίων ἐπιθυμοῦσιν.

24 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἔοικεν ἡ κολακεία γραπτῇ πανοπλίᾳ. διὸ τέρψιν μὲν ἔχει, χρείαν δὲ οὐδεμίαν παρέχεται.

25 *Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς Διόνυσον ἐπιστολῆς* (317 c).

Ἑώρων γὰρ καὶ τότε καὶ νῦν ὁρῶ τὰς μεγάλας οὐσίας καὶ ὑπερόγκους τῶν τε ἰδιωτῶν καὶ τῶν μονάρχων, σχεδὸν ὅσῳ περ ἂν μείζους ὦσι, τοσούτῳ πλείους καὶ μείζους τοὺς διαβάλλοντας, καὶ πρὸς ἡδονὴν μετὰ αἰσχρᾶς βλάβης τοὺς ὁμιλοῦντας τρεφούσας, οὗ κακὸν οὐδὲν μεῖζον γεννᾷ πλοῦτός τε καὶ ἡ τῆς ἄλλης ἐξουσίας δύναμις.

26 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ ἐπιταφίου* (235 d).

Ὅταν δέ τις ἐν τούτοις ἀγωνίζηται, ὥσπερ καὶ ἐπαινεῖ, οὐδὲν μέγα δοκεῖν εὖ λέγειν.

ΠΕΡΙ ΑΣΩΤΙΑΣ. ΙΕ.

1 Μενάνδρου.
Τοὺς τὸν ἴδιον δαπανῶντας ἀλογίστως βίον
τὸ καλῶς ἀκούειν ταχὺ ποιεῖ πάσχειν κακῶς.

2 Εὔφρονος διδύμων.
Ὁ γὰρ τὸν ἴδιον οἰκονομῶν κακῶς βίον,
πῶς οὗτος ἂν σώσειε τῶν ἔξω τινά;

3 Διφίλου.
Ἔργον συναγαγεῖν σωρὸν ἐν πολλῷ χρόνῳ,
ἐν ἡμέρᾳ δὲ διαφορῆσαι ῥᾴδιον.

4 Μενάνδρου.
Λαμπρῶς μὲν ἔνιοι ζῶσιν, οἷς χαλεπώτερον
τοῦ περιποιήσασθαί τι τὸ φυλάξαι βίον.

5 Φιλήμονος.
Ἂν μὲν πλέωμεν ἡμερῶν που τεττάρων,
σκεπτόμεθα τἀναγκαῖ' ἑκάστης ἡμέρας.
ἂν ᾖ δὲ φείσασθαί τι τοῦ γήρως χάριν,
οὐ φεισόμεσθ' ἐφόδια περιποιούμενοι;

6 Θεόγνιδος (331).
Ὥσπερ ἐγώ, μέσσην ὁδὸν ἔρχεο ποσσίν,
μηδ' ἑτέροισι δίδου, Κύρνε, τὰ τῶν ἑτέρων.

7 Πυθαγόρου (Aur. carm. 37).
Μὴ δαπανᾶν παρὰ καιρὸν ἀπειροκάλως ἔνι ἡμῶν,
μηδ' ἀνελεύθερος ἴσθι. μέτρον δ' ἐπὶ πᾶσιν ἄριστον.

8 Σωκράτους.

Σωκράτης ἰδών τινα προχείρως πᾶσι χαριζόμενον καὶ ἀνεξετάστως ὑπηρετούμενον "κακῶς" εἶπεν "ἀπόλοιο, ὅτι τὰς Χάριτας, παρθένους οὔσας, πόρνας ἐποίησας."

9 Διογένους.

Διογένης ἄσωτον ᾔτει μνᾶν· τοῦ δὲ εἰπόντος "διὰ τί τοὺς ἄλλους τριώβολα, ἐμὲ δὲ μνᾶν αἰτεῖς;" ἔφη "παρὰ μὲν τῶν ἄλλων ἐλπίζω πάλιν λαβεῖν, παρὰ δὲ σοῦ οὐκέτι."

10 Κράτητος.

Κράτης τὰ τῶν πλουσίων καὶ ἀσώτων χρήματα ταῖς ἐπὶ τῶν κρημνῶν συκαῖς εἴκαζεν, ἀφ' ὧν ἄνθρωπον μηδὲν λαμβάνειν, κόρακας δὲ καὶ ἰκτίνους, ὥσπερ παρὰ τούτων ἑταίρας καὶ κόλακας.

11 Δημοσθένους ἐν τῷ πρὸς Λεπτίνην (472).

Τῶν γὰρ ἀνθρώπων οἱ πλεῖστοι κτῶνται μὲν τἀγαθὰ τῷ καλῶς βουλεύεσθαι καὶ μηδενὸς καταφρονεῖν, φυλάττειν δ' οὐκ ἐθέλουσι τοῖς αὐτοῖς τούτοις.

12 Ζήνωνος.

Ζήνων πρὸς τοὺς ἀπολογουμένους ὑπὲρ τῆς αὐτῶν ἀσωτίας καὶ λέγοντας ἐκ πολλοῦ τοῦ περιόντος ἀναλίσκειν, ἔλεγεν "ἦ που καὶ τοῖς μαγείροις συγγνώσεσθε, ἐὰν ἁλμυρὰ λέγωσι πεποιηκέναι τὰ ὄψα, ὅτι πλῆθος ἁλῶν αὐτοῖς ὑπῆρχεν;"

13 Ξενοφῶν ἐν τῷ ζ' (5, 82) τῆς Κύρου παιδείας.

Οὐ γὰρ τὸ μὴ λαβεῖν τἀγαθὰ οὕτω χαλεπόν, ὡς τὸ λαβόντα στερηθῆναι.

ΠΕΡΙ ΦΕΙΔΩΛΙΑΣ. Ιϛ.

1 Φιλήμονος.
Ἂν οἷς ἔχομεν, τούτοισι μηδὲ χρώμεθα,
ἃ δ' οὐκ ἔχομεν ζητῶμεν, ὧν μὲν διὰ τύχην,
ὧν δὲ δι' ἑαυτοὺς ἐσόμεθ' ἐστερημένοι.

2 Ἀπολλοδώρου.
Μισῶ τύχην συνοῦσαν ἀτυχεῖ σώματι.
ὅστις γὰρ εὐπορῶν, παρὸν ζῆν ἡδέως,
κακῶς διάγει, τί ἄν τις ἄλλ' ἢ τῇ τύχῃ
μέμφοιτο, διότι δυστυχεῖ συνδυστυχεῖ;

3 Ἔγωγ' ἂν οὐ τὸν πλοῦτον ἴδοιμι ὅσος ἐστίν, ἀλλ' ὅστις αὐτὸν κέκτηται, εἰ ὑπέρτερός ἐστιν ὧν ἔχει.

4 Εὐριπίδου Ἀντιόπης.
Εἰ δ' εὐτυχῶν τις καὶ βίον κεκτημένος,
μηδὲν δόμοισι τῶν καλῶν πειράσεται,
ἐγὼ μὲν αὐτὸν οὔποτ' ὄλβιον καλῶ,
φύλακα δὲ μᾶλλον χρημάτων εὐδαίμονα.

5 Εὐριπίδου Ἰνοῖ.
Ἀμουσία τοι μηδ' ἐπ' οἰκτροῖσιν δάκρυ
στάζειν. κακὸν δὲ χρημάτων ὄντων ἅλις
φειδοῖ πονηρᾷ μηδέν' εὖ ποιεῖν βροτῶν.

6 Εὐριπίδου Δανάης.
Ὅστις δόμους μὲν ἥδεται πληρουμένους,
γαστρὸς δ' ἀφαιρῶν σῶμα δύστηνος κακοῖ,
τοῦτον νομίζω καὶ θεῶν συλᾶν βρέτη
τοῖς φιλτάτοις τε πολέμιον πεφυκέναι.

7 Μενάνδρου.
Οὐ πώποτ' ἐζήλωσα πλουτοῦντα σφόδρα
ἄνθρωπον ἀπολαύοντα μηδὲν ὧν ἔχει.

8 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Μὴ πάντοθεν κέρδαιν᾽· ἐπαισχύνου δέ μοι·
τὸ μὴ δικαίως εὐτυχεῖν ἔχει φόβον.
ὦ τρισκακοδαίμων, ὅστις ἐκ φειδωλίας
κατέθετο μῖσος διπλάσιον τῆς οὐσίας.

9 *Θεοκρίτου* (10, 54).

Κάλλιον, ὦ ᾿πιμελητὰ φιλάργυρε, τὸν φακὸν ἕψειν,
μὴ ᾿πιτάμῃς τὰν χεῖρα διαπρίων τὸ κύμινον.

10 *Μενάνδρου ἐν Ψευδηρακλεῖ.*

᾿Αστοργίαν ἔχει τιν᾽ ὁ σκληρὸς βίος.

11 *᾿Απολλοδώρου ᾿Αποκαρτερῶν.*

᾿Αλλὰ σχεδόν τι τὸ κεφάλαιον τῶν κακῶν
εἴρηκας· ἐν φιλαργυρίᾳ γὰρ πάντ᾽ ἔνι.

12 *᾿Αντιφάνους.*

῾Ως δυστυχεῖς, ὅσοισι τοῦ κέρδους χάριν
ἐπίπροσθε τἀσχρὰ φαίνετ᾽ εἶναι τῶν καλῶν·
ἐπισκοτεῖ γὰρ τῷ φρονεῖν τὸ λαμβάνειν.

13 *Μενάνδρου ἐκ Δυσκόλου.*

Περὶ χρημάτων λαλεῖς ἀβεβαίου πράγματος.
εἰ μὲν γὰρ οἶσθα ταῦτα παραμενοῦντά σοι
εἰς ἅπαντα τὸν χρόνον, φύλαττε, μηδενὶ
ἄλλῳ μεταδιδούς, αὐτὸς ὢν δὲ κύριος·
εἰ δ᾽ οὐ σεαυτοῦ, τῆς τύχης δὲ πάντ᾽ ἔχεις,
τί ἂν φθονοίης, ὦ πάτερ, τούτων τινί;
αὐτὴ γὰρ ἄλλῳ τυχὸν ἀναξίῳ τινὶ
παρελομένη σοῦ πάντα προσθήσει πάλιν.
διόπερ ἔγωγέ φημι δεῖν ὅσον χρόνον
εἶ κύριος, χρῆσθαί σε γενναίως, πάτερ,
αὐτόν, ἐπικουρεῖν πᾶσιν, εὐπόρους ποιεῖν
ὡς ἂν δύνῃ πλείστους διὰ σαυτοῦ· τοῦτο γὰρ

ἀθάνατόν ἐστι, κἂν ποτε πταίσας τύχῃς,
ἐκεῖθεν ἔσται ταυτὸ τοῦτό σοι πάλιν.

13a Πολλῷ δὲ κρεῖττόν ἐστιν ἐμφανὴς φίλος
ἢ πλοῦτος ἀφανής, ὃν σὺ κατορύξας ἔχεις.

14 *Εὐσεβίου.*

Ἀνὴρ μεγάλα ἔχων χρήματα ἀποτεθησαυρισμένα, ἔπειτα γνώμῃ τῇ ἑωυτοῦ ἐς μηδὲν τῶν δεόντων οἷός τε ἐὼν αὐτοῖς χρέεσθαι, ἔοικε τῷ τὰ ἐν τοῖς δημοσίοις ἀποκείμενα πεπιστευκότι ἑωυτοῦ εἶναι. δόξῃ μὲν γὰρ ὁμοίῃ πλουτέουσι· τόπερ δὲ τοῦ κεκτῆσθαι ἐστὶν οἰκήιον, τοῦ αὐτοῖς χρέεσθαι, ἀπεστερέαται ὁμοίως ἀμφότεροι.

15 *Θεοπόμπου.*

Εἴ τις πλεῖστα τῶν ἀγαθῶν κεκτημένος μετὰ τοῦ λυπεῖσθαι διάγοι τὸν βίον, ἁπάντων ἂν εἴη καὶ τῶν ὄντων καὶ τῶν ἐσομένων ἀθλιώτατος.

16 *Δημοκρίτου.*

Οἱ φειδωλοὶ τὸν τῆς μελίσσης οἶτον ἔχουσιν, ἐργαζόμενοι ὡς ἀεὶ βιωσόμενοι.

17 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οἱ τῶν φειδωλῶν παῖδες ἀμαθέες γινόμενοι, ὥσπερ οἱ ὀρχησταὶ οἱ ἐς τὰς μαχαίρας ὀρούοντες, ἢν ἑνὸς μούνου μὴ τύχωσι καταφερόμενοι, ἔνθα δεῖ τοὺς πόδας ἐρεῖσαι, ἀπόλλυνται (χαλεπὸν δὲ τυχέειν ἑνός, τὸ γὰρ ἴχνιον μοῦνον λέλειπται τῶν ποδῶν)· οὕτω δὲ καὶ οὗτοι, ἢν ἁμάρτωσι τοῦ πατρικοῦ τύπου τοῦ ἐπιμελέος καὶ φειδωλοῦ, φιλέουσι διαφθείρεσθαι.

18 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Φειδώ τοι καὶ λιμὸς χρηστή, ἐν καιρῷ δὲ καὶ δαπάνη· γινώσκειν δὲ ἀγαθοῦ.

19 *Ἀντιφῶντος.*

Εἰσί τινες οἳ τὸν παρόντα μὲν βίον οὐ ζῶσιν, ἀλλὰ παρασκευάζονται πολλῇ σπουδῇ ὡς ἕτερόν τινα βίον βιωσόμενοι, οὐ τὸν παρόντα· καὶ ἐν τούτῳ παραλειπόμενος ὁ χρόνος οἴχεται.

20 *Μητροδώρου.*

Ἑτοιμάζονταί τινες διὰ βίου τὰ πρὸς τὸν βίον, ὡς βιωσόμενοι μετὰ τὸ λεγόμενον ζῆν, οὐ συνορῶντες ὡς πᾶσιν ἡμῖν θανάσιμον ἐγκέχυται τὸ τῆς γενέσεως φάρμακον.

21 *Δημοκρίτου.*

Βίος ἀνεόρταστος μακρὴ ὁδὸς ἀπανδόκευτος.

22 *Πλουτάρχου ἐκ τῶν ὑγιεινῶν παραγγελμάτων* (125 e).

Οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ μικρολογία καὶ γλισχρότης ἐνίους ἀναγκάζει πιεζοῦντας οἴκοι τὰς ἐπιθυμίας καὶ κατισχναίνοντας, ἐμπίπλασθαι παρ᾽ ἑτέρων τῶν πολυτελῶν καὶ ἀπολαύειν, καθάπερ ἐκ πολεμίας ἀφειδῶς ἐπισιτιζομένους· εἶτα κακῶς διατεθέντες ἀπιᾶσιν, εἰς τὴν ὑστεραίαν ἐφόδιον τῆς ἀπληστίας τὴν ἀπεψίαν ἔχοντες.

23 *Θεοκρίτου.*

Θεόκριτος τοὺς πολλοὺς τῶν πλουσίων ἔλεγεν ἐπιτρόπους εἶναι ἀλλὰ μὴ δεσπότας τῶν χρημάτων.

24 *Εὐσεβίου.*

Ἄνδρα χρήματα μεγάλα ἔχοντα ἀποτεθησαυρισμένα, καὶ αὐτοῦ τούτου εἵνεκα ἐπικτώμενον, καὶ ὅκως αἰεί τι τοῖς παρεοῦσι προσθέῃ πρήγματα μὲν ἔχοντα, μήτε δὲ ἐς ἑωυτὸν μήτε ἐς ἄλλο τι τῶν χρησίμων ἀναλίσκοντα, μήκοτε πλουτέειν ἀποφήναιο, φύ-

λακα δὲ καὶ ποριστὴν εἶναι ἀλλοτρίων χρημάτων, καὶ πόνους ἔχειν αἱρέεσθαι πολλάκις καὶ τοῖς ἑωυτῷ μηδὲν προσήκουσιν ἐπικτώμενον.

25 *Ξενοφῶντος ἐν τῷ η΄ τῆς παιδείας* (VIII, 2, 23).

Ὅπως δὲ καὶ τοῦτο εἰδείης, ὦ Κροῖσε, ἐγὼ γὰρ οὐ τοὺς πλεῖστα ἔχοντας καὶ φυλάττοντας πλεῖστα εὐδαιμονεστάτους ἡγοῦμαι· οἱ γὰρ τὰ τείχη φυλάττοντες, οὗτοι ἂν εὐδαιμονέστατοι εἴησαν, πάντα γὰρ τὰ ἐν ταῖς πόλεσι φυλάττουσιν· ἀλλ' ὃς ἂν πλεῖστα κτᾶσθαί τε δύνηται σὺν τῷ δικαίῳ καὶ χρῆσθαι πλείστοις σὺν τῷ καλῷ, τοῦτον ἐγὼ εὐδαιμονέστατον νομίζω κατὰ χρήματα.

26 *Σωκράτους.*

Ὁ τῶν φιλαργύρων πλοῦτος ὥσπερ ὁ ἥλιος καταδὺς εἰς τὴν γῆν οὐδένα τῶν ζώντων εὐφραίνει.

27 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὁ τῶν φιλαργύρων βίος ἔοικε νεκροῦ δείπνῳ· πάντα γὰρ ἔχων τὸν εὐφραινόμενον οὐκ ἔχει.

28 *Ἐπικούρου.*

Γεγόναμεν ἅπαξ· δὶς οὐκ ἔστι γενέσθαι· δεῖ δὲ τὸν αἰῶνα μηκέτ' εἶναι. σὺ δὲ τῆς αὔριον οὐκ ὢν κύριος ἀναβάλλῃ τὸν καιρόν· ὁ δὲ πάντων βίος μελλησμῷ παραπόλλυται· καὶ διὰ τοῦτο ἕκαστος ἡμῶν ἀσχολούμενος ἀποθνήσκει.

29 *Ἀντιφῶντος.*

Ἔστι δέ τις λόγος, ὡς ἄρα ἰδὼν ἀνὴρ ἄνδρα ἕτερον ἀργύριον ἀναιρούμενον πολὺ ἐδεῖτό οἱ δανεῖσαι ἐπὶ τόκῳ· ὃ δ' οὐκ ἠθέλησεν, ἀλλ' ἦν οἷος ἀπιστεῖν τε καὶ μὴ ὠφελεῖν μηδένα, φέρων δ' ἀπέθετό ποι δή·

καί τις καταμαθὼν τοῦτο ποιοῦντα ὑφείλετο· ὑστέρῳ δὲ χρόνῳ ἐλθὼν οὐχ εὕρισκε τὰ χρήματα ὁ καταθέμενος. περιαλγῶν οὖν τῇ συμφορᾷ τά τε ἄλλα καὶ ὅτι οὐκ ἔχρησε τῷ δεομένῳ, ὃ ἂν αὐτῷ καὶ σῷον ἦν καὶ ἕτερον προσέφερεν, ἀπαντήσας τῷ ἀνδρὶ τῷ τότε δανειζομένῳ ἀπωλοφύρετο τὴν συμφορὰν ὅτι ἐξήμαρτε, καὶ ὅτι οἱ μεταμέλει οὐ χαρισαμένῳ, ἀλλ' ἀχαριστήσαντι, καὶ πάντως οἱ ἀπολόμενον τὸ ἀργύριον. ὃ δ' αὐτὸν ἐκέλευσε μὴ φροντίζειν, ἀλλὰ νομίζειν αὑτῷ εἶναι καὶ μὴ ἀπολωλέναι καταθέμενον λίθον εἰς τὸ αὐτὸ χωρίον· πάντως γὰρ οὐδ' ὅτε ἦν σοι ἐχρῶ αὐτῷ, ὅθεν μηδὲ νῦν νόμιζε στέρεσθαι μηδενός. ὅτῳ γάρ τις μὴ ἐχρήσατο μηδὲ χρήσεται, ὄντος ἢ μὴ ὄντος αὐτῷ οὐδὲν οὔτε πλέον οὔτε ἔλασσον βλάπτεται. ὅταν γὰρ ὁ θεὸς μὴ παντελῶς βούληται ἀγαθὰ διδόναι ἀνδρί, χρημάτων πλοῦτον παρασχών, τοῦ φρονεῖν δὲ καλῶς πένητα ποιήσας, τὸ ἕτερον ἀφελόμενος ἑκατέρων ἀπεστέρησεν.

ΠΕΡΙ ΕΓΚΡΑΤΕΙΑΣ. ΙΖ.

1 *Σοφοκλέους Ἠλέκτρας* (989).

Ζῆν αἰσχρὸν αἰσχρῶς τοῖς καλῶς πεφυκόσιν.

2 *Σοφοκλέους Φαίδρᾳ.*

Οὐ γὰρ δίκαιον ἄνδρα γενναῖον φρένας
τέρπειν ὅπου μὴ καὶ δίκαια τέρψεται.

3 *Χάρητος.*

Γαστρὸς δὲ πειρῶ πᾶσαν ἡνίαν κρατεῖν·
μόνη γὰρ ὧν πέπονθεν οὐκ ἔχει χάριν,
ἀεὶ δὲ τοῦ δέοντος ἐνδεῖται πλέον.

ὅστις δὲ γαστρὸς μὴ κρατεῖν ἐπίσταται,
οὗτος τὰ πλείω τῶν κακῶν ἔχει κακά.

4 Σοφοκλέους Οἰδίποδι (Tyr. 1409).
Ἀλλ᾽ οὐ γὰρ αὐδᾶν ἔσθ᾽ ἃ μηδὲ δρᾶν καλά.

5. 6 Ὅσοι δὲ φιλοσοφοῦντες ἐκμοχθοῦσί τι . . .
ἐνταῦθ᾽ ὑπάρχει τῷ βίῳ γαστρὸς κρατεῖν.
διδάσκαλος γὰρ ηὐτέλεια τῶν σοφῶν
καὶ τῶν ἀρίστων γίγνεται βουλευμάτων.

7 Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.
Ἐξουσίᾳ δὲ μή ποτ᾽ ἐντυχὼν τέκνον
αἰσχροὺς ἔρωτας δημοτῶν διωκαθεῖν·
ὃ καὶ σίδηρον ἀγκόνας τ᾽ ἐφέλκεται,
χρηστῶν πενήτων ἥν τις αἰσχύνῃ τέκνα.

8 Πυθαγόρου.
Παντὸς καλοῦ κτήματος πόνος προηγεῖται ὁ κατ᾽ ἐγκράτειαν. Porphyrius ad Marc. 7.

9 Ἰαμβλίχου.
Τί δαί, τοῖς ἀνθρώποις κτωμένοις ἐμμελῆ καὶ εὐάρμοστον ἕξιν πρός τε τοὺς διαφέροντας τρόπους εὐκοινώνητον ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι δυναμένην ἐν μέρει τῷ προσήκοντι, τούτοις δ᾽ ἕπεται τὰ ἤθη καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα περί τε ἐγκράτειαν ἡδονῶν καὶ περὶ τὴν ἀρχὴν τῶν ἐπιθυμιῶν. ἀλλὰ δεῖ δὴ τῶν ἡδονῶν τὸ ἀκόλαστον ἐξ ἅπαντος τρόπου καὶ ἄμετρον ἐξορίζειν.

10 Φωκίωνος.
Φωκίωνι ὁ παῖς πλείω τῶν εἰωθότων ὄψων ἐπρίατο. ὃ δὲ "οἰμώξῃ" ἔφη "ἐὰν τοῦ φαγεῖν πλείω ἐπιφαγεῖν παρασκευάζῃς.

11 Ἐκ τῶν Σίμωνος ἐπιστολῶν πρὸς Ἀρίστιππον.

Μέμνησο μέντοι λιμοῦ καὶ δίψης· ταῦτα γὰρ δύναται μεγάλα τοῖς σωφροσύνην διώκουσι.

12 Πυθαγόρου.

Ῥώμην μεγίστην καὶ πλοῦτον τὴν ἐγκράτειαν κτῆσαι.

13 Τοῦ αὐτοῦ.

Πυθαγόρας παρηγγύα "μὴ πυκνὰ τὸν ἄνθρωπον ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου," μὴ δεῖν συνεχῶς ἀφροδισιάζειν αἰνιττόμενος.

14 Ἀπολλώνιος Εἰδομένῃ.

Ἐξηλώσαμεν τὴν αὐτάρκειαν, οὐχ ὅπως τοῖς εὐτελέσι καὶ λιτοῖς πάντως χρώμεθα, ἀλλ' ὅπως θαρρῶμεν πρὸς αὐτά.

15 Ἀπολλώνιος τοῖς γνωρίμοις.

Μηδέν με δόξητε ῥᾳδίως ἄλλοις παραινεῖν· αὐτὸς γὰρ ἐπὶ τῆς μάζης καὶ τῆς ἄλλης τῆς ἀκολούθου ταύτῃ διαίτης ὢν τοιαῦτα ὑμῖν παρεγγυῶ.

16 Διογένους.

Ὁ Διογένης καθαρὸν λαβὼν ἄρτον ἐξέβαλε τῆς πήρας τὸν αὐτόπυρον εἰπών "ὦ ξένε, τυράννοις ἐκποδὼν μεθίστασο."

17 Σωκράτους.

Ἑορτῆς οὔσης παρὰ τοῖς Ἀθηναίοις, ἐφιλοτιμήσατο ὁ Ἀλκιβιάδης δῶρα πολλὰ πέμψαι τῷ Σωκράτει. τῆς οὖν Ξανθίππης καταπλαγείσης καὶ τὸν Σωκράτην λαβεῖν αὐτὰ ἀξιούσης, ἔφη "ἀλλὰ καὶ ἡμεῖς τῇ τοῦ Ἀλκιβιάδου φιλοτιμίᾳ παραταξώμεθα, μὴ λαβεῖν τὰ πεμφθέντα ἀντιφιλοτιμησάμενοι."

18 Ἀριστίππου.

Κρατεῖ ἡδονῆς οὐχ ὁ ἀπεχόμενος, ἀλλ' ὁ χρώμενος μὲν μὴ προεκφερόμενος δέ, ὥσπερ καὶ νεὼς καὶ ἵππου οὐχ ὁ μὴ χρώμενος, ἀλλ' ὁ μετάγων ὅποι βούλεται.

19 Περικλέους.

Περικλῆς Σοφοκλέους εὐπρεπῆ παῖδα δεικνύντος αὐτῷ "ὦ Σοφόκλεις" εἶπε "τὸν σώφρονα στρατηγὸν οὐ μόνον τὰς χεῖρας, ἀλλὰ καὶ τὴν ὄψιν ἔχειν παρ' ἑαυτῷ δεῖ."

20 Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου (34).

Ὅταν ἡδονῆς τινος φαντασίαν λάβῃς, ὅπερ καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων φαντασιῶν, φυλάσσου, μὴ συναρπάζου ταχέως, ἀλλὰ ἐκδεξάσθω σε τὸ πρᾶγμα, καὶ μικρὰν ἀναβολὴν αὐτὸς παρὰ σαυτοῦ λάβε· εἶτα ἐπισκοπήσας τὴν φαντασίαν καθ' οὓς ἔχεις κανόνας, μνήσθητι ἀμφοτέρων τῶν χρόνων, καθ' ὧν ἀπολαύσας μὲν τῆς ἡδονῆς ἡττημένος μετανοήσεις καὶ λοιδορήσεις σεαυτῷ, ἀπεσχημένος δὲ χαίρεις καὶ ἐπαινεῖς αὐτὸς ἑαυτόν. ἐὰν δὲ εὔκαιρον φαίνηται ἅψασθαι τοῦ πράγματος, μέμνησο ἵνα σου μὴ κρατήσῃ τὸ προσηνὲς αὐτοῦ καὶ ἀγωγόν, ἀλλὰ πειρῶ κρατεῖν τῶν ἡνιῶν.

21 Δημοσθένους (1438, 11).

Δεῖ τὸν εὖ φρονοῦντα τὸν λογισμὸν ἀεὶ τῶν ἐπιθυμιῶν κρείττω πειρᾶσθαι ποιεῖν.

22 Σωκράτους.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνι τῶν ἄλλων ἀνθρώπων διαφέρει εἶπε "καθόσον οἱ μὲν λοιποὶ ζῶσιν ἵν' ἐσθίωσιν, αὐτὸς δὲ ἐσθίω ἵνα ζῶ"

23 Ἐπικούρου.

Χάρις τῇ μακαρίᾳ φύσει, ὅτι τὰ ἀναγκαῖα ἐποίησεν εὐπόριστα, τὰ δὲ δυσπόριστα οὐκ ἀναγκαῖα.

24 Τοῦ αὐτοῦ.

Εἰ βούλει πλούσιόν τινα ποιῆσαι, μὴ χρήμασιν προστίθει, τῆς δὲ ἐπιθυμίας ἀφαίρει.

25 Ξενοκράτους.

Ξενοκράτης εἴ ποτε σταμνίον οἴνου ἀνοίξειεν, ἔφθανεν ὁ οἶνος τρεπόμενος πρὶν ἀναλωθῆναι· καὶ τὰ ὄψα δὲ πολλάκις ἕωλα ἐξέρριπτεν. ἔνθεν καὶ ἡ παροιμία τὸ Ξενοκράτους τυρίον ἐπὶ τῶν ἐπὶ πολὺ παραμενόντων καὶ μὴ τάχιστα ἀναλισκομένων.

26 Δημοκρίτου.

Εὐγνώμων ὁ μὴ λυπεόμενος ἐφ' οἷσι οὐκ ἔχει, ἀλλὰ χαίρων ἐφ' οἷσι ἔχει.

27 Πυθαγόρου.

Τεθνάναι πολλῷ κρεῖττον ἢ δι' ἀκρασίαν τὴν ψυχὴν ἀμαυρῶσαι. Porphyrius ad Marc. 35.

28 Σωκράτους.

Σωκράτης ἐγκράτειαν τὸ κρατεῖν τῆς ἐν τῷ σώματι ἡδονῆς ἔφη.

Χρύσιππος ὁ Σολεὺς ἐποιεῖτο τὸν βίον ἐκ πάνυ ὀλίγων, Κλεάνθης δὲ καὶ ἀπὸ ἐλαττόνων.

30 Ἐπικούρου. Αἰλιανοῦ ἐκ τῆς συμμικτῆς ἱστορίας (4, 13).

Ἐπίκουρος ὁ Γαργήττιος ἐκεκράγει λέγων ᾧ ὀλίγον οὐχ ἱκανόν, τούτῳ γε οὐδὲν ἱκανόν. ἔλεγε δ' ἑτοίμως ἔχειν καὶ τῷ Διὶ ὑπὲρ εὐδαιμονίας διαγωνίζεσθαι μᾶζαν ἔχων καὶ ὕδωρ.

31 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος πῶς ἂν γένοιτό τις πλούσιος; "εἰ τῶν ἐπιθυμιῶν" ἔφη "εἴη πένης."

32 *Ξενοφῶντος ἐν τῷ α΄* (c. 5, 1) *τῶν ἀπομνημονευμάτων.*

Εἰ δὲ δὴ καὶ ἐγκράτεια καλόν τε κἀγαθὸν ἀνδρὶ κτῆμά ἐστιν, ἐπισκεψώμεθα εἴ πη προυβίβαζε λέγων εἰς ταύτην τοιάδε· Ὦ ἄνδρες, εἰ πολέμου ἡμῖν γενομένου βουλοίμεθα ἑλέσθαι ἄνδρα, ὑφ᾽ οὗ μάλιστ᾽ ἂν αὐτοὶ μὲν σωζοίμεθα, τοὺς δὲ πολεμίους χειροίμεθα, ἆρ᾽ ὅντινα ἂν αἰσθανοίμεθα ἥττω γαστρὸς ἢ οἴνου ἢ ἀφροδισίων ἢ πόνου ἢ ὕπνου, τοῦτον αἱροίμεθα; καὶ πῶς ἂν οἰηθείημεν τὸν τοιοῦτον ἢ ἡμᾶς σῶσαι ἢ τοὺς πολεμίους κρατῆσαι; εἰ δ᾽ ἐπὶ τελευτῇ τοῦ βίου γενόμενοι βουλοίμεθά τῳ ἐπιτρέψαι ἢ παῖδας ἄρρενας παιδεῦσαι ἢ θυγατέρας παρθένους διαφυλάξαι ἢ χρήματα διασῶσαι, ἆρ᾽ ἀξιόπιστον εἰς ταῦτα ἡγησαίμεθ᾽ ἂν τὸν ἀκρατῆ; δούλῳ δ᾽ ἀκρατεῖ ἐπιτρέψαιμεν ἂν ἢ βοσκήματα ἢ ταμιεῖα ἢ ἔργων ἐπιστασίαν; διάκονον δὲ καὶ ἀγοραστὴν τὸν τοιοῦτον ἐθελήσαιμεν ἂν προῖκα λαβεῖν; ἀλλὰ μὴν εἴ γε μηδὲ δοῦλον ἀκρατῆ δεξαίμεθ᾽ ἄν, πῶς οὐκ ἄξιον αὐτόν γε φυλάξασθαι τοιοῦτον γενέσθαι; καὶ γὰρ οὐχ ὥσπερ οἱ πλεονέκται τῶν ἄλλων ἀφαιρούμενοι χρήματα ἑαυτοὺς δοκοῦσι πλουτίζειν, οὕτως ὁ ἀκρατὴς τοῖς μὲν ἄλλοις βλαβερὸς αὑτῷ δ᾽ ὠφέλιμος, ἀλλὰ κακοῦργος μὲν τῶν ἄλλων, ἑαυτοῦ δὲ πολὺ κακουργότερος, εἴ γε κακουργότερόν ἐστι μὴ μόνον τὸν οἶκον τὸν ἑαυτοῦ φθείρειν, ἀλλὰ καὶ τὸ σῶμα καὶ τὴν ψυχήν. ἐν συνουσίᾳ δὲ τίς ἂν ἡσθείη τῷ τοιούτῳ ὃν εἰδείη τῷ ὄψῳ καὶ τῷ οἴνῳ χαίροντα μᾶλλον ἢ τοῖς φίλοις; καὶ τὰς πόρνας ἀγα-

πῶντα μᾶλλον ἢ τοὺς ἑταίρους; ἆρά γε οὐ χρὴ πάντα ἄνδρα ἡγησάμενον τὴν ἐγκράτειαν ἀρετῆς εἶναι κρηπῖδα, ταύτην πρώτην ἐν τῇ ψυχῇ κατασκευάσασθαι; τίς γὰρ ἄνευ ταύτης ἢ μάθοι τι ἀγαθὸν ἢ μελετήσειεν ἀξιολόγως; ἢ τίς οὐκ ἂν ταῖς ἡδοναῖς δουλεύων αἰσχρῶς διατεθείη καὶ τὸ σῶμα καὶ τὴν ψυχήν; ἐμοὶ μὲν δοκεῖ νὴ τὴν Ἥραν ἐλευθέρῳ μὲν ἀνδρὶ εὐκτὸν εἶναι μὴ τυχεῖν δούλου τοιούτου, δουλεύοντι δὲ ταῖς τοιαύταις ἡδοναῖς ἱκετευτέον τοὺς θεοὺς δεσποτῶν ἀγαθῶν τυχεῖν· οὕτω γὰρ ἂν μόνος ὁ τοιοῦτος σωθείη.

33 Ξενοφῶντος ἐν τῷ α′ (6, 5) ἀπομνημονευμάτων.

Οὐκ οἶσθ' ὅτι ὁ μὲν ἥδιστα ἐσθίων ἥκιστα ὄψου δεῖται, ὁ δὲ ἥδιστα πίνων ἥκιστα τοῦ μὴ παρόντος ἐπιθυμεῖ ποτοῦ; τά γε μὴν ἱμάτια οἶσθ' ὅτι οἱ μεταβαλλόμενοι ψύχους καὶ θάλπους ἕνεκα μεταβάλλονται· καὶ ὑποδήματα ὑποδοῦνται, ὅπως μὴ διὰ τὰ λυποῦντα τοὺς πόδας κωλύωνται πορεύεσθαι· [ἤδη οὖν πότε ᾔσθου ἐμὲ ἢ διὰ ψῦχος μᾶλλόν του ἔνδον μένοντα, ἢ διὰ θάλπος μαχόμενόν τῳ περὶ σκιᾶς, ἢ διὰ τὸ ἀλγεῖν τοὺς πόδας οὐ βαδίζοντα ὅπου ἂν βούλωμαι;] οὐκ οἶσθ' ὅτι οἱ φύσει ἀσθενέστατοι τῷ σώματι μελετήσαντες, τῶν ἰσχυροτάτων ἀμελησάντων κρείττους τε γίνονται πρὸς ἃ ἂν μελετήσωσι, καὶ ῥᾷον αὐτὰ φέρουσιν; — ἐὰν δὲ δὴ φίλους ἢ πόλιν ὠφελεῖν δέῃ, ποτέρῳ πλέον σχολὴ τούτων ἐπιμελεῖσθαι, τῷ ὡς ἐγὼ νῦν ἢ τῷ ὡς σὺ μακαρίζεις διαιτωμένῳ; στρατεύοιτο δὲ πότερος ἂν ῥᾷον, ὁ μὴ δυνάμενος ἄνευ πολυτελοῦς διαίτης ζῆν ἢ ᾧ τὸ παρὸν ἀρκοίη; ἐκπολιορκηθείη δὲ πότερος ἂν θᾶττον, ὁ τῶν χαλεπωτάτων εὑρεῖν δεό-

μενος ἢ ὁ τοῖς ῥάστοις ἐντυγχάνειν ἀρκούντως χρώμενος; ἔοικας, ὦ Ἀντιφῶν, τὴν εὐδαιμονίαν οἰομένῳ τρυφὴν καὶ πολυτέλειαν εἶναι· ἐγὼ δὲ νομίζω τὸ μὲν μηδενὸς δέεσθαι θεῖον εἶναι, τὸ δὲ ὡς ἐλαχίστων ἐγγυτάτω τοῦ θείου. καὶ τὸ μὲν θεῖον κράτιστον, τὸ δ' ἐγγυτάτω τοῦ θείου ἐγγυτάτω τοῦ κρατίστου.

34 Ἐπικούρου.

Βρυάζω τῷ κατὰ τὸ σωμάτιον ἡδεῖ, ὕδατι καὶ ἄρτῳ χρώμενος, καὶ προσπτύω ταῖς ἐκ πολυτελείας ἡδοναῖς, οὐ δι' αὐτὰς ἀλλὰ διὰ τὰ ἐξακολουθοῦντα αὐταῖς δυσχερῆ.

35 Τοῦ αὐτοῦ.

Τότε χρείαν ἔχομεν τῆς ἡδονῆς, ὅταν ἐκ τοῦ μὴ παρεῖναι αὐτὴν ἀλγῶμεν. ὅταν δὲ τοῦτο μὴ πάσχωμεν ἐν αἰσθήσει καθεστῶτες, τότε οὐδεμία χρεία τῆς ἡδονῆς. οὐ γὰρ ἡ τῆς φύσεως ἡδονὴ τὴν ἀδικίαν ποιεῖ ἔξωθεν, ἀλλ' ἡ περὶ τὰς κενὰς δόξας ὄρεξις.

36 Πλάτωνος.

Πλάτων πολλάκις διψῶν ἐκ τοῦ φρέατος ἀνιμᾶτο τὸ ὕδωρ καὶ ἐξέχει, κολάζων τὴν ἐπιθυμίαν.

37 Ἐπικούρου.

Ἐπίκουρος ἐρωτηθεὶς πῶς ἄν τις πλουτήσειεν; "οὐ τοῖς οὖσι προστιθεὶς" ἔφη "τῆς δὲ χρείας τὰ πολλὰ περιτέμνων."

38 Δημοκρίτου.

Τῶν ἡδέων τὰ σπανιώτατα γινόμενα μάλιστα τέρπει.

39 Τοῦ αὐτοῦ.

Εἴ τις ὑπερβάλλοι τὸ μέτριον, τὰ ἐπιτερπέστατα ἀτερπέστατα ἂν γίνοιτο.

40 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἀνδρεῖος οὐχ ὁ τῶν πολεμίων μόνον, ἀλλὰ καὶ ὁ τῶν ἡδονῶν κρέσσων.

41 *Εὐσεβίου.*

Γνώμης ἀνδρὸς ἀρίστου ἀπόδεξις ἥδε, μὴ ἐπὶ τῷ σιτέεσθαι ἑωυτὸν νομίζειν γεγονέναι μηδὲ ἐν τούτῳ τὴν ζωὴν ἡγέεσθαι, μούνου δὲ αὐτοῦ τοῦ ζώειν ἕνεκα ἀνθρώποις τροφὴν νομίζειν εὑρῆσθαι.

42 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἐγκράτεια καὶ σώματι ἀγαθόν· πρὸς γὰρ ὑγιείην αὐτῷ ξυμμάχεται καὶ σωφροσύνην ἐν ψυχῇ τίκτει. σωφροσύνη δὲ ἀστασίαστον καὶ εὔδιον, καὶ βίον εἰρηναῖον ψυχῇ παρασκευάζει.

43 *Μουσωνίου ἐκ τοῦ περὶ τροφῆς.*

Περὶ δὲ τροφῆς εἰώθει μὲν πολλάκις λέγειν καὶ πάνυ ἐντεταμένως, ὡς οὐ περὶ μικροῦ πράγματος οὐδ᾽ εἰς μικρὰ διαφέροντος· ᾤετο γὰρ ἀρχὴν καὶ ὑποβολὴν τοῦ σωφρονεῖν εἶναι τὴν ἐν σιτίοις καὶ ποτοῖς ἐγκράτειαν. ἅπαξ δέ ποτε τῶν ἄλλων ἀφέμενος λόγων οὓς ἑκάστοτε διεξῄει, τοιάδε τινὰ εἶπεν, ὡς χρὴ καθάπερ τὴν εὐτελῆ τῆς πολυτελοῦς τροφὴν προτιμᾶν καὶ τὴν εὐπόριστον τῆς δυσποριστου, οὕτω καὶ τὴν σύμφυλον ἀνθρώπῳ τῆς [μὴ] τοιαύτης. εἶναι δὲ σύμφυλον ἡμῖν τὴν ἐκ τῶν φυομένων ἐκ γῆς, ὅσα τε σιτώδη ὄντα καὶ ὅσα μὴ τοιαῦτα ὄντα δύναται τρέφειν οὐ κακῶς τὸν ἄνθρωπον, καὶ τὴν ἀπὸ τῶν ζώων οὐκ ἀναιρουμένων, ἄλλως δὲ χρησιμευόντων. τούτων δὲ τῶν βρωμάτων ἐπιτηδειότατα μὲν οἷς αὐτόθεν χρῆσθαι ὑπάρχει δίχα πυρός, ἐπεὶ καὶ ἑτοιμότατα· οἷα δὴ τά τε ὡραῖα καὶ τῶν λαχάνων ἔνια καὶ γάλα καὶ τυρὸς καὶ κηρία. καὶ ὅσα μέντοι δεῖται πυρός, ἢ

σιτώδη ἢ λαχανώδη ὄντα, καὶ ταῦτ' οὐκ ἀνεπιτήδεια, ἀλλὰ σύμφυλα ἀνθρώπῳ πάντα. τὴν μέντοι κρεώδη τροφὴν θηριωδεστέραν ἀπέφηνε καὶ τοῖς ἀγρίοις ζώοις προσφορωτέραν. εἶναι δὲ ταύτην ἔλεγε καὶ βαρυτέραν καὶ τῷ νοεῖν τι καὶ φρονεῖν ἐμπόδιον· τὴν γὰρ ἀναθυμίασιν τὴν ἀπ' αὐτῆς θολωδεστέραν οὖσαν ἐπισκοτεῖν τῇ ψυχῇ· παρὸ καὶ βραδυτέρους φαίνεσθαι τὴν διάνοιαν τοὺς πλείονι ταύτῃ χρωμένους. δεῖν δὲ τὸν ἄνθρωπον, ὥσπερ συγγενέστατον τοῖς θεοῖς τῶν ἐπιγείων ἐστίν, οὕτω καὶ ὁμοιότατα τρέφεσθαι τοῖς θεοῖς. ἐκείνοις μὲν οὖν ἀρκεῖν τοὺς ἀπὸ γῆς καὶ ὕδατος ἀναφερομένους ἀτμούς, ἡμᾶς δ' ὁμοιοτάτην ταύτῃ προσφέρεσθαι τροφὴν ἂν ἔφη, εἰ τὴν κουφοτάτην καὶ καθαρωτάτην προσφεροίμεθα· οὕτω δ' ἂν καὶ τὴν ψυχὴν ἡμῶν ὑπάρχειν καθαράν τε καὶ ξηράν, ὁποία οὖσα ἀρίστη καὶ σοφωτάτη εἴη ἄν, καθάπερ Ἡρακλείτῳ δοκεῖ λέγοντι οὕτως "αὔη ψυχὴ σοφωτάτη καὶ ἀρίστη." νῦν δέ, ἔφη, πολὺ χεῖρον ἡμεῖς τῶν ἀλόγων ζώων τρεφόμεθα. τὰ μὲν γάρ, εἰ καὶ σφόδρα τῇ ἐπιθυμίᾳ ὥσπερ μάστιγί τινι ἐλαυνόμενα φέρεται πρὸς τὴν τροφήν, ὅμως τοῦ γε πανουργεῖν περὶ τὰ βρώματα καὶ τοῦ τεχνιτεύειν ἀπήλλακται, ἀρκούμενα τοῖς παραπεσοῦσι καὶ πλησμονὴν θηρώμενα μόνον, προσωτέρω δ' οὐδέν. ἡμεῖς δὲ τέχνας καὶ μηχανὰς ποικίλας ἐπινοοῦμεν, ὥστε τὴν ἡδονὴν τῆς τροφῆς ἐφηδύνειν καὶ τὴν κατάποσιν κολακεύειν μειζόνως. εἰς τοῦτο δὲ προεληλύθαμεν λιχνείας καὶ ὀψοφαγίας, ὥστε καθάπερ μουσικὰ καὶ ἰατρικά, οὕτω καὶ μαγειρικὰ πεποίηνται τινὲς συγγράμματα, ἃ τὴν μὲν ἡδονὴν καὶ πάνυ αὔξει τὴν ἐν τῷ φάρυγι, τὴν δ' ὑγίειαν διαφθείρει. πολὺ γοῦν κάκιον διακειμένους ὁρᾶν ἔστι τὰ σώματα τοὺς περὶ τὰ βρώματα τρυφῶντας, ὧν εἰ-

σιν ἔνιοι παραπλήσιοι ταῖς κιττώσαις γυναιξί· καὶ γὰρ οὗτοι καθάπερ ἐκεῖναι τὰ συνηθέστατα τῶν βρωμάτων δυσχεραίνουσι καὶ τοὺς στομάχους διεφθαρμένους ἔχουσιν. ὅθεν ὥσπερ ὁ ἀχρεῖος σίδηρος συνεχῶς δεῖται στομώσεως, οὕτω καὶ οἱ ἐκείνων στόμαχοι ἐν τῷ ἐσθίειν συνεχὲς στομοῦσθαι θέλουσιν ἢ ὑπὸ ἀκράτου ἢ ὑπὸ ὄξους ἢ ὑπὸ βρώματός τινος στρυφνοῦ. ἀλλ' οὐχὶ ὁ Λάκων τοιοῦτος, ὃς ἰδών τινα, παρακειμένου αὐτῷ ὀρνιθίου τῶν πιόνων καὶ πολυτελῶν, ὑπὸ τρυφῆς ἀναινόμενον φαγεῖν αὐτὸ καὶ φάσκοντα μὴ δύνασθαι "ἀλλ' ἐγώ" ἔφη "καὶ γυπὸς δύναμαι καὶ τράγου." Ζήνων δὲ ὁ Κιτιεὺς οὐδὲ νοσῶν ᾤετο δεῖν τροφὴν προσφέρεσθαι τρυφερωτέραν, ἀλλ' ἐπεὶ ὁ θεραπεύων ἰατρὸς ἐκέλευεν αὐτὸν φαγεῖν νεοττὸν περιστερᾶς, οὐκ ἀνασχόμενος "ὡς Μάνην" ἔφη "με θεράπευε." ἠξίου γὰρ οἶμαι μηδὲν μαλακώτερον ἐν τῇ θεραπείᾳ γίνεσθαι αὐτῷ ἢ τῶν δούλων τινὶ νοσοῦντι· καὶ γὰρ εἰ ἐκεῖνοι θεραπεύεσθαι δύνανται δίχα τοῦ τροφὴν λαμβάνειν πολυτελεστέραν, δύνασθαι ἂν καὶ ἡμᾶς. δεῖ δὲ μηδαμῶς τὸν ἀγαθὸν ἄνδρα δούλου μηδενὸς εἶναι μαλακώτερον. διόπερ ὁ Ζήνων εἰκότως ἠξίου εὐλαβεῖσθαι τὴν πολυτέλειαν ἐν τῇ τροφῇ καὶ μηδ' ἐπ' ὀλίγον ἐνδιδόναι πρὸς τὸ τοιοῦτον· ἐπείπερ ὁ ἐνδοὺς ἅπαξ προέλθοι ἂν ἐπὶ πλεῖστον, ἅτε τῆς ἡδονῆς πολλὴν ἐχούσης αὔξησιν ἔν τε πώμασι καὶ βρώμασι. ταῦτα μὲν τότε καινότερα ἔδοξεν ἡμῖν εἰπεῖν περὶ τροφῆς ὧν εἰώθει λέγειν ἑκάστοτε.

44 Ξενοφῶντος ἐν τῷ α' (3, 5) ἀπομνημονευμάτων.

Διαίτῃ δὲ τήν τε ψυχὴν ἐπαίδευσε καὶ τὸ σῶμα,

ᾗ χρώμενος ἄν τις, εἰ μή τι δαιμόνιον εἴη, θαρραλέως καὶ ἀσφαλῶς διάγοι, καὶ οὐκ ἂν ἀπορήσειε τοσαύτης δαπάνης. οὕτω γὰρ εὐτελὴς ἦν, ὥστ' οὐκ οἶδ' εἴ τις οὕτως ἂν ὀλίγα ἐργάζοιτο, ὥστε μὴ λαμβάνειν τὰ Σωκράτει ἀρκοῦντα. σίτῳ μὲν γὰρ τοσούτῳ ἐχρῆτο, ὅσον ἡδέως ἤσθιε, καὶ ἐπὶ τούτῳ οὕτω παρεσκευασμένος ᾔει, ὥστε τὴν ἐπιθυμίαν τοῦ σίτου ὄψον αὐτῷ εἶναι· ποτὸν δὲ πᾶν ἡδὺ ἦν αὐτῷ, διὰ τὸ μὴ πίνειν εἰ μὴ διψῴη. εἰ δέ ποτε κληθεὶς ἐθελήσειεν ἐλθεῖν ἐπὶ δεῖπνον, ὃ τοῖς πλείστοις ἐργωδέστατόν ἐστιν ὥστε φυλάξασθαι τὸ ὑπὲρ τὸν καιρὸν ἐμπίπλασθαι, τοῦτο ῥᾳδίως πάνυ ἐφυλάττετο· τοῖς δὲ μὴ δυναμένοις τοῦτο ποιεῖν συνεβούλευε φυλάττεσθαι τὰ ἀναπείθοντα μὴ πεινῶντας ἐσθίειν μηδὲ διψῶντας πίνειν· καὶ γὰρ τὰ λυμαινόμενα γαστέρας καὶ κεφαλὰς καὶ ψυχὰς ταῦτα ἔφη εἶναι. οὐκ οἴεσθε δ', ἔφη ἐπισκώπτων, καὶ τὴν Κίρκην ὗς ποιεῖν τοιούτοις πολλοῖς δειπνίζουσαν· τὸν δὲ Ὀδυσσέα Ἑρμοῦ τε ὑποθημοσύνῃ, καὶ αὐτὸν ἐγκρατῆ ὄντα, καὶ ἀποσχόμενον τοῦ ὑπὲρ τὸν καιρὸν τῶν τοιούτων ἅπτεσθαι, διὰ ταῦτα οὐ γενέσθαι ὗν; τοιαῦτα μὲν περὶ τούτων ἔπαιζεν, ἅμα σπουδάζων· ἀφροδισίων δὲ παρῄνει τῶν καλῶν ἰσχυρῶς ἀπέχεσθαι· οὐ γὰρ ἔφη ῥᾴδιον εἶναι τῶν τοιούτων ἁπτόμενον σωφρονεῖν.

45 *Τοῦ αὐτοῦ ἐν δ'* (5, 2) *ἀπομνημονευμάτων.*

Εἰπέ μοι, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἆρα καλὸν καὶ μεγαλεῖον νομίζεις εἶναι καὶ ἀνδρὶ καὶ πόλει κτῆμα ἐλευθερίαν; Ὡς οἷόν τέ γε μάλιστα, ἔφη. Ὅστις οὖν ἄρχεται ὑπὸ τῶν τοῦ σώματος ἡδονῶν καὶ διὰ ταύτας μὴ δύναται πράττειν τὰ βέλτιστα, νομίζεις τοῦτον

ἐλεύθερον εἶναι; Ἥκιστα, ἔφη. Ἴσως γὰρ ἐλεύθερον φαίνεταί σοι τὸ πράττειν τὰ βέλτιστα· εἶτα τὸ ἔχειν τοὺς κωλύσοντας τὸ ταῦτα ποιεῖν ἀνελεύθερον νομίζεις; Παντάπασιν, ἔφη. Παντάπασιν ἆρά σοι δοκοῦσιν οἱ ἀκρατεῖς ἀνελεύθεροι εἶναι; Νὴ τὸν Δί' εἰκότως. Πότερα δέ σοι δοκοῦσιν οἱ ἀκρατεῖς κωλύεσθαι μόνον τὰ κάλλιστα πράττειν, ἢ καὶ ἀναγκάζεσθαι τὰ αἴσχιστα ποιεῖν; Οὐδὲν ἧττον ἔμοιγ', ἔφη, δοκοῦσι ταῦτα ἀναγκάζεσθαι ἢ ἐκεῖνα κωλύεσθαι. Ποίους δέ τινας δεσπότας ἡγῇ τοὺς τὰ μὲν ἄριστα κωλύοντας, τὰ δὲ κάκιστα ἀναγκάζοντας; Ὡς δυνατὸν νὴ Δί', ἔφη, κακίστους. Δουλείαν δὲ ποίαν κακίστην νομίζεις εἶναι; Ἐγὼ μέν, ἔφη, τὴν παρὰ τοῖς κακίστοις δεσπόταις. Τὴν κακίστην ἄρα δουλείαν οἱ ἀκρατεῖς δουλεύουσιν; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Σοφίαν δὲ τὸ μέγιστον ἀγαθὸν οὐ δοκεῖ σοι ἀπείργουσα τῶν ἀνθρώπων ἡ ἀκρασία εἰς τοὐναντίον αὐτοὺς ἐμβάλλειν; ἢ οὐ δοκεῖ σοι προσέχειν τε τοῖς ὠφελοῦσι καὶ καταμανθάνειν αὐτὰ κωλύειν, ἀφέλκουσα ἐπὶ τὰ ἡδέα; καὶ πολλάκις αἰσθανομένους τῶν ἀγαθῶν τε καὶ τῶν κακῶν ἐκπλήξασα ποιεῖν τὸ χεῖρον ἀντὶ τοῦ βελτίονος αἱρεῖσθαι; Γίνεται τοῦτο, ἔφη. Σωφροσύνην δέ, ὦ Εὐθύδημε, τίνι ἂν φαίημεν ἧττον ἢ τῷ ἀκρατεῖ προσήκειν; αὐτὰ γὰρ δήπου τὰ ἐναντία σωφροσύνης καὶ ἀκρασίας ἔργα ἐστίν. Ὁμολογῶ καὶ τοῦτο, ἔφη. Τοῦ δ' ἐπιμελεῖσθαι ὧν προσήκει, οἴει τι κωλυτικώτερον ἀκρασίας εἶναι; Οὔκουν ἔγωγε, ἔφη. Τοῦ δὲ ἀντὶ τῶν ὠφελούντων τὰ βλάπτοντα προαιρεῖσθαι ποιοῦντος, καὶ τούτων μὲν ἐπιμελεῖσθαι, ἐκείνων δὲ ἀμελεῖν πείθοντος, καὶ τοῖς σωφρονοῦσι τὰ ἐναντία ποιεῖν ἀναγκάζοντος, οἴει τι ἀνθρώπῳ κάκιον εἶναι; Οὐδέν, ἔφη. Οὐκ οὖν τὴν ἐγκράτειαν τῶν ἐναντίων

ἢ τὴν ἀκρασίαν εἰκὸς τοῖς ἀνθρώποις αἰτίαν εἶναι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ τὸ τῶν ἐναντίων τὸ αἴτιον εἰκὸς ἄριστον εἶναι; Εἰκὸς γάρ, ἔφη. Ἔοικεν ἄρα, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἄριστον ἀνθρώπῳ ἐγκράτειαν εἶναι; Εἰκότως γάρ, ἔφη, ὦ Σώκρατες. Ἐκεῖνο δ', ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἤδη πώποτε ἐνεθυμήθης; Ποῖον; ἔφη. Ὅτι καὶ ἐπὶ τὰ ἡδέα, ἐφ' ἅπερ μόνα δοκεῖ ἡ ἀκρασία τοὺς ἀνθρώπους ἄγειν, αὐτὴ μὲν οὐ δύναται ἄγειν, ἡ δ' ἐγκράτεια πάντων μάλιστα ἥδεσθαι ποιεῖ. Πῶς; ἔφη. Ὥσπερ ἡ μὲν ἀκρασία οὐκ ἐῶσα καρτερεῖν, οὔτε λιμόν, οὔτε δίψος, οὔτ' ἀφροδισίων ἐπιθυμίαν, οὔτε ἀγρυπνίαν, (δι' ὧν μόνον ἔστιν ἡδέως μὲν φαγεῖν τε καὶ πιεῖν καὶ ἀφροδισιάσαι, ἡδέως δ' ἀναπαύσασθαί τε καὶ κοιμηθῆναι, καὶ περιμείναντας καὶ ἀνασχομένους ἕως ἂν ταῦτα ὡς ἔνι ἥδιστα γένηται,) κωλύει τοῖς ἀναγκαιοτάτοις τε καὶ συνεχεστάτοις ἀξιολόγως ἥδεσθαι. Ἡ δ' ἐγκράτεια μόνη ποιοῦσα καρτερεῖν τὰ εἰρημένα, μόνη καὶ ἥδεσθαι ποιεῖ ἀξίως μνήμης ἐπὶ τοῖς εἰρημένοις. Παντάπασιν, ἔφη, ἀληθῆ λέγεις. Ἀλλὰ μὴν τοῦ μαθεῖν τὶ καλὸν καὶ ἀγαθόν, καὶ τοῦ ἐπιμεληθῆναι καὶ τῶν τοιούτων τινός, δι' ὧν ἄν τις καὶ τὸ ἑαυτοῦ σῶμα καλῶς διοικήσειε, καὶ τὸν ἑαυτοῦ οἶκον καλῶς οἰκονομήσειε, καὶ φίλοις καὶ πόλει ὠφέλιμος γένοιτο, καὶ ἐχθροὺς κρατήσειεν, ἀφ' ὧν οὐ μόνον ὠφέλεια, ἀλλὰ καὶ ἡδοναὶ μέγισται γίγνονται, οἱ μὲν ἐγκρατεῖς ἀπολαύουσι πράττοντες αὐτά, οἱ δὲ ἀκρατεῖς οὐδενὸς μετέχουσι· τῷ γὰρ ἂν ἧττον φήσαιμεν τῶν τοιούτων προσήκειν, ἢ ᾧ ἥκιστα ἔξεστι ταῦτα πράττειν, κατεχομένῳ ἐπὶ τῷ σπουδάζειν περὶ τὰς ἐγγυτάτω ἡδονάς; Καὶ ὁ Εὐθύδημος, Δοκεῖς μοι, ἔφη, ὦ Σώκρατες, λέγειν, ὡς ἀνδρὶ ἥττονι τῶν διὰ τοῦ σώματος

ἡδονῶν πάμπαν οὐδεμιᾶς ἀρετῆς προσήκει. Τί γὰρ διαφέρει, ὦ Εὐθύδημε, ἄνθρωπος ἀκρατὴς θηρίου τοῦ ἀκρατεστάτου; ὅστις γὰρ τὰ μὲν κράτιστα μὴ σκοπεῖ, τὰ ἥδιστα δ' ἐκ παντὸς τρόπου ζητεῖ ποιεῖν, τί ἂν διαφέροι τῶν ἀφρονεστάτων βοσκημάτων; ἀλλὰ τοῖς ἐγκρατέσι μόνοις ἔξεστι σκοπεῖν τὰ κράτιστα τῶν πραγμάτων καὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ, καὶ διαλέγοντας κατὰ γένη τὰ μὲν ἀγαθὰ προαιρεῖσθαι, τῶν δὲ κακῶν ἀπέχεσθαι, καὶ οὕτως, ἔφη, ἀρίστους τε καὶ εὐδαιμονεστάτους ἄνδρας γίγνεσθαι, καὶ διαλέγεσθαι δυνατωτάτους. Ἔφη δὲ καὶ τὸ διαλέγεσθαι ὀνομασθῆναι ἐκ τοῦ συνιόντας κοινῇ βουλεύεσθαι διαλέγοντας κατὰ γένη τὰ πράγματα.

ΠΕΡΙ ΑΚΡΑΣΙΑΣ. ΙΗ.

1 Σοφοκλέους.

Τί ταῦτ' ἐπαινεῖς; πᾶς γὰρ οἰνωθεὶς ἀνὴρ
ἥσσων μὲν ὀργῆς ἐστι, τοῦ δὲ νοῦ κενός.
φιλεῖ δὲ πολλὴν γλῶσσαν ἐκχέας μάτην
ἄκων ἀκούειν, οὓς ἑκὼν εἶπεν κακῶς.

2 Σκληρίου.

Ὡς οὐκ ἀνεκτός, ὅστις ἢ πάροινος ὢν
ἢ καὶ μεμηνὼς εἰς μὲν αὐτὸν ἀσφαλὴς
ἀεί ποτ' ἐστίν, εἰς δὲ τοὺς πολλοὺς νοσεῖ.

3 Ἐρατοσθένους.

Οἶνός τοι πυρὶ ἶσον ἔχει μένος, εὖτ' ἂν ἐς ἄνδρα
ἔλθῃ, κυμαίνει δ' οἷα Λίβυσσαν ἅλα
βορρῆς ἠὲ νότος, τὰ δέ τοι κεκρυμμένα φαίνει
βυσσόθεν, ἐκ δ' ἀνδρῶν πάντ' ἐτίναξε νόον.

4 *Μενάνδρου.*
Ὁ πολὺς ἄκρατος ὀλίγ᾽ ἀναγκάζει φρονεῖν.

5 Οὐ γὰρ τὸ πλῆθος, ἂν σκοπῇ τις, τοῦ ποτοῦ
ποιεῖ παροινεῖν, τοῦ πιόντος δ᾽ ἡ φύσις.

6 *Φιλήμονος.*
Τί δὴ ζῆν ὄφελος ᾧ μή 'στι τὸ ζῆν εἰδέναι;

7 Ἀλλ᾽ οἶνος ἦν· οὐδεὶς δὲ μεθύων, ἂν σκοπῇς,
ὃς οὐχὶ δοῦλός ἐστι τοῦ πεπωκέναι.
ὅσα μ᾽ οὗτος ἠνάγκαζεν, ἐποίουν ταῦτ᾽ ἐγώ.

7ª *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ὁ πονηρὸς οἶνος οὗτός ἐστι, Νικοφῶν.

8 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ἅπας πονηρὸς οἶνος ὁ πολὺς ἔστ᾽ ἀεί.

9 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ἐμέθυον· ἱκανὴ πρόφασις εἰς θἀμαρτάνειν.

10 *Θεόγνιδος* (605).
Πολλῷ τοι πλέονας λιμοῦ κόρος ὤλεσεν ἤδη
ἄνδρας, ὅσοι μοίρης πλεῦν᾽ ἐθέλουσιν ἔχειν.

11 *Τοῦ αὐτοῦ* (627).
Αἰσχρόν τοι μεθύοντα παρ᾽ ἀνδράσι νήφοσιν εἶναι,
αἰσχρὸν δ᾽ εἰ νήφων πὰρ μεθύουσι μένει.

12 *Τοῦ αὐτοῦ* (509).
Οἶνος πινόμενος πουλὺς κακός· ἢν δέ τις αὐτὸν
πίνῃ ἐπισταμένως, οὐ κακὸς ἀλλ᾽ ἀγαθός.

13 *Αἰσχύλου.*
Κάτοπτρον εἴδους χαλκός ἐστ᾽, οἶνος δὲ νοῦ.

14 *Θεόγνιδος* (479).
Ὃς δ᾽ ἂν ὑπερβάλλῃ πόσιος μέτρον, οὐκέτ᾽ ἐκεῖνος
τῆς αὑτοῦ γλώσσης καρτερὸς οὐδὲ νόου.

μυθεῖται δ' ἀπάλαμνα, τὰ νήφοσι γίνεται αἰσχρά,
αἰδεῖται δ' ἕρδων οὐδέν, ὅταν μεθύῃ,
τὸ πρὶν ἐὼν σώφρων, τότε νήπιος. ἀλλὰ σὺ ταῦτα
γιγνώσκων μὴ πῖν' οἶνον ὑπερβολάδην·
ἀλλ' ἢ πρὶν μεθύειν ὑπανίστασο, μὴ σὲ βιάσθω
γαστὴρ ὥστε κακὸν λάτριν ἐφημέριον.

15 *Τοῦ αὐτοῦ* (497).

Ἄφρονος ἀνδρὸς ἄγαν καὶ σώφρονος οἶνος, ὅταν δὴ
πίνῃ ὑπὲρ μέτρον, κοῦφον ἔθηκε νόον.

16 *Τοῦ αὐτοῦ* (499).

Ἐν πυρὶ μὲν χρυσόν τε καὶ ἄργυρον ἴδριες ἄνδρες
γιγνώσκουσ'· ἀνδρὸς δ' οἶνος ἔδειξε νόον,
καὶ μάλα περ πινυτοῦ· κακότητα δὲ πᾶσαν ἐλέγχει,
ὥστε καταισχύνειν καὶ τὸν ἐόντα σοφόν.

17 *Οἰνοβαρέω κεφαλήν, Ὀνομάκριτε, καί με βιᾶται*
οἶνος· ἀτὰρ γνώμης οὐκέτ' ἐγὼ ταμίης
ἡμετέρης, τὸ δὲ δῶμα περιτρέχει· ἀλλ' ἄγ' ἀναστὰς
πειρήσω, μή πως καὶ πόδας οἶνος ἔχῃ
καὶ νόον ἐν στήθεσσι· δέδοικα δὲ μή τι μάταιον
ἔρξω θωρηχθεὶς καὶ μέγ' ὄνειδος ἔχω (Theogn. 503).

18 *Ὁμήρου* (Od. ξ' 464).

Οἶνος δὲ πολύφρονά περ μάλ' ἀεῖσαι,
καί θ' ἁπαλὸν γελάσαι, καί τ' ὀρχήσασθαι ἀνῆκε,
καί τι ἔπος προέηκεν ὅπερ τ' ἄρρητον ἄμεινον.

19 *Μενάνδρου.*

Χαλεπὸν ὅταν τις ὢν πίῃ πλέον λαλῇ,
μηδὲν κατειδώς, ἀλλὰ προσποιούμενος.

20 *Εὐριπίδου Αὔγης.*

Νῦν δ' οἶνος ἐξέστησέ μ'· ὁμολογῶ δέ σε
ἀδικεῖν, τὸ δ' ἀδίκημ' ἐγένετ' οὐχ ἑκούσιον.

21 *Φιλιππίδου.*

Οὐκ ἔστιν "ἐμεθύσθην πάτερ" λέγοντα καὶ
"ἥμαρτον" ὡς τὸ πρόσθε συγγνώμης τυχεῖν.
ὁ γὰρ εἰς τὸν ἀσθενῆ βίᾳ τι Πάμφιλε
ποιῶν ὑβρίζειν, οὐχ ἁμαρτάνειν δοκεῖ.

22 *Πανυάσιδος.*

Ξεῖν' ἄγε δὴ καὶ πῖν', ἀρετή νύ τις ἔστι καὶ αὕτη,
ὅς κ' ἀνδρῶν πολὺ πλεῖστον ἐν εἰλαπίνῃ μέθυ πίνῃ
εὖ καὶ ἐπισταμένως, ἅμα τ' ἄλλον φῶτα κελεύῃ.
ἶσόν θ' ὅστ' ἐν δαιτὶ καὶ ἐν πολέμῳ θοὸς ἀνὴρ
ὑσμίνας διέπων ταλαπενθέας, ἔνθα τε παῦροι
θαρσαλέοι τελέθουσι μένουσί τε θοῦρον Ἄρηα.
τοῦ μὲν ἐγὼ θείμην ἶσον κλέος, ὅστ' ἐνὶ δαιτὶ
τέρπηται παρεὼν ἅμα τ' ἄλλον λαὸν ἀνώγῃ.
οὐ γάρ μοι ζώειν γε δοκεῖ βροτὸς οὐδὲ βιῶναι
ἀνθρώποιο βίον ταλασίφρονος, ὅστις ἀπ' οἴνου
θυμὸν ἐρητύσας πίνει ποτόν, ἀλλ' ἐνεόφρων.
οἶνος γὰρ πυρὶ ἶσον ἐπιχθονίοισιν ὄνειαρ,
ἐσθλὸν ἀλεξίκακον πάσης συνοπηδὸν ἀοιδῆς.
ἓν μὲν γὰρ θαλίης ἱερὸν μέρος ἀγλαΐης τε,
ἓν δὲ χοροιτυπίης, ἓν δ' ἱμερτῆς φιλότητος.
ἓν δέ τε μενθήρης καὶ δυσφροσύνης ἀλεγεινῆς.
τῷ σε χρὴ παρὰ δαιτὶ δεδεγμένον εὔφρονι θυμῷ
πίνειν, μηδὲ βορῇ κεκακωμένον ἠύτε γῦπα
ἧσθαι πλημμύροντα, λελασμένον εὐφροσυνάων.

23 *Πυθαγόρου.*

Ἐλεύθερον ἀδύνατον εἶναι τὸν πάθεσι δουλεύοντα καὶ ὑπὸ παθῶν κρατούμενον. (Porph. ad Marc. 34.)

24 *Χρυσίππου.*

Μικρὰν φασὶ μανίαν εἶναι τὴν μέθην.

25 *Πυθαγόρας ἔλεγε τὴν μέθην μανίας εἶναι μελέτην.*

26 *Ἀναχάρσιδος.*

Ἀνάχαρσις ἔφη "κιρναμένου κρατῆρος ἐφεστίου" τὸν μὲν πρῶτον ὑγιείας πίνεσθαι, τὸν δὲ δεύτερον ἡδονῆς, τὸν δὲ τρίτον ὕβρεως, τὸν δὲ τελευταῖον μανίας.

27 *Ἀντισθένους.*

Τὰς μὴ κατὰ θύρας, φησὶν ὁ Ἀντισθένης, εἰσιούσας ἀπολαύσεις δεήσει ἢ σχασθῆναι ἢ ἐλλεβορισθῆναι ἢ πάντως λιμαγχονηθῆναι, κακὰς ἀμοιβὰς ἐκτίνοντα τῆς προγεγενημένης ἀπληστίας ἕνεκα μικρᾶς καὶ ὀλιγοχρονίου ἡδονῆς.

28 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ ὅτι καὶ γυναῖκα παιδευτέον.*

Τῷ Διονύσῳ νάρθηκα καὶ λήθην συγκαθιεροῦσιν, ὡς μὴ δέον μνημονεύειν τῶν ἐν οἴνῳ πλημμεληθέντων, ἀλλὰ νουθεσίας παιδικῆς δεομένων. ᾧ συνᾴδει καὶ τὸ "μισῶ μνήμονα συμπόταν." ὁ δ' Εὐριπίδης τῶν ἀτόπων τὴν λήθην σοφὴν εἴρηκε.

29 *Πλάτωνος* (Legg. I 640 e).

Μεθύων κυβερνήτης καὶ πᾶς παντὸς ἄρχων ἀνατρέπει πάντα, εἴτε πλοῖον εἴτε ἅρμα εἴτε στρατόπεδον εἴτε ὅ τι ποτὲ εἴη τὸ κυβερνώμενον ὑπ' αὐτοῦ.

30 *Τοῦ αὐτοῦ* (Legg. I p. 646 a).

Οὐ μόνον, ὡς ἔοικεν, ὁ γέρων δὶς παῖς γίνοιτ' ἄν, ἀλλὰ καὶ ὁ μεθυσθείς.

31 *Δημοκρίτου.*

Ὑγιαίνειν εὐχῇ παρὰ θεῶν αἰτέονται ἄνθρωποι, τὴν δὲ ταύτης δύναμιν παρ' ἑωυτοῖσι ἔχοντες οὐκ

ἴσασι· ἀκρασίῃ δὲ τἀναντία πρήσσοντες αὐτοὶ προδόται τῆς ὑγιείης τῇσι ἐπιθυμίῃσι γίνονται.

32 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ ὅτι καὶ γυναῖκα παιδευτέον.*

Ἀμαθίην, ὥς φησιν Ἡράκλειτος, καὶ ἄλλως κρύπτειν ἔργον ἐστίν, ἐν οἴνῳ δὲ χαλεπώτερον· καὶ Πλάτων δέ φησιν ἐν οἴνῳ τὰ ἤθη φανερὰ γίγνεσθαι, ὥσπερ καὶ Ὅμηρος "οὐδὲ τραπέζῃ γνώτην ἀλλήλων."

33 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Σοφοκλῆς ἐμέμφετο Αἰσχύλῳ ὅτι μεθύων ἔγραφε· "καὶ γὰρ εἰ τὰ δέοντα ποιεῖ" φησίν "ἀλλ' οὐκ εἰδώς γε."

34 *Πυθαγόρου.*

Πυθαγόρας ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος οἰνόφλυγος πῶς ἂν τοῦ μεθύειν παύσαιτο "εἰ συνεχῶς" ἔφη "θεωροίη τὰ ὑπ' αὐτῶν πρασσόμενα."

35 Ἀνάχαρσις ἔφη ἐρωτηθεὶς πῶς ἄν τις μὴ μεθύσκοιτο, "εἰ" ἔφησεν "ὁρῴη τοὺς μεθύοντας οἷα ποιοῦσιν."

36 *Δημοκρίτου.*

Ὅσοι ἀπὸ γαστρὸς τὰς ἡδονὰς ποιέονται ὑπερβεβληκότες τὸν καιρὸν ἐπὶ βρώσεσι ἢ πόσεσι ἢ ἀφροδισίοισι, ἐν τοῖσι πᾶσι αἱ μὲν ἡδοναὶ βραχέαι τε καὶ δι' ὀλίγου γίνονται, ὁκόσον ἂν χρόνον ἐσθίωσι ἢ πίνωσι, αἱ δὲ λῦπαι πολλαί. τοῦτο μὲν γὰρ τὸ ἐπιθυμέειν ἀεὶ τῶν αὐτῶν πάρεστι, καὶ ὁκότ' ἂν γένηται ὁκοίων ἐπιθυμέουσι, διὰ ταχέος τε ἡ ἡδονὴ παροίχεται, καὶ οὐδὲν ἐν αὐτοῖσι χρηστόν ἐστι ἀλλ' ἢ τέρψις βραχέα, καὶ αὖτις τῶν αὐτῶν δέει.

37 *Πλάτωνος* (Alcib. I p. 131 b).

Ὅστις σῶμα θεραπεύει, τὸ ἑαυτοῦ οὐχ ἑαυτὸν θεραπεύει· ὅστις δὲ χρήματα, οὔθ' ἑαυτὸν οὔτε τὰ ἑαυτοῦ, ἀλλ' ἔτι πορρωτέρω τῶν ἑαυτοῦ.

38 *Μουσωνίου ἐκ τοῦ περὶ τροφῆς.*

Αἴσχιστον, ἔφη, γαστριμαργία καὶ ὀψοφαγία ἐστίν. οὐκ ἀντερεῖ οὐδείς. σκοποῦντας δὲ ὅπως διαφεύξονται ταῦτα πάνυ ὀλίγους ᾔσθημαι ἐγώ· τοὺς δὲ πολλοὺς ὁρῶ καὶ ἀπόντων ὀρεγομένους τῶν τοιούτων βρωμάτων καὶ παρόντων ἀπέχεσθαι μὴ δυναμένους, καὶ χρωμένους αὐτοῖς, ὅταν χρῶνται, ἀφειδῶς, ὡς καὶ πρὸς βλάβην χρῆσθαι τὴν τοῦ σώματος. καίτοι γαστριμαργία τί ἂν εἴη ἄλλο ἢ ἀκρασία περὶ τροφήν, δι' ἣν ἄνθρωποι τὸ ἡδὺ τὸ ἐν σίτῳ τοῦ ὠφελίμου προτιμῶσι; καὶ ὀψοφαγία δὲ οὐδὲν ἕτερόν ἐστιν ἢ ἀμετρία περὶ χρῆσιν ὄψου. πανταχοῦ δὲ κακὸν οὖσα ἡ ἀμετρία ἐν τοῖς μάλιστα τῇδε τὴν ἑαυτῆς ἐπιδείκνυται φύσιν, παρεχομένη τοὺς ὀψοφάγους ἀντὶ ἀνθρώπων ὑσὶν ἢ κυσὶν ὁμοιουμένους τὴν λαβρότητα καὶ εὐσχημονεῖν μὴ δυναμένους, οὐ ταῖς χερσίν, οὐ τοῖς ὄμμασιν, οὐ τῇ καταπόσει· οὕτως ἄρα αὐτοὺς ἐξίστησιν ἡ ἐπιθυμία τῆς ἐν ὄψῳ ἡδονῆς. ὅτι μὲν δὴ οὕτως ἔχειν πρὸς τροφὴν αἴσχιστόν ἐστι, γνώριμον, ἐν ᾧ γε ζώοις ἄφροσι μᾶλλον ἢ ἀνθρώποις φρονίμοις ὁμοιούμεθα. αἰσχίστου δὲ τούτου ὄντος, κάλλιστον ἂν εἴη τοὐναντίον, τάξει καὶ κοσμίως ἐσθίειν καὶ τὴν σωφροσύνην ἐνταῦθα ἐπιδείκνυσθαι πρῶτον, οὐκ ὂν ῥᾴδιον, ἀλλὰ δεόμενον πολλῆς ἐπιμελείας καὶ ἀσκήσεως. διὰ τί δὴ τοῦτο; ὅτι πολλῶν ἡδονῶν οὐσῶν, αἳ τὸν ἄνθρωπον ἀναπείθουσιν ἁμαρτάνειν καὶ ἐνδιδόναι αὐταῖς βιάζονται παρὰ τὸ συμφέρον, δυσμαχωτάτη εἶναι κινδυνεύει πασῶν ἡ περὶ τροφὴν ἡδονή.

ταῖς μὲν γὰρ ἄλλαις ἡδοναῖς σπανιώτερον ὁμιλοῦμεν, καὶ ἐνίων γε μῆνας καὶ ἐνιαυτοὺς ὅλους ἀπέχεσθαι δυνάμεθα· ταύτης δὲ ἀνὰ πᾶσαν ἡμέραν πάντως πειρᾶσθαι ἀνάγκη, καὶ τά γε πολλὰ δὶς ἑκάστης ἡμέρας· οὐ γὰρ ἔνι ζῆν ἄλλως τὸν ἄνθρωπον. ὥσθ᾽ ὅσῳ πλεονάκις τῆς ἐν βρώσει ἡδονῆς πειρώμεθα, τοσούτῳ πλείους οἱ ἐνταῦθα κίνδυνοι. καὶ μὴν καθ᾽ ἑκάστην προσφορὰν τροφῆς οὐχ εἷς κίνδυνος ἁμαρτήματος, ἀλλὰ πλείονες. καὶ γὰρ ὁ ἐπιπλεῖον ἢ δεῖ ἐσθίων ἁμαρτάνει, καὶ ὁ κατασπεύδων ἐν τῷ ἐσθίειν οὐδὲν ἧττον, καὶ ὁ μολυνόμενος ὑπὸ τοῦ ὄψου μᾶλλον ἢ χρή, καὶ ὁ τὰ ἡδίω τῶν ὑγιεινοτέρων βρώματα προτιμῶν, καὶ ὁ μὴ νέμων τὰ ἴσα τοῖς συνεσθίουσιν. ἔστι δὲ καὶ ἄλλη τις ἁμαρτία περὶ τροφήν, ὅταν παρὰ καιρὸν προσφερώμεθα αὐτήν, καὶ δέον ἄλλο τι πράττειν ἀφέμενοι τούτου ἐσθίωμεν. τοσούτων δὴ καὶ ἔτι ἄλλων ἁμαρτιῶν οὐσῶν περὶ τροφήν, δεῖ μὲν ἁπασῶν καθαρεύειν αὐτῶν καὶ μηδεμιᾷ ἔνοχον εἶναι τὸν μέλλοντα σωφρονήσειν. καθαρεύοι δ᾽ ἄν τις καὶ ἀναμάρτητος εἴη ἀσκῶν καὶ ἐθίζων αὑτὸν αἱρεῖσθαι σῖτον οὐχ ἵνα ἥδηται, ἀλλ᾽ ἵνα τρέφηται, οὐδ᾽ ἵνα λεαίνηται τὴν κατάποσιν, ἀλλ᾽ ἵνα ῥωννύηται τὸ σῶμα. καὶ γὰρ γέγονεν ἡ μὲν κατάποσις δίοδος εἶναι τροφῆς, οὐχ ἡδονῆς ὄργανον, ἡ δὲ γαστὴρ τοῦ αὐτοῦ χάριν οὗπερ ἕνεκα καὶ φυτῷ παντὶ ῥίζα γέγονε. καθάπερ γὰρ ἐκεῖ τρέφει τὸ φυτὸν ἡ ῥίζα, ἀπὸ τῶν ἐκτὸς τὴν τροφὴν λαμβάνουσα· οὕτω τρέφει τὸ ζῷον ἡ γαστὴρ ἀπὸ τῶν εἰσφερομένων σιτίων καὶ ποτῶν. ὥσπερ τε αὖ τούτοις διαμονῆς ἕνεκα συμβαίνει τρέφεσθαι, καὶ οὐχ ἡδονῆς, παραπλησίως καὶ ἡμῖν ζωῆς καὶ φάρμακον ἡ τροφὴ τῷ ἀνθρώπῳ ἐστί. διὸ καὶ προσήκει ἐσθίειν ἡμῖν ἵνα ζῶμεν, οὐχ ἵνα ἡδώμεθα, εἴ γε μέλλομεν

συστοιχεῖν ἀρίστῳ ὄντι τῷ λόγῳ Σωκράτους, ὃς ἔφη τοὺς μὲν πολλοὺς ἀνθρώπους ζῆν ἵνα ἐσθίωσιν, αὐτὸς δὲ ἐσθίειν ἵνα ζῇ. οὐ γὰρ δὴ ἐπιεικής τις βουλόμενος εἶναι ἄνθρωπος ἀξιώσει παραπλήσιός τις εἶναι τοῖς πολλοῖς καὶ ζῆν ἐπὶ τῷ ἐσθίειν, ὥσπερ ἐκεῖνοι θηρώμενοι ἐξ ἅπαντος τὴν ἀπὸ τῆς τροφῆς ἡδονήν.

Ὅτι δὲ καὶ θεὸς ὁ ποιήσας τὸν ἄνθρωπον τοῦ σώζεσθαι χάριν, οὐχὶ τοῦ ἥδεσθαι, σῖτα καὶ ποτὰ παρεσκεύασεν αὐτοῖς, μάθοι τις ἂν ἐκεῖθεν μάλιστα. ἡ γὰρ δὴ τροφὴ ὅτε ἐργάζεται μάλιστα τὸ ἑαυτῆς ἔργον, τότε οὐδαμῶς ἥδει τὸν ἄνθρωπον κατά τε τὴν πέψιν καὶ τὴν ἀνάδοσιν, ἀλλὰ τρεφόμεθα μὲν τότε ὑπ᾽ αὐτῆς καὶ ῥωννύμεθα· ἡδόμεθα δὲ τότε οὐδεμίαν ἡδονήν, καίτοι πλείων ὁ χρόνος οὗτός ἐστιν ἢ ἐν ᾧ ἐσθίομεν. ἔδει δέ γε, εἴπερ ὁ θεὸς ἡδονῆς χάριν τὴν τροφὴν ἐμηχανήσατο ἡμῖν, τὸν πλείω τοῦτον χρόνον ἥδεσθαι ἡμᾶς ὑπ᾽ αὐτῆς, καὶ οὐ τὸν ἐλάχιστον ἐκεῖνον ἐν ᾧ καταπίνομεν. ἀλλ᾽ ὅμως χάριν ἐκείνου τοῦ ἐλαχίστου χρόνου, ὃν ἡδόμεθα, παρασκευὴ μὲν ὄψων γίνεται μυρίων· πλεῖται δ᾽ ἡ θάλαττα μέχρι περάτων· μάγειροι δὲ γεωργῶν περισπουδαστότεροί εἰσι· δεῖπνα δὲ παρατίθενταί τινες ἀγρῶν ἀναλίσκοντες τιμάς, καὶ ταῦτ᾽ οὐδαμῶς ὠφελουμένων τῶν σωμάτων ἐκ τῆς πολυτελείας τῶν βρωμάτων. πᾶν γὰρ τοὐναντίον οἱ ταῖς εὐτελεστάταις χρώμενοι τροφαῖς ἰσχυρότατοί εἰσι. τοὺς γοῦν οἰκέτας τῶν δεσποτῶν καὶ τοὺς χωρίτας τῶν ἀστικῶν καὶ τοὺς πένητας τῶν πλουσίων ἴδοις ἂν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ῥωμαλεωτέρους ὄντας, καὶ μᾶλλον μὲν πονεῖν δυναμένους, ἧττον δὲ κάμνοντας ἐν τοῖς ἔργοις, νοσοῦντας δὲ σπανιώτερον, ἀνεχομένους δὲ εὐκολώτερον κρύος, θάλπος, ἀγρυπνίαν, πᾶν εἴ τι τοιοῦτον. καίτοι κἂν

ἐπίσου ἥ τε πολυτελὴς καὶ ἡ εὐτελὴς τροφὴ ῥωννύῃ τὸ σῶμα, ὅμως αἱρετέον ἐστὶ τὴν εὐτελῆ, ὅτι αὕτη σωφρονικωτέρα καὶ πρέπει ἀνδρὶ ἀγαθῷ μᾶλλον, ἢ καὶ τὸ εὐπόριστον τοῦ δυσποριστου, καὶ τὸ ἀπραγμάτευτον τοῦ μετὰ πραγμάτων, καὶ τὸ ἕτοιμον τοῦ ἀνετοίμου πρὸς τροφὴν πρεπωδέστερον τοῖς ἐπιεικέσιν. ἵνα δὲ συνελὼν εἴπω περὶ τροφῆς τὸ πᾶν, φημὶ δεῖν σκοπὸν μὲν αὐτῆς ποιεῖσθαι ὑγίειάν τε καὶ ἰσχύν, ὡς τούτων μόνον ἕνεκα βρωτέον, ἃ δὴ δεῖται πολυτελείας οὐδεμιᾶς· ἐσθίοντα δ' ἐπιμελεῖσθαι κόσμου τε καὶ μέτρου τοῦ προσήκοντος καὶ τοῦ διαφέρειν πλεῖστον τῷ τε ἀμολύντῳ καὶ τῷ σχολαίῳ.

ΠΕΡΙ ΑΝΕΞΙΚΑΚΙΑΣ. ΙΘ.

1 Εὐριπίδου Ἀνδρομάχης (642).

Σμικρᾶς ἀπ' ἀρχῆς νεῖκος ἀνθρώποις μέγα
γλῶσσ' ἐκπορίζει. τοῦτο δ' οἱ σοφοὶ βροτῶν
ἐξευλαβοῦνται, μὴ φίλοις τεύχειν ἔριν.

2 Φιλήμονος Ἐπιδικαζομένου.

Ἥδιον οὐδὲν οὐδὲ μουσικώτερον
ἔστ' ἢ δύνασθαι λοιδορούμενον φέρειν.
ὁ λοιδορῶν γάρ, ἂν ὁ λοιδορούμενος
μὴ προσποιῆται, λοιδορεῖται λοιδορῶν.

3 Εὐριπίδου ἐκ Πρωτεσιλάου.

Δυοῖν λεγόντοιν θατέρου θυμουμένου,
ὁ μὴ ἀντιτείνων τοῖς λόγοις σοφώτερος.

4 Δημοσθένους.

Δημοσθένης λοιδορουμένου τινὸς αὐτῷ "οὐ συγκαταβαίνω" εἶπεν "εἰς ἀγῶνα ἐν ᾧ ὁ ἡττώμενος τοῦ νικῶντός ἐστι κρείττων."

5 *Πλάτωνος.*

Πλάτων λοιδορούμενος ὑπό τινος "λέγε" ἔφη "κακῶς, ἐπεὶ καλῶς οὐκ ἔμαθες."

6 *Ἀριστίππου.*

Ἀρίστιππος λοιδοροῦντος αὐτὸν τινὸς ἔφη "τοῦ μὲν λέγειν κακῶς σὺ κύριος εἶ, τοῦ δὲ δικαίως ἀκούειν ἐγώ."

7 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ πῶς ἔστιν ἀπ' ἐχθρῶν ὠφεληθῆναι* (90 c).

Λόγων δέ, κουφοτάτου πράγματος, βαρυτάτη ζημία κατὰ τὸν θεῖον Πλάτωνα καὶ παρὰ θεῶν ἕπεται καὶ παρ' ἀνθρώπων. ἡ δὲ σιγὴ πανταχοῦ μὲν ἀνυπεύθυνον (οὐ μόνον ἄδιψον, ὥς φησιν Ἱπποκράτης), ἐν δὲ λοιδορίαις σεμνὸν καὶ Σωκρατικόν, μᾶλλον δὲ Ἡράκλειον· εἴ γε κἀκεῖνος "οὐδ' ὅσσον μυίας στυγερῶν ἐμπάζετο μύθων."

8 *Πυθαγόρου.*

Μεγάλην παιδείαν νόμιζε δι' ἧς δυνήσῃ φέρειν ἀπαιδευσίαν.

9 *Εὐσεβίου.*

Ὀργῆς κρατέειν ἄριστον ἐθίζειν ἑωυτόν, μάλιστα μὲν καὶ πρὸς τὸ μὴ εὐπετέως ὑπ' αὐτῆς ξυγκινέεσθαι, εἰ δὲ μή, ἀλλ' ὥστε γε πάντως μὴ τὸ καταναγκαζόμενον ὑπ' αὐτῆς αὐτίκα καὶ ἐν τῷ ἀλογίστῳ ἀποπιμπλάναι.

10 *Σοφοκλέους Αἴαντι* (1357).

Νικᾷ γὰρ ἀρετή με τῆς ἔχθρας πολύ.

11 *Θεόγνιδος* (695).

Οὐ δύναμαί σοι, θυμέ, παρασχεῖν ἄρμενα πάντα,
τέτλαθι· τῶν δὲ καλῶν οὐχὶ σὺ μοῦνος ἐρᾷς.

12 *Θεοφράστου.*

Οὐ μὴν οὐδὲ μετ᾽ ὀργῆς πρακτέον τοῖς φρονίμοις οὐδέν. ἀλόγιστον γὰρ θυμός, καὶ μετὰ προνοίας οὐδὲν ἄν ποτε ποιήσειεν, ἀλλὰ μεθύων ταῖς φιλονεικίαις, ὡς ἔτυχε, χρῆται ταῖς ὁρμαῖς. ὥστε δεῖ μὴ ἐξ ὑπογύου τῶν ἁμαρτημάτων τὰς τιμωρίας μήτε παρὰ τῶν οἰκετῶν μήτε παρὰ τῶν ἄλλων λαμβάνειν, ἵνα τὸ τῷ λογισμῷ κράτιστον, μὴ τὸ τῷ θυμῷ φίλον, ἀεὶ πράττῃς καὶ δίκην παρὰ τῶν ἐχθρῶν λαμβάνῃς, ἐξ ἧς μέλλεις σαυτὸν μὴ αὐτοὺς ἐκείνους βλάψειν. τὸ γὰρ τιμωρεῖσθαί τινα κακῶς ἑαυτὸν ποιοῦντα, δίκην διδόναι οὐχ ἧττον ἢ λαμβάνειν ἐστίν. ὥστε δεῖ σχολῇ μᾶλλον ἀμύνεσθαι ζητεῖν ἢ ταχέως ἀλυσιτελῶς ἑαυτῷ κολάσαι τὸν ἐχθρόν.

13 *Ῥούφου ἐκ τῶν Ἐπικτήτου περὶ φιλίας.*

Τὸ δὲ Λυκούργου τοῦ Λακεδαιμονίου τίς ἡμῶν οὐ θαυμάζει; πηρωθεὶς γὰρ ὑπό τινος τῶν πολιτῶν τῶν ὀφθαλμῶν τὸν ἕτερον καὶ παραλαβὼν τὸν νεανίσκον παρὰ τοῦ δήμου, ἵνα τιμωρήσαιτο ὅπως αὐτὸς βούληται· τούτου μὲν ἀπέσχετο, παιδεύσας δὲ αὐτὸν καὶ ἀποφήνας ἄνδρα ἀγαθὸν παρήγαγεν εἰς τὸ θέατρον. θαυμαζόντων δὲ τῶν Λακεδαιμονίων "τοῦτον μέντοι λαβὼν" ἔφη "παρ᾽ ὑμῶν ὑβριστὴν καὶ βίαιον, ἀποδίδωμι ὑμῖν ἐπιεικῆ καὶ δημοτικόν."

14 *Πιττακοῦ.*

Πιττακὸς ἀδικηθεὶς ὑπό τινος καὶ ἔχων ἐξουσίαν αὐτὸν κολάσαι, ἀφῆκεν εἰπὼν "συγγνώμη τιμωρίας ἀμείνων. τὸ μὲν γὰρ ἡμέρου φύσεώς ἐστι, τὸ δὲ θηριώδους."

15 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (c. 12).

Ἄρξαι οὖν ἀπὸ τῶν μικρῶν. ἐκχεῖται τὸ ἔλαιον; κλέπτεται τὸ οἰνάριον; λέγε ὅτι τοσοῦδε πωλεῖται ἀπάθεια, τοσούτου ἀταραξία· προῖκα οὐδὲν γίνεται. ὅταν δὲ καλῇς τὸν παῖδα, προεπινόει ὅτι δύναται καὶ μὴ ὑπακοῦσαι καὶ μηδὲν ποιῆσαι ὧν θέλεις. ἀλλ' οὐχ οὕτως ἐστὶν αὐτῷ καλῶς, ἵνα ἐπ' ἐκείνῳ ᾖ τὸ ἐμὲ ταραχθῆναι.

16 Μουσωνίου ἐκ τοῦ εἰ γραφὴν ὕβρεως γράψεταί τινα ὁ φιλόσοφος.

Ὕβρεως δὲ γραφὴν οὔτ' ἂν αὐτὸς ἔφη γράψασθαί τινα ποτὲ οὔτ' ἂν ἑτέρῳ συμβουλεῦσαι οὐδενὶ τῶν φιλοσοφεῖν ἀξιούντων. ἃ γὰρ πάσχοντές τινες ὑβρίζεσθαι δοκοῦσιν, τούτων οὐδὲν εἶναι ὕβριν ἢ αἰσχύνην τοῖς πάσχουσιν· οἷον λοιδορηθῆναι ἢ πληγῆναι ἢ ἐμπτυσθῆναι, ὧν τὸ χαλεπώτατον πληγή. ὡς δὲ οὔτε αἰσχρὸν οὔτε ὑβριστικὸν ἔχουσιν οὐδέν, δηλοῦν Λακεδαιμονίων παῖδας δημοσίᾳ μαστιγουμένους καὶ ἐπ' αὐτῷ τούτῳ ἀγαλλομένους. ὁ δὲ φιλόσοφος εἰ μὴ δύναιτο καταφρονεῖν πληγῶν ἢ λοιδορίας, τί ἂν ὄφελος αὐτοῦ εἴη, ὅν γε φαίνεσθαι δεῖ καὶ θανάτου καταφρονοῦντα; νὴ Δία, ἀλλ' ἡ διάνοια τοῦ δρῶντος αὐτὰ δεινή, τὸ ἐπεγγελῶντα καὶ ὑβρίζειν νομίζοντα ῥαπίσαι ἢ λοιδορῆσαι ἤ τι τοιοῦτον ποιῆσαι· Δημοσθένης γοῦν καὶ τῷ βλέμματι ὑβρίζειν τινάς, καὶ ἀφόρητα εἶναι τὰ τοιαῦτα, καὶ ἐξίστασθαι τοὺς ἀνθρώπους ὑπ' αὐτῶν. ταῦτα δὲ οἱ μὲν τὸ καλὸν καὶ τὸ αἰσχρὸν ὅ τι τῇ ἀληθείᾳ ἐστὶν ἀγνοοῦντες, καὶ πρὸς τὴν δόξαν κεχηνότες, [ταύτῃ ἢ ἐκείνῃ οἴονται, καὶ αὐτοὶ] ὑβρίζεσθαι νομίζουσιν, εἴ τις ἢ προσβλέποι αὐτοὺς πικρότερον ἢ καταγελῴη αὐτῶν ἢ πλήττοι ἢ λοιδοροίη. ἀνὴρ δὲ εὖ φρονῶν καὶ νοῦν ἔχων, οἷον εἶναι δεῖ τὸν

φιλόσοφον, ὑπὸ οὐδενὸς τούτων ταράττεται, οὐδ' οἴεται τὸ πάσχειν αὐτὰ αἰσχρόν, ἀλλὰ τὸ ποιεῖν μᾶλλον· ἐπειδὴ ὁ μὲν ἁμαρτάνων εὐθὺς καὶ ἐν αἰσχύνῃ ἐστίν, ὁ δὲ πάσχων ὥσπερ οὐχ ἁμαρτάνει καθόσον πάσχει, οὕτως οὐδὲ ἐν αἰσχρῷ οὐδενὶ γίνεται. ὅθεν οὐδ' ἐπὶ δίκας οὐδ' ἐπ' ἐγκλήματα προσέλθοι ἂν ὁ νοῦν ἔχων· ἐπείπερ οὐδ' ὑβρίσθαι ἂν δόξειεν· καὶ γὰρ μικρόψυχον τὸ ἀγανακτεῖν ἢ ἐπιτείνεσθαι περὶ τῶν τοιούτων· πράως δὲ καὶ ἡσύχως οἴσει τὸ συμβάν, ἐπεὶ καὶ πρέπον τοῦτο τῷ βουλομένῳ εἶναι μεγαλόφρονι. Σωκράτης γοῦν οὕτω διακείμενος φανερὸς ἦν, ὅς γε δημοσίᾳ λοιδορηθεὶς ὑπ' Ἀριστοφάνους οὐχ ὅπως ἠγανάκτησεν, ἀλλὰ καὶ ἐντυχὼν ἠξίου αὐτὸν εἰ καὶ πρὸς ἄλλο τι τοιοῦτον βούλοιτο χρῆσθαι αὐτῷ. ταχύ γ' ἂν ἐκεῖνος ἐν ὀλίγοις λοιδορούμενος ἐχαλέπηνεν, ὃς οὐδὲ ἐν θεάτρῳ λοιδορηθεὶς ἠγανάκτει. Φωκίων δὲ ὁ χρηστός, τῆς γυναικὸς αὐτοῦ προπηλακισθείσης πρός τινος, τοσοῦτον ἐδέησεν ἐγκαλεῖν τῷ προπηλακίσαντι, ὥστε ἐπεὶ δείσας ἐκεῖνος προσῆλθέ τε καὶ συγγνώμην ἔχειν ἠξίου τὸν Φωκίωνα, φάσκων ἠγνοηκέναι ὅτι ἦν ἐκείνου γυνή, εἰς ἣν ἐπλημμέλει· ἀλλὰ ἥ γε ἐμὴ γυνὴ οὐδέν, ἔφη, ὑπὸ σοῦ πέπονθεν, ἑτέρα δέ τις ἴσως· ὥστε οὐδὲ χρὴ ἐμοὶ σὲ ἀπολογεῖσθαι. καὶ ἄλλους δὲ πολλοὺς ἄνδρας ἔχοιμ' ἂν λέγειν πειραθέντας ὕβρεως, τοὺς μὲν ἔκ τινων γλώσσῃ πλημμεληθέντας, τοὺς δὲ χερσὶν ὥστε αἰκισθῆναι τὸ σῶμα· καὶ οὔτε ἀμυνάμενοι φαίνονται τοὺς πλημμελήσαντας οὔτε ἄλλον τρόπον ἐπεξελθόντες, ἀλλὰ πάνυ πράως ἐνεγκόντες τὴν ἀδικίαν αὐτῶν. καὶ γὰρ δὴ τὸ μὲν σκοπεῖν, ὅπως ἀντιδήξεταί τις τὸν δάκνοντα, καὶ ἀντιποιήσει κακῶς τὸν ὑπάρξαντα, θηρίου τινὸς οὐκ ἀνθρώπου ἐστίν, ὃς οὐδὲ

τοῦτο λογίσασθαι δύναται, ὅτι τὰ πολλὰ τῶν ἁμαρτανομένων ὑπ' ἀγνοίας τε καὶ ἀμαθίας τοῖς ἀνθρώποις ἁμαρτάνεται, ὧν ὁ μεταδιδαχθεὶς εὐθὺς παύεται· τὸ δὲ δέχεσθαι τὰς ἁμαρτίας μὴ ἀγρίως, μηδὲ ἀνήκεστον εἶναι τοῖς πλημμελήσασιν, ἀλλά τι μὲν εἶναι αὐτοῖς ἐλπίδος χρηστῆς, ἡμέρου τρόπου καὶ φιλανθρώπου ἐστί. πόσῳ δὲ κρεῖττον οὕτως ἔχοντα φαίνεσθαι τὸν φιλόσοφον, ὥστε συγγνώμης ἀξιοῦν εἴ τις πλημμελήσειεν εἰς αὐτὸν ἢ δοκεῖν μὲν ἀμύνειν ἑαυτῷ δικαζόμενον καὶ ἐγκαλοῦντα, τῇ δὲ ἀληθείᾳ ἀσχημονεῖν, ἀνακόλουθα τοῖς ἑαυτοῦ λόγοις πράττοντα; εἴ γε λέγει μέν, ὡς οὐκ ἂν ἀδικηθείη ποτὲ ὁ ἀγαθὸς ἀνὴρ ὑπὸ κακοῦ ἀνδρός· ἐγκαλεῖ δ' ὡς ἀδικούμενος ὑπὸ ἀνθρώπων πονηρῶν αὐτὸς ἀξιῶν ἀγαθὸς εἶναι.

17 *Δίωνος.*

Δίωνι τῷ Ἀκαδημιακῷ ἀπὸ συμποσίου ἀναστρέφοντι παρεπόμενος κακῶς τις ἔλεγε καὶ βλασφημίας οὐδὲν ἀπελίμπανεν· ὁ δ' ἡσύχως εἶχεν. ὡς δὲ καὶ ἐπὶ τὴν οἰκίαν ἦλθε, μέλλοντι αὐτῷ εἰσιέναι ὁ λοιδορῶν "τί δαί;" ἔφη· πρὸς ὃν εἶπεν ὁ Δίων οὐδὲ γρῦ.

18 *Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ συμποσίου* (II, 24).

Ὁ δ' αὖ Σωκράτης εἶπεν· Ἀλλὰ πίνειν μέν, ὦ ἄνδρες, κἀμοὶ πάνυ δοκεῖ· τῷ γὰρ ὄντι ὁ οἶνος ἄρδων τὰς ψυχάς, τὰς μὲν λύπας, ὥσπερ ὁ μανδραγόρας τοὺς ἀνθρώπους, κοιμίζει, τὰς δὲ φιλοφροσύνας, ὥσπερ ἔλαιον φλόγα, ἐγείρει. δοκεῖ γε μέντοι μοι καὶ τὰ τῶν ἀνδρῶν συμπόσια ταῦτα πάσχειν, ἅπερ καὶ τὰ τῶν ἐν τῇ γῇ φυομένων. καὶ γὰρ ἐκεῖνα, ὅταν μὲν αὐτὰ ὁ θεὸς ἄγαν ἀθρόως ποτίζῃ, οὐ δύναται ὀρθοῦσθαι οὐδὲ ταῖς αὔραις διαπνεῖσθαι· ὅταν δέ, ὅσῳ ἥδεται, τοσοῦτον πίνῃ, καὶ μάλα ὀρθά τε αὔξεται,

καὶ θάλλοντα ἀφικνεῖται εἰς τὴν καρπογονίαν· οὕτω δὲ καὶ ἡμεῖς ἢν μὲν ἀθρόον τὸ ποτὸν ἐγχεώμεθα, ταχὺ ἡμῶν καὶ τὰ σώματα καὶ αἱ γνῶμαι σφάλλονται, καὶ οὐδὲ ἀναπνεῖν, μὴ ὅτι λέγειν τι δυνησόμεθα· ἢν δὲ ἡμῖν οἱ παῖδες μικραῖς κύλιξι πυκνὰ ἐπιψακάζωσιν, ἵνα καὶ ἐγὼ ἐν Γοργείοις ῥήμασιν εἴπω, οὕτως οὐ βιαζόμενοι μεθύειν ὑπὸ τοῦ οἴνου, ἀλλ' ἀναπειθόμενοι πρὸς τὸ παιγνιωδέστερον ἀφιξόμεθα.

19 *Ἡροδότου* (VII, 160).

Ξεῖνε Σπαρτιῆτα, ὀνείδεα κατιόντα ἀνθρώπῳ φιλέει ἐπανάγειν τὸν θυμόν. σὺ μέντοι ἀποδεξάμενος ὑβρίσματα ἐν τῷ λόγῳ, οὔ μ' ἔπεισας ἀσχήμονα ἐν τῇ ἀμοιβῇ γενέσθαι.

ΠΕΡΙ ΟΡΓΗΣ. Κ.

1 *Θεόγνιδος* (1223).

Οὐδέν, Κύρν', ὀργῆς ἀδικώτερον, ἣ τὸν ἔχοντα
πημαίνει θυμῷ δειλὰ χαριζομένη.

2 *Εὐήνου.*

Πολλάκις ἀνθρώπων ὀργὴ νόον ἐξεκάλυψε
κρυπτόμενον, μανίας πουλὺ χερειότερον.

3 *Μενάνδρου.*

Ὀργῇ παραλογισμός ποτ' οὐδ' εἷς φαίνεται.
αὕτη κρατεῖ νῦν, ἂν δὲ μικρὸν παρακμάσῃ,
κατόψεταί τι μᾶλλον εἰς τὸ συμφέρον.

4 *Φιλήμονος.*

Μαινόμεθα πάντες, ὁπόταν ὀργιζώμεθα.
τὸ γὰρ κατασχεῖν ἐστι τῆς ὀργῆς πόνος.

5 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἅπανθ' ὅσ' ὀργιζόμενος ἄνθρωπος ποιεῖ,
ταῦθ' ὕστερον λάβοις ἂν ἡμαρτημένα.

6 *Μενάνδρου.*

Ἐπίσχες ὀργιζόμενος. Ἀλλὰ βούλομαι.
οὐδεὶς γὰρ ὀργῆς χάριν ἀπείληφεν, πάτερ.

7 *Εὐριπίδου Αἰόλῳ.*

Ὀργῇ γὰρ ὅστις εὐθέως χαρίζεται,
κακῶς τελευτᾷ· πλεῖστα γὰρ σφάλλει βροτούς.

8 *Ἐπιχάρμου.*

Μὴ 'πὶ μικροῖς αὐτὸς αὑτὸν ὀξύθυμον δείκνυε.

9 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἐπιπολάζειν οὔ τι χρὴ τὸν θυμόν, ἀλλὰ τὸν νόον.

10 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐδὲ εἷς οὐδὲν μετ' ὀργῆς κατὰ τρόπον βουλεύεται.

11 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*

Πολλοὺς δ' ὁ θυμὸς ὁ μέγας ὤλεσεν βροτῶν
ἥ τ' ἀξυνεσία, δύο κακὼ τοῖς χρωμένοις.

12 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*

Ὀργῇ δὲ φαύλῃ πόλλ' ἔνεστ' ἀσχήμονα.

12[a] Ἔξω γὰρ ὀργῆς πᾶς ἀνὴρ σοφώτερος (Eur. Hypsip.).

12[b] Πόλλ' ἐστὶν ὀργῆς ἐξ ἀπαιδεύτου κακά.

13 *Αἰσχύλου* (Prom. 378 ?).

Ὀργῆς ματαίας εἰσὶν αἴτιοι λόγοι.

14 *Σοφοκλέους* (Antig. 1028).

Αὐθαδία τοι σκαιότητ' ὀφλισκάνει.

15 *Χαιρήμονος.*

Ἡγοῦ δ' ἐν ὀργῇ πάντα γίγνεσθαι κακά.

16 Τοῦ αὐτοῦ.
Ὀργὴ δὲ πολλοὺς δρᾶν ἀναγκάζει κακά.

17 Εὐριπίδου Φιλοκτήτου.
Ὥσπερ δὲ θνητὸν καὶ τὸ σῶμ' ἡμῶν ἔφυ,
οὕτω προσήκει μηδὲ τὴν ὀργὴν ἔχειν
ἀθάνατον, ὅστις σωφρονεῖν ἐπίσταται.

18 Σωσιφάνους.
Νῦν σοι πρὸς ὄψιν θυμὸς ἡβάτω, γέρον,
νυνὶ δεῖ ὀργὴν ἡνίκ' ἔνδικον λαβεῖν.

19 Μενάνδρου.
Ὅσος τὸ κατέχειν ἐστὶ τὴν ὀργὴν πόνος.

20 Μενάνδρου.
Οὐκ ἔστιν ὀργῆς, ὡς ἔοικε, φάρμακον
ἄλλ' ἢ λόγος σπουδαῖος ἀνθρώπου φίλου.

21 Τοῦ αὐτοῦ.
Εἰ καὶ σφόδρ' ἀλγεῖς, μηδὲν ἠρεθισμένος
πράξῃς προπετῶς· ὀργῆς γὰρ ἀλογίστου κρατεῖν
ἐν ταῖς ταραχαῖς μάλιστα τὸν φρονοῦντα δεῖ.

22 Τοῦ αὐτοῦ.
Τὸ δ' ὀξύθυμον τοῦτο καὶ λίαν πικρὸν
δεῖγμ' ἐστὶν εὐθὺς πᾶσι μικροψυχίας.

23 Θεοκρίτου (I, 15).
Οὐ θέμις, ὦ ποιμάν, τὸ μεσαμβρινόν, οὐ θέμις ἄμμιν,
συρίσδειν· τὸν Πᾶνα δεδοίκαμες· ἦ γὰρ ἀπ' ἄγρας
τανίκα κεκμακὼς ἀμπαύεται, ἔστι δὲ πικρός,
καί οἱ ἀεὶ δριμεῖα χολὰ ποτὶ ῥινὶ κάθηται.

24 Ὁμήρου (Il. α', 103).
Ἀχνύμενος, μένεος δὲ μέγα φρένες ἀμφιμέλαιναι
πίμπλαντ', ὄσσε δέ οἱ πυρὶ λαμπετόωντι ἐίκτην.

25 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*
Τῷ γὰρ βιαίῳ κἀγρίῳ τὸ μαλθακὸν
εἰς ταὐτὸν ἐλθὸν τοῦ λίαν παρείλετο.

26 *Εὐριπίδου.*
Ὀργαὶ γὰρ ἀνθρώποισι συμφορᾶς ὕπο
δειναὶ πλάνος τε καρδίᾳ προσίσταται.

27 *Σοφοκλέους Οἰδίποδος* (Col. 592).
Ὦ μωρέ, θυμὸς ἐν κακοῖς οὐ σύμφορος.

28 *Ἀρχιλόχου.*
Θυμέ, θύμ᾽ ἀμηχάνοισι κήδεσιν κυκώμενε,
ἐνάδευ, δυσμενῶν δ᾽ ἀλέξευ προσβαλὼν ἐναντίον
στέρνον, ἐν δοκοῖσιν ἐχθρῶν πλησίον κατασταθείς,
ἀσφαλέως· καὶ μήτε νικῶν ἀμφάδην ἀγάλλεο,
μήτε νικηθεὶς ἐν οἴκῳ καταπεσὼν ὀδύρεο,
ἀλλὰ χαρτοῖσίν τε χαῖρε καὶ κακοῖσιν ἀσχάλα
μὴ λίην· γίγνωσκε δ᾽ οἷος ῥυσμὸς ἀνθρώπους ἔχει.

29 *Σοφοκλέους ἐν Τυροῖ.*
Πόλλ᾽ ἐν κακοῖσι θυμὸς εὐνηθεὶς ὁρᾷ.

30 *Εὐριπίδου Μηδείας* (109).
Μεγαλόσπλαγχνος δυσκατάπαυστος
ψυχὴ δηχθεῖσα κακοῖσι.

31 *Εὐριπίδου Ὑψιπύλης.*
Ἔξω γὰρ ὀργῆς πᾶς ἀνὴρ σοφώτερος.

32. 33 *Σοφοκλέους Τηρεῖ.*
Ἄνους ἐκεῖνος, αἱ δὲ ἀνούστερ᾽ ἔτι
ἐκεῖνον ἠμύναντο καρτερόν.
ὅστις γὰρ ἐν κακοῖσι θυμωθεὶς βροτῶν
μεῖζον προσάπτει τῆς νόσου τὸ φάρμακον
ἰατρός ἐστιν οὐκ ἐπιστήμων κακῶν.

34 *Νεόφρονος ἐν Μηδείᾳ.*

Εἶεν. τί δράσεις, θυμέ; βούλευσαι καλῶς,
πρὶν ἐξαμαρτεῖν καὶ τὰ προσφιλέστατα
ἔχθιστα θέσθαι. ποῖ ποτ' ἐξῇξας, τάλας;
κάτισχε λῆμα καὶ σθένος θεοστυγές.
καὶ πρὸς τί ταῦτ' ὀδύρομαι, ψυχὴν ἐμὴν
ὁρῶσ' ἔρημον καὶ παρημελημένην
πρὸς ὧν ἐχρῆν ἥκιστα; μαλθακοὶ δὲ δὴ
τοιαῦτα γιγνόμεσθα πάσχοντες κακά;
οὐ μὴ προδώσεις, θυμέ, σαυτὸν ἐν κακοῖς.
οἴμοι, δέδοκται· παῖδες, ἐκτὸς ὀμμάτων
ἀπέλθετ'· ἤδη γάρ με φοινία μέγαν
δέδυκε λύσσα θυμόν. ὦ χέρες, χέρες,
πρὸς οἷον ἔργον ἐξοπλιζόμεσθα· φεῦ,
τάλαινα τόλμης, ἣ πολὺν πόνον βραχεῖ
διαφθεροῦσα τὸν ἐμὸν ἔρχομαι χρόνῳ.

35 *Εὐριπίδου Μηδείας* (446).

Οὐ νῦν κατεῖδον πρῶτον, ἀλλὰ πολλάκις,
τραχεῖαν ὀργὴν ὡς ἀμήχανον κακόν.

36 *Ἐν ταυτῷ* (520).

Δεινή τις ὀργὴ καὶ δυσίατος πέλει,
ὅταν φίλοι φίλοισι συμβάλωσ' ἔριν.

37 *Εὐριπίδου Τηλέφου.*

Ὥρα σε θυμοῦ κρείσσονα γνώμην ἔχειν.

38 *Θυμὸς δὲ κρείσσων τῶν ἐμῶν βουλευμάτων,*
ὅσπερ μεγίστων αἴτιος κακῶν βροτοῖς. **Eur. Med. 1079.**

39 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὁ θυμὸς ἀλγῶν ἀσφάλειαν οὐκ ἔχει.

40 *Ἐν τοῖς κακοῖσι συγγένει' ὅταν παρῇ*
τραχεῖα κὠξύθυμος, ἀμαθίαν ἔχει.

41 *Ὁμήρου* (Il. ι', 496).
Ἀλλ' Ἀχιλεῦ, δάμασον θυμὸν μέγαν, οὐδέ τι σὲ χρὴ
νηλεὲς ἦτορ ἔχειν. στρεπτοὶ δέ τε καὶ θεοὶ αὐτοί.

42 *Τοῦ αὐτοῦ* (Il. ο', 201).
Οὕτω γὰρ δή τοι, γαιήοχε κυανοχαῖτα,
τόνδε φέρω Διὶ μῦθον ἀπηνέα τε κρατερόν τε;
ἤ τι μεταστρέψεις; στρεπταὶ δέ τε φρένες ἐσθλῶν.

43 *Πλάτωνος.*
Πλάτων ὀργισθείς ποτε τινὶ τῶν δούλων χάριν ἔχειν τοῖς θεοῖς ἐκέλευεν αὐτὸν ὅτι ὀργίζεται, κολασθῆναι γὰρ ἂν πάντως εἰ μὴ ὠργίζετο.

44 *Ἀντιφῶντος.*
Οὐκ ἔστιν ὅ τι ἂν ὀργιζόμενος ἄνθρωπος εὖ γνοίη· αὐτὸ γὰρ ὃ βουλεύεται τὴν γνώμην διαφθείρει τοῦ ἀνθρώπου.

45 *Ἡροδότου* (VII, 160).
Τὰ ὀνείδεα κατιόντα ἀνθρώπῳ φιλέει ἐπανάγειν τὸν θυμόν.

46 *Τοῦ αὐτοῦ* (VII, 39).
Ὡς ἐν τοῖσιν ὠσὶ τῶν ἀνθρώπων οἰκέει ὁ θυμός, χρηστὰ μὲν ἀκούσας, τέρψιος ἐμπίπλη τὸ σῶμα· ὑπεναντία δὲ τουτέοισιν ἀκούσας, ἀνοιδαίνει.

47 *Ἀριστοτέλους.*
Ἢ οὐχ ὁρᾷς, ὅτι τῶν ἐν ὀργῇ διαπραττομένων ἁπάντων ὁ λογισμὸς ἀποδημεῖ φεύγων τὸν θυμὸν ὡς πικρὸν τύραννον;

48 *Ἀρριανοῦ.*
Μεγαλόθυμοι εἰσί τινες πράως, ἡσυχῇ καὶ οἷον ἀοργήτως πράττοντες ὅσα καὶ οἱ σφόδρα τῷ θυμῷ φερόμενοι. φυλακτέον οὖν καὶ τὸ τούτων ἀβλέπτημα,

ὡς πολὺ χεῖρον ὂν τοῦ διατεινόμενον ὀργίζεσθαι. οὗτοι μὲν γὰρ ταχὺ κόρον τῆς τιμωρίας λαμβάνουσιν, οἳ δὲ εἰς μακρὸν παρατείνουσιν ὡς οἱ λεπτῶς πυρέττοντες.

49 *Ἀπολλώνιος Μακεδόνι.*
Τῆς ὀξυθυμίας τὸ ἄνθος μανία.

50 *Ὁ αὐτὸς Ἀριστοκλεῖ.*
Τὸ τῆς ὀργῆς πάθος μὴ καθομιλούμενον μηδὲ θεραπευόμενον φυσικὴ νόσος γίνεται.

51 *Ἀπολλώνιος Δημοκράτει.*
Ὁ ὑπὲρ μικρῶν ἁμαρτημάτων ἀνυπερβλήτως ὀργιζόμενος οὐκ ἐᾷ διαγνῶναι τὸν ἁμαρτάνοντα πότε ἔλαττον καὶ πότε μεῖζον ἠδίκησεν.

52 *Διονυσίου Ἁλικαρνασέως* (Plut. Mor. 31 a).
Ὅτι μεγάλου καὶ δοκοῦντος εἶναι καὶ ὄντος τοῦ κρατεῖν ὀργῆς ἡ πρόνοια καὶ φυλακὴ τοῦ μὴ περιπεσεῖν μεῖζον.

53 *Σωτίωνος ἐκ τοῦ περὶ ὀργῆς β΄.*
Τοῖς δὲ σοφοῖς ἀντὶ ὀργῆς Ἡρακλείτῳ μὲν δάκρυα, Δημοκρίτῳ δὲ γέλως ἐπῄει.

54 Ὥσπερ δὲ πλοῖα γενναῖα οὐχ ὅσα ἐν εὐδίᾳ πλεῖ, ἀλλ᾽ ὅσα πρὸς χειμῶνα ἀντέχει καὶ σώζεται, οὕτω καὶ ἄνθρωποι ὀργῇ καὶ κινήσει ἀντέχοντες μεγάλοι καὶ ἀνδρεῖοι. ὑποκριταῖς μὲν οὖν καὶ μὴ ὀργιζομένοις ὑποκρινομένοις ὀργὴν συνήνεγκεν, οἱ δὲ σπουδαῖοι ἄνδρες, οὐδ᾽ ἐὰν ὡς ἀληθῶς ὀργίζωνται, οὕτω χρῶνται τῷ σχήματι.

55 *Ἀριστοτέλους.*
Ὥσπερ ὁ καπνὸς ἐπιδάκνων τὰς ὄψεις οὐκ ἐᾷ βλέπειν τὸ κείμενον ἐν τοῖς ποσίν, οὕτως ὁ θυμὸς ἐπαι-

ρόμενος τῷ λογισμῷ ἐπισκοτεῖ, καὶ τὸ συμβησόμενον ἐξ αὐτοῦ ἄτοπον οὐκ ἐφίησι τῇ διανοίᾳ προλαβεῖν.

56 Δημοκρίτου.

Θυμῷ μάχεσθαι μὲν χαλεπόν, ἀνδρὸς δὲ τὸ κρατέειν εὐλογίστου.

57 Πλάτωνος.

Πλάτων ὀργιζόμενος ποτὲ τῷ οἰκέτῃ ἐπιστάντος Ξενοκράτους "λαβών" ἔφη "τοῦτον μαστίγωσον· ἐγὼ γὰρ ὀργίζομαι."

58 Πλουτάρχου (Mor. 458 f).

Ἀριστοτέλης φησὶ Σατύρου τοῦ Σαμίου τοὺς φίλους φράξαι τὰ ὦτα κηρῷ δίκην ἔχοντος, ὅπως μὴ συγχέῃ τὸ πρᾶγμα διὰ θυμὸν ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν λοιδορούμενος.

59 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ διαβολῆς.

Οἱ νεώνητοι δοῦλοι οὐ πυνθάνονται εἰ δεισιδαίμων ἢ φθονερὸς ὁ δεσπότης, ἀλλ' εἰ ὀργίλος.

60 Ῥούφου ἐκ τῶν Ἐπικτήτου περὶ φιλίας.

Ἀλλὰ παντὸς μᾶλλον τῆς μὲν φύσεως ἐκεῖνο τὸ ἔργον, συνδῆσαι καὶ συναρμόσαι τὴν ὁρμὴν τῆς τοῦ προσήκοντος καὶ ὠφελίμου φαντασίας.

61 Τοῦ αὐτοῦ.

Τὸ δὲ οἴεσθαι εὐκαταφρονήτους τοῖς ἄλλοις ἔσεσθαι, ἐὰν μὴ τοὺς πρώτους ἐχθροὺς παντὶ τρόπῳ βλάψωμεν, σφόδρα ἀγεννῶν καὶ ἀνοήτων ἀνθρώπων. φαμὲν γὰρ τὸν εὐκαταφρόνητον νοεῖσθαι μὲν καὶ κατὰ τὸ ἀδύνατον εἶναι βλάψαι· ἀλλὰ πολὺ μᾶλλον νοεῖται κατὰ τὸ ἀδύνατον εἶναι ὠφελεῖν.

62 Δημοκρίτου.

Φιλονεικίη πᾶσα ἀνόητος· τὸ γὰρ κατὰ τοῦ δυσ-

μενοῦς βλαβερὸν θεωρεῦσα τὸ ἴδιον συμφέρον οὐ βλέπει.

63 Ἀριστίππου.

Ἀρίστιππος ὁ Κυρηναῖος φιλόσοφος θεασάμενός τινα ὀργιζόμενον καὶ διὰ τῶν λόγων χαλεπαίνοντα ἔφη "μὴ τοὺς λόγους δι' ὀργῆς ἄγωμεν, ἀλλὰ τὴν ὀργὴν διὰ τῶν λόγων καταπαύωμεν."

64 Ναυκράτου.

Ναυκράτης ὁ σοφὸς τοὺς ὀξυθύμους ἔφη παραπλήσιον τοῖς λύχνοις πάσχειν· καὶ γὰρ τούτους πλείονι ἐλαίῳ ἐκκαίεσθαι.

65 Ἀριστοτέλους.

Ὁ θυμός ἐστι πάθος θηριῶδες μὲν τῇ διαθέσει, συνεχὲς δὲ τῇ λήψει, σκληρὸν δὲ καὶ βίαιον τῇ δυνάμει, φόνων αἴτιον, συμφορᾶς σύμμαχον, βλάβης συνεργὸν καὶ ἀτιμίας, χρημάτων ἀπώλεια, ἔτι δὲ καὶ φθορᾶς ἀρχηγόν.

66 Ἀντιφῶντος.

Ὅστις δὲ ἰὼν ἐπὶ τὸν πλησίον κακῶς ποιήσων δειμαίνει μὴ ἃ θέλει ποιῆσαι ἁμαρτὼν τούτων ἃ μὴ θέλει ἀπενέγκηται, σωφρονέστερος. ἐν ᾧ γὰρ δειμαίνει μέλλει, ἐν ᾧ δὲ μέλλει πολλάκις ὁ διὰ μέσου χρόνος ἀπέστρεψε τὸν νοῦν τῶν θελημάτων, καὶ ἐν μὲν τῷ γεγενῆσθαι οὐκ ἔνεστιν, ἐν δὲ τῷ μέλλειν ἐνδέχεται γενέσθαι. ὅστις δὲ δράσειν μὲν οἴεται τοὺς πέλας κακῶς, πείσεσθαι δ' οὔ, οὐ σωφρονεῖ. ἐλπίδες δ' οὐ πανταχοῦ ἀγαθόν· πολλοὺς γὰρ τοιαῦται ἐλπίδες κατέβαλον εἰς ἀνηκέστους συμφοράς, ἃ δ' ἐδόκουν τοὺς πέλας ποιήσειν παθόντες ταῦτα ἀνεφάνησαν αὐτοί. σωφροσύνην δὲ ἀνδρὸς οὐκ ἂν ἄλλος ὀρθότερόν

τις κρίνειεν ἢ ὅστις τοῦ θυμοῦ ταῖς παραχρῆμα ἡδοναῖς ἐμφράσσει αὐτὸς ἑαυτὸν κρατεῖν τε καὶ νικᾶν ἠδυνήθη αὐτὸς ἑαυτόν. ὃς δὲ θέλει χαρίσασθαι τῷ θυμῷ, παραχρῆμα θέλει τὰ κακίω ἀντὶ τῶν ἀμεινόνων.

67 Ἐπικτήτου.

Ὅτῳ μετὰ ἀνατάσεως καὶ ἀπειλῆς ἐπιχειρεῖς, μέμνησο προλέγειν ὅτι ἥμερος εἶ, καὶ οὐδὲν ἄγριον δράσας ἀμετανόητος καὶ ἀνεύθυνος διαγενήσῃ.

68 Κάτωνος πρεσβυτέρου.

Τὸν ὀργιζόμενον ἐνόμιζε τοῦ μαινομένου χρόνῳ διαφέρειν.

69 Ἀρίστωνος.

Τὴν κακολογίαν ἡ ὀργὴ φαίνεται ἀπογεννῶσα ὥστε ἡ μήτηρ οὐκ ἀστεῖα.

70 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ ὀργῆς.

Ὅσα δὲ ὀργῇ χρώμενοι πράττουσιν οἱ ἄνθρωποι, ταῦτα ἀνάγκη τυφλὰ εἶναι καὶ ἀνόητα καὶ τοῦ παντὸς ἁμαρτάνειν. οὐ γὰρ οἷόν τε ὀργῇ χρώμενον λογισμῷ χρήσασθαι· τὸ δὲ ἄνευ λογισμοῦ ποιούμενον πᾶν ἄτεχνόν τε καὶ διεστραμμένον. λόγον οὖν ἡγεμόνα χρὴ ποιησάμενον οὕτως ἐπιχειρεῖν τοῖς κατὰ τὸν βίον ἔργοις, τὰς ἑκάστοτε προσπιπτούσας ὀργὰς διωθούμενον καὶ διανεύοντα, ὥσπερ οἱ κυβερνῆται τὰ κύματα προσφερόμενα. ἔστι γοῦν οὐκ ἔλαττον τὸ δέος ὀργῆς ἀντιπρῴρου κυλινδομένης αὐτόν τε καὶ σύμπαντα οἶκον ἄρδην ἀπολέσαι καὶ ἀνατρέψαι μὴ διαπλεύσαντα δεξιῶς. οὐ μὴν ἀλλ᾽ ἐπιμελείας εἰς αὐτὰ δεῖ καὶ μελέτης, ᾗ καὶ μάλιστα ἁλίσκονται κατ᾽ ἄκρας οἱ παραδεξάμενοι τὸν θυμὸν ὡς σύμμαχον ἀρετῆς, ἀπολαύον-

τες ὅσον αὐτοῦ χρήσιμόν ἐστιν, ἔν τε τῷ πολέμῳ καὶ νὴ Δία ἐν πολιτείαις, τὸ πολὺ δὲ αὐτοῦ καὶ τὸ ἐπιπόλαιον ἐκκρίνειν καὶ ἐκβάλλειν τῆς ψυχῆς, ὅπερ ὀργή τε καὶ πικρία δι᾽ ὀξυθυμίαν λέγεται, νομίσματα ἥκιστα ταῖς ἀνδρείαις ψυχαῖς πρέποντα. τίς οὖν ἐν ἡλικίᾳ τούτων γίγνεται μελέτη; ἐμοὶ μὲν δοκεῖ μάλιστ᾽ ἂν ὧδε γίγνεσθαι πόρρωθεν ἡμῶν προμελετώντων καὶ προαπλούντων πλεῖστον οἷον ἐν οἰκέταις τε καὶ πρὸς γυναῖκας τὰς γαμετάς. ὁ γὰρ οἴκοι πρᾶος καὶ δημοσίᾳ πρᾶος πολὺ μᾶλλον ἔσται, τοιοῦτος ἔνδοθεν καὶ ὑπὸ τῶν οἴκοι πεποιημένος αὐτῷ τῆς αὑτοῦ ψυχῆς εἶναι ἀγαθός.

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΓΝΩΘΙ ΣΑΥΤΟΝ. ΚΑ.

1 *Φιλήμονος.*

Ἄνθρωπος ὤν, τοῦτ᾽ ἴσθι καὶ μέμνησ᾽ ἀεί.

2 *Μενάνδρου Κωνειαζομένων.*

Τὸ γνῶθι σαυτὸν ἔστιν ἂν τὰ πράγματα
ἴδῃς τὰ σαυτοῦ καὶ τί σοὶ ποιητέον.

3 *Διφίλου.*

Ἂν γνῷς τί ἐστ᾽ ἄνθρωπος, ἡδίων ἔσῃ.

4 *Ἀντιφάνους.*

Εἰ θνητὸς εἶ, βέλτιστε, θνητὰ καὶ φρόνει.

5 *Μενάνδρου Θρασυλέοντος.*

Κατὰ πόλλ᾽ ἄρ᾽ ἐστὶν οὐ καλῶς εἰρημένον
τὸ γνῶθι σαυτόν· χρησιμώτερον γὰρ ἦν
τὸ γνῶθι τοὺς ἄλλους.

6 *Ἐκ τῆς Αἰλιανοῦ συμμίκτης ἱστορίας* (VIII, 15).

Ἐν Χαιρωνείᾳ τοὺς Ἀθηναίους ἡνίκα ἐνίκησεν ὁ Φίλιππος ἐπαρθεὶς τῇ εὐπραγίᾳ, ὅμως λογισμοῦ ἐκράτησε καὶ οὐχ ὕβρισε, καὶ διὰ ταῦτα ᾤετο δεῖν αὐτὸν ὑπομιμνήσκεσθαι ὑπό τινος τῶν παίδων ἕωθεν, ὅτι ἄνθρωπός ἐστιν.

7 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Ἡράκλειτος νέος ὢν πάντων γέγονε σοφώτερος, ὅτι ᾔδει ἑαυτὸν μηδὲν εἰδότα.

8 *Δημώνακτος.*

Δημῶναξ ἐρωτηθεὶς πότε ἤρξατο φιλοσοφεῖν "ὅτε καταγιγνώσκειν" ἔφη "ἐμαυτοῦ ἠρξάμην."

9 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς διὰ τί οὐ συγγράφει "ὅτι" εἶπεν "ὁρῶ τὰ χαρτία πολὺ τῶν γραφησομένων τιμιώτερα."

10 *Θεοκρίτου.*

Θεόκριτος ἐρωτηθεὶς διὰ τί οὐ συγγράφει "ὅτι" εἶπεν "ὡς μὲν βούλομαι, οὐ δύναμαι· ὡς δὲ δύναμαι, οὐ βούλομαι."

11 *Βίαντος.*

Θεώρει ὥσπερ ἐν κατόπτρῳ τὰς σαυτοῦ πράξεις, ἵνα τὰς μὲν καλὰς ἐπικοσμῇς τὰς δὲ αἰσχρὰς καλύπτῃς.

12 *Παροιμία.*

Γνῶθι σαυτὸν ὡς παροιμία λαμβάνεται μαρτυρεῖ Θεόφραστος ἐν τῷ περὶ παροιμιῶν. οἱ πολλοὶ δὲ Χείλωνος εἶναι τὸ ἀπόφθεγμα, Κλέαρχος δὲ ὑπὸ τοῦ θεοῦ λεχθῆναι Χείλωνι.

13 *Χείλωνος.*

Χείλων ἐρωτηθεὶς τί χαλεπώτατον "τὸ γινώσκειν

ἑαυτὸν" ἔφη· πολλὰ γὰρ ὑπὸ φιλαυτίας ἕκαστον ἑαυτῷ προστιθέναι.

14 *Βίαντος.*

Τὸ δὲ γνῶθι σαυτὸν χρήσιμον εἰς νουθεσίαν τῶν ἀλαζόνων, οἳ ὑπὲρ τὴν ἑαυτῶν δύναμιν φλυαροῦσιν.

15 *Ἀλεξάνδρου.*

Ἀλέξανδρος νοσήσας μακρὰν νόσον, ὡς ἀνερρώσθη, οὐδὲν ἔφη διατεθῆναι χεῖρον· "ὑπέμνησε γὰρ ἡμᾶς ἡ νόσος μὴ μέγα φρονεῖν ὡς θνητοὺς ὄντας."

16 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ εὐθυμίας* (472 b).

Καὶ μὴν οἶνοί τε καὶ σαρκῶν ἐμφορήσεις σῶμα μὲν ἰσχυρὸν ποιοῦσι καὶ ῥωμαλέον, ψυχὴν δὲ ἀσθενῆ· καὶ χρημάτων ἐπιμέλεια μὲν συνεχὴς καὶ τήρησις αὔξει πλοῦτον, ἀνυπεροψία δὲ καὶ σωφροσύνη μέγα πρὸς φιλοσοφίαν ἐφόδιον. ὅθεν οὐ πάντα πάντων ἐστίν, ἀλλὰ δεῖ τῷ Πυθικῷ γράμματι πειθόμενον αὐτὸν καταμαθεῖν, εἶτα χρῆσθαι πρὸς ἓν ὃ πέφυκε, καὶ μὴ πρὸς ἄλλον ἄλλοτε βίου ζῆλον ἕλκειν καὶ παραβιάζεσθαι τὴν φύσιν.

17 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (c. 6).

Ἐπὶ μηδενὶ ἐπαρθῇς ἀλλοτρίῳ προτερήματι. εἰ ὁ ἵππος ἔλεγεν ἐπαιρόμενος ὅτι καλός εἰμι, ἀνεκτὸν ἂν ἦν· σὺ δ' ὅταν λέγῃς ὅτι ἵππον καλὸν ἔχω, ἴσθι ὅτι ἐφ' ἵππῳ ἀγαθῷ μέγα φρονεῖς. τί οὖν ἐστι σόν; χρῆσις φαντασιῶν, ἣν ὅταν κατὰ φύσιν ἔχῃς, τότε ἐπάρθητι· τότε γὰρ ἐπὶ τῷ σῷ πλεονεκτήματι ἐπαρθήσῃ.

18 *Δημοσθένους ἐν τῷ πρὸς Λεπτίνην* (506, 14).

Καὶ τὰ ἀγαθὰ μὲν προσδοκᾶν καὶ τοῖς θεοῖς εὔχεσθαι διδόναι, πάντα δ' ἀνθρώπινα ἡγεῖσθαι.

19 *Ἐν ταυτῷ* (ib. 25).

Ἀλλ' οἶμαι τὸ μέλλον ἅπασιν ἀνθρώποις ἄδηλον, καὶ μικροὶ καιροὶ μεγάλων πραγμάτων αἴτιοι γίγνονται· διὸ δεῖ μετριάζειν ἐν ταῖς εὐπραξίαις καὶ προορωμένους τὸ μέλλον φαίνεσθαι.

20 *Πλάτωνος ἐκ τῶν ἀντεραστῶν* (137 e).

Τί δ', ἐπειδὰν ἄνθρωπος ὤν τις ἀγνοῇ τοὺς χρηστοὺς καὶ τοὺς μοχθηροὺς ἀνθρώπους, ἆρ' οὐχ ἑαυτὸν ἀγνοεῖ πότερον χρηστός ἐστιν ἢ μοχθηρός, ἐπειδὴ καὶ αὐτὸς ἄνθρωπός ἐστι; Συνεχώρει. Τὸ δὲ αὑτὸν ἀγνοεῖν σωφρονεῖν ἢ οὐ σωφρονεῖν ἐστιν; Οὐ σωφρονεῖν. Τὸ ἑαυτὸν ἄρα γινώσκειν ἔστι σωφρονεῖν; Φημί, ἔφη. Τοῦτο ἄρα, ὡς ἔοικε, καὶ τὸ ἐν Δελφοῖς γράμμα παρακελεύεται, σωφροσύνην ἀσκεῖν καὶ δικαιοσύνην. Ἔοικε. Τῇ αὐτῇ δὲ ταύτῃ καὶ κολάζειν ὀρθῶς ἐπιστάμεθα; Φημί. Οὐκ οὖν ᾗ μὲν κολάζειν ὀρθῶς ἐπιστάμεθα, δικαιοσύνη αὕτη ἐστίν, ᾗ δὲ διαγιγνώσκειν καὶ ἑαυτὸν καὶ ἄλλους, σωφροσύνη; Ἔοικεν, ἔφη. Ταυτὸν ἄρα ἐστὶ δικαιοσύνη σωφροσύνῃ; Φαίνεται. Καὶ μὴν οὕτω γε καὶ αἱ πόλεις εὖ οἰκοῦνται, ὅταν οἱ ἀδικοῦντες δίκην διδῶσιν. Ἀληθῆ λέγεις.

21 *Ξενοφῶντος ἐν δ'* (2, 24) *ἀπομνημονευμάτων.*

Καὶ ὁ Σωκράτης, Εἰπέ μοι, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, εἰς Δελφοὺς ἤδη πώποτε ἀφίκου; Καὶ δίς γε, νὴ Δία, ἔφη. Κατέμαθες οὖν πρὸς τῷ ναῷ που γεγραμμένον τὸ γνῶθι σαυτόν; Ἔγωγε. Πότερον οὖν οὐδέν σοι τοῦ γράμματος ἐμέλησεν; ἢ προσέσχες τε καὶ

ἐπεχείρησας σεαυτὸν ἐπισκοπεῖν ὅστις εἴης; Μὰ Δί' οὐ δῆτα, ἔφη· καὶ γὰρ δὴ τοῦτο πάνυ ᾤμην εἰδέναι, σχολῇ γὰρ ἂν ἄλλο τι ᾔδειν, εἴ γε μηδ' ἐμαυτὸν ἐγίνωσκον. Πότερα δέ σοι δοκεῖ γιγνώσκειν ἑαυτόν, ὅστις τοὔνομα μόνον τὸ ἑαυτοῦ οἶδεν, ἢ ὅστις ὥσπερ οἱ τοὺς ἵππους ὠνούμενοι οὐ πρότερον οἴονται γιγνώσκειν ὃν ἂν βούλωνται γνῶναι, πρὶν ἂν ἐπισκέψωνται πότερον εὐπειθής ἐστιν ἢ δυσπειθής, καὶ πότερον ἰσχυρὸς ἢ ἀσθενής, καὶ πότερον ταχὺς ἢ βραδύς, καὶ τἄλλα τὰ πρὸς τὴν τοῦ ἵππου χρείαν ἐπιτήδειά τε καὶ ἀνεπιτήδεια, ὅπως ἔχει· οὕτως ὁ ἑαυτὸν ἐπισκεψάμενος ὁποῖός ἐστι πρὸς τὴν ἀνθρωπίνην χρείαν, ἔγνωκε τὴν ἑαυτοῦ δύναμιν; Οὕτως ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη, ὁ μὴ εἰδὼς τὴν ἑαυτοῦ δύναμιν, ἀγνοεῖν ἑαυτόν. Ἐκεῖνο δὲ οὐ φανερόν, ἔφη, ὅτι διὰ μὲν τὸ εἰδέναι ἑαυτοὺς πλεῖστα ἀγαθὰ ἴσχουσιν ἄνθρωποι, διὰ δὲ τὸ ἐψεῦσθαι ἑαυτῶν πλεῖστα κακά; οἱ μὲν γὰρ εἰδότες ἑαυτούς, τὰ ἐπιτήδεια ἑαυτοῖς ἴσασι καὶ διαγιγνώσκουσιν ἅ τε δύνανται καὶ ἃ μή. καὶ ἃ μὲν ἐπίστανται πράττοντες, πορίζονταί τε ὧν δέονται, καὶ εὖ πράττουσιν· ὧν δὲ μὴ ἐπίστανται ἀπεχόμενοι, ἀναμάρτητοι γίγνονται καὶ διαφεύγουσι τὸ κακῶς πράττειν· διὰ τὸ αὐτὸ δὲ καὶ τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους δυνάμενοι δοκιμάζειν καὶ διὰ τῆς τῶν ἄλλων χρείας τά τε ἀγαθὰ πορίζονται καὶ τὰ κακὰ φυλάττονται. οἱ δὲ μὴ εἰδότες, ἀλλὰ διεψευσμένοι τῆς αὐτῶν δυνάμεως, πρός τε τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους καὶ τἄλλα ἀνθρώπινα πράγματα ὁμοίως διάκεινται, καὶ οὔτε ὧν δέονται ἴσασιν οὔτε ὅ τι πράττουσιν οὔτε οἷς χρῶνται, ἀλλὰ πάντων τούτων διαμαρτάνοντες, τῶν τε ἀγαθῶν ἀποτυγχάνουσι καὶ τοῖς κακοῖς περιπίπτουσι. καὶ οἱ μὲν εἰδότες ὅ τι ποιοῦσιν, ἐπιτυγχάνοντες ὧν πράττουσιν,

ἔνδοξοί τε καὶ τίμιοι γίγνονται· καὶ οἵ τε ὅμοιοι τούτοις ἡδέως χρῶνται οἵ τε ἀποτυγχάνοντες τῶν πραγμάτων ἐπιθυμοῦσι τούτους ὑπὲρ αὐτῶν βουλεύεσθαι, καὶ προΐστασθαί τε ἑαυτῶν τούτους καὶ ἐλπίδας τῶν ἀγαθῶν ἐν τούτοις ἔχουσι καὶ διὰ ταῦτα πάντων μάλιστα τούτους ἀγαπῶσιν. οἱ δὲ μὴ εἰδότες τί ποιοῦσι κακῶς τε αἱρούμενοι καὶ οἷς ἂν ἐπιχειρήσωσιν ἀποτυγχάνοντες, οὐ μόνον ἐν αὐτοῖς τούτοις ζημιοῦνταί τε καὶ κολάζονται, ἀλλὰ καὶ ἀδοξοῦσι διὰ ταῦτα καὶ καταγέλαστοι γίγνονται, καὶ καταφρονούμενοι καὶ ἀτιμαζόμενοι ζῶσιν· ὁρᾷς δὲ καὶ τῶν πόλεων, ὅτι ὅσαι ἂν ἀγνοήσασαι τὴν ἑαυτῶν δύναμιν κρείττοσι πολεμήσωσιν, αἱ μὲν ἀνάστατοι γίγνονται, αἱ δὲ ἐξ ἐλευθέρων δοῦλαι; Καὶ ὁ Εὐθύδημος, ὡς πάνυ μοι δοκοῦν, ὦ Σώκρατες, ἔφη, περὶ πολλοῦ ποιητέον εἶναι τὸ ἑαυτὸν γιγνώσκειν, οὕτως ἴσθι· ὁπόθεν δὲ χρὴ ἄρξασθαι ἐπισκοπεῖν ἑαυτόν, τοῦτο πρὸς σὲ ἀποβλέπω εἴ μοι ἐθελήσαις ἂν ἐξηγήσασθαι. Οὐκ οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, τὰ μὲν ἀγαθὰ καὶ τὰ κακὰ ὁποῖά ἐστι, πάντως που γινώσκεις; Νὴ Δί', ἔφη· εἰ γὰρ μηδὲ ταῦτα οἶδα, καὶ τῶν ἀνδραπόδων φαυλότερος ἂν εἴην. Ἴθι δή, ἔφη, καὶ ἐμοὶ ἐξήγησαι ταῦτα. Ἀλλ' οὐ χαλεπόν, ἔφη· πρῶτον μὲν γὰρ τὸ ὑγιαίνειν ἀγαθὸν εἶναι νομίζω· τὸ δὲ νοσεῖν κακόν. ἔπειτα τὰ αἴτια ἑκατέρου αὐτῶν, καὶ ποτά, καὶ βρωτά, καὶ ἐπιτηδεύματα, τὰ μὲν πρὸς τὸ ὑγιαίνειν φέροντα, ἀγαθά· τὰ δὲ πρὸς τὸ νοσεῖν, κακά. Οὐκ οὖν, ἔφη, καὶ τὸ ὑγιαίνειν καὶ τὸ νοσεῖν, ὅταν μὲν ἀγαθοῦ τινος αἴτια γίγνηται, ἀγαθὰ ἂν εἴη· ὅταν δὲ κακοῦ, κακά; Πότε δ' ἄν, ἔφη, τὸ μὲν ὑγιαίνειν κακοῦ αἴτιον γένοιτο, τὸ δὲ νοσεῖν ἀγαθοῦ; Ὅταν νὴ Δί', ἔφη, στρατιᾶς τε αἰσχρᾶς καὶ ναυτιλίας βλαβερᾶς καὶ ἄλλων

πολλῶν τοιούτων, οἱ μὲν διὰ ῥώμην μετασχόντες ἀπόλωνται, οἱ δὲ δι' ἀσθένειαν ἀπολειφθέντες σωθῶσιν. Ἀληθῆ λέγεις. Ἀλλ' ὁρᾷς, ἔφη, ὅτι καὶ τῶν ὠφελίμων οἱ μὲν διὰ ῥώμην μετέχουσιν, οἱ δὲ δι' ἀσθένειαν ἀπολείπονται. Τὰ οὖν, ἔφη, ποτὲ μὲν ὠφελοῦντα, ποτὲ δὲ βλάπτοντα, τί μᾶλλον ἀγαθὰ ἢ κακά ἐστιν; Οὐδὲν μὰ Δία φαίνεται κατά γε τοῦτον τὸν λόγον. Ἀλλ' ἥ γε τοι σοφία, ὦ Σώκρατες, ἀναμφισβητήτως ἀγαθόν ἐστιν· ποῖον γὰρ ἄν τις πρᾶγμα οὐ βέλτιον πράττοι σοφὸς ὢν ἢ ἀμαθής; Τί δαί, τὸν Δαίδαλον, ἔφη, οὐκ ἀκήκοας, ὅτι ληφθεὶς ὑπὸ Μίνω διὰ τὴν σοφίαν ἠναγκάζετο ἐκείνῳ δουλεύειν, καὶ τῆς τε πατρίδος ἅμα καὶ τῆς ἐλευθερίας ἐστερήθη, καὶ ἐπιχειρῶν ἀποδιδράσκειν μετὰ τοῦ υἱοῦ, τόν τε παῖδα ἀπώλεσε, καὶ αὐτὸς οὐκ ἠδυνήθη σωθῆναι, ἀλλ' ἀπενεχθεὶς εἰς τοὺς βαρβάρους, πάλιν ἐκεῖ ἐδούλευε; Λέγεται νὴ Δί', ἔφη, ταῦτα. Τὰ δὲ Παλαμήδους οὐκ ἀκήκοας πάθη; τοῦτον γὰρ δὴ πάντες ὑμνοῦσιν ὡς διὰ σοφίαν φθονηθεὶς ὑπὸ τοῦ Ὀδυσσέως ἀπόλλυται. Λέγεται καὶ ταῦτα, ἔφη. Ἄλλους δὲ πόσους οἴει διὰ σοφίαν ἀνασπάστους πρὸς βασιλέα γεγονέναι καὶ ἐκεῖ δουλεύειν; Κινδυνεύει, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ἀναμφιλογώτατον ἀγαθὸν εἶναι τὸ εὐδαιμονεῖν. Εἴ γε μή τις αὐτό, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἐξ ἀμφιλόγων ἀγαθῶν συντεθῇ. Τί δ' ἄν, ἔφη, τῶν εὐδαιμονικῶν ἀμφίλογον εἴη; Οὐδέν, ἔφη, εἴ γε μὴ προσθήσομεν αὐτῷ κάλλος ἢ ἰσχύν, ἢ πλοῦτον ἢ δόξαν, ἢ καί τι ἄλλο τῶν τοιούτων. Ἀλλὰ νὴ Δία προσθήσομεν, ἔφη. Πῶς γὰρ ἄν τις ἄνευ τούτων εὐδαίμων εἴη; Νὴ Δί', ἔφη, προσθήσομεν ἄρα ἐξ ὧν πολλὰ καὶ χαλεπὰ συμβαίνει τοῖς ἀνθρώποις· πολλοὶ μὲν γὰρ διὰ τὸ κάλλος ὑπὸ τῶν ἐπὶ τοῖς ὡραίοις παρακεκινημένων δια-

φθείρονται· πολλοὶ δὲ διὰ τὴν ἰσχὺν μείζοσιν ἔργοις ἐπιχειροῦντες οὐ μικροῖς κακοῖς περιπίπτουσι, πολλοὶ δὲ διὰ τὸν πλοῦτον διαθρυπτόμενοί τε καὶ ἐπιβουλευόμενοι ἀπόλλυνται· πολλοὶ δὲ διὰ δόξαν καὶ πολιτικὴν δύναμιν μεγάλα κακὰ πεπόνθασιν. Ἀλλὰ μήν, ἔφη, εἴ γε μηδὲ τὸ εὐδαιμονεῖν ἐπαινῶν ὀρθῶς λέγω, ὁμολογῶ μηδὲ ὅτι πρὸς τοὺς θεοὺς εὔχεσθαι χρὴ εἰδέναι. Ἀλλὰ ταῦτα μέν, ἔφη ὁ Σωκράτης, ἴσως διὰ τὸ σφόδρα πιστεύειν εἰδέναι οὐδ᾽ ἔσκεψαι.

22 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου (48 c).

Τῆς δ᾽ αὖ πάσης πονηρίας ἐστὶ τοὐναντίον πάθος ἔχον ἢ τὸ λεγόμενον ὑπὸ τῶν ἐν Δελφοῖς γραμμάτων. Τὸ γνῶναι σαυτὸν λέγεις, ὦ Σώκρατες; Ἔγωγε. τοὐναντίον μὴν ἐκεῖνο δηλονότι, τὸ μηδαμῇ γινώσκειν αὑτόν, λεγόμενον ὑπὸ τοῦ γράμματος ἂν εἴη. Τί μήν; Ὦ Πρώταρχε, πειρῶ δὲ αὐτὸ τοῦτο τριχῇ τέμνειν. Πῇ φῄς; οὐ γὰρ μὴ δυνατὸς ὦ. Λέγεις δὴ δεῖν ἐμὲ τοῦτο διελέσθαι τὰ νῦν; Λέγω καὶ δέομαί γε πρὸς τῷ λέγειν. Ἆρ᾽ οὖν οὐ τῶν ἀγνοούντων αὑτοὺς κατὰ τρία ἀνάγκη τοῦτο τὸ πάθος πάσχειν ἕκαστον; Πῶς; Πρῶτον μὲν κατὰ χρήματα δοξάζειν εἶναι πλουσιώτερον ἢ κατὰ τὴν αὑτῶν οὐσίαν· πολλοὶ γοῦν εἰσι τοιοῦτον πάθος ἔχοντες· πλείους δέ γε οἳ μείζους καὶ καλλίους αὑτοὺς δοξάζουσι, καὶ πάντα ὅσα κατὰ τὸ σῶμα εἶναι διαφερόντως τῆς οὔσης αὐτοῖς ἀληθείας. Πάνυ γε. Πολὺ δὲ πλεῖστοί γε, οἶμαι, περὶ τὸ τρίτον εἶδος τούτων ἐν ταῖς ψυχαῖς διημαρτήκασιν ἀρετῇ δοξάζοντες βελτίους ἑαυτούς, οὐκ ὄντες. Σφόδρα μὲν οὖν. Τῶν ἀρετῶν δ᾽ ἄρα, οὐ σοφίας περὶ τὸ πλῆθος πᾶν ἀντεχόμενον μεστὸν ἐρίδων καὶ δοξοσοφίας ἐστὶ ψευδοῦς; Πῶς δ᾽ οὔ; Κακὸν μὲν δὴ

πᾶν ἄν τις τὸ τοιοῦτον εἰπών, ὀρθῶς ἂν εἴποι, πάθος. Σφόδρα γε.

23 *Πλάτωνος Ἀλκιβιάδου α'* (127 e).

Φέρε δή, τί ἐστι τὸ ἑαυτοῦ ἐπιμελεῖσθαι; μὴ πολλάκις λάθωμεν οὐχ ἡμῶν αὐτῶν ἐπιμελούμενοι, οἰόμενοι δέ· καὶ πότε ἄρα αὐτὸ ποιεῖ ἄνθρωπος; ἆρ' ὅταν τῶν ἑαυτοῦ ἐπιμελῆται, τότε καὶ αὑτοῦ; Ἔμοιγ' οὖν δοκεῖ. Τί δαί; ποδῶν ἄνθρωπος πότε ἐπιμελεῖται; ἆρ' ὅταν ἐκείνων ἐπιμελῆται ἅ ἐστι τῶν ποδῶν; Οὐ μανθάνω. Καλεῖς δέ τι χερός· οἷον δακτύλιον ἔστιν ὅτου ἂν ἄλλου τῶν τοῦ ἀνθρώπου φαίης ἢ δακτύλου; Οὐ δῆτα. Οὐκ οὖν καὶ ποδὸς ὑπόδημα τὸν αὐτὸν τρόπον; Ναί. καὶ ἱμάτια καὶ στρώματα τοῦ ἄλλου σώματος ὁμοίως; Ναί. Ἆρ' οὖν ὅταν ὑποδημάτων ἐπιμελώμεθα, τότε ποδῶν ἐπιμελούμεθα; Οὐ πάνυ μανθάνω, ὦ Σώκρατες. Τί δαί, ὦ Ἀλκιβιάδη, ὀρθῶς ἐπιμελεῖσθαι καλεῖς τὶ ὁτουοῦν πράγματος; Ἔγωγε. Ἆρ' οὖν ὅταν τίς τι βέλτιον ποιῇ, τότε ὀρθὴν λέγεις ἐπιμέλειαν; Ναί. Τίς οὖν τέχνη ὑποδήματα βελτίω ποιεῖ; Σκυτική. Σκυτικῇ ἄρα ὑποδημάτων ἐπιμελούμεθα; Ναί. Ἦ καὶ ποδὸς σκυτικῇ, ἢ ἐκείνῃ ᾗ πόδας βελτίους ποιοῦμεν; Ἐκείνῃ. Βελτίους δὲ πόδας οὐχ ἧπερ καὶ τὸ ἄλλο σῶμα; Ἔμοιγε δοκεῖ. Αὕτη δ' οὐ γυμναστική; Μάλιστα. Γυμναστικῇ μὲν ἄρα ποδὸς ἐπιμελούμεθα, σκυτικῇ δὲ τῶν τοῦ ποδός. Πάνυ γε. Καὶ γυμναστικῇ μὲν χειρῶν, δακτυλιογλυφίᾳ δὲ τῶν τῆς χειρός. Ναί. Καὶ γυμναστικῇ μέν, σώματος· ὑφαντικῇ δὲ καὶ ταῖς ἄλλαις τῶν τοῦ σώματος. Παντάπασιν. Ἄλλῃ μὲν ἄρα τέχνῃ αὐτοῦ ἑκάστου ἐπιμελούμεθα, ἄλλῃ δὲ τῶν ἑαυτοῦ. Φαίνεται. Οὐκ ἄρα, ὅταν τῶν ἑαυτοῦ ἐπιμελῇ, σαυ-

τοῦ ἐπιμελῇ. Οὐδαμῶς. Οὐ γὰρ ἡ αὐτὴ τέχνη, ὡς ἔοικεν, ᾗ τις ἂν αὑτοῦ τε ἐπιμελοῖτο καὶ τῶν αὑτοῦ. Οὐ φαίνεται. Φέρε δή, ποίᾳ ποτ' ἂν ἡμῶν αὐτῶν ἐπιμεληθείημεν; Οὐκ ἔχω λέγειν. Ἀλλὰ τοσόνδε γε ὡμολόγηται, ὅτι οὐχ ᾗ ἂν τῶν ἡμετέρων καὶ ὁτιοῦν βέλτιον ποιῶμεν, ἀλλὰ ᾗ ἡμᾶς αὐτούς. Ἀληθῆ λέγεις. Ἦ οὖν ἔγνωμεν ἄν ποτε τίς τέχνη ὑπόδημα βέλτιον ποιῇ, μὴ εἰδότες ὑπόδημα; Ἀδύνατον. Οὐδέ γε τίς τέχνη δακτυλίους βελτίους ποιῇ, ἀγνοοῦντες δακτύλιον. Ἀληθῆ. Τί δέ; τίς γε τέχνη βελτίω ποιεῖ αὑτῶν ἆρ' ἄν ποτε γνοίημεν, ἀγνοοῦντες τί ποτ' ἐσμὲν αὐτοί; Ἀδύνατον. Πότερον οὖν ῥᾴδιον τυγχάνει τὸ γνῶναι ἑαυτόν, καί τις ἦν φαῦλος ὁ τοῦτο ἀναθεὶς εἰς τὸν ἐν Πυθοῖ νεών, ἢ χαλεπόν τι καὶ οὐχὶ παντός; Ἐμοὶ μέν, ὦ Σώκρατες, πολλάκις μὲν ἔδοξε παντὸς εἶναι, πολλάκις δὲ παγχάλεπον. Ἀλλ' ὦ Ἀλκιβιάδη, εἴτε ῥᾴδιον εἴτε μή ἐστιν, ὅμως γε ἡμῖν ὧδ' ἔχει· γνόντες μὲν αὐτὸ τάχ' ἂν γνοίημεν τὴν ἐπιμέλειαν ἡμῶν αὐτῶν, ἀγνοοῦντες δὲ οὐκ ἂν ποτέ. Ἔστι ταῦτα. Φέρε δή, τίν' ἂν τρόπον εὑρεθείη αὐτὸ τοῦτο; οὕτω μὲν γὰρ ἂν τάχ' εὕροιμεν τί ποτ' ἐσμὲν αὐτοί· τούτου δ' ἔτι ὄντες ἐν ἀγνοίᾳ, ἀδύνατόν που. Ὀρθῶς λέγεις. Ἔχε οὖν πρὸς Διός. τῷ διαλέγῃ σὺ νῦν; ἄλλῳ τῳ ἢ ἐμοί; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ ἐγὼ σοί; Ναί. Σωκράτης ἄρ' ἐστὶν ὁ διαλεγόμενος; Πάνυ γε. Ἀλκιβιάδης δ' ὁ ἀκούων; Ναί. Οὐκ οὖν λόγῳ διαλέγεται ὁ Σωκράτης; Τί μήν; Τὸ δὲ διαλέγεσθαι καὶ τῷ λόγῳ χρῆσθαι ταυτόν που καλεῖς; Πάνυ γε. Ὁ δὲ χρώμενος καὶ ᾧ χρῆται, οὐκ ἄλλο; Πῶς λέγεις; Ὥσπερ σκυτοτόμος τέμνει που τομῇ καὶ σμίλῃ καὶ ἄλλοις ὀργάνοις. Ναί. Οὐκ οὖν ἄλλο μὲν ὁ τέμνων καὶ χρώμενος, ἄλλο δὲ οἷς ὁ τέμνων χρῆται; Πῶς γὰρ οὔ;

Ἆρ᾽ οὖν οὕτως καὶ οἷς ὁ κιθαριστὴς κιθαρίζει καὶ αὐτὸς ὁ κιθαριστὴς ἄλλο ἂν εἴη; Ναί. Τοῦτο τοίνυν ἀρτίως ἠρώτων, εἰ ὁ χρώμενός τε καὶ ᾧ χρῆται ἀεὶ δοκεῖ ἕτερον εἶναι. Δοκεῖ. Τί οὖν; φῶμεν τὸν σκυτοτόμον τέμνειν ὀργάνοις μόνον ἢ καὶ χερσί; Καὶ χερσί. Χρῆται ἄρα καὶ ταύταις. Ναί. Ἦ καὶ τοῖς ὀφθαλμοῖς χρώμενος σκυτοτομεῖ; Ναί. Τὸν δὲ χρώμενον καὶ οἷς χρῆται ἕτερα ὁμολογοῦμεν; Ναί. Ἕτερον ἄρα σκυτοτόμος καὶ κιθαριστὴς χειρῶν καὶ ὀφθαλμῶν οἷς ἐργάζονται. Φαίνεται. Οὐκ οὖν καὶ παντὶ τῷ σώματι χρῆται ἄνθρωπος; Πάνυ γε. Ἕτερον δ᾽ ἦν τό τε χρώμενον καὶ ᾧ χρῆται; Ναί. Ἕτερον ἄρ᾽ ἄνθρωπός ἐστι τοῦ ἑαυτοῦ σώματος. Ἔοικε. Τί ποτ᾽ οὖν ἐστιν ἄνθρωπος; Οὐκ ἔχω λέγειν. Ἔχεις μὲν οὖν ὅ τι γε τῷ σώματι χρώμενον; Ναί. Ἦ οὖν ἄλλο τι χρῆται αὐτῷ ἢ ψυχή; Οὐκ ἄλλο. Οὐκ οὖν ἄρχουσα; Ναί. Καὶ μὴν τόδε γ᾽ οἶμαι οὐδένα ἂν ἄλλως οἰηθῆναι. Τὸ ποῖον; Μὴ οὐ τριῶν ἕν γέ τι εἶναι τὸν ἄνθρωπον. Τίνων; Ψυχὴν ἢ σῶμα ἢ συναμφότερον, τὸ ὅλον τοῦτο. Τί μήν; Ἀλλὰ μὴν οὐ τό γε τὸ τοῦ σώματος ἄρχον ὡμολογήσαμεν ἄνθρωπον εἶναι; Ὡμολογήσαμεν. [Τίς οὖν ὁ ἄνθρωπος;] ἆρ᾽ οὖν σῶμα αὐτὸ αὑτοῦ ἄρχει; Οὐδαμῶς. Ἄρχεσθαι γὰρ αὐτὸ εἴπομεν; Ναί. Οὐκ ἂν δὴ τοῦτό γε εἴη τὸ ζητούμενον. Οὐκ ἔοικεν. Ἀλλὰ ἆρα τὸ συναμφότερον τοῦ σώματος ἄρχει, καὶ ἔστι δὴ τοῦτο ὁ ἄνθρωπος; Ἴσως δῆτα. Πάντων γε ἥκιστα· μὴ γὰρ συνάρχοντος τοῦ ἑτέρου οὐδεμία που μηχανὴ τὸ συναμφότερον ἄρχειν. Ὀρθῶς. Ἐπειδὴ δὲ οὔτε τὸ σῶμα οὔτε τὸ συναμφότερόν ἐστιν ἄνθρωπος, λείπεται, οἶμαι, ἢ μηδὲν αὐτὸ εἶναι, ἢ εἴπερ τί ἐστι, μηδὲν ἄλλο τὸν ἄνθρωπον συμβαίνειν ἢ ψυχήν. Κομιδῇ μὲν οὖν. Ἔτι

οὖν σαφέστερον δεῖ ἀποδειχθῆναί σοι, ὅτι ἡ ψυχή ἐστιν ἄνθρωπος; Μὰ Δί', ἀλλ' ἱκανῶς μοι δοκεῖ ἔχειν. Εἰ δέ γε μὴ ἀκριβῶς, ἀλλὰ καὶ μετρίως, ἐξαρκεῖ ἡμῖν· ἀκριβῶς μὲν γὰρ εἰσόμεθα τότε, ὅταν εὕρωμεν ὃ νῦν δὴ παρήλθομεν διὰ τὸ πολλῆς εἶναι σκέψεως. Τί τοῦτο; Ὃ ἄρτι οὕτω πως ἐρρήθη, ὅτι πρῶτον σκεπτέον εἴη αὐτὸ τὸ αὐτό· νῦν δ' ἀντὶ τοῦ αὐτοῦ, αὐτὸν ἕκαστον ἐσκέμμεθα ὅ τι ἐστίν. καὶ ἴσως ἐξαρκέσει· οὐ γάρ που κυριώτερόν γε οὐδὲν ἂν ἡμῶν αὐτῶν φήσαιμεν ἢ τὴν ψυχήν. Οὐ δῆτα. Οὐκ οὖν καλῶς ἔχει οὕτω νομίζειν, ἐμὲ καὶ σὲ προσομιλεῖν ἀλλήλοις τοῖς λόγοις χρωμένους τῇ ψυχῇ πρὸς τὴν ψυχήν; Πάνυ μὲν οὖν. Τοῦτο δ' ἄρα ἦν, ὃ καὶ ὀλίγῳ ἔμπροσθεν εἴπομεν, ὅτι Σωκράτης Ἀλκιβιάδῃ διαλέγεται λόγῳ χρώμενος, οὐ πρὸς τὸ σὸν πρόσωπον, ὡς ἔοικεν, ἀλλὰ πρὸς τὸν Ἀλκιβιάδην ποιούμενος τοὺς λόγους· τοῦτο δ' ἐστὶ ἡ ψυχή. Ἔμοιγ' οὖν δοκεῖ. Ψυχὴν ἄρα ἡμᾶς κελεύει γνωρίζειν ὁ ἐπιτάττων γνῶναι ἑαυτόν. Ἔοικεν. Ὅστις ἄρα τῶν τοῦ σώματός τι γιγνώσκει, τὰ αὑτοῦ, ἀλλ' οὐχ ἑαυτὸν ἔγνωκεν. Οὕτως. Οὐδεὶς ἄρα τῶν ἰατρῶν ἑαυτὸν γιγνώσκει καθ' ὅσον ἰατρός· οὐδὲ τῶν παιδοτριβῶν, καθ' ὅσον παιδοτρίβης. Οὐκ ἔοικε. Πολλοῦ ἄρα δέουσιν οἱ γεωργοὶ καὶ οἱ ἄλλοι δημιουργοὶ γιγνώσκειν ἑαυτούς· οὐδὲ γὰρ τὰ ἑαυτῶν οὗτοί γε, ὡς ἔοικε, γιγνώσκουσιν, ἀλλ' ἔτι πορρωτέρω τῶν ἑαυτῶν, κατά γε τὰς τέχνας ἃς ἔχουσι· τὰ γὰρ τοῦ σώματος γιγνώσκουσιν, οἷς τοῦτο θεραπεύεται. Ἀληθῆ λέγεις. Εἰ ἄρα σωφροσύνη ἐστὶ τὸ ἑαυτὸν γιγνώσκειν, οὐδεὶς τούτων σώφρων κατὰ τὴν τέχνην. Οὔ μοι δοκεῖ. Διὰ ταῦτα δὴ καὶ βάναυσοι αὗται αἱ τέχναι δοκοῦσιν εἶναι, καὶ οὐκ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ μαθήματα. Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ

οὖν πάλιν ὅστις αὖ σῶμα θεραπεύει, τὸ ἑαυτοῦ, ἀλλ' οὐχ ἑαυτὸν θεραπεύει; Κινδυνεύει. Ὅστις δέ γε τὰ χρήματα, οὔτε ἑαυτὸν οὔτε τὰ ἑαυτοῦ, ἀλλ' ἔτι πορρωτέρω τῶν ἑαυτοῦ; Ἔμοιγε δοκεῖ. Οὐ τὰ αὑτοῦ ἄρα ἔτι πράττει ὁ χρηματιστής. Ὀρθῶς. Εἰ δ' ἄρα τὶς γέγονεν ἐραστὴς τοῦ Ἀλκιβιάδου σώματος, οὐχὶ Ἀλκιβιάδου ἠράσθη, ἀλλά τινος τοῦ Ἀλκιβιάδου. Ἀληθῆ λέγεις. Ὅστις δὲ σοῦ, τῆς ψυχῆς ἐρᾷ. Ἀνάγκη φαίνεται ἐκ τοῦ λόγου. Οὐκ οὖν ὁ μὲν τοῦ σώματός σου ἐρῶν, ἐπειδὴ λήγει ἀνθοῦν, ἀπιὼν οἴχεται; Φαίνεται. Ὁ δὲ τῆς ψυχῆς ἐρῶν οὐκ ἄπεισιν, ἕως ἂν ἐπὶ τὸ βέλτιον ἴῃ. Εἰκός γε. Οὐκ οὖν ἐγώ εἰμι ὁ οὐκ ἀπιών, ἀλλὰ παραμένων λήγοντος τοῦ σώματος, τῶν ἄλλων ἀπεληλυθότων;

24 Ἐν ταυτῷ (132 b).

Εὖ μοι δοκεῖς λέγειν, ὦ Σώκρατες, ἀλλὰ πειρῶ ἐξηγεῖσθαι ὅντινα τρόπον ἐπιμεληθείημεν ἡμῶν αὐτῶν. Οὐκ οὖν τοσοῦτον μὲν ἡμῖν εἰς τὸ πρόσθεν πεπέραται; ὃ γὰρ ἐσμέν, ἐπιεικῶς ὡμολόγηται· ἐφοβούμεθα δὲ μὴ τούτου σφαλέντες λάθωμεν ἑτέρου τινὸς ἐπιμελόμενοι, ἀλλ' οὐχ ἡμῶν. Ἔστι ταῦτα. Καὶ μετὰ τοῦτο δὴ ὅτι ψυχῆς ἐπιμελητέον καὶ εἰς τοῦτο βλεπτέον. Δῆλον. Σωμάτων δὲ καὶ χρημάτων τὴν ἐπιμέλειαν ἑτέροις παραδοτέον. Τί μήν; Τίν' οὖν ἂν τρόπον γνοίημεν αὐτὰ ἐναργέστατα; ἐπειδὴ τοῦτο γνόντες, ὡς ἔοικεν, ἡμᾶς αὐτοὺς γνωσόμεθα. ἆρα πρὸς θεῶν εὖ λέγοντος, οὗ νῦν δὴ ἐμνήσθημεν, τοῦ Δελφικοῦ γράμματος οὐ ξυνίεμεν; Τὸ ποῖον; τί διανοούμενος λέγεις, ὦ Σώκρατες; Ἐγώ σοι φράσω, ὅ γε ὑποπτεύω λέγειν καὶ συμβουλεύειν ἡμῖν τοῦτο τὸ γράμμα· κινδυνεύει γὰρ οὐδὲ πολλαχοῦ εἶναι

παράδειγμα αὐτοῦ, ἀλλὰ κατὰ τὴν ὄψιν μόνον. Πῶς τοῦτο λέγεις; Σκόπει καὶ σύ, εἰ ἡμῶν τῷ ὄμματι ὥσπερ ἀνθρώπῳ συμβουλεύων εἶπεν, ἴδε ἑαυτόν, πῶς ἂν ὑπελάβομέν τι παραινεῖν; ἆρ' οὐχὶ εἰς τοῦτο βλέπειν, εἰς ὃ βλέπων ὀφθαλμὸς ἔμελλεν αὑτὸν ἰδεῖν; Δῆλον. Ἐννοῶμεν δὴ εἰς τί βλέποντες τῶν ὄντων, ἐκεῖνό τε ὁρῷμεν ἅμα ἄν, καὶ ἡμᾶς αὐτούς. Δῆλον δή, ὦ Σώκρατες, ὅτι εἰς κάτοπτρά τε καὶ τὰ τοιαῦτα. Ὀρθῶς λέγεις. οὐκ οὖν καὶ τῷ ὀφθαλμῷ, ᾧ ὁρῶμεν, ἔνεστι τῶν τοιούτων; Πάνυ γε. Ἐννενόηκας οὖν ὅτι τοῦ ἐμβλέποντος εἰς τὸν ὀφθαλμὸν τὸ πρόσωπον ἐμφαίνεται ἐν τῇ τοῦ καταντικρὺ ὄψει, ὥσπερ ἐν κατόπτρῳ; ὃ δὴ καὶ κόρην καλοῦμεν, εἴδωλον ὂν τοῦ ἐμβλέποντος. Ἀληθῆ λέγεις. Ὀφθαλμὸς ἄρ' ὀφθαλμὸν θεώμενος καὶ ἐμβλέπων εἰς τουτί, ὅπερ βέλτιστον αὐτοῦ καὶ ᾧ ὁρᾷ, οὕτως ἂν αὑτὸν ἴδοι. Φαίνεται. Εἰ δέ γ' εἰς ἄλλο τῶν τοῦ ἀνθρώπου βλέποι, ἤ τι τῶν ὄντων, πλὴν εἰς ἐκεῖνο ᾧ τοῦτο τυγχάνει ὅμοιον, οὐχὶ ὄψεται ἑαυτόν. Ἀληθῆ λέγεις. Ὀφθαλμὸς ἄρα εἰ μέλλει ἰδεῖν αὑτόν, εἰς ὀφθαλμὸν αὐτῷ βλεπτέον, καὶ τοῦ ὄμματος εἰς ἐκεῖνον τὸν τόπον, ἐν ᾧ τυγχάνει ἡ τοῦ ὀφθαλμοῦ ἀρετὴ ἐγγιγνομένη· ἔστι δὲ τοῦτό που ὄψις. Οὕτως. Ἆρ' οὖν, ὦ [φίλε] Ἀλκιβιάδη, καὶ ψυχὴ εἰ μέλλει γνώσεσθαι αὑτήν, εἰς ψυχὴν αὐτῇ βλεπτέον, καὶ μάλιστα εἰς τοῦτον αὐτῆς τὸν τόπον, ἐν ᾧ ἐγγίγνεθ' ἡ ψυχῆς ἀρετή, σοφία, καὶ εἰς ἄλλο ᾧ τοῦτο τυγχάνει ὅμοιον ὄν; Ἔμοιγε δοκεῖ, ὦ Σώκρατες. Ἔχομεν οὖν εἰπεῖν, ὅ τι ἐστὶ τῆς ψυχῆς θειότερον, ἢ τοῦτο περὶ ὃ τὸ εἰδέναι καὶ φρονεῖν ἐστιν; Οὐκ ἔχομεν. Τῷ θείῳ ἄρα τοῦτ' ἔοικεν αὐτῆς· καί τις εἰς τοῦτο βλέπων καὶ πᾶν τὸ θεῖον γνούς, θεόν τε καὶ φρόνησιν, οὕτω καὶ ἑαυτὸν ἂν γνοίη μάλιστα. Φαί-

νεται. Τὸ δὲ γιγνώσκειν αὑτόν, ὁμολογοῦμεν σωφροσύνην εἶναι; Πάνυ γε. Ἆρ' ὥσπερ κάτοπτρα σαφέστερά ἐστι τοῦ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ ἐνόπτρου καὶ καθαρώτερά τε καὶ λαμπρότερα, οὕτω καὶ ὁ θεὸς τοῦ ἐν τῇ ἡμετέρᾳ ψυχῇ βελτίστου καθαρώτερόν τε καὶ λαμπρότερον τυγχάνει ὄν. Ἔοικέ γε, ὦ Σώκρατες. Εἰς τὸν θεὸν ἄρα βλέποντες, ἐκείνῳ καλλίστῳ ἐνόπτρῳ χρώμεθ' ἄν, καὶ τῶν ἀνθρωπίνων εἰς τὴν ψυχῆς ἀρετήν· καὶ οὕτως ἂν μάλιστα ὁρῷμεν, καὶ γιγνώσκοιμεν ἡμᾶς αὐτούς. Ναί. Τὸ δὲ γιγνώσκειν αὑτόν, ὁμολογοῦμεν σωφροσύνην εἶναι; Πάνυ γε. Ἆρ' οὖν μὴ γιγνώσκοντες ἡμᾶς αὐτούς, μηδὲ σώφρονες ὄντες, δυνάμεθα εἰδέναι τὰ ἡμέτερα αὐτῶν κακά τε καὶ ἀγαθά; Καὶ πῶς ἂν τοῦτο γένοιτο, ὦ Σώκρατες; Ἀδύνατον [γὰρ] ἴσως σοι φαίνεται μὴ γιγνώσκοντα Ἀλκιβιάδην, τὰ Ἀλκιβιάδου γιγνώσκειν, ὅτι Ἀλκιβιάδου ἐστίν. Ἀδύνατον μέντοι νὴ Δία. Οὐδ' ἄρα τὰ ἡμέτερα, ὅτι ἡμέτερα, εἰ μηδ' ἡμᾶς αὐτούς; Πῶς γάρ; Εἰ δ' ἄρα μηδὲ τὰ ἡμέτερα, οὐδὲ τὰ τῶν ἡμετέρων; Οὐ φαίνεται. Οὐκ ἄρα πάνυ τι ὀρθῶς ὡμολογοῦμεν, ὁμολογοῦντες ἄρτι εἶναι τινάς, οἳ ἑαυτοὺς μὲν οὐ γιγνώσκουσι, τὰ δὲ αὑτῶν· ἄλλους δὲ τὰ τῶν ἑαυτῶν· ἔοικε γὰρ πάντα ταῦτ' εἶναι κατιδεῖν ἑνός τε καὶ μιᾶς τέχνης, ἑαυτόν, τὰ αὑτοῦ, τὰ τῶν ἑαυτοῦ. Κινδυνεύει. Ὅστις δὲ τὰ αὑτοῦ ἀγνοεῖ, καὶ τὰ τῶν ἄλλων που ἀγνοεῖ κατὰ ταῦτα. Τί μήν; Οὐκ οὖν εἰ τὰ τῶν ἄλλων, καὶ τὰ τῶν πόλεων ἀγνοήσει; Ἀνάγκη. Οὐκ ἄρα ἂν γένοιτο ὁ τοιοῦτος ἀνὴρ πολιτικός. Οὐ δῆτα. Οὐ μὴν οὐδὲ οἰκονομικός γε. Οὐ δῆτα. Οὐδέ γ' εἴσεται ὅ τι πράττει. Οὐ γὰρ οὖν. Ὁ δὲ μὴ εἰδὼς τί πράττει, οὐχ ἁμαρτήσεται; Πάνυ γε. Ἐξαμαρτάνων δέ, οὐ κακῶς πράξει ἰδίᾳ τε καὶ δημοσίᾳ; Πῶς δ' οὔ;

Κακῶς δὲ πράττων, οὐκ ἄθλιος; Σφόδρα γε. Τί δ', οἷς οὗτος πράττει; Καὶ οὗτοι. Οὐκ ἄρα οἷόν τε, ἐὰν μή τις σώφρων καὶ ἀγαθὸς ᾖ, εὐδαίμονα εἶναι. Οὐχ οἷόν τε. Οἱ ἄρα κακοὶ τῶν ἀνθρώπων ἄθλιοι. Σφόδρα γε. Οὐκ ἄρα οὐδὲ ὁ πλουτήσας ἀθλιότητος ἀπαλλάττεταί γε, ἀλλ' ὁ σωφρονήσας. Φαίνεται.

25 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Χαρμίδου* (164 d).

Καὶ οὐκ ἂν αἰσχυνθείην μὴ οὐχὶ ὀρθῶς φάναι ποτὲ ἢ τοῦτο συγχωρήσαιμ' ἂν ἀγνοοῦντα ἄνθρωπον αὐτὸν ἑαυτὸν σωφρονεῖν. σχεδὸν γάρ τι ἔγωγε αὐτὸ τοῦτό φημι εἶναι σωφροσύνην, τὸ γιγνώσκειν ἑαυτόν, καὶ συμφέρομαι τῷ ἐν Δελφοῖς ἀναθέντι τὸ τοιοῦτον γράμμα. καὶ γὰρ τοῦτο οὕτω μοι δοκεῖ τὸ γράμμα ἀνακεῖσθαι, ὡς δὴ πρόσρησις οὖσα τοῦ θεοῦ τῶν εἰσιόντων, ἀντὶ τοῦ χαῖρε· ὡς τούτου μὲν οὐκ ὀρθοῦ ὄντος τοῦ προσρήματος, τοῦ χαίρειν, οὐδὲ δεῖν τοῦτο παρακελεύεσθαι ἀλλήλοις, ἀλλὰ σωφρονεῖν. οὕτω μὲν δὴ ὁ θεὸς προσαγορεύει τοὺς εἰσιόντας εἰς τὸ ἱερὸν διαφέρον τι ἢ οἱ ἄνθρωποι, ὡς διανοούμενος ἀνέθηκεν ὁ ἀναθείς, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ· καὶ λέγει πρὸς τὸν ἀεὶ εἰσιόντα οὐκ ἄλλο τι ἢ σωφρόνει φησίν. αἰνιγματωδέστερον δὲ δὴ ὡς μάντις λέγει. τὸ γὰρ "γνῶθι σαυτὸν" καὶ τὸ "σωφρόνει" ἐστὶ μὲν ταυτόν, ὡς τὰ γράμματα φησὶ καὶ ἐγώ, τάχα δ' ἄν τις οἰηθείη ἄλλο εἶναι· ὃ δή μοι δοκοῦσι παθεῖν καὶ οἱ τὰ ὕστερα γράμματα ἀναθέντες, τό τε "μηδὲν ἄγαν" καὶ τὸ "ἐγγύα, πάρα δ' ἄτα." καὶ γὰρ οὗτοι συμβουλὴν ᾠήθησαν εἶναι τὸ "γνῶθι σαυτόν," ἀλλ' οὐ τῶν εἰσιόντων ἕνεκεν ὑπὸ τοῦ θεοῦ πρόσρησιν· εἶθ' ἵνα δὴ καὶ αὐτοὶ μηδὲν ἧττον χρησίμους συμβουλὰς ἀναθεῖεν, ταῦτα γράψαντες ἀνέθεσαν.

26 *Πορφυρίου ἐκ τοῦ α'.*

Τί ποτε ἦν ἄρα καὶ τίνος τὸ ἱερὸν πρόσταγμα τὸ ἐν Πυθοῖ, ὃ γνῶναι ἑαυτὸν τοῖς τοῦ θεοῦ δεησομένοις προσαγορεύει; μήτε γὰρ τιμῆσαι θεὸν τὰ προσήκοντα, μήτ' αὖ τυχεῖν τοῦ θεοῦ δεηθέντα τὸν ἀγνοίᾳ τῇ ἑαυτοῦ ἐνισχόμενον παραγγέλλειν ἔοικεν. ἀλλ' εἴτε Φημονόη ἐπὶ πάντα λυσιτελοῦν τὰ ἀνθρώπινα τοῦτο ἐθέσπισεν, δι' ἧς πρώτης ὁ Πύθιος λέγεται τὰς εἰς ἀνθρώπους διαδοῦναι χάριτας, εἴτε Φανοθέα ἡ Δελφοῦ, εἴτε καὶ Βίαντος ἢ Θαλοῦ ἢ Χίλωνος ἦν ἀνάθημα ὁρμηθὲν ἀπό τινος θείας ἐπιπνοίας, εἴτε Κλεάρχῳ προσεκτέον μᾶλλον τοῦ μὲν Πυθίου φράζοντι εἶναι παράγγελμα, χρησθῆναι δὲ Χίλωνι τὸ ἄριστον ἀνθρώποις μαθεῖν πυνθανομένῳ· εἴτε καὶ πρὸ Χίλωνος ἦν ἔτι ἀνάγραπτον ἐν τῷ ἱδρυθέντι νεῷ μετὰ τὸν πτέρινόν τε καὶ χαλκοῦν, καθάπερ Ἀριστοτέλης ἐν τοῖς περὶ φιλοσοφίας εἴρηκε· τὸ μὲν ὅτου ἂν εἴη, Ἰάμβλιχε, ἀμφισβητήσιμον ἔστω· πάντως δὲ ὅτι ὑπὸ θεοῦ ἢ οὐκ ἄνευ θεοῦ ἐρρήθη, ἐξ αὐτοῦ φαίνοιτ' ἂν τοῦ ἐν τοῖς Πυθίοις αὐτὸ κεῖσθαι ἀναμφήριστον. τί ποτε δ' ἐστὶν ὃ φράζει καὶ πρό γε τῶν περιρραντηρίων προτελεῖσθαι τῷ θεῷ ἐπιτάττει, ἀναγκαῖον ἂν εἴη γνῶναι.

27 *Πορφυρίου ἐκ τοῦ α' περὶ τοῦ γνῶθι σεαυτόν.*

Ἀλλὰ μήποτε "σωφρόνει" ἔνεστιν ἀκοῦσαι λέγοντος ἀντὶ τοῦ "σῶζε τὴν φρόνησιν"· καὶ γὰρ σωφροσύνη σαοφροσύνη τις ἦν· οὕτω δὲ πρὸς τὸ φρονεῖν καὶ τοῦ φρονεῖν αἴτιον διαλέγοιτ' ἄν, σώζειν ἑαυτὸν παρακελευόμενος· τοῦτο δ' ἂν εἴη ὁ νοῦς. ἀλλ' εἰ τοῦτο, δεῖ πάλιν γνῶναι τὴν οὐσίαν ἡμῶν ἤ τις ἐστίν.

ἄλλοι γε μὴν μικρὸν διάκοσμον καλῶς εἰρῆσθαι φάμενοι τὸν ἄνθρωπον παρακελεύεσθαι μὲν φασὶ τὸ γράμμα γνῶναι τὸν ἄνθρωπον, ὄντος δὲ μικροῦ διακόσμου τοῦ ἀνθρώπου, οὐδὲν ἄλλο κελεύειν ἢ φιλοσοφεῖν. εἴπερ οὖν ἀπταίστως φιλοσοφεῖν σπουδάζομεν, προθυμώμεθα γνῶναι ἑαυτούς, καὶ ἔσται ἡμῖν τεῦξις ὀρθῆς φιλοσοφίας ἐκ τῆς ἡμετέρας κατανοήσεως ἀναβαίνουσα ἐπὶ τὴν τοῦ παντὸς θεωρίαν. ἀλλ' ὅτι μὲν ἀπὸ τῶν ἐν ἡμῖν συλλογιζόμεθα καὶ περὶ τῶν ἐν τῷ ὅλῳ καὶ ἡμᾶς ἐτάζοντες καὶ εὑρίσκοντες ῥᾷον μεταβαίνομεν ἐπὶ τὴν τοῦ παντὸς θεωρίαν, λέγεται ὀρθῶς· μήποτε δὲ τὴν ἑαυτοῦ θεωρίαν οὐ φιλοσοφίας ἕνεκα θεὸς ποιεῖσθαι παρακελεύεται, ἄλλου δέ τινος μείζονος ἕνεκα, δι' ὃ καὶ φιλοσοφία παρελήφθη. φιλοσοφία μὲν γὰρ ἐπετηδεύθη ἐκ προσπαθείας ἡμῶν τῆς πρὸς τὸ σοφὸν καὶ τῆς πρὸς τὴν θεωρητικὴν σοφίαν ἀγαπήσεως· ἡ δὲ σπουδὴ τῆς πρὸς τὸ γνῶναι ἑαυτὸν παρακελεύσεως εἰς τεῦξιν τῆς ἀληθινῆς εὐδαιμονίας ἀποτείνεται, ἥ τις συνίστατο ἐκ τῆς κατὰ σοφίαν διαθέσεως καὶ τῆς κατὰ κτῆσιν τῆς σοφίας θεωρίας τοῦ ἀγαθοῦ καὶ τῶν ὄντως ὄντων γνώσεως. θεωρεῖν οὖν καὶ μανθάνειν παρακελεύεται τοὺς ὄντως ἑαυτούς, οὐχ ἵνα φιλοσοφήσωμεν ἀλλ' ἵνα σοφοὶ γενόμενοι εὐδαιμονήσωμεν. ἡ γὰρ τεῦξις τῆς ὄντως οὔσης οὐσίας ἡμῶν καὶ ἡ ταύτης ἀληθὴς γνῶσις σοφίας ἦν τεῦξις, εἴ γε σοφίας ἴδιον ἡ τῆς ὄντως οὐσίας τῶν πραγμάτων ἀληθὴς ἐπιστήμη, διὰ σοφίας δὲ ἡ τῆς τελείας εὐδαιμονίας γίγνεται κτῆσις.

28 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ τετάρτου.*

Ἐπειδὴ δὲ ἦν τις κατάβασις ἡμῖν εἰς τὰ τῇδε καὶ τὸν ἐκτὸς περικειμένοις ἄνθρωπον, καὶ ἠπατημένοις

τε ὅτι τοῦτο ἐσμὲν τὸ ὁρώμενον, παραίνεσις οἰκεία εἰς τὴν γνῶσιν τῆς ἑαυτοῦ δυνάμεως. ὁ γὰρ δὴ Πλάτων ἐν τῷ Φιλήβῳ μνησθεὶς τοῦ γνῶθι σαυτὸν τριχῇ διαιρεῖται τὴν ἄγνοιαν. πανταχοῦ τοίνυν ἡ ἑαυτοῦ ἄγνοια πονηρόν, ἥν τε κατὰ τὸ εἴσω τὸ μέγεθος τῆς ἀξίας ἀγνοήσας τις ταπεινώσῃ τὸ θεῖον, ἥν τε κατὰ τὸ ἔξω ἀγνοήσας τὸ φύσει προσὸν αὐτῷ ταπεινὸν ἐπαίρηται ἐπ' αὐτῷ. ἢ οὐ πᾶν γε τὸ θνητὸν ἄντικρυς

ὡς ὅτε τὶς ψάμαθον παῖς ἄγχι θαλάσσης,
ὅστ' ἐπεὶ οὖν ποιήσῃ ἀθύρματα νηπιέῃσιν,
ἂψ αὖθις συνέχευε ποσὶν καὶ χερσὶν ἀθύρων.

πᾶς οὖν ἀγνοίᾳ ἑαυτοῦ τὰ καθ' αὐτὸν ἐπαίρων ἁλίσκεται ὑπὲρ τῆς δημιουργησάσης αὐτὸν φύσεως πλεῖον ἢ ἐκείνη βεβούληται, τὰ αὐτῆς ὡς σεμνὰ θαυμάζων παίγνια· ἣ δὲ τηρεῖν ἔοικεν ἐν πᾶσι τῆς ἀξίας τὸ πρέπον οὐδὲν τοῖς ἐπαίρουσι συνεξαπατωμένη. τὸ γνῶθι οὖν σαυτὸν διήκει εἰς πᾶσαν ὑπόληψιν τῆς προσούσης δυνάμεως, παραγγέλλον γιγνώσκειν τὰ μέτρα ἐπὶ πάντων. τὸ μὲν οὖν γιγνώσκειν ἑαυτὸν τὴν ἀναφορὰν ἔοικεν ἔχειν ἐπὶ τὸ γιγνώσκειν δεῖν τὴν ψυχὴν καὶ τὸν νοῦν, ὡς ἐν τούτῳ ἡμῶν οὐσιωμένων· τὸ δὲ πάντῃ γιγνώσκειν ἑαυτὸν συμπεριλαμβάνειν ἔοικεν ἡμᾶς καὶ τὰ ἡμέτερα καὶ τὰ τῶν ἡμετέρων. τοιαύτη μὲν καὶ ἡ ἐν τούτοις τοῦ Πλάτωνος ἀκρίβεια φιλοτιμηθέντος ἐκτὸς τῶν ἄλλων καὶ δίχα τῶν περὶ ἡμᾶς ἁπάντων γνῶναι ἑαυτόν· καὶ πάλιν πάντῃ γνῶναι ἑαυτόν, ἵνα καὶ ὁ ἐντὸς ἀθάνατος γνωσθῇ ἄνθρωπος καὶ ὁ ἐκτὸς εἰκονικὸς μὴ ἀγνοηθῇ καὶ τὰ τούτοις διαφέροντα γνώριμα γένηται. διαφέρει μὲν γὰρ τῷ ἐντὸς παντέλειος νοῦς, ἐν ᾧ αὐτὸς ἄνθρωπος, οὗ εἰκὼν ἕκαστος ἡμῶν· διαφέρει δὲ τῷ ἐκτὸς εἰδώλῳ τὰ περὶ τὸ σῶμα καὶ τὰς κτήσεις. ὧν δεῖ καὶ τὰς δυνά-

μεις γιγνώσκειν καὶ τὸ ἄχρι τίνος τούτων φροντιστέον, ἵνα μήτε τὴν τοῦ ἀθανάτου ἀξίαν περιτιθέντες τῷ φθαρτῷ καὶ γηίνῳ καταγέλαστον αὐτὸ ποιῶμεν, καὶ πάλιν ἄξιον δακρύων ἐν τῇ κωμῳδοτραγῳδίᾳ τῇ τῶν ἀνοήτων βίων ἐνεχόμενον, μήτε τὴν τοῦ θνητοῦ ταπεινότητα τῷ ἀθανάτῳ προσάπτοντες ἐλεεινοὶ ὦμεν καὶ διὰ πάντων ἄδικοι τῇ τοῦ κατ' ἀξίαν ἀγνοίᾳ.

ΠΕΡΙ ΥΠΕΡΟΨΙΑΣ. ΚΒ.

1 *Εὐριπίδου Γλαύκῳ.*

Βαρὺ τὸ φόρημ' οἴησις ἀνθρώπου κακοῦ.

2 *Ὅστις γὰρ ἀστῶν πλέον ἔχειν πέφυκ' ἀνήρ,*
φίλοις τ' ἄμικτός ἐστι καὶ πάσῃ πόλει. (Eur. Ixion.)

3 *Σωσιφάνους.*

Ὦ δυστυχεῖς μὲν πολλὰ παῦρα δ' ὄλβιοι
βροτοί, τί σεμνύνεσθε ταῖς ἐξουσίαις,
ἃς ἕν τ' ἔδωκε φέγγος ἕν τ' ἀφείλετο;
ἂν δ' εὐτυχῆτε μηδὲν ὄντες, εὐθέως
ἴσ' οὐρανῷ φρονεῖτε, τὸν δὲ κύριον
ᾅδην παρεστῶτ' οὐχ ὁρᾶτε πλησίον.

4 *Φιλήμονος.*

Τὸ γνῶθι σαυτὸν οὐ μάτην εὖ ἴσθ' ὅτι
τὸ ῥῆμα τοῦτο δόξαν ἐν Δελφοῖς ἔχει.

5 *Εὐριπίδου.*

Ὅταν δ' ἴδῃς πρὸς ὕψος ἠρμένον τινὰ
λαμπρόν τε πλούτῳ καὶ γένει γαυρούμενον,
ὀφρύν τε μείζω τῆς τύχης ἐπηρκότα,
τούτου ταχεῖαν νέμεσιν εὐθὺς προσδόκα.

6 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Κρινεῖ τίς αὐτὸν πώποτ' ἄνθρωπον μέγαν,
ὃν ἐξαλείφει πρόφασις ἡ τυχοῦσ' ὅλον;

7 *Τοῦ αὐτοῦ Αὔγης.*

Ποῖ; πῶς δὲ λήσει; τίς δὲ νῷν πιστὸς φίλος;
Ζητῶμεν. ἡ δόκησις ἀνθρώποις κακόν,
καὶ τοὐπιχειρεῖν ἐξαμαρτάνειν φιλεῖ.

8 *Τοῦ αὐτοῦ Ἀλκμαίωνι.*

Βροτοῖς τὰ μείζω τῶν μέσων τίκτει νόσους.
θεῶν δὲ θνητοὺς κόσμον οὐ πρέπει φέρειν.

9 *Μενάνδρου Τιτθή.*

Οἱ τὰς ὀφρῦς αἴροντες ὡς ἀβέλτεροι,
καὶ "σκέψομαι" λέγοντες· ἄνθρωπος γὰρ ὢν
σκέψῃ σὺ περί του, δυστυχὴς ὅταν τύχῃ;
αὐτόματα γὰρ τὰ πράγματ' ἐπὶ τὸ συμφέρον
ῥεῖ, κἂν καθεύδῃς, ἢ πάλιν τἀναντία.

10 *Χαιρήμονος.*

Ὅλως τὸ κρεῖσσον οὐκ ἐᾷ φρονεῖν μέγα.

11 *Μενάνδρου Κυβερνήταις.*

Ὦ τρισάθλιοι
ἅπαντες οἱ φυσῶντες ἐφ' ἑαυτοῖς μέγα.
αὐτοὶ γὰρ οὐκ ἴσασιν ἀνθρώπου φύσιν.

12 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πᾶς ὁ μὴ φρονῶν
ἀλαζονείᾳ καὶ ψόφοις ἁλίσκεται.

13 *Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.*

Ὁρᾶτε τὸν τύραννον, ὡς ἄπαις γέρων
φεύγει. φρονεῖν δὲ θνητὸν ὄντ' οὐ χρὴ μέγα.

14 *Εὐριπίδου Αἰόλου.*

Σιγᾶν φρονοῦντα κρεῖσσον εἰς ὁμιλίαν
πεσόντα. τούτῳ δ' ἀνδρὶ μήτ' εἴην φίλος
μήτε ξυνείην, ὅστις αὐτάρκη φρονεῖν
πέποιθε δούλους τοὺς φίλους ἡγούμενος.

15 Εὐριπίδου Ἀνδρομάχης (189).
Οἱ γὰρ πνέοντες μεγάλα τοὺς κρείσσους λόγους
πικρῶς φέρουσι τῶν ἐλασσόνων ὕπο.

16 Δημώνακτος.
Θνητοὶ γεγῶτες μὴ φρονεῖθ' ὑπὲρ θεούς.

17 Εὐριπίδου Βάκχαις (395).
Τὸ σοφὸν δ' οὐ σοφία,
τό τε μὴ θνητὰ φρονεῖν.
βραχὺς αἰών· ἐπὶ τούτῳ
δέ τις ἂν μεγάλα διώκων,
τὰ παρόντ' οὐχὶ φέρει.
μαινομένων οἵδε τρόποι
καὶ κακοβούλων παρ' ἔμοιγε φωτῶν.

18 Εὐριπίδου Ἡρακλεῖδαι (388).
Ὁ Ζεὺς κολαστὴς τῶν ἄγαν ὑπερφρόνων.

19 Μενάνδρου.
Τἀργύριον εἶναι, μειράκιον, σοὶ φαίνεται
οὐ τῶν ἀναγκαίων καθ' ἡμέραν μόνον
τιμὴν παρασχεῖν δυνατόν, ἄρτων ἀλφίτων
ὄξους ἐλαίου, μείζονος δ' ἄλλου τινός.
ἀθανασίας δ' οὐκ ἔστιν, οὐδ' ἂν συναγάγῃς
τὰ Ταντάλου τάλαντ' ἐκεῖνα λεγόμενα·
ἀλλ' ἂν ἀποθάνῃς, ταῦτα καταλείψεις τισίν.
τί οὖν λέγω; μήτ' αὐτός, εἰ σφόδρ' εὐπορεῖς,
πίστευε τούτῳ, μήτε τῶν πτωχῶν πάλιν
ἡμῶν καταφρόνει, τοῦ δέ γ' εὐτυχεῖν ἀεὶ
πάρεχε σεαυτὸν τοῖς ὁρῶσιν ἄξιον.

20 Σοφοκλέους Αἴαντι (125).

Ὁρῶ γὰρ ἡμᾶς οὐδὲν ὄντας ἄλλο πλὴν
εἴδωλ᾿ ὅσοι περ ζῶμεν ἢ κούφην σκιάν.
τοιαῦτα τοίνυν εἰσορῶν, ὑπέρκοπον
μηδέν ποτ᾿ εἴπῃς αὐτὸς εἰς θεοὺς ἔπος,
μηδ᾿ ὄγκον ἄρῃς μηδέν᾿, εἴ τινος πλέον
ἢ χειρὶ βρίθεις ἢ μακροῦ πλούτου βάθει.

21 Τοῦ αὐτοῦ (Ai. 758).

Τὰ γὰρ περισσὰ κἀνόνητα σώματα
πίπτειν βαρείαις πρὸς θεῶν δυσπραγίαις
ἔφασχ᾿ ὁ μάντις, ὅστις ἀνθρώπου φύσιν
βλαστὼν ἔπειτα μὴ κατ᾿ ἄνθρωπον φρονεῖ.

22 Σοφοκλέους Τηρεῖ. Χορός.

Θνητὰ φρονεῖν χρὴ θνητὴν φύσιν,
τοῦτο κατειδότας, ὡς οὐκ ἔστιν
πλὴν Διὸς οὐδεὶς τῶν μελλόντων
ταμίας ὅ τι χρὴ τετελέσθαι.

23 Σοφοκλέους Κολχίδες.

Καλὸν φρονεῖν τὸν θνητὸν ἀνθρώποις ἴσα.

24 Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνι.

Ταπεινὰ γὰρ χρὴ τοὺς κακῶς πεπραγότας
λέγειν, ἐς ὄγκον δ᾿ οὐκ ἄνω βλέπειν τύχης.

25 Ἱπποθόωντος.

Ἄνθρωπος ὢν μέμνησο τῆς κοινῆς τύχης.

26 Σωτάδου.

Εἰ καὶ βασιλεὺς πέφυκας, ὡς θνητὸς ἄκουσον.
ἂν μακρὰ πτύῃς, φλεγματίῳ κρατεῖ περισσῷ.
ἂν εὐιματῇς, ταῦτα πρὸ σοῦ προβάτιον εἶχεν.
ἂν χρυσοφορῇς, τοῦτο τύχης ἐστὶν ἔπαρμα.
ἂν πλούσιος ᾖς, τοῦτο χρόνων ἄδηλος ἰσχύς.

ἂν ἀλαζονῇς, τοῦτ᾽ ἀνοίας ἐστὶ φρύαγμα.
ἂν δὲ σωφρονῇς, τοῦτο θεῶν δῶρον ὑπάρχει.
ἡ σωφροσύνη πάρεστιν, ἂν μετρῇς σεαυτόν.

27 *Ἰσιδώρου.*

Θνητὸς πεφυκὼς τὠπίσω πειρῶ βλέπειν.

28 *Μενάνδρου Ἐμπιμπραμένῃ.*

Ἐφ᾽ ᾧ φρονεῖς μέγιστον, ἀπολεῖ τοῦτό σε
τὸ δοκεῖν τίν᾽ εἶναι, καὶ γὰρ ἄλλους μυρίους.

29 *Μενάνδρου Ἐπαγγελλόμενος.*

Τὸ σὸν ταπεινόν, ἂν σὺ σεμνύνῃ, καλὸν
ἔξω φανεῖται, φίλ᾽ ἄνερ· ἂν δ᾽ αὐτὸς ποιῇς
ταπεινὸν αὐτὸ καὶ τιθῇς ἐν μηδενί,
οἰκεῖος οὗτος κατάγελως νομίζεται.

30. 31. *Τοῦ αὐτοῦ Κανηφόρος.*

Τὸ γὰρ προθύμως μὴ πονήσαντας τυχεῖν
εὐδαιμονίας εἴωθ᾽ ὑπερηφανίας ποιεῖν.

32 *Εὐριπίδου Τηλέφῳ.*

Σὺ δ᾽ εἴκ᾽ ἀνάγκῃ καὶ θεοῖσι μὴ μάχου.
τόλμα δὲ προσβλέπειν με καὶ φρονήματος
χάλα. τά τοι μέγιστα πολλάκις θεὸς
ταπείν᾽ ἔθηκε καὶ συνέστειλεν πάλιν.

33 *Αἰλιανοῦ ἱστοριῶν* (III, 28).

Ὁρῶν ὁ Σωκράτης τὸν Ἀλκιβιάδην τετυφωμένον ἐπὶ τῷ πλούτῳ καὶ μέγα φρονοῦντα ἐπὶ τῇ περιουσίᾳ καὶ τοῖς ἀγροῖς ἤγαγεν αὐτὸν εἴς τινα τῆς πόλεως τόπον, ἔνθα ἀνέκειτο πινάκιον ἔχον γῆς περίοδον, καὶ προσέταξε τῷ Ἀλκιβιάδῃ τὴν Ἀττικὴν ἐνταῦθ᾽ ἀναζητεῖν. ὡς δ᾽ εὗρε, προσέταξε αὐτῷ τοὺς ἀγροὺς τοὺς ἰδίους διαθρῆσαι· τοῦ δὲ εἰπόντος "ἀλλ᾽ οὐδαμοῦ γε-

γραμμένοι εἰσίν," "ἐπὶ τούτοις οὖν" εἶπε "μέγα φρονεῖς, οἵπερ οὐδὲν μέρος τῆς γῆς εἰσίν;"

34 Δημοσθένους (Cor. 269).

Παιδείας τῶν μὲν ἀληθῶς τετυχηκότων οὐδ' ἂν εἷς εἴποι μέγα οὐδὲ περὶ ἑαυτοῦ, ἀλλὰ καὶ ἑτέρου λέγοντος ἐρυθριάσειεν ἄν· τοῖς δ' ἀπολειφθεῖσι μὲν προσποιουμένοις δὲ ὑπὸ ἀναισθησίας τοὺς ἀκούοντας ἀλγεῖν ποιεῖ.

35 Σωκράτης.

Παρὰ τῷ τύφῳ, καθάπερ παρὰ κακῷ πλάστῃ, διεστραμμένας τὰς τῶν πραγμάτων εἰκόνας ἰδεῖν ἔστιν.

36 Σωκράτους.

Ἡ δεισιδαιμονία καθάπερ πατρὶ τῷ τύφῳ πείθεται.

37 Τοῦ αὐτοῦ.

Τοὺς μὲν κενοὺς ἀσκοὺς τὸ πνεῦμα διίστησι, τοὺς δὲ ἀνοήτους ἀνθρώπους τὸ οἴημα.

38 Σωκράτους.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνες βάναυσοι; "οἱ τῶν ὁμοίων" ἔφη "καταφρονοῦντες."

39 Φαβωρίνου.

Φρονήσῃς μὲν οὖν μηδέποτε ἐπὶ σεαυτῷ μέγα, ἀλλὰ μηδὲ καταφρονήσῃς σεαυτοῦ.

40 Διογένους.

Τῆς ἀλαζονείας καθάπερ τῶν κεχρυσωμένων ὅπλων οὐχ ὅμοιά ἐστι τὰ ἐντὸς τοῖς ἐκτός.

41 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὁ τῦφος ὥσπερ ποιμὴν οὗ θέλει τοὺς πολλοὺς ἄγει.

42 Δημοκρίτου.

Τελευτᾷ γὰρ ἐς κακοδοξίην κακὴν ὁ παρεκτεινόμενος τῷ κρείσσονι.

43 *Δημοκράτους.*

Δημοκράτης ἀναβαίνων εἰς τὴν ἀκρόπολιν ἐν γήραι καὶ πνευστιῶν ποιεῖν ἔφη ὅπερ καὶ ξύμπασα ἡ τῶν Ἀθηναίων πόλις· πνεῖν μὲν γὰρ μέγα, ἰσχύειν δὲ μικρόν.

44 *Ξενοφῶντος* (Cyrop. II, 2, 12).

Ὁ μὲν γὰρ ἀλαζὼν ἔμοιγε δοκεῖ ὄνομα κεῖσθαι ἐπὶ τοῖς προσποιουμένοις καὶ πλουσιωτέροις εἶναι ἢ εἰσὶ καὶ ἀνδρειοτέροις, καὶ ποιήσειν ἃ μὴ ἱκανοί εἰσιν ὑπισχνουμένοις, καὶ ταῦτα φανεροῖς γιγνομένοις, ὅτι τοῦ λαβεῖν τι ἕνεκα καὶ κερδᾶναι ποιοῦσιν· οἱ δὲ μηχανώμενοι γέλωτα τοῖς συνοῦσι μήτε ἐπὶ τῷ αὑτῶν κέρδει μήτε ἐπὶ ζημίᾳ τῶν ἀκουόντων μήτ' ἐπὶ βλάβῃ μηδεμιᾷ, πῶς οὐχ οὗτοι ἀστεῖοι ἂν καὶ εὐχάριστοι ὀνομάζοιντο δικαιότερον ἢ ἀλαζόνες;

45 *Ξενοφῶντος ἐν τῷ η'* (4, 14) *τῆς Κύρου παιδείας.*

Δοκεῖ δέ μοι, ὦ Κῦρε, χαλεπώτερον εἶναι εὑρεῖν ἄνδρα τἀγαθὰ καλῶς ἢ τὰ κακὰ φέροντα. τὰ μὲν γὰρ ὕβριν τοῖς πολλοῖς, τὰ δὲ σωφροσύνην τοῖς πᾶσιν ἐμποιεῖ.

46 *Ἡροδότου* (7, 10).

Ὁρᾷς τὰ ὑπερέχοντα ζῶα ὡς κεραυνοῖ ὁ θεὸς οὐδ' ἐᾷ φαντάζεσθαι, τὰ δὲ σμικρὰ οὐδέν μιν κνίζει· ὁρᾷς δὲ ὡς ἐς οἰκήματα τὰ μέγιστα αἰεὶ καὶ δένδρεα τὰ τοιαῦτα ἀποσκήπτει βέλεα· φιλέει γὰρ ὁ θεὸς τὰ ὑπερέχοντα πάντα κολούειν. οὕτω δὲ καὶ στρατὸς πολὺς ὑπ' ὀλίγου διαφθείρεται κατὰ τοιόνδε, ἐπει-

δάν σφιν ὁ θεὸς φθονήσας φόβον ἐμβάλῃ ἢ βροντήν, δι' ὧν ἐφθάρησαν ἀξίως ἑωυτῶν. οὐ γὰρ ἐᾷ φρονέειν ὁ θεὸς μέγα ἄλλον ἢ ἑωυτόν.

ΠΕΡΙ ΦΙΛΑΥΤΙΑΣ. ΚΓ.

1 Κριτίου.

Δεινὸν δ' ὅταν τις μὴ φρονῶν δοκῇ φρονεῖν.

2 Σωσικράτους.

Ἀγαθοὶ δὲ τὸ κακὸν ἐσμὲν ἐφ' ἑτέρων ἰδεῖν·
αὐτοὶ δ' ὅταν ποιῶμεν, οὐ γιγνώσκομεν.

3 Μενάνδρου.

Οὐδεὶς ἐφ' αὑτοῦ τὰ κακὰ συνορᾷ, Πάμφιλε,
σαφῶς, ἑτέρου δ' ἀσχημονοῦντος ὄψεται.

4 Τοῦ αὐτοῦ Ἀσπίδος.

Ὃ βούλεται γὰρ μόνον ὁρῶν καὶ προσδοκῶν
ἀλόγιστος ἔσται τῆς ἀληθείας κριτής.

5 Εὐριπίδου.

Ἅπαντες ἐσμὲν εἰς τὸ νουθετεῖν σοφοί·
αὐτοὶ δ' ὅταν σφαλῶμεν, οὐ γινώσκομεν.

6 Αἰσώπου.

Αἴσωπος ἔφη δύο πήρας ἕκαστον ἡμῶν φέρειν, τὴν μὲν ἔμπροσθεν τὴν δὲ ὄπισθεν· καὶ εἰς μὲν τὴν ἔμπροσθεν ἀποτιθέναι τὰ τῶν ἄλλων ἁμαρτήματα, εἰς δὲ τὴν ὄπισθεν τὰ ἑαυτῶν· διὸ οὐδὲ καθορῶμεν αὐτά.

7 Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.

Οὕτως ἔνιοι αὑτοῖς δοκοῦσι φιλοσοφεῖν ὡς καὶ νήφειν οἱ μεθύοντες.

8 Σωκράτους.

Σωκράτης ἔλεγεν, εἴ τις ἐν θεάτρῳ ὑποκηρύττοι ἀνίστασθαι τοὺς σκυτοτόμους, ἐκείνους μόνους ἀναστήσεσθαι, ὁμοίως εἰ τοὺς χαλκοτύπους, τοὺς ὑφάντας, τοὺς ἄλλους κατὰ γένος· εἰ δὲ τοὺς φρονίμους ἢ δικαίους, πάντας ἀναστήσεσθαι. καὶ ἔστιν ἐν βίῳ βλάπτον μάλιστα τὸ ἀνοήτους ὄντας τοὺς πολλοὺς οἴεσθαι φρονίμους εἶναι.

9 *Δημοσθένους* (Olynth. III p. 33).

Διόπερ ῥᾷστόν ἐστιν ἁπάντων ἑαυτὸν ἐξαπατᾶν· ὃ γὰρ βούλεται, τοῦθ' ἕκαστος καὶ οἴεται· τὰ δὲ πράγματα πολλάκις οὐχ οὕτω πέφυκε.

10 *Διογένους*.

Διογένης ἔφη τῶν ἀνθρώπων ἐνίους τὰ δέοντα λέγοντας ἑαυτῶν οὐκ ἀκούειν, ὥσπερ καὶ τὰς λύρας καλὸν φθεγγομένας οὐκ αἰσθάνεσθαι.

11 *Ἡροδότου ἱστορίας γ'* (38).

Εἰ γάρ τις προθείη πᾶσιν ἀνθρώποισιν ἐκλέξασθαι κελεύων νόμους τοὺς καλλίστους ἐκ τῶν πάντων νόμων, διασκεψάμενοι ἂν ἑλοίατο ἕκαστος τοὺς ἑωυτῶν· οὕτω νομίζουσι πολύ τι καλλίστους τοὺς ἑωυτῶν νόμους ἕκαστοι εἶναι.

12 *Ἐν ταυτῷ* (53).

Ἡ φιλοτιμίη κτῆμα σκαιόν. μὴ τῷ κακῷ τὸ κακὸν ἰῶ. πολλοὶ τῶν δικαίων τὰ ἐπιεικέστερα προτιθέασι, πολλοὶ δὲ ἤδη τὰ μητρῷα διζήμενοι τὰ πατρῷα ἀπέβαλον.

13 *Πλάτωνος*.

Πλάτων συνεβούλευεν, ὅτε καταγελάσομέν τινων, ἐπιστρέφειν πρὸς ἑαυτοὺς καὶ σκοπεῖν μὴ καὶ αὐτοὶ τοῖς αὐτοῖς ἐσμὲν ἔνοχοι. πολλὰ γὰρ τὸ φίλαυ-

τον ἐπικρύπτει, καὶ περιβάλλει παρὰ τῷ ἄλλων καταγελῶντι.

14 *Ἀπολλώνιος Σατύρῳ.*

Οἱ πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων τῶν μὲν ἰδίων ἁμαρτημάτων συνήγοροι γίνονται, τῶν δὲ ἀλλοτρίων κατήγοροι.

15 *Εὐσεβίου.*

Πολλοὶ δοκέοντες ἑωυτοὺς φιλέειν οὐ φιλέουσιν ἀληθέως· πάντα γοῦν αὐτοῦ τούτου ἕνεκα εἴκοντες ἑωυτοῖς καὶ παρὰ τὸ ἀτρεκὲς χαριζόμενοι αὐτοῖς τοῖς ἐναντιωτάτοις περιπίπτουσι.

16 *Εὐσεβίου.*

Πολλοὶ βουλόμενοι δοκέειν εἶναι εὐβουλότατοι πρὸς τῶν οἰκειοτάτων καὶ εὖ φρονεόντων ἀναποδιζόμενοι οὐκ ἀξιεῦσιν ἀπὸ τῶν δοξάντων ἅπαξ ἀναχωρέειν, ἀλλ᾽ ὅκως μὴ ἐλεγχοίατο ὡς ἀπὸ ἡμαρτημένης ἀφιστάμενοι ἐμμένουσι τῇ γνώμῃ, ἐς ὃ δὴ καὶ τοῖς ἀπ᾽ αὐτῆς κακοῖς ἐγκυρήσωσι.

17 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κρατύλου* (428 d).

Τὸ γὰρ ἐξαπατᾶσθαι αὐτὸν ὑφ᾽ αὑτοῦ πάντων χαλεπώτατον. ὅταν γὰρ μηδὲ σμικρὸν ἀποστατῇ ἀλλ᾽ ἀεὶ παρῇ ὁ ἐξαπατήσων, πῶς οὐ δεινόν;

18 *Τοῦ αὐτοῦ νόμων ε´* (731 d).

Πάντων δὲ μέγιστον κακὸν ἀνθρώποις τοῖς πολλοῖς ἔμφυτον ἐν ταῖς ψυχαῖς ἐστιν, οὗ πᾶς αὑτῷ ξυγγνώμην ἔχων ἀποφυγὴν οὐδεμίαν μηχανᾶται. τοῦτο δ᾽ ἐστὶν ὃ λέγουσιν, ὡς φίλος αὑτῷ πᾶς ἄνθρωπος φύσει τέ ἐστι καὶ ὀρθῶς ἔχει τὸ δεῖν εἶναι τοιοῦτον. τὸ δὲ ἀληθείᾳ γε πάντων ἁμαρτημάτων διὰ τὴν σφόδρα ἑαυτοῦ φιλίαν αἴτιον ἑκάστῳ γίγνεται ἑκάστοτε.

τυφλοῦται γὰρ περὶ τὸ φιλούμενον ὁ φιλῶν· ὥστε τὰ δίκαια καὶ τὰ ἀγαθὰ καὶ τὰ καλὰ κακῶς κρίνει, τὸ αὑτοῦ πρὸ τοῦ ἀληθοῦς ἀεὶ τιμᾶν δεῖν ἡγούμενος. οὔτε γὰρ ἑαυτὸν οὔτε τὰ ἑαυτοῦ χρὴ τόν γε μέγαν ἄνδρα ἐσόμενον στέργειν· ἀλλὰ τὰ δίκαια, ἐάν τε παρ' αὑτῷ ἐάν τε παρ' ἄλλῳ μᾶλλον πραττόμενα τυγχάνῃ. ἐκ ταὐτοῦ δὲ ἁμαρτήματος τούτου καὶ τὸ τὴν ἀμαθίαν τὴν παρ' αὑτῷ δοκεῖν σοφίαν εἶναι γέγονε πᾶσιν· ὅθεν οὐκ εἰδότες, ὡς ἔπος εἰπεῖν, οὐδὲν οἰόμεθα τὰ πάντα εἰδέναι, οὐκ ἐπιτρέποντες δὲ ἄλλοις ἃ μὴ ἐπιστάμεθα πράττειν, ἀναγκαζόμεθα ἁμαρτάνειν αὐτοὶ πράττοντες. διὸ πάντα ἄνθρωπον χρὴ φεύγειν τὸ σφόδρα φιλεῖν αὑτόν, τὸν δὲ αὑτοῦ βελτίω διώκειν δεῖ, μηδεμίαν αἰσχύνην ἐπὶ τῷ τοιούτῳ πρόσθεν ποιούμενον.

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΣΥΝΕΙΔΟΤΟΣ. ΚΔ.

1 *Διφίλου.*

Ὅστις γὰρ αὐτὸς αὑτὸν οὐκ αἰσχύνεται
συνειδόθ' αὑτῷ φαῦλα διαπεπραγμένῳ,
πῶς τόν γε μηδὲν εἰδότ' αἰσχυνθήσεται;

2 *Πυθαγόρου* (Aur. carm. 12).

Πάντων δὲ μάλιστ' αἰσχύνεο σαυτόν.

3 *Μενάνδρου.*

Ὁ συνιστορῶν αὑτῷ τι, κἂν ᾖ θρασύτατος,
ἡ σύνεσις αὐτὸν δειλότατον εἶναι ποιεῖ.

4 *Σοφοκλέους.*

Κλέπτων δ' ὅταν τις ἐμφανῶς ἐφευρεθῇ,
σιγᾶν ἀνάγκη, κἂν καλὸν φέρῃ στόμα.

5 Εὐριπίδου Ὀρέστῃ (395).

Ὀρέστα τλῆμον, τίς σ' ἀπόλλυσιν νόσος;
ἡ σύνεσις, ὅτι σύνοιδα δείν' εἰργασμένος.

6 Σοφοκλέους.

Ἦ δεινὸν ἆρ' ἦν, ἡνίκ' ἂν τις ἐσθλὸς ὢν
αὑτῷ συνειδῇ.

7 Ἀντιφάνους.

Τὸ μὴ συνειδέναι γὰρ αὑτοῦ τῷ βίῳ
ἀδίκημα μηδὲν ἡδονὴν πολλὴν ἔχει.

8 Πυθαγόρου.

Κακὰ μείζω πάσχει διὰ τοῦ συνειδότος ὁ ἀδικῶν βασανιζόμενος ἢ ὁ τῷ σώματι καὶ ταῖς πληγαῖς μαστιγούμενος.

9 Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον (§. 16).

Μηδέποτε μηδὲν αἰσχρὸν ποιήσας ἔλπιζε λήσειν· καὶ γὰρ ἂν τοὺς ἄλλους λήσῃς, σαυτῷ συνειδήσεις.

10 Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι (§. 52).

Μηδὲν ἀποκρύπτεσθε μήθ' ὧν κέκτησθε μήθ' ὧν ποιεῖτε μήθ' ὧν μέλλετε πράττειν, εἰδότες ὅτι περὶ τὰ κεκρυμμένα τῶν πραγμάτων ἀναγκαῖόν ἐστι πολλοὺς φόβους γίγνεσθαι.

11 Βίαντος.

Βίας ἐρωτηθεὶς τί ἂν εἴη τῶν κατὰ βίον ἄφοβον εἶπεν "ὀρθὴ συνείδησις."

12 Περιάνδρου.

Περίανδρος ἐρωτηθεὶς τί ἐστιν ἐλευθερία εἶπεν "ἀγαθὴ συνείδησις."

13 Σωκράτους.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνες ἀταράχως ζῶσιν εἶπεν "οἱ μηδὲν ἑαυτοῖς ἄτοπον συνειδότες."

14 *Διογένους.*

Τίς γὰρ ἂν ἧττον φοβοῖτό τι ἢ θαρσοίη μάλιστα ἢ ὅστις αὑτῷ μηδὲν συνειδείη κακόν;

15 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ εὐθυμίας* (476 f).

Τὸ γὰρ συνειδὸς οἷον ἕλκος ἐν σαρκὶ τῆς ψυχῆς τὴν μεταμέλειαν αἱμάσσουσαν ἀεὶ καὶ νύσσουσαν ἐναπολείπει. τὰς μὲν γὰρ ἄλλας ἀναιρεῖ λύπας ὁ λόγος, τὴν δὲ μετάνοιαν αὐτὸς ἐνεργάζεται δακνομένην σὺν αἰσχύνῃ καὶ κολαζομένην ὑφ' αὑτῆς. ὡς γὰρ οἱ ῥιγοῦντες καὶ πυρετοῖς διακαιόμενοι τῶν ταυτὰ παθόντων ἔξωθεν ὑπὸ καύματος καὶ κρύους μᾶλλον ἐνοχλοῦνται καὶ κάκιον ἔχουσιν, οὕτως ἐλαφροτέρας ἔχει τὰ τυχηρὰ τὰς λύπας ὥσπερ ἔξωθεν ἐπιφερομένας. τὸ δὲ "οὔ τις ἐμοὶ τῶν ἄλλος ἐπαίτιος, ἀλλ' ἐγὼ αὐτός," ἐπιθρηνούμενον τοῖς ἁμαρτανομένοις ἔνδοθεν ἐξ αὐτοῦ, βαρύτερον ποιεῖ τῷ αἰσχρῷ τὸ ἀλγεινόν.

16 *Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι* (§. 59).

Ζηλοῦτε μὴ τοὺς πλεῖστα κεκτημένους ἀλλὰ τοὺς μηδὲν κακὸν σφίσιν αὐτοῖς συνειδότας. μετὰ γὰρ τῆς τοιαύτης τύχης ἥδιστ' ἂν τις δύναιτο τὸν βίον διαγαγεῖν.

ΠΕΡΙ ΜΝΗΜΗΣ. ΚΕ.

1 *Πορφυρίου περὶ τῶν τῆς ψυχῆς δυνάμεων.*

Ὥσπερ γὰρ ἐκ τῶν ἐνεργειῶν καὶ τὰς ἄλλας κατε-

λαβόμεθα, οὕτως ἀναθεωροῦντες κατὰ συναναφορὰν γιγνομένην καὶ μνήμην τῶν ἢ δι' αἰσθήσεως καταληφθέντων ἢ διὰ λόγου ἐθέμεθα καὶ ταύτην ψυχῆς δύναμιν; ἣ τῇ συναναφορᾷ καλεῖται μνήμη, ἣν ἀφορίζεται Ἀριστοτέλης κατοχὴν φαντάσματος, ὡς εἰκόνος, οὗ φαντάσματα εἰκών· οἷον ὅταν γένηται ἡ αἴσθησις ἀνελθοῦσα ἐπὶ τὴν φανταστικὴν κατασκευήν, τὸ γενόμενον ἐν τῇ φανταστικῇ τὸ πάθος ὅ τι δή ποτε ὂν καλεῖται φάντασμα. ἔτι οὖν καὶ ἀρθέντος τοῦ αἰσθητικοῦ ἐκ τῆς αἰσθήσεως, τὸ προσπῖπτον ἐν τῇ εἰκόνι τοῦ αἰσθητοῦ, ἀφ' οὗ συνέστηκε τὸ φάντασμα, εἰκόνος λόγον ἔχον πρὸς τὸ φανταστόν· οἷον γὰρ εἰκών τις ἐγένετο ἐν τῇ φανταστικῇ τοῦ ὑποπεσόντος ὑπὸ τὴν αἴσθησιν. ὅταν οὖν γένηται κατοχὴ περὶ τὴν φανταστικὴν τοῦ φαντάσματος, καλεῖται μνήμη. τοῦτο μὲν οὖν κοινὸν καὶ ἐν τοῖς ἀλόγοις ζῴοις· ἡ δὲ διηρθρωμένη, καθ' ἣν καὶ ἀναμιμνησκόμεθα, ἐν μόνοις ἐστὶ τοῖς λογικοῖς· ἴδιον γὰρ λογισμοῦ τὸ διηρθρωμένον. διὸ καὶ φασὶν οἱ περὶ τὸν Ἀριστοτέλην τὰ ἄλογα ζῷα μεμνῆσθαι μέν, ἀναμιμνήσκεσθαι δὲ μή, μόνον δὲ τὸν ἄνθρωπον καὶ μνημονεύειν καὶ ἀναμιμνήσκεσθαι.

2 *Πλάτωνος ἐκ Κρατύλου* (437 b).

Ἡ μνήμη παντί που μηνύει ὅτι μονή ἐστιν ἐν τῇ ψυχῇ ἀλλ' οὐ φορά.

3 *Ἀριστοτέλους περὶ μνήμης.*

Τὴν δὲ κατοχὴν τῶν φαντασμάτων μνήμην ἐπονομάζεσθαι, τὴν δ' ἀναπόλησιν τούτων ἀνάμνησιν· οὐ τοὺς αὐτοὺς δ' εἶναι μνημονικούς τε καὶ ἀναμνηστικούς, ἀλλ' ὡς ἐπιπολὺ μνημονικωτέρους μὲν ὑπάρχειν τοὺς βραδεῖς, ἀναμνηστικωτέρους δὲ τοὺς ταχεῖς καὶ εὐμαθεῖς. διαφέρειν δὲ τῆς φαντασίας τὴν

μνήμην, ὅτι ἣ μὲν κίνησίς ἐστιν αἰσθήσεως ἐνεργούσης ἢ διανοίας (φαντάσματα γὰρ ἄμφω λέγειν ὁμοίως ἡμᾶς), ἣ δ' οἷον ζωγράφημά τι τῆς ψυχῆς· τὴν γὰρ γιγνομένην κίνησιν τῆς αἰσθήσεως σημαίνεσθαί τινα τρόπον ἐν αὐτῇ παραπλησίως τοῖς σφραγιζομένοις διὰ τῶν δακτυλίων. διὸ καὶ τοῖς μὲν ἐν κινήσει πολλῇ διὰ πάθος ἢ δι' ἡλικίαν οὖσιν οὐ γίγνεσθαι, καθάπερ εἰς ὕδωρ ῥέον ἐμπιπτούσης τῆς κινήσεως καὶ τῆς σφραγῖδος· τοῖς δὲ διὰ τὸ ψύχεσθαι, καθάπερ καὶ τὰ παλαιὰ τῶν οἰκοδομημάτων· καὶ διὰ σκληρότητα δὲ τοῦ δεχομένου τὸ πάθος οὐκ ἐγγίνεσθαι τοὺς τύπους. διόπερ τούς τε νέους σφόδρα καὶ τοὺς γέροντας ἀμνήμονας εἶναι· ὑπορρεῖν γὰρ τῶν μὲν διὰ τὴν αὔξησιν τῶν δὲ διὰ τὴν φθίσιν. ὁμοίως δὲ καὶ τοὺς λίαν ταχεῖς ἢ βραδεῖς· οὐδετέρους γὰρ τούτων φαίνεσθαι μνημονεύοντας· τοὺς μὲν γὰρ ὑγροτέρους εἶναι τοῦ δέοντος τοὺς δὲ σκληροτέρους, παρ' ὃ καὶ τῶν μὲν οὐ μένειν ἐν τῇ ψυχῇ τὸ φάντασμα τῶν δ' οὐχ ἅπτεσθαι τὸ παράπαν.

4 *Ἐκ τῆς Πλάτωνος πρὸς Διονύσιον ἐπιστολῆς* (314 c).

Μεγίστη δὲ φυλακὴ τὸ μὴ γράφειν ἀλλ' ἐκμανθάνειν· οὐ γὰρ ἔστι τὰ γραφέντα μὴ οὐκ ἐκπεσεῖν. διὰ ταῦτ' οὐδὲν πώποτ' ἐγὼ περὶ τούτων γέγραφα, οὐδ' ἔστι Πλάτωνος σύγγραμμα οὐδέν, οὐδ' ἔσται· τὰ δὲ νῦν λεγόμενα Σωκράτους ἐστὶ καλοῦ καὶ νέου γεγονότος.

5 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου* (34 a).

Τὸ δ' ἐν ἑνὶ πάθει τὴν ψυχὴν καὶ τὸ σῶμα κοινῇ γιγνόμενον κοινῇ καὶ κινεῖσθαι, ταύτην δὴ τὴν κίνησιν ὀνομάζων αἴσθησιν οὐκ ἀπὸ τρόπου φθέγγοι' ἄν.

Ἀληθέστατα λέγεις. Οὐκ οὖν ἤδη μανθάνομεν ὃ βουλόμεθα καλεῖν τὴν αἴσθησιν; Τί μήν; Σωτηρίαν τοίνυν αἰσθήσεως τὴν μνήμην λέγων ὀρθῶς ἄν τις λέγοι, κατά γε τὴν ἐμὴν γνώμην. Ὀρθῶς γὰρ οὖν. Μνήμης δὲ ἀνάμνησιν ἆρ᾽ οὐ διαφέρουσαν ἔγνωμεν; Ἴσως. Ἆρ᾽ οὐ τόδε; Τὸ ποῖον; Ὅταν ἃ μετὰ τοῦ σώματος ἔπασχε πάθη ψυχή, ταῦτα ἄνευ σώματος αὐτὴ ἐν ἑαυτῇ ὅτι μάλιστα ἀναλαμβάνῃ, τότε ἀναμιμνήσκεσθαί που λέγομεν. ἦ γάρ; Πάνυ μὲν οὖν. Καὶ μὴν καὶ ὅταν ἀπολέσασα μνήμην, εἴτ᾽ αἰσθήσεως εἴτ᾽ αὖ μαθήματος, αὖθις ταύτην ἀναπολήσῃ πάλιν αὐτὴ ἐν ἑαυτῇ, καὶ ταῦτα ξύμπαντα ἀναμνήσεις καὶ μνήμας που λέγομεν. Ὀρθῶς λέγεις.

6 *Ἰαμβλίχου ἐκ τοῦ περὶ ψυχῆς.*

Τούτων οὐσῶν τῶν κοινοτάτων δυνάμεων εἰσὶ καὶ ἄλλαι τῆς ψυχῆς δυνάμεις, κατ᾽ αὐτὴν μέν, οὐ μὴν συμπληρωτικαὶ αὐτῆς, ὡς ἡ μνήμη κατοχὴ οὖσα φαντάσματος.

ΠΕΡΙ ΛΗΘΗΣ. Κϛ.

1 *Σοφοκλέους ἐκ Συνδείπνου.*

Λάθα Πιερίδων στυγερὰ καὶ ἀνάρατος,
ἁ δὲ μνᾶστις θνατοῖς εὐποτμοτάτα
μελέων ἀνέχουσα βίου βραχὺν ἰσθμόν.

2 *Εὐριπίδου Ὀρέστου* (213).

Ὦ πότνια λήθη τῶν κακῶν, ὡς εἶ σοφή,
καὶ τοῖσι δυστυχοῦσιν εὐκταία θεός.

3 *Σοφοκλέους Ὕβρεως Σατύρων.*

Λήθην τε τὴν ἅπαντ᾽ ἀπεστερημένην,
κωφὴν ἄναυδον.

4 *Τοῦ αὐτοῦ Μυσῶν.*

Ὡς τοῖς κακῶς πράσσουσιν ἡδὺ καὶ βραχὺν
χρόνον λαθέσθαι τῶν παρεστώτων κακῶν.

5 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου* (33 e).

Ἔστι γὰρ λήθη μνήμης ἔξοδος.

6 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ συμποσίου* (208 a).

Ὃ γὰρ καλεῖται μελετᾶν ὡς ἐξιούσης ἐστὶ τῆς ἐπιστήμης· λήθη γὰρ ἐπιστήμης ἔξοδος.

ΠΕΡΙ ΟΡΚΟΥ. ΚΖ.

1 *Χοιρίλου Περσηίδος.*

Ὅρκον δ' οὔτ' ἄδικον χρεὼν ἔμμεναι οὔτε δίκαιον.

2 *Αἰσχύλου.*

Οὐκ ἀνδρὸς ὅρκοι πίστις, ἀλλ' ὅρκων ἀνήρ.

3 *Ἀλέξιδος ἐκ Θητευόντων.*

Ὅρκος βέβαιός ἐστιν, ἂν νεύσω μόνον.

4 *Ἄμφιδος.*

Ὅστις γὰρ ὀμνύοντι μηδὲν πείθεται,
αὐτὸς ἐπιορκεῖν ῥαδίως ἐπίσταται.

5 *Ἀντιφάνους.*

Δέσποιν', ὅταν τις ὀμνύοντος καταφρονῇ,
ᾧ μὴ σύνοιδε πρότερον ἐπιωρκηκότι,
οὗτος καταφρονεῖν τῶν θεῶν ἐμοὶ δοκεῖ
καὶ πρότερον ὀμόσας αὐτὸς ἐπιωρκηκέναι.

6 *Σοφοκλέους Ἱπποδαμείας.*

Ὅρκου δὲ προστεθέντος ἐπιμελεστέρα
ψυχὴ κατέστη. δισσὰ γὰρ φυλάσσεται,
φίλων τε μέμψιν κεἰς θεοὺς ἁμαρτάνειν.

7 *Ἀπολλοδώρου.*

Μάστιγος οὔσης ὅρκον οἰκέτῃ δίδως;

8 *Ἀντιφάνους.*

Ὁ διδοὺς τὸν ὅρκον τῷ πονηρῷ μαίνεται·
τοὐναντίον γὰρ νῦν ποιοῦσιν οἱ θεοί.
ἐὰν ἐπιορκήσῃ τις αὐτούς, εὐθέως
ὁ διδοὺς τὸν ὅρκον ἐγένετ' ἐμβρόντητος, ὡς
οἶμαι δικαίως, ὅτι πεπίστευκέν τινι.

9 *Ἀλέξιδος Ὀλυνθίων.*

Οὐ τοῖς γὰρ ὀμνύουσι τὸν φρονοῦντα δεῖ,
τοῖς πράγμασιν δ' αὐτοῖσι πιστεύειν ἀεί.

10 *Λυκούργου.*

Δεῖ φίλοις καὶ τοῖς οἰκείοις βοηθεῖν ἄχρι τοῦ μὴ ἐπιορκεῖν.

11 *Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον* (§. 23).

Ὅρκον ἐπακτὸν προσδέχου διὰ δύο προφάσεις, ἢ σαυτὸν αἰτίας αἰσχρᾶς ἀπολύων ἢ φίλους ἐκ μεγάλων κινδύνων διασώζων. ἕνεκα δὲ χρημάτων μηδένα θεῶν ὀμόσῃς μηδ' ἂν εὐορκεῖν μέλλῃς· δόξεις γὰρ τοῖς μὲν ἐπιορκεῖν τοῖς δὲ φιλοχρημάτως ἔχειν.

12 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (33).

Ὅρκον παραίτησαι εἰ μὲν οἷόν τε εἰς ἅπαν, εἰ δὲ μή, ἐκ τῶν ἐνόντων.

13 *Εὐσεβίου.*

Οἱ πολλοὶ τοῖς ἀνθρώποις τὸ εὐόρκους εἶναι αὐτοῖς παραινέουσιν· ἐγὼ δὲ καὶ τὸ ἀρχὴν μηδ' εὐπετέως ὀμνύναι ὅσιον ἀποφαίνομαι.

14 *Ἡροδότου ἱστορίας ϛ'* (86).

Ἔλεξέ σφιν Λευτυχίδης τάδε· ὦ Ἀθηναῖοι, ποιέετε

μὲν ὁκότερα βούλεσθε αὐτοί· καὶ γὰρ ἀποδιδόντες, ποιέετε ὅσια, καὶ μὴ ἀποδιδόντες, τὰ ἐναντία τούτων. ὁποῖον μέντοι τι ἐν τῇ Σπάρτῃ συνηνέχθη γενέσθαι περὶ παραθήκης, βούλομαι ὑμῖν εἰπεῖν. λέγομεν ἡμεῖς οἱ Σπαρτιῆται γενέσθαι ἐν Λακεδαίμονι κατὰ τρίτην γενεὴν τὴν ἀπ' ἐμέο Γλαῦκον Ἐπικυδέος παῖδα· τοῦτον τὸν ἄνδρα φαμὲν τά τε ἄλλα πάντα περιήκειν τὰ πρῶτα, καὶ δὴ καὶ ἀκούειν ἄριστα δικαιοσύνης πέρι πάντων ὅσοι παρὰ Λακεδαίμονας τοῦτον τὸν χρόνον οἴκεον· συνενεχθῆναι δέ οἱ ἐν χρόνῳ ἱκνευμένῳ τάδε λέγομεν· ἄνδρα Μιλήσιον ἀπικόμενον ἐς Σπάρτην βούλεσθαί οἱ ἐλθεῖν ἐς λόγους προϊσχόμενον τοιάδε· εἰμὶ μὲν Μιλήσιος· ἥκω δὲ τῆς σῆς, Γλαῦκε, δικαιοσύνης βουλόμενος ἀπολαῦσαι. ἔδοξέ μοι οὖν τὰ ἡμίσεα τῆς οὐσίας ἐξαργυρώσαντα θέσθαι παρὰ σέ. χρόνου δὲ διελθόντος, ἦλθον ἐς Σπάρτην τοῦ παραθεμένου τὰ χρήματα οἱ παῖδες· ἐλθόντες δὲ ἐς λόγους τῷ Γλαύκῳ ἀπήτεον τὰ χρήματα· ὁ δὲ διωθέετο. οἱ μὲν δὴ Μιλήσιοι συμφορὴν ποιεύμενοι ἀπηλλάσσοντο, Γλαῦκος δ' ἐπορεύετο ἐς Δελφοὺς χρησόμενος τῷ χρηστηρίῳ· ἐπερωτῶντα δὲ αὐτὸν εἰ ὅρκῳ τὰ χρήματα ληίσεται, ἡ Πυθίη μετέρχεται τοῖσδε τοῖς ἔπεσι·

Γλαῦκ' Ἐπικυδείδη, τὸ μὲν αὐτίκα κέρδιον οὕτω
ὅρκῳ νικῆσαι καὶ χρήματα ληίσσασθαι.
ὄμνυ', ἐπεὶ θάνατός γε καὶ εὔορκον μένει ἄνδρα.
ἀλλ' ὅρκου παῖς ἐστιν ἀνώνυμος, οὐδ' ἔπι χεῖρες
οὐδὲ πόδες, κραιπνῶς δὲ μετέρχεται, εἰσόκε πᾶσαν
συμμάρψας ὀλέσῃ γενεὴν καὶ οἶκον ἅπαντα.
ἀνδρὸς δ' εὐόρκου γενεὴ κατόπισθεν ἀμείνων.

ταῦτα ἀκούσας ὁ Γλαῦκος συγγνώμην τὸν θεὸν παραιτέετο αὐτῷ ἴσχειν τῶν ῥηθέντων· ἡ δὲ Πυθίη ἔφη

τὸ πειρηθῆναι τοῦ θεοῦ καὶ τὸ ποιῆσαι ἴσον δύναται. Γλαῦκος μὲν δὴ μεταπεμψάμενος τοὺς Μιλησίους ξένους ἀποδίδωσί σφιν τὰ χρήματα. τοῦ δὲ εἵνεκα ὁ λόγος ὅδε, ὦ Ἀθηναῖοι, ὡρμήθη λέγεσθαι ἐς ὑμέας, εἰρήσεται. Γλαύκου νῦν οὐκέτι ἀπόγονόν ἐστιν οὐδέν, οὔτε ἱστίη οὐδεμία νομιζομένη εἶναι Γλαύκου· ἐκτέτριπταί τε πρόρριζος ἐκ Σπάρτης. οὕτως ἀγαθὸν μηδὲ διανοέεσθαι περὶ παραθήκης ἄλλο γε ἢ ἀπαιτεόντων ἀποδιδόναι.

ΠΕΡΙ ΕΠΙΟΡΚΙΑΣ. ΚΗ.

1 *Σοφοκλέους.*

Ὅρκοισι γάρ τοι καὶ γυνὴ φεύγει πικρὰν
ὠδῖνα παίδων, ἀλλ' ἐπὴν λήξῃ κακοῦ,
ἐν τοῖσιν αὐτοῖς δικτύοις ἁλίσκεται,
πρὸς τοῦ παρόντος ἱμέρου νικωμένη.

2 Ἀφροδίσιος γὰρ ὅρκος οὐκ ἐμποίνιμος.

3 *Καλλιμάχου.*

Ὤμοσεν, ἀλλὰ λέγουσιν ἀλαθέα τοὺς ἐν ἔρωτι
ὅρκους μὴ δύνειν οὔατ' ἐς ἀθανάτων.

4 *Διφίλου.*

Ὅρκος δ' ἑταίρας ταυτὸ καὶ δημηγόρου·
ἑκάτερος αὐτῶν ὀμνύει πρὸς ὃν λαλεῖ.

5 *Σοφοκλέους.*

Ὅρκος γὰρ οὐδεὶς ἀνδρὶ φηλήτῃ βαρύς.

6 *Εὐριπίδου* (Hippol. 612).

Ἡ γλῶσσ' ὀμώμοχ', ἡ δὲ φρὴν ἀνώμοτος.

7 *Μενάνδρου.*

Συγκέχυκε νῦν τὴν πίστιν ὁ καθ' ἡμᾶς βίος.

8 *Ἡσιόδου θεογονίας* (231).

Ὅρκον θ', ὃς δὴ πλεῖστον ἐπιχθονίους ἀνθρώπους
πημαίνει, ὅτε κέν τις ἑκὼν ἐπίορκον ὀμόσσῃ.

9 *Δημοκρίτου.*

Ὅρκους οὓς ποιέονται ἐν ἀνάγκαισιν ἐόντες, οὐ τηρέουσιν οἱ φλαῦροι ἐπὴν διαφύγωσιν.

10 *Εὐριπίδου* (Iphig. Aul. 394).

Οὐ γὰρ ἀσύνετον τὸ θεῖον, ἀλλ' ἔχει συνιέναι
τοὺς κακῶς παγέντας ὅρκους καὶ κατηναγκασμένους.

11 *Εὔφρονος Θεῶν ἀγορᾶς.*

Καινοὺς πορίζου πρός με θεῶν θεούς,
ἵνα τοὺς παλαιοὺς μὴ ἐπιορκῇς πολλάκις.

12 *Εὐριπίδου.*

Συγγνώμονάς τοι τοὺς θεοὺς εἶναι δοκεῖς,
ἐάν τις ὅρκοις θάνατον ἐκφεύγειν θέλῃ
ἢ δεσμὸν ἢ βίαια πολεμίων κακά.

13 *Εὐσεβίου.*

Φημὶ πάντα τὸν προαίρεσιν τοῦ ἐπιορκῆσαι ἀναδεξάμενον καὶ ὁρμήσαντα ἐπὶ τὸν ὅρκον, εἰ καὶ μὴ πέλας ᾖ τὸ ἔργον τῆς ἐπιορκίης τύχῃ τινὶ ἢ καὶ τῷ μὴ βουληθῆναι τὸν ἀπαιτέοντα, ὅμως αὐτὸν ἔχειν γνώμην τὴν τοῦ ψευδόρκου καὶ εἶναι τῆς ἐπὶ τῇ ἐπιορκίῃ ἁμαρτάδος τῆς ὀφειλευμένης κατὰ τῶν καὶ ἔργῳ ἐπιορκησάντων ἔνοχον τιμωρίης.

14 *Κλεάνθους.*

Κλεάνθης ἔφη τὸν ὀμνύοντα ἤτοι εὐορκεῖν ἢ ἐπι-

ορκεῖν καθ᾽ ὃν ὄμνυσι χρόνον. ἐὰν μὲν γὰρ οὕτως ὀμνύῃ ὡς ἐπιτελέσων τὰ κατὰ τὸν ὅρκον, εὐορκεῖν, ἐὰν δὲ πρόθεσιν ἔχων μὴ ἐπιτελεῖν, ἐπιορκεῖν.

15 *Χρυσίππου.*

Χρύσιππος διαφέρειν ἔφη τὸ ἀληθορκεῖν τοῦ εὐορκεῖν, καὶ τὸ ἐπιορκεῖν τοῦ ψευδορκεῖν. τὸν μὲν ὀμνύντα καθ᾽ ὃν ὀμνύει καιρὸν πάντως ἢ ἀληθορκεῖν ἢ ψευδορκεῖν· τὸ γὰρ ὀμνύμενον ὑπ᾽ αὐτοῦ ἢ ἀληθὲς εἶναι ἢ ψεῦδος, ἐπειδὴ ἀξίωμα τυγχάνει ὄν· τὸν δὲ ὀμνύντα μὴ πάντως καθ᾽ ὃν ὀμνύει χρόνον ἢ εὐορκεῖν ἢ ἐπιορκεῖν, ὅτε μὴ πάρεστιν ὁ χρόνος, εἰς ὃν ἡ ἀναφορὰ τῶν ὅρκων ἐγίγνετο. ὃν τρόπον γὰρ λέγεσθαί τινα εὐσυνθετεῖν ἢ ἀσυνθετεῖν, οὐχ ὅτε συντίθεται ἀλλ᾽ ὅτε οἱ χρόνοι ἐνίστανται τῶν κατὰ τὰς ὁμολογίας, οὕτω καὶ εὐορκεῖν τις καὶ ἐπιορκεῖν ῥηθήσεται, ὅταν οἱ καιροὶ παραστῶσι, καθ᾽ οὓς ὡμολόγησεν ἐπιτελέσειν τὰ κατὰ τοὺς ὅρκους.

16 *Ξενοφῶντος ἐν τῇ Κύρου ἀναβάσει βιβλίου β΄* (5, 7).

Πρῶτον μὲν γὰρ καὶ μέγιστον οἱ θεῶν ὅρκοι κωλύουσιν ἡμᾶς πολεμίους εἶναι ἀλλήλοις· ὅστις δὲ τούτων σύνοιδεν ἑαυτῷ παρημεληκώς, τοῦτον οὔ ποτ᾽ ἂν ἐγὼ εὐδαιμονίσαιμι. τὸν γὰρ θεῶν πόλεμον οὐκ οἶδα οὔτε ἀπὸ ποίου ἂν τάχους φεύγων τὶς ἀποφεύγοι, οὔτε εἰς ὁποῖον ἂν σκότος ἀποδραίη, οὔτε ὅπως ἂν εἰς ὀχυρὸν χωρίον ἀποσταίη. πάντῃ γὰρ πάντα τοῖς θεοῖς ὕποχα, καὶ πάντῃ πάντων ἴσον οἱ θεοὶ κρατοῦσιν.

17 *Ἡροδότου ἱστορίας α΄* (74).

Ἄνευ γὰρ ἀναγκαίης ἰσχυρῆς πίστιες ἰσχυραὶ οὐκ ἐθέλουσι συμμένειν.

18 Χρυσὸν μὲν ἄνθρωποι βαναύσῳ τέχνῃ προσθάλψαντες ἔγνωσαν τὸ κρήγυον· ἄνδρα δὲ οὐκ ἔστι δεξιὸν γνώμῃ σταθμησάμενον ἀθρῆσαι. τοιήδε τις τὸ παλαιὸν ἡμέας ἐκ θεῶν συνέστησε μοῖρα. χρὴ δὲ πίστιν ἐν φιλίῃ τίθεσθαι κραδίῃ μὴ διπλῇ πεφυρμένους μηδ' ὅρκον ἐπιορκίης προσφιλέστερον ἡγεομένους· ὁ γὰρ τοιόσδε τῶν ἀνδρῶν τὴν μὲν ἐκ θεῶν ἀναβάλλεται τιμωρίην, ἐπὶ δὲ τοῦ καθεστῶτος πικρὴν ψυχαγωγίην ἔχων τέρπεται μωρὸς ἐών. τίς γὰρ οὐκ οἶδεν ὡς μένει τὸν κακὸν δίκη; εἰ δ' οὐ παρὰ πόδα τιμωρίης ἔτυχεν ἀλλ' ἐν χρόνῳ, κέρδος ἡγεέσθω τοὺς διεστῶτας ἡλίους, οὓς * περσῶν ἐκτὸς ἀμηρύτους ὁ θεὸς παρεπιδημέειν εἶχεν ἐν ζωίοις. ὡς δ' οὐ νωθρὴν ἔχει τὸ δαιμόνιον ἀνθρώπων ἐπίσκεψιν, ἐξ ἔργων ἀληθείης εὐόρητόν ἐστι. λέγεται γὰρ ἐν Τενέδῳ παρεπιδημίην ποιησάμενον Ἀρχέτιμον ἐξ Ἐρυθραίης τῆς Ἰώνων πόλεως ἐπιξένωσιν θέσθαι Κυδίῃ· χρυσοῦ δ' ἠλισμένην οὐκ ὀλίγην ἐμπολὴν ἔχοντα, ταύτην δὴ παραθέσθαι Κυδίῃ οὕτως ἔχοντα ὡς οὐδὲν ἂν βίαιον ἐξ ἀνδρὸς πάθοι, δοκέοντός γε δὴ λώιστα πρὸς ἑωυτὸν ἀρτίως ἐν φιλίῃ συγκεκρῆσθαι. ἔνθα Κυδίῃ κακὴν βουλὴν ἐς φρένας ἐμβάλλει φιλοκερδίη. ἀπαιτεύμενος γὰρ τὸν δοθέντα χρυσὸν ἐν παραθέσει σκληρὴν ἄρνησιν ἐποιήσατο· τῶν δ' ἐς ἀμφιβολίην πιπτόντων, τέλος ἔδοξεν ὅρκῳ κυρῶσαι. Κυδίης μὲν ὦν ἐς τρίτην ἡμέρην βουλόμενος κυρώσειν πίστιν τοῖς θεοῖς ἐπιτρεφθεῖσαν, ἀπελθὼν ἐς οἶκον μηχανὴν τοιήνδε ἔθετο. νάρθηκα γὰρ κοιλήνας παντὸς χρυσοῦ φόρτον ἐς αὐτὸν ἤρεισε, πρὸς δὲ χερὸς ἀντίληψιν εἴλημα μίτρης ἐδέσμευσε πάντοθεν, ὡς ἂν κρύπτοιτο τὴν κατεσκευασμένην πρόφασιν· ἐπειδὴ δὲ ἡ τεταγμένη παρῆν ἡμέρη, νωθρὴν πορείης ἤλυσιν ποιεύμενος διηρείδετο

νάρθηκι νοσηλείην ἐπιφέρων σώματι· καταστὰς δὲ ἐναντίον τοῦ θεοῦ, ὅνπερ ἔμελλε συνίστορα ποιέεσθαι, δίδωσι Κυδίης Ἀρχετίμῳ νάρθηκα τὸν ἐντὸς ἀδικίην πᾶσαν κεύθοντα, μέχρι περ τελευτήσει τὸν τεταγμένον ὅρκον· ἀνατείνας δὲ τῶν ἑῶν χερῶν φορὴν εἶπεν ὡς λάβοι μὲν παρ' Ἀρχετίμου παραθήκην, ἀποδοίη δὲ ταύτην [ὅπερ ἦν ἐκ τέχνης πεπλασμένου ψεῦδος]. βαρυνθεὶς ἐπὶ τοῖς λελεγμένοις Ἀρχέτιμος ῥήσσει πρὸς ἔδαφος νάρθηκα πληγῇ βαρείῃ, τοῦ δὲ ἀραχθέντος ἐκτὸς ἐρρύη παραθήκης ὄγκος. Ἀρχέτιμος μὲν ὦν ἐκ θεῶν προνοίης τοιῆσδε ἔτυχε, Κυδίῃ δὲ λέγεται κακὴν βίου καταστροφὴν γενέσθαι. εἰς ἃ δεῖ βλέποντας μὴ καταφρόνησιν ποιέεσθαι πρὸς πίστιν ὅρκων ἐόντας ἀνθρώπους, οἷς ἐπισφαλὴς ὀπηδέει τύχη παντοίῃ φορῇ πνεύματος αἰωρευμένη.

Digitized by Google

Digitized by Google